देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयताम्।। ऋ० १/८६/२

ISSN : 2395-7115
June 2026
Vol.-23, Issue-6

Impact Factor
8.642

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

Editor :
Dr. Naresh Sihag, Advocate

Publisher :
Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
#202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

Bohal Shodh Manjusha June 2026 Editor : Dr. Naresh Sihag, Advocate

स्व. चौ. गुगनराम सिहाग व उनकी छोटी बहन स्व. श्रीमती गीना देवी के शुभाशीर्वाद से प्रकाशित

JOURNAL OF HUMANITIES, COMMERECE, SCIENCE, MANAGEMENT & LAW

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Vol. 23 I SSUE-6(part-one) (जून 2026) ISSN : 2395-7115

प्रेरणा :

चौ. एम. सिहाग

सम्पादक :

डॉ. नरेश सिहाग 'बोहल', एडवोकेट

एम.ए. (समाजशास्त्र, लोक प्रशासन, हिन्दी शिक्षा शास्त्र, पत्रकारिता),
एम.फिल (समाजशास्त्र, हिन्दी) एम. लिब., एल-एल.बी. (ऑनर्स),
डिप्लोमा पंचायती राज (रजत पदक विजेता), पी.एच.डी. (हिन्दी)
डी.लिट् (मानद उपाधि), काठमांडू, नेपाल
विभागाध्यक्ष हिन्दी एवं शोध निर्देशक
टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर-335001 (राज.)

प्रकाशक :

गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी (रजि.)

202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड, भिवानी-127021 (हरियाणा)

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL REFEREED/REVIEWED AND INDEXED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
ISSN 2395-7115

सम्पादकीय सम्पर्क :
डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट
202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड,
भिवानी-127021 (हरियाणा)
Email : nksihag202@gmail.com
मो. 09466532152

Published by :
Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
202, Old Housing Board,
Bhiwani-127021 (Haryana) INDIA
Email : grsbohal@gmail.com
Facebook.com/bohalshodhmanjusha
Website : www.bohalsm.blogspot.com
WhatsApp : 9466532152

All Right Reserved by Publisher & Editor

Price

Individual/Institutional : 1100/-

<u>*Disclaimer :*</u>
1. Printing, Editing, Selling and distribution of this Journal is absolutely honorary and non-commercial.
2. All the Cheque/Bank Draft/IPO should be sent in the name of Gugan Ram Educational & Social Welfare Society payable at Bhiwani.
3. Articles in this journal do not reflect the Views or Policies of the Editor's or the Publisher's. Respective authors are responsible for the originally of their views/opinions expressed in their articles.
4. All dispute will be Subject to Bhiwani, Hry. Jurisdication only.

Printed by : Manbhawan Printers, Old Bus Stand Road, Naya Bazar, Bhiwani (Hry.)

बोहल शोध मंजूषा परिवार*

मानद संरक्षक

डॉ. कैलाश चन्द्र शर्मा 'शंकी'
पूर्व शिक्षा अधिकारी,
साहित्यकार,
चरखी दादरी (हरियाणा)

डॉ. विश्वबंधु शर्मा
पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
बाबा मस्तनाथ वि.वि.
रोहतक (हरियाणा)

डॉ. विनोद तनेजा
पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
गुरूनानक वि.वि. अमृतसर
पंजाब।

सम्पादक मण्डल

सह सम्पादिका :
डॉ. रेखा सोनी
उप प्राचार्या, शिक्षा विभाग
टाटिया वि.वि. श्रीगंगानगर।

सह सम्पादिका :
डॉ. सुशीला आर्या
हिन्दी विभाग, चौ. बंसीलाल
विश्वविद्यालय, भिवानी।

प्रबंध सम्पादक :
समुन्द्र सिंह
भिवानी, हरियाणा।

विधि विशेषज्ञ

डॉ. रामफल दलाल, एडवोकेट
जिला न्यायालय
भिवानी, हरियाणा।

अजीत सिहाग, एडवोकेट
पंजाब एवं हरियाणा हाईकोर्ट,
चंडीगढ़।

चरणवीर सिंह, एडवोकेट
जिला न्यायालय
पटियाला, पंजाब।

विषय विशेषज्ञ/परामर्शदात्री/शोधपत्र निरीक्षण समिति

डॉ. कुमारी लक्ष्मी जोशी
हिन्दी विभाग, त्रिभुवन वि.वि.
काठमाण्डू, नेपाल।

डिल्लीराम शर्मा संग्रौला
विभागीय प्रमुख, संस्कृत, पत्रकारिता, हिंदी
पद्मकन्या बहुमुखी कैंपस, काठमांडू, नेपाल।

डॉ. संजय एल. मादार
विभागाध्यक्ष, पी.जी. केन्द्र
द.भा.हिन्दी प्रचार सभा हैदराबाद।

डॉ. गीता दहिया, प्राचार्या,
नैशनल टीटी कॉलेज फॉर गर्ल्स
अलवर, राजस्थान

डॉ. इस्पाक अली
पूर्व प्राचार्य, लाल बहादुर शास्त्री
शिक्षा महाविद्यालय, बेंगलूरू

डॉ. मो. रियाज़ खान
बीएमएस वूमैन कॉलेज आटोनोमेस
बेगलूरू

डॉ. वनिता कुमारी
च. दादरी (हरियाणा)

श्री सहदेव समर्पित
सम्पादक, शान्तिधर्मी, जीन्द

डॉ. अंजली उपाध्याय
उत्तर प्रदेश

डॉ. लता एस. पाटिल
राजीव गांधी बीएड कालेज
धारवाड़, कर्नाटक

प्रो. अमनप्रीत कौर
गुरू तेग बहादुर खालसा कॉलेज
फॉर वूमैन, दसूहा, पंजाब

डॉ. वर्षा रानी
संस्कृत विभाग, डॉ. भीमराम
अम्बेडकर, वि.वि., आगरा

प्रो. कमलेश चौधरी
राजकीय रणबीर महाविद्यालय
संगरूर, पंजाब

डॉ. परमजीत कौर
बरेली कॉलेज बरेली,
उत्तर प्रदेश।

डॉ. बी. संतोषी कुमारी
पी.जी.विभाग, दक्षिण भारत हिन्दी
प्रचार सभा, मद्रास।

डॉ. करमजीत कौर
प्राचार्या, दशमेश गर्ल्स कॉलेज
चक आला, मुकेरिया, पंजाब।

डॉ. मनमीत कौर
राधा गोविन्द वि.वि.,
रामगढ़, झारखण्ड।

डॉ. शबाना हबीब
गवर्नमेंट कॉलेज फॉर वूमैन
त्रिवन्तपुरम, केरल।

डॉ. मानसिंह दहिया
संस्कृत विभाग
हरियाणा सरकार।

प्रो. नरेन्द्र सोनी
सूचना एवं जन सम्पर्क अधिकारी,
हरियाणा सरकार।

पठान चिन्ना जानी
सहायक प्राध्यापक
सी.एच.एस.डी. सेंट थेरेसा
महिला महाविद्यालय (ए)
एलुरु, आंध्र प्रदेश

डॉ. किरण गिल
दीनदयाल टी.टी. महाविद्यालय
बारी, जिला सीकर, राज.

डॉ. राजकुमारी शर्मा
श्रीराम कॉलेज,
नई दिल्ली।

श्री राकेश ग्रेवाल
सन जॉस,
कैलिफोर्निया, यू.एस.ए.

श्री राकेश शंकर भारती
साहित्यकार व अनुवादक,
यूक्रेन।

डॉ. रीना उन्नीयाल तिवारी
शिक्षा संकाय, डी.ए.वी. पीजी
कालेज, देहरादून

डॉ. शिवकरण निमल
सहायक आचार्य, राजनीति विज्ञान
एसपीसी राजकीय महा. भीम, राजस्थान।

डॉ. नीलम आर्या
संस्कृत विभाग
उत्तर प्रदेश।

डॉ. रोहतास
एस.जी.पी.जी.आई.एम.एस.
लखनऊ, उत्तर प्रदेश।

डॉ. वैशाली सिंह
सहायक प्राध्यापक
शिक्षा विभाग, एस.एम.टी. अनार देवी
टी.टी. कॉलेज, बखराना
(कोटपुतली) राजस्थान।

डॉ. सविता घुड़केवार
पीजी विभाग, दक्षिण भारत
हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास

डॉ. श्रीविद्या एन.टी.
श्री शंकराचार्य संस्कृत वि.वि.
केरल।

डॉ. पंडित बन्ने
भारत महाविद्यालय,
सोलापुर (महाराष्ट्र)

डॉ. उमा सैनी
आई.ए.एस.ई. विश्वविद्यालय
सरदारशहर, राजस्थान

डॉ. सुरजीत सिंह कस्वां
डीन फिजिकल एजुकेशन
टांटिया वि.वि., श्रीगंगानगर,

डॉ. राधाकृष्णन गणेशन
भारत कला भवन
वाराणसी, उत्तर प्रदेश।

डॉ. रवि सुण्डयाल
हॉयर एजुकेशन डिपार्टमेंट
जम्मू कश्मीर।

प्रो. सत्यबीर कालोहिया
पूर्व प्राचार्य, कैलिफोर्निया।

डॉ. रेखा रानी
गवर्नमेंट रणबीर कॉलेज
संगरूर, पंजाब

डॉ. के.के. मल्हौत्रा
पूर्व विभागाध्यक्ष
गवर्नमेंट कॉलेज, गुरदासपुर

*सम्पूर्ण बोहल शोध मञ्जूषा परिवार/सम्पादक मण्डल अवैतनिक है।

शोध-पत्र प्रकाशन के लिए निर्देश मंजूषा

गुगनराम सोसायटी (पंजीकृत) द्वारा शोधार्थियों व अध्येताओं के शोध/अनुसंधान की गतिविधियों को प्रोत्साहित करने हेतू बोहल शोध मंजूषा ISSN 2395-7115 नामक बहुभाषिक अंतर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है। कला, संस्कृति, विज्ञान, वाणिज्य, मानविकी, प्रबंध, प्रौद्योगिकी, विधि, भूगोल, शिक्षा, पत्रकारिता पर केन्द्रीत इस शोध पत्रिका को विषय विशेषज्ञों तथा मनीषी विद्वानों की सक्रिय सहभागिता प्राप्त है। पत्रिका का वार्षिक शुल्क 1100 रु. है।

आप अपना शोध पत्र कम्प्यूटर से मुद्रित फोन्ट साईज 14, कृतिदेव-10, कृतिदेव-21 में व अंग्रेजी के Arial, Times New Roman में पेज मेकर या माइक्रोसोफ्ट वर्ल्ड में हमारी Email ID : grsbohal@gmail.com पर भेजें। शोध पत्र प्रेषित करने से पूर्व दिये गये सन्दर्भ, मात्रा आदि की पूर्णतया जाँच कर लें।

नोट :- उर्दू, पंजाबी आदि भाषा के शोध पत्र पेपर साईज 7x9.5 पर टाईप कराकर JPG या PDF फाईल हमारी ईमेल आई.डी. पर भेज सकते हैं।

हमारी पत्रिका में शोध पत्र लेखक के फोटो सहित प्रकाशित किये जाते हैं। इसलिए आप अपने शोध पत्र के साथ पासपोर्ट साईज फोटोग्राफ, सम्पर्क सूत्र : टेलीफोन, मोबाईल नं., ई-मेल तथा पिनकोड सहित पत्र व्यवहार का पूरा पता (हिन्दी व अंग्रेजी) कम्प्यूटर द्वारा टाईप करवाकर भेजें।

★ शोध पत्र 2000-2500 शब्दों (4-6 पेज) से अधिक नहीं होनी चाहिए, यदि शब्द सीमा अधिक होती है तो सम्पादक को अधिकार होगा यथा स्थान संक्षिप्तीकरण कर दें। अस्वीकृत शोध पत्र की वापसी संभव नहीं है।

★ पत्रिका में प्रकाशित श्रेष्ठ शोध पत्र को हमारी सोसायटी/पत्रिका की ओर से बहुउपयोगी श्रीमती गिना देवी शोधश्री सम्मान प्रदान किया जायेगा।

★ शोध पत्र में व्यक्त विचार लेखकों के स्वयं के विचार हैं। उनसे सम्पादक, प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है। शोध पत्र में प्रयुक्त किए गए तथ्यों के प्रति संबंधित लेखक उत्तरदायी होगा। पत्रिका में शोध आलेख प्रकाशन के लिए भेजने से पहले सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त करना लेखक का दायित्व है। प्रत्येक विवाद का न्यायक्षेत्र भिवानी (हरियाणा) होगा।

★ सम्पादकीय पद अव्यावसायिक और अवैतनिक हैं। पत्रिका में केवल शोध पत्र ही प्रकाशनार्थ भेजें। शोध पत्र का प्रकाशन योजना एवं व्यवस्था के अनुसार यथा समय व प्रकाशित समस्त शोध पत्रों का सर्वाधिकार समिति/सम्पादक के पास सुरक्षित होगा।

नोट :

सहयोग/सदस्यता राशि 1100/- रू. का ड्राफ्ट/चैक/आई.पी.ओ. 'गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी' के नाम भेजें तथा ऑनलाईन बैंक में सहयोग जमा राशि की रसीद की फोटोप्रति अपने आलेख के साथ हमें मेल कर सूचित करने का कष्ट करें ताकि समय पर रसीद भेजी जा सके। ऑनलाईन सहयोग राशि के साथ 50/- रू. अतिरिक्त अवश्य जमा करवायें। प्रकाशन सहयोग शुल्क वापिस देय नहीं।

बैंक का नाम	:	पंजाब नैशनल बैंक, हालु बाजार, भिवानी (हरियाणा)
खाता धारक का नाम	:	गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी
बैंक खाता संख्या	:	1182000109078119
IFSC Code	:	PUNB0118200
MICR CODE	:	127024003

अनुक्रमणिका - जून 2026

क्र०	विषय	लेखक	पृष्ठ
1.	संपादकीय	डॉ० नरेश सिहाग	10-10
2.	Diversity and Seasonal Variation of Zooplankton in Rajsamand Lake	Dr. Prem Singh	11-14
3.	उप-शास्त्रीय गायन रूप में ठुमरी एवं ग़ज़ल गायकी का विस्तृत विश्लेषणात्मक अध्ययन	डॉ० संजीव कुमार द्विवेदी	15-17
4.	रामायण में ज्ञान दृष्टि	डॉ० रंजना गुप्ता	18-21
5.	ਅਜਮੇਰ ਸਿੰਘ ਔਲਖ ਦੇ ਨਾਟਕਾਂ ਵਿੱਚ ਪੇਸ਼ ਨਾਟ ਜੁਗਤਾਂ	ਡਾ. ਲਖਵਿੰਦਰ ਕੌਰ	22-25
6.	डॉ. मंजीत की कहानी 'एक और द्रोणाचार्य' में शैक्षणिक विवेचना	मनीषा देवी	26-29
7.	तरुण भटनागर के उपन्यास साहित्य में युवा चेतना	डॉ. अनीता	30-33
8.	'उसका अपना रास्ता' कहानी में युवा वर्ग द्वारा पाश्चात्य संस्कृति का अंधानुकरण	पूनम	34-37
9.	स्त्री आत्मकथा: अस्मिता और प्रतिरोध की अभिव्यक्ति	Dr. Anupama	38-44
10.	The Theory of Nationalism: Swami Vivekananda	JAYA AGRAWAL	45-47
11.	भक्ति साहित्य में भारतीय ज्ञान परंपरा का लोक मंगलकारी स्वरूप	डॉ० रेनू जोशी	48-52
12.	समसामयिक परिवर्तन का आख्यान काशीनाथ सिंह का उपन्यास 'काशी का अस्सी'	रामकुमार साहू	53-56
13.	मल्लीपुरम जगदीश जी की कहनियों में आदिवासी स्त्री जीवन	सुजाता. नुन्ना, प्रो. एन. सत्यनारायण	57-60
14.	"सादा जीवन, उच्च विचार" : श्रीमद्भगवद्गीता एवं राधास्वामी संतमत का तुलनात्मक अध्ययन	डॉ. प्रीति श्रीवास्तव	61-66
15.	भारतीय लोक कलाओं का सामाजिक संदर्भ	डॉ. नीलम कुमारी	67-71

16.	गर्भ से अंत्येष्टि तक मूल्य-विघटन को चित्रित करती समकालीन हिंदी कविता	डॉ० राधा वर्मा	72-76
17.	बिहार की शिक्षक – शिक्षा की वर्त्तमान स्थिति	प्रभाकर कुमार, मनीषा कुमारी	77-79
18.	Pedagogical Shifts and Teacher Education	Seema Dahiya	80-83
19.	'शकुंतिका' उपन्यास में नारी सशक्तिकरण	Neethu D.P	84-87
20.	"वैश्विक शांति में बौद्ध धर्म की प्रासंगिकता"	आदर्श श्रीवास, डॉ. सत्यानन्द	88-93
21.	Impact of Climate Change on Agricultural Productivity in Rajsamand District, Rajasthan: A Geographical Analysis	DINESH SINGH	94-98
22.	भारतीय ज्ञान परम्परा में नारी	डॉ. गायत्री देवी	99-104
23.	AI and Public Policy Innovation in Rural India: Opportunities, Accountability and Inclusion	Shraddha Singh Parihar	105-108
24.	Role of IT in education	Harinder Pal Singh, Dr. Sheeshpal Singh	109-112
25.	मादक द्रव्य व्यसन की समस्या का आधुनिक सन्दर्भ	डॉ० जय शंकर पांडेय	113-115
26.	MAIN SIX FORMS OF POVERITY UNDER DEVELOPED COUNTRY	Dr. Sheeshpal Singh	116-120
27.	Feminism: Women's Participation in Social, Political, Spiritual, and Freedom Struggles.	Hemant Kamra	121-125
28.	उदय प्रकाश की काव्य-संवेदना में सामाजिक चेतना	अलिका कुमारी	126-133
29.	'प्रवादपर्व' में अभिव्यक्त नारी चेतना	DR. Neerada Maria Kurian	134-138
30.	अनुवाद के माध्यम से सनातन ज्ञान का वैश्विक प्रसार	शिवशंकर	139-144
31.	आशा भोसले - संगीत और जिंदगी	डॉ. सांटी जोसफ	145-149
32.	शांता कुमार के उपन्यास 'लाजो' में कांगड़ी संस्कृति एवं लोकजीवन	ऋषभ	150-153
33.	राजस्थान में जल संकट एवं सतत जल प्रबंधन की चुनौतियाँ: एक विश्लेषणात्मक एवं नीतिगत अध्ययन	सलोचना यादव	154-160

34.	ਗੁਰੂ ਅਰਜਨ ਦੇਵ ਜੀ ਦੀਆਂ ਵਾਰਾਂ ਵਿਚ ਪੇਸ਼ ਅਧਿਆਤਮਕ ਚਿੰਤਨ	ਡਾ ਅਮਨਦੀਪ ਕੌਰ, ਗੁਰਸਾਹਿਬ ਸਿੰਘ	161-167
35.	ਪਰਵਾਸ : ਵਰ ਜਾਂ ਸਰਾਪ -ਇਕ ਸਮਾਜਿਕ ਅਧਿਐਨ	ਡਾ ਅਮਨਦੀਪ ਕੌਰ	168-174
36.	ਅਜੀਤ ਕੌਰ ਦੀਆਂ ਕਹਾਣੀਆਂ ਵਿੱਚ ਨਾਰੀ ਸਰੋਕਾਰ (ਗੁਲਬਾਨੋ, ਦਾਇਰੇ ਅਤੇ ਫਾਲਤੂ ਔਰਤ ਦੇ ਸੰਦਰਭ 'ਚ)	ਡਾ. ਲਖਵਿੰਦਰ ਕੌਰ	175-178
37.	गाँधी जी के आंदोलन में रोहतक वासियों का योगदान : सविनय अवज्ञा आन्दोलन एक संक्षिप्त विश्लेषण	डॉ० कविता राठी	179-183
38.	संस्कृत साहित्य में स्त्री विमर्श	डॉ० विनीता कुमारी गुप्ता	184-187
39.	संजीव के उपन्यास `रह गई दिशाएं इसी पार ` और `अहेर `में व्यक्त समाज , सत्ता और पूँजी का अन्तर्सम्बन्ध	डॉ. राजेश कुमार राव	188-194
40.	ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਤੇਗ ਬਹਾਦਰ ਜੀ ਦੀ ਬਾਣੀ: ਦਾਰਸ਼ਨਿਕ ਅਧਿਐਨ	ਬਲਵਿੰਦਰ ਕੌਰ	195-201
41.	सांप्रदायिकता के बीच मानवीय चेतना - प्रियंवद के उपन्यास 'वे वहाँ कैद हैं' में	डॉ. मेय फ्लावर के ए	202-206
42.	ਬਲਜੀਤ ਕੌਰ ਬੱਲੀ ਦੇ ਨਾਵਲਾ 'ਚ ਪੰਜਾਬੀ ਸਮਾਜ ਅਤੇ ਸਭਿਆਚਾਰ ਦੀ ਪੇਸ਼ਕਾਰੀ	ਕਿਰਨਦੀਪ ਕੌਰ	207-210
43.	SOCIO - CULTURAL STUDY IN *ŚĀHENDRAVILĀSA* OF ŚRĪDHARA VEṄKAṬEŚA	Dr.S.Madhurambika	211-215
44.	प्रेमचंद के साहित्य में किसान जीवन	डा. विजय कुमार धत्तरवाल	216-221
45.	सरकारी योजनाओं की किसान तक पहुँच और हिंदी कृषि पत्रकारिता	श्रेया उत्तम	222-227
46.	वैज्ञानिक साहित्य की उपलब्धियाँ एवं उपादेयता	एम. सुब्रमण्यम, एन. सत्यनारायण	228-231
47.	वर्तमान शिक्षा में अपेक्षित परिवर्तन एवं तकनीकी युग में बच्चों के व्यवहारगत परिवर्तन : एक समालोचनात्मक अध्ययन	डॉ० सुकन्या चल्ला	232-234
48.	भारतीय साहित्य में इतिहास की परिभाषा एवं उसका स्वरूप	डॉ० प्रतिमा कुमारी शुक्ला, आशीष कुमार शुक्ल	235-239

49.	ত্রৈলোক্যনাথ মুখোপাধ্যায় : কঙ্কাবতী উপন্যাসে সমাজবাস্তবতা	রতন বর্মন	240-245
50.	रामचरितमानस की प्रासंगिकता	डॉ० रीनू चतुर्वेदी	246-248
51.	नई कहानी में आधुनिकताबोध : यथार्थ और अंत:संघर्ष	अर्पिता बिस्वाल	249-254
52.	भारतदेशे संस्कृतिभाषापरम्पराणां समन्वय: समीक्षात्मकं अध्ययनम्	विनीत कुमार शुक्ल	255-250
53.	The Interrelations among Marginalisation and Internal Migration: Changing Dynamics of Development in India	Anulakshmi Sankar. V, Dr. M. Thamilarasan	261-268
54.	ਭੁੱਖ ਇਉ ਸਾਹ ਲੈਂਦੀ ਹੈ : ਸਭਿਆਚਾਰਕ ਰੂਪਾਂਤਰਣ ਦਾ ਬਿਰਤਾਂਤ	ਡਾ. ਰਮਨਪ੍ਰੀਤ ਕੌਰ	269-275
55.	दया प्रकाश सिंहा के नाटकों में मानवीय मूल्य विघटन	Aswathy Chandran, Prof. Dr. Manju A	276-279
56.	मानसिक स्वास्थ्य एवं डायरी साहित्य	डॉ. प्रियंका सिंह	280-284

संपादकीय

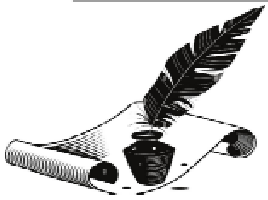

शोध, समाज और भारतीय ज्ञान परंपरा का समन्वय

प्रिय पाठकों, शोधार्थियों, शिक्षकों एवं विद्वान साथियों,

बोहल शोध मंजूषा के जून 2026 अंक को आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए हमें अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। यह पत्रिका अपने आरंभ से ही ज्ञान, अनुसंधान और अकादमिक उत्कृष्टता के प्रति समर्पित रही है। बदलते समय के साथ शोध की आवश्यकता और उसकी उपयोगिता निरंतर बढ़ती जा रही है। आज का युग सूचना और प्रौद्योगिकी का युग है, जहाँ ज्ञान का विस्तार अभूतपूर्व गति से हो रहा है। ऐसे समय में शोध का उद्देश्य केवल नई जानकारी प्राप्त करना नहीं, बल्कि उपलब्ध ज्ञान का सम्यक् विश्लेषण कर समाजोपयोगी निष्कर्ष प्रस्तुत करना भी है।

बोहल शोध मंजूषा का उद्देश्य शोधार्थियों और विद्वानों को एक ऐसा मंच प्रदान करना है जहाँ वे अपने मौलिक विचारों और शोध निष्कर्षों को व्यापक पाठक वर्ग तक पहुँचा सकें। पत्रिका सदैव गुणवत्तापूर्ण, मौलिक तथा समाजोपयोगी शोध कार्यों के प्रकाशन के लिए प्रतिबद्ध रही है। हमारा विश्वास है कि शोध केवल शैक्षणिक उपलब्धि का साधन नहीं, बल्कि समाज और राष्ट्र के विकास का प्रभावी माध्यम भी है।

आज कृत्रिम बुद्धिमत्ता, डिजिटल संसाधनों और इंटरनेट के बढ़ते प्रभाव ने शोध की प्रक्रिया को सरल बनाया है। तथापि इसके साथ ही शोध नैतिकता, मौलिकता और प्रामाणिकता की चुनौतियाँ भी बढ़ी हैं। शोधार्थियों का यह दायित्व है कि वे अपने अनुसंधान में सत्यनिष्ठा, निष्पक्षता और प्रमाणिकता को सर्वोच्च प्राथमिकता दें। किसी भी शोध की विश्वसनीयता उसके निष्कर्षों से अधिक उसकी कार्यप्रणाली और नैतिक आधार पर निर्भर करती है।

यह भी आवश्यक है कि शोध का केंद्र केवल महानगरों और स्थापित विषयों तक सीमित न रहे। ग्रामीण समाज, लोक संस्कृति, जनभाषाएँ, लोक साहित्य, कृषि, पर्यावरण तथा वंचित समुदायों से जुड़े विषयों पर भी गंभीर अनुसंधान किया जाना चाहिए। भारत की वास्तविक पहचान उसके गाँवों, लोक परंपराओं और सांस्कृतिक विविधताओं में निहित है। इन क्षेत्रों में किया गया शोध न केवल ज्ञान को समृद्ध करता है, बल्कि समाज के समावेशी विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान देता है।

अंत में, मैं सभी लेखकों, समीक्षकों, संपादकीय मंडल के सदस्यों तथा पाठकों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ, जिनके सहयोग से यह अंक प्रकाशित हो सका है। आपके सुझाव और सहयोग ही हमारी सबसे बड़ी शक्ति हैं। आशा है कि **बोहल शोध मंजूषा** भविष्य में भी शोध, ज्ञान और अकादमिक उत्कृष्टता के क्षेत्र में अपनी सार्थक भूमिका निभाती रहेगी।

आइए, हम सब मिलकर शोध को केवल डिग्री प्राप्ति का साधन न मानकर ज्ञान-सृजन, सामाजिक जागरूकता और राष्ट्र निर्माण का माध्यम बनाएँ। यही शोध की वास्तविक सार्थकता है और यही हमारी सामूहिक जिम्मेदारी भी।

आपके सुझावों और प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

– **संपादक**

बोहल शोध मंजूषा

www.bohalshodhmanjusha.com Bohal Shodh Manjusha ISSN: 2395-7115
Impact Factor: 8.642 June 2026 Page No. : 11-14
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

Diversity and Seasonal Variation of Zooplankton in Rajsamand Lake

Dr. Prem Singh
S.P.C. GOVT COLLEGE BHIM, RAJSATHAN
Deepali Lal
S.D. GOVERNMENT COLLEGE BEAWAR , RAJSATHAN

Abstract
The present study was conducted to investigate the diversity and seasonal variation of zooplankton in Rajsamand Lake during October 2019 to September 2021. Zooplankton samples were collected from five selected sampling stations representing different ecological zones of the lake. The study recorded four major zooplankton groups namely Rotifera, Cladocera, Cyclopoida and Ostracoda. Rotifers dominated throughout the study period, indicating mesotrophic to eutrophic condition of the lake. Maximum zooplankton abundance was observed during summer season, while minimum density was recorded during rainy season. Seasonal fluctuation showed significant variation in Rotifers, Cladocerans and Ostracods. The dominance of Brachionus species indicates nutrient enrichment and ecological stress in the lake ecosystem. The present investigation highlights the importance of zooplankton as bioindicators of freshwater ecosystem health.

Keywords
Zooplankton, Rotifera, Cladocera, Seasonal Variation, Biodiversity, Limnology, Rajsamand Lake

1. Introduction

Zooplankton are microscopic aquatic organisms that play a crucial role in freshwater ecosystems by linking primary producers with higher trophic levels. They are considered excellent indicators of water quality because their abundance and diversity are strongly influenced by physico-chemical conditions of aquatic ecosystems.

Freshwater lakes of Rajasthan are ecologically important and support fisheries, irrigation and domestic activities. Rajsamand Lake is one of the important freshwater lakes of southern Rajasthan and is subjected to increasing anthropogenic pressure, nutrient loading and ecological disturbances.

The study of zooplankton diversity and seasonal variation is essential for understanding trophic status and ecological stability of freshwater lakes. Therefore, the present study was undertaken to evaluate the diversity, composition and seasonal fluctuation of zooplankton in Rajsamand Lake.

2. Materials and Methods

2.1 Study Area

Rajsamand Lake is situated in Rajsamand district of Rajasthan. The lake was constructed by Maharana Raj Singh during the 17th century across the Gomti River. The lake receives inflow from Gomti, Kelwa and Tali rivers and serves as an important freshwater resource.

2.2 Sampling Procedure

Zooplankton samples were collected monthly from five selected sampling sites from October 2019 to September 2021. About 100 liters of surface water were filtered through plankton net made of bolting silk cloth No. 25.

The collected samples were preserved in 4% formalin solution for laboratory analysis. Quantitative estimation was carried out using Sedgwick Rafter Counting Cell under microscope. Identification of zooplankton species was performed using standard taxonomic keys.

2.3 Statistical Analysis

Seasonal variations in zooplankton density were analyzed using ANOVA and Student-Newman-Keuls test. Correlation between zooplankton abundance and environmental parameters was also evaluated.

3. Results

3.1 Zooplankton Diversity

The present study recorded four major groups of zooplankton:

1. Rotifera
2. Cladocera
3. Cyclopoida
4. Ostracoda

A total of 39 species were recorded during 2019–2020 and 42 species during 2020–2021.

Zooplankton Group	Species Recorded (2019–20)	Species Recorded (2020–21)
Rotifera	15	17
Cladocera	14	15
Cyclopoida	3	3
Ostracoda	7	7

Rotifers were dominant throughout the study period.

3.2 Rotifera Diversity

Rotifers represented the most dominant zooplankton group in all sampling stations. Important genera recorded during the study included:

- Brachionus
- Keratella
- Filinia
- Lecane
- Testudinella

The genus *Brachionus* showed highest abundance during summer season.

Seasonal Variation of Rotifers

Season	Mean Density (Org/L)
Winter	7.75 ± 0.53
Summer	9.91 ± 0.60
Rainy	6.26 ± 0.11

The seasonal variation was statistically significant ($p < 0.001$).

3.3 Cladocera Diversity

Fifteen species of Cladocerans were recorded from the lake ecosystem. Cladocerans showed higher density during summer season and lower abundance during monsoon season.

Season	Mean Density (Org/L)
Winter	5.67 ± 0.67
Summer	6.04 ± 0.39
Rainy	4.65 ± 0.53

Seasonal variation was significant ($p < 0.005$).

3.4 Cyclopoida Diversity

Cyclopoid copepods showed comparatively lower abundance than Rotifers and Cladocerans.

Season	Mean Density (Org/L)
Winter	3.16 ± 0.52
Summer	5.09 ± 0.57
Rainy	4.64 ± 0.52

The seasonal variation was statistically non-significant.

3.5 Ostracoda Diversity

Seven species of Ostracods were identified during the study period.

Season	Mean Density (Org/L)
Winter	4.14 ± 0.23
Summer	5.59 ± 0.32
Rainy	3.99 ± 0.17

Seasonal variation was statistically significant ($p < 0.012$).

3.6 Percentage Composition of Zooplankton

Site	Rotifers	Cladocerans	Cyclopoids	Ostracods
Site I	59%	37%	—	4%
Site II	60%	37%	—	3%
Site III	55%	35%	4%	6%
Site IV	52%	38%	4%	6%
Site V	70%	16%	4%	10%

Rotifers formed the dominant zooplankton group at all sampling stations.

4. Discussion

The dominance of Rotifers observed in the present study indicates nutrient-rich and moderately eutrophic condition of Rajsamand Lake. Similar observations have been reported from other freshwater lakes of Rajasthan.

Higher zooplankton density during summer season may be attributed to increased temperature, higher nutrient availability and enhanced primary productivity. Lower abundance during rainy season may result from dilution effect, high turbidity and inflow of freshwater.

The dominance of *Brachionus* species is considered an indicator of eutrophic conditions and ecological stress. Seasonal fluctuations observed in Cladocerans and Ostracods indicate strong influence of limnological parameters on zooplankton diversity.

The results suggest that Rajsamand Lake presently exhibits mesotrophic to eutrophic characteristics.

5. Conclusion

1. Rajsamand Lake supports rich zooplankton diversity.
2. Rotifers were the dominant zooplankton group.
3. Maximum abundance occurred during summer season.
4. Rainy season recorded minimum zooplankton density.
5. Brachionus dominance indicates nutrient enrichment.
6. Seasonal changes significantly influenced zooplankton diversity.
7. The lake ecosystem reflects mesotrophic to eutrophic condition.
8. Continuous ecological monitoring is essential for conservation and management of the lake ecosystem.

References

1. APHA (1989). Standard Methods for the Examination of Water and Wastewater.
2. Wetzel, R.G. (2003). Limnology: Lake and River Ecosystems.
3. Sharma, M.S. et al. Studies on zooplankton diversity of Rajasthan lakes.
4. Edmondson, W.T. (1959). Freshwater Biology.
5. Patil et al. (2008). Zooplankton diversity in freshwater ecosystems.

Premsingh1810@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com Bohal Shodh Manjusha ISSN: 2395-7115
Impact Factor: 8.642 June 2026 Page No. : 15-17
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

उप-शास्त्रीय गायन रूप में ठुमरी एवं ग़ज़ल गायकी का विस्तृत विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ० संजीव कुमार द्विवेदी
संगीत (गायन),
पंडित शंभू नाथ शुक्ल विश्वविद्यालय शहडोल मध्य प्रदेश

अध्याय 1: प्रस्तावना - उप-शास्त्रीय संगीत का स्वरूप

भारतीय संगीत की यात्रा आदिकाल से आज तक निरंतर प्रवाहित है। संगीत के विशाल समुद्र को मुख्य रूप से तीन श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है: शास्त्रीय, उप-शास्त्रीय और लोक संगीत।उप-शास्त्रीय संगीत (Semi-Classical Music) वह सेतु है जो शास्त्रीय संगीत की गंभीरता और नियमों को लोक संगीत की तरलता और भावुकता के साथ जोड़ता है। जहाँ एक ओर 'ख्याल' गायकी में राग की शुद्धता सर्वोपरि है, वहीं उप-शास्त्रीय विधाओं जैसे ठुमरी, दादरा, कजरी और ग़ज़ल में 'शब्दार्थ' और 'भाव' की सत्ता प्रधान होती है। यहाँ गायक को राग की सीमाओं से बाहर जाकर भाव-प्रदर्शन हेतु अन्य रागों के स्वरों का स्पर्श करने की स्वतंत्रता होती है, जिसे संगीत की भाषा में 'कण' या 'स्पर्श' स्वर कहा जाता है।

अध्याय 2: ठुमरी का इतिहास, उद्भव और घरानों का विकास

ठुमरी का शाब्दिक अर्थ 'ठुमक' (नृत्य की चाल) और 'री' (सखी को संबोधन) से जुड़ा है। ऐतिहासिक विकास:

1. मुगल और नवाबों का युग: 18वीं शताब्दी में दिल्ली के पतन के बाद संगीतकार अवध की ओर बढ़े। नवाब वाजिद अली शाह ने ठुमरी को संरक्षण दिया। वे स्वयं 'अख्तर पिया' नाम से बंदिशें लिखते थे।

2. घराना परंपरा: - लखनऊ घराना: यहाँ ठुमरी में नजाकत, लचक और नृत्य की गति का प्रभाव अधिक है। इसमें 'खटका' और 'मुरकी' का सुंदर प्रयोग होता है।- बनारस घराना: इसे 'पुरब अंग' की ठुमरी कहते हैं। यहाँ

की ठुमरी में 'ठहराव' है। गायक शब्दों के एक-एक अर्थ को स्वर की विभिन्न भंगिमाओं से सजाता है।- गया घराना: यहाँ की ठुमरी में 'टप्पा' अंग की तानों और पेचीदा हरकतों का समावेश अधिक मिलता है।

अध्याय 3: ठुमरी की तकनीकी एवं कलात्मक विशेषताएं

ठुमरी की गायकी अत्यंत सूक्ष्म और कठिन मानी जाती है क्योंकि इसमें कम स्वरों में बहुत बड़े भाव दिखाने होते हैं।- रस और सौंदर्य: इसका मुख्य आधार 'विप्रलंभ श्रृंगार' (विरह) और 'संयोग श्रृंगार' है।- रागाश्रित स्वरूप: ठुमरी के लिए कुछ 'क्षुद्र' या चंचल प्रकृति के राग ही उपयुक्त माने जाते हैं जैसे—भैरवी, खमाज, काफी, पीलू, देस, और तिलंग।- स्वर विस्तार: इसमें 'आलाप' ख्याल की तरह लंबे नहीं होते, बल्कि शब्दों के साथ लिपटे हुए होते हैं। इसे 'शब्द-आलाप' भी कहा जाता है।- अलंकार विधान: ठुमरी के प्राण इसकी बारीक हरकतों में हैं— • मुरकी: तीन-चार स्वरों की एक छोटी और तेज़ लहर। • खटका: स्वर के साथ उसके आगे-पीछे के स्वरों का झटके से स्पर्श। • मींड: दो स्वरों के बीच बिना आवाज़ तोड़े एक तार की तरह जुड़ाव।

अध्याय 4: ठुमरी के भेदों का सूक्ष्म विश्लेषण

1. बोल-बनाव ठुमरी (Bol-Banav): यह ठुमरी का सबसे प्रतिष्ठित रूप है। इसमें शब्द कम होते हैं लेकिन उनके भावों का विस्तार बहुत अधिक होता है। गायक एक ही वाक्य को बार-बार दोहराता है, लेकिन हर बार उसका भावनात्मक अर्थ बदल जाता है। यह विलंबित लय में प्रस्तुत की जाती है।

2. बोल-बंट ठुमरी (Bol-Bant): इसका संबंध ताल और लयकारी से है। इसमें बोलों को ताल के साथ विभिन्न टुकड़ों में बाँटा जाता है। इसमें 'लय का काम' प्रमुख होता है। यह अक्सर मध्य या द्रुत लय में होती.

3. अन्य उप-रूप: - टप्पा अंग की ठुमरी: जिसमें पंजाब की टप्पा गायकी की तेज़ तानें शामिल होती हैं. - कजरी और चैती: ये मौसमी गीत हैं लेकिन शास्त्रीय गायकों ने इन्हें ठुमरी के सांचे में ढालकर उप-शास्त्रीय स्वरूप प्रदान किया है।

अध्याय 5: संगीतात्मक संरचना, ताल एवं वाद्य

ठुमरी की प्रस्तुति की अपनी एक निर्धारित शैली है: - ताल का विन्यास: ठुमरी मुख्य रूप से दीपचंदी (14 मात्रा) और दादरा (6 मात्रा) में गाई जाती है। इसके अलावा अद्धा (16 मात्रा) और कहरवा का भी प्रयोग होता है।- लग्गी और लड़ी: ठुमरी के अंत में जब गायक मुखड़ा गाकर रुकता है, तो तबला वादक द्रुत लय में 'लग्गी' बजाता है।- साज़: पहले सारंगी अनिवार्य थी। आज के समय में हारमोनियम प्रमुख वाद्य बन गया है।

अध्याय 6: प्रमुख कलाकार एवं गायन शैलियों का तुलनात्मक अध्ययन

- बेगम अख्तर: उनकी आवाज़ की 'दरार' (Crack) उनके गायन को एक विशेष वियोगी भाव देती थी।- सिद्धेश्वरी देवी: 'सरस्वती' के रूप में विख्यात, उनकी भैरवी और मांझ खमाज की ठुमरियाँ आज भी आदर्श मानी जाती हैं।- गिरिजा देवी: उन्होंने 'कजरी' और 'चैती' को विश्व मंच पर सम्मान दिलाया।- बड़े गुलाम अली खान: 'पटियाला घराने' के इस दिग्गज ने ठुमरी में बहुत ही जटिल तानों और हरकत-मुर्कियों का प्रयोग कर इसे नया विस्तार दिया।

अध्याय 7: ग़ज़ल - काव्य और संगीत का संगम

ग़ज़ल एक ऐसी विधा है जहाँ शब्द (शायरी) और संगीत समान रूप से शक्तिशाली होते हैं।काव्य की सूक्ष्मता: ग़ज़ल का अर्थ है 'महबूब से गुफ़्तगू करना'। इसमें बेहर (छंद), काफिया और रदीफ की शुद्धता महत्वपूर्ण है।दार्शनिक गहराई: ग़ज़ल केवल प्रेमी-प्रेमिका की बात नहीं है, यह सामाजिक क्रांति और ईश्वरीय प्रेम (सूफीवाद) की भी अभिव्यक्ति है।

अध्याय 8: ग़ज़ल गायकी की विभिन्न शैलियाँ एवं प्रमुख व्यक्तित्व

1. शास्त्रीय अंग की ग़ज़ल: उस्ताद बरकत अली खान और बेगम अख्तर। यहाँ राग की शुद्धता प्रधान थी।

2. शहंशाह-ए-ग़ज़ल (Mehdi Hassan Style): मेहदी हसन ने ग़ज़ल को रागों की कोमलता से जोड़ा। उनकी गायकी में 'ठहराव' बेमिसाल था।

3. आधुनिक सुगम ग़ज़ल: जगजीत सिंह ने ग़ज़ल को सरल धुनों और आधुनिक वाद्यों (जैसे गिटार) के साथ लोकप्रिय बनाया। गुलाम अली ने 'ठुमरी अंग' को ग़ज़ल में समाहित किया।

अध्याय 9: आधुनिक समय में चुनौतियाँ और परिवर्तन

प्रसार: सोशल मीडिया और 'कोक स्टूडियो' जैसे प्लेटफॉर्म्स ने युवाओं में रुचि जगाई है। चुनौतियाँ: - सीखने की प्रक्रिया: ऑनलाइन क्लासेस के कारण गहराई कम हो रही है।- शायरी की समझ: उर्दू के शुद्ध उच्चारण (तलफ़्फ़ुज़) की कमी एक गंभीर समस्या है।- वाणिज्यीकरण: बाज़ार की माँग के कारण गायन में 'चमक-धमक' बढ़ गई है।

अध्याय 10: संगीत शिक्षा में स्थान एवं उपसंहार

संगीत के विद्यार्थियों के लिए ठुमरी और ग़ज़ल का रियाज़ अनिवार्य है क्योंकि यह 'गले की तैयारी' और 'भाव प्रदर्शन' दोनों की क्षमता विकसित करता है। निष्कर्ष: ठुमरी और ग़ज़ल हमारी सांस्कृतिक पहचान हैं। ये हमें मानवीय संवेदनाओं और जीवन के दर्शन से जोड़ती हैं। इनका संरक्षण आने वाली पीढ़ियों के लिए आवश्यक है।

संदर्भ सूची (Extended Bibliography)

1. भारतीय संगीत का इतिहास – वि.ना. भातखंडे
2. उपशास्त्रीय संगीत का सौंदर्यशास्त्र – डॉ. प्रेमलता शर्मा
3. ग़ज़ल की दुनिया – मजरूह सुल्तानपुरी एवं अन्य
4. Thumri in Historical Perspective – Peter Manuel
5. भारतीय संगीत के सिद्धांत – विष्णु दिगंबर पलुस्कर
6. संगीत विशारद – वसंतराव राजोपाध्ये7. ग़ज़ल का व्याकरण – ज्ञान प्रकाश विवेक

m.n 9340320397/8959229222

www.bohalshodhmanjusha.com Bohal Shodh Manjusha ISSN: 2395-7115
Impact Factor: 8.642 June 2026 Page No. : 18-21
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

रामायण में ज्ञान दृष्टि

डॉ० रंजना गुप्ता,
एसोसिएट प्रोफेसर,
हिंदी विभाग, हरियाणा संस्कृत विद्यापीठ, पलवल

शोध सार
वर्तमान को सजाने- संवारने के लिए अतीत से सामग्री लेने का चलन पुरातन है। अपने अतीत या इतिहास को जानकर ही हम अपने वर्तमान और भविष्य को बेहतर बना सकते हैं। भारतीय सभ्यता और संस्कृति का पहला सुदीर्घ आख्यान वाल्मीकि रामायण में ही मिलता है, जिसकी रचना श्री राम के समकालीन कवि महर्षि वाल्मीकि ने की थी। रामायण युग आदर्श सभ्यता और संस्कृति का युग है। रामाख्यान को सर्वांगरूपेण आदर्श के धरातल पर स्थापित करने का श्रेय मध्यकालीन हिंदी कवि भक्त-शिरोमणि गोस्वामी तुलसीदास को प्राप्त है। जिन्होंने रामचरितमानस की रचना कर संक्रमणकालीन डूबते हिंदू समाज को राम भक्ति की सुदृढ़ नौका प्रदान की। रामायण में विषय वस्तु की उदात्तता, घटनाओं का वैचित्र्यपूर्ण विन्यास, भाषा की प्रांजलता एवं मनोरमता के मधुर विन्यास के साथ ही साथ भारत का गौरवशाली प्राचीन समुन्नत समाज चित्रित है। 'रामायण' में भारतीय जीवन-दर्शन एवं मनीषी कवियों का सामाजिक, राजनीतिक एवं धार्मिक ज्ञान बिखरा पड़ा है। वाल्मीकि-रामायण में प्रशासन और प्रबंधन का अत्यंत उपयोगी ज्ञान दिया गया है।

भारतीय ज्ञान परंपरा के अनेक कोष हैं। मनुष्य के मन-मस्तिष्क अथवा आत्मा को संतुष्टि एवं सुख प्रदान करने वाले ज्ञान कोषों के पट को समय-समय पर खोलना आवश्यक है, जिससे वर्तमान पीढ़ी अपनी विरासत को पहचाने और इसका लाभ उठा सके। भारतीय ज्ञान परंपरा का सर्वाधिक प्रचलित एवं लोकप्रिय कोष 'रामायण' ही है; जिसकी रचना संस्कृत भाषा में महर्षि वाल्मीकि ने, अब से लगभग पांच हजार वर्ष पूर्व की थी। उसके पश्चात् संस्कृत, हिंदी, बांग्ला, असमिया, मराठी, तमिल, तेलुगू, गुजराती आदि अनेकानेक भाषाओं में रामायण पुनः पुनः रची गई।

मध्य युग में विभिन्न भारतीय भाषाओं के बीच हिंदी देश की मुख्य भाषा बन गई । जन सामान्य को संस्कृत पढ़ने व समझने में कठिनाई होते देखकर गोस्वामी तुलसीदास ने हिंदी में राम कथा का सविस्तार, बड़ा सुंदर वर्णन किया और वह कलियुग के वाल्मीकि कहलाए-'वाल्मीकि तुलसी भयो'।

वाल्मीकि-रामायण में कोरी कल्पना का आश्रय नहीं लिया गया है, बल्कि उसका धरातल अधिकांशतः वास्तविक एवं ऐतिहासिक है। 'रामायण' हो अथवा 'रामचरितमानस' हमारे महाकवियों का उद्देश्य- एक आदर्श समाज की स्थापना करना, ही रहा है।

'रामायण' महाकाव्य का अनुशीलन करने से ज्ञात होता है कि महर्षि वाल्मीकि महाज्ञानी थे। उन्हें राजनीति का भी बड़ा सूक्ष्म ज्ञान था। अयोध्याकांड के शततमः सर्ग में तथा युद्धकांड के द्वादश सर्ग में उन्होंने उच्च कोटि की राजनीति की शिक्षा दी है। अयोध्याकांड में जब भरत चित्रकूट आते हैं, तब राम उनकी और राज्य की कुशल पूछने के बहाने उन्हें श्रेष्ठ राजनीति का उपदेश देते हैं। वे कहते हैं -"एक राजा या युवराज को पिता के समान गुरुजनों,भृत्यों, वृद्धों तथा वैद्यों आदि आदरणीय जनों का आदर अवश्य करना चाहिए।"1 कुशल राज्य-प्रबंधन के लिए यहां भृत्यों अर्थात् सेवकों का भी आदर करने की बात कही गई है। यह कितनी अच्छी और सही बात है!

कवि बताता है कि आपके सलाहकार कैसे होने चाहिए- "अच्छी मंत्रणा ही राजाओं की विजय का मूल कारण होता है। इसलिए नीतिशास्त्र में निपुण मंत्री होने चाहिए साथ ही वे शूरवीर, शास्त्रज्ञ, जितेंद्रिय, कुलीन तथा मन की बात को समझ लेने योग्य व्यक्ति होने चाहिए।"2 राम अपने अनुज भरत को समझाते हैं कि "किसी गूढ़ विषय पर बहुत लोगों के साथ विचार नहीं करना। तुम्हारे भावी कार्यक्रमों के विषय में दूसरे देश के राजाओं को पहले से पता नहीं चलना चाहिए।"3 उनसे सावधान रहना चाहिए।

महर्षि वाल्मीकि कहते हैं कि "हजारों मूर्खों के बदले एक विद्वान को अपने पास रखना चाहिए, क्योंकि विद्वान् व्यक्ति ही संकट के समय महान कल्याण कर सकता है।"4 भगवान राम भरत को आगे समझाते हैं कि नायक को अधिक कठोर भी नहीं होना चाहिए क्योंकि "अधिक कठोरता करने पर भी प्रजा उद्विग्न होकर शासकों का अनादर व तिरस्कार करने लगती है, जैसे पवित्र याजक पतित यजमान का तथा स्त्रियां कामाचारी पुरुष का तिरस्कार कर देती हैं।"5

एक सेनापति क्या विशेषताएं होनी चाहिए इस विषय में भी महाकवि वाल्मीकि ने लिखा है-

"शूरवीर, सदा संतुष्ट रहने वाले, धैर्यवान, बुद्धिमान, पवित्र तथा रणकर्म-दक्ष पुरुष को ही सेनापति बनाया जाना चाहिए।" अपने सैनिकों तथा अधीनस्थों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए इस पर भी महाकवि ने दृष्टिपात किया है- "रण-कुशल प्रधान-प्रधान योद्धाओं का राजा के द्वारा सत्कारपूर्वक सम्मान किया जाता रहना चाहिए तथा सैनिकों को समय पर अविलंब वेतन व भत्ते आदि दिए जाने चाहिए अन्यथा सैनिक अपने स्वामी पर कुपित हो सकते हैं, जिससे भयंकर अनर्थ हो सकता है।"6

राजदूत के विषय में कवि कहता है कि "राजदूत अपने ही देश का निवासी, विद्वान् , कुशल, प्रतिभाशाली और जैसा कहा जाए वैसी ही बात दूसरे के सामने कहने वाला तथा सद् -असद् विवेक युक्त होना चाहिए।"7 वे यह भी कहते हैं कि "जिन शत्रुओं को राज्य से निकाल दिया है, यदि वे पुनः लौटकर आते हैं, तो उनको दुर्बल समझकर उनकी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए।"8 अर्थात् उनसे सावधान रहना चाहिए।

रामायण में भगवान राम अपने छोटे भाई भरत, जो की चौदह वर्षों के लिए राज्य भर संभालने जा रहा है, को समझाते हैं कि "एक अच्छे राजा में ये चौदह दोष नहीं होने चाहिए- नास्तिकता, असत्य भाषण, क्रोध, प्रमाद, दीर्घ सूत्रता , ज्ञानी पुरुषों का संग न करना, आलस्य, पंचेंद्रियों के वशीभूत रहना, राज कार्यों के विषय में अकेले ही विचार करना, प्रयोजन को न समझने वाले मूर्खों से सलाह लेना, निश्चित किए हुए कार्यों का शीघ्र प्रारंभ न करना, गुप्त मंत्रणा को सुरक्षित न रखना, मांगलिक अनुष्ठान न करना, तथा कई शत्रुओं पर एक साथ चढ़ाई कर देना।"9 ये अवगुण किसी राजा

को असफल बना देते हैं और राष्ट्र एवं प्रजा संकट में पड़ जाते हैं। राज कार्य के विषय में स्वयं अकेले विचार करना और निर्णय ले लेना अच्छा नहीं बताया गया है वास्तव में देखा जाए तो यह विचार लोकतांत्रिक हैं।

अयोध्या कांड के प्रारंभ में हम देखते हैं कि जब राजा दशरथ अपने ज्येष्ठ पुत्र राम का राज्याभिषेक करना चाहते हैं, तो अपने सभी सामंतों को बुलाकर उनसे विचार विमर्श करते हैं। वे कहते हैं कि "यदि इसके अतिरिक्त भी कोई सबके हितकर बात हो, तो आप लोग उसे सोचें, क्योंकि मध्यस्थ पुरुषों का विचार, एक पक्षीय पुरुष की अपेक्षा विलक्षण होता है, वह पूर्व पक्ष और अपर पक्ष को लक्ष्य करके किया गया होने के कारण अधिक अभ्युदय करने वाला होता है।"10

'रामायण' के युद्धकांड के द्वादश सर्ग में रावण के प्रति उसके छोटे भाई विभीषण के द्वारा अनेक नीतिपरक वचन कहे गए हैं। विभीषण कहता है, "हे दशानन! जो राजा सब राजकार्य न्यायपूर्वक करता है, उसकी बुद्धि निश्चय पूर्ण होने के कारण उसे पीछे पछताना नहीं पड़ता। जो शत्रु अपने विपक्षी के बल को अपने से अधिक देखकर भी हर काम में जल्दबाजी करता है तो उसके दमन के लिए विपक्षी इस तरह छिद्र ढूंढते रहते हैं जैसे पक्षी दुर्लभ क्रौंच पर्वत को लांघकर आगे बढ़ने के लिए उसके छिद्रों का आश्रय लेते हैं।"11

विभीषण यह भी कहता है- "हे राजन् ! निरंतर प्रिय बोलने वाले पुरुष तो इस संसार में सुलभ है, किंतु अप्रिय व हितकारी बात करने वाले और सुनने वाले दोनों ही दुर्लभ है।"12 अर्थात् यदि हितकारी बात अप्रिय भी हो, तब भी हमें उसको सुनना चाहिए और उसे मनाना भी चाहिए। यदि रावण विभीषण की बात मान लेता तो उसका सर्वस्व विनाश होने से बच जाता।

तुलसीदास ने अपने रामचरितमानस में भी स्थान-स्थान पर जनमानस में ज्ञानोदय करवाने का प्रयास किया है। वे कहते हैं कि राज्य की रक्षा तभी तक होती है, जब तक राजा के सचिव, गुरु और वैद्य निर्भय होकर उसे उसकी अच्छाई-बुराई, मंगल-अमंगल की बात बताते हैं अर्थात् नायक में अपनी आलोचना सुनने का धैर्य होना चाहिए और तदनुसार अपने को सुधारने के लिए भी उद्यत रहना चाहिए।

"सचिव बैद गुरु तीन जो प्रिय बोलहिं भय आस।
राज धर्म तन तीन कर होइहि बेगहि नास ।।"13

तुलसीदास ने कर (टैक्स)के विषय में भी बहुत सुंदर बात कही है। वे कहते हैं कि राजा को सूर्य की तरह होना चाहिए। जब वह लोगों से ले तो किसी को पता न चले, अर्थात् कर बहुत कम ले और जब दे तो सबको हर्षित कर दे-

"बरसत हरषत लोग सब, करषत लखै न कोय।
तुलसी प्रजा सुभाग ते, भूप भानु सो होय।।"14

'रामायण' में जितने विस्तार और सूक्ष्मता से राजनीति की शिक्षा दी गई है, वह राज्य के कुशल-प्रबंधन के लिए ही नहीं, वरन् किसी भी संस्था के कुशल-प्रबंधन के लिए अत्यंत उपयोगी ज्ञान है। रामायण की समग्र कथावस्तु और चरित्र-चित्रण में ही परोक्षतः ज्ञान ग्रथित है, तथापि अयोध्याकांड के चित्रकूट प्रसंग में राज्य-प्रबंधन के लिए, जो शिक्षा दी गई है, उसकी एक-एक बात आज भी प्रासंगिक है।

संदर्भ:-

1. वाल्मीकि, रामायण,अयोध्याकांड, सर्ग 100,श्लोक संख्या 13
2. वाल्मीकि, रामायण,अयोध्याकांड, सर्ग 100 , श्लोक संख्या 15- 16

3. वही, श्लोक संख्या 18 -20
4. वही, श्लोक संख्या 23 -24
5. वही, श्लोक संख्या 27 -28
6. वही ,श्लोक संख्या 31-33
7. वही, श्लोक संख्या 35
8. वही, श्लोक संख्या 37
9. वही,65-67
10. वाल्मीकि, रामायण, युद्धकांड, सर्ग 12 , श्लोक संख्या 30, 33
11. वही, सर्ग 16, श्लोक संख्या 21
12. वाल्मीकि, रामायण, अयोध्याकांड, सर्ग 2, श्लोक संख्या 16
13. तुलसीदास ,रामचरितमानस,अयोध्याकांड, दोहा 315/1
14. वही, दोहा 315/5
15.

www.bohalshodhmanjusha.com Bohal Shodh Manjusha ISSN: 2395-7115
Impact Factor: 8.642 June 2026 Page No. : 22-25
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

ਅਜਮੇਰ ਸਿੰਘ ਔਲਖ ਦੇ ਨਾਟਕਾਂ ਵਿੱਚ ਪੇਸ਼ ਨਾਟ ਜੁਗਤਾਂ

ਡਾ. ਲਖਵਿੰਦਰ ਕੌਰ,
ਅਸਿਸਟੈਂਟ ਪ੍ਰੋਫੈਸਰ,
ਪੰਜਾਬੀ ਵਿਭਾਗ, ਡੀ.ਏ.ਵੀ ਕਾਲਜ, ਬਠਿੰਡਾ,

ਅਜਮੇਰ ਸਿੰਘ ਔਲਖ ਨੇ ਪੰਜਾਬੀ ਨਾਟ - ਜਗਤ ਵਿੱਚ ਆਪਣਾ ਨਾਟਕੀ ਸਫ਼ਰ 1973-74 ਦੌਰਾਨ ਸ਼ੁਰੂ ਕੀਤਾ। ਅਜਮੇਰ ਸਿੰਘ ਔਲਖ ਨੇ ਸਭ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਪੰਜਾਬੀ ਸਾਹਿਤ ਲਈ ਕਵਿਤਾ, ਨਾਵਲ ਅਤੇ ਕਹਾਣੀਆਂ ਦੀ ਰਚਨਾ ਕੀਤੀ ਪਰੰਤੂ ਉਹਨਾਂ ਨੂੰ ਸਾਹਿਤ ਦੇ ਖੇਤਰ ਵਿੱਚ ਸਭ ਤੋਂ ਵੱਧ ਪ੍ਰਸਿੱਧੀ ਨਾਟਕ ਲਿਖਣ ਕਰਕੇ ਹੀ ਪ੍ਰਾਪਤ ਹੋਈ ਅਤੇ ਅੱਜ ਉਹਨਾਂ ਦਾ ਪੰਜਾਬੀ ਸਾਹਿਤ ਵਿੱਚ ਸਿਰਮੌਰ ਸਾਹਿਤਕਾਰਾਂ ਵਿੱਚ ਨਾਮ ਆਉਂਦਾ ਹੈ। ਮਾਨਸਾ ਕਾਲਜ ਵਿੱਚ ਪੰਜਾਬੀ ਲੈਕਚਰਾਰ ਦੀ ਨੌਕਰੀ ਕਰਦੇ ਆਪ 'ਪੰਜਾਬੀ ਸਾਹਿਤ ਸਭਾ' ਦੇ ਪ੍ਰਧਾਨ ਵੀ ਰਹੇ ਅਤੇ ਕਾਲਜ ਦੇ ਮੈਗਜ਼ੀਨ 'The Ideal' ਦੇ ਪੰਜਾਬੀ ਸੈਕਸ਼ਨ ਦੇ ਸੰਪਾਦਕ ਵਜੋਂ ਵੀ ਭੂਮਿਕਾ ਨਿਭਾਈ। ਅਜਮੇਰ ਸਿੰਘ ਔਲਖ ਨੇ ਆਪਣਾ ਪਹਿਲਾ ਨਾਟਕ ਬਾਬਾ ਬੰਦਾ ਸਿੰਘ ਬਹਾਦਰ ਦੀ ਕੁਰਬਾਨੀ ਨੂੰ ਮੁੱਖ ਰੱਖ ਕੇ 'ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਅਤੇ ਇਨਸਾਫ਼' 1972 ਵਿੱਚ ਲਿਖਿਆ। ਇਸ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਹੀ ਉਹਨਾਂ ਦਾ ਝੁਕਾਅ ਨਾਟਕ ਸਿਰਜਣਾ ਅਤੇ ਉਹਨਾਂ ਦੀ ਪੇਸ਼ਕਾਰੀ ਵੱਲ ਵੱਧ ਹੁੰਦਾ ਗਿਆ। ਅਜਮੇਰ ਸਿੰਘ ਔਲਖ ਨੇ 'ਈਦਰਾ ਕਦੀਬਰਾ' ਨਾਟਕ ਨੂੰ ਸੋਧ ਕੇ ਉਸ ਦਾ ਨਾਮ 'ਇਸ਼ਕ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਹੱਡੀ ਰਚਿਆ' ਕਰ ਦਿੱਤਾ ਪਰੰਤੂ ਬਾਅਦ ਵਿੱਚ ਇਹ ਵੀ ਨਾਮ ਬਦਲ ਕੇ ਇਸ ਨਾਟਕ ਦਾ ਨਾਮ 'ਅਰਬਦ ਨਰਬਦ ਧੁੰਧੂਕਾਰਾ' ਰੱਖ ਦਿੱਤਾ। ਅਜਮੇਰ ਸਿੰਘ ਔਲਖ ਆਂਚਲਿਕ ਨਾਟਕਕਾਰ ਦੇ ਤੌਰ ਤੇ ਪ੍ਰਸਿੱਧ ਹੋਇਆ। ਉਸ ਨੇ ਬਹੁਤ ਸਾਰੇ ਨਾਟਕਾਂ ਦੀ ਰਚਨਾ ਕੀਤੀ। ਉਸ ਦੇ ਪ੍ਰਮੁੱਖ ਨਾਟਕ 'ਅਰਬਦ ਨਰਬਦ ਧੁੰਧੂਕਾਰਾ, ਬਗਾਨੇ ਬੋਹੜ ਦੀ ਛਾਂ,ਤੂੜੀ ਵਾਲਾ ਕੋਠਾ, ਇੱਕ ਰਮਾਇਣ ਹੋਰ,ਭੱਠ ਖੇੜਿਆਂ ਦਾ ਰਹਿਣਾ, ਭੱਜੀਆਂ ਬਾਹੀਂ, ਸੱਤ ਬਗਾਨੇ, ਗਾਨੀ, ਕਿਹਰ ਸਿੰਘ ਦੀ ਮੌਤ,ਇੱਕ ਸੀ ਦਰਿਆ, ਝਨਾਂ ਦੇ ਪਾਣੀ,ਇਸ਼ਕ ਬਾਝ ਨਮਾਜ਼ ਦਾ ਹੱਜ ਨਾਹੀ,ਨਿੱਕੇ ਸੂਰਜਾਂ ਦੀ ਲੜਾਈ,ਅਵੇਸਲੇ ਯੁੱਧਾਂ ਦੀ ਨਾਇਕਾ, ਅਤੇ ਨਿਉਂ-ਜੜ੍ਹ ਆਦਿ ਹਨ।

ਅਜਮੇਰ ਸਿੰਘ ਔਲਖ ਯਥਾਰਥਵਾਦੀ ਨਾਟਕਕਾਰ ਸੀ। ਉਹ ਆਪਣੀ ਸਵੈਜੀਵਨੀ ਵਿੱਚ ਵੀ ਖੁਦ ਇਹ ਗੱਲ ਕਹਿੰਦੇ ਹਨ ਕਿ ਇੱਕ ਦੋ ਨਾਟਕਾਂ ਨੂੰ ਛੱਡ ਕੇ ਉਸਦੇ ਲਗਭਗ ਸਾਰੇ ਨਾਟਕ ਹੀ ਯਥਾਰਥਵਾਦੀ ਪ੍ਰਕਿਰਤੀ ਵਾਲੇ ਹਨ। ਅਜਮੇਰ ਸਿੰਘ ਔਲਖ ਨੇ ਆਪਣੇ ਨਾਟਕਾਂ ਵਿੱਚ ਮਲਵਈ ਉਪ-ਭਾਸ਼ਾ ਦੀ ਵਰਤੋਂ ਵਧੇਰੇ ਕੀਤੀ ਹੈ ਕਿਉਂਕਿ ਉਹ ਆਪ

ਮਾਲਵੇ ਖਿੱਤੇ ਨਾਲ ਸੰਬੰਧ ਰੱਖਦੇ ਸਨ। ਉਹਨਾਂ ਨੇ ਮਾਲਵੇ ਦੇ ਇਲਾਕੇ ਦੇ ਲੋਕਾਂ ਦੀਆਂ ਸਮੱਸਿਆਵਾਂ ਨੂੰ ਉਹਨਾਂ ਦੀ ਹੀ ਭਾਸ਼ਾ ਵਿੱਚ ਪੇਸ਼ ਕਰਕੇ ਪੰਜਾਬੀ ਸਾਹਿਤ ਵਿੱਚ ਸਫਲਤਾ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕੀਤੀ। ਉਸਦੇ ਨਾਟਕਾਂ ਵਿੱਚ ਪੇਸ਼ ਪਾਤਰ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਦੀਆਂ ਉਹਨਾਂ ਹੀ ਸਮੱਸਿਆਵਾਂ ਨੂੰ ਭੋਗਦੇ ਨਜ਼ਰ ਆਉਂਦੇ ਹਨ ਜੋ ਸਾਡੇ ਆਲੇ- ਦੁਆਲੇ ਹਰ ਰੋਜ਼ ਵਾਪਰਦੀਆਂ ਹਨ।

ਨਾਟਕ ਦੀ ਸਮੁੱਚੀ ਨਾਟ- ਯੋਜਨਾ ਵਿੱਚ ਨਾਟਕ ਵਿੱਚ ਪੇਸ਼ ਨਾਟ- ਜੁਗਤਾਂ ਮਹੱਤਵਪੂਰਨ ਭੂਮਿਕਾ ਨਿਭਾਉਂਦੀਆਂ ਹਨ ਅਤੇ ਉਸ ਨੂੰ ਇੱਕ ਨਾਟ- ਰੂਪ ਵਜੋਂ ਸਾਕਾਰ ਕਰਦੀਆਂ ਹਨ। ਇਹਨਾਂ ਦਾ ਸਬੰਧ ਨਾਟਕ ਵਿੱਚ ਵਰਤੀਆਂ ਜਾਂਦੀਆਂ ਉਹਨਾਂ ਸਭ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੀਆਂ ਵਿਧੀਆਂ ਅਤੇ ਵਸਤਾਂ ਨਾਲ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਜੋ ਨਾਟਕ ਨੂੰ ਇੱਕ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਰੂਪ ਪ੍ਰਦਾਨ ਕਰਦੀਆਂ ਹਨ।

ਅਜਮੇਰ ਸਿੰਘ ਔਲਖ ਯਥਾਰਥਵਾਦੀ ਨਾਟਕਕਾਰ ਹੋਣ ਕਰਕੇ ਉਹ ਆਪ ਨਾਟਕਾਂ ਵਿੱਚ ਮਲਵਈ ਭਾਸ਼ਾ ਦੀ ਵਰਤੋਂ, ਹਿੰਦੀ ਅਤੇ ਅੰਗਰੇਜ਼ੀ ਭਾਸ਼ਾ ਦੀ ਵਰਤੋਂ, ਗਾਲ੍ਹਾਂ ਦਾ ਪ੍ਰਯੋਗ, ਤਕੀਆ ਕਲਾਮ ਦੀ ਵਰਤੋਂ,ਅਸ਼ੁੱਧ ਉਚਾਰਨ, ਤੋਤਲਾਪਣ, ਯਥਾਰਥਕ ਵਾਤਾਵਰਨ ਦੀ ਸਿਰਜਣਾ ਅਤੇ ਧੁਨੀ ਪ੍ਰਭਾਵਾਂ ਆਦਿ ਦੀ ਵਰਤੋਂ ਕਰਦਾ ਹੈ। ਇਹਨਾਂ ਨਾਟ- ਜੁਗਤਾਂ ਹੀ ਔਲਖ ਦੇ ਯਥਾਰਥਵਾਦੀ ਨਾਟਕਾਂ ਨੂੰ ਇੱਕ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਰੂਪ ਪ੍ਰਦਾਨ ਕਰਦੀਆਂ ਹਨ ਅਤੇ ਉਸ ਦੇ ਯਥਾਰਥਵਾਦੀ ਨਾਟਕਾਂ ਨੂੰ ਬਾਕੀ ਦੇ ਪੰਜਾਬੀ ਨਾਟਕਕਾਰਾਂ ਤੋਂ ਅਲੱਗ ਦਰਸਾਉਂਦੀਆਂ ਹਨ। ਇਸ ਵਿੱਚ ਪਾਤਰਾਂ ਦਾ ਆਲਾ- ਦੁਆਲਾ, ਉਹਨਾਂ ਦੀ ਸਮਾਜਿਕ ਹਾਲਤ ਅਤੇ ਉਹਨਾਂ ਦੀ ਭਾਸ਼ਾ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਹਨ। ਆਪਣੇ ਨਾਟਕਾਂ ਵਿੱਚ ਅਜਮੇਰ ਸਿੰਘ ਔਲਖ ਇਸ ਪ੍ਰਕਾਰ ਨਾਟ ਜੁਗਤਾਂ ਦੀ ਵਰਤੋਂ ਕਰਦਾ ਹੈ।

ਅਜਮੇਰ ਸਿੰਘ ਔਲਖ ਆਪਣੇ ਨਾਟਕਾਂ ਵਿੱਚ ਉਪ- ਭਾਸ਼ਾ ਦੀ ਜੁਗਤ ਸਭ ਤੋਂ ਵੱਧ ਵਰਤਦਾ ਹੈ। ਜਿਸ ਅਧੀਨ ਉਹ ਆਪਣੇ ਮਾਲਵੇ ਇਲਾਕੇ ਦੀ ਮਲਵਈ ਭਾਸ਼ਾ ਨੂੰ ਆਪਣੇ ਨਾਟਕਾਂ ਦਾ ਆਧਾਰ ਬਣਾਉਂਦਾ ਹੈ। ਉਪ -ਭਾਸ਼ਾ ਦਾ ਪ੍ਰਯੋਗ ਕਿਸੇ ਵੀ ਯਥਾਰਥਵਾਦੀ ਨਾਟਕ ਨੂੰ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਪ੍ਰਕਾਰ ਦਾ ਮੁਹਾਂਦਰਾ ਪ੍ਰਦਾਨ ਕਰਵਾਉਂਦਾ ਹੈ। ਜਦੋਂ ਨਾਟਕ ਵਿਚਲੇ ਪਾਤਰ ਉਸ ਸਮਾਜਿਕ ਆਲੇ- ਦੁਆਲੇ ਦੀ ਸਥਾਨਿਕ ਭਾਸ਼ਾ ਦਾ ਪ੍ਰਯੋਗ ਕਰਦੇ ਹਨ ਤਾਂ ਉਹ ਵਧੇਰੇ ਯਥਾਰਥਕ ਪ੍ਰਤੀਤ ਹੁੰਦੇ ਹਨ। ਭਾਸ਼ਾ ਨੂੰ ਵਧੇਰੇ ਯਥਾਰਥਕ ਬਣਾਉਣ ਲਈ ਨਾਟਕਕਾਰ ਆਪਣੇ ਨਾਟਕਾਂ ਵਿੱਚ ਮੁਹਾਵਰੇ, ਗਾਲ੍ਹਾਂ ਅਤੇ ਤਕੀਆ ਕਲਾਮ ਦੀ ਵਰਤੋਂ ਵੀ ਕਰਦਾ ਹੈ। ਅਜਮੇਰ ਸਿੰਘ ਔਲਖ ਦੇ ਨਾਟਕ 'ਬਗਾਨੇ ਬੋਹੜ ਦੀ ਛਾਂ' ਵਿੱਚ ਮਲਵਈ ਭਾਸ਼ਾ ਦਾ ਯਥਾਰਥਕ ਰੰਗਣ ਸਪੱਸ਼ਟ ਨਜ਼ਰ ਆਉਂਦਾ ਹੈ।

" ਪੀਤਾ- ਉਹਦੀ ਕੁਦਰਤ ਦਾ ਵੀ ਕੋਈ ਭੇਤ ਨਹੀਂ ਆਉਂਦਾ, ਜਦੋਂ ਲੋੜ ਹੋਊ ਉਦੋਂ ਸੋਕੇ- ਡੋਬੇ ਰੱਖੂ, ਆਹ ਪਰ ਜਦੋਂ ਲੋਕਾਂ ਨੇ ਅਜੇ ਲਾਂਗੇ ਨੀ ਸੀ ਚੱਕੇ, ਉਦੋਂ ਤਿੰਨ ਦਿਨ ਹਟਿਆ ਈ ਨੀਂ, ਮਾਰ ਜਲ- ਥਲ ਏਕ ਕਰ-ਤੀ।

ਗੱਜਣ - ਜਲ -ਥਲ ਕਿਹਾ ਤਾਂ ਬੜਾ ਕਿਹਾ।ਆਹ ਰੱਲੇ -ਜੋਗੇ ਆਲੀ ਬਾਹੀ 'ਤੇ ਤਾਂ ਐਹੋ ਜੀ ਗੜੇ-ਮਾਰੀ ਕੀਤੀ ਬਈ ਫਨਾਹ ਅਠਾਤੀ ਫੜ ਕੇ। "[1]

ਅਜਮੇਰ ਸਿੰਘ ਔਲਖ ਆਪਣੇ ਨਾਟਕਾਂ ਵਿੱਚ ਗਾਲ੍ਹਾਂ ਦੀ ਜੁਗਤ ਵੀ ਖੁੱਲ ਕੇ ਵਰਤਦਾ ਹੈ। ਇਹਨਾਂ ਦੇ ਨਾਟਕਾਂ ਵਿੱਚ ਗਾਲ੍ਹਾਂ ਦੀ ਵਰਤੋਂ ਕਈ ਥਾਵਾਂ ਉੱਪਰ ਸੁਭਾਵਿਕ ਰੂਪ ਵਿੱਚ ਵੀ ਹੋਈ ਮਿਲਦੀ ਹੈ ਪਰੰਤੂ ਕਈ ਥਾਵਾਂ ਵਿੱਚ ਪ੍ਰਕ੍ਰਿਤੀਵਾਦ ਦੇ ਨਜ਼ਦੀਕ ਜਾਪਦੀ ਹੈ ਜੋ ਕਿ ਯਥਾਰਥਵਾਦੀ ਨਾਟਕ ਦੇ ਨਿਯਮਾਂ ਦੀ ਅਨੁਸਾਰੀ ਨਹੀਂ ਲੱਗਦੀ। ਅਜਮੇਰ ਸਿੰਘ ਔਲਖ ਆਪਣੇ ਨਾਟਕਾਂ ਵਿੱਚ ਸੁਪਨਿਆਂ ਦੀ ਜੁਗਤ ਵੀ ਵਰਤਦਾ ਹੈ। ਉਸ ਦੇ 'ਬੇਗਾਨੇ ਬੋਹੜ ਦੀ ਛਾਂ' ਅਤੇ 'ਸੱਤ ਬਗਾਨੇ' ਨਾਟਕਾਂ ਵਿੱਚ ਸੁਪਨਿਆਂ ਦੀ ਜੁਗਤ ਦੋ ਰੂਪਾਂ ਵਿੱਚ ਕੀਤੀ ਦਿਖਾਈ ਦਿੰਦੀ ਹੈ,ਇੱਕ ਸੁਪਨੇ ਨੂੰ ਕਾਰਜ ਰੂਪ ਵਿੱਚ ਵਿਖਾਉਣਾ ਅਤੇ ਦੂਸਰਾ ਸੁਪਨੇ ਵਿੱਚ ਸੁਣੀਆਂ ਆਵਾਜ਼ਾਂ ਨੂੰ ਸੁਣਾਉਣਾ। 'ਬੇਗਾਨੇ ਬੋਹੜ ਦੀ ਛਾਂ' ਨਾਟਕ ਵਿੱਚ

ਗੱਜਣ ਸਿੰਘ ਸੁੱਤੇ ਹੋਏ ਸੁਪਨ ਅਵਸਥਾ ਵਿੱਚ ਵਿਚਰਦਾ ਹੈ ਜਿਸ ਅਧੀਨ ਉਸ ਨੂੰ ਸੁਪਨੇ ਅੰਦਰ ਆਵਾਜ਼ਾਂ ਬੇਚੈਨ ਕਰਦੀਆਂ ਹਨ।

(ਗੱਜਣ ਦੀ ਨੀਂਦ ਥੋੜ੍ਹੀ ਉਚਾਟ ਹੋ ਜਾਂਦੀ ਹੈ ਤੇ ਉਹ ਪਾਸੇ- ਮਾਰਨ ਲੱਗ ਪੈਂਦਾ ਹੈ, ਪਰ ਜਾਗਦਾ ਨਹੀਂ। ਸੁਪਨੇ ਵਿੱਚ ਵੱਖ- ਵੱਖ ਆਵਾਜ਼ਾਂ ਉਸ ਨੂੰ ਸੁਣਾਈ ਦਿੰਦੀਆਂ ਹਨ।)

"ਗੁਰਨਾਮ ਕੌਰ ਦੀ ਆਵਾਜ਼- ਚੰਗਾ ਰਹਿੰਦੇ ਵੀ ਰੱਖ ਦੇ"! ਕਸਰ ਨਾ ਛੱਡੀਂ। ਤੂੰ ਜੱਟਾ ਮੇਰੇ ਪੁੱਤਾਂ ਨੂੰ ਮੰਗਤਾ ਬਣਾ ਕੇ ੂਠਾ ਫੜਾਉਣੈ, ਫੜਾ ਦੀਂ। ਤੇਰੇ ਚਾਅ ਨਾ ਦਿਲ 'ਚ ਰਹਿ ਜਾਣ ਕਿਤੇ।

ਗੇਲੇ ਦੀ ਆਵਾਜ਼- ਗਰਜਾਂ ਕੀ ਤੈਂ ਟੱਟੂ ਦੀਆਂ ਪੂਰੀਆਂ ਕੀਤੀਐ?ਕੋਈ ਵਿਆਹ ਨੀਂ ਕੀਤਾ, ਸ਼ਾਦੀ ਨੀਂ ਕੀਤੀ?ਹੂੰ! ਗਰਜਾਂ ਪੂਰੀਆਂ ਕੀਤੀਐਂ ਇਹਨੇ।"[2]

ਅਜਮੇਰ ਸਿੰਘ ਔਲਖ ਆਪਣੇ ਨਾਟਕਾਂ ਵਿੱਚ 'ਛਾਇਆ' ਦੀ ਜੁਗਤ ਵੀ ਵਰਤਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਜੁਗਤ ਦੁਆਰਾ ਕਿਸੇ ਆਪ੍ਰਕ੍ਰਿਤਿਕ ਪਾਤਰ ਨੂੰ ਮੰਚ ਉੱਪਰ ਪੇਸ਼ ਕੀਤਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਇਹ ਪਾਤਰ ਦਰਸ਼ਕਾਂ ਨੂੰ ਮੰਚ ਉੱਪਰ ਦਿਖਾਈ ਦਿੰਦਾ ਹੈ, ਗੱਲਾਂ ਕਰਦਾ ਹੈ ਪਰੰਤੂ ਨਾਟਕ ਵਿਚਲੇ ਪਾਤਰਾਂ ਨੂੰ ਇਹ ਦਿਖਾਈ ਨਹੀਂ ਦਿੰਦਾ। 'ਸੱਤ ਬਗਾਨੇ' ਨਾਟਕ ਦੀ ਅੱਠਵੀਂ ਝਾਕੀ ਵਿੱਚ ਜੈਕੁਰ ਮੰਚ ਉੱਪਰ ਸੰਵਾਦ ਬੋਲਦੀ ਦਿਖਾਈ ਦਿੰਦੀ ਹੈ ਜੋ ਨਾਟਕ ਦੀ ਕਹਾਣੀ ਵਿੱਚ ਜੀਵਤ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦੀ। ਉਹ ਸਿਰਫ਼ ਆਪਣੇ ਪਤੀ ਬਚਨੇ ਨੂੰ ਹੀ ਦਿਖਾਈ ਦਿੰਦੀ ਹੈ, ਉਸ ਨਾਲ ਹੀ ਗੱਲਾਂ ਕਰਦੀ ਹੈ। ਕੋਲ ਖੜ੍ਹੇ ਧਰਮੇ ਨੂੰ ਜੋ ਕਿ ਉਸ ਦਾ ਪੁੱਤਰ ਹੈ ਕੁੱਝ ਨਹੀਂ ਦਿਖਦਾ ਅਤੇ ਨਾ ਹੀ ਉਸ ਦੀ ਆਵਾਜ਼ ਸੁਣਾਈ ਦਿੰਦੀ ਹੈ।

" ਉਇ ਧਰਮਿਆ! ਅਹੁ ਤੇਰੀ ਬੇਬੇ ਆਉਂਦੀ ਐ ਉਇ:-

ਬਚਨਾ - ਸਹੁੰ ਢਾਂਡੀ ਦੀ, ਝੂਠ ਨੀ!ਅਹੁ ਦੇਖ ਬਾਰ 'ਚ ਖੜੀ!ਆ- ਜਾ,ਆ -ਜਾ ਜੈਕੁਰੇ,ਐਇੰ ਬਾਹਰ ਕਿਉਂ ਖੜ- ਗੀ ਸੱਤ- ਬਗਾਨਿਆਂ ਵਾਂਗੂ? ਆ-ਜਾ ਲੰਘਿਆ,ਉਹੀ ਘਰ ਐ- ਤੇਰਾ........।

(ਧਰਮਾ ਕੁਝ ਚਿੰਤਾ ਨਾਲ ਪਹਿਲਾਂ ਬੂਹੇ ਵੱਲ ਵੇਖਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਫਿਰ ਬਚਨੇ ਵੱਲ। 'ਜੈਕੁਰ' ਆਉਂਦੀ ਹੈ।ਸਿਰਫ਼ ਬਚਨੇ ਨੂੰ 'ਦਿਸਦੀ 'ਹੈ।)"[3]

ਅਜਮੇਰ ਸਿੰਘ ਔਲਖ ਆਪਣੇ ਨਾਟਕਾਂ 'ਬਗਾਨੇ ਬੋਹੜ ਦੀ ਛਾਂ', 'ਇੱਕ ਰਮਾਇਣ ਹੋਰ', 'ਭਠ ਖੇੜਿਆਂ ਦਾ ਰਹਿਣਾ', 'ਗਾਨੀ', 'ਇਸ਼ਕ ਬਾਝ ਨਮਾਜ਼ ਦਾ ਹੱਜ ਨਾਹੀ' ਆਦਿ ਵਿੱਚ ਗੀਤਾਂ ਦੀ ਜੁਗਤ ਵਰਤਦਾ ਹੈ। ਇਹਨਾਂ ਨਾਟਕਾਂ ਵਿੱਚ ਗੀਤਾਂ ਦਾ ਪ੍ਰਯੋਗ ਜੀਵਨ ਦੇ ਸਹਿਜ ਅੰਗ ਵਜੋਂ ਨਹੀਂ ਹੋਇਆ ਮਿਲਦਾ ਬਲਕਿ, ਨਾਟਕਾਂ ਦੇ ਭਾਵਾਂ ਨੂੰ ਡੂੰਘਾਈ ਦੇਣ ਲਈ ਜਾਂ ਵਿਸ਼ੇ ਦੀ ਵਿਆਖਿਆ ਕਰਨ ਲਈ ਕੀਤਾ ਗਿਆ ਮਿਲਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਦੇ ਨਾਲ ਹੀ ਨਾਟਕਕਾਰ ਆਪਣੇ ਨਾਟਕਾਂ ਵਿੱਚ ਕੋਰਸ ਦੀ ਜੁਗਤ ਨੂੰ ਵੀ ਬਹੁਤ ਪ੍ਰਭਾਵਸ਼ਾਲੀ ਤਰੀਕੇ ਨਾਲ ਪੇਸ਼ ਕਰਦਾ ਹੈ।ਨਾਟਕੀ ਕਾਰਜ ਉੱਪਰ ਟੀਕਾ ਟਿੱਪਣੀ ਕਰਨ,ਨਾਟਕ ਦੀ ਕਹਾਣੀ ਨੂੰ ਅੱਗੇ ਤੋਰਨ ਅਤੇ ਨਾਟਕ ਵਿੱਚ ਅੱਗੇ ਵਾਪਰਨ ਵਾਲੀਆਂ ਘਟਨਾਵਾਂ ਦਾ ਸੰਕੇਤ ਦੇਣ ਲਈ ਕੋਰਸ ਦੀ ਜੁਗਤ ਵਰਤੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ।

ਅਜਮੇਰ ਸਿੰਘ ਔਲਖ ਆਪਣੇ ਨਾਟਕਾਂ ਵਿੱਚ ਮਨਬਚਨੀ ਦੀ ਜੁਗਤ ਦੀ ਵਰਤੋਂ ਵੀ ਕਰਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਵਿਧੀ ਦੁਆਰਾ ਪਾਤਰ ਆਪਣੀ ਮਨੋਦਸ਼ਾ ਨੂੰ ਪੇਸ਼ ਕਰਦਾ ਹੈ ਜਾਂ ਕਿਸੇ ਗੱਲ ਨੂੰ ਸੁਣ ਕੇ ਉਸ ਉੱਪਰ ਪ੍ਰਤੀਕ੍ਰਿਆ ਕਰਦਾ ਹੈ,ਵਿਅੰਗ ਕਰਦਾ ਜਾਂ ਤਰਕ ਵਿਤਰਕ ਕਰਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਵਿਧੀ ਦੁਆਰਾ ਇਹ ਸਮਝਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਕਿ ਮੰਚ ਉੱਪਰ ਮੌਜੂਦ ਪਾਤਰਾਂ ਨੂੰ ਇਹ ਗੱਲ ਸੁਣਾਈ ਨਹੀਂ ਦਿੰਦੀ ਅਤੇ ਦਰਸ਼ਕਾਂ ਨੂੰ ਸੁਣਦੀ ਹੈ।

"ਸੁੱਕੀ ਕੁੱਖ ਨਾਟਕ ਵਿੱਚ-

ਧੰਨੋ -(ਆਪਣੇ ਹੀ ਮਨ ਨਾਲ) ਅੱਜ ਜੁੱਮਾ ਹੋ ਗਿਆ। ਸ਼ਨੀਵਾਰ ਨੂੰ ਕਿਹੈ ਸੰਤ ਮਹਾਰਾਜ ਨੇ...... ਭੈਰੋਂ ਦਾ ਪਾਠ, ਕੱਲ੍ਹ ਨੂੰ.......?ਨਹੀਂ,ਨਹੀਂ। ਇਹ ਪਾਪ ਮੈਥੋਂ ਨੀ ਹੋਣਾ।......... ਅਵਦੀ ਲਾਦ ਖ਼ਾਤਰ ਕਿਸੇ ਦੇ ਬੱਚੇ?....... ਨਈਂ, ਨਈਂ?"[4]

ਅਜਮੇਰ ਸਿੰਘ ਔਲਖ ਆਪਣੇ ਨਾਟਕਾਂ 'ਇਕ ਰਮਾਇਣ ਹੋਰ ','ਢਾਂਡਾ', 'ਸੁੱਕੀ ਕੁੱਖ', 'ਇਸ਼ਕ ਬਾਝ ਨਮਾਜ਼ ਦਾ ਹੱਜ ਨਾਹੀਂ',ਅਤੇ 'ਕਲਖ ਹਨੇਰੇ' ਆਦਿ ਨਾਟਕਾਂ ਵਿੱਚ ਪਿੱਠ ਭੂਮੀ ਦੀ ਜੁਗਤ ਦੀ ਵਰਤੋਂ ਕਰਦਾ ਹੈ। ਪਿੱਠ ਭੂਮੀ ਵਿੱਚੋਂ ਆਵਾਜ਼ਾਂ ਆ ਸਕਦੀਆਂ ਹਨ ਪਰੰਤੂ ਇਹ ਕਥਾਨਕ ਦਾ ਅੰਗ ਹੋਣੀਆਂ ਚਾਹੀਦੀਆਂ ਹਨ। ਇਹਨਾਂ ਨਾਟਕਾਂ ਵਿੱਚ ਪਿੱਠ ਭੂਮੀ ਦੀ ਵਰਤੋਂ ਥੀਮ ਨੂੰ ਵਧੇਰੇ ਪ੍ਰਭਾਵਸ਼ਾਲੀ ਬਣਾਉਣ ਲਈ ਕੀਤੀ ਗਈ ਹੈ। ਇਸ ਦੇ ਨਾਲ ਹੀ ਅਜਮੇਰ ਸਿੰਘ ਔਲਖ ਫਲੈਸ਼ ਬੈਕ ਦੀ ਜੁਗਤ ਨੂੰ ਵੀ ਬਹੁਤ ਢੁਕਵੇਂ ਤਰੀਕੇ ਨਾਲ ਪੇਸ਼ ਕਰਦਾ ਹੈ। ਫਲੈਸ਼ ਬੈਕ ਜੁਗਤ ਦੁਆਰਾ ਪਹਿਲਾਂ ਵਾਪਰੀਆਂ ਘਟਨਾਵਾਂ ਨੂੰ ਮੰਚ ਉੱਪਰ ਬਦਲੇ ਕ੍ਰਮ ਅਨੁਸਾਰ ਪੇਸ਼ ਕੀਤਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਵਰਤਮਾਨ ਕਾਲ ਵਿੱਚ ਅਤੀਤ ਦੀਆਂ ਘਟਨਾਵਾਂ ਨੂੰ ਇਸ ਵਿਧੀ ਦੁਆਰਾ ਸੁਚੱਜੇ ਢੰਗ ਨਾਲ ਪੇਸ਼ ਕੀਤਾ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ। ਉਸ ਦੇ 'ਸੱਤ ਬੇਗਾਨੇ' ਨਾਟਕ ਵਿੱਚ 'ਫਲੈਸ਼ ਬੈਕ' ਦੀ ਵਰਤੋਂ ਕਈ ਥਾਵਾਂ ਉੱਪਰ ਪੇਸ਼ ਕੀਤੀ ਗਈ ਹੈ। ਇਸ ਤੋਂ ਇਲਾਵਾ ਅਜਮੇਰ ਸਿੰਘ ਔਲਖ ਪ੍ਰਤੀਕਾਂ ਦੀ ਜੁਗਤ, ਮੂਕ ਅਭਿਨੈ ਦੀ ਜੁਗਤ, ਮਨਬਚਨੀ ਦੀ ਜੁਗਤ, ਸੂਤਰਧਾਰ ਦੀ ਜੁਗਤ, ਨਟ - ਨਟੀ ਦੀ ਜੁਗਤ ਆਦਿ ਦੀ ਵਰਤੋਂ ਢੁਕਵੇਂ ਰੂਪ ਵਿੱਚ ਕਰਦਾ ਹੈ।

ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਅਸੀਂ ਕਹਿ ਸਕਦੇ ਹਾਂ ਕਿ ਅਜਮੇਰ ਸਿੰਘ ਔਲਖ ਦੁਆਰਾ ਰਚੇ ਗਏ ਨਾਟਕਾਂ ਵਿੱਚ ਪੇਸ਼ ਕੀਤੀਆਂ ਨਾਟ -ਜੁਗਤਾਂ ਨਾਟਕ ਦੇ ਵਿਸ਼ਾ ਵਸਤੂ,ਭਾਸ਼ਾ, ਪਾਤਰ ਆਦਿ ਨੂੰ ਵਧੇਰੇ ਪ੍ਰਭਾਵਸ਼ਾਲੀ ਬਣਾਉਂਦੀਆਂ ਪ੍ਰਤੀਤ ਹੁੰਦੀਆਂ ਹਨ। ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਉਹਨਾਂ ਦੀਆਂ ਵਰਤੀਆਂ ਨਾਟ- ਜੁਗਤਾਂ ਦੇ ਅਧਿਐਨ ਉਪਰੰਤ ਵੇਖ ਸਕਦੇ ਹਾਂ ਕਿ ਨਾਟਕਕਾਰ ਯਥਾਰਥਵਾਦੀ ਨਾਟ- ਸ਼ੈਲੀ ਅਧੀਨ ਆਪਣੀ ਨਾਟ- ਰਚਨਾ ਕਰਦਾ ਹੈ। ਨਾਟਕ ਵਿੱਚ ਪੇਸ਼ ਨਾਟ- ਸ਼ੈਲੀ ਕਿਸੇ ਨਿਯਮ ਜਾਂ ਮੰਤਵ ਨੂੰ ਲੈ ਕੇ ਚਲਦੀ ਹੈ ਅਤੇ ਨਾਟਕ ਵਿੱਚ ਪੇਸ਼ ਸਾਰੀਆਂ ਨਾਟ- ਜੁਗਤਾਂ ਉਸ ਮੰਤਵ ਦੀ ਪੂਰਤੀ ਨੂੰ ਸਿੱਧ ਕਰਦੀਆਂ ਹਨ। ਜਿਵੇਂ ਯਥਾਰਥਵਾਦੀ ਨਾਟ- ਸ਼ੈਲੀ ਮੰਚ ਉੱਪਰ ਅਸਲੀਅਤ ਦਾ ਭਰਮ ਪੇਸ਼ ਕਰਦੀ ਹੈ ਤਾਂ ਨਾਟਕ ਵਿੱਚ ਪੇਸ਼ ਸਾਰੀਆਂ ਨਾਟ - ਜੁਗਤਾਂ ਉਸੇ ਮੰਤਵ ਨੂੰ ਸਿੱਧ ਕਰਨ ਵਾਲੀਆਂ ਹੁੰਦੀਆਂ ਹਨ।

ਹਵਾਲੇ

1. ਅਜਮੇਰ ਸਿੰਘ ਔਲਖ, ਬੇਗਾਨੇ ਬੋਹੜ ਦੀ ਛਾਂ, ਚੇਤਨਾ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਨ, ਲੁਧਿਆਣਾ,2009, ਪੰਨਾ-11
2. ਉਹੀ, ਪੰਨਾ -33
3. ਉਹੀ, ਸੱਤ ਬਗਾਨੇ, ਲੋਕਗੀਤ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਨ, ਚੰਡੀਗੜ੍ਹ, ਚੌਥਾ ਸੰਸਕਰਣ, 2004, ਪੰਨਾ -63
4. ਉਹੀ, ਸੁੱਕੀ ਕੁੱਖ, ਬੇਗਾਨੇ ਬੋਹੜ ਦੀ ਛਾਂ, ਪੰਨਾ -57

ਮੋ: 9464212113

ਈਮੇਲ-lakhwinderbrar5775@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com Bohal Shodh Manjusha ISSN: 2395-7115
Impact Factor: 8.642 June 2026 Page No. : 26-29
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

डॉ. मंजीत की कहानी 'एक और द्रोणाचार्य' में शैक्षणिक विवेचना

मनीषा देवी
शोधार्थी (हिन्दी-विभाग),
महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

शिक्षा मानव जीवन की वह पूंजी है जो संसार में ज्ञान व प्रगति के सभी बंद दरवाजे खोल देती हैं| शिक्षा से मानव जीवन की दशा और दिशा दोंनो ही बदल जाती है| यह मनुष्य का आभूषण है, जो अनेकों गुण उसमें समाहित कर देती है| शिक्षा से व्यक्ति की ही नहीं समाज व संस्कृति की भी प्रगति होती है| **"यह एक ऐसी प्रक्रिया है जो जीवन भर चलती रहती है और जीवन के प्रत्येक अनुभव से उसमें वृद्धि होती है"1** शैक्षणिक विवेचन से हमारा अभिप्राय शिक्षा को केंद्र में रखकर उस पर किया गया विचार- विमर्श, विचार-विनिमय तथा वाद-विवाद है| यह शिक्षा का यथार्थ परिदृश्य समाज के समक्ष खड़ा कर शिक्षा में सुधार की मांग का पक्षधर है| शास्त्रों में कहा गया है कि यदि कुल्हाड़ा पैना न हो तो अधिक बल और प्रयास करना पड़ता है और यदि पर्याप्त पैना हो तो थोड़े से प्रयास से ही लक्ष्य संधान किया जा सकता है| इस तरह शिक्षा के नियम निर्धारित होते हैं कि मनुष्य ज्ञान की प्राप्ति केवल कठिन प्रयास से ही कर सकता है| शिक्षा जीवन की समस्याओं से निपटने के लिए ज्ञान प्राप्त करने की एक प्रक्रिया है| **"शिक्षा लक्ष्य प्राप्त करने हेतु सीखने-सिखाने की प्रक्रियाओं, कार्यों, अपेक्षाओं, प्रभाव और वास्तविकताओं के परिप्रेक्ष्यों में यह एक बहुत व्यापक और साथ ही जटिल प्रक्रिया है|"2** आज की आधुनिक शिक्षा प्रणाली में कई खामियाँ है| अंग्रेजी में प्राप्त शिक्षा तो इतनी दोषपूर्ण है कि शिक्षा जैसी पवित्र प्रणाली में असमानता, शोषण, प्रतिभा का दमन इन सब के साथ धनार्जन की स्वार्थपूर्ण नीतियां भी इसमें प्रवेश पा रही है| आज की युवा पीढ़ी इस शिक्षा के कारण मर्यादाहीनता तथा मूल्यहीनता से ग्रसित होती जा रही है| **"इस अशांति और अराजकता के कई कारण हो सकते हैं| पर इनको गंभीरता से समझने और जांचने की जरूरत है| ऐसा लगता है कि वर्तमान असाधारण, अशांति के मूल और छात्र तथा युवा वर्ग के मस्तिष्क में व्याप्त निराशा की भावना है|"3** वर्तमान शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन की आवश्यकता है अन्यथा समाज का भविष्य गहरे गर्त की ओर मुड़ सकता है|

डॉ. मंजीत का साहित्य केवल ज्ञानार्जन का ही नहीं बल्कि सामाजिक परिवर्तन, नैतिक विकास और मानवीय मूल्यों की स्थापना को सशक्त आधार प्रदान करता है| उनके साहित्य में शिक्षा व्यवस्था की विसंगतियों के साथ-साथ शिक्षक की भूमिका, विद्यार्थियों की मानसिकता व शिक्षा के बाजारीकरण जैसे ज्वलंत विषयों से पाठक को अवगत करा समाज में चेतना का संचार किया गया है| डॉ. मंजीत के शैक्षिक विचार अत्यंत व्यापक

तथा सामाजिक सरोकार से जुड़े हैं| वे ऐसी शिक्षा व्यवस्था की पक्षधर हैं, जो समाज को संवेदनशील, विद्यार्थियों व शिक्षकों को जागरूक बनाएं| वे हमें आदर्श शिक्षा व्यवस्था की ओर मुड़ने के लिए प्रेरित करती हैं|

शिक्षा का बाजारीकरण:- शिक्षा का बाजारीकरण आज के भौतिकवादी युग का बहुत चर्चित व गंभीर विषय है| शिक्षा जिसके माध्यम से ज्ञान, मूल्य तथा सामाजिक विकास की प्राप्ति की जा सकती है, वही आज मुनाफा कमाने का माध्यम तथा प्रतिस्पर्धा का क्षेत्र बन गया है| इतना ही नहीं गुरु शिष्य परंपरा का पवित्र रिश्ता जिसमें गुरु ज्ञान देकर शिष्य को बनाता तथा शिष्य गुरु को ही सर्वश्रेष्ठ मान आज्ञा पालन करता चला जाता था, वह आज के युग में पूर्ण रूप से बदल चुका हैं| आज के युग में यह केवल पैसा कमाने का एक माध्यम बन गया है| डॉ. मंजीत की कहानी में दिखाया गया है कि विपुल जंगल में घूमने वाला गरीब एकलव्य न था| उसके पिता की सरकारी नौकरी थी, तो पैसे की कोई कमी न थी| उसके एक दोस्त ने भी उसे गुरु भक्ति और पैसे लगाने की सशक्त मनोवृत्ति को समझा दिया था| शीघ्र ही एक गुरु से भी उसका संपर्क हो गया| गुरु ने उसे पीएच.डी. कराने की हामी भर दी| उसे रात को अकेले अपने घर के बाहर बनी कोठरी में रहकर चौकीदारी का कार्य भी सौंप दिया गया| बड़ी मुश्किल से उसने अपनी गुरु भक्ति का परिचय दिया| अगले दिन सुबह उसे और उसकी माँ को गुरु ने अपने घर बुलाया और पचास हजार रूपये की सीधी मांग कर दी| **"गुरु को प्रणाम करके विपुल ने बुलाने का कारण पूछा तो गुरु जी ने बिना किसी भूमिका के सीधे-सपाट शब्दों में विपुल की माँ के सामने पचास हजार की माँग रख दी| पचास हजार... इतनी मोटी रकम वो भी केवल रजिस्ट्रेशन के लिए| माँ बेटे को काटो तो ख़ून नहीं|"4** फिर यह रकम गुरु को अर्पित कर दी गई| इसके बाद भी पीएच.डी.उसे ख़ून के आँसू रुलाती रही| शोध प्रबंध जमा करते समय गुरु की नजर उसके फ्लैट पर थी, उसे देने की हाँ करने पर ही वह शोध प्रबंध जमा कर पाया| यह कहानी शिक्षा के क्षेत्र में गुरु शिष्य संबंध के बदलते स्वरूप को ही नहीं दिखाती बल्कि इस क्षेत्र के बाजारीकरण या मुनाफाखोरी के यथार्थ को धरातल पर लाकर रेखांकित करती है|

नैतिकता बनाम व्यवसायिकता:- शिक्षा के क्षेत्र में शोध मार्गदर्शन की जिम्मेदारी, बौद्धिकता, ईमानदारी आदि ये सभी सिद्धांत इस कहानी में ही नहीं बल्कि आज के युग में हमारे समाज से भी तिलांजलि दे चुके हैं| आजकल ये सिद्धांत शैक्षणिक स्तर पर मुनाफा कमाने, शोषण करने और प्रतिभा को दबाने का क्षेत्र होते जा रहे हैं| शिक्षा से इस प्रकार नैतिकता का ह्रास होना विचारणीय विषय है| इस कहानी एक और द्रोणाचार्य में जब विपुल में प्रतिभा होने पर भी उसका कहीं पीएच.डी. में दाखिला नहीं हो रहा था, तो उसका एक दोस्त अपने प्रोफेसर के अनुसार उसे समझाता है| **"एक दिन विपुल के एक दोस्त ने उसे पीएच०डी० करने का राज़ समझाया| पीएच०डी० होती है यहाँ तीन तरीकों से। नंबर एक- यदि कोई संबंध रखता हो उच्च जाति से और राजनीति में हाथ हो| नंबर दो- हो तुम्हारे पास पैसा अपार, जिसे तुम अपने निर्देशक के निर्देशानुसार लूटा सको और नंबर तीन- यदि तुम दलित जाति से हो तो तुम्हारे पास पैसों के साथ ही होनी चाहिए एकलव्य जैसी गुरु भक्ति|"5** इस तरह जैसे ही विपुल हाँ करता है, दोस्त उसे अपने गुरु से मिला देता है| गुरु उससे अपने घरेलू कार्य ही नहीं करवाता बल्कि समय-समय पर उससे पैसे की सेवा भी लेता है| एक मेधावी छात्र होते हुए भी वह शिक्षा बनाम व्यवसायिकता का शिकार हो जाता है| शिक्षा व्यवस्था में बाजारीकरण और अनैतिकता हमारे शिक्षा तंत्र को ही नहीं बल्कि देश को भी खोखला कर रही है| आज शिक्षा जैसे पवित्र स्थल को कुछ व्यक्तियों ने बदनाम कर व्यवसायिकता का धंधा वहाँ पर खोल दिया है| जिसमें लगातार शिक्षा का बहिष्कार होता है| मेधावी छात्रों की बलि चढ़ती है और अयोग्य छात्र पैसों के दम पर आगे बढ़ते चले जाते हैं|

गुरु दक्षिणा बनाम बौद्धिक लूट:- गुरु दक्षिणा- गुरु द्वारा सिखाए गए ज्ञान के लिए स्वेच्छा से दी गई भेंट है| **"हमारे यहाँ गुरु को ब्रह्मा, विष्णु, महेश और साक्षात परब्रह्मा, ब्रह्मा का दर्शन करने वाला और अज्ञान**

नष्ट करने वाला बताया गया है|"6 महाभारत की पौराणिक कथा में जब एकलव्य गुरु द्रोण की मूर्ति स्थापित कर ज्ञान प्राप्त कर लेता है, तो गुरुदेव अपने शिष्यों सहित जंगल में से गुजर रहे थे| तब एकलव्य ने एक कुत्ते का मुँह अपने तीरों से बंद कर दिया, उसे बिना नुकसान पहुंचाएँ| जब गुरु द्रोण ने यह चमत्कार देखा तो वह एकलव्य से मिले और उसके गुरु का परिचय जानना चाहा| गुरु के रूप में स्वयं को पाया तो गुरु दक्षिणा के आग्रह पर उसने एकलव्य का दाहिना अँगूठा मांग लिया और एकलव्य ने स्वेच्छा से उसके चरणों में अर्पित कर दिया| लेकिन प्रस्तुत कहानी में विपुल अपनी इच्छा से नहीं बल्कि दबाव में पैसे लुटाने, सेवा करने को विवश था| यदि वह पचास हजार नहीं देता, तो उसका रजिस्ट्रेशन नहीं होता| यदि वह फ्लैट देने की हामी न करता तो उसका शोध प्रबंध जमा न होता| यदि वह उसके घरेलू कार्य न करता तो उसका गुरु रुष्ट हो उसके कार्य में बाधा डाल देता| इस प्रकार जो विपुल ने किया वह गुरु दक्षिणा नहीं बल्कि उसकी मजबूरी थी| यह गुरु द्वारा किया गया एक तरफा शोषण कहा जा सकता है|

अधिकारों के प्रति सचेत:- यह कहानी शिक्षा प्राप्त कर रहे प्रत्येक बच्चे को प्रेरित करती है| साथ ही पीएच०डी० में शोधार्थियों के साथ होने वाले आर्थिक, मानसिक शोषण से पाठक को रूबरू कराती है| यह उस यथार्थ को कथानक का रूप दे रही है, जो हमारी शिक्षा प्रणाली में घुसकर समाज को खोखला बना देते हैं| यह कहानी विपुल नामक शोधार्थी के शोषण को दिखा उसके दबाव व दर्द को बयां करती है| इस कहानी के अंत में जब गुरु विपुल से फ्लैट की मांग करता है, तो मझधार में खड़ा हो जाता है| यदि वह फ्लैट के लिए हाँ न करें तो उसकी पीएच०डी० की डिग्री नहीं मिल पाएगी| यदि हां करता है तो उसे अपना फ्लैट गुरु को देना होगा| अब गुरु द्रोण एकलव्य रूपी विपुल का अंगूठा ही नहीं एक-एक करके सभी अंग दान में ले चुका था| अब वह पत्नी से लिपटकर जोर-जोर से रोने लगता है| उसकी पत्नी समझदार थी। उन दोनों ने एक योजना बनाई और फ्लैट देने की हां कर दी| शीघ्र ही विपुल को डिग्री मिल गई| लेकिन फ्लैट अभी गुरु को नहीं मिला, तो गुरु अपनी पत्नी सहित विपुल के घर पहुँच गया| अब वर्षों की दबी आग भभक उठी| अब विपुल और उसकी पत्नी शोषण का बदला लेने को तैयार थे| **"दोनों के दिलों की आग ने भयंकर रूप धारण कर लिया| विपुल की पत्नी ने उन्हें खरी-खरी सुनाते हुए कहा- 'किस फ्लैट की बात कर रहे हो? क्या अधिकार है उस पर आपका? विपुल एकलव्य बना एक-एक अंग काटकर पैसों के रूप में तुम्हें देता रहा और तुम डकारते रहे| यहाँ तक की आज तुम उसके प्राणों की भी मांग करने लगे|"7** विपुल ने भी गुरु के शोषण की याद दिलाई| अब गुरु के हाथों से फ्लैट खिसक चुका था| एकलव्य शोषण के प्रतिकार में खड़ा हो चुका था| यह उसके अपने अधिकारों के प्रति चेतनशील होने का परिणाम था|

निष्कर्ष:- डॉ. मंजीत की कहानी 'एक और द्रोणाचार्य' एक प्रतीकात्मक कहानी है| इस कहानी में पुरानी कथा महाभारत काल के गुरु द्रोण व एकलव्य को आधार बनाकर विपुल व उसके गुरु की कहानी को कथानक का आधार दिया गया है| यह केवल एक कहानी ही नहीं बल्कि यथार्थ परिदृश्य में प्रासंगिकता के साथ पेश शैक्षणिक आधार पर पूर्ण रूप से लागू, पाठक को चेतनशील करने वाली कहानी है| यह कहानी हमें शैक्षणिक संबंधों का पुन:मूल्यांकन कर शिक्षा को सशक्तिकरण की ओर बढ़ा, मानसिक व आर्थिक शोषण का शिक्षा के क्षेत्र से नामोनिशान मिटा समानता तथा प्रतिभा को स्थापित करने की मांग की सिफारिश पेश करती है| शिक्षा के क्षेत्र में न्याय, क्षमता, प्रतिभा, शोषण मुक्ति संबंधी बदलाव की जरूरत है| उच्च स्तर पर शैक्षणिक संबंधों में विश्वास, सम्मान, न्याय होगा, तो शोध का स्तर ही बेहतर नहीं होगा बल्कि समाज प्रगति पथ पर अग्रसर होगा| अत: शिक्षा केवल ज्ञान का हस्तांतरण नहीं हो सकती क्योंकि इसमें समाज का भविष्य जुड़ा है| यह कहानी पाठक के मन

मस्तिष्क पर प्रश्न छोड़ती है कि क्या हमारी शिक्षा प्रणाली ज्ञान, न्याय, मानव व समाज की पक्षधर है या नहीं? आज हमें अनगिनत एकलव्यों के प्रति जवाब देही तय करनी होगी|

संदर्भ ग्रंथ:-

1. आचार्य जैन, प्रेमचंद के निबंध साहित्य में सामाजिक चेतना, पृष्ठ संख्या-31
2. करण चाँद, शिक्षा का दार्शनिक परिप्रेक्ष्य, पृष्ठ संख्या-128
3. जयप्रकाश नारायण, नवभारत टाइम्स, पत्र अप्रैल 1979
4. डॉ. मंजीत, एक और द्रोणाचार्य, पृष्ठ संख्या-35
5. विजेंद्र कुमार वशिष्ठ,भारतीय शिक्षा का इतिहास, पृष्ठ संख्या 29
6. डॉ. मंजीत, एक और द्रोणाचार्य, पृष्ठ संख्या-32
7. वही, पृष्ठ संख्या-38

www.bohalshodhmanjusha.com Bohal Shodh Manjusha ISSN: 2395-7115
Impact Factor: 8.642 June 2026 Page No. : 30-33
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

तरुण भटनागर के उपन्यास साहित्य में युवा चेतना

डॉ. अनीता
सहायक प्रोफेसर हिन्दी
सर छोटूराम राजकीय महिला महाविद्यालय सांपला, रोहतक

युवा वह अवस्था है जो बचपन की चंचलता को छोड़ जवानी की दहलीज में प्रवेश करती है| जहाँ स्वतंत्रता बाँह फैलाए स्वागत के लिए खड़ी होती है| ज्ञान, जिज्ञासा और उत्तेजना इस सफर के साथी होते हैं| किसी भी देश का भविष्य इन्हीं युवाओं की आशा और ऊर्जा पर निर्भर करता है| आज का युवा हर कदम पर अपने बड़ों के आचरण और सलाह से नहीं चलता बल्कि अपनी मनमानी से चलना पसंद करता है| अपनी मनमानी चलाना, अपना मनपसंद कार्य करना, आज के युवाओं में चेतना का विषय है| चेतना अवश्य ही बदलाव की पक्षधर है, लेकिन सब कुछ बदल डालना चेतना नहीं है| वह नए सोच-विचार की शक्ति और जागरूकता को जन्म देती है| पुराने संस्कारों से जीवन में आने वाली कठोरता व कठिनता से निकाल कर सरलता व सहूलियत के अनुसार बदलने का भाव रखना चेतना है| चेतना बदलाव की पक्षधर है तथा युवा वर्ग चेतना का पक्षधर है, उनका अपना अलग ही नजरिया है| **"युवा चेतना का सामान्य अर्थ है 'नयी समझ'| यदि किसी ऐतिहासिक समझ से कुछ अलग हटकर (भाषा, शिल्प, आकार-प्रकार, मानसिकता) किसी में भी है तो वह उस समय की युवा चेतना है|"1** युवा जागृति नवीन अनुभव से इतिहास में स्वयं को स्थापित करने का प्रयास है| युवा की सोच-समझ, मनमानी करने का तरीका, स्वतंत्रता हासिल करने का तरीका या फिर उनके कार्य, हर समय ही गलत नहीं होते बल्कि कई बार वह प्रगति का मार्ग भी खोल देते हैं| प्रत्येक समाज अपने प्रारंभिक क्षणों में ही बैठा नहीं रह सकता|बदलाव प्रकृति का नियम है और समाज में परिवर्तन लाना युवाओं का कार्य है| युवा अपनी चेतना के आधार पर ही समाज में नया बदलाव करते हैं कई बार नए बदलाव समाज की प्रगति के लिए आवश्यक होते हैं| **"युवा चेतना विसंवादी स्थिति का ही नाम है| पुराने को नया करने के प्रयत्न का भी नाम है और अपनी अस्मिता को पूरी तरह समाज सापेक्ष बनाने की चाहत का नाम है|"2** युवा चेतना के साथ-साथ आज के युवा में आधुनिकता के नाम पर अजनबीपन, अनास्था, कुंठा, स्वतंत्र अभिव्यक्ति, क्षमता, विद्रोह आदि भी पनपने लगे हैं| पुराने भारतीय संस्कार या आदर्श युवा वर्ग से दूर होते जा रहे हैं| आज का युवा पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित खान-पान, रहन-सहन, भाषा यहाँ तक की आदर्शों में भी विदेशों की नकल करना पसंद करने लगा है| मीडिया और तकनीकी प्रचार प्रसार ने इसे गति दी है| **"संस्कृति के खुलेपन ने सोशल मीडिया के जरिए नई पीढ़ी को एक 'वास्तु' में तब्दील कर दिया है| नई पीढ़ी इसे 'मॉडर्न' विकास के रूप में एक दीवाने के रूप में स्वीकार करती जा रही है| इससे भारतीयता का उच्चतम भाव कहीं लुप्त हो गया है|"3** लेकिन ऐसा

कतई नहीं है कि आज का युवा भारतीय संस्कृति से नहीं जुड़ा है।आज भी युवा वर्ग में इंसानियत देखी जा सकती है| पाश्चात्य का प्रभाव युवा वर्ग पर अवश्य पडा है लेकिन उच्च आदर्श व संस्कार समाज से अभी समाप्त नहीं हुए है| नए मूल्यों का निर्माण आज के युवा वर्ग को उसके संस्कारों और आदर्श के साथ समझने के लिए आधुनिकता को अपनाकर नवीन मूल्यों के अर्थ की पड़ताल की जाना जरूरी है| आज का युवा नवीन सभ्यता के साथ जुड़कर प्राचीन मूल्यों व संस्कारों को भी नहीं छोड़ पाता। समकालीन लेखकों में सम्मानजनक स्थान पाने वाले लेखक तरुण भटनागर ने अपने उपन्यासों के माध्यम से सामाजिक, सांस्कृतिक, व मानवीय संघर्षों के संदर्भ में युवा चेतना व्यक्त करते हैं| उनका साहित्य युवा पीढ़ी के भीतर उत्पन्न असंतोष, संघर्षशीलता, पहचान बोध, सामाजिक विषमता के प्रति प्रतिरोध तथा मानवीय मूल्यों की खोज स्पष्ट रूप से उजागर करता है| उन्होंने अपने कथा साहित्य में आदिवासी जीवन, हाशिए के समाज तथा बदलते सामाजिक परिवेश से जुड़े पात्रों के माध्यम से युवाओं की संवेदनशील चेतना को मुखरित किया है| उनके साहित्य में युवा चेतना केवल एक आयु विशेष का चित्रण नहीं बल्कि सामाजिक परिवर्तन, संघर्ष, अस्मिता, दिशा और मानवीय मूल्यों की खोज का प्रतीक है|

युवा पात्रों के जरिए समाज की पड़ताल:- लेखक तरुण भटनागर अपने उपन्यास साहित्य में युवा पात्रों के जरिए सामाजिक चेतना, राजनीतिक चेतना, धार्मिक चेतना को वाणी प्रदान करते हैं| "**तरुण भटनागर की युवा चेतना मानवीय करुणा और सामाजिक न्याय पर आधारित है|"5** उनके उपन्यास बेदावा का पात्र अदीब संवेदनशील, तापस अवसरवादी और सुधीर तीनों को जोड़ने वाला है| डॉ. राजू आदिवासी चेतना का केंद्र बिंदु है तथा बट्टू विद्रोही चेतना व प्रेम का पुजारी है| वह सपना देखता है, सच्चाई प्रकट करने के लिए अपने पिता यानी सिस्टम के विरुद्ध विद्रोह कर जाता है| लेकिन सिस्टम का अगला शिकार वह खुद हो जाता है|

संघर्षशील युवा चेतना:- तरुण भटनागर के उपन्यास साहित्य में युवा पात्र सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक स्तर पर अन्याय, शोषण व असमानता के विरुद्ध संघर्ष करते नजर आते हैं| उन्होंने युवाओं की बेचैनी, असंतोष और विद्रोह को यथार्थ का जामा पहना कर पाठक के समक्ष पेश किया है| वे समाज में फैली रूढ़ियों व व्यवस्था का विरोध करते दिखाई पड़ते हैं| 'बेदावा' उपन्यास में पहचान व प्रेम का संकट तथा संघर्षशीलता युवाओं के द्वारा दिखाई गई है| यह एक प्रेम कथा है, जिसमें सुधीर व अपर्णा के प्रेम का संकट तथा अदीब के समक्ष अपनी पहचान का संकट खड़ा होता है| अदीब अपर्णा को बताता है "**जब मैं थोड़ा बड़ा हुआ मेरे अब्बू मुझे लड़का बनना चाहते थे| वे चाहते थे कि मेरे जिस्म में लड़कियों के जो हिस्से हैं उन्हें हमेशा के लिए खत्म कर दिया जाए|... मुझे लड़कियों के साथ रहना अच्छा लगता था, उनके कपड़े, उनकी खुशबू, उनके गहने-जेवर... उनकी सोहबत... पर मैं लड़का बन रहा था| लगातार... मेरे जिस्म को बार-बार काटकर मुझे लड़का बनाया जाता..."6** यह उपन्यास धर्म, लैंगिक पहचान और समय के दबाव में फंसे युवाओं की कहानी है| जीवेश स्कूल में अपर्णा को घूरने वाला लड़का है।उसकी नजर में छपी हिंसा युवा पुरुष मानसिकता का सवाल उठाती है| यह उपन्यास युवा चेतना में प्रेम, जेंडर और धार्मिक पहचान के संकट को सामाजिक धरातल से मानसिक धरातल पर लाकर समाज में जागरूकता लाने की कोशिश करता है| अपर्णा अपने परिवार व समाज से संघर्ष करती है| इन सबके विरुद्ध जाकर वह सुधीर से विवाह कर लेती है, पहले तो माता-पिता उसका विरोध करते हैं, समाज की दुहाई देता है, क्योंकि सुधीर नाबीना अर्थात अंधा था| लेकिन बाद में अपनी बेटी के प्यार के समक्ष सुधीर को स्वीकार कर लेते हैं| अदीब जो की एक किन्नर था, वह धर्म के ठेकेदारों की राजनीति का शिकार हो जाता है| वह मुसलमान था, केवल इसी कारण सारा दोष उस पर डाल दिया जाता है| उस पर देशद्रोह, धर्म, अपमान व बलात्कार जैसे इल्जाम लगा दिए जाते हैं, जबकि वह निर्दोष था| वह संघर्षशील ही अपना जीवन बिताता है,

समाज से लैंगिक आधार पर संघर्ष करता है, उसके बाद धार्मिक आधार पर संघर्ष करता हुआ अपनी जान गवा देता है|

हाशिए के युवाओं की आवाज:- लेखक तरुण भटनागर का उपन्यास साहित्य हाशिए पर रखे गए समाज के युवाओं की आवाज है| उनका उपन्यास साहित्य उस समाज की आवाज को बुलंद करता है, जिन्हें समाज तुच्छ समझ हाशिए पर रखता है| उनका उपन्यास 'राजा, जंगल और काला चाँद' आदिवासी समाज में डॉक्टर राजू जैसे युवा के माध्यम से सुधार लाने की कोशिश करता है| डॉक्टर राजू जब महज नौ वर्ष का था, तभी उसने अपने पिता की जमीन छुड़ाने के लिए जमीदार को पोस्टर पर धमकी भरे लहजे में पोस्टर लिख दिया था और उसके नीचे किसानों के उस गुट का नाम भी लिख दिया था जो जमींदारों का विरोध कर रहे थे| जिसके जरिए उसे अपनी जमीन वापस मिल गई| बड़ा होने पर भी वह आदिवासियों के क्षेत्र में ही रहा, डॉक्टरी का कार्य करता रहा| जब आदिवासियों को राजा के नाम पर गुमराह किया गया, तो वह उन्हें समझाने की पर्याप्त कोशिश करता रहा जिसके कारण उसे मार भी खानी पड़ी और अपनी जान बचाने के लिए वहाँ से भागना भी पड़ा| उपन्यास के अंत तक वह आदिवासियों को समझने व सहायता करने की हर मुव्कल कोशिश करता है| **"रोड बनने के दौरान मारे गए आदिवासियों की मौत के लिए उसने सरकारी सब-इंजीनियर गजोधर को जिम्मेदार माना और कोदरा नामक एक आदिवासी लड़के के कत्ल और जंगल के लोगों को लूटने के लिए उस सुनार को जिम्मेदार माना और फिर उनका कत्ल कर दिया"7** इस तरह उसने अपने पूरे जीवन आदिवासियों के लिए अपनी आवाज बुलंद की, भले ही आदिवासी उसको न समझ पाए हो, लेकिन वह हर समय आदिवासियों के लिए खड़ा रहा| उनके लिए ही उसने जिसको भी दोषी पाया उन सबको मार डाला|

विद्रोह:- उनके उपन्यास साहित्य में पात्र परिस्थितियों से, व्यवस्था के विरुद्ध लड़ते नजर आते हैं| उनके युवा अपने अधिकारों और स्वतंत्रता के साथ सही गलत की समझ को साथ लेकर व्यवस्था के साथ भिड़ जाते हैं| उनके उपन्यास 'लौटती नहीं जो हँसी' में बट्टू लोरमी के बाबूजी की इकलौती संतान है, वह शहर पढ़ने जाता है, वहाँ एक लड़की को पसंद करने लगता है और उसी से शादी करना चाहता है जो कि दूसरे धर्म की थी| जिसके कारण पिता उसे पसंद नहीं करते और कहते हैं **"हरामी कहीं का मुसलमान से इश्क लड़ता है| ऐंड तो देखो ससुर की| अरे हो बट्टू की माँ, कैसे घूर रहा है? तनिक देखो तो जैसे बाप को चबा जाऐगा|"8** वह अपने पिता के खिलाफ विद्रोह करता है और उसी से शादी करने की बात कह देता है| इसके बाद पिता उस लड़की को मरवा देते हैं| उसे अपने पिता के द्वारा की गई सभी हत्याओं की जानकारी थी| उसे पता था कि बाबूजी की हँसी फ्रेब है| वह अपनी प्रेमिका को नहीं बचा पाया, लेकिन अपने दोस्त रामा को बचाना चाहता है उसने कोशिश की कि वह रामा को सब कुछ बता दे| उसने अपनी डायरी में सब कुछ लिख दिया| वह रामा को जंगल, बाबूजी और सभी की मौत के राज बता देना चाहता था| **"बट्टू के शब्द प्रतिकार के शब्द थे| वे विरोधी होकर विलाप कर रहे थे| वे कुछ इस तरह थे मानो डायरी में से कूदकर बाहर निकलेंगे| भागकर पहुँच जाएंगे सारी दुनिया में, हर इंसान के पास और हर किसी को बता देंगे बाबूजी, जंगल, हँसी और लड़ाइयों के मायने|"9** जब बाबूजी को ये सब पता चला तो उसने अपने बेटे को ही अपना अगला शिकार बना लिया|

निष्कर्ष:- तरुण भटनागर के उपन्यासों में युवा चेतना कोरी नारे लगाने वाली तथा यथार्थ दर्शन कराने वाली चेतना नहीं बल्कि सोचने समझने और कीमत चुकाने को तैयार चेतना है| वह अपने उपन्यासों में युवाओं को पात्र बना व्यवस्था व मानसिकता परिवर्तन के सवालों को उठाते हैं| उनके युवा पात्र आधुनिक समाज की समस्याओं से जुझते हुए नई दिशा और मानवीय मूल्यों को स्थापित करने का प्रयास करते हैं|

संदर्भ ग्रंथ:-

1. डॉ० ऋतु मंजरी, समकालीन कहानी में युवा चेतना,, पृष्ठ संख्या-54-55
2. वही, पृष्ठ संख्या-55
3. प्रतियोगिता दर्पण, नवंबर 2017, पृष्ठ संख्या-102
4. डॉ० रामदरश मिश्र, समकालीन हिंदी साहित्य और युवा विमर्श, पृष्ठ संख्या-106
5. तरुण भटनागर, बेदावा, पृष्ठ संख्या- 93-94
6. तरुण भटनागर, राजा, जंगल और काला चाँद, पृष्ठ संख्या-302
7. तरुण भटनागर, लौटती नहीं जो हँसी, पृष्ठ संख्या-70
8. वही, पृष्ठ संख्या-98

www.bohalshodhmanjusha.com Bohal Shodh Manjusha ISSN: 2395-7115
Impact Factor: 8.642 June 2026 Page No. : 34-37
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

'उसका अपना रास्ता' कहानी में युवा वर्ग द्वारा पाश्चात्य संस्कृति का अंधानुकरण

पूनम
शोधार्थी हिंदी–विभाग,
महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय रोहतक

पाश्चात्य संस्कृति का अंधानुकरण भारतीय समाज के लिए घातक सिद्ध हो रहा है| युवा वर्ग भारतीय संस्कृति को दरकिनार कर रहा है| हमारे देश की पहचान अलग है, इसने अनेक धर्मों को अपने अंदर समाहित किया हुआ है| भारत की पहचान अलग है, देश अलग है और धर्म अलग है| बच्चों के पालन पोषण के तौर-तरीके अलग है, तो दूसरे देशों के आचार-विचार को हम कैसे ग्रहण कर सकते हैं| पाश्चात्य देशों में मानवीय संबंधों में सर्वत्र स्वच्छंदता पाई जाती है| इसी स्वच्छंदता को पाने के लिए युवा वर्ग लालायित है| जिसके कारण उनका भविष्य अंधकारमय हो रहा है| स्वच्छंदता भारतीय संस्कृति के विपरीत है| स्वच्छंदता के परिणाम हमें 21वीं सदी के दूसरे दशक में हमारे सामने उभर कर आ रहे हैं| भारतीय सभ्यता में विवाह संस्था को महत्व दिया जाता है, लेकिन पाश्चात्य देशों में के लिव-इन-रिलेशनशिप जैसे संबंधों को बढ़ावा दिया जा रहा है| जिसके कारण भारतीय समाज में असभ्य परीस्थितियाँ पैदा हो रही है| जब हम स्त्री पुरूष के विवाह बिना इकट्ठे रहने के परिणाम को देखते हैं, तो हमें लगता है कि पाश्चात्य संस्कृति का अंधानुकरण भारतीय सभ्यता के लिए घातक है|

युवा वर्ग को भारत में किसी भी संस्कृति के अनुकरण से पहले उनकी जाँच अवश्य करनी चाहिए| अच्छे-बुरे की पहचान युवा वर्ग को होनी चाहिए, नहीं तो हम उन तत्वों को अपनाने लग जाएंगे, जो हमारी सभ्यता और समाज की विचारधारा के खिलाफ है| पाश्चात्य जगत की दौड़ सुख-सुविधाओं की ओर अग्रसर करने वाली है| मानवीय मूल्य का वहाँ कोई स्थान नहीं है| भारतीय सभ्यता मानवीय मूल्यों को अपनाने पर बल देती है| पाश्चात्य संस्कृति जिस चकाचौंध में युवा वर्ग दौड़ रहा है| उसका परिणाम बड़ा घातक है, जिसके कारण वह अपने मार्ग से विचलित हो रहे हैं जैसे दाँत का जबडे से निकलने के बाद कोई वजूद नहीं होता, ठीक वैसे ही यह वर्ग अपनी जड़ों से उखड़ कर सुखपूर्वक जीवन व्यतीत नहीं कर सकता| पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव के कारण युवा वर्ग भौतिक सुख की चाह में अकेलेपन का शिकार हो रहा है| पाश्चात्य संस्कृति में मानवीय संबंधों में स्वच्छंदता है| जबकि भारतीय संस्कृति में प्रत्येक संबंधों को सम्मानजनक स्थान प्राप्त है| संस्कृति के प्रचार का प्रमुख केंद्र मीडिया और चलचित्र है| जिसके जरिए हमारे बच्चे उसका अंधानुकरण कर रहे हैं| धीरेंद्र अस्थाना ने पाश्चात्य संस्कृति के अंधानुकरण को उजागर करते हुए लिखा है कि **"हिंदी फिल्मों के नाम भी अंग्रेजी में होने लगे हैं| अब टारगेट दर्शक एन०आर०आई है या एकदम नयी अंग्रेजी पीढ़ी| कहानी के साथ मेल बैठे या न बैठे लेकिन एक आईटम**

सॉन्ग का होना जरूरी है जिसमें हीरोइन को चड्डी दिखाना अनिवार्य है|"1 पाश्चात्य संस्कृति चलचित्र के माध्यम से हमारे घरों में प्रवेश कर रही हैं| कार्यक्रम के बीच में विज्ञापनों के माध्यम से, तंबाकू, शराब, चुंबन जैसी चीजें आमबात हो गई है जिसका कुप्रभाव युवा वर्ग के मन-मस्तिष्क पर पड़ रहा है| जिसके कारण प्रतिदिन छेड़खानी और बलात्कार जैसी अशोभनीय घटनाएँ हमारे आस-पास घटित हो रही है| आज की युवा पीढ़ी के आकर्षण का केंद्र साहित्य नहीं, सौंदर्य प्रतियोगिताएँ हैं| उर्मिला शिरीष द्वारा रचित कहानी 'उसका अपना रास्ता' में आधुनिक समाज की तेजी से बदलती हुई मानसिकता को उजागर किया गया है| बाजारवाद और भूमंडलीकरण के आकर्षण में डूबी मध्यम वर्गीय लड़कियों की आंतरिक दुनिया को अभिव्यक्ति मिली है| सौंदर्य प्रतियोगिताओं का विश्वव्यापी प्रचार हो रहा है, जिसकी तरफ युवा वर्ग आकर्षित है| सौंदर्य प्रतियोगिताओं का जादुई आकर्षण रातों-रात प्रसिद्धि प्राप्त करना, पैसा कमाने के नए अवसर प्राप्त होना, लोकप्रियता प्राप्त करने को युवा वर्ग लालायित रहता है| इन प्रतियोगिताओं ने गाँव-देहातों, गली-मोहल्लो में तूफान सा ला दिया है| यह जादुई आकर्षण जितना देखने में आसान लगता है| परंतु वास्तविकता कुछ और ही होती है| स्वयं की पहचान बनाए रखने के लिए अनेक बांधाओं को पार करना पड़ता है, तब जाकर सफलता हासिल होती है| कहानी की नायिका वृंदा का व्यक्तित्व और उसकी सगी बहन अनु दी की चिंताएं जैसे दो विपरीत स्वभाव न होकर एक ध्रुव थे| दोनों बहनो की दृष्टियाँ दो, समाज दो, जीवन शैलियों की प्रतिछायाएं थी| दादी तथा माता-पिता की मध्यम वर्गीय सोच, एक लड़की का घर से निकल जाने का संत्रास, उन्माद, दु:साहस, भय असुरक्षा की भावना, अनजाने शहर में खो जाने की चिंता स्वाभाविक है|

कहानी की नायिका वृंदा महाविद्यालय में होने वाली प्रतियोगिताओं में बढ़-चढ़कर भाग लेती है| इन प्रतियोगिता का जादुई आकर्षण वृंदा को अपनी और आकर्षित करने लगा| वृंदा के माता-पिता उसे चिकित्सक बनाना चाहते हैं लेकिन वृंदा विश्व सुंदरी बनकर लोकप्रियता हासिल करना चाहती हैं| उसका मानना है कि जो प्रसिद्धि विश्व सुंदरी बनने पर प्राप्त होगी वह चिकित्सक बनने पर हरगिज नहीं हो सकेगी| वृंदा अपना पसंदीदा कार्य प्रतियोगिताओं को चुनौती है| **"वृंदा ने अपनी देह को शीशे में निहारते हुए पोज बनाया, अंगड़ाई लेकर देह को लचकाया,... फिर कैटवॉक करती हुई बोली अब आ रही है हुस्न की मलिका चाँदनी बिखेरती हुई|"2** वृंदा के माता-पिता भारतीय मूल्यों का हवाला देकर उसे रोकने की कोशिश करते हैं कि सौंदर्य प्रतियोगिता हमारे संस्करो और मान्यताओं के विरुद्ध है| भौतिक सुख की चाह में वृंदा पैसा, ग्लैमर शोहरत, नाम, सब चाहती है| वह अपनी बहन अनु दी को बताती है **"मैं मिस एम०पी० बन गई तो मेरा नाम भी चर्चा में आ जाएगा, फिर मिस इंडिया तक पहुँचने का रास्ता साफ हो जाएगा| ढेर सारा पैसा, विज्ञापन उसके बाद सब कुछ बदल डालूँगी अनु दी, सब कुछ| यह छोटा सा मकान, ये मामूली से सस्ते कपड़े छी:-छी: मन मारकर पहनने पड़ते हैं| यह जंग लगी अलमारी, यह पुराना धुंधला शीशा जिसमें आधा चेहरा लंबा और आधा चौड़ा दिखता है|"3** वृंदा भौतिक सुख की चाह में अंधी हो गई है| वह सही और गलत में फर्क नहीं कर पाती| जिसके कारण उसे अनेक प्रकार की कठनाईओं का सामना करना पड़ता है| मधु कांकरिया ने पाश्चात्य संस्कृति में स्वच्छंद जीवन जीने का मंत्र ढूंढते युवावर्ग की अनुशासनहीनता पर प्रकाश डालते हुए लिखा है **"उसी युवा पीढ़ी के समृद्ध युवा वर्ग की फिजा में पाश्चात्य संस्कृति में ढलकर माइकेल जैक्सन की तरह कमर और कुल्है मटकाने लगे थे| वूमेन और वाइन में अपनी मुक्ति खोज रहे थे| पढ़ी-लिखी मध्यमवर्गीय पीढ़ी का एक तबका रिश्वतखोरी, सट्टेबाजी, दलाली, ब्लैक मार्केटिंग में डूबा हुआ था, तो दूसरी ओर बीए.एम. पास वाला तबका प्राइवेट टयूशन, क्लर्की, पिऊनागिरी, कमीशन, एजेंट, डोर-टू-डोर सेल्समैन एवं मकान की दलाली से लेकर रंडी की दलाली में स्वयं को खापा रहा था| सबसे निचली सीढ़ी पर खड़ा श्रमजीवी वर्ग ठेलागाड़ी, मुटियागिरी, रिक्शा खींचनेवाला, पत्थर जोड़ने, दुकानों का माल घर-घर पहुँचाने, मालगाड़ी ढोने में अपनी जिंदगी के स्वर्णिम**

वर्षों को खपा रहा था"4 पाश्चात्य संस्कृति की अनुशासनहीनता, महत्वाकांक्षी जीवन जीने की ओर अग्रसर होते युवावर्ग का चित्रण किया गया है| वृंदा पर विश्व सुंदरी बनकर लोकप्रियता हासिल करने का भूत सवार है| वह सौंदर्य प्रसाधनों द्वारा स्वयं को खूबसूरत बनाने का भरपूर पर्यत्न करती है| **"तरह-तरह के उबटनों व तेलो से घंटो मालिश करके स्वयं को तरोताजा रखती है| घर के हर शीशे पर, बाथरूम में हर जगह विदेशी-देशी मॉडलों की पोस्टर चिपके हुई थे| गोल-गोल घूमाकर बोलने की विशेष स्टाइल अपना ली थी|"5** अब वृंदा का आदर्श इंदिरा गांधी या मदर टेरेसा नहीं रही बल्कि पाश्चात्य जगत की अभिनेत्री उसका आदर्श बन चुकी थी| पाश्चात्य अभिनेत्रियों की स्वच्छंद सोच वृंदा को अपनी ओर आकर्षित करती है| अब वह पापा की आदर्श बेटी नहीं, बल्कि स्वच्छंद जीवन व्यतीत करना चाहती हैं| वह अपनी इच्छाओं, आकांक्षाओं को सौंदर्य प्रतियोगिताओं के माध्यम से पूर्ण करने को तैयार है|

अब वृंदा ने अपनी हँसी और बातों में कृत्रिमता को अपना लिया है| अब उसकी हँसी दूसरों को खुश करने के लिए निकलती है, दिल की गहराइयों से नहीं| वह अपने सपनों को उड़ान देने के लिए भारतीय सुंदरियों के मिस वर्ल्ड बनने के तौर तरीके सीखना चाहती है| **"जब से भारतीय सौंदर्य को अंतरराष्ट्रीय मंच मिला है तब से वह आसमान को देखती रहती है| उसकी आँखों के सामने वही रंगीन भव्य चमचमाता स्टेज तथा उस पर हँसती मुस्कुराती अपनी अप्रतिम सुंदरता बिखेरती सुंदरियाँ दिखाई देती है| उस स्टेज की चकाचौंध ने उसे पागल बना दिया है|"6** अब वह अपने मुखाकृति की तुलना विश्व सुंदरी से करती है| यह सब कार्य वह अपने पिता से छुपाकर करती है| क्योंकि उसका पिता उसे इन सब चीजों की आज्ञा नहीं देता, लेकिन वास्तविकता को ज्यादा समय तक छुपाए नहीं रखा जा सकता और उसके पिता से उसका एक दिन सामना हो ही जाता है| **"उसने पहली बार पापा के सामने बिना डर लज्जा के अपनी महत्वाकांक्षा प्रकट कर दी| इससे कैरियर बन जाएगा? पापा ने अपने बैग को टेबल पर रखते हुए कहा... सोचा था ये लड़कियाँ अपने पाँवो पर खड़ी हो जायेंगी, ताकि समाज में लड़के ढूँढने में दिक्कत नहीं होगी|"7** वृंदा के परिवार वाले उसे चिकित्सक बनाना चाहते हैं, ताकि वह आत्मनिर्भर बन सके और भविष्य में सभी कठिनाइयों का सामना सफलतापूर्वक कर सके| वृंदा की दीदी बाहरी चकाचौंध को दो दिन की चाँदनी बताकर उसको समझाने का प्रयत्न करती है| परंतु वृंदा पर किसी के समझाने का कोई असर नहीं पड़ता| उसका देर रात तक पार्टी (उत्सव) में मौज-मस्ती करना, सभी को परेशान करता है| उसकी दादी उसे लड़कों की संगत से दूर रहने की सलाह देती है| **"लड़की का चरित्र शीशे की तरह होता है| जरा सी चोट से दरारें पड़ जाती है|"8** वह सभी की बातों को अनसुना करती है और कहती है **"चरित्र! चरित्र क्या हो गया है चरित्र! क्या होता है चरित्र| क्या लड़कों के साथ खड़े हो गये या हँसकर बात कर ली या उनके साथ काम कर लिया तो चरित्र बदल गया| फैशनेबल कपड़े पहन लिए... किसी कांटेंट में भाग ले लिया तो चरित्र बिगड़ गया|"9** उसकी नजर में लड़कों के साथ काम करना पार्टी करना कुछ गलत नहीं है उस पर उसकी दादी की बातों का कोई असर नहीं होता| दोनों में वैचारिक संघर्ष चलता रहता है| दादी का कहना है| **"चार दिन की चाँदनी, फिर अंधेरी रात| सितारों को डूबते वक्त नहीं लगता है, बेटी|"10** दादी की हर बात को वृंदा ने अनदेखा किया| सौंदर्य प्रतियोगिता के आकर्षण ने वृंदा का पूरा जीवन चौपट कर दिया| प्रसिद्ध होने के चक्कर में वह हरीश और पवन नामक व्यक्तियों के संपर्क में आती है, वे दोनों उसे लुभाने वादे करके उसका शारीरिक और मानसिक शोषण करते हैं| अब वृंदा के पास पछताने के सिवाय और कोई रास्ता नहीं है| अगर समय रहते उसने अपने माता-पिता की बातों को मान लिया होता, तो उसकी ऐसी दशा नहीं होती|

निष्कर्ष:- सौंदर्य प्रतियोगिताओं के जादुई आकर्षण ने वृंदा को अपनी ओर आकर्षित कर उसे घर से अकेले बाहर जाने पर मजबूर कर दिया| सौंदर्य प्रतियोगिता के कारण मिलने वाली प्रसिद्धि और प्रतिष्ठा ने उसे घर से बगावत करने

के लिए मजबूर कर दिया| आज भौतिक सुख की चाह में युवा वर्ग अपने भविष्य के सपने संजोने के चक्कर में अपने संपूर्ण जीवन को अंधकारमय बना रहा हैं| पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव और युवा वर्ग की स्वच्छंद प्रवृत्ति के कारण अवैध संबंधों, बलात्कार, डकैती इत्यादि अपराधों की मानो बाढ़ सी आ गई है| आधुनिकता ने मनुष्य को क्षणिक सुख तो प्रदान किया, इसके बदले युवा वर्ग का पूरा जीवन नष्ट कर दिया| अति महत्वाकांक्षी वृंदा जैसी अनेक लड़कियाँ बिना सोचे समझे जिस रास्ते पर चल रही है, उस पर भटक कर अपना जीवन समाप्त नहीं करें बल्कि उस मुसीबत का दृढ़ता के साथ सामना करके जीवन जीने की कोशिश करें| ऐसी अनेक लड़कियाँ हैं, जो अनंत आकाश में उड़ान भरना चाहती हैं| उस उड़ान में जो भय, प्रसन्नता, गिरने-बिखरने की आकांक्षा बनी रहती है| जिसे झेलने का सामर्थ्य भी उनमें होना चाहिए| उर्मिला शिरीष ने ‘उसका अपना रास्ता’ कहानी लिखकर युवावर्ग को सही रास्ते पर चलकर सफलता प्राप्त करने का मार्ग प्रशस्त किया है|

संदर्भ ग्रंथ:-

1. धीरेंद्र अस्थाना, देश निकाला, पृष्ठ संख्या-15
2. उर्मिला शिरीष, चुनी हुई कहानियाँ, उसका अपना रास्ता, पृष्ठ संख्या 103
3. वही, पृष्ठ संख्या-66
4. मधु कांकरिया, पत्ताखोर, पृष्ठ संख्या 52 5.उर्मिला सीरीज, चुनी हुई कहानियाँ, उसका अपना रास्ता, पृष्ठ संख्या 105
5. वही, पृष्ठ संख्या 108
6. वही, पृष्ठ संख्या 109
7. वही, पृष्ठ संख्या 117
8. वही, पृष्ठ संख्या 117
9. वही, पृष्ठ संख्या 118

www.bohalshodhmanjusha.com Bohal Shodh Manjusha ISSN: 2395-7115
Impact Factor: 8.642 June 2026 Page No. : 38-44
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

स्त्री आत्मकथा: अस्मिता और प्रतिरोध की अभिव्यक्ति

Dr. Anupama
Assistant Professor,
Department of Hindi,
Mount Carmel College, Autonomous,

प्रस्तावना :

स्त्री आत्मकथा साहित्य की वह सशक्त विधा है, जिसमें महिला अपने जीवन के अनुभवों, संघर्षों, भावनाओं और सामाजिक यथार्थ को स्वयं के दृष्टिकोण से अभिव्यक्त करती है| यह केवल जीवन-वृतांत नहीं, बल्कि आत्म-अन्वेषण और आत्म-स्वीकृति की प्रक्रिया भी है| स्त्री आत्मकथा में 'मैं' का स्वर अत्यंत महत्वपूर्ण होता है, जो लंबे समय तक पितृसत्तात्मक समाज में दबा रहा| इस विधा के माध्यम से स्त्री अपने अस्तित्व को पहचानने, उसे व्यक्त करने और समाज के सामने स्थापित करने का प्रयास करती है| साहित्य में आत्मकथा विधा का विशेष महत्व है क्योंकि यह व्यक्ति के जीवनानुभवों को प्रमाणिकता और सत्यता के साथ प्रस्तुत करती है| आत्मकथाएँ इतिहास और समाज के वैकल्पिक दस्तावेज़ के रूप में भी कार्य करती हैं, जहाँ हाशिए पर रहे वर्गों- विशेषकर स्त्रियों की- आवाज़ सामने आती है| यह विधा केवल व्यक्तिगत कथा तक सीमित नहीं रहती, बल्कि व्यापक सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक संदर्भों को भी उद्घाटित करती है| स्त्री आत्मकथाओं की आवश्यकता और प्रासंगिकता इसीलिए और भी बढ़ जाती है क्योंकि पारंपरिक साहित्य में स्त्रियों के अनुभवों को अक्सर उपेक्षित या विकृत रूप में प्रस्तुत किया गया है| स्त्री आत्मकथाएँ इस अभाव की पूर्ति करते हुए महिलाओं को अपनी बात कहने का मंच प्रदान करती है| यह रचनाएँ न केवल स्त्रियों की पीड़ा, संघर्ष और संवेदनाओं को उजागर करती है, बल्कि उनके आत्मसम्मान, स्वाधीनता और सशक्तिकरण की यात्रा को भी रेखांकित करती है| वर्तमान समय में, जब लैंगिक समानता और अधिकारों की चर्चा व्यापक स्तर पर हो रही है, स्त्री आत्मकथाएँ और भी अधिक प्रासंगिक हो उठती हैं| 'अस्मिता' और 'प्रतिरोध' इस विमर्श के केंद्रीय तत्व है| 'अस्मिता' से आशय है- स्वयं की पहचान, आत्मबोध और अस्तित्व की स्वीकृति; जबकि 'प्रतिरोध' उन सामाजिक, सांस्कृतिक और मानसिक बंधनों के विरुद्ध संघर्ष का प्रतीक है, जो स्त्री को सीमित करते हैं| स्त्री आत्मकथाएँ इन दोनों पहलुओं को गहराई से अभिव्यक्त करती है, जहाँ एक ओर स्त्री अपनी पहचान की खोज करती है, वहीं दूसरी ओर अन्याय और असमानता के विरुद्ध आवाज़ उठाती है| इस प्रकार, स्त्री आत्मकथा न केवल एक साहित्यिक विधा है, बल्कि वह एक सशक्त सामाजिक दस्तावेज़ भी है, जो अस्मिता की खोज और प्रतिरोध की चेतना को उजागर करते हुए समाज को नए दृष्टिकोण प्रदान करती है|

स्त्री आत्मकथा का स्वरूप और विकास:

स्त्री आत्मकथा साहित्य की एक महत्वपूर्ण विधा है, जो न केवल व्यक्तिगत जीवन के अनुभवों का दस्तावेज़ प्रस्तुत करती है, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और वैचारिक परिवर्तनों का भी सशक्त प्रतिबिंब होती है| यह विधा स्त्री के 'स्व' की खोज, उसकी अस्मिता की स्थापना और पितृसत्तात्मक संरचनाओं के विरुद्ध उसके प्रतिरोध को अभिव्यक्त करती है| स्त्री आत्मकथा का स्वरूप समय के साथ विकसित होता गया है, जिसमें विषयवस्तु, दृष्टिकोण और अभिव्यक्ति के स्तर पर उल्लेखनीय परिवर्तन देखने को मिलते है| हिन्दी एवं भारतीय साहित्य में स्त्री आत्मकथाओं का उद्भव अपेक्षाकृत देर से हुआ, क्योंकि लंबे समय तक स्त्रियों को शिक्षा और लेखन से वंचित रखा गया| प्रारंभिक दौर में स्त्रियों की आवाज़ मुख्यतः पुरुष लेखकों के माध्यम से सामने आती थी, जो अक्सर सीमित और पक्षपाती होती थी| उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध और बीसवीं सदी में शिक्षा के प्रसार और सामाजिक सुधार आंदोलनों के प्रभाव से स्त्रियों ने स्वयं लेखन की ओर कदम बढ़ाया| इसी दौर में स्त्री आत्मकथाओं का प्रारंभिक विकास हुआ, जहाँ उन्होंने अपने जीवनानुभवों को अभिव्यक्ति देना शुरू किया| भारतीय भाषाओं में कई महत्वपूर्ण स्त्री आत्मकथाकारों ने इस विधा को समृद्ध किया| हिन्दी में महादेवी वर्मा, कृष्ण अग्निहोत्री, मैत्रेयी पुष्पा जैसी लेखिकाओं ने अपने अनुभवों के माध्यम से स्त्री जीवन की जटिलताओं को उजागर किया| अन्य भारतीय भाषाओं में कमला दास और बेबी हालदार ने भी अपनी आत्मकथाओं के ज़रिए स्त्री की पीड़ा, संघर्ष और आत्मनिर्भरता को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया| इन लेखिकाओं ने व्यक्तिगत अनुभवों को सामाजिक यथार्थ से जोड़कर स्त्री विमर्श को नई दिशा दी| "स्त्री आत्मकथाएँ निजी जीवन के माध्यम से सामाजिक यथार्थ को उद्घाटित करती हैं। इनमें संवेदना, प्रतिरोध और आत्मपहचान की चेतना प्रमुख रूप से दिखाई देती है।"(1) समय के साथ स्त्री आत्मकथाओं की विषयवस्तु और दृष्टिकोण में व्यापक परिवर्तन आया है| प्रारंभिक आत्मकथाएँ मुख्यतः घरेलू जीवन, पारिवारिक संबंधों और सामाजिक बंधनों तक सीमित थीं| किंतु आधुनिक काल में स्त्री आत्मकथाएँ शिक्षा, रोज़गार, लैंगिक समानता, यौनिकता, दलित और आदिवासी स्त्री अनुभवों जैसे विविध विषयों को समाहित करने लगी है| दृष्टिकोण भी अधिक आत्मविश्वासी, स्पष्ट और प्रतिरोधात्मक हो गया है, जहाँ स्त्री केवल पीड़ित नहीं, बल्कि अपने अधिकारों के लिए संघर्षरत और जागरूक व्यक्तित्व के रूप में उभरती है|

पुरुष और स्त्री आत्मकथाओं के बीच भी स्पष्ट अंतर देखने को मिलता है| पुरुष आत्मकथाएँ प्राय: सार्वजनिक जीवन, उपलब्धियों और बाह्य संसार पर केंद्रित होती है, जबकि स्त्री आत्मकथाएँ निजी जीवन, भावनात्मक अनुभवों और सामाजिक बंधनों के भीतर की जटिलताओं को अधिक गहराई से प्रस्तुत करती है| स्त्री आत्मकथाओं में आत्माविश्लेषण, संवेदनशीलता और संबंधों की सूक्ष्म पड़ताल अधिक देखने को मिलती है, जबकि पुरुष आत्मकथाओं में आत्मप्रशंसा और सामाजिक उपलब्धियों का वर्णन अधिक प्रमुख होता है| इसके अतिरिक्त, स्त्री आत्मकथाएँ अक्सर प्रतिरोध और अस्मिता की खोज का माध्यम बनती है, जो उन्हें विशिष्ट बनाता है| अंतत: स्त्री आत्मकथा का स्वरूप और विकास भारतीय समाज में स्त्रियों की बदलती स्थिति और चेतना का दर्पण है| यह विधा न केवल साहित्यिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया में भी इसकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है| स्त्री आत्मकथाएँ अपने भीतर एक ऐसी आवाज़ को समाहित करती है, जो लंबे समय तक दबाई गई थी और आज वह न केवल स्वयं को अभिव्यक्त कर रही है, बल्कि समाज को भी नए दृष्टिकोण प्रदान कर रही है|

अस्मिता का विमर्श:

अस्मिता का विमर्श समकालीन साहित्य और सामाजिक चिंतन का एक केंद्रीय विषय है, विशेषकर स्त्री लेखन में इसकी विशेष प्रासंगिकता है| 'अस्मिता' का प्रश्न तब और महत्वपूर्ण हो जाता है जब समाज में किसी वर्ग

की पहचान को दबाया या उपेक्षित किया जाता है, जैसा की स्त्रियों के साथ लंबे समय तक होता रहा है| अस्मिता की अवधारणा बहूआयामी है| यह व्यक्तिगत स्तर पर आत्माबोध और आत्मस्वीकृति से जुड़ी होती है, जबकि सामाजिक स्तर पर यह उस पहचान से संबंधित होती है, जो समाज व्यक्ति को प्रदान करता है| स्त्री अस्मिता के संदर्भ में यह प्रश्न और जटिल हो जाता है, क्योंकि पितृसत्तात्मक व्यवस्था में स्त्री की पहचान प्राय: पुरुष के संदर्भ में निर्धारित की जाती रही है- जैसे किसी की बेटी, पत्नी या माँ के रूप में| इस प्रकार, स्त्री की स्वतंत्र अस्मिता का विकास बाधित होता रहा है| स्त्री लेखन, विशेषकर आत्मकथाओं के माध्यम से, इस दबी हुई अस्मिता को पुनः स्थापित करने का प्रयास किया गया है| "स्त्री अस्मिता का प्रश्न केवल स्त्री होने तक सीमित नहीं है; उसमें जाति, वर्ग और धर्म की संरचनाएँ भी गहरे रूप में सक्रिय रहती हैं। इसी कारण स्त्री का अनुभव बहुआयामी और जटिल बन जाता है।"(2) स्त्री अस्मिता का सामाजिक-सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य अत्यंत व्यापक है| यह केवल लिंग तक सीमित नहीं है, बल्कि जाती, वर्ग, धर्म और क्षेत्रीयता जैसे अनेक कारकों से प्रभावित होती है| उदाहरण के लिए, एक दलित स्त्री की अस्मिता केवल उसके स्त्री होने से नहीं, बल्कि उसकी जातिगत स्थिति से भी निर्मित होती है| इसी प्रकार, आर्थिक रूप से कमज़ोर वर्ग की स्त्री की पहचान और संघर्ष अलग प्रकार के होते हैं| धार्मिक और सांस्कृतिक मान्यताएँ भी स्त्री की अस्मिता को आकार देती है, जहाँ कई बार परंपराएँ उसके स्वतंत्र अस्तित्व को सीमित करती है| इस प्रकार, स्त्री अस्मिता बहुस्तरीय और जटिल संरचना है, जिसे समझने के लिए इन सभी आयामों का सम्यक विश्लेषण आवश्यक है|

स्त्री आत्मकथाओं में अस्मिता की अभिव्यक्ति:

स्त्री आत्मकथाएँ साहित्य की ऐसी विधा है, जिनमें स्त्री अपने जीवन के अनुभवों, संघर्षों और अंतरदवंदवों को स्वयं की दृष्टि से अभिव्यक्त करती है| इन रचनाओं में अस्मिता की खोज और स्थापना एक केंद्रीय तत्व के रूप में उभरकर सामने आती है| लंबे समय तक पितृसत्तात्मक समाज में स्त्री की पहचान को सीमित और नियंत्रित किया गया, किंतु आत्मकथाओं के माध्यम से स्त्रियों ने अपने 'स्व' को पहचानने, व्यक्त करने और साबित करने का सशक्त प्रयास किया है| "पितृसत्तात्मक व्यवस्था स्त्री को 'दूसरे' के रूप में स्थापित करती है, जबकि उसकी वास्तविक पहचान एक स्वतंत्र मानवीय सत्ता की है। स्त्री लेखन इसी स्वतंत्र पहचान की खोज का साहित्य है।"(3) आत्मकथाकर अपने जीवन के विविध अनुभवों- बाल्यावस्था, विवाह, पारिवारिक संबंध, सामाजिक दबाव- के माध्यम से यह दिखाती हैं कि किस प्रकार उन्होंने अपने 'स्व' को पहचाना और उसे अभिव्यक्त किया| यह 'स्व' पारंपरिक भूमिकाओं से परे जाकर एक स्वतंत्र और स्वायत्त अस्तित्व की स्थापना करता है|

आत्मस्वीकृति और आत्मबोध की प्रक्रिया भी नई आत्मकथाओं का एक महत्वपूर्ण आयाम है| स्त्री के लिए अपने अनुभवों को स्वीकार करना और उन्हें अभिव्यक्त करना स्वयं में एक साहसिक कदम होता है| कई बार समाज द्वारा लगाए गए नैतिक और सांस्कृतिक बंधन स्त्री को अपने वास्तविक स्वरूप को स्वीकार करने से रोकते हैं| किंतु आत्मकथाओं में स्त्रियाँ इन बंधनों को तोड़ते हुए अपने जीवन के सुख-दु:ख, विफलताओं और संघर्ष को ईमानदारी से प्रस्तुत करती है| यह आत्मस्वीकृति ही आत्मबोध का आधार बनती है, जिससे स्त्री अपनी अस्मिता को स्पष्ट रूप से समझ पाती है|

सामाजिक बंधनों के बीच अस्मिता का निर्माण एक जटिल प्रक्रिया है| स्त्री को परिवार, समाज और परंपराओं द्वारा निर्धारित सीमाओं के भीतर रहते हुए अपनी पहचान बनानी पड़ती है| इन बंधनों के बीच वह निरंतर संघर्ष करती है- कभी समझौता करती है, तो कभी विरोध करती है| स्त्री आत्मकथाएँ इस संघर्ष को सूक्ष्मता से चित्रित करती है, जहाँ स्त्री अपनी अस्मिता को बनाए रखने के लिए निरंतर प्रयासरत रहती है| यह प्रक्रिया उसे आत्मनिर्भर और सशक्त बनाती है|

शिक्षा, आर्थिक स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता नारी अस्मिता के निर्माण में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं| शिक्षा स्त्री को ज्ञान, जागरूकता और आत्मविश्वास प्रदान करती है, जिससे वह अपने अधिकारों और संभावनाओं को पहचान पाती है| आर्थिक स्वतंत्रता उसे आत्मनिर्भर बनाती है, जिससे वह निर्णय लेने में सक्षम होती है और सामाजिक बंधनों से मुक्त होने की दिशा में आगे बढ़ती है| आत्मनिर्भरता के माध्यम से स्त्री अपने जीवन के निर्णय स्वयं लेने लगती है, जो उसकी अस्मिता को सुदृढ़ बनाता है| स्त्री आत्मकथाओं में इन तत्वों को विशेष महत्व दिया गया है, क्योंकि ये स्त्री के सशक्तिकरण और स्वतंत्र अस्तित्व के आधारशिला है|

स्त्री आत्मकथाओं में प्रतिरोध की अभिव्यक्ति:

स्त्री आत्मकथाओं में स्त्री अपने अनुभवों के माध्यम से उस मौन को तोड़ती है, जो सदियों से उस पर थोप दिया गया था| इस प्रकार स्त्री आत्मकथाएँ प्रतिरोध की चेतना को अभिव्यक्त करते हुए सामाजिक परिवर्तन की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है| आत्मकथा केवल आत्मप्रकाशन नहीं, बल्कि एक वैचारिक हस्तक्षेप है| जब स्त्री अपने जीवन के अनुभवों को लिखती है, तो वह उन संरचनाओं को चुनौती देती है, जिन्होंने उसे दबाने का प्रयास किया| लेखन के माध्यम से वह अपनी पीड़ा, अन्याय और संघर्ष को शब्द देती है, जिससे उसकी आवाज़ व्यापक समाज तक पहुँचती है| इस प्रकार लेखन स्वयं में एक प्रतिरोधात्मक क्रिया बन जाता है, जो मौन और दमन के विरुद्ध खड़ा हो जाता है| मौन से मुखरता तक की यात्रा स्त्री आत्मकथाओं का एक महत्वपूर्ण आयाम है| लंबे समय तक स्त्रियों को अपनी भावनाएँ और विचार व्यक्त करने की स्वतंत्रता नहीं थी| उन्हें सामाजिक मर्यादाओं और नैतिकता के नाम पर चुप रहने के लिए बाध्य किया जाता था| किंतु आत्मकथाओं के माध्यम से स्त्रियाँ इस मौन को तोड़ती है और अपने अनुभवों को निर्भीकता से व्यक्त करती है| यह यात्रा केवल अभिव्यक्ति का परिवर्तन नहीं, बल्कि आत्मविश्वास, आत्मबोध और सशक्तिकरण की प्रक्रिया भी है| स्त्री आत्मकथाओं में विद्रोह, असहमति और संघर्ष के स्वर स्पष्ट रूप से उभरकर सामने आते हैं| ये रचनाएँ केवल सहनशीलता या समर्पण की कथा नहीं होती, बल्कि वे उन परिस्थितियों के विरुद्ध विद्रोह के कहानी भी होती है, जिन्होंने स्त्री को सीमित किया| लेखिकाएँ सामाजिक रूढ़ियों, पारिवारिक बंधनों और लैंगिक असमानताओं के खिलाफ अपनी असहमति दर्ज करती है| यह विद्रोह कभी तीखा और प्रत्यक्ष होता है, तो कभी सूक्ष्म और अंतर्मुखी, किंतु हर स्थिति में यह स्त्री की स्वतंत्र चेतना का परिचायक होता है| "स्त्री आत्मकथा में परंपराओं और सामाजिक रूढ़ियों का विरोध केवल विद्रोह नहीं, बल्कि अपनी अस्मिता और स्वतंत्र पहचान की खोज का प्रयास भी है। यह साहित्य स्त्री चेतना के जागरण का दर्पण है।"(4)

व्यक्तिगत अनुभवों का सामूहिक प्रतिरोध में रूपांतरण स्त्री आत्मकथाओं की एक विशेषता है| जब एक स्त्री अपने व्यक्तिगत अनुभवों को साझा करती है, तो वह केवल अपनी कहानी नहीं कहती, बल्कि वह उन अनेक स्त्रियों की आवाज़ बन जाती है, जो सामान परिस्थितियों से गुज़र रही होती है| "स्त्री आत्मकथाओं में व्यक्तिगत अनुभव सामूहिक स्त्री-अनुभव का रूप ग्रहण कर लेते हैं। एक स्त्री की पीड़ा और संघर्ष समूचे समाज में स्त्री अस्मिता के प्रतिरोध का दस्तावेज़ बन जाते हैं।"(5) इस प्रकार व्यक्तिगत पीड़ा और संघर्ष सामूहिक चेतना में परिवर्तित हो जाते हैं, जो व्यापक सामाजिक प्रतिरोध का रूप ले लेते हैं| यह प्रक्रिया स्त्री विमर्श को सशक्त बनाती है और सामाजिक परिवर्तन की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम साबित होती है| यह रचनाएँ न केवल स्त्री के संघर्ष को उजागर करती है, बल्कि समाज को भी यह सोचने के लिए प्रेरित करती है कि वह किस प्रकार समानता और न्याय के मूल्यों को अपनाकर एक बेहतर सामाजिक व्यवस्था का निर्माण कर सकता है|

प्रमुख स्त्री आत्मकथाओं का विश्लेषण:

स्त्री आत्मकथाएँ भारतीय साहित्य में एक सशक्त और प्रभावशाली विधा के रूप में स्थापित हुई है, जिनमें स्त्री के व्यक्तिगत अनुभवों के माध्यम से सामाजिक यथार्थ, असमानता और संघर्ष का जीवंत चित्रण मिलता है| इन

आत्मकथाओं का महत्व केवल साहित्यिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि सामाजिक और वैचारिक स्तर पर भी अत्यंत महत्वपूर्ण है| हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषाओं में अनेक महत्वपूर्ण स्त्री आत्मकथाएँ उपलब्ध है, जिन्होंने इस विधा को समृद्ध किया है| हिन्दी में मैत्रेयी पुष्पा की 'कस्तूरी कुंडल बसै', प्रभा खेतान की 'अन्या से अनन्या' और मन्नू भंडारी की 'एक कहानी यह भी' उल्लेखनीय हैं| इसी प्रकार अन्य भारतीय भाषाओं में कमला दास की 'मइ स्टोरी'(मलयालम/अंग्रेजी) तथा बेबी हालदार की 'आलो आंधारी'(बंगाली) अत्यंत चर्चित आत्मकथाएँ हैं| इन रचनाओं में स्त्री जीवन के विविध पक्षों- संघर्ष, शोषण, आत्मनिर्भरता और आत्मबोध- का सशक्त चित्रण मिलता है| इन आत्मकथाओं के उदाहरणों के माध्यम से अस्मिता और प्रतिरोध का विश्लेषण किया जा सकता है| 'कस्तूरी कुंडल बसै' में मैत्रेयी पुष्पा ग्रामीण परिवेश में पली-बढ़ी स्त्री के संघर्ष और उसकी अस्मिता की खोज को प्रस्तुत करती हैं| वहीं 'अन्या से अनन्या' में प्रभा खेतान एक शिक्षित और आर्थिक रूप में स्वतंत्र स्त्री के आंतरिक संघर्षों और सामाजिक बंधनों के बीच अपनी पहचान स्थापित करने की प्रक्रिया को दर्शाती है| कमला दास की 'मइ स्टोरी' में स्त्री की यौनिकता, स्वतंत्रता और आत्मस्वीकृति का साहसिक चित्रण मिलता है, जो परंपरागत सामाजिक मान्यताओं के विरुद्ध स्पष्ट प्रतिरोध है| बेबी हालदार की आत्मकथा में एक घरेलू कामगार स्त्री के जीवन-संघर्ष, शोषण और आत्मनिर्भरता की यात्रा का मार्मिक वर्णन है, जो वर्ग और लिंग दोनों स्तरों पर अस्मिता के प्रश्न को उठाती है|

विभिन्न लेखिकाओं के अनुभवों का तुलनात्मक अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि स्त्री अस्मिता और प्रतिरोध की अभिव्यक्ति भिन्न-भिन्न सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक संदर्भों में अलग-अलग रूप लेती है| जहाँ एक ओर शिक्षित और शहरी पृष्ठभूमि की लेखिकाएँ अपने मानसिक और भावनात्मक संघर्षों को प्रमुखता देती है, वहीं ग्रामीण या निम्नवर्गीय पृष्ठभूमि की लेखिकाएँ अपने भौतिक संघर्षों, श्रम और अस्तित्व की लड़ाई को अधिक प्रमुखता से प्रस्तुत करती है| इसके बावजूद, सभी आत्मकथाओं में एक समान तत्व यह है कि वे स्त्री के आत्मसम्मान, स्वतंत्रता और पहचान की स्थापना के लिए संघर्षरत है| इन आत्मकथाओं में प्रतिरोध का स्वर भी विविध रूपों में अभिव्यक्त होता है| कहीं यह प्रत्यक्ष विद्रोह के रूप में दिखाई देता है, तो कहीं यह सूक्ष्म और अंतर्मुखी रूप में प्रकट होता है| उदाहरण के लिए, कमला दास का लेखन खुला और मुखर प्रतिरोध है, जबकि मन्नू भंडारी का लेखन अधिक संयमित लेकिन गहरी आत्मविश्लेषण के माध्यम से प्रतिरोध को व्यक्त करता है| इस प्रकार प्रतिरोध की अभिव्यक्ति लेखिका के व्यक्तिगत अनुभव और सामाजिक संदर्भों के अनुसार बदलती रहती है| अंतत: अस्मिता और प्रतिरोध के माध्यम से यह आत्मकथाएँ न केवल स्त्री के आत्मबोध को उजागर करती है, बल्कि समाज को भी एक नई दृष्टि प्रदान करती है|

भाषा शैली और शिल्प:

स्त्री आत्मकथाएँ केवल अनुभवों का दस्तावेज़ नहीं होती, बल्कि उनकी भाषा, शैली और शिल्प भी उन्हें विशिष्ट साहित्यिक गरिमा प्रदान करते हैं| इन स्त्री आत्मकथाओं की भाषा की प्रमुख विशेषता उसकी सहजता और स्वाभाविकता है| यह भाषा किसी कृत्रिम अलंकरण से युक्त नहीं होती, बल्कि जीवन के यथार्थ के अनुरूप सरल और स्पष्ट होती है| "नारी आत्मकथाओं की भाषा सहज, आत्मीय और अनुभवप्रधान होती है। इसमें कृत्रिम अलंकरण की अपेक्षा जीवन की सच्चाई और संवेदना का स्वर अधिक मुखर दिखाई देता है।"(6) इस प्रकार लेखिकाएँ अपनी बात को प्रभावित ढंग से प्रस्तुत करने के लिए बोलचाल की भाषा, स्थानीय शब्दावली और सांस्कृतिक संदर्भों का भी प्रयोग करती है| इस कारण उनकी भाषा अधिक जीवंत और प्रामाणिक बन जाती है, जो पाठक के साथ एक गहरा संबंध स्थापित करती है| सरलता, संवेदनशीलता और आत्मीयता स्त्री आत्मकथाओं की भाषा की प्रमुख विशेषताएँ हैं| इन रचनाओं में भाषा केवल सूचना देने का मध्य नहीं, बल्कि भावनाओं को व्यक्त

करने का सशक्त उपकरण बन जाती है| लेखिकाएँ अपने अनुभवों को अत्यंत संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत करती है, जिससे पाठक उनके दु:ख, संघर्ष और आनंद को गहराई से महसूस कर पाता है| आत्मीयता के कारण यह लेखन व्यक्तिगत होते हुए भी सार्वभौमिक बन जाता है, जो पाठक को अपने जीवन से जोड़ने की क्षमता रखता है| प्रतीक, बिंब और कथन-शैली भी स्त्री आत्मकथाओं के शिल्प को समृद्ध करते हैं| कथन-शैली प्राय: आत्मकथात्मक, संवादात्मक और कभी-कभी आत्मविश्लेषणात्मक होती है, जिसमें लेखिका अपने जीवन की घटनाओं का वर्णन करते हुए उनके अर्थ और प्रभाव पर भी विचार करती है| यह शैली पाठक को केवल घटनाओं से नहीं, बल्कि उनके पीछे छिपे भाव और विचारों से भी परिचित कराती है|

समकालीन परिप्रेक्ष्य:

समकालीन युग में स्त्री आत्मकथाएँ केवल साहित्यिक अभिव्यक्ति नहीं रही, बल्कि वे सामाजिक, सांस्कृतिक और वैचारिक परिवर्तन की सक्रिय वाहक बन गई हैं| बदलती सामाजिक संरचनाओं, तकनीकी विकास और वैश्वीकरण के प्रभावों ने स्त्री के अनुभवों, उसके अस्मिता और अभिव्यक्ति के स्वरूप को नए आयाम प्रदान किए हैं| इस संदर्भ में स्त्री आत्मकथाओं की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है, क्योंकि वे न केवल व्यक्तिगत जीवन-कथाएँ प्रस्तुत करती है, बल्कि व्यापक सामाजिक यथार्थ को भी उद्घाटित करती हैं|

वर्तमान समाज में स्त्री आत्मकथाओं की भूमिका अत्यंत व्यापक और प्रभावशाली है| आज स्त्रियाँ शिक्षा, रोज़गार, राजनीति और कला जैसे विभिन्न क्षेत्रों में अपनी उपस्थिति दर्ज करा रही है| इन परिवर्तनों के बीच आत्मकथाएँ स्त्री के संघर्ष, उपलब्धियों और अंतर्द्वंद को अभिव्यक्त करने का माध्यम बनती है| वे समाज में व्याप्त लैंगिक असमानताओं, हिंसा, भेदभाव और रूढ़ियों को उजागर करती है, साथ ही स्त्री सशक्तिकरण की दिशा में प्रेरणा भी प्रदान करती है| इस प्रकार स्त्री आत्मकथाएँ आज के समाज में संवाद और परिवर्तन का सशक्त उपकरण बन गई है|

वैश्वीकरण में स्त्री अस्मिता के प्रश्न को एक नया आयाम दिया है| वैश्विक स्तर पर विचारों, संस्कृतियों और मूल्यों के आदान-प्रदान ने स्त्रियों को अपने अधिकारों और पहचान के प्रति अधिक जागरूक बनाया है| एक ओर वैश्वीकरण ने स्त्रियों को शिक्षा, रोज़गार और अभिव्यक्ति के नए अवसर प्रदान किए हैं, वहीं दूसरी ओर यह सांस्कृतिक संकट और पहचान के द्वंद्व को भी जन्म देता है| डिजिटल युग में स्त्री लेखन ने अभिव्यक्ति के नए मंच और संभावनाएँ प्राप्त की है| सोशल मीडिया, ब्लॉग, ऑनलाइन पत्रिकाएँ और डिजिटल प्रकाशन ने लेखन को अधिक सुलभ और लोकतांत्रिक बना दिया है| अब स्त्रियाँ बिना किसी मध्यस्थ के अपनी बात सीधे पाठकों तक पहुँचा सकती है| यह डिजिटल स्पेस स्त्री के लिए एक नई 'आवाज़' का निर्माण करता है, जहाँ वह अपने अनुभवों, विचारों और संघर्षों को स्वतंत्र रूप से साझा कर सकती है| हालांकि, इस माध्यम के साथ चुनौतियाँ भी जुड़ी है, जैसे- ऑनलाइन उत्पीड़न, ट्रोलिंग और निजता का संकट, जिन्हें स्त्री आत्मकथाएँ अपने नए स्वरूप में उजागर कर रही है|

बदलती सामाजिक संरचना और स्त्री चेतना का संबंध भी गहरा और परस्पर प्रभावकारी है| जैसे-जैसे समाज में शिक्षा का प्रसार, आर्थिक अवसरों की वृद्धि और कानूनी अधिकारों का विस्तार हुआ है, स्त्री चेतना भी अधिक सशक्त और जागरूक हुई है| यह चेतना केवल अधिकारों की माँग तक सीमित नहीं है, बल्कि यह आत्मनिर्भरता, आत्मसम्मान और समानता की स्थापना की दिशा में अग्रसर है| स्त्री आत्मकथाएँ इस बदलती चेतना को प्रतिबिंबित करती है, जहाँ स्त्री केवल पीड़ित नहीं, बल्कि सक्रिय और सशक्त व्यक्तित्व के रूप में उभरती है|

निष्कर्ष:

स्त्री आत्मकथाएँ अस्मिता और प्रतिरोध की सशक्त अभिव्यक्ति के रूप में साहित्य और समाज दोनों में महत्वपूर्ण स्थान रखती है| इन रचनाओं के माध्यम से स्त्रियाँ न केवल अपने 'स्व' की पहचान स्थापित करती है,

बल्कि पितृसत्तात्मक संरचनाओं, सामाजिक रूढ़ियों और असमानताओं के विरुद्ध अपनी आवाज़ भी बुलंद करती है| अस्मिता की खोज और प्रतिरोध की चेतना स्त्री आत्मकथाओं को केवल व्यक्तिगत अनुभवों का दस्तावेज़ नहीं रहने देती, बल्कि उन्हें सामाजिक परिवर्तन के प्रभावी माध्यम से रूपांतरित कर देती है| साहित्यिक दृष्टि से स्त्री आत्मकथाओं ने अभिव्यक्ति के नए आयाम को जन्म दिया है| इन्होंने भाषा, शैली और विषय वस्तु के स्तर पर नवीन प्रयोग करते हुए स्त्री अनुभवों को केंद्र में स्थापित किया है| साथ ही, समाज में इनका योगदान भी अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह रचनाएँ स्त्री के प्रति जागरूकता, संवेदनशीलता और समानता के विचार को प्रोत्साहित करती है| स्त्री आत्मकथाएँ समाज को आत्ममंथन के लिए प्रेरित करती है और एक अधिक न्यायपूर्ण एवं समता मूलक व्यवस्था की दिशा में मार्ग प्रशस्त करती है| बदलते सामाजिक, तकनीकी और वैश्विक परिवेश में स्त्रियों के अनुभवों के नए आयाम सामने आ रहे हैं, जिन्हें आत्मकथाओं के माध्यम से अभिव्यक्त किया जाएगा| विशेष रूप से दलित, आदिवासी, अल्पसंख्यक और हाशिए पर स्थित स्त्रियों की आवाज़ें और अधिक सशक्त होकर उभरेंगी| डिजिटल माध्यम के विस्तार से लेखन की पहुँच और प्रभाव भी बढ़ेगा, जिससे स्त्री आत्मकथाएँ और अधिक विविध, समावेशी और प्रभावशाली बनेंगी| इस प्रकार स्त्री आत्मकथाएँ अस्मिता और प्रतिरोध की चेतना को आगे बढ़ाते हुए साहित्य और समाज के बीच एक सशक्त सेतु का निर्माण करती हैं, और भविष्य में भी उनकी प्रासंगिकता तथा प्रभाव निरंतर बढ़ता रहेगा|

संदर्भ सूची:

1. डॉ.मृणाल पांड, स्त्री:देह की राजनीति से देश की राजनीति तक,
2. राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, वर्ष: 2004, पृ.सं: 78
3. डॉ.प्रभा खेतान, उपनिवेश में स्त्री, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,
4. वर्ष: 2003, पृ.सं: 89
5. डॉ.रोहिणी अग्रवाल,स्त्री लेखन:स्वप्न और संघर्ष, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
6. वर्ष: 2010, पृ.सं: 126
7. डॉ.मृणाल पांडे, स्त्री:देह की राजनीति से देश की राजनीति तक,
8. राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, वर्ष: 2004,पृ.सं: 92
9. डॉ.रोहिणी अग्रवाल, स्त्री लेखन:स्वप्न और संघर्ष,वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, वर्ष: 2010,पृ.सं: 141
10. डॉ.रोहिणी अग्रवाल, स्त्री लेखन:स्वप्न और संघर्ष, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
11. वर्ष: 2010, पृ.सं: 156

#58, Palace Road, Abshot Layout,
Vasanth Nagar, Bangalore-560001.
Phone Number-8105566341
Email.Id- pa.anupama09@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com Bohal Shodh Manjusha ISSN: 2395-7115
Impact Factor: 8.642 June 2026 Page No. : 45-47
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

The Theory of Nationalism: Swami Vivekananda

JAYA AGRAWAL
ASSISTANT PROFESSOR,
POLITICAL SCIENCE,
GOVERNMENT GIRLS COLLEGE, AJMER, RAJASTHAN

Abstract

This ancient times, Various thinkers have articulated their views regarding concepts such as nationalism in a manner designed to periodically awaken the public in accordance with the prevailing circumstances of their nation. Thus, nationalism is not merely a sentiment bound by any specific era or time frame, it has always been an immensely potent emotion, one that has consistently adapted itself to the specific context- both in terms of situation and time of a given nation.

Regardless of the form it may have assumed, nationalism has always been an ever-present force. Fundamentally, it has always signified a love for one's nation, a spirit of devotion and dedication toward it and a commitment to contributing to its progress. In this regard, it is also a historical fact that the very foundations of nationalism have continuously evolved over time. With specific reference to India, the nation has been home to profound thinkers and sages, who have awakened the public's sense of devotion toward the country. They made their contributions even during periods when the spirit of nationalism among the masses appears to be waning or fading away, in such critical junctures, they utilised their messages to rekindle within the people of spirit of sacrifice and selflessness for the sake of the nation.

History of India is replete with the contributions of such illustrations and illustrious figures. It is within this very context that the Indian national movement emerges as a movement categorised by a succession of exceptional leaders, patriots and freedom fighters who not only valiantly challenged foreign rule in their own unique ways, but also instilled with the masses of awakening that was absolutely indispensable. in this specific context, one name that stands out most prominently is that of Swami Vivekananda- a figure who is revered not merely as a freedom fighter within the Indian national movement but whose multifaceted contributions have also profoundly enriched the landscape of Indian political thought.

Key Words- Nationalism, Patriot, Freedom, Movement, Progress

Nationalism is, in itself, an immensely comprehensive concept- an idea that has historically served as a perennial source of inspirational the lives of a nation's people. It embodies the spirit of devotion, love and dedication towards one's country, coupled with the resolve to take meaningful action on its behalf.

Throughout the course of history, various schools of thoughts regarding nationalism have, in their own distinct ways, periodically inspired the masses to discharge their duties

toward the nation with diligence- driven by the conviction that their responsibilities to the nation must be fulfilled in their entirety. In this context, a prominent leader of the Indian national movement and a freedom fighter, who stands before us as a guiding light is none other than Swami Vivekananda.

In the context of nationalism, he propounded a religious theory of nationalism, for in his view, religion has always served as the primary foundation of a land like India. It has consistently acted as a regulating force in this country- one that not only influences every facet of the people's lives but also plays a pivotal role in ensuring their proper governance and functioning. Consequently, he called upon the people of a vast nation like India to understand their religion and inspired them to grasp its true fundamental essence.

One of Key arguments of Swami Vivekananda for grounding nationalism in religion was the belief that religion would serve to elevate India to a position of eminence- not merely in the past but equally in the present and the future -and would foster the spirit of Nationalism among the masses.

In this regard, he held the firm conviction that those who imagine they can progress by leaving the past behind must realise that the future can only be built upon the sturdy bedrock of the past. Therefore, the edifice of Indian nationalism, too must be constructed upon the foundation of religion for it is religion that has historically been the driving force behind this endeavour in this land since time immemorial. Swami Vivekananda's contribution of providing a spiritual or religious foundation to the concept of Nationalism has always stood as a pivotal legacy within the Indian national movement- a contribution for which he is primarily renowned. In the realm of political thought, Swami Vivekananda's philosophy continues to serve as a guiding light for people regarding the nature of nationalism to this very day.

Swami Vivekananda has been a true messenger of Indian nationalism, in this context, he held the firm conviction that wherever political authority in India faltered or failed to discern the necessary course of action amidst specific circumstances- it was invariably religion that stepped into instant the people on their duties. Furthermore, Swami Vivekananda believed that a nation like India possesses the potential to chart a new path for the entire world across all spheres, thereby reclaiming its status as the world guru' Vishva Guru' once again, it can fulfil the role it has historically played since ancient times by steadfastly adhering on the path of region and nationalism. In this spirit, he reawakened a sense of lost pride among the people of India, he impressed upon them the profound greatness and expansive scope that their religion has possessed since antiquity.

He liberated the nation's populace from narrow, parochial conceptions of religion and infused them with a renewed sense of inspiration; while instilling the spirit of nationalism in the people of India he taught them that the welfare of the nation is inextricably linked to their own personal well-being and that their entire lives should be dedicated to the advancement of India as a unified nation.

Thus, the religious theory of nationalism credits Swamy Vivekananda with the distinction of having presented nationalism in a novel form. He accomplished this monumental task amidst to the arduous circumstances of that era, a time when Indians were in dire need of an awakening regarding their religion and nationalism. It was Swami Vivekananda, who inspired them to rise to the occasion, to prepare themselves and to stand firmly on their own feet in this manner, Swami Vivekananda instilled within the masses a sense of faith, respect and pride in their own religion fostered as spirit of awakening and imparted the teaching of fulfilling one's duties towards the nation.

Thus, upon a comprehensive history of Swami Vivekananda's ideas, we find that he established nationalism on the religious foundation in such a manner that it emerged with far greater potency than ever before. Swami Vivekananda reawakened within the masses the hope

for freedom and the sense of duty towards the nation- sentiments that had previously grown dormant. In this context, it can be asserted that this constitutes a novel theoretical framework, the exposition of which is credited to Swami Vivekananda; for while nationalism is an ideology or concept that can rest upon various foundations, basing it is specifically upon religion is, without doubt a unique contribution attributable solely to Swami Vivekananda.

It is also significant to note that, by grounding nationalism in religious principles Swami Vivekananda made up a pivotal contribution to the nation's struggle for independence. He not only instilled an awakening among the people regarding the cause of national freedom but also taught them the virtues of dedication and love for their country. In this endeavour, in the foremost instrument he employed was religion- for, since ancient times, reason has stood as one of India's most profound and significant cultural assets.

In every facet of human existence, religion has been acknowledged as the primary foundation drawing upon this very concept of religion, swami Vivekananda not only enlightened the masses but also by prioritising religion within the context of nationalism instructed them that they should not merely take pride in their ancient faith but should also- guided by their religious foundation, walk the path of nationalism and delicate themselves to the service of the nation.

Thus, Swami Vivekananda not only delivered a mass of fearlessness and dutifulness to the people but also while making a monumental contribution to the nation's independence emphatically underscored the underpinning of nationalism.

It is quite clear that Swami Vivekananda emerged as a beacon and fount of wisdom in the lives of the Indian people and within the context of this nation at a time when the country stood in its greatest need of it. Swami Vivekananda's contributions to India spanned numerous fields and took various forms however when it comes to the realm of nationalism his contribution in this regard is in no way inferior to that of any other Indian freedom fighter. Even today, we remain deeply indebted to him for not only acquainting us with our ancient religion but also instilling within us a profound sense of pride in it and for inspiring us through the medium of this faith, to recognise that the fulfilment of one's duty towards the nation is of paramount importance and should be fulfilled at any cost. This was Message by Swami Vivekanand which is still relevant today and for the generations to come it will always be the nationalism Which is to be served in regarding of the India.

References –

I. Believe in Yourself, Swami Vivekananda, Aleph Book Co. (2020)
II. The Powers of the Mind, Swami Vivekananda, Sanage Publishing House. (2025)
III. Vivekananda: Spirituality for Leadership and Success, Pranay, Fingerprint Publishing (2020)
IV. Meditation and its Methods, Swami Vivekananda, Grapevine India (2018)

ADD. -3, PROFESSORS COLONY, DHOLABHATA ROAD, AJMER, RAJASTHAN-305001
MOB.- 9166931438
EMAIL- jayaa1326@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com Bohal Shodh Manjusha ISSN: 2395-7115
Impact Factor: 8.642 June 2026 Page No. : 48-52
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

भक्ति साहित्य में भारतीय ज्ञान परंपरा का लोक मंगलकारी स्वरूप

डॉ० रेनू जोशी,
असिस्टेंट प्रोफ़ेसर हिंदी,
राजकीय महाविद्यालय लमगड़ा, अल्मोड़ा

सारांश–भारतीय ज्ञान परंपरा का एक सशक्त माध्यम है, भक्तिकाव्य। जो भावात्मक अभिव्यक्ति तक सीमित नहीं है, बल्कि यह भारतीय ज्ञान परंपरा का संवाहक भी है। वेद, उपनिषद, भगवत गीता एवं भक्ति आंदोलन की समस्त शिक्षायेँ उसमें निहित हैँ वह हमें सत्य, प्रेम, कर्तव्य, परोपकार और संतोष जैसे नैतिक मूल्यों को अपनाने की प्रेरणा देता है। और समाज को धर्म, अध्यात्म, नैतिकता और मुक्ति के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करता है। जहाँ कबीर के काव्य में आत्मज्ञान की ज्वाला प्रस्फुटित होती है, तो तुलसीदास के काव्य में धर्म और नीति का समर्थन दिखाई देता है। सूरदास के पदों में भक्ति की रसधारा बहती है, तो मीरा के काव्य में प्रेम का निर्मल स्रोत प्रवाहित होता है ।वहीं जायसी के काव्य में प्रेम की साधना मुख्य तत्व है, जो ज्ञान और कर्म की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण है। जिस लोक ज्ञान की बात हम करते हैँ, भक्तिकालीन कवियोँ ने उसे हमारी आँखों के सामने प्रकट कर दिया है।

मुख्य शब्द- ज्ञान, परंपरा, जिज्ञासा, वांगमय, आध्यात्मिक, नैतिक, भक्ति, लोक, अन्धविश्वास, पाखंड

सहस्त्रों ऋषि मुनियों का ज्ञान, संस्कृति, मूल्य, आस्था, आदर्श, कर्म, भक्ति, दर्शन, सभ्यता, संस्कार आदि भारतीय ज्ञान परंपरा में समाहित हैं ,जो एक निश्चल निर्झर पवित्र निर्झरिणी की तरह है। यह एक व्यापक विराट संचेतना है, जिसने अपने हृदय में भारत के कँण कँण में समाहित ज्ञान को स्थान दिया है।यह प्राचीन भारतीय ग्रन्थों, दर्शन, विज्ञान और कला का एक विस्तृत संग्रह है ।जो वेदों, उपनिषदों और योग पर आधारित हैँ भारतीय ज्ञान परंपरा एक समृद्ध और विविधतापूर्ण इतिहास रखती है। क्योंकि हमारे देश की सांस्कृतिक विकास के पथ निर्माण का कार्य हमारी ज्ञान परंपरा करती है। जिसके सहयोग से देश की संस्कृति को संरक्षित, सुरक्षित और विकसित किया जाता है। भारत का अतीत इतना गौरवशाली रहा है, कि वह दुनिया की जिज्ञासा का केंद्र रहा है। इसी कारण इस देश में दुनिया से लोग आए, रच बस गए ,और यह क्रम आज भी गतिमान है ।यहाँ प्रवास के दौरान उन लोगों ने बहुतों कुछ सीखा और अपने देश जाकर उसे अपनी भाषा में अनुवाद कर अपने देश की ज्ञान परंपरा को समृद्ध किया।

हिंदी वांगमय में पारम्परिक ज्ञान धारा प्रवाहित होती रही है, यह ज्ञान की परंपरा रामचरित मानस, सूरसागर, भ्रमरगीत, विनय पत्रिका,रामचंद्रिका, कबीर- बीजक जैसे महाकाव्यों तथा काव्योँ से होती हुई नाटकों ,रूपकों के माध्यम

से आज तक बह रही है।भारत वर्ष की सबसे सुंदर, सुदृढ़ और शक्तिशाली परंपरा साहित्य परंपरा है। जो प्राचीन काल से ज्ञान का मूल स्रोत रही है। जिसने विभिन्न संस्कृतियों, सभ्यताओं को अपनी वाणी हिन्दी के माध्यम से परिभाषित और परिमार्जित किया है। जिसने अपनी सहजता, सरलता, सुगमता से भारतीय ज्ञान परंपराओं को साहित्यिक धरातल पर व्याप्त कर दिया है।

ज्ञान परंपरा में गुरु शिष्य परंपरा- भारतीय ज्ञान परंपरा में गुरु शिष्य परंपरा संपूर्ण विश्व को आलोकित करती रही है। 'गु' शब्द का अर्थ है- 'अन्धकार' और 'रू' शब्द का अर्थ है- ''प्रकाश ज्ञान'', अज्ञान को नष्ट करने वाला जो ब्रह्म रूप प्रकाश है, वह गुरु है। आश्रमों में गुरु शिष्य परंपरा का निर्वाह होता रहा है। भारतीय इतिहास में गुरु की भूमिका समाज के सुधार की ओर ले जाने वाले मार्गदर्शक के रूप में होने के साथ क्रांति की दिशा दिखाने वाली भी रही है। भारतीय संस्कृति में गुरु का स्थान ईश्वर से भी ऊपर माना गया है।

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरु देवो महेश्वरः
गुरु: साक्षात परमब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः1

गुरू और शिष्य के संबंध का आधार गुरु का ज्ञान था। गीता में भगवान श्री कृष्ण ने गुरू शिष्य परंपरा को परंपराप्राप्तम योग बताया है। संस्कार, पूर्व जन्म के होते हैं। परंतु साधन एवं विद्या के लिए गुरु अनिवार्य है। शास्त्रीय एवं आध्यात्मिक ज्ञान गुरु के बिना अधूरा है। तैत्तिरीय संहिता के अनुसार ''ऋषि ऋण से व्यक्ति तभी मुक्त हो पाता है, जब वह गुरु के समीप शिक्षा ग्रहण करें''।

''मुण्डकोपनिषद मे गुरु- शिष्य परंपरा का वृहत उल्लेख है। जिसके अनुसार विश्व के निर्माता ब्रह्मा ने अपने पुत्र अथर्व को उपदेश दिया, अथर्व ने अंगिरा को, अंगिरा ने भारद्वाज को ,एवं भारद्वाज ने अंगीरस को उपदेश दिया। अंगीरस ने महाग्रहस्त शौनक को ब्रह्म विद्या का उपदेश दिया। इस प्रकार परम्परा क्रम से यह विद्या प्रचारित प्रसारित हुई।'

गुरु के प्रति सम्मान और विश्वास कबीर की रचनाओं में उल्लेखनीय है, उनकी रचनाओं के किसी भी संग्रह में अनेक दोहे सच्चे गुरू की महिमा के लिए समर्पित हैं। ग्रंथावलि संग्रह ऐसी ही कविताओं से शुरू होता है। ग्रंथावली के पहले अध्याय को 'गुरूदेव कौन अँग' कहा जाता है। पहली पंक्ति से ही लेखक गुरु और शिष्य के बीच विशेष संबंध पर ज़ोर देते हैं। एक सच्चे गुरू से अधिक आपके क़रीब कौन हो सकता है। कबीर गुरु की अवधारणा को 'अनंत' शब्द का प्रयोग; जो आम तौर पर विभिन्न देवताओं के लिए प्रयुक्त होता है; गुरू की संपूर्ण महानता को दर्शाने के लिए करते हैं।

सतगुरु की महिमा अनंत, अनंत किया उपगार,
लोचन अनंत उघाड़िया, अनंत दिखावण हार।2

गुरु केवल एक व्यक्ति नहीं है, वह दिव्य शक्ति का स्रोत है। वह; वह है; जो ईश्वर को दिखाने में सक्षम है ।गुरु ज्ञान का प्रकाश देता है तो इस कार्य से वह अज्ञान अँधकार को नष्ट कर देता है।

तुलसीदास ने सगुण निर्गुण विभेद को अंगीकार नहीं किया। उन्होंने लिखा –

सगुनहि अगुनहिं नहीं कछु भेदा,
गावहिं मुनि पुरान बुध बेदा।3

गुरु नानक देव ने डंके की चोट पर कहा– 'एक्कइ नूर तैं सब जग उपज्या'4 अर्थात ईश्वर एक है। नानक का कहना है, कि गुरु प्रदत्त प्रभु का नाम सदैव सुखकारी होता है, किंतु संसार के पागल प्राणि नाम के महत्व को नहीं जानते हैं।-

अमृतु नाम सदा सुखदाता अँतें होई सुखाई

बाझु गुरु जगतु बउराना रहा नावै सार न पाई।5

भारतीयों की यह ज्ञान परंपरा विश्व में अपने पदचिन्ह अंकित कर चुकी है। आज विश्व भारत की इस परंपरा का ह्रदय से स्वागत करता है। और कहता है, कि भारतीयों की परंपरायेँ वैज्ञानिक दृष्टि से पूर्णत: प्रासंगिक है।

भक्ति साहित्य में लोक ज्ञान का स्वरूप – यहाँ पर लोक ज्ञान का मतलब, उस ज्ञान से है, जो जनसामान्य के अनुभव, परंपराओं, आस्थाओं और जीवन व्यवहार से उत्पन्न होता है। भक्त कवियों ने नैतिक और आचार संबंधी ज्ञान को सत्य, प्रेम, करूणा, दया और सहिष्णुता के जैसे मूल्यों द्वारा प्रकट किया है। भक्तिकालीन काव्य में लोक ज्ञान का चित्रण पूरी जीवन्तता के साथ उभरा है। जिस लोक ज्ञान की बात हम करते हैं, उसे भक्तिकालीन कवियों ने हमारी आँखों के सामने प्रकट कर दिया है। जो हमें यथार्थ के परिचय के साथ- साथ मानवीयता की पुकार से भी अवगत कराती है। इस काल में विभिन्न जाति के कवियों ने चाहे वह उच्च वर्ग के हों, या निम्न वर्ग के सभी की दृष्टि लोकोन्मुखी थी।उनका मुख्य उद्देश्य दार्शनिक विचाराँ का खंडन- मंडन करते हुए लोक का कल्याण करना था। कबीर मूलत: लोकवादी कवि थे। क्योंकि कबीर ने पंडितों की भाषा को त्यागकर लोक की भाषा को अपनाया एवं लोक में ही पैर पसार कर अपने काव्य की रचना की। कबीर के अनुसार सत्य एक नैतिक गुण होने के साथ ही ब्रह्म का पर्याय भी है। व्यक्ति मिथ्या लोकलाज के भय से उस सत्य को भुला देता है। सत्याचरण नहीं करता है ऐसा व्यक्ति कबीर की दृष्टि में जानबूझकर कंचन को छोड़कर कच्ची लकड़ी को पकड़ता है।–

कबीर लज्या लोक की सुमिरै नाहीँ साँच,
जानि बूझी कंचन तजै कास पकडे कांच।6

तुलसीदास के अनुसार दूसरों का हित करना ही सच्चा धर्म है। और किसी को कष्ट देना सबसे बड़ा अधर्म। यहाँ सत्य को नैतिक आचरण से जोड़ा गया है–

परहित सरिस धर्म नहीं भाई,
परपीड़ा सम नहीं अधमाई।7

सूरदास के पदों में कृष्ण की लीलाओं के माध्यम से सच्चे ह्रदय और निष्कपटता का महत्व दिखता है। साथ ही माँ और बालक के प्रेम के माध्यम से मानवीय भावनाओं का चित्रण हुआ है। कृष्ण का माखन चोरी, ग्वाल बालों के साथ खेलना, शरारतें करना उनके सहज स्वभाव को व्यक्त करते हैँ–

मैय्या मैं नहीं माखन खायो 8

यहाँ कृष्ण अपनी चोरी को भोलेपन से नकारते हैँ उनके मुख पर लगा माखन भी उनकी मासूमियत को और आकर्षक बना देता है। यह दृश्य माँ और बच्चे के मधुर संबंध को अत्यंत मानवीय रूप में प्रस्तुत करता है। जो आज भी प्रत्येक माँ और बालक के संबंधों की मधुरता का जीवंत प्रतीक बना हुआ है।

ज्ञान परंपरा में प्रेम को मुख्य आधार बनाया गया है। जायसी और मीरा ने इस भक्ति का सर्वाधिक प्रचार प्रसार किया। जायसी जो प्रेम के पीर के कवि माने जाते हैं, जिन्होंने लौकिक प्रेम के माध्यम से अलौकिक ईश्वर प्राप्ति का मार्ग दिखाया। उनकी भक्ति में प्रेम ही साधना का मुख्य तत्व है। जो ज्ञान और कर्म की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण है।

मीराबाई के पास कोई किताबी ज्ञान नहीं था। बल्कि ह्रदय का अनुभव था। वे कहती है- कि बिना प्रेम के ज्ञान अधूरा है। उनके लिए कृष्ण को पा लेना ही सबसे बड़ा ज्ञान है।–

'ज्ञान न जानूँ, ध्यान न जानूँ, जानूँ एक गोपाल।'9

मीराबाई की भक्ति में सत्संग का बहुत महत्व है।वे राजसी वैभव को त्यागकर साधुओं की संगति को ज्ञान प्राप्ति का साधन मानती है। जायसी जहाँ सूफी ग्यान मार्ग(रहस्यवाद) की बात करते हैं, वहीं मीराबाई की भक्ति प्रेम लक्षणा है। उनके यहाँ ज्ञान प्रेम के पीछे पीछे चलता है।

समाज सुधारक प्रवृत्ति – बाल्यकाल से ही बालक के बौद्धिक, मानसिक, शारीरिक, सामाजिक, नैतिक,एवं सांस्कृतिक विकास के लिए उसमें जीवन मूल्यों का बीजारोपण किया जाता था। परन्तु अनेक स्थानों पर परंपरा के साथ साथ अंधविश्वास का भी प्रवेश होता चला जाता था। जिसे दूर करने के लिए साहित्य अग्रणी भूमिका निभाता है। भक्तिकालीन कवियों मे कबीर, सूरदास, तुलसीदास ने अपने समय में व्याप्त अंधविश्वास, पाखंड और रूढियों पर अपने अपने दृष्टिकोण से प्रहार किया।कबीर ने सीधा और तीखा प्रहार किया। जबकि तुलसी ने मर्यादा और ज्ञान परक भक्ति का मार्ग दिखाया।सूरदास ने निश्छल प्रेम और समर्पण द्वारा ज्ञान और भक्ति पर ज़ोर दिया।

कबीरदास अंधविश्वास और पाखंड के सबसे मुखर विरोधी थे। उन्होंने मूर्तिपूजा का और दिखावटी इबादत का विरोध किया।-

पाहन पूजैं हरी मिले, तो मैं पूजूँ पहार
ऐसे तो चाकी भलै, कूट पीस खाए संसार।10

तुलसीदास ने राम भक्ति और ज्ञान के माध्यम से अंधविश्वास से ऊपर उठने का मार्ग दिखाया।उन्होने भगवान राम के नाम जप पर ज़ोर दिया, विवेक को महत्वपूर्ण माना, भाग्य के बजाय कर्म पर ज़ोर दिया।

जे उपथ्य कुपथ्य तजि,रघुपति भगति सयाने,
ते सुलभ राम पद,जे जग विधि सयाने।11

अर्थात, जो लोग पाखंड और ग़लत रास्तों को छोड़कर विवेक का सहारा लेते हैं, वही राम के चरणों को प्राप्त करते हैं।

सूरदास ने अंधविश्वास के स्थान पर प्रेम और समर्पण द्वारा ज्ञान और भक्ति पर ज़ोर दिया। रूढ़िवादी परम्पराओं के स्थान पर व्यक्तिगत और भावनात्मक भक्ति को प्राथमिकता दी। सूरदास ने भ्रमर गीत प्रसंग के माध्यम से अंधविश्वास और बाहरी दिखावे पर कड़ा प्रहार किया है।

निर्गुण कौन देश को बासी?
मधुकर हँसी समुझाय सौंह दै, बूझति साँच न हाँसी।12

गोपियाँ उद्धव से पूछती है, कि तुम्हारा यह निर्गुण ब्रह्म किस देश का रहने वाला है? हम तुम्हें सौगंध देकर सच पूछती हैं, कोई मज़ाक नहीं कर रही हैं यह उन लोगों पर कटाक्ष है ,जो बिना समझे किसी भी अज्ञात या जटिल मान्यताओं का पीछा करते हैं।

निष्कर्ष– भारतीय ज्ञान परम्पराएँ प्रत्येक क्षेत्र में चाहे वह राजनीति हो, सामाजिकता हो, ज्ञान हो, कौशल हो, व्यवहार हो, योग हो, सभ्यता हो, संस्कृति हो, अनुसंधान हो, तर्क हो या विश्लेषण, विज्ञान हो या भाषा हो, अपना प्रभाव अभिव्यक्त करती है। भक्ति काल के कवियों ने ज्ञान परम्परा को जन- जन तक पहुँचाया, और उसे सरल, लोकभाषा में प्रस्तुत कर लोकप्रिय बनाया। यह परम्परा बहु आयामी और समग्र प्रणाली है, जो जीवन के विभिन्न पहलुओं को समझने और सुधारने का प्रयास करती है। जो आज भी अध्ययन और अनुसंधान का विषय है।

संदर्भ ग्रंथ-

1. गुरु गीता - वेदव्यास - पृष्ठ संख्या- 06

2. कबीर ग्रंथावली- लोकभारती प्रकाशन- पृष्ठ संख्या- 106
3. राम चरित मानस- तुलसीदास- पृष्ठ संख्या- 137
4. गुरू ग्रंथ साहिब -भगत कबीर जी की वाणी- पृष्ठ संख्या-1349
5. नानक वाणी- पृष्ठ- 119
6. कबीर बीजक- साँच को अंग- पृष्ठ संख्या- 425
7. रामचरितमानस- उत्तरकाण्ड- दोहा-41
8. सूरसागर- सूरदास
9. मीराबाई की पदावली- परशुराम चतुर्वेदी- पृष्ठ संख्या 103
10. कबीर ग्रंथावली - पृष्ठ संख्या है 35-40
11. रामचरितमानस- उत्तरकाण्ड- दोहा संख्या- 97-103
12. सूरसागर भ्रमरगीतसार-

मोबाइल नंबर – 8171719604

www.bohalshodhmanjusha.com Bohal Shodh Manjusha ISSN: 2395-7115
Impact Factor: 8.642 June 2026 Page No. : 53-56
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

समसामयिक परिवर्तन का आख्यान काशीनाथ सिंह का उपन्यास 'काशी का अस्सी'

रामकुमार साहू
शोधार्थी,
संत गहिरा गुरु विश्वविद्यालय सरगुजा, अंबिकापुर (छ.ग.)
संप्रतिः सहायक प्राध्यापक (हिंदी),
शासकीय महाविद्यालय रामानुजनगर, जिला–सूरजपुर (छ.ग.)

सारांश :–
काशीनाथ सिंह का 'काशी का अस्सी' उपन्यास बीते दो–ढाई दशकों में भारत में हुए सामाजिक– राजनीतिक– सांस्कृतिक– आर्थिक परिवर्तन की दास्तान है। यह एक ऐसा दौर है जब राजनीतिक व्यवस्था पूरी तरह अविश्वसनीय हो गई है। उसने हर स्तर पर सकारात्मक को छोड़कर विघटन एवं झूठ– फरेब को अपना लिया है। इसके द्वारा वैमनस्य ने संपूर्ण मानव समुदाय को अपने गिरफ्त में ले लिया है। लोगों में परस्पर गहरा अविश्वास है। अविश्वास के कारक विभिन्न रूपों में अपना पैर फैला रहा है– कहीं वह धर्म के रूप में है, तो कहीं जाति के रूप में। काशीनाथ सिंह का 'काशी का अस्सी' उपन्यास इसी विडंबनात्मक स्थिति की दास्तान है।
मूल शब्दः– भूमंडलीकरण, राजनीति, वैमनस्य, संस्कृति, उपभोक्तावाद, व्यंग्यात्मकता, सामूहिकता, बाजारवाद।
प्रस्तावनाः– हमारा आज का भारत मंडल (जाति), कमंडल (धर्म की राजनीति) एवं भूमंडल (भूमंडलीकरण) के इन्हीं संदर्भों के चक्कर काटते समाज का देश है। मंडल, कमंडल की विडंबना उसे अपने विरासत एवं विरोधाभास से मिली है, तो भूमंडल उस पर लादी गई है। इन ऐतिहासिक घटनाओं–संदर्भों के विभाजक पक्ष से भारतीय सामाजिक प्रक्रिया को क्षति पहुँची है। धर्म एवं जाति ने मानवता को छोटे–छोटे समूह में कैद किया है, तो भूमंडलीकरण से उत्पन्न स्थिति नें मनुष्य को समूह से काटकर अकेला कर दिया। काशीनाथ सिंह का उपन्यास 'काशी का अस्सी' इसी प्रक्रिया की तलाश है।

हिंदी के प्रसिद्ध कथाकार काशीनाथ सिंह का एक चर्चित और व्यंग्यात्मक उपन्यास 'काशी का अस्सी' है। यह उपन्यास बनारस के अस्सी घाट और अस्सी मुहल्ले की संस्कृति, भाषा और यहाँ के आम जनमानस की बेबाक जिंदादिली का सजीव चित्रण करता है। 'काशी का अस्सी' उपन्यास 1990 से लेकर 2000 ई. तक के समय को समेटे हुए है। उपन्यास के केंद्र में पप्पू की चाय की दुकान है। किंतु अपने व्यापक परिप्रेक्ष्य में काशीनाथ सिंह इस उपन्यास में पप्पू के चाय की दुकान से अस्सी, अस्सी से बनारस और बनारस से पूरे भारत के समसामयिक यथार्थ को सामने लाता है। बीसवीं सदी के अंतिम दशक में घटित महत्वपूर्ण घटनाओं को ध्यान में रखकर उसके प्रभाव स्वरूप व्यक्ति एवं समाज के अंतर्मन में आए परिवर्तन को कथाकार ने इस

उपन्यास में व्यक्त किया है। बनारस के संदर्भ में महज बयानबाजी तथा हास्य—व्यंग्य आदि से शुरू होने वाला यह उपन्यास अंत तक आकर अपने शिल्प एवं कथ्य में महत्वपूर्ण एवं मार्मिक बन जाता है।

विकास प्रक्रिया के किसी भी चरण में सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों प्रकार के तत्व होते हैं। 'काशी का अस्सी' के स्थूल पाठ तक ही सीमित रहें तो हमें वह आसान निष्कर्ष ही मिल पाएगा, जिनमें भूमंडलीकरण के नकारात्मक प्रभाव का चलताऊ ढंग से अंकन होता है। इसके इतने वर्चस्वशाली होने की प्रक्रिया को नहीं समझ पांऐगे। कथाकार इसके नकारात्मक प्रभाव के अंकन के साथ ही जहाँ जिन अंशों में हमारी परंपरागत संकीर्णता को तोड़ने में सहायक हुई है। उसे भी महत्व देते हैं, यह स्वयं हमारी कमियों को भी स्पष्ट करती है। दरअसल 'काशी का अस्सी' जड़ता, मोंह एवं उदासी का आख्यान नहीं है जैसा कि प्रायः किसी अन्य वर्चस्वशाली संस्कृति के टकराहट के क्रम में स्थानीय संस्कृति की पक्षधरता के क्रम में उभर आती है। 'काशी का अस्सी' उपन्यास में काशीनाथ सिंह स्थानीय सांस्कृतिक विशिष्टता की पक्षधरता के साथ यहाँ के समाज के मिजाज में मौजूद उस बेचैनी को भी स्वर दिया है जो कि परंपरागत जड़ता से निपटने की चाहत भी पनप रही है।

'काशी का अस्सी' को समझने के लिए इसके स्थल, अस्सी के विरासत की विशिष्टता एवं विरोधाभास तथा राष्ट्र के उत्पादन की प्रक्रिया में समाज की भूमिका को समझना आवश्यक है। काशी एक हिंदू धार्मिक स्थल है और यह लगभग गैर उत्पादक—समाज है। इसके पास मानव संसाधन तो है पर जीवन के लिए आवश्यक भौतिक संसाधन का अभाव है। अस्सी भारतीय विशिष्टताओं और विरोधाभासों का एक समन्वित मॉडल है। इसकी मस्ती एवं फक्कड़पन पर इस अर्थ में वरेण्य एवं प्रशंसनीय है कि व्यक्ति यहाँ सामाजिक इकाई के रूप में है। देश और समाज के प्रति उसका आलोचनात्मक दृष्टिकोंण है। कार्पोरेट लालसा—प्रसार को यह समाज समझ रहा है। काशीनाथ सिंह की पक्षधरता अस्सी के इस स्वरूप के प्रति है। अस्सी का यह स्वरूप मानवता के हक में है। सत्ता के बेलगाम होने से उसकी घोर असहमति है। लेकिन प्रतिरोध एवं सामाजिकता की यह संपदा अस्सी से पलायन कर जाती है। 'काशी का अस्सी' सामाजिक परिवर्तन—सामाजिकता से वैयक्तिकता का आख्यान है। तो इस आख्यान में उपन्यासकार की आर्थिक दृष्टि भी सक्रिय है।

हिंदी में पिछले दिनों के परिवर्तन के विविध संदर्भ एवं उसके प्रभाव को लेकर बहुत सारे रचनाएँ आए हैं, 'काशी का अस्सी' इस मायने में विशिष्ट है कि इसमें किसी एक समस्या के केंद्र में होने की वजाय समय की पूरी अनुगूँज है। समकालीन परिवर्तन के निर्णयकारी कारकों की यहाँ संश्लिष्ट अभिव्यक्ति हुई है। पिछले दो—ढाई दशक के हर वे आयाम यहॉ मौजूद हैं जिसने भारतीय सामाजिक संरचना को प्रभावित किया है।

'काशी का अस्सी' अपने समय की प्रतिकूलताओं की गहन आलोचना है। इस आलोचना के केंद्र में राजनीतिक व्यवस्था की कारगुजारियाँ प्रमुख रूप से हैं। विगत दो—ढाई दशकों में राजनीतिक व्यवस्था, विचार का बहुत ज्यादा पतन हुआ है। ये राजनीतिक दल विचारधारा, सिद्धांत एवं आदर्श के छल के साथ अपने को स्थापित करती है तथा लोगों को झाँसा देती है। उनकी वास्तविकता यह है कि उनका सारा क्रियाकलाप सत्ता—सुख के लिए होता है। वे जिस योजना के बल पर स्थापित होते हैं, सत्ता— सुख की प्राप्ति के पश्चात उससे उनका कोई वास्ता नहीं रह जाता।

राजनीति में आदर्श एवं सिद्धांत के प्रति इस तरह की धारणा रखने वाले लोग धार्मिक पहचान, जातिगत पहचान को उभारकर अपनी राजनीति करते रहें हैं। आज का समाज बहुस्तरीय विभाजन वाला समाज है। इसमें आर्थिक भेद है, धार्मिक भेद हैं और जातीय भेद हैं। मंडल आयोग का आना पिछले वर्षों का एक प्रमुख संदर्भ है। मंडल आयोग द्वारा एक सकारात्मकता की तलाश थी, लेकिन राजनीतिज्ञों ने इसका कुपाठ किया तथा इसका दुरुपयोग उन्होंने समाज को जाति विभक्त करने में किया। जाति की राजनीति में एक और विडंबनापूर्ण स्थिति यह बनी कि जो लोग जाति की राजनीति कर नेता बने उन्होंने कालान्तर में अपने को जाति के पर्याय एवं प्रतीक के रूप में प्रचारित—स्थापित किया। प्रतीकीकरण की इस प्रक्रिया में समूह छोटा एवं नेता बड़ा होते गये। नेता इनका प्रयोग बोट बैंक एवं आर्थिक हित के लिए करने लगे। उनके द्वारा नामजद व्यक्ति उस जाति—समूह के द्वारा सत्ता प्राप्त करने लगे।

लेकिन इस वैमनस्य, कटुता, जातिगत विभाजन के रहते हुए भी अस्सी सामूहिकता को खत्म नहीं होने देता। यदि अस्सी को किसी अर्थ में बचाए जाने की जरूरत है तो इसी अर्थ में। विघटन के दौर में अस्सी की परस्परता एवं प्रतिरोधी वृत्ति एक मूल्य है। अस्सी के इस सकारात्मक पर एक और देशी विद्रूपताओं–धर्म, जाति का आक्रमण होता है वहीं इसे मिटाने के लिए अंतरराष्ट्रीय आर्थिक शक्तियाँ उसकी अनुचर संस्कृति इसे खत्म करने के लिए सक्रिय हो जाती हैं। अस्सी के ऊपर संकट तब गहरा होता है जब सर्वथा नवीन किस्म की चुनौती से उसका सामना होता है। देशी विद्रूपत्ताओं का उसके पास तोड़ तो है पर कार्पोरेट–तकनीकी–पश्चिमी सांस्कृतिक शैली से मुकाबला करने का कोई युक्ति उसके पास नहीं है। वह विस्मित होकर पश्चिमी सांस्कृतिक मूल्य के ब्लैक होल में समा जाता है।

काशीनाथ सिंह इस उपन्यास में समकालीन वैश्विक आर्थिक–प्रक्रिया की प्रभाव व्यापकता को सामने लाते हैं। इस क्रम में हमें सर्वथा नवीन प्रवृत्ति देखने को मिलती है। यहाँ आर्थिक दृष्टि से उन्नत राष्ट्रों के द्वारा लक्षित विकासशील राष्ट्रों का हर संभव दोहन है। उसका आक्रमण दोहरा है। 'काशी का अस्सी' की एक विशिष्टता उपन्यासकार की विश्व– दृष्टि है जो कार्पोरेट प्रसार को लाभ–हानि की प्रक्रिया मात्र में नहीं देखते हैं। विकसित देश एवं कार्पोरेट जगत विकासशील देश की पहचान राष्ट्र के रूप में न करके बाजार के रूप में करते हैं और साथ ही अपने आर्थिक संकट एवं अन्य समस्याओं को विकासशील देशों पर आरोपित करने का प्रयास करते हैं। भारत में विदेशियों के आगमन के पीछे अब तक की यह धारणा रही है कि वे हमारी सांस्कृतिक खासियत के आकर्षण में बँधकर आते हैं। बनारस जैसे स्थानों में उनका प्रवास यहाँ की धार्मिक –सांस्कृतिक पद्धति पर आकर्षित होने एवं उसे अपनाने के कारण है। इस धारणा से हटकर काशीनाथ सिंह इसके पीछे की आर्थिक–प्रक्रिया को उद्घाटित करते हैं।

सामूहिकता को समाप्त करना, राष्ट्र–राज्य को कमजोर बनाना तथा पारिवारिक मूल्यों को नुकसान पहुँचाना पश्चिमी मॉडल के भूमंडलीकरण की खास विशेषता है। सामूहिकता वस्तुगत निर्भरता को खत्म करती है तथा किसी भी जनविरोधी तंत्र को चुनौती देती है। वह उसे उच्छृंखल नहीं होने देती, मनमानी करने से रोकती है। बाजार का इस बात से विरोध है। एक ओर तो वह सत्ता तंत्र को अपने हित के अनुकूल बनाना चाहता है, दूसरी ओर लोगों की सामूहिकता से काटकर वस्तु आकर्षण एवं यंत्र–निर्भरता में जकड़ना चाहता है, इसलिए सामूहिकता जिस प्रक्रिया में पनपती है, फलती–फूलती है कार्पोरेट शक्तियाँ वहीं प्रहार करती हैं। कार्पोरेट मॉडल के बाजार का लक्ष्य सिर्फ और सिर्फ मुनाफा है।

समकालीन वैश्विक आर्थिक– प्रक्रिया के इस स्वरूप के पहचान के कारण 'काशी का अस्सी' समकालीन अन्य रचना से पृथक एवं विशिष्ट है। आज राष्ट्र–राज्य किस तरह कमजोर हो रहा है वह उपन्यास की उस घटना से पता चलता है जिसमें उद्योग जगत प्राकृतिक संसाधन का सौदा कर रहा है। 'काशी का अस्सी' सूचना एवं मनोरंजन के माध्यम की बदलती भूमिका की भी आलोचना करता है। यह ऐतिहासिक उलट–फेर है। जिस माध्यम का उपयोग लोगों को शिक्षित करने, सूचना संपन्नता एवं स्वस्थ मनोरंजन के लिए होना चाहिए था, वह इसके ठीक विपरीत कार्पोरेट हित में प्रतिरोध को शोषित करने का कार्य कर रहा है। लोगों के घरों में टी.वी. आ गया है। वहाँ हर वय के लोगों को उलझाए रखने के लिए कार्यक्रम चल रहा है। लोग अपने घरों तक सीमित हो गए। कार्पोरेट बाजार हर कुछ को मुनाफे में बदल देना चाहता है। वह जीवन शैली के नये मानदंड गढ़ता है तथा विज्ञान के माध्यम से उसे आवश्यकता के अनुरूप ढाल देता है।

निष्कर्षः– जातिवाद, संप्रदायवाद, बाजारवाद ने अस्सी की सामाजिक संरचना एवं समरसता की भावना को सबसे अधिक प्रभावित किया है। काशीनाथ सिंह का 'काशी का अस्सी' कथ्य एवं शिल्पगत प्रयोग की दृष्टि से महत्वपूर्ण उपन्यास है। बड़े सामाजिक परिवर्तन के साथ कथ्य तो बदला ही है, रूप भी बदलता है। साहित्य की पूरी परंपरा में विधा, शिल्प एवं भाषा में हुए परिवर्तन में इस रिश्ते को देखा जा सकता है। समाज में बदलाव की प्रक्रिया निरंतर चलती रहती है, लेकिन जब बड़े परिवर्तन होते हैं तब चली आ रही सरंचना में तोड़–फोड़ होता है। 'काशी का अस्सी' उस संकट की उपज है जिसमें व्यक्ति ज्यादा से ज्यादा हीन और उत्पाद महत्वपूर्ण हो रहा है। दरअसल अस्सी के साथ जो घट रहा है वह अस्सी या बनारस की पीड़ा ही नहीं लगभग पूरे भारत की और उससे भी आगे विकासशील देशों की पीड़ा है। जाति की जगह कहीं नस्ल

है कहीं दूसरे रूप में समुदाय, धर्म के टकराव संयोजन में अंतर हो सकता है पर समस्या हर कहीं एक–सी है। बाजार का आतंक एवं संस्कृति का संकट हर जगह है। संस्मरण की निजता से उपन्यास की व्यापकता इसी आवश्यकता की पूर्ति है। लोक–कला रूपों का प्रयोग उपन्यास की विशिष्टता है। वर्चस्वशाली संस्कृति सिर्फ बाजार ही नहीं बनाती वरन् अपनी भाषा, संस्कृति, कला रूपों को भी आरोपित करती है, काशी का उपन्यास इसका प्रतिरोधी है। काशीनाथ सिंह का उपन्यास 'काशी का अस्सी' बनारस की जीवंत संस्कृति और 1990 के दशक के राजनीतिक– सामाजिक बदलाव का एक व्यंग्यात्मक दस्तावेज है। जो लोगों के रोष एवं सांस्कृतिक टकराव को बखूबी व्यक्त करती है। आधुनिकता, बाजारवाद और राजनीति ने काशी की पारंपरिक पहचान व भाईचारे को भारी नुकसान पहुँचाया है, लेकिन अस्सी के घाट की मूल 'मौज' और जिंदादिली आज भी कायम है।

संदर्भ ग्रंथः–

1– काशी का अस्सी, काशीनाथ सिंह

2– कथा शिखर काशीनाथ सिंह, संपा. कामेश्वर प्रसाद सिंह

3– कथाकार काशीनाथ सिंह, डॉ. बीरेंद्र सिंह

4– काशीनाथ सिंह घर और बाहर, संपा. कामेश्वर प्रसाद सिंह

5– गरीबीली गरीबी के कथाकार काशीनाथ सिंह, डॉ. योगेश देसाई

6– साहित्य में युग चेतना, डॉ. बुलुसु तिरुमला देवी

7– काशीनाथ सिंह का कथा साहित्य, डॉ. रमेश जगताप

8– काशीनाथ सिंह का कथा–सौंदर्य, डॉ. प्रीति पाण्डेय

9– विकीपीडिया

www.bohalshodhmanjusha.com Bohal Shodh Manjusha ISSN: 2395-7115
Impact Factor: 8.642 June 2026 Page No. : 57-60
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

मल्लीपुरम जगदीश जी की कहनियों में आदिवासी स्त्री जीवन

सुजाता. नुन्ना
शोधार्थिनी,
प्रो. एन. सत्यनारायण
शोध निर्देशक,
अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
आन्ध्र विश्वविद्यालय, विशाखपट्टनम,

सार:-

" शिलकोला " (शिलीमुख) गैरआदिवासी के प्रेम के जाल में फँसकर मानसिक रूप से हत्या की गयी एक आदिवासी महिला के जीवन को दर्शाने वाली कहानी है। "इप्प मोग्गलु " कहानी में पढ़ी-लिखी आदिवासी स्त्री, परिवार की आवश्यकताओं व अपने सपनों को पूरा करके जीवन में आगे बढ़ने की आशा से शहर पहुँचती हैं। वहां की परिस्तिथियों से समझौता न कर सकने के कारण गाँव लौटने का वर्णन किया गया है।

बीज शब्द :-

आदिवासी, चामंती ,शिलकोला, भूदेवी ,जगन्नाथम ।

भगवान की सृष्टि और दृष्टि में मानव समान है, किन्तु मानव की दृष्टि में भगवान के अनेक रुप हैं। तोड़ने वालों से जोडने वाले महान होते हैं। अत:भगवान श्रेष्ठ है। मनुष्य अपने संकुचित विचार के कारण समाज को धर्म, जाती, प्रांत, भाषा और संस्कृति के आधार पर अनेक हिस्सों में विभाजित किये हैं। व्यक्ति के कर्म से उनका व्यक्तित्व निर्धारित होता हैं, लेकिन कर्म के बजाय धर्म और जन्म से व्यक्ति को तोल रहे हैं। धन का महत्व बढ़ गया है। धन के सामने गुण का ह्रास हो रहा है। धर्म, जाती और संपत्ति मनुष्य को ऊँच-नीच में बाँट रही हैं। इस बंटवारे में आदिवासी समाज का निर्माण हुआ है। यह गैरआदिवासी समाज से पूर्ण रूप से अलग है ।

प्रकृति के झूले में, जंगल की छाया में, कृत्रिमता से, आडंबरता से बहुत दूर, आधुनिक समाज की सुख - सुविधाओं से परे सरल, साधारण जीवन व्यतीत करने वाले हैं आदिवासी । एक दूसरे की सहायता करना, आदर करना, विश्वास करना इनके जन्म सिद्ध गुण हैं। इन गुणों का झलक उनके कर्म में दिखता है। दूसरों के प्रति विश्वास रखने की यही बात उनके जीवन को अंधेरे में ढकेल रही है। इस विषय को मल्लीपुरम जगदीश जी ने अपनी कहानियों में बहुत ही मार्मिक चित्रण किये हैं। जगदीश जी तेलुगु के प्रथम आदिवासी कहानीकार और उनकी व तेलुगू की

पहली कहानी संग्रह "शिलकोला" (शिलीमुख)है। जगदीश जी की कहानियों में आदिवासियों के वास्तविक जीवन का चित्रण है। वे जीवन में संघर्ष नहीं करते बल्कि जीवन से संघर्ष करते हैं। उनके लिए तो जीवन का पर्याय संघर्ष है। जगदीश जी की भाषा स्वाभाविक है। उन्होंने अपनी "शिलकोला " से पाठकों के हृदय को घायल किया है । घाव जितने गहरे थे उनसे भी अधिक गहराई से, पीडा के बदले जगदीश जी और उनकी कहानियों के प्रति आदर व सम्मान की भावनाएं उभरकर आई हैं । उन्होंने अपनी पहली कहानी संग्रह से ही पाठकों के हृदय पर अपनी छाप छोडा है ।

शिलकोला कहानी में चामंती आदिवासी महिला है। वह हास्टल में रहकर दसवीं कक्षा तक पढ़ती है। एक शहरी (जगन्नाथम) आदिवासी गाँवों में व्यापार के लिए आता जाता है। चामंती के पिता से दोस्ती करता है । उनसे घुलमिल जाता है। थोडे ही दिनों में वह ठेकेदार बन जाता है। चामंती के गाँव में ही वह काम शुरू करता है। इस काम में चामंती के पिता को मैनेजर बनाता है। हर दिन गाँव आता है और निर्माण का काम देखता है फिर शहर चला जाता है। जब चामंती छात्रावास से घर वापस आती है तो, जगन्नाथम से मिलती है। जगन्नाथम चामंती से बहुत अच्छे से बातें करता रहता है। सिनेमा, सिनेमा की पत्र-पत्रिकाओं व आई.टी. डि.ए के द्वारा , सरकार के द्वारा की जाने वाले कार्यक्रमों के बारे में बताता है। धीरे-धीरे चामंती का विश्वास जीतने लगता है। यह उनका चाल है।

एक दिन चामंती आई. टि.डि.ए. के द्वारा अध्यापिका की नौकरी पाने की खबर सुनकर बहुत खुश होती है। नौकरी में भर्ती होने तक पूरे काम- कॉज जगन्नाथम अपने कंधों पर लेकर पूरा करता है। इन दोनों के बीच में दूरी कम होती जाती है। बिल्डिंग का निर्माण पूर्ण हो जाता है। वह गाँव से जाने से पहले चामंती को अपनी बातों के जाल में डाल लेता है। घर, गाँव और माता-पिता को छोड़कर जगन्नाथम के साथ शादी कर लेती है। एक बच्ची की माँ बनने के बाद चामंती को पता चलता है कि वह जगन्नाथम की दूसरी पत्नी हैं। वह मानती है कि- उनके जीवन के दुःख का कारण स्वयं वही है। इसलिए वह अपने को कोसते हुए कहती है कि " मेरा पागलपन हैं कि मेरा जीवन भर अंधकार हो तो, चाँदनी कहाँ से आती है? अपनी जाति के न होने पर भी उन पर विश्वास रखकर माता-पिता, गाँव व रीति-रिवाजों को छोड़ने का नतीजा है। मुझे सही दंड मिला है।"(ना पिछिगानी ब्रतुकुनिंडा चीकटुमटे इंका वेन्नेला एक्कडनुमचि वस्तुंदि' सोंता कुलमु काका पोइना अतन्नि नम्मि तल्लिनी -तंड्रिनि ऊरुनि, कट्टुबाटलनी वदूलुकुन्दकू नाकु तगिन शिक्षे पडिंदि । " 1

शादी के बाद पता चला कि वह किस किस्म का आदमी है। वह केवल चामंती का,उसकी जाती का फायदा उठा रहा है। चामंती को पत्नी नहीं कठपुतली समझता है। अपनी ऊँगलियों पर नचाता है। जाती को लेकर हमेशा चामंती को भला- बुरा कहता है। उसके पास वे सब बुरी आदतें हैं जिन आदतों से आदमी, जानवर बन जाता है। वह अपनी बेटी के जन्म पर शंका करते हुए चामंती के चरित्र पर ऊँगली उठाता है।

चुनौतियों में उस प्रांत के चुनाव का टिकट जनजातियों के आरक्षण में आता है। जगन्नाथम चामंती को एम.एल.ए पद के लिए खड़ा करवाना चाहता है। किन्तु चामंती को चुनाव में खडे होने का कोई इरादा ही नहीं है। चामंती तबादला के कारण दूसरा गाँव जाती है। चामंती अपनी बेटी के खातिर जगन्नाथम की हर एक गलत हरकत को सहती है। वहाँ वह लक्ष्मी से दोस्ती करती है। जो अपने पति से तलाक लेकर बच्चों के साथ रहती है एवं एक सेवा संस्था में काम करती है। लक्ष्मी की बातों से चामंती को धैर्य मिलती है, और अपने आप पर विश्वास भी।

एक रात जगन्नाथमा नशे में आता है तो चामंती को अच्छा नहीं लगता। वह कहता है कि " मैं ने जिला कार्य प्रभारित को मिला था। सारी बातें मैंने कर लीं। टिकट हमें ही मिलेगा। वे कल हमारे गाँव आ रहे हैं और गेस्ट हाउस में ही रहेंगे।" (" जिल्ला इन्चर्जिनी कलिसानु।अन्नी विवरम्गा मा टलाडामू। आयना रेपु मनवुरे वस्तुन्नारु। गस्ट हाऊस लो उंटारु…....") 2 उनके द्वारा कही गयी बातों से चामंती हटात हो जाती है। उनका कहना है कि- "छात्रावास

में रहनेवाली बच्ची को घर बुलाओ मैंने कार्य प्रभारित को पार्टी के लिए बुलाया है।" (" पापनि ओकसारि इनटिकि पिलिपिंचु। इंचार्जीनी पार्टि की पिलिचनू।")3"शिलकोला" जैसी ये बातें उसके हृदय पर वार किया है। इन बातों को सुनने के बाद चामंती अपना आपा खो जाती है। कुछ देर बाद देखा तो जगन्नाथम घर के बाहर गंदगी में पड़ा रहता है। जगन्नाथम को सही स्थान मिला है। क्यों कि "जैसा कर्म वैसा फल " |

"इप्पा मोग्गलू " (महुआ की कलियाँ) - मल्लीपुरम जगदीश जी की तरकश से निकला हुआ एक तीर है। इस कहानी में भूदेवी एक आदिवासी युवती है। वह आई.टी.डी.ए व निमगित संस्थाओं के द्वारा दी गयी प्रशिक्षण प्राप्त करती है। प्रशिक्षण के अंतिम दिन प्रमाण पत्र प्राप्त करती है। अब उनका लक्ष्य है कि नौकरी पाकर अपने परिवार की जिम्मेदारी उठाना। इसलिए वह रोजगार सेल में अपना नाम लिखवाने आई.टी. डि.ए दफ्तर जाती है। जब भी वह आई टि.डि.ए दफतर जाती है तो उनके जीवन की कुछ बुरी यादें ताजा हो जाती हैं, जो अपनी बहन ज्योती के हैं।

ज्योति भूदेवी की बड़ी बहन है। भूदेवी का बचपन अपनी बहन की गोदी में ही गुजरती है। ज्योति अपनी बहन को माँ का प्यार देती है। ज्योति हाईस्कूल की पढाई के बाद दो साल घर में रहती है। तब भूदेवी पढ़ाई के लिए छात्रावास में भर्ती होती है। एक दिन ज्योती अचानक अपना बैग लेकर आई.टी.डि.ए के द्वारा ए.एन.यम प्रशिक्षण के लिए चली जाती है। ज्योति की गैरमौजूदगी में घर सूना हो जाता है। फिर एक दिन ज्योति एक आदमी के साथ मोटार गाडी से उतरती है। माँ को नौकरी की खबर देती है। माँ के हाथों में पैसों के गड्डे देकर चली जाती है। कुछ दिनों के बाद पता चलता है कि हालात ठीक नहीं है। उसका स्वास्थ्य बिगड गया है। माँ ,गाँव के लोगों के साथ आई.टी. डि.ए के पास गया तो पता चला कि "उसे बड़े अस्पताल में भर्ती किया है।" अस्पताल जाने के बाद वहाँ ज्योति का निष्प्राण शरीर को देखकर सब के दिलों पर निराशा छा जाती है। इस का कारण ज्योति एक आदमी के प्यार में धोखा खाना है। वह आदमी अपने मतलब के लिए ज्योति को उपयोग करता है। इन सभी यादों से भूदेवी के दिल में एक ओर भय हमेशा छिपी रहती है।

जब भूदेवी आई.टि.डि.ए दफतर जाती है, तो वहाँ के हर एक कर्मचारी अपनी आँखों से तीर चलाते हैं। निशाना तो भूदेवी की सुंदरता है। उनकी बातें, नजरें भूदेवी को परेशान करते रहते हैं। ऐसी स्थिति में उसे अपनी बहन की याद आती है। जिन परिस्थितियों के कारण ज्योति को अपना जीवन समाप्त करना पडा है, उनसे भूदेवी दूर रहना चाहती है। किन्तु दफतर के लोग इसके पास आने में, इसकी खूबसूरती की प्रशंसा करने में कोई कसर नहीं छोड़ रहे हैं। वे कहते हैं कि -" हमारा दफतर आज पावन हुआ है। इनके सामने हीरोइन किस काम के लिए है? हीरोइन को मेकप करवानापड़ता है। "(मना ऑफ़िस पावनमैपोइन्दिरा ईवेला।ईल्लदाग्गरा ये हीरोइन पनिकोस्तादिरा ? हीरोइनलकैते मेकप्पेय्यालिरा….") 4 इन बातों से वह विस्त हो जाती है। नौकरी के लिए शहर आकर इन बातों को सुनना पड़ रहा है। अपने जन्म और जीवन के प्रति घटिया सोच रखने वालों को देखकर, उनकी बातें सुनकर वह कहती हैं कि -" सबसे मिलकर चलने के लिए शहर आना पडा। किन्तु हर कदम पर अपमान। दूसरों को नीचा दिखाने का कोई मौका नहीं छोड़ते। साथी आदमी के जन्म के प्रति अनुचित बातें करनेवाले सभ्य हैं? इतनी असभ्य बातें करने वाले आधुनिक कैसे होते हैं ? (नलूगुरितो नडवडानिकि नगरानिकोस्ते .... अडुगडुगुना अवमानम। संदु दोरिकिते आक्रमिचुकोवडम। तोटि मनिषि जन्म गुरुाचे हीनंगा माटलाडे वील्लु नागरिकुला? इन्ता दिगजारि नीचंगा माटलाडे विल्लुआधुनिकुला।) 5

होटल की नौकरी में हर दिन आने-जाने वालों से आदर पूर्वक व्यवहार करना, उनके हर एक घटिया हरकत को नजरंदाज करते हुए काम पूरा करना यही हरदिन चलता रहता है। काम पूरा करके रूम में जाना भी कोई साहस से कम नहीं। मैनेजर की बुरी नज़र तो हमेशा भूदेवी पर ही रहती हैं। उसे लगता है कि वह किसी न किसी दिन मेरे पास

आयेगी। एक रात मैनेजर एक कदम आगे बढाकर भूदेवी से गलत करना चाहता है। भूदेवी अपनी सहनशीलता को खो देती है। अपने अंदर की घृणा को व्यक्त करती है। तब उसे दस साल पहले आत्महत्या करके अपना जीवन समाप्त करनेवाली बहन की याद आती है। उस आधी रात में वह अपना गाँव वापस जाने के लिए चली जाती है। अनगिनत आशाओं को साथ लेकर चली अपनी आँखें आज निराशा से गाँव लौटी है। उनके कदम गाँव में पड़ते ही वह एक प्रकार की सुरक्षा का अनुभव करती है। इसकी" महुआ की कलियों " इप्पा मोग्गलू " जैसे सपने खिलने से पहले ही मुरझा गये हैं।

उपसंहार:-

मल्लीपुरम जगदीश जी की" शिलकोला " कहानी संग्रह की एक-एक कहानी एक-एक' शिलकोला' के समान है। अपनी जाति व घर की स्त्री को देवी और दूसरी जाति की स्त्री को खिलौना समझने की निम्न दृष्टि का अपनी कहानियों में स्वाभाविक वर्णन किया है। स्त्री तो स्त्री होती है। बच्चों के लिए माँ,पिता की पुत्री, पति की पत्नी और भाई की बहन होती है- इस में आदिवासी व गैर आदिवासी का अंतर नहीं होता है ।इन कहानियों में गैर आदिवासी पुरुष अपने को सभ्य समझते है बल्कि वे अपने सोच से अब भी असभ्य ही रह गये हैं। यदि किसी व्यक्ति दूसरों के प्रति निम्न दृष्टि रखता है तो उसमें दिखने वाले में नहीं देखने वाले की दृष्टि में कमी है, क्यों कि उनका घमंड उनकी आंखों की पट्टी बन कर रहता है।

संदर्भ :

1. मल्लीपुरम जगदीश, शिलकोला, स्नेहा कलासहिती, कुरपम, प्रकाशन वर्ष 2011,पृष्ठ संख्या-90
2. मल्लीपुरम जगदीश, शिलकोला, स्नेहा कलासहिती, कुरपम, प्रकाशन वर्ष 2011,पृष्ठ संख्या-93
3. मल्लीपुरम जगदीश, शिलकोला, स्नेहा कलासहिती, कुरपम, प्रकाशन वर्ष 2011,पृष्ठ संख्या-94
4. मल्लीपुरम जगदीश, शिलकोला, स्नेहा कलासहिती, कुरपम, प्रकाशन वर्ष 2011,पृष्ठ संख्या-130
5. मल्लीपुरम जगदीश, शिलकोला, स्नेहा कलासहिती, कुरपम, प्रकाशन वर्ष 2011,पृष्ठ संख्या-131

ई-मेल: sujatha.nunna83@gmail.com,
फोन: 9989965796.

www.bohalshodhmanjusha.com Bohal Shodh Manjusha ISSN: 2395-7115
Impact Factor: 8.642 June 2026 Page No. : 61-66
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

“सादा जीवन, उच्च विचार” : श्रीमद्भगवद्गीता एवं राधास्वामी संतमत का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. प्रीति श्रीवास्तव
एसोसिएट प्रोफेसर,
डिपार्टमेंट ऑफ़ संस्कृत, एस. एन. डी. टी. कॉलेज ऑफ़ आर्ट्स एंड
एस. सी. बी. कॉलेज ऑफ़ कामर्स एंड साइंस फॉर वीमेन, चर्चगेट, मुंबई- 400020

शोध-सारांश:

“सादा जीवन, उच्च विचार” केवल एक नैतिक सूत्र नहीं, अपितु भारतीय संस्कृति की वह जीवन-दृष्टि है, जो मनुष्य को बाहरी आडम्बर से हटाकर आंतरिक चेतना और आत्मिक विकास की ओर प्रेरित करती है। प्राचीन भारतीय परंपरा में सादगी को शक्ति तथा उच्च विचारों को वास्तविक संपदा माना गया है। आधुनिक युग में, जहाँ उपभोगवाद, प्रतिस्पर्धा और मानसिक तनाव का प्रभाव बढ़ता जा रहा है, वहीं यह सिद्धांत और अधिक प्रासंगिक प्रतीत होता है। समकालीन संदर्भ में सादगी का आशय अभावग्रस्त जीवन न होकर संयमित एवं विवेकपूर्ण जीवन-पद्धति से है, तथा उच्च विचारों का अर्थ नैतिकता, मानवता और मूल्य-आधारित चिंतन से है।

इसी संदर्भ में श्रीमद्भगवद्गीता और संतमत, विशेषतः राधास्वामी मत, मानव जीवन को संतुलित और आध्यात्मिक दिशा प्रदान करते हैं। गीता का निष्काम कर्मयोग तथा राधास्वामी मत का ‘सुरत-शब्द योग’ दोनों ही मनुष्य को बाह्य आकर्षणों से ऊपर उठाकर अंतःशांति और आत्मबोध की ओर ले जाते हैं। प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि संयमित जीवन केवल भौतिक सीमितता नहीं, बल्कि मानसिक संतुलन, आत्मिक उन्नति और मूल्याधारित चिंतन का आधार है।

प्रस्तुत शोध से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि सादा जीवन केवल बाह्य संयम नहीं, बल्कि मानसिक संतुलन, आध्यात्मिक चेतना एवं सामाजिक समरसता की आधारभूमि है। गीता और राधास्वामी मत दोनों ही आधुनिक उपभोक्तावादी जीवन के मध्य संतुलित एवं मूल्यनिष्ठ जीवन-पद्धति का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

मुख्य शब्द: श्रीमद्भगवद्गीता, संतमत, राधास्वामी मत, निष्काम कर्मयोग, सुरत-शब्द योग, सादगी, उच्च विचार।

प्रस्तावना:

"सादा जीवन, उच्च विचार" भारतीय संस्कृति की एक शाश्वत जीवन-दृष्टि है, जो मनुष्य को बाह्य आडम्बर और भौतिक आकर्षणों से ऊपर उठाकर आत्मिक सामंजस्य, नैतिकता और उच्च जीवन-मूल्यों की ओर प्रेरित करती है। इसका तात्पर्य केवल सीमित आवश्यकताओं वाला जीवन नहीं, बल्कि ऐसा संयमित एवं विवेकपूर्ण जीवन है, जिसमें व्यक्ति अपनी मानसिक और आध्यात्मिक ऊर्जा को लोककल्याण तथा आत्मोन्नति के लिए नियोजित कर सके।

भारतीय चिंतन परंपरा में यह आदर्श वैदिक ऋषियों, उपनिषदों, जैन-बौद्ध परंपराओं तथा संत साहित्य में विविध रूपों में प्रतिपादित हुआ है। श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान श्रीकृष्ण द्वारा प्रतिपादित '***युक्ताहारविहारस्य***' का सिद्धांत संयमित जीवन का आदर्श प्रस्तुत करता है, जबकि संतमत, विशेषतः राधास्वामी मत, सादगी को आध्यात्मिक साधना का आधार मानता है। संत परंपरा के अनुसार बाह्य विलासिता, लोभ और अहंकार मनुष्य की आत्मिक उन्नति में बाधक हैं। राधास्वामी मत 'सहज मार्ग' का प्रतिपादन करता है, जिसमें गृहस्थ जीवन के भीतर रहते हुए साधना, सेवा और नाम-सुमिरन द्वारा आत्मिक उन्नति संभव मानी गई है। इस प्रकार यह मत संसार से पलायन के स्थान पर संयमित एवं आध्यात्मिक जीवन-पद्धति का समर्थन करता है।

शोध-पद्धति:

प्रस्तुत शोध में तुलनात्मक, विश्लेषणात्मक तथा व्याख्यात्मक शोध-पद्धतियों का प्रयोग किया गया है। अध्ययन के प्राथमिक स्रोत के रूप में श्रीमद्भगवद्गीता, सारबचन नज़्म, सारबचन नसर एवं निज उपदेश का उपयोग किया गया है, जबकि द्वितीयक स्रोतों में भारतीय दर्शन, संतमत एवं आधुनिक मनोविज्ञान से संबंधित ग्रंथों एवं शोध-लेखों का सहारा लिया गया है। अध्ययन का उद्देश्य गीता एवं राधास्वामी संतमत में प्रतिपादित "सादा जीवन, उच्च विचार" की अवधारणा का समकालीन संदर्भों में तुलनात्मक विश्लेषण करना है।

शोध-उद्देश्य:

शोध का उद्देश्य यह प्रतिपादित करना है कि सादा जीवन केवल भौतिक त्याग नहीं, बल्कि मानसिक शांति, आत्मज्ञान, सेवा-भाव और उच्च चिंतन का आधार है। वर्तमान भौतिकतावादी एवं तनावपूर्ण युग में यह संतुलित जीवन-दृष्टि मानवता के लिए मूल्यनिष्ठ एवं आध्यात्मिक जीवन का प्रभावी मार्ग प्रस्तुत करती है। उपलब्ध साहित्य के अध्ययन से ज्ञात होता है कि श्रीमद्भगवद्गीता तथा राधास्वामी संतमत पर पृथक-पृथक पर्याप्त शोध कार्य उपलब्ध हैं, किन्तु "सादा जीवन, उच्च विचार" की अवधारणा के संदर्भ में दोनों का तुलनात्मक एवं समकालीन उपभोक्तावादी जीवन-दृष्टि से संबंधित विश्लेषण अपेक्षाकृत अल्प है। प्रस्तुत शोध इसी शोध-अंतर की पूर्ति का प्रयास करता है।

श्रीमद्भगवद्गीता में सादगी और उच्च विचारों की अवधारणा:

श्रीमद्भगवद्गीता में सादा जीवन और उच्च विचारों का आधार सात्विकता, निष्काम कर्म, स्थितप्रज्ञता तथा लोकसंग्रह की भावना में निहित है। गीता के अनुसार सादगी का अर्थ अभावपूर्ण जीवन नहीं, बल्कि 'अनासक्ति' है। गीता के 17वें अध्याय में आहार, तप और दान की सात्विकता पर बल दिया गया है। गीता के अनुसार सात्विक आहार सादगीपूर्ण एवं संतुलित जीवन का आधार है।

श्रीकृष्ण का कथन है कि मनुष्य को अपनी इंद्रियों पर नियंत्रण रखते हुए मर्यादित एवं संतुलित जीवन जीना चाहिए। गीता में स्थितप्रज्ञ पुरुष का स्वरूप बताते हुए कहा गया है -

"दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः सुखेषु विगतस्पृहः।" - (श्रीमद्भगवद्गीता 2.56)

अर्थात् जो दुःख में विचलित नहीं होता और सुख में आसक्ति नहीं रखता, वही स्थिर बुद्धि वाला व्यक्ति है। ऐसा व्यक्ति ही वास्तविक अर्थों में सादा जीवन जीता है।

गीता का निष्काम कर्म सिद्धांत उच्च विचारों का मूल आधार है -

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।

मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि।। - (श्रीमद्भगवद्गीता 2.47)

यह श्लोक स्पष्ट करता है कि मनुष्य को कर्म करना चाहिए, किंतु फल की आसक्ति से मुक्त रहना चाहिए। जब व्यक्ति कर्मफल की चिंता छोड़ देता है, तब उसका जीवन सरल, संयमित एवं तनावमुक्त हो जाता है। यही संयमित जीवन नैतिक चेतना एवं उच्च चिंतन की आधारभूमि निर्मित करता है।

युक्ताहारविहारस्य युक्तचेष्टस्य कर्मसु।

युक्तस्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःखहा।। - (श्रीमद्भगवद्गीता 6.17)

गीता का यह श्लोक योग के लिए आवश्यक संतुलित जीवन-पद्धति का अत्यंत महत्त्वपूर्ण सिद्धांत प्रस्तुत करता है। यह श्लोक स्पष्ट करता है कि योग केवल ध्यान या आसन का नाम नहीं है, बल्कि संतुलित जीवन ही योग का आधार है। शरीर, मन और व्यवहार की सम्यक व्यवस्था से ही चित्त स्थिर होता है और दुःखों का निवारण संभव होता है।

संक्षेप में, गीता के अनुसार संयमित जीवन केवल व्यक्तिगत मुक्ति का साधन नहीं, बल्कि लोककल्याण का आधार भी है। सीमित आवश्यकताओं वाला व्यक्ति अपनी ऊर्जा और संसाधनों को समाज-सेवा में लगा सकता है। इस प्रकार गीता सादगी को आत्मिक शांति तथा उच्च विचारों को धर्म और लोकसंग्रह से जोड़ती है।

राधास्वामी मत में सादगी और उच्च विचारों की अवधारणा:

राधास्वामी मत, जिसकी स्थापना स्वामी शिवदयाल सिंह जी (परम गुरुहुजूर स्वामी जी महाराज) ने की, भारतीय संत परंपरा का एक वैज्ञानिक एवं आध्यात्मिक स्वरूप है। राधास्वामी मत के प्रमुख ग्रंथ निज उपदेश में संतमत की सादगी, वैराग्य एवं आंतरिक साधना को आत्मोन्नति का मूल आधार माना गया है। यहाँ सादगी का अर्थ मात्र बाहरी साधारणता नहीं, अपितु इच्छाओं, लोभ, अहंकार और मानसिक विकारों से मुक्त संतोषपूर्ण जीवन है।

राधास्वामी मत के अनुसार व्यक्ति को अपनी मेहनत की कमाई पर निर्भर रहना चाहिए तथा अनावश्यक भोग-विलास से दूर रहना चाहिए, क्योंकि यही मानसिक अशांति के प्रमुख कारण हैं। यहाँ सेवा, सत्संग और नाम-सुमिरन को विशेष बल दिया गया है।

इस मत में 'उच्च विचार' की सर्वोच्च अवस्था 'सुरत-शब्द योग' मानी गई है, जिसके माध्यम से आत्मा दिव्य शब्द से जुड़कर सांसारिक आकर्षणों से ऊपर उठती है। यह साधना व्यक्ति को सत्य, प्रेम, भक्ति और आत्म-साक्षात्कार की ओर अग्रसर करती है।

राधास्वामी मत के पूज्य आचार्यों के अनुसार सादा जीवन व्यक्ति को लोभ, आडम्बर और अहंकार से दूर रखता है, जबकि उच्च विचार उसे सेवा, परोपकार और आत्मिक जागरण की ओर ले जाते हैं।

इस संदर्भ में राधास्वामी मत के छठे आचार्य परम गुरु मेहताजी महाराज के अमूल्य परामर्श हैं कि - "सादा जीवन, उच्च विचार" मानव का ध्येय होना चाहिए। वर्तमान काल में जीवन-संघर्ष की तीव्रता के कारण यह सिद्धांत अत्यंत प्रासंगिक प्रतीत होता है। उनके मतानुसार कभी ऐसे वातावरण में सम्मिलित न हों जहाँ मन एवं बुद्धि अनावश्यक रूप से उद्विग्न एवं असंयमित हो जाएँ और फिर आप उसको काबू में न ला सकें। अनावश्यक प्रदर्शन एवं कोलाहलपूर्ण

प्रवृत्तियों से दूर रहें, जिससे आपका व दूसरों का भी समय नष्ट हो। (पावन स्मृत्यालय दयालबाग से 3/2/2001 को अनूदित)

तुलनात्मक विश्लेषण:

श्रीमद्भगवद्गीता और राधास्वामी मत दोनों ही संयमित जीवन-पद्धति एवं मूल्याधारित चिंतन को आत्मिक उन्नति का मूलाधार मानते हैं। गीता में निष्काम कर्मयोग को आध्यात्मिक उन्नति का प्रमुख साधन माना गया है, जबकि राधास्वामी मत में अंतर्मुख साधना एवं सुरत-शब्द योग के माध्यम से आत्मिक चेतना के जागरण पर विशेष बल दिया गया है। दोनों परंपराएँ बाह्य आडम्बर की अपेक्षा आंतरिक शुद्धि को अधिक महत्त्व प्रदान करती हैं।

गीता में गुरु को ज्ञानदाता, मार्गदर्शक एवं आत्मबोध का सहायक माना गया है, जबकि राधास्वामी मत में गुरु को परम चेतना अथवा दिव्य सत्ता का साकार एवं जीवंत माध्यम स्वीकार किया गया है।

संतमत का सिद्धांत - **"हाथ कार वल, चित्त यार वल"** - इस तथ्य को प्रतिपादित करता है कि मनुष्य कर्म करते हुए भी अपने अंतर्मन को परमात्मा से जोड़ सकता है। इसी प्रकार गीता का कर्मयोग भी संसार में रहते हुए अनासक्ति का संदेश देता है। दोनों विचारधाराएँ **'अति सर्वत्र वर्जयेत्'** के सिद्धांत को स्वीकार करते हुए सादगी को साधन तथा उच्च विचारों को जीवन का लक्ष्य मानती हैं।

तुलनात्मक सारणी:

तुलनात्मक बिंदु	**श्रीमद्भगवद्गीता**	**राधास्वामी मत**
मूल उद्देश्य	मोक्ष एवं धर्म की स्थापना	आत्मिक उन्नति एवं सचखण्ड की प्राप्ति
सादगी का आधार	सात्विकता, इंद्रिय-निग्रह एवं अनासक्ति	सेवा, सत्संग, संतोष एवं नाम-सुमिरन
प्रमुख साधना	निष्काम कर्मयोग	सुरत-शब्द योग
जीवन-दृष्टि	कर्म करते हुए अनासक्ति	गृहस्थ जीवन में सहज साधना
गुरु की भूमिका	गुरु मार्गदर्शक एवं ज्ञानदाता	गुरु को परम चेतना का जीवंत माध्यम
उच्च विचार का स्वरूप	लोकसंग्रह, धर्म एवं आत्मसंयम	प्रेम, भक्ति एवं आत्म-साक्षात्कार
अंतिम लक्ष्य	आत्मिक मुक्ति एवं स्थितप्रज्ञता	परमात्मा से एकत्व एवं आंतरिक शांति

वर्तमान में प्रासंगिकता:

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में तीव्र भौतिकवाद, अत्यधिक भौतिक आकांक्षाओं एवं प्रतिस्पर्धात्मक जीवन-शैली के कारण मनुष्य मानसिक असंतुलन, अवसाद, चिंता एवं अस्तित्वगत शून्यता जैसी समस्याओं से ग्रस्त होता जा रहा

है। भौतिक संसाधनों की अभूतपूर्व वृद्धि के बावजूद आधुनिक मानव अंतःसंतोष एवं आत्मिक सामंजस्य से वंचित दिखाई देता है। ऐसे संक्रमणकाल में "सादा जीवन, उच्च विचार" की भारतीय अवधारणा अत्यंत प्रासंगिक एवं जीवनोपयोगी सिद्ध होती है।

श्रीमद्भगवद्गीता मनुष्य को आत्मसंयम, समत्व एवं निष्काम कर्म का उपदेश देकर मानसिक संतुलन की दिशा प्रदान करती है। आधुनिक मनोविज्ञान के अनुसार ध्यान, आत्मसंयम एवं आध्यात्मिक अभ्यास तनाव-नियंत्रण तथा भावनात्मक संतुलन में सहायक होते हैं। सकारात्मक मनोविज्ञान (*Positive Psychology*) के प्रवर्तक मार्टिन सेलिगमैन (Martin Seligman) ने भी आंतरिक संतोष, नैतिक मूल्यों एवं मानसिक संतुलन को वास्तविक सुख का आधार माना है। इस दृष्टि से गीता तथा राधास्वामी मत की शिक्षाएँ आधुनिक मानसिक स्वास्थ्य विमर्श से सामंजस्य रखती हैं। राधास्वामी मत ध्यान, नाम-सुमिरन, सत्संग एवं आंतरिक साधना द्वारा चित्त-शुद्धि और अंतःशांति का मार्ग प्रशस्त करता है। दोनों ही विचारधाराएँ यह प्रतिपादित करती हैं कि आत्मिक जागरण के साथ मनुष्य की भौतिक वासनाएँ स्वतः संयमित होने लगती हैं।

उपभोक्तावादी संस्कृति ने मानव जीवन को कृत्रिम आवश्यकताओं, प्रदर्शनप्रियता एवं असीम उपभोग की ओर उन्मुख कर दिया है, जिससे सामाजिक असंतुलन तथा पर्यावरणीय संकट बढ़ रहे हैं। "सादा जीवन" का सिद्धांत सीमित उपभोग, संतोष एवं प्रकृति-सम्मत जीवन-पद्धति का समर्थन करता है। समकालीन चिंतक एरिक फ्रॉम (Erich Fromm) के अनुसार अत्यधिक भौतिक आकांक्षाएँ मनुष्य को आत्मिक रिक्तता और असंतोष की ओर ले जाती हैं। ऐसी परिस्थिति में "सादा जीवन, उच्च विचार" की भारतीय अवधारणा संतुलित एवं मानवीय जीवन-दृष्टि प्रस्तुत करती है। इस प्रकार गीता और राधास्वामी मत दोनों ही मानसिक संतुलन, नैतिक चेतना एवं सह-अस्तित्वमूलक जीवन के प्रभावी मार्गदर्शक सिद्ध होते हैं।

संक्षेपतः सोशल मीडिया एवं प्रदर्शनवादी संस्कृति ने आधुनिक मानव में तुलना, असंतोष एवं मानसिक दबाव को बढ़ाया है। ऐसे समय में "सादा जीवन, उच्च विचार" का सिद्धांत आंतरिक संतुलन एवं मूल्याधारित जीवन की दिशा प्रदान करता है। सीमित उपभोग एवं संतुलित जीवन-पद्धति पर्यावरणीय संरक्षण तथा सतत विकास (Sustainable Development) की दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण है।

निष्कर्ष:

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि "सादा जीवन, उच्च विचार" केवल एक नैतिक उपदेश नहीं, बल्कि भारतीय आध्यात्मिक चिंतन की एक समग्र एवं व्यावहारिक जीवन-दृष्टि है। श्रीमद्भगवद्गीता का निष्काम कर्मयोग तथा राधास्वामी मत का सुरत-शब्द योग, दोनों ही मनुष्य को बाह्य आडम्बर, लोभ और मानसिक अशांति से मुक्त कर अंतर्मन की स्थिरता एवं आत्मिक उत्कर्ष की दिशा प्रदान करते हैं।

गीता मनुष्य को जीवन-संघर्ष के मध्य समत्व और कर्तव्यनिष्ठा का संदेश देती है, जबकि राधास्वामी मत प्रेम, भक्ति और अंतर्मुख साधना के माध्यम से आत्मा को परम चेतना से जोड़ने का मार्ग प्रशस्त करता है। दोनों ही मत इस सत्य को प्रतिपादित करते हैं कि वास्तविक समृद्धि बाह्य वैभव में नहीं, बल्कि अंतःकरण की पवित्रता, संतोष, संयम और उच्च चिंतन में निहित है।

अतः वर्तमान भौतिकवादी एवं तनावग्रस्त युग में संयमित एवं नैतिक जीवन-दृष्टि केवल व्यक्तिगत आत्मिक उन्नति का साधन नहीं, बल्कि सामाजिक समरसता, मानसिक स्वास्थ्य, नैतिक पुनर्जागरण तथा वैश्विक संतुलन की अनिवार्य आवश्यकता है। यह जीवन-दृष्टि मानवता को उपभोगवाद से संयम की ओर, अशांति से आत्मिक शांति की

ओर तथा स्वार्थ से लोकमंगल की ओर उन्मुख करने वाली एक शाश्वत एवं सार्वभौमिक प्रेरणा है। आधुनिक मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक अध्ययन भी यह स्वीकार करते हैं कि सीमित उपभोग, आध्यात्मिक चेतना तथा नैतिक जीवन-मूल्य दीर्घकालिक मानसिक संतुलन और सामाजिक समरसता के आधार हैं। अतः गीता और राधास्वामी संतमत दोनों ही 'सादा जीवन, उच्च विचार' को व्यक्तिगत साधना के साथ-साथ सामाजिक एवं नैतिक पुनर्निर्माण का आधार मानते हैं। इस संदर्भ में स्व-रचित भावाभिव्यक्ति इस प्रकार है -

सहज हो जीवन, सरल विचार,
यही मनुजता का सच्चा सार।
व्यर्थ बाह्य आडम्बर सारा,
जब अंतर्मन हो उज्ज्वल-पार॥
अल्प साधनों में संतोष,
यही जीवन का दिव्य प्रकाश।
उच्च भाव की ज्योति जगाकर,
सादगी देती आत्म-विकास॥

सन्दर्भ-ग्रन्थ-सूची:

1. प्रभुपाद, ए. सी. भक्तिवेदांत स्वामी. (2014). *भगवद्गीता यथारूप*. मुंबई: भक्तिवेदांत बुक ट्रस्ट।
2. हिरियन्ना, एम. (2015). *Essentials of Indian Philosophy*. नई दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास।
3. राधाकृष्णन, एस. (1993). *The Bhagavadgita*. नई दिल्ली: Harper Collins Publishers India।
4. तिलक, बाल गंगाधर. (2000). *श्रीमद्भगवद्गीता रहस्य*. पुणे: लोकमान्य तिलक पब्लिकेशन।
5. शर्मा, सी. डी. (2000). *A Critical Survey of Indian Philosophy*. नई दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास।
6. परम गुरु स्वामीजी महाराज. (1982). *सारबचन नज़्म*. आगरा: दयालबाग राधास्वामी सतसंग सभा।
7. परम गुरु स्वामीजी महाराज. (1988). *सारबचन नसर*. आगरा: दयालबाग राधास्वामी सतसंग सभा।
8. परम गुरु हुज़ूर महाराज. (1998). *Discourses of Huzur Maharaj*. आगरा: राधास्वामी सत्संग।
9. परम गुरु हुज़ूर महाराज. (2006). *निज उपदेश*. आगरा: दयालबाग राधास्वामी सतसंग सभा।
10. परम गुरु हुज़ूर मेहताजी महाराज. (1979). *बचन* (भाग–2). आगरा: दयालबाग राधास्वामी सतसंग सभा।

Mob.9004322178, Email – preetisndt@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com Bohal Shodh Manjusha ISSN: 2395-7115
Impact Factor: 8.642 June 2026 Page No. : 67-71
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

भारतीय लोक कलाओं का सामाजिक संदर्भ

डॉ. नीलम कुमारी
एसोसिएट प्रोफेसर,
हिन्दी विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी – 221005

भारतवर्ष विविधताओं से सम्पन्न है यहाँ कदम-कदम पर क्षेत्रीय व सांस्कृतिक विशेषताएँ विद्यमान हैं। भारत के पूर्वोत्तर राज्यों की अपनी अलग संस्कृति है जैसे - असम का बिहू, नागालैंड का हार्नबिल, मिज़ोरम का बम्बू नृत्य आदि तो वहीं पश्चिम में गुजरात का गरबा, राजस्थान का घूमर उत्तर में जम्मू- कश्मीर, हिमाचंल में पहाड़ी जीवन की झलक जिसमें पशमीना शॉल, लकड़ी की नक्काशी, पारंपरिक लोकनृत्य इस क्षेत्र के आत्मा कहे जाते हैं तो वहीं दक्षिण भारत में तंजौर पेंटिंग,कलमकारी, हस्तशिल्प और नक्काशी प्रसिद्ध हैं। सबसे खास बात यह है कि भारतीय लोक कला केवल मनोरंजन या सौंदर्य प्रदर्शन का साधन नहीं है बल्कि यह हमारे देश, समाज की जीवंत अभिव्यक्ति का सुंदर उदाहरण हैं जो बताते हैं कि भारतवर्ष अपनी परंपरा व संस्कृति को विश्व पटल पर आज भी कायम किए हुए है। लोक कलाएँ हमारी सांस्कृतिक धरोहर है जो हमें अपने गौरवशाली इतिहास पर गर्व करना सिखाती है। लोक कलाओं में जुड़ाव होता है लगाव होता है अपनत्व होता है जो भारतवासियों को आपस में बाँधकर रखता है। वर्तमान के रील्स के दौर में नई युवा पीढ़ी भी अपनी लोक कलाओं को अपनाने में आगे है जिससे देश-विदेश में भारतीय लोक कलाओं से लोग परिचित होने के साथ ही इससे जुड़ भी रहे हैं।

कला किसी औपचारिक प्रशिक्षण पर आधारित न होकर, पूरी तरह से मानवीय अनुभूतियों की सहज अभिव्यक्ति एवं सामाजिक शिक्षा पर आधारित होती है। कला समाज के जनमानस का दर्पण होती है और उनके जीवन के हर आयाम को जीवंतता के साथ दर्शाती है। भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता का जीवंत उदाहरण लोक कलाएँ प्रस्तुत करती हैं। आज विज्ञान और प्रौद्योगिकी के ज़माने में भी हमारे गाँवों में मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम का आदर्श जीवन राम लीला के रूप में मंचित किया जाता है जहाँ समस्त वातावरण राममय हो जाता है। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी का कहना था कि -"असल भारत गाँव में ही रहता है "। लोक कलाएँ इस मशीनीकरण के दौर में मानवीय जीवन को बचाए रखती हैं। लोक कलाएँ भारतीय समाज की अमूल्य विरासत है जो विश्वगुरु भारत को अपने स्वर्णिम इतिहास पर गर्व महसूस कराती है। रामलीला का मंचन भारतवर्ष से बाहर कम्बोडिया,मलेशिया,थाईलैंड जैसे देशों में भी किया जाता है जो

भारतीय लोक कला का अनुसरण कही जा सकती है। भारतीय लोक कलाओं में धार्मिक, नैतिक आदर्श समाया रहता है जो हमें अच्छाई, बुराई, जल, जंगल, जमीन के महत्त्व को सहेजना सिखाती है जैसे पट्टचित्र और यंगका जो ओडिशा, लद्दाख में प्रचलित हैं जिसमें चित्रों के जरिए धार्मिक कथाओं और नैतिक मूल्यों को बिना पढ़े-लिखे लोगों तक भी प्रदर्शन के माध्यम से पहुँचाया जाता है। इसी क्रम में नुक्कड़ नाटक और रामलीला आते हैं जो बुराई पर अच्छाई की जीत का संदेश देते हैं। लोक कलाएँ प्रकृति और पर्यावरण से गहरे रूप से जुड़ी होती हैं। प्राचीन इतिहास में मध्यप्रदेश के भीमबेटका गुफा में पाए जाने वाले शैलचित्र लोक कलाओं का जीवंत उदाहरण हैं जहाँ लोक कलाएँ प्रकृति की महत्ता को दिखाती है कि पशु व मनुष्य का अस्तित्व प्रकृति से है। लोक कला पहाड़, नदी, पेड़ को जीवित प्राणी की तरह दर्शाती है जैसे - मध्यप्रदेश की गोंड कला जो मानती हैं कि प्रकृति में आत्मा होती है इसलिए लोगों को पर्यावरण के प्रति संवेदनशील रहना चाहिए। भारतीय लोक कलाएँ आदर्श राज्य की अवधारणा को लेकर चलती हैं जहाँ सभी मनुष्य एक समान होते हैं, सभी ईश्वर की संतान माने जाते हैं इसी संदर्भ में प्रसिद्ध इतिहासकार **रोमिला थापर** अपनी पुस्तक **भारत का इतिहास** में रामराज्य का संदर्भ देती है जहाँ वो लिखती हैं – "आज भी एक आदर्श राज्य का वर्णन करने के लिए रामराज्य शब्द का प्रयोग किया जाता है राम का दक्षिण पार कर लंका पर विजय प्राप्त करने का वर्णन स्पष्ट रूप से दक्षिण में आर्यों के प्रवेश का संकेत करता है।"[1] भारतीय लोक कलाओं में आर्यों से पूर्व की संस्कृति से लेकर वर्तमान के नवाचार से उत्पन्न लोक कला का अद्भुत नमूना देखा जा सकता है। बदलते समय के साथ भारतीय लोक कलाएँ विश्व स्तर पर अपनी छाप छोड़ने में सफल रही हैं। आज डिजिटल माध्यम से देश के विभिन्न क्षेत्रों से लोक कलाएँ देश-विदेश में अपनी पहचान के साथ-साथ अपनी जगह भी बना रही हैं।

भारतीय पारंपरिक कला रूपों में संगीत, नृत्य, कठपुतली कहानी सुनाना और बहुत कुछ शामिल रहता है। यह भारतीय कला और संस्कृति की अनूठी विशेषता है भारत में प्रचलित सभी लोककलाएँ विश्व पटल पर अनूठी अनुष्ठानों का संग्रह है। भारतीय लोक कलाएँ विविधता और समृद्धि की प्रतीक हैं ,जैसे देश के अलग- अलग राज्यों में अलग-अलग प्रकार की लोककथाएँ प्रसिद्ध हैं। बिहार की मधुबनी, महाराष्ट्र की वर्ली मध्यप्रदेश की गोंड, भील व उड़ीसा के पट्टचित्र, आंध्र प्रदेश की कलमकारी, तंजौर कला, बुंदेलखंड के महबुलिया आदि भारतीय संस्कृति के सामाजिक विकास में लोक कलाएँ समरसता को प्रकट करती हैं। लेखक **गैरोला** लिखते हैं - "लोक चित्रकला और सांस्कृतिक सद्भाव का होना एक महत्वपूर्ण विषय है जो हमारी सांस्कृतिक और कला सारांश में बहुत महत्वपूर्ण है यह संबंध लोक कला और सांस्कृतिक विरासत के बीच में होना चाहिए।"[2] हाल ही में माननीय वित्त मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमण जी ने बजट पेश करते समय मधुबनी पेंटिंग पर आधारित साड़ी को पहना था जो भारतीय लोक चित्रकला का सुंदर उदाहरण है। मधुबनी पेंटिंग के बारे में लेखक **शास्त्री** लिखते हैं - "यह बिहार के मधुबनी जिले में प्रमुख रूप से पायी जाती है। मधुबनी कला को आमतौर से मिथिला कला के रूप में भी जाना जाता है। इस कला का जन्म राजा जनक के जीवनकाल के दौरान हुआ। इस कला में अलग-अलग प्रकार के आकारों के द्वारा चित्रकला को रेख प्रधान रूप में पूर्ण किया जाता है जिसमें विविध रंगों का उपयोग कर धार्मिक ग्रंथों, पुराणों, देवी देवताओं, जानवरों, पक्षियों, पेड़-पौधे, पुष्पलता आदि विषयों को प्राकृतिक रंगों से चिंतित किया जाता है।"[3]

जब भी देश में अन्य देशों से कोई अतिथि आता है तो भेंटस्वरूप उन्हें भारतीय लोक कला की कोई आकृति दी जाती है। ग्रामीण लोक कलाएँ ग्रामवासियों के जीवन और संस्कृति से सीधे रूप से जुड़ी होती हैं। इनके सामाजिक संदर्भ को निम्नलिखित पहलुओं से समझा जा सकता है -   सांस्कृतिक पहचान और परंपरा का संरक्षण लोक कलाएँ

सदियों से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक मौखिक रूप से और कला के जरिए से हस्तांतरित होती रही हैं। ये किसी क्षेत्र या समुदाय की अद्वितीय संस्कृति और परंपरा को प्रदर्शित करती हैं। सामाजिक और मनोरंजन कलाएँ शुरू से ही मनोरंजन और सामाजिक सामंजस्य पर केंद्रित रही हैं। विभिन्न उत्सवों, त्योहारों, विवाहों और धार्मिक आयोजनों पर सामूहिक रूप से इन कलाओं का प्रदर्शन गाँव के लोगों को एकजुट कर करते हैं जो सामुदायिक बंधन को मजबूत बनाता है दक्षिण भारत के राज्य तमिलनाडु में पोंगल लोक कला का जीता जागता उदाहरण है दक्षिण भारत की लोक संस्कृति के बारे में **रोमिला थापर** लिखती हैं –"दक्षिण भारत (तमिलनाडु, केरल, मैसूर) की महापाषाण संस्कृति और भूमध्य सागर की महापाषाण संस्कृति में घनिष्ठ समानताएँ हैं और संभव है कि दक्षिण भारत में यह संस्कृति पश्चिमी एशिया से आई हो, यह संपर्क आगे चलकर दोनों क्षेत्रों के बीच घनिष्ठ संबंध का रूप धारण कर लिया हो जो अभी हाल के दिनों तक चलता रहा हैं।"[4]

भारतीय समाज में लोक कलाएँ मानवीय भावनाओं और मूल्यों की अभिव्यक्ति, विचारों, विश्वासों और रीति-रिवाजों को व्यक्त करने का आधार होती हैं। लोकगीत, नृत्य और नाटक पौराणिक कथाओं, सामाजिक मान्यताओं और नैतिक शिक्षा को सरल और सहज तरीके से लोगों तक पहुँचाया जाता है। लेखक **अरविन्द** लिखते हैं - "लोक कलाएँ समाज की समस्याओं जीवन के अनुभवों और सांस्कृतिक परंपराओं को दर्शाती है यह लोगों को उनके समाज में हो रहे परिवर्तनों की सही दिशा में देखने का सामर्थ्य प्रदान करती है और सामाजिक सचेतना बढ़ाती है इससे लोग अपनी भूमिका को समझते हैं और समाज में सहयोग करने के लिये प्रेरित होते हैं।"[5]

सामाजिक शिक्षा और विकास के लिए लोक कला के माध्यम से (जैसे लोक नाटक, गीत) शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल, कृषि नवाचार और सरकारी विकास कार्यक्रमों के संदेशों को अशिक्षित या मुख्यधारा के मीडिया से दूर ग्रामीण समुदायों तक प्रभावी रूप से पहुँचाने का एक उचित और विश्वसनीय साधन रहा है। **ज्योति प्रसाद मिश्र 'स्त्री कवि कौमुदी'** में लिखती हैं -"देश इस समय स्वतंत्रता के लिए आगे बढ़ रहा है कितने ही लोक कलाकारों ने देशभक्ति से प्रेरित कला के माध्यम से समाज को जागृत करने में सहायता प्रदान की और राष्ट्रीय साहित्य का प्रादुर्भाव किया है।"[6]
आजीविका से हटकर पारंपरिक रूप से लोक कला का व्यवहार केवल आजीविका कमाने के लिए नहीं बल्कि अपने जीवन को सुख-शांतिमय बनाने, पारलौकिक शक्तियों से आशीर्वाद प्राप्त करने और जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति करते हुए अपने सहज जीवन-क्रियाकलापों को अभिव्यक्त करने के लिए भी किया जाता है। आदिवासी समुदाय भारतीय लोक कलाओं के संरक्षण एवं सृजनकर्ता के सबसे बड़े जननायक हैं। लेखक **एन गुप्ता** मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ की गोदना चित्रकला के बारे में लिखते हैं - "गोदना कला मध्य प्रदेश की एक प्रमुख लोककला परंपरा है। यह कला गोंड जनजाति की विशेषता है जो उनकी संस्कृति ऐतिहासिक कथाओं और परम्पराओं को दर्शाती है। गोदना कला के चित्र त्वचा में छोटे-छोटे चित्रों से आम तौर पर घास फूस, पक्षियों, जानवरों और जंगली जीवों के चित्र बनते हैं इसके अलावा धार्मिक और आध्यात्मिक विषयों पर प्रतिकारात्मक जैसे स्वास्थ्य, ओम, गदा, संघ, त्रिशूल आदि के चित्र उकेरे जाते हैं।"[7]भारतीय लोक कला समकालीन कला प्रथाओं को भी अपने आप में समाहित किए हुए चल रहा है जो सांस्कृतिक बदलाव का प्रतीक है जिससे पुरातनता और आधुनिकता का सुंदर संगम बन रहा है भारतीय लोक कलाएँ प्राचीन काल से लेकर वर्तमान काल तक अभिव्यक्ति की सशक्त माध्यम है। यह सामाजिक धार्मिक और पारंपरिक मान्यताओं को सजोए हुए है। **डॉक्टर लक्ष्मण प्रसाद** लिखते हैं भारतीय लोक चित्रकला से प्रेरित आधुनिक कलाकारों ने पारंपरिक कला को नए संदर्भ और तकनीकों के साथ प्रस्तुत किया है। इनके कार्यों ने लोक कला को केवल एक पारंपरिक विधा

तक सीमित नहीं रखा बल्कि उसे आधुनिक दृष्टिकोण से जोड़कर वैश्विक पहचान दिलाई। जामिनी राय, भूरी बाई जैसे कलाकारों ने अपनी विशिष्ट शैली के माध्यम से भारतीय लोक कला को आधुनिकता के साथ प्रस्तुत किया और इसे नई उचाई दी ''। [8]

यह बात सच है कि भारतीय लोक कलाएँ हमारी सांस्कृतिक विरासत है पर तकनीक और नवाचार ने लोक कला को नए रूप प्रदान किए जिससे लोक कला के सामने कई चुनौतियाँ भी उपस्थित हो गयी हैं जिसमें लोक कला की मूल भावना और शुद्धता को बनाए रखना है। अत्याधुनिक आधुनिकीकरण से पारंपरिक शैली खोती जा रही है जिसमें बहुत जरूरत है पारंपरिक लोक कला और आधुनिक लोक कला के बीच संतुलन बनाए रखना। इसी संदर्भ में लेखक **ए गुप्ता** लिखते हैं - '' कला का आधुनिकीकरण न केवल कला के क्षेत्र में बल्कि सांस्कृतिक और आर्थिक स्तर पर भी महत्वपूर्ण है। भविष्य में इस प्रक्रिया को और मजबूत करने के लिए सरकारी और गैर सरकारी संगठनों को, लोक कलाकारों को प्रशिक्षण और संसाधन उपलब्ध कराने की आवश्यकता है इसके अलावा शैक्षणिक संस्थानों में लोक कला को एक विषय के रूप में शामिल करने से युवा पीढ़ी को इससे जोड़ा जा सकता है ''।[9]

संक्षेप में ग्रामीण लोक कलाएँ केवल कलाकृतियाँ नहीं हैं बल्कि ये ग्रामीण समाज की आत्मा हैं जो उनके इतिहास, विश्वासों और दैनिक जीवन को जीवंत बनाती हैं। यह कहना सर्वथा उचित होगा कि लोक कलाएँ भारतीय संस्कृति की वो धरातल है जहाँ हमारा इतिहास, वर्तमान और भविष्य तीनों समृद्धता को प्राप्त करते हैं। भारतीय संस्कृति के संवर्धन व समृद्धि में लोक कलाओं का अद्वितीय योगदान रहा है। ये भारत की सामाजिक सांस्कृतिक समृद्धि के बारे में हमारी समझ को गहरा करते हुए विश्वास व रीती- रिवाजों और जीवनशैली के संबंध में अंतर्दृष्टि प्रदान करती है। इन लोककला रूपों से विरासत के संरक्षण के साथ-साथ पहचान एवं सामुदायिक एकजुटता का प्रदर्शन भी होता है। भारत में लोक कलाएँ सांस्कृतिक विविधता और सामाजिक दृष्टिकोण का उत्तम उदाहरण प्रस्तुत करती हैं। लोक कलाएँ विविधता के साथ भारतीय सांस्कृतिक विरासत को और भी धनी बनाती है जिससे सांस्कृतिक समृद्धि प्राप्त होती है। वर्तमान समय में लोक कलाएँ युवा पीढ़ियों के लिए रोजगार के अवसर बढ़ा रही हैं जैसे कि कला और हस्तकला के क्षेत्र में स्वरोजगार से आर्थिक लाभ भी उठाया जा रहा है। भारतीय लोक कलाएँ भारत के लोक जीवन का अभिन्न अंग हैं जो लोगों को मनोरंजन, शिक्षा, सांस्कृतिक चेतना, सामाजिक एकता और राष्ट्रीय भावना का संचार करने के साथ ही इतिहास परंपरा और आदर्शों को प्रकट करती है। ये कलाएँ भारत के विभिन्न भौगोलिक, सामाजिक, धार्मिक और ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्यों को दर्शाती रही हैं। भारतीय लोक कलाएं भारत की एकता में विविधता का सुंदर सामंजस्य बैठाती हैं। ये भारत के विकास और प्रगति में सदैव योगदान देती आयी हैं। ये कलाएँ नवाचार, सृजनशीलता,समानता, न्याय,शांति और समरसता के मूल्यों को बढ़ावा देती हैं।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची-

1. रोमिला थापर, भारत का इतिहास, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 21वां संस्करण 2021, पृष्ठ संख्या-27
2. गैरोला वी (2009 जनवरी 1) भारतीय चित्रकला का संक्षिप्त इतिहास, प्रयागराज, लोक भारती प्रकाशन, पृष्ठ संख्या34संख्या-34
3. शास्त्री,जी(2021 सितंबर) भारतीय लोक कला के बदलते आयाम (चुनौतियाँ और संभावनाएँ) दिल्ली, नेशन प्रेस, पृष्ठ संख्या-54
4. रोमिला थापर, भारत का इतिहास, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 21वां संस्करण 2021, पृष्ठ संख्या-21

5. अरविंद एस .(1921 जनवरी) भारतीय संस्कृति के आधार, श्री अरबिंदो आश्रम पब्लिकेशन डिपार्टमेंट, पुडुचेरी, पृष्ठ संख्या-89
6. ज्योति प्रसाद मिश्र निर्मल, स्त्री कवि कौमुदी, अनन्य प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2018, पृष्ठ संख्या-17
7. गुप्ता एन (2010 जनवरी) भारतीय लोक कला छत्तीसगढ़ के सन्दर्भ में, स्वाति पब्लिकेशन, जयपुर, पृष्ठ संख्या-39
8. भारतीय लोक कला और वैश्वीकरण का प्रभाव साहित्य भवन प्रकाशन, इलाहाबाद, 2018, पृष्ठ संख्या-70
9. ए गुप्ता,भारतीय समकालीन कला में परंपरागत कला शैलियों की भूमिका, साहित्य अकादमी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2020, पृष्ठ संख्या-85

पत्राचार का पता – सा 10/21, के-5, बुद्धा सिटी कॉलोनी, गंज सारनाथ, वाराणसी, उत्तर प्रदेश - 221007
मो. नं. (WhatsApp) – 9453641788
Email- nilamhindi@bhu.ac.in

www.bohalshodhmanjusha.com Bohal Shodh Manjusha ISSN: 2395-7115
Impact Factor: 8.642 June 2026 Page No. : 72-76
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

गर्भ से अंत्येष्टि तक मूल्य–विघटन को चित्रित करती समकालीन हिंदी कविता

डॉ0 राधा वर्मा
सहायक आचार्य हिंदी,
राजकीय महाविद्यालय कंडाघाट सोलन–173215(हि0प्र0)

बुनियादी मानव–मूल्य (सत्य, अहिंसा, शांति, प्रेम, सदाचार) के ह्रास के कारण आज समाज में अनेक विसंगतियाँ पैदा हो रही हैं। विसंगतियाँ तो पैदा होंगी ही क्योंकि इन मूल्यों को भूलकर जब कोई जीवन जीने की कोशिश करता है तो अनिष्ट की सम्भावना बढ़ जाती है। यह अनिष्ट गर्भ से अंत्येष्टि तक देखने को मिलता है । समकालीन हिंदी कविता में इसे कवियों ने बखूबी षब्दबद्ध किया है। यहां इसका उल्लेख किया जा रहा है।

जिस रफ्तार से आज हम अपने मूल्यों में आस्था खोते जा रहे हैं तथा तात्कालिक जीवन को सुखी बनाने के लिए अनुचित काम कर रहे हैं, वह एक असुरक्षित भविष्य का द्योतक है। यह अनुचित कार्य जीवन की प्रारंभिक अवस्था यानि गर्भाधान के बाद पुंसवन संस्कार के समय से लेकर देखने को मिलता है। पुंसवन संस्कार वह संस्कार जिसे मां की रक्षा और गर्भस्थ षिषु के स्वस्थ विकास के लिए किया जाता है। उस समय कन्याओं को गर्भ में ही कत्ल किये जाने के नृशंस व्यवहार का कवि ने बहुत दर्दनाक चित्रण किया है –

हजारों लाखों छुपती हैं गर्भ के अंधेरे में
इस दुनिया में जन्म लेने से इंकार करती हुई
वहाँ भी खोज लेती है उन्हें भेदिया ध्वनि तरंगें
वहाँ भी भ्रूण में उतरती हैं हत्यारी कटार । [1]

हमारी संस्कृति मनुष्य को सम्मान की दृष्टि से देखने की पक्षधर रही है फिर वह चाहे पुरुष हो या नारी । नारी के बारे में तो यहाँ तक कहा जाता है कि ‘नारी का सम्मान होता है जहाँ, खुशहाली होती है वहाँ।’ पर आज जो जन्मदायिनी है जिसकी कोख से सृष्टि का विस्तार हुआ है उसे ही जन्म से पहले मौत के मुँह में धकेलने की चोरी छुपे कोषिषें की जाती हैं। कोई भी धर्म हिंसा की इज़ाजत नहीं देता । हत्या जैसा जघन्य अपराध अत्यन्त शर्म की बात है।

किरण अग्रवाल की ‘गाँठे’ कविता गुरु–शिष्य की परम्परा और उनके पवित्र रिश्ते पर भी सवालिया निशान खड़ा करती है और साथ ही पुरुषों के चारित्रिक पतन की ओर भी इशारा करती है । किरण अग्रवाल की ‘गाँठे’ कविता में एक ऐसी लड़की की उत्पीड़न भरी दास्तां है जो गणित की प्राबलम्स हल करने में प्रथम पुरस्कार मिलने पर खुश होती है । अध्यापक के विद्यालय में न मिलने पर अपनी खुशी का इजहार करने और पुरस्कार का श्रेय उन्हें देने उनके घर ही पहुँच जाती है । उसकी खुशी उस समय चूर–चूर हो जाती है जब गुरु घर में अकेले का फायदा उठाकर उसके साथ दुराचार करता है । दुराचार की शिकार शिष्या का चित्रण इन पंक्तियों में कर कवयित्री कहती है –

अनभिज्ञ थी जो चल रहा था सामने वाले के अन्दर
उन्होंने सहसा मसल दिये थे
उसके खिलते हुए उरोज आगे बढ़कर

जैसे चील झपटे चिड़िया के बच्चों पर
वह हतप्रभ थी । [2]

गुरु–शिष्य की तरह ही भाई–बहन का पवित्र रिश्ता भी आज सिर्फ नाम का ही रह गया है । वह तो आज अपने ही घर में भी सुरक्षित नहीं दिखाई देती । इस सच को प्रस्तुत करती ये पंक्तियाँ देखिये –

उसके लड़के बहनों की दलाली करते हैं ?
और कटी पतंग के लिए आपस में लड़ते हैं । [3]

आधुनिकता की चकाचौंध में रंगी स्त्री आज परिश्रम और धैर्य के मार्ग से हटकर आर्थिक रूप से सक्षम बनने के लिए षॉट कर्ट तरीकों की ओर आकर्षित होती जा रही है। उन्हें जिस्मफरोशी के धन्धे को अपनाने में भी कोई संकोच नहीं है। इस सच को उदय प्रकाश की 'रात में हारमोनियम' कविता–पुस्तक की कविता 'इस सदी में एक लड़की जिससे दिल्ली में मैंने प्यार किया था' सामने लाती है । इस कविता में कवि एक लड़की का चित्रण करता है, जो कहीं दूसरी जगह से अपने लिए रोटी और ठिकाना खोजते हुए राजधानी आयी थी और कवि की उससे मुलाकात हुई थी । कवि स्वीकारता है कि राजधानी के दूसरे कवियों की तरह एक के पीछे मैं भी लग गया । वह मुझे दारू पार्टी में ले गया जहाँ वर्षों से एक कमरे में बहुत पुरानी घड़ी चल रही है । वहाँ उपस्थित दृश्य को देखकर कवि रोता है । उस समय के दृश्य को प्रस्तुत कर कवि कहता है –

यहाँ वह थी, पाँच लड़कियों द्वारा चारों ओर से घिरी किसी कुँए की तरह
वह बार–बार किसी पुलक से भरकर अपने समूचे वजूद से हँसती थी
कशिश से भरी उसकी आँखों में प्रसन्नता की कौंध थी
हीरे की तरह जिसकी नुकीली कनियाँ मेरी आत्मा में चुभती थीं
वह हँसती थी मेरे आर–पार देखती हुई
फिर मैंने सुनी उसकी भाषा... 'मेरे को लिटा दो कहीं भी मेरे को चढ़ गयी है
कसम से...'
मैं अपनी पुरानी कमीज़ की जेबों में पुराने सिद्वांत खोजते हुए रोता था
दारू पीते हुए मूंफलियां छील–छीलकर
मैंने सारे कमरे को भर दिया था । [4]

कवि दुःखी होकर जब वहाँ से बाहर निकलता है तो पता चलता है किसी की हत्या हो चुकी है । राजधानी में हादसे की वजह से पूरी दिल्ली में कर्फ़्यू है । पर जिस जगह से कवि निकलकर बाहर आया है उस जगह पर कर्फ़्यू नाम का कुछ भी नहीं था अगर कुछ था तो वह इस सदी का नरक था । जिसे इन पंक्तियों में देखा जा सकता है –

कर्फ़्यू लेकिन उस कमरे में नहीं था, वहाँ डांडिया था या डिस्को था
वहाँ भीमसेन जोशी थे या माइकेल जैक्सन, मैडोना थी या लता मंगेशकर,
वहाँ नींबू और नमकीन था, वर्षों से एक घड़ी लगातार चल रही थी
अख़बार था, जिसकी ख़बरें सोडे और शराब से सील गयी थीं
और वहाँ बीचों–बीच कालीन बिछा था, कालीन पर बीसवीं सदी की
अन्तिम आवाज़ें थीं, मजे और कराह और ग्लानि और लालच में डूबी हुई
किसी स्वर्ग जैसा कोई नरक था वहाँ । [5]

आर्थिक रूप से सक्षम बनने के लिए ऐसे घृणित कार्य अपनाना तथा आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न लोगों का ऐसे स्थानों में पहुँचना क्या दिशाहीन हो रहे समाज की ओर संकेत नहीं करता । ऐसे में स्वस्थ समाज का निर्माण महज सपना ही नजर आता है । ऐसा पेषा अपनाने में कोई हिचकिचाहट न होने के पीछे आज के समय में उपजी बोल्डनैस और फ्रैंकनैस जैसी प्रवृत्तियाँ ही नज़र आती हैं । हमारी संस्कृति तथा बुनियादी मानव–मूल्य इस तरह के घिनौने कार्य में शामिल होने की इज़ाजत नहीं देते ।

पेषे के बाद जीवन के अंतिम संस्कार के समय का उल्लेख करते उदय प्रकाश का कहना है कि बुनियादी मानव–मूल्यों में ह्रास के कारण आज समाज में इतना बदलाव आ चुका है जिसकी किसी ने कभी कल्पना भी नहीं की होगी । उदय प्रकाश की 'कौए, और लेखक का दिल्ली में देहांत' कविता दाह–संस्कार के समय का चित्रण कर आज के समाज में जो बदलाव आया है उसकी तस्वीर प्रस्तुत करती है । पंजाबी बाग पहुँचने पर कवि ने जो देखा उसको इन पंक्तियों में बयान कर कहता है –

मैं कहाँ जाऊँ यहाँ तो कोई एकत्र नहीं है

जो एक साथ दिख भी रहे हैं अजनबी हैं एक–दूसरे से
और सब अलग–अलग जगहों को जायेंगे
उनमें कोई शोक भी नहीं दिख रहा किसी निधन का । [6]

आज मौत के बाद दाह–संस्कार के समय भी लोग इकट्ठे नहीं दिखते । अगर इकट्ठे दिखाई भी दें तो वे एक–दूसरे के लिए अजनबी ही होते हैं क्योंकि आपसी प्रेमभाव और आत्मीयता खत्म होने पर अजनबीपन का आना स्वाभाविक है । सबसे चौंकाने वाली बात यह है कि मौत होने पर भी उपस्थित लोगों में कोई शोक या दुःख की छाया तक नहीं दिखती । कवि सोचता है कि इन्हें दाह–संस्कार के लिए निगम बोध की बजाय पंजाबी बाग क्यों ले जाया गया । शायद इसलिए कि निगम बोध में तो भ्रष्टाचार की कोई सीमा ही नहीं है –

कहा जाता है निगम बोध में बहुत मारा–मारी है
भ्रष्टाचार तो है ही
लकड़ी कम तौलते हैं, वजन बढ़ाने के लिए गीली कर देते हैं
कौन कितना जला इससे उन्हें क्या ? किसकी अस्थियाँ किसके साथ मिल
जाये कौन जाने ?
शवों के साथ लाये गये नारियल तक बेचते हैं हर लाल–बत्ती पर
ठीक है कि पंजाबी बाग में यमुना नहीं है लेकिन दिल्ली में अब यमुना भी
कहाँ संस्कार के लायक रह गयी है
गनीमत है यहाँ कि कम से कम कुछ पेड़ तो हैं और कौवे भी दिखाई देते हैं
कहीं–कहीं बोलते हुए । [7]

दाह संस्कार यानि जब किसी को संसार से अंतिम विदाई दी जा रही हो जिसमें शामिल होकर लोग अपने को पुण्य का भागीदार मानते हैं, उस रस्म में भी भ्रष्टाचार ? इससे ज्यादा आदमी कब गिर सकता है ? यानि आज लोग पूरी तरह से बुनियादी मानव–मूल्य को भूल चुके हैं शायद यही कारण है कि किसी के दुनिया से हमेशा के लिए चले जाने पर न तो लोग दुःखी होते हैं और न ही दाह–संस्कार जैसी रस्म पुण्य की भावना से भरकर निभाई जाती है ।

समकालीन परिवेश से सच्चाई, ईमानदारी तथा कर्त्तव्यनिष्ठा आदि बातें खत्म हो गई हैं जिसके कारण समाज में न्याय समय पर नहीं मिल पाता । यदि कोई चीज समय पर न मिले तो उसकी कोई उपयोगिता नहीं रह जाती । न्याय की प्रक्रिया तो लम्बी है परन्तु अपराध करने के लिए दो मिनट का ही समय काफी है । न्याय की इस प्रक्रिया के सम्बन्ध में कवि दुःखी होकर कहता है –

हत्यारे ने उस औरत को मारने में दो मिनट लगाये
उस पर दो शताब्दियों तक चलता है मुकद्दमा
जिसने सार्वजनिक कोष से साफ–साफ उड़ा लिये सैंकड़ों करोड़ रुपये
उसकी सत्तर साल तक जाँच करता है जाँच आयोग । [8]

न्याय की इस लम्बी प्रक्रिया को देखकर कहा जा सकता है कि न्याय जो सच के तराजू को आधार मानता है और सच बोलने के लिए धर्म की शपथ लेता और देता है, मात्र दिखावा ही नजर आता है । इसके पीछे रिश्वत की भूमिका ही कही जा सकती है जिसकी वजह से बड़े–बड़े अपराध करने वाले भी बेदाग बच जाते हैं और निर्दोष को न्याय नहीं मिल पाता । वर्तमान समाज पर तीखी टिप्पणी कर कवि कहता है –

अप्रासंगिकताएँ क्यों हावी हैं इस कदर तमाम अच्छी और जरूरी चीज़ों पर
जो चीजें ठीक–ठीक हैं और जो चाहिए तमाम लोगों को उनका
विज्ञापन क्यों नहीं दिखाई देता कहीं ?
उनकी कोई कीमत क्यों नहीं बची कुछ बतायेंगे आप ? [9]

आज के समय का कवि द्रष्टा है तभी तो वह यह कह रहा है –

कोई विश्वास होता है हर बार, जिसका घात होता है हर बार
सब लोग यह सब जानते हैं पर खामोशी ही लाजिमी है
जो यथार्थ को व्यक्त करता है
वह मार दिया जाता है अफवाहों से । [10]

गरीबों के उत्थान के लिये बनाई गई जनकल्याणकारी योजनाएं भ्रष्टाचार की दलदल में फंसकर अपनी मूल संवेदना खोती जा रही हैं। सता,प्रभाव,धनबल से संपन्न लोग भ्रष्ट तंत्र की सांठ गांठ के सहारे

इन योजनाओं पर कब्जा कर लेते हैं, जबकि वास्तविक पात्र अभाव,उपेक्षा और निराषा के अन्धकार में जीवन बिताने को विवष हैं। यह विडम्बना आर्थिक षोषण नहीं,बल्कि मानवता और सामाजिक न्याय के मूल्यों पर गहरा प्रहार है। ये स्वार्थी और चालाक लोग इन योजनाओं का फायदा पात्र लोगों तक नहीं पहुँचने देते निर्मला पुतुल की ये पंक्तियाँ यही बयान करती हैं –

ये वे लोग हैं जो
हमारे ही नाम पर लेकर
गटक जाते हैं हमारे हिस्से का समुद्र ।[11]

अरुण कमल का 'नये इलाके में' कविता–संग्रह की कविता 'यह वो समय' में यह कहना सही है –

यह वो समय है जब
शेष हो चुका है पुराना
और नया आने को शेष है ।[12]

आज सब कुछ उल्टा ही हो रहा है । राजेश जोशी का साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित कविता–संग्रह 'दो पंक्तियों के बीच' की कविता 'ऐसा होता तो नहीं' भी इसी चिंता को व्यक्त करती है । कविता की ये पंक्तियाँ देखिये –

साँप गुंजलक में बांधे है चील को
शेर खरगोश की पालकी ढो रहा है
ऐसा होता तो नहीं पर हो रहा है
उल्टी घूम रही है घड़ी की सूइयाँ
सदी का अन्त कुछ पिछली सदियों को ढो रहा है
ऐसा होता तो नहीं पर हो रहा है ।[13]

ऐसी स्थिति तभी पैदा होती है जब बुनियादी मानव–मूल्य भूला दिये जाए । क्योंकि ये ही वे मूल्य हैं जो यह बोध कराते हैं कि हम क्या हैं ? हमें कैसा आचरण करना चाहिए । यानि हमारे लिए ग्राह्य और अग्राह्य के बारे में बताते हैं ताकि समाज में विसंगतियाँ न पनपे । इनको भूलने के कारण ही शायद आज देश अपनी अस्मिता खो रहा है । कवि दुःख के साथ कहता है –

विक्षिप्त विजयोल्लास में ढिंढोरचियों का महादल गा रहा है
हर चीज़ का अंत करता सदी का अंत आ रहा है
चूहा चीते से पंजा लड़ा रहा है
ऐसा होता तो नहीं है पर हो रहा है
देश अपनी अस्मिता खो रहा है ।[14]

कवि ने अपने परिवेश से सम्पृक्त हो कर वर्तमान के सच की यथार्थ अभिव्यक्ति की है। आज का भारतीय परिवेश निश्चित ही मूल्यहीनता की स्थिति से गुजर रहा है । मूल्य की अवहेलना करके हमारा जीवन कभी भी सुखी नहीं हो सकता । बुनियादी मानव–मूल्यों को छोड़ने का आग्रह सभ्यता की नहीं बल्कि असभ्यता की निशानी है । वर्तमान समय में मूल्य इतने गिर गये हैं कि जीने का अर्थ ही बदल गया है । जिस रफ्तार से आज हम अपने मूल्यों में आस्था खोते जा रहे हैं तथा तात्कालिक जीवन को सुखी बनाने हेतु अनुचित काम कर रहे हैं, वह एक असुरक्षित भविष्य का द्योतक है। अपनी स्वार्थ पूर्ति के लिए व्यक्ति किसी भी सीमा तक गिरने में हिचकिचाहट नहीं करता। वर्तमान समाज में मूल्यों के इस भारी संकट को समकालीन हिंदी कविता ने चित्रित कर सराहनीय कार्य किया है।

सन्दर्भ संकेत

1. उदय प्रकाश, रात में हारमोनियम, पृष्ठ 33।
2. किरण अग्रवाल, 'गाँठे', 'उन्नयनः 26', श्री प्रकाश मिश्र (सं.), अप्रैल 2006, पृष्ठ 151 ।
3. वही, पृष्ठ 154 ।
4. उदय प्रकाश, रात में हारमोनियम, पृष्ठ 36 ।
5. वही, पृष्ठ 36 ।
6. वही, पृष्ठ 61 ।
7. वही, पृष्ठ 61–62 ।
8. वही, पृष्ठ 49 ।
9. वही, पृष्ठ 50 ।

10. वही, पृष्ठ 50 ।
11. निर्मला पुतुल, नगाड़े की तरह बजते षब्द , पृष्ठ 53 ।
12. अरुण कमल, नये इलाके में, पृष्ठ 15 ।
13. राजेश जोशी, दो पंक्तियों के बीच, पृष्ठ 99 ।
14. वही, पृष्ठ 99 ।
मोबाइल 9459584920 Email:dr.vermaradha70@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com Bohal Shodh Manjusha ISSN: 2395-7115
Impact Factor: 8.642 June 2026 Page No. : 77-79
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

बिहार की शिक्षक – शिक्षा की वर्त्तमान स्थिति

प्रभाकर कुमार
BPSC Teacher (11-12),
उत्क्रमित उच्च माध्यमिक विद्यालय मीरगंज(पिरथु) मदनपुर – औरंगाबाद
मनीषा कुमारी
M.sc Student,
B.N.M.U, Saharsa (Bihar)

सार: किसी भी राज्य की उन्नति के लिए उस राज्य की वर्त्तमान शिक्षक – शिक्षा पर बात करना आवश्यक है, अन्यथा शिक्षा की वर्त्तमान स्थिति का पता लगाना मुश्किल हो जाएगा और शिक्षा में सुधार नहीं हो पाएगा| इसलिए वर्त्तमान स्थिति की जानकारी होना आवश्यक है, इन्हीं बिन्दुओं को ध्यान में रखकर इस शोधालेख में बिहार की वर्त्तमान शिक्षक शिक्षा पर चर्चा की गई है|

किसी भी देश की पहचान उसकी शिक्षा व्यवस्था से होती है और जब शिक्षा की बात होती है, तो उसमें भारत का नाम सबसे पहले आता है, जिसके संबंध में अंग्रेज विद्वान् एफ.डब्लू. थॉमस लिखते हैं कि “ ऐसा कोई देश नहीं है जहाँ ज्ञान के प्रति प्रेम इतने प्राचीन समय में प्रारंभ हुआ हो जितना भारत में या जिसने स्थायी और शक्तिशाली प्रभाव उत्पन्न किया हो जितना भारत ने”[1] अर्थात् ज्ञान के प्रति प्रेम उत्पन्न करने वाला सर्वप्रथम देश भारत है| अगर भारत में भी बिहार राज्य की बात करें, तो पाते हैं कि दुनिया पहला आवासीय विश्वविद्यालय नालंदा विश्वविद्यालय बिहार में था तथा बिहार भारत में शिक्षा, धर्म और सत्ता का केंद्र रहा है और बौद्ध और जैन धर्म का उद्गम स्थान रहा है| इसके अलावा बिहार की धरती ने आर्यभट्ट जैसे महान गणितज्ञ को जन्म दिया है| तथा बिहार और कई कार्यों के लिए प्रसिद्ध है, जिसके संबंध में प्रवीन कुमार अपने शोधलेख ‘प्राचीन बिहार में पुनर्जागरण: एक खोज’ में लिखते हैं कि “प्राचीन भारत में सामाजिक और धार्मिक सुधार का केंद्र बिहार ही था| चाहे वह पूर्व वैदिक काल का सामाजिक व्यवस्था, राजनीतिक व्यवस्था, आर्थिक व्यवस्था, धार्मिक व्यवस्था, सांस्कृतिक व्यवस्था की पराकाष्ठा हो वहीँ उत्तर वैदिक काल में बिहार की आर्थिक व्यवस्था, सामाजिक व्यवस्था, राजनीतिक व्यवस्था, धार्मिक व्यवस्था और सांस्कृतिक व्यवस्था में आमूल परिवर्तन हुए और वे परिवर्तन अवैज्ञानिक था|”[2] अर्थात् प्राचीन भारत में सामाजिक और धार्मिक सुधार हुए उसका केंद्र बिहार ही था, इसके अलावा जब भारत ब्रिटिश शासक के अधीन था, तो उस समय भी भारत की स्वतंत्रता के लिए कई प्रकार की आंदोलन की शुरुआत बिहार से हुआ, जो इस प्रकार से है-

1. वहाबी आंदोलन
2. युआन-जुआंग विद्रोह
3. संथाल विद्रोह
4. मुंडा विद्रोह
5. कोल आंदोलन
6. चंपारण सत्याग्रह

इस प्रकार से बिहार की प्राचीन स्थिति का पता चलता है, लेकिन जब बिहार की वर्त्तमान स्थिति की बात करते हैं, तो पाते हैं कि वर्त्तमान समय में गुणात्मक और नकारात्मक दोनों पक्ष देखने को मिलती है| गुणात्मक पक्ष की बात करें, तो वर्त्तमान बिहार में आज बहुत बदलाव हुई है चाहे कोई भी क्षेत्र हो, अगर शिक्षा व्यवस्था की बात करें, तो वर्तमान समय में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार शिक्षा में बदलाव किया जा रहा है और शिक्षा नीति 2020 को ध्यान में रखकर बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2025 में कहा गया है कि " वर्त्तमान पाठ्यचर्या का स्पष्ट दृष्टिकोण है कि बिहार के बच्चों और युवाओं को उनके व्यक्तित्व विकास के लिए समग्र शिक्षा की सुविधाएँ सहजता से उपलब्ध हो सके|"[3] अर्थात् वर्त्तमान पाठ्यचर्या बिहार के बच्चों और युवाओं के व्यक्तित्व विकास की सुविधाएँ सहजता से उपलब्ध कराने की बात करती है| इस प्रकार से शिक्षा व्यवस्था को बेहतर बनाने के लिए और कई प्रयास जारी है| लेकिन अगर नकारात्मक पक्ष को देखते हैं, तो इसमें कई चीजे देखने को मिलती है, लेकिन मुख्य दो बिंदु इस प्रकार है-

1. गरीबी
2. बाढ़

बिहार की विकास की रफ़्तार को धीमा करनेवाला नकारात्मक पक्ष है, जिससे बिहार कई सालों से लड़ रहा है और अगर इस समस्या का हल नहीं निकाला गया, तो आगे कई साल तक लड़ना पड़ेगा| इन सब के अलावा भी कई प्रकार की समस्याएं हैं, जिसके संबंध में कृष्ण कुमार अपने शोधालेख में लिखते हैं कि " Aser Report के अनुसार 5वीं कक्षा के 57% बच्चे कक्षा 2 का पाठ भी नहीं पढ़ पाते हैं| वहीँ कक्षा 3 के संदर्भ में यह आंकड़ा 80% पहुँच जाता है |"[4] अर्थात् शिक्षक शिक्षा में गुणात्मक सुधार के लिए लगातार प्रयास के वाबजूद शिक्षक – शिक्षा में जिस तरह की सुधार होना चाहिए था उस तरह की सुधार नहीं हो रही है| इसका एक कारण यह भी है कि शिक्षकों द्वारा अपनी कर्त्तव्यों का ठीक से निर्वहन नहीं करना और शिक्षकों द्वारा शिक्षा को गंभीरता से न लेना| जब तक शिक्षक अपनी कार्यों के प्रति गंभीरता नहीं दिखायेंगे तब तक शिक्षा की वर्त्तमान स्थिति में सुधार संभव नहीं है क्योंकि सरकारी योजनाओं से शिक्षा नहीं चलती बल्कि योजनाओं को सफल बनाना या असफल बनाना शिक्षक के कार्यों पर निर्भर करता है| बिहार की वर्त्तमान शिक्षक – शिक्षा की बात करें, इसके संबंध में डॉ सत्यपाल रूहेला अपनी पुस्तक में लिखते हैं कि " वास्तविकता तो यही है कि 95 फीसदी से भी अधिक विद्यालयों और कॉलेजों में में लेक्चर मैथड व अन्य पुरानी शिक्षण पद्धतियों का ही उपयोग हो रहा है| जिन नई पद्धतिओं की जोर- शोर से चर्चाएँ होने लगी है, उनको काम में लाना आरम्भ व्यापाक स्तर पर किया जाना चाहिए|"[5] अर्थात् वर्त्तमान समय में जब निर्माणवादी शिक्षण पद्यति का प्रयोग किया जा रहा है उस समय भी ज्यादात्तर शिक्षक लेक्चर मैथड का ही प्रयोग करते है, जिससे शिक्षा उबाऊ और बोझिल बन जाती है और शिक्षा अपने लक्ष्यों को प्राप्त नहीं कर पाती है| अगर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 हो या राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा में जिस तरह की शिक्षण पद्धतियों की बात की गई है, उस तरह की शिक्षण पद्धतियों का प्रयोग प्रारंभ कर देंगे निश्चितरूप से बिहार की शिक्षक- शिक्षा की विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा और भविष्य में बिहार निश्चितरूप से नया बिहार बनेगा| क्योंकि किसी भी देश या राज्य

को विकसित बनाने में उस राज्य की शिक्षा व्यवस्था की अहम् भूमिका होती है| वहीं अगर विकसित भारत 2047 के अनुसार बिहार की भविष्य की बात करें, तो इसके बारे में 'राजन कुमार' अपने शोधालेख 'विकसित भारत @2047 के परिप्रेक्ष्य में बिहार में मानव संसाधन विकास एवं शिक्षा – चुनौतियों और संभावनाएँ' में लिखते हैं कि "हाल के शोध यह भी संकेत देते हैं कि डिजिटल शिक्षा, कौशल विकास कार्यक्रम और महिला सशक्तिकरण पर केन्द्रित नीतियाँ बिहार को विकसित भारत @2047 के लक्ष्यों की दिशा में अग्रसर करने की महत्वपूर्ण संभावनाएँ प्रदान करती है|"[6] अर्थात् डिजिटल शिक्षा , कौशल विकास और महिला सशक्तिकरण के माध्यम से बिहार को विकसित भारत @2047 के अनुरूप बनाया जा सकता है| इसी शोधालेख में आगे लिखते हैं कि "बिहार में ऑनलाइन शिक्षा, ई-लर्निंग प्लेटफार्म, डिजिटल कक्षाओं और तकनीकी प्रशिक्षण कार्यक्रमों के विस्तार से क्षेत्रीय एवं सामाजिक असमानताओं को कम किया जा सकता है|"[7] अर्थात् बिहार ऑनलाइन शिक्षा, ई-लर्निंग और डिजिटल कक्षाओं के माध्यम से भविष्य में क्षेत्रीय एवं सामाजिक असमानताओं को कम किया जा सकता है|

निष्कर्ष: इस प्रकार से हम कह सकते हैं कि बिहार का प्राचीन इतिहास काफी गौरवपूर्ण रहा लेकिन भारत पर विदेशी आक्रमण होने के बाद से बिहार की शिक्षा में लगातार गिरावट देखने को मिलती है, इसके कई कारण है जिसकी वजह से बिहार की वर्त्तमान शिक्षक- शिक्षा की स्थिति दयनीय बन गई लेकिन फिर से शिक्षा व्यवस्था और अन्य क्षेत्रों में बदलाव करके बिहार की शिक्षक- शिक्षा को भविष्य में फिर से बेहतर बनाया जा सकता है|

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. लाल, रमण बिहारी एवं शर्मा, कृष्णा कान्त: भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं संभावनाएं, आर.लाल बुक डिपो, मेरठ – 250001 , ISBN: 978-81-910554-8-1 , पृष्ठ संख्या- 1
2. कुमार, प्रवीन, प्राचीन बिहार में पुनर्जागरण: एक खोज, International Journal of Scientific and Technology , Vol- 4, Issue- 8, Online ISSN: 2395-602X, 18 May 2018, Page no. – 820
3. बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2025 (प्रारूप), राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, पटना (बिहार), पृष्ठ संख्या- 16
4. कुमार, डॉ कृष्ण, बिहार में प्राथमिक शिक्षा की स्थिति, International Journal of Financial Management and Economics , P-ISSN – 2617-9210, 10/10/2025, IJFME 2025:8(2) , Page no – 1310
5. रूहेला, डॉ सत्यपाल, भारतीय शिक्षा का समाजशास्त्र, राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी,जयपुर- 302004, आठवाँ संस्करण:2012 , ISBN 978-81-7137-929-3, पृष्ठ संख्या- 74,
6. कुमार, राजन व कुमार, डॉ प्रशांत, विकसित भारत @2047 के परिप्रेक्ष्य में बिहार में मानव संसाधन विकास एवं शिक्षा – चुनोतियाँ और संभावनाएँ, International Journal on Science and Technology, vol- 16, Issue – 4 , October- December 2025, E- ISSN: 2229-7677, पृष्ठ संख्या- 2
7. वही, पृष्ठ संख्या- 10

Email – Prabhakarhcu2013@gmail.com Mob – 8317582785

www.bohalshodhmanjusha.com Bohal Shodh Manjusha ISSN: 2395-7115
Impact Factor: 8.642 June 2026 Page No. : 80-83
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

Pedagogical Shifts and Teacher Education

Seema Dahiya
Assistant Professor,
Tika Ram College of Education, Sonipat

Abstract
Education systems across the world are rapidly transforming because of technological advancement, globalization, changing learner needs, and educational reforms. Traditional teacher-centered methods are gradually being replaced by learner-centered, competency-based, inclusive, and technology-integrated approaches. These pedagogical shifts have significantly influenced teacher education by changing curriculum design, teaching strategies, classroom practices, and assessment methods. In India, the National Education Policy (NEP) 2020 has accelerated reforms by emphasizing holistic learning, digital literacy, experiential learning, and continuous professional development. This paper examines major pedagogical shifts in modern education and their impact on teacher education. It discusses learner-centered education, constructivism, digital pedagogy, competency-based learning, inclusive education, experiential learning, and artificial intelligence in education. The paper also highlights challenges such as inadequate infrastructure, digital divide, resistance to change, and insufficient teacher training. Furthermore, it explores opportunities for innovation and professional growth in teacher education. The study concludes that effective teacher preparation is essential for successful educational transformation and recommends continuous training, technological integration, curriculum reforms, and policy support for strengthening teacher education in the twenty-first century.

1. Introduction

Education is the foundation of social, economic, and cultural development. Over time, educational systems have evolved according to societal needs, technological changes, and modern perspectives on teaching and learning. Traditional pedagogy mainly focused on rote memorization and teacher authority, where students acted as passive learners. Modern education, however, emphasizes creativity, critical thinking, collaboration, communication, and problem-solving skills. Pedagogical shifts refer to changes in teaching methods, educational philosophy, and classroom interaction. These changes are driven by globalization, technological innovation, educational research, and policy reforms. Modern classrooms increasingly adopt learner-centered approaches that encourage active participation, inquiry, and experiential learning. Teacher education plays a crucial role in implementing these transformations. Teachers are no longer expected merely to

deliver content; they must act as facilitators, mentors, innovators, and lifelong learners. Therefore, teacher education institutions must prepare educators with technological competence, pedagogical knowledge, communication skills, and professional ethics.

2. Meaning of Pedagogy and Pedagogical Shifts

Pedagogy refers to the art and science of teaching. It includes instructional methods, classroom management, assessment practices, and teacher-student interaction processes that help students achieve learning outcomes effectively. Pedagogical shifts refer to the transition from traditional teaching methods to modern educational practices. Earlier educational systems focused mainly on memorization and textbook learning, whereas contemporary pedagogy promotes conceptual understanding, creativity, collaboration, and practical application of knowledge. These shifts are influenced by technological advancement, globalization, educational reforms, research in learning psychology, changing learner expectations, and the demand for twenty-first-century skills.

3. Traditional Pedagogy versus Modern Pedagogy

Traditional pedagogy was mainly teacher-centered and relied heavily on memorization-based learning. Students were passive learners who depended on textbook instruction and chalk-and-talk teaching methods. Assessment was primarily summative, and classroom interaction remained limited. Modern pedagogy, on the other hand, is learner-centered and emphasizes conceptual and experiential learning. Students actively participate in discussions, collaborative activities, and inquiry-based learning. Modern classrooms adopt flexible curricula, integrate technology into teaching, and encourage continuous assessment and personalized learning. This transition reflects the broader movement from knowledge transmission to skill development and holistic education.

4. Major Pedagogical Shifts in Contemporary Education

4.1 Learner-Centered Education

One of the most important pedagogical shifts is the movement from teacher-centered to learner-centered education. In this approach, students actively participate in the learning process rather than passively receiving information. Learner-centered pedagogy promotes inquiry-based learning, collaboration, problem-solving activities, self-directed learning, and critical thinking. The role of the teacher has also changed significantly. Teachers now function as facilitators, guides, and mentors who support students in constructing their own knowledge. This approach improves learner engagement, creativity, confidence, and independent thinking.

4.2 Constructivist Approach

Constructivism is based on the idea that learners construct knowledge through experience and interaction. Learning becomes meaningful when students connect new information with their previous experiences. Constructivist teaching emphasizes active participation, collaborative learning, reflection, real-life application, and student autonomy. This approach encourages critical thinking and deeper understanding, resulting in improved learning outcomes.

4.3 Digital Pedagogy and Technology Integration

Technology has transformed education significantly. Digital tools such as smart classrooms, online learning platforms, educational applications, multimedia instruction, and virtual classrooms have changed traditional teaching-learning processes. Digital pedagogy involves the effective use of technology to improve learning outcomes. It includes online learning, blended learning, flipped classrooms, and virtual simulations. The COVID-19 pandemic accelerated digital transformation globally, making digital literacy and technological competence essential for teachers.

4.4 Inclusive Education

Inclusive education aims to provide equal learning opportunities for all students regardless of gender, disability, language, or socio-economic background. It promotes diversity, equity, accessibility, and emotional inclusion in classrooms. Teacher education programs must prepare teachers to address diverse learner needs and create supportive learning environments where every student feels valued and respected.

4.6 Experiential Learning

Experiential learning focuses on "learning by doing." Students gain knowledge through projects, experiments, internships, field visits, and activity-based methods. This approach improves practical skills, understanding, retention of knowledge, and student engagement. It also promotes creativity, communication, collaboration, and problem-solving abilities.

4.7 Artificial Intelligence in Education

Artificial Intelligence (AI) is becoming an important part of modern education. AI-based tools provide personalized learning experiences, automated assessment, intelligent tutoring systems, and data-driven teaching support. AI helps teachers identify student needs and customize instruction accordingly. However, teachers remain essential because education also requires empathy, mentorship, and emotional support that technology cannot replace.

5. Impact of Pedagogical Shifts on Teacher Education

Pedagogical changes have transformed teacher education programs significantly. Modern teacher education curriculum now includes digital pedagogy, educational technology, inclusive education, reflective practices, research skills, and practical internship training. Teacher education focuses more on professional competence and practical teaching skills than only theoretical knowledge. Teachers today must possess digital competence, including the ability to conduct online classes, use educational software, create digital learning materials, and manage virtual classrooms effectively. Reflective teaching practices are also increasingly emphasized, encouraging teachers to evaluate and improve their teaching methods continuously. Continuous professional development has become essential in modern teaching. Teachers are expected to participate regularly in workshops, seminars, online training programs, and research activities to update their skills and adapt to changing educational needs.

6. National Education Policy (NEP) 2020 and Teacher Education

The National Education Policy (NEP) 2020 introduced major reforms in Indian education and recognized teachers as key drivers of educational transformation. The policy recommends a four-year integrated B.Ed. program, competency-based teacher training, technology integration, experiential learning approaches, and continuous professional development. NEP 2020 aims to transform education from rote-based learning to learner-centered and experiential learning. It also promotes critical thinking, creativity, multidisciplinary education, digital literacy, and holistic development.

7. Opportunities for Future Teacher Education

Pedagogical shifts create several opportunities for educational improvement. Artificial intelligence and adaptive technologies can provide personalized learning experiences according to individual student needs. Digital platforms also enable global collaboration among teachers and students. Blended learning and online education offer flexible opportunities for lifelong learning and professional development. Modern teacher education further promotes innovation, leadership, research orientation, and professional autonomy among teachers.

8. Suggestions for Strengthening Teacher Education

Teacher education systems can be strengthened by improving digital infrastructure and providing continuous professional development programs for teachers. Curriculum modernization should include digital pedagogy, interdisciplinary learning, and experiential teaching approaches. Assessment systems should focus on competencies and skill development instead of memorization. Educational institutions should also encourage research, innovation, and responsible integration of artificial intelligence and emerging technologies.

9. Conclusion

Pedagogical shifts represent a major transformation in contemporary education. The transition from teacher-centered instruction to learner-centered, technology-integrated, competency-based, and inclusive education reflects changing societal and educational needs. Teacher education is central to this transformation. Modern teachers must possess pedagogical knowledge, technological competence, communication skills, and adaptability to handle diverse learning environments effectively. The National Education Policy (NEP) 2020 has accelerated reforms by promoting holistic learning, digital pedagogy, and experiential education. However, successful implementation of these reforms requires strong institutional support, technological infrastructure, continuous teacher training, and effective policy execution. Challenges such as digital divide, inadequate infrastructure, outdated teacher preparation, and resistance to change must be addressed systematically. The future of education depends largely on the quality of teacher education. By empowering teachers with modern competencies and innovative teaching practices, educational systems can create meaningful learning experiences and prepare students for the challenges of the twenty-first century.

References

1. Ministry of Education, Government of India. (2020). *National Education Policy 2020*.
2. National Council for Teacher Education (NCTE). (2021). *Guidelines for Four-Year Integrated B.Ed. Programme*.
3. UNESCO. *State of the Education Report for India: Teachers, Teaching and Teacher Education*.
4. "Effectiveness of Digital Pedagogy on Teaching Competency in Teacher Education." *Indian Journal of Educational Technology*.
5. "Innovative Pedagogical Approaches in Teacher Education." *Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies*.
6. "Contemporary Pedagogical Transactions in India." *JETIR Journal*.
7. "Impact of NEP 2020 on Teacher Education in India: Implementation Challenges and Opportunities."
8. "A Case Study of Teacher Preparedness and Pedagogical Shifts under NEP-2020." *International Journal of Research Publication and Reviews*.
9. Ahmad, S., et al. *Education 5.0: Requirements, Enabling Technologies, and Future Directions*.
10. Nyaaba, M. *Transforming Teacher Education in Developing Countries: The Role of Generative AI in Bridging Theory and Practice*.

seema.pers@gmail.com
7510016648

www.bohalshodhmanjusha.com Bohal Shodh Manjusha ISSN: 2395-7115
Impact Factor: 8.642 June 2026 Page No. : 84-87
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

‘शकुंतिका’ उपन्यास में नारी सशक्तिकरण

Neethu D.P
Research Scholar,
Department of Hindi, Maharaja’s college, Ernakulam

भारतीय समाज, परिवार में पुरुषों को प्रथम स्थान देता है। पितृसत्तात्मक समाज को प्रधानता देने के कारण स्त्रियों को परिवार में द्वितीय स्थान दिया जाता हैं। ऐसे समाज को नई दिशा प्रदान करने वाला भगवानदास मोरवाल का उपन्यास है ‘शकुंतिका’। ‘शकुंतिका’ का अर्थ है ‘छोटी चिड़िया’ या ‘गौरैया’- जो हमेशा चहचहाती रहती है। बेटियों की तुलना चिड़िया से की गई है, क्योंकि वे भी चिड़िया की तरह अपने घर को अपनी किलकारियों से खुशियां प्रदान करती है। इस उपन्यास के माध्यम से लेखक यह संदेश देना चाहते हैं कि जिस घर में लड़कियां होती है, वह घर स्वर्ग के समान होता है।

‘शकुंतिका’ दो परिवारों की कथा है। भारतीय परिवारों के प्रतिनिधि के रूप में भगवती-दशरथ तथा दुर्गा-उग्रसेन के परिवारों को प्रस्तुत किया गया है। एक ओर उग्रसेन का परिवार है, जहां उसकी पत्नी दुर्गा के साथ उसके दो बेटे और बहूएं रहती हैं। दूसरी ओर दशरथ और भगवती का परिवार है, जहां उनके दो पुत्र और बहूएं रहती हैं। कहानी का आरंभ उग्रसेन-दुर्गा के घर चौथे पोते के जन्म की खुशी से होता है। इस घटना से भगवती निराश हो जाती है, क्योंकि उसके घर में बड़े बेटे बलवंत और रेवती को दो बेटियां है – सिया और गार्गी। छोटे बेटे रूपेश और जयंती की कोई संतान नहीं है। बड़े बहू रेवती गर्भवती है और भगवती ईश्वर से पुत्र-रत्न की प्रार्थना करती रहती है।
दुर्गा चौथे पोते की खुशी में लड्डू लेकर भगवती के घर आती है। वह रेवती को देखकर उसे आश्वस्त करते हुए कहती है –
“मेरा पक्का यकीन है भगवती कि इस बार तुम्हारे घर में लड़के की ही किलकारियां गूँजेंगी।” दुर्गा ने पूरे आत्मविश्वास के साथ दिलासा दी।
“अगर इस बार भी नहीं हुआ न, हम तो जीते-जी मर जाएंगे। पहले से दो-दो लड़कियों को देखकर मेरे तो हाथ-पांव फूले जाते हैं।”[1] बेटों को कुलदीपक मानने वाले भारतीय परिवारों की इस मानसिकता में परिवर्तन लाने का प्रयास लेखक ने इस उपन्यास के माध्यम से किया है।

रेवती तीसरी बार भी पुत्री को जन्म देती है। तीनों पोतियों को देखकर भगवती को यह चिंता सताने लगती है कि पोते के जन्म के बिना उसका वंश कैसे आगे बढ़ेगा। साथ ही, उसे यह भी लगता है कि बुढ़ापे में बेटा ही सहारा बन सकता है। पड़ोसी दुर्गा के सौभाग्य से तुलना करके भगवती अपनी नियति को कोसते हुए दिन-रात उदास रहती

है। इसके विपरीत उग्रसेन और दुर्गा गर्व महसूस करते हैं, क्योंकि उनके वंश को आगे बढ़ाने के लिए उनके बड़े पुत्र नागदत्त और कौशल्या के रोहन-विभोर तथा छोटे बेटे अभय और कुसुम के अमित-विजय हैं।

उग्रसेन के छोटे बेटे अभय को पुत्र-रत्न की प्राप्ति होने पर वे पूरे मोहल्ले को दावत देते हैं। खुली छत पर डीजे के शोर से पूरा मोहल्ला गूंज उठता है। डीजे की तेज आवाज़ के कारण भगवती और दशरथ को सोने में कठिनाई होती हैं। अचानक डीजे बीच में ही बंद हो जाता है। सुबह होते ही दशरथ को पता चलता है कि किसी ने सौ नंबर पर फोन करके शिकायत कर दिया कि मोहल्ले में आधी रात तक डीजे बज रहा है, जिससे लोगों को परेशानी हो रही है। इसलिए पुलिस आकर डीजे बंद करवा देती है। तब सिया अपने दादा-दादी से यह बात कहती है कि पिछले रात उसने ही पुलिस को बुलाया था। अपने पक्ष का समर्थन करते हुए वह कहती है -

"फिर और क्या करती दादाजी। डीजे के शोर से आप तो परेशान हो ही रहे थे, मैं और गार्गी भी डिस्टर्ब हो रही थीं। एक तो हमारे बोर्ड के एग्ज़ाम और ऊपर से यह शोर।"

"तो एक रात में तुम दोनों कौन-सी जज बन जाओगी!" भगवती पोती को डाँटते हुए बोली।

"अम्मां बात एक रात की नहीं है। कानून भी तो कोई चीज होती है।

"क्या कानून का सारा तुमने ठेका ले रक्खा है! और नहीं हैं इस मोहल्ले में।"

"हमें औरों से मतलब नहीं है। हम अपनी बात कर रही हैं।"[2]

इस प्रकार बचपन से ही सिया बिना डर या संकोच के अपनी बात खुलकर कह देती थी। वह परिवार कि परंपरावादी विचारों को तोड़कर आगे बढ़ती है। अपने ही परिवार में वह अपने अस्तित्व की लड़ाई जीत जाती है।

अपनी शैक्षिक योग्यता के अनुरूप सिया एक जज से तथा गार्गी एक डॉक्टर से विवाह करती हैं। भगवती अपनी पोतियों का विवाह अपनी ही जाति में करना चाहती थी, लेकिन सिया अपने जीवनसाथी के रूप में बंगाली लड़का तपन दत्ता को और गार्गी एक पंजाबी लड़के को चुनती हैं। इसलिए भगवती, बुलबुल की शादी अपनी ही बिरादरी के लड़के नरेंद्र से करवाती है। लेकिन दहेज के नाम पर बुलबुल को परेशान किया जाता है। तब भगवती को ग्लानि होती है कि जाति-बिरादरी कोई बड़ी चीज़ नहीं है। बुलबुल का चित्रण करोड़ों भारतीय लड़कियों का प्रतिनिधित्व करता है, जो शिक्षित होने पर भी अन्याय के विरुद्ध आवाज़ नहीं उठातीं। बुलबुल के ससुरालवाले दहेज के नाम पर उसे प्रताड़ित करते हैं। इस पर सिया क्रुद्ध होकर उन्हें वकील नोटिस भेजने की बात सोचती है, लेकिन भगवती उसे मना कर देती है। तब सिया कहती है कि -

"अम्मां, यही डर हम औरतों का सबसे बड़ा दुश्मन है। कोर्ट में रात-दिन हमारा ऐसे ही मामलों से पाला पड़ता है। हमें पता है कि जिन लोगों में समाज का डर खत्म हो जाता है, वे किसी भी हद तक जा सकते हैं। ऐसों का क्या इलाज होना चाहिए, मैं अच्छी तरह जानती हूं।"[3]

इस उपन्यास में स्त्री-शिक्षा के महत्व को विशेष रूप से रेखांकित किया गया है। शिक्षा नारी को ताकत देती है, साथ ही साथ अपने अधिकारों को हासिल करने में उसे सक्षम बनाती है। भारतीय समाज यह मानता है कि 'बेटी तो पराया धन' है, क्योंकि विवाह के बाद लड़कियों को अपना घर छोड़कर ससुराल जाना पड़ता है। इसलिए लड़कियों को 'अपनी हदों में रहना सिखाना' हर भारतीय परिवार अपना कर्तव्य समझते हैं। बेटियों को पाठशाला की शिक्षा के अतिरिक्त 'दूसरे घर' में जाकर रहने की शिक्षा देना अधिक महत्वपूर्ण माना जाता हैं।

पोते के जन्म को लेकर जो खुशी दुर्गा को होती है, कुछ वर्षों बाद वही खुशी संताप में बदल जाती है, क्योंकि चारों पोते न तो पढाई में तेज़ है और न ही उनमें अच्छे संस्कार हैं। उनके व्यवहार से मोहल्ले के लोग भी परेशान रहते हैं। वह अपनी पीड़ा इस प्रकार व्यक्त करती है कि-

"भगवती, उनसे जाकर पूछो जिनके लड़कियां नहीं हैं। अब हमारे यहीं देख लो। सारी की सारी कौरवों की फौज पैदा हो गई। मैं तो ऊपरवाले से रात-दिन यही बिनती करती रहती हूं कि बस हमें एक पोती दे दे।"[4]

दुर्गा अपने पोतों के व्यवहार से निराश होकर कहती है कि पिछले जन्म में भगवती ने मोतियों का दान किया होगा, इसलिए इस जन्म में उसे ऐसी पोतियां मिली हैं। वह अपने पोतों से ज़्यादा प्यार भगवती की पोतियों को देती है। दुर्गा के विचारों में आया यह परिवर्तन भगवती को भी प्रभावित करती है। भगवती अपनी पोतियों की सफलता पर गर्व महसूस करने लगती है।

भगवती के छोटे बेटे रूपेश और पत्नी जयंती को संतान प्राप्त नहीं होती। इसलिए वे दोनों एक बच्चा गोद लेना चाहते हैं। दुर्गा की सलाह से प्रभावित होकर भगवती, लड़के के बजाय लड़की को गोद लेने का सुझाव देती है। इस प्रकार भगवती के घर चौथी पोती पीहू आती है। पीहू ऑस्ट्रेलिया के मेलबोर्न में पढ़ाई के लिए जाती है और बाद में वहीं सीईओ बन जाती है। वह अपने स्वर्गीय दादा-दादी के नाम पर 'दशरथ-भगवती फाउंडेशन' की ओर से अनाथाश्रम को दान देकर अपने खानदान का नाम रोशन करती है। पीहू के माध्यम से यह दर्शाया गया है कि शिक्षित नारी आर्थिक और मानसिक रूप से सशक्त होती है। वह अपनी आर्थिक स्थिति का उपयोग समाज के विकास के लिए भी करती है।

समाज बेटी को पराया धन और लड़कों को 'कुल का दीपक' मानता हैं। लड़कियों को बचपन से ही 'दूसरे घर' में जाकर रहने का अभ्यास कराया जाता है तथा घर के बाहर अकेले जाने पर भी पाबंदियां लगाई जाती हैं। इसके विपरीत लड़कों को खुला आसमान में छोड़ते हैं। उसे पूरे स्वतंत्रता देते हैं। लड़कियों को घर-गृहस्थी संभालने का अभ्यास काराया जाता है तथा लड़कों को शिक्षा दी जाती हैं, क्योंकि उच्च शिक्षा प्राप्त कर नौकरी करने और घर चलाने का दायित्व पुरुष पर निर्भर माना जाता है। घर का मुखिया होने के कारण पारंपरिक संपत्ति पर भी उसका अधिकार होता है।

बलवंत, रूपेश, रेवती और जयंती के देखभाल सिया, गार्गी और बुलबुल करती हैं। पीहू भी हर साल महीने-डेढ़ महीने के लिए भारत आती रहती है। इस प्रकार बुढ़ापे में बेटियां ही अपने मां-बाप का सहारा बनती हैं। आज के समय में यह सामान्य बात हो गई है कि बच्चे बड़े होने पर वृद्ध मां-बाप को बोझ समझने लगते हैं। बुढ़ापे में उपेक्षा और अकेलेपन से ग्रसित बुज़ुर्गों का चित्रण लेखक ने किया है। बेटे नागदत्त और अभय दूसरे घर बसाकर उग्रसेन और दुर्गा को छोड़कर चले जाते हैं। अपने बेटों की लापरवाही से निराश दुर्गा अपनी व्यथा इस प्रकार व्यक्त करती है कि -

"एक बात कहूं भगवती, ये बेटियां ही हम दादा-दादी और मां-बाप की सार-सांभाल करती हैं। ये बेटियां ना हों न, तो पता नहीं इनका क्या हाल हो। बेमतलब हम बेटों की चिंता में अपनी ज़िंदगानी खपा देते हैं। अब बता मुझे क्या मिला? जब हमारे दिन आए तो छिटककर दूर चले गए। बना लो जमीन-जायदाद। क्या फ़ायदा हुआ इस सबका।"[5]

इस तरह बेटे के जन्म को सौभाग्य मानने वाले दोनों परिवार अंत में बेटियों को प्राथमिकता देने वाले परिवारों में बदल जाते हैं।

पुराने ज़माने में स्त्रियों को शिक्षित नहीं होने दिया जाता था, लेकिन आधुनिक समाज, नारी-शिक्षा को अनिवार्य माना जाता है। शिक्षित नारी अन्याय और शोषण का विरोध कर सकती है। इस प्रकार शिक्षा नारी को सशक्त बनाती है। एक शिक्षित नारी ही अपने अधिकारों को पहचानकर समाज के विकास में अपनी पहचान बनाए रखने का प्रयास करती है। नारी स्वयं समझने लगी है कि शिक्षा के माध्यम से वह आत्मनिर्भर बन सकती है और अपने ज़िंदगी के फैसला स्वयं ले सकती है। शिक्षा केवल ज्ञान प्राप्ति का साधन नहीं है, बल्कि समाज के विकास में

महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त करने का माध्यम भी है। अपने आत्मसम्मान और स्वतंत्रता को बनाए रखने के लिए शिक्षा की भूमिका को नज़र अंदाज़ नहीं किया जा सकता।

'शकुंतिका' के माध्यम से लेखक ने 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' अभियान की भावना को अपनाया है। लेखक ने यह दर्शाने का प्रयास किया है कि नारी किस प्रकार घर कि ज्योति बनती है। लड़के ही घर के मालिक नहीं होते, बल्कि लड़कियां भी परिवार की वास्तविक शक्ति होती हैं- इसी तथ्य को पाठकों के सामने प्रस्तुत करने का प्रयास इस उपन्यास के माध्यम से किया गया है।

संदर्भ-

1. 'शकुंतिका'- भगवानदास मोरवाल, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ सं . 7
2. वही, पृष्ठ सं. 13
3. वही, पृष्ठ सं. 98
4. वही, पृष्ठ सं. 25
5. वही, पृष्ठ सं. 77

www.bohalshodhmanjusha.com Bohal Shodh Manjusha ISSN: 2395-7115
Impact Factor: 8.642 June 2026 Page No. : 88-93
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

"वैश्विक शांति में बौद्ध धर्म की प्रासंगिकता"

आदर्श श्रीवास
शोधछात्र, योग अध्ययन केंद्र
हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला, हिमाचल प्रदेश
डॉ. सत्यानन्द
सहायक आचार्य, योग अध्ययन केंद्र
हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला, हिमाचल प्रदेश

शोध सार:
बौद्ध धर्म भारतीय सभ्यता की एक सुदृढ़ एवं अमूल्य वैचारिक धरोहर है, जो मानवीय कल्याण, विश्व बंधुत्व, नैतिक आचरण, मैत्री भाव तथा सामाजिक समरसता की स्थापना में आदिकाल से ही अग्रणी भूमिका निभाती आई है। यह एक विज्ञानवादी एवं तर्काधारित विश्व धर्म है, जो अंधविश्वास एवं रूढ़िवाद की अपेक्षा व्यावहारिक चिंतन एवं आत्म-निरीक्षण को प्राथमिकता प्रदान करता है। गौतम बुद्ध का "अत्त दीपो भव" का सिद्धांत आत्मनिर्भरता एवं आंतरिक चेतना की जागृति का आह्वान करते हुए व्यक्ति को मानसिक एवं शारीरिक विकारों से मुक्त होने की दार्शनिक प्रेरणा देता है।
ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में विश्लेषण करने पर स्पष्ट होता है कि जिस काल में ब्राह्मणवाद, बलिप्रथा, वर्ण-जाति भेद तथा सामाजिक विषमता का वर्चस्व था, उस संक्रमणकालीन युग में बौद्ध धर्म ने अहिंसा, करुणा तथा अष्टांगिक मार्ग के माध्यम से पीड़ित मानवता को मुक्ति का वैकल्पिक दर्शन प्रदान किया। पंचशील के सिद्धांतों ने व्यक्तिगत एवं सामूहिक जीवन में नैतिक अनुशासन का सुदृढ़ आधार निर्मित किया।
समकालीन वैश्विक संदर्भ में आतंकवाद, साम्प्रदायिक हिंसा, पर्यावरणीय संकट, आर्थिक असमानता, क्षेत्रवाद तथा सामाजिक विद्वेष जैसी जटिल चुनौतियाँ अंतर्राष्ट्रीय अशांति के मूल कारण बने हुए हैं। इन अज्ञानजनित समस्याओं के निवारण में बौद्ध दार्शनिक सिद्धांत एक प्रभावी वैचारिक उपकरण के रूप में प्रकट होते हैं। दलाई लामा सहित विविध बौद्ध चिंतकों के अंतरराष्ट्रीय संवाद एवं शांति-प्रयासों ने इस धर्म को वैश्विक शांति आंदोलन का एक अभिन्न स्तम्भ बना दिया है।

कूट शब्द: बौद्ध धर्म, चार आर्य सत्य, पंचशील, विश्वीक शांति।

प्रस्तावना:

प्रस्तुत शोध-पत्र बौद्ध शिक्षाओं की ऐतिहासिक एवं समकालीन भूमिका का विश्लेषणात्मक अध्ययन करते हुए यह प्रतिपादित करता है कि विद्यालयी पाठ्यक्रमों, उच्च शिक्षा संस्थानों तथा अंतरराष्ट्रीय नीति-निर्माण प्रक्रियाओं में बौद्ध सिद्धांतों के सुनियोजित एकीकरण द्वारा वैश्विक शांति की दिशा में ठोस एवं स्थायी प्रगति संभव है।

एक विंशवीं शताब्दी में मानव सभ्यता अभूतपूर्व भौतिक प्रगति के शिखर पर खड़ी है, फिर भी विडंबना यह है कि विश्व के अधिकांश भू-भाग आज भी आंतरिक एवं बाह्य संघर्षों की विभीषिका से आक्रांत हैं। आतंकवाद, साम्प्रदायिक हिंसा, जातीय विद्वेष, आर्थिक असमानता, पर्यावरणीय संकट और सामाजिक असहिष्णुता जैसी जटिल समस्याएँ वैश्विक अशांति के मूल कारण बनी हुई हैं। इन संकटों की गहन पड़ताल करने पर यह स्पष्ट होता है कि इनका उद्गम किसी बाह्य परिस्थिति में नहीं, अपितु मानव मन की तृष्णा, अज्ञानता और द्वेष जैसी आंतरिक दुर्बलताओं में निहित है। यह वह बिंदु है जहाँ आधुनिक राजनीतिक एवं आर्थिक समाधान प्रायः निष्फल सिद्ध होते हैं और बौद्ध दर्शन की प्रासंगिकता स्वतः उभरकर सामने आती है।

लगभग छठवीं शताब्दी ईसा पूर्व में, जब समाज हिंसा, जातिभेद और अंधविश्वास की जकड़ में था, तब गौतम बुद्ध ने एक ऐसे दर्शन की स्थापना की जो न केवल उस युग की समस्याओं का समाधान था, बल्कि कालातीत मानवीय संकटों का भी निदान था। उन्होंने चार आर्य सत्यों के माध्यम से यह प्रतिपादित किया कि दुःख सार्वभौमिक है, उसका कारण तृष्णा है, तृष्णा का निवारण संभव है और अष्टांगिक मार्ग उस निवारण का व्यावहारिक पथ है। यह केवल व्यक्तिगत मुक्ति का सिद्धांत नहीं था, अपितु समग्र सामाजिक एवं वैश्विक शांति की संरचना थी। पंचशील के सिद्धांतों ने अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह के माध्यम से व्यक्तिगत आचरण को सामाजिक नैतिकता से जोड़ा, जो वैश्विक सह-अस्तित्व की आधारशिला बन सकती है।

उल्लेखनीय तथ्य यह है कि बुद्ध के पास न सैन्य बल था, न राजनीतिक सत्ता और न ही आर्थिक साधन, तथापि उनकी शिक्षाएँ श्रीलंका, थाईलैंड, म्यांमार, जापान, भूटान और कंबोडिया सहित अनेक देशों में शांतिपूर्वक प्रसारित हुईं — यह इस बात का ऐतिहासिक प्रमाण है कि वैचारिक सत्य की शक्ति भौतिक बल से कहीं अधिक स्थायी एवं प्रभावशाली होती है। समकालीन संदर्भ में दलाई लामा जैसे बौद्ध विचारकों ने अंतरराष्ट्रीय मंचों पर करुणा, संवाद और अहिंसा को वैश्विक शांति के अनिवार्य स्तंभों के रूप में स्थापित किया है, जिससे बौद्ध दर्शन आज एक वैश्विक शांति आंदोलन का प्रेरणास्रोत बन चुका है।

"अत्त दीपो भव" का बुद्ध का यह आह्वान आज पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक है, क्योंकि वैश्विक शांति की स्थापना बाह्य संधियों और समझौतों से नहीं, बल्कि प्रत्येक व्यक्ति के आंतरिक रूपांतरण से ही संभव है। इसी वैचारिक पृष्ठभूमि में प्रस्तुत शोध-पत्र यह अन्वेषण करता है कि बौद्ध धर्म के मूलभूत सिद्धांत आज के संघर्षग्रस्त विश्व में किस प्रकार शांति, सहिष्णुता और मानवीय एकता की पुनर्स्थापना में सहायक हो सकते हैं, तथा शिक्षा, नीति-निर्माण और अंतरराष्ट्रीय संवाद के माध्यम से इन्हें किस सीमा तक क्रियान्वित किया जा सकता है।

बौद्ध के सिद्धांत:

बौद्ध दर्शन की आधारशिला अहिंसा, करुणा, प्रेम, सत्य और विश्वबंधुत्व जैसे मानवीय मूल्यों पर टिकी है। इस दर्शन में हिंसा का कोई स्थान नहीं है क्योंकि हिंसा अज्ञानता (अविद्या) और लालसा (तृष्णा) से उत्पन्न होती है, जिसके कारण समाज सत्य ज्ञान से भटक जाता है। बौद्ध सिद्धांत मानव की इंद्रियों और चित्त को संयमित करने में सहायता प्रदान

करते हैं, जिससे व्यक्ति सद्गुणों का संचय कर सकता है। महात्मा बुद्ध ने चार आर्य सत्य, अष्टांगिक मार्ग, क्षणिकवाद, प्रतीत्यसमुत्पाद, अनात्मवाद और पंचशील जैसे गहन सिद्धांतों का प्रतिपादन किया। ये सिद्धांत न केवल व्यक्तिगत शांति, बल्कि वैश्विक सौहार्द की नींव रखते हैं।

चार आर्य सत्य - दु:ख और मुक्ति का विज्ञान (किलानिया, 2025):

1. संसार दु:खमय है - संसार की वास्तविकता

"सर्वं दुःखम्" - यह बुद्ध का प्रथम और सबसे महत्वपूर्ण अवलोकन है। गहन आत्मनिरीक्षण के पश्चात् बुद्ध ने देखा कि जीवन का प्रत्येक पहलू दु:ख से आच्छादित है। जन्म दुःखमय है, वृद्धावस्था पीड़ादायक है, रोग कष्टकारी है, मृत्यु भय से परिपूर्ण है। प्रिय व्यक्ति या वस्तु से बिछड़ना दुःखदायी है, अप्रिय से मिलना कष्टकारक है। यहाँ तक कि हमारी समस्त आशाएँ, आकांक्षाएँ और सुख की अनुभूतियाँ भी अंततः दुःख का ही कारण बनती हैं। बुद्ध कहते हैं कि जीवन एक निरंतर संघर्ष है जहाँ प्राणी जन्म से लेकर मृत्यु तक विविध प्रकार के कष्टों को झेलता रहता है।

2. दु:ख का मूल कारण

जब व्यक्ति संसार की नश्वरता और दु:ख की सर्वव्यापकता को समझ लेता है, तब स्वाभाविक रूप से यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि इन दुखों का मूल कारण क्या है? बुद्ध का उत्तर स्पष्ट और वैज्ञानिक है— दुःख का कारण तृष्णा है। यह तृष्णा जन्म के साथ ही उत्पन्न होती है और व्यक्ति को सांसारिक विषयों के पीछे दौड़ने पर मजबूर करती है। जो वस्तुएं हम सुखदायी मानते हैं, वे वास्तव में क्षणिक हैं। उनके न मिलने का दु:ख, मिल जाने के बाद उन्हें खोने का भय, और उनसे अधिक पाने की लालसा - यही दु:ख का चक्र है। इसलिए बुद्ध ने इसे मूर्खता कहा, क्योंकि जो नश्वर है, उसे सुख मानना भ्रम है।

3. दु:ख निरोध - दु:ख से मुक्ति की संभावना

बुद्ध की महानता इस बात में है कि वे केवल समस्या की पहचान नहीं करते, बल्कि उसका समाधान भी प्रस्तुत करते हैं। प्रतीत्यसमुत्पाद (कार्य-कारण सिद्धांत) के अनुसार प्रत्येक कार्य अपने कारण पर आश्रित है। यदि कारण का अभाव हो जाए तो कार्य भी समाप्त हो जाता है (यादव, 2018)। चूंकि दुःख का कारण तृष्णा है, अतः तृष्णा की समाप्ति से दुःख का भी अंत हो सकता है। इस अवस्था को बुद्ध ने 'निर्वाण' नाम दिया है - जो परम शांति, मुक्ति और सर्वोच्च आनंद की स्थिति है। विशेष बात, बुद्ध ने कहा कि निर्वाण इस जीवन में ही संभव है, यदि व्यक्ति अनासक्ति और करुणा के साथ जीना सीख ले। यह वैश्विक शांति की कुंजी है, क्योंकि तृष्णा-मुक्त समाज में हिंसा और संघर्ष नहीं पनपते।

4. दु:ख निरोध के मार्ग -

चौथा आर्य सत्य दु:ख निरोध का व्यावहारिक मार्ग है। यह वही पथ है जिस पर चलकर स्वयं बुद्ध ने निर्वाण प्राप्त किया था। इसे 'अष्टांगिक मार्ग' कहा जाता है, जिसके आठ अंग हैं: सम्यक् दृष्टि (सही दृष्टिकोण), सम्यक् संकल्प (सही इच्छा), सम्यक् वाक् (सही वाणी), सम्यक् कर्मान्त (सही आचरण), सम्यक् आजीविका (सही जीविका), सम्यक् व्यायाम (सही प्रयत्न), सम्यक् स्मृति (सही स्मरण), और सम्यक् समाधि (सही एकाग्रता)। यह एक व्यावहारिक जीवनशैली है, जो व्यक्ति को नैतिकता, ध्यान और प्रज्ञा के माध्यम से शांति की ओर ले जाती है।

क्षणिकवाद - परिवर्तन का सिद्धांत

बुद्ध का क्षणिकवाद एक दार्शनिक सिद्धांत है जो कहता है कि संसार की प्रत्येक वस्तु निरंतर परिवर्तनशील है। कोई भी वस्तु दो क्षण तक एक समान नहीं रहती। यह परिवर्तन प्रतीत्यसमुत्पाद के नियम से शासित होता है - जब किसी वस्तु का आधारभूत कारण समाप्त हो जाता है, तो वह वस्तु भी नष्ट हो जाती है। बुद्ध ने कहा, "जो जन्म लेता है, वह

मरेगा"। इस सत्य को समझकर व्यक्ति अनासक्ति को अपनाता है, जो दुखों से मुक्ति और सुख की अनुभूति का मार्ग खोलता है। यह सिद्धांत हमें सिखाता है कि दु:ख भी अस्थायी है और अनासक्त कर्म से हम शांति पा सकते हैं (सिन्हा, 2016)।

अनीश्वरवाद सिद्धांत:

बुद्ध का अनीश्वरवाद उनके दर्शन का एक विशिष्ट पहलू है। उन्होंने ईश्वर की सत्ता को स्वीकार नहीं किया क्योंकि उनके अनुसार यदि संसार की समस्त वस्तुएं क्षणिक और परिवर्तनशील हैं, तो संपूर्ण सृष्टि की उत्पत्ति और विनाश भी कार्य-कारण के नियम से शासित होती है (Nirbhay, 2019)। वृक्ष, मनुष्य, देवता - सभी कार्य-कारण श्रृंखला के अधीन हैं। जब सब कुछ नश्वर है, तो एक अनश्वर ईश्वर की कल्पना तर्कसंगत नहीं है। इसीलिए बुद्ध ने किसी बाह्य शक्ति पर निर्भर रहने के स्थान पर "अत्त दीपो भव" (स्वयं अपना प्रकाश बनो) का सिद्धांत दिया। यह मनुष्य को आत्मनिर्भरता और आत्म-जागृति की प्रेरणा देता है और स्वतंत्रता की घोषणा करता है - व्यक्ति स्वयं अपनी मुक्ति का निर्माता है।

ये सिद्धांत केवल दार्शनिक चिंतन नहीं हैं, बल्कि जीवन जीने की एक संपूर्ण व्यावहारिक पद्धति हैं। अहिंसा, करुणा, और अनासक्ति जैसे सिद्धांत आज के युग में, जहाँ हिंसा, असमानता, और पर्यावरण संकट शांति को चुनौती दे रहे हैं, उतने ही प्रासंगिक हैं। बुद्ध का संदेश हमें सिखाता है कि यदि हम तृष्णा और अज्ञानता को छोड़कर प्रज्ञा और करुणा को अपनाएं, तो न केवल व्यक्तिगत, बल्कि वैश्विक शांति भी संभव है।

वैश्विक शांति में बौद्ध धर्म की उपयोगिता:

- **आधुनिकता की चुनौतियाँ और बौद्ध समाधान-**

आज का युग आधुनिकीकरण की तीव्र गति से विकसित हो रहा है। यह विकास उस नदी के समान है जो अपने वेग से पर्वतों को तोड़ती हुई आगे बढ़ती है, या उस बीज के समान है जो एक विशाल वृक्ष का रूप धारण कर लेता है। डिजिटल क्रांति, वैश्विक संचार, तकनीकी प्रगति और आर्थिक उन्नति ने मानव सभ्यता को एक नई ऊंचाई प्रदान की है। परंतु यहाँ दो परिस्थितियाँ प्रकट होती है एक भौतिक सुख वहीं दूसरा कुरुतियाँ (बुंदेला, 2018)।

आधुनिकता की इस दौड़ में मानव के समक्ष अनेक समस्याएँ जन्म ले रही है। बेरोजगारी का संकट, पर्यावरणीय विनाश, सामाजिक वर्ग-भेद, क्षेत्रवाद, धार्मिक असहिष्णुता, भ्रष्टाचार की जड़ें, अंधविश्वासों का प्रसार, ईर्ष्या, द्वेष, अहंकार की दीवारें और हिंसा की प्रवृत्ति - ये सभी आज की सभ्यता पर काले धब्बे हैं। यह विडंबना है कि जितनी तेजी से हमारी भौतिक प्रगति हुई है, उतनी ही तेजी से हमारी मानसिक शांति नष्ट हो रही है (Dan, 2023)।

इन विकराल समस्याओं के समाधान हेतु बुद्ध के सिद्धांत एक उपकरण का काम कर सकते हैं। यदि हम गंभीरता से बौद्ध की शिक्षाओं के पथ पर अग्रसर हों, तो वैश्विक शांति की स्थापना संभव है। बुद्ध का स्पष्ट संदेश है कि चिंता और अशांति से मुक्ति पाने के लिए परम सत्य का साक्षात्कार आवश्यक है। अविद्या के घने अंधकार को मिटाकर, अंतर्मुखी होकर, और अपने भीतर की समस्त बुराइयों को नष्ट करके ही हम उस सर्वोच्च आनंद की अनुभूति कर सकते हैं (Tailor, 2025)।

- **बौद्ध दर्शन का व्यावहारिक आयाम-**

बौद्ध दर्शन का सबसे महत्वपूर्ण पहलू यह है कि यह केवल आध्यात्मिक चिंतन तक सीमित नहीं है, बल्कि सामाजिक कल्याण का भी मार्ग प्रशस्त करता है। बुद्ध की शिक्षा है कि मानव सेवा से उच्च कोई धर्म नहीं है। करुणा,

प्रेम, दया, क्षमा, त्याग, और श्रद्धा जैसे गुणों का विकास न केवल व्यक्तिगत मुक्ति का साधन है, बल्कि सामाजिक सद्भावना की स्थापना का भी आधार है (शिंदे, 2018)।

इतिहास साक्षी है कि बुद्ध ने अपने जीवनकाल में पूरे विश्व से अंधविश्वास और अज्ञानता का पर्दा हटाकर शांति एवं मैत्री का संदेश फैलाया था। आज यदि हम मानव कल्याण, राष्ट्रप्रेम, अहिंसा और निःस्वार्थ सेवा के इन आदर्शों को अपनाएं, तो विश्व शांति के मार्ग पर आगे बढ़ सकते हैं।

- **अंतर्राष्ट्रीय संघर्ष और बौद्ध समाधान-**

आज के अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य में राष्ट्रों के मध्य बढ़ते तनाव, व्यापारिक युद्ध और सैन्य संघर्ष चिंता का विषय हैं। एक देश दूसरे देश के विरुद्ध शत्रुता की भावना रखता है, जिससे वैश्विक अशांति का वातावरण निर्मित होता है। इस संदर्भ में धम्मपद के पांचवें श्लोक का उल्लेख अत्यंत प्रासंगिक है: **"न हि वेरेण वेराणि सम्मन्तीध कुदाचनं। अवेरेण च सम्मन्ति एस धम्मो सनातनो"** अर्थात् वैर से वैर कभी शांत नहीं होता, केवल अवैर (प्रेम) से ही वैर शांत होता है - यह सनातन धर्म है (Dhammapada Verse 5 - Kalayakkhini Vatthu)।

यह सिद्धांत आज के युग में कितना सटीक है। जब राष्ट्र, हिंसा से हिंसा का उत्तर देने में व्यस्त हैं, तब बुद्ध की अहिंसा और शांति की शिक्षा एक वैकल्पिक मार्ग प्रस्तुत करती है। यदि अंतर्राष्ट्रीय नेता मैत्री, करुणा, मुदिता और उपेक्षा जैसे बौद्ध गुणों को अपनाएं, तो यह धरती युद्ध की रणभूमि न बनकर शांति का केंद्र बन सकती है।

- **भविष्य की संभावनाएँ-**

यदि हम बौद्ध शिक्षाओं को व्यापक स्तर पर अपनाकर विश्व समुदाय को इससे अवगत कराएं, तो मानव समाज एक भयमुक्त और शांतिपूर्ण समाज का निर्माण कर सकता है। जब व्यक्ति अपने भीतर की शांति पा लेता है, तो वह परिवार में शांति लाता है। जब परिवार शांत होता है, तो समाज शांत होता है। जब समाज शांत होता है, तो राष्ट्र शांत होता है। और जब राष्ट्र शांत होते हैं, तो विश्व में शांति स्थापित होती है। यही बुद्ध का मार्ग है - व्यक्ति से विश्व तक शांति का प्रसार। इस प्रकार, वैश्विक शांति की स्थापना में बौद्ध धर्म की भूमिका न केवल संभव है, बल्कि आवश्यक भी है। आज की समस्याओं का समाधान हिंसा में नहीं, बल्कि बुद्ध के अहिंसक और करुणामय मार्ग में निहित है। बुद्ध का मार्ग हमें सिखाता है कि शांति बाहर नहीं, हमारे भीतर शुरू होती है।

निष्कर्ष:

उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर यह निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है कि बौद्ध धर्म के सिद्धांत — अहिंसा, करुणा, अष्टांगिक मार्ग और पंचशील — आज के संघर्षग्रस्त विश्व में शांति स्थापना के सर्वाधिक व्यावहारिक एवं नैतिक आधार हैं। वैश्विक अशांति का मूल कारण बाह्य परिस्थितियाँ नहीं, अपितु मानव मन की तृष्णा और अज्ञानता है, जिसका समाधान बुद्ध ने सहस्राब्दियों पूर्व ही प्रस्तुत कर दिया था। अतः विद्यालयी पाठ्यक्रमों, उच्च शिक्षा एवं अंतरराष्ट्रीय नीति-निर्माण में बौद्ध दर्शन का समावेश समय की सर्वोच्च आवश्यकता है।

संदर्भ सूची:

1. किलानियासत्येन्द्र कुमार. (2025). बुद्ध के चार आर्य सत्य और अष्टांगिक मार्ग: एक दार्शनिक एवं व्यवहारिक दृष्टिकोण. *International Journal of Creative Research Thoughts (IJCRT)*, *13*(3), 16–22.
2. कुमारमनोरंजन. (2015). बौद्ध धर्म का समाज पर प्रभाव-एक परिचर्चा. *International Journal of Research and Analytical Reviews (IJRAR)*, *2*(1), 143–149.

3. कुमारसर्वेष. (2020). विश्व शांति एवं अध्यात्म चिंतन का मार्ग: बौद्ध धर्म. *Bodhi-Path*, *19*, 55.
4. बुंदेलासंजय. (2018). बौद्ध धर्म ओर विश्व शांति. *EIJO: Journal of Humanities, Social Affair, Management and Innovative Research*, *3*(1), 1–5.
5. यादवअनीता. (2018). बौद्ध धर्म के प्रमुख दार्शनिक तत्वों का विश्लेषण. *Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (JETIR)*, *5*(5). www.jetir.org
6. शर्माकमल कान्त. (2017). वर्तमान समय में बौद्ध धर्म की प्रासंगिकता. *Interna tional Jo urna l of Applied Research*, *3*, 1442–1445.
7. शिंदेजय श्री. (2018). वैश्विक हिन्दी और बौद्ध दर्शन. *Review Of Research*, *7*(12), 1–4.
8. सिन्हाहरेन्द्र प्रसाद. (2016). *भारतीय दर्शन की रूपरेखा* (तेरहवाँ). मोतीलाल बनारसीदास.
9. *Buddha—Previous Lives, Enlightenment, Dharma | Britannica*. (2025, अगस्त 3). https://www.britannica.com/biography/Buddha-founder-of-Buddhism/Previous-lives
10. Dan, I. (2023). RELEVANCE OF BUDDHISM IN MODERN WORLD. *ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts*, *4*(2), 1414–1418. https://doi.org/10.29121/shodhkosh.v4.i2.2023.2448
11. *Dhammapada Verse 5—Kalayakkhini Vatthu*. (n.d.). Wikipitaka - The Completing Tipitaka. पुनर्प्राप्त 14 सितम्बर, 2025, से https://tipitaka.fandom.com/wiki/Dhammapada_Verse_5_-_Kalayakkhini_Vatthu
12. Kumar, M. (2025). छठी शताब्दी ईसा पूर्व में धर्म का लोकतांत्रिकरण: यज्ञ और पुरोहितवाद के विकल्प. *IJFMR - International Journal For Multidisciplinary Research*, *7*(3). https://doi.org/10.36948/ijfmr.2025.v07i03.45452
13. Nirbhay, D. K. R. (2019). वर्तमान विश्व में बौद्ध धर्म की महत्ता और उत्तरदायित्व. *बोधि-पथ*. https://www.academia.edu/110250985/%
14. Tailor, R. (2025). बौद्ध धर्म का सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभाव: जर्जिला और नेपाल में उद्भव और पिन की यात्रा. *International Journal of Innovative Research and Creative Technology*, *11*(1), 1–6.

Email: adarshshrivas180@gmail.com   Mobile No. 8461903234
Email: drsatyanioh@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com Bohal Shodh Manjusha ISSN: 2395-7115
Impact Factor: 8.642 June 2026 Page No. : 94-98
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

Impact of Climate Change on Agricultural Productivity in Rajsamand District, Rajasthan: A Geographical Analysis

DINESH SINGH
M.Sc. Geography
INDRA GANDHI NATIONAL OPEN UNIVERSITY

Abstract
Climate change has emerged as a major environmental challenge affecting agricultural systems worldwide. Semi-arid regions of India, including Rajasthan, are particularly vulnerable to changes in temperature and rainfall patterns. This study examines the impact of climate change on agricultural productivity in Rajsamand District, Rajasthan. The research focuses on climatic variability, agricultural dependence on monsoon rainfall, and the implications of changing climatic conditions for major crops. Secondary data from meteorological records, agricultural statistics, and published literature are proposed for analysis. The study aims to identify trends in temperature and rainfall and assess their influence on crop production. The findings are expected to contribute to the understanding of climate-agriculture relationships and support the development of climate-resilient agricultural strategies.

Keywords: Climate Change, Agriculture, Rajsamand, Rajasthan, Rainfall Variability, Temperature Trends, Agricultural Productivity, Sustainable Development

1. Introduction

Agriculture remains the backbone of the rural economy in Rajasthan. A significant proportion of the population depends directly or indirectly on farming and allied activities. However, agricultural production in Rajasthan is highly sensitive to climatic conditions because of low and variable rainfall, high temperatures, and recurring droughts.

Climate change has intensified environmental challenges by altering rainfall patterns, increasing temperatures, and increasing the frequency of extreme weather events. Such changes directly affect crop productivity, water availability, soil moisture, and farmers' livelihoods.

Rajsamand District is characterized by semi-arid climatic conditions and dependence on seasonal rainfall. Therefore, studying the impact of climate change on agriculture in the district is important for understanding regional vulnerabilities and adaptation needs.

2. Review of Literature

Previous studies have indicated that rising temperatures and rainfall variability negatively affect agricultural productivity in arid and semi-arid regions.

- Studies by the Intergovernmental Panel on Climate Change (IPCC) have highlighted increasing climate risks to food systems.
- Research in Rajasthan has demonstrated strong links between monsoon variability and crop yields.
- Several scholars have emphasized the importance of drought-resistant crops, efficient irrigation systems, and climate-smart agricultural practices.

Despite existing research, district-level studies focusing specifically on Rajsamand remain limited, creating the need for localized geographical analysis.

3. Objectives of the Study

1. To examine climatic trends in Rajsamand District.
2. To analyze changes in temperature and rainfall patterns.
3. To assess the impact of climate variability on agricultural productivity.
4. To identify major challenges faced by farmers.
5. To suggest adaptation strategies for sustainable agriculture.

4. Hypothesis

H1: Increasing temperature and rainfall variability have negatively affected agricultural productivity in Rajsamand District.

H0: Climate variability has no significant impact on agricultural productivity in Rajsamand District.

5. Study Area

Rajsamand District is located in the southern part of Rajasthan. The district lies within the semi-arid climatic zone and is characterized by hot summers, moderate monsoon rainfall, and water scarcity in several regions.

The economy of the district is largely dependent on agriculture and related activities. Major crops include wheat, maize, mustard, gram, and barley.

6. Data Sources and Methodology

Data Sources

Primary Data:

- Farmer surveys
- Structured questionnaires
- Interviews

Secondary Data:

- India Meteorological Department (IMD)
- Rajasthan Department of Agriculture
- Census Reports
- Government Statistical Abstracts
- Research Journals

Methodology

1. Collection of temperature and rainfall data.
2. Compilation of crop production statistics.
3. Trend analysis of climatic variables.
4. Correlation analysis between climate indicators and crop productivity.
5. GIS-based mapping of climatic and agricultural patterns (optional).

7. Conceptual Framework

Climate Change
↓
Temperature Increase
↓
Rainfall Variability
↓
Soil Moisture Reduction
↓
Agricultural Stress
↓
Reduced Crop Productivity
↓
Socio-Economic Impact on Farmers

8. Results and Discussion

8.1 Temperature Trends / Rainfall Variability

Month	**Avg. Temperature (°C)**	**Avg. Rainfall (mm)**
January	16.2	4
February	19.2	6
March	24.5	5
April	29.2	4
May	32.5	12
June	31.0	70
July	28.0	228
August	27.0	180
September	27.5	70
October	25.8	15
November	20.5	2
December	16.8	1

AVERAGE TEMPERATURE BY MONTH RAJSAMAND

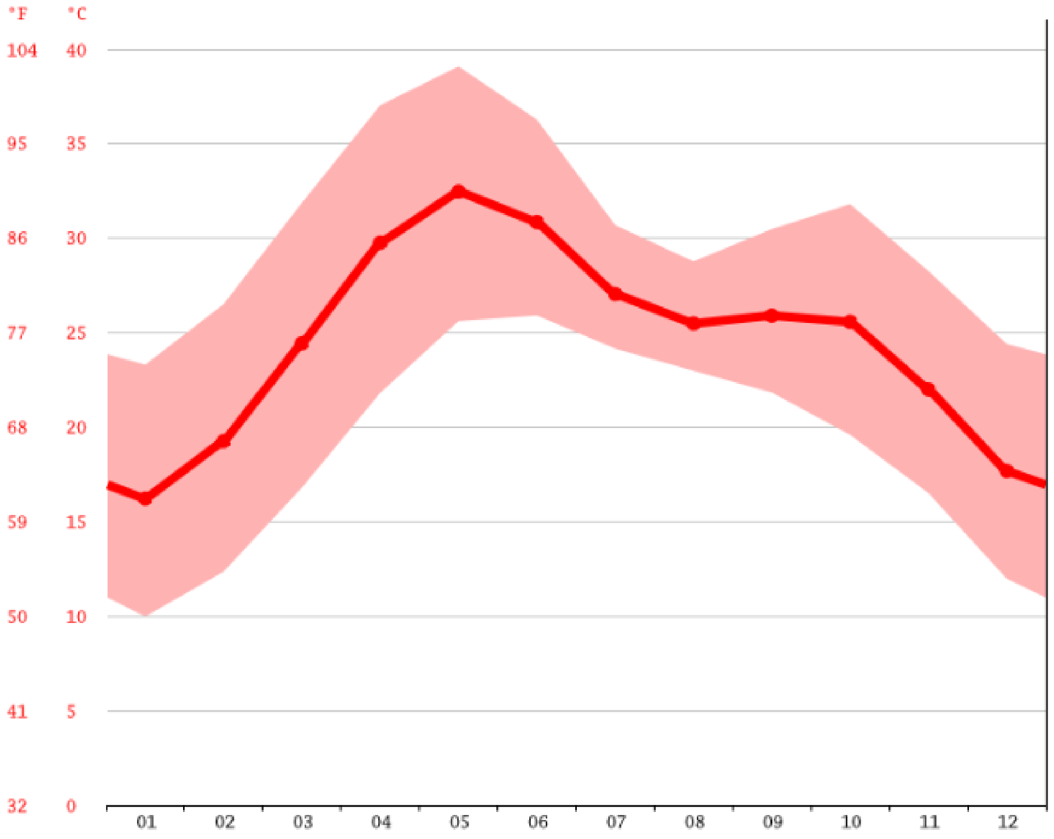

Indicator	Value
Climate Type	Semi-arid Steppe (BSh)
Average Annual Temperature	24.4–24.7°C
Average Annual Rainfall	569–587 mm
Hottest Month	May
Coldest Month	January
Wettest Month	July
Main Rainy Season	June–September

8.3 Impact on Major Crops

The influence of climatic factors may differ among crops depending on water requirements, growth cycles, and temperature tolerance.

8.4 Farmers' Perception

Survey-based findings may reveal concerns related to:

- Delayed monsoon

- Water scarcity
- Declining crop yields
- Increased irrigation costs

9. Adaptation Strategies

1. Crop diversification
2. Drought-resistant crop varieties
3. Rainwater harvesting
4. Drip irrigation
5. Climate-smart agriculture
6. Improved weather forecasting services

10. Conclusion

Climate change presents a significant challenge to agricultural sustainability in Rajsamand District. Variability in rainfall and increasing temperatures are likely to influence crop productivity, water availability, and rural livelihoods. Effective adaptation strategies, supported by government policies and scientific interventions, are essential for ensuring agricultural resilience and food security.

References

- IPCC. Assessment Reports.
- Food and Agriculture Organization (FAO). Climate Change and Agriculture Reports.
- Government of Rajasthan. Statistical Abstracts.
- India Meteorological Department (IMD). Climate Data Publications.
- Peer-reviewed journal articles related to climate change and agricultural geography.
- Compiled from published Rajsamand climate averages. Values should be verified against IMD records before journal submission.

www.bohalshodhmanjusha.com Bohal Shodh Manjusha ISSN: 2395-7115
Impact Factor: 8.642 June 2026 Page No. : 99-104
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

भारतीय ज्ञान परम्परा में नारी

डॉ. गायत्री देवी
अतिथि प्रवक्ता, राजनीति विज्ञान विभाग
महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय चित्रकूट, सतना (मध्य प्रदेश)

शोध सार-मनुष्य अपने अस्तित्व की शुरुआत से ही जिज्ञासु रहा है। अपनी जिज्ञासाओं से उसने प्रकृति के कई अनसुलझे रहस्यों को उजागर करने का सफल प्रयास किया है। मानव ने जीवन की जटिलताओं में गुम होने के बजाए आत्मिक शांति और ज्ञान प्राप्ति की ओर अग्रसर होता है। वह आत्म ज्ञान प्राप्त हेतु खुद की तलाश और आत्मा और परमात्मा के संबंध को ज्ञात करने की आकांक्षा करता है।
भारतीय चिंतन प्रणाली संस्कृति एवं सभ्यता की आधारशिला है। जैसे नींव के बिना मकान की कल्पना नहीं की जा सकती है, उसी प्रकार उदारता, प्रेम, दया, करुणा, स्नेह, परहित, समाज सेवा जैसे भावों से विहीन मनुष्य का जीवन भी बेकार है। भारतीय ज्ञान परंपरा में विश्व कल्याण की भावना सर्वाधिक मान्य सर्वोच्च है। इसमें कहा गया है कि जब तक मानव आत्म चिन्तन के बिना अपना परिष्कार या निज सुधार नहीं कर सकता है और आत्म परिष्कार रहित वैश्विक कल्याण की कल्पना अधूरी है।
भारतीय ज्ञान परंपरा में नारियों को एक ओर जहां सम्माननीय स्थान दिया गया है वहीं दूसरी ओर उन होने वाले अत्याचार, शोषण और अधिकार हनन की भी विस्तृत चर्चा की गई है। प्राचीन काल में स्त्री स्वतंत्र, शिक्षित तथा सहभागिनी के रूप में चित्रित की गई है। मध्यकालीन नारी पर सती प्रथा और पर्दा जैसी कुप्रथाओं को थोपकर उनके जीवन को नारकीय बनाकर पुरुषाश्रित बना दिया गया। आधुनिक महिलाएं अपने हक़ों से भली-भांति परिचित हैं और पुरुषों से चार कदम आगे बढ़ चुकी हैं। इनका वर्णन भारतीय ज्ञान परंपरा में विशद रूप में किया गया है।
बीज शब्द- भारत, परंपरा, सहनशील, विदुषी, ज्ञान-विज्ञान, चिकित्सा, राजनीति।
प्रस्तावना-भारत में सदैव ज्ञान-विज्ञान और अध्यात्म को महत्त्व दिया गया। जहां एक ओर मंत्रदृष्टा ऋषि-ऋषिकाएं रही हैं वहीं दूसरी ओर अपनी मेधा और ज्ञान से परिपूर्ण महान चिकित्सक भी रहे हैं। यह भूमि साहस, धैर्य एवं शिक्षा की धरा रही है। हिन्दुस्तान मानवीय चेतना के उत्थान की महनीय वसुंधरा है।

भारतीय ग्रंथों में अधिकारों की प्राप्ति से पूर्व कर्त्तव्य निर्वहन की सीख दी जाती है। हमारे यहां जितना महत्त्व मनुष्य को दिया जाता है उतना ही प्रकृति भी मूल्यवान है, ऐसी बात कही गई है। भारतीय ज्ञान परंपरा के प्रथम ग्रंथ ऋग्वेद में प्रकृति उपासना पर बल दिया गया है। प्रकृति भी पुरुष और स्त्री तत्त्व में विभाजित है, दोनों ही एक-दूसरे

के बिना अधूरे हैं। दोनों के मिलन एवं सहयोग से सृजन और विकास होता है। नारी आधी आबादी की प्रतिनिधि है, जिसके बिना नवीन सृजन तथा सौंदर्य की कल्पना भी व्यर्थ है।

भारतीय ज्ञान परंपरा नारियों के त्याग, प्रेम, साहब और ममता से परिपूर्ण है। वेदों की अपाला, घोषा, मुद्रा और मैत्रेयी आदि विदुषियों ने अपने ज्ञान से जनमानस को प्रकाशित किया। उपनिषदादि की नारियों ने ज्ञान गूढ़ रहस्योद्घाटन सफलतापूर्वक कीं। महाकाव्यों की स्त्रियां त्याग, साहस, शौर्य तथा ममता की प्रतिमूर्तियां रही हैं। मध्यकालीन नारियां षड्यंत्र और कुत्सित मानसिकता का शिकार रही हैं जिसके कारण उन्हें नारकीय जीवन की भीषण आग में पल-पल झुलसना पड़ा। आधुनिक भारत के निर्माण में नारी वर्ग का विशेष योगदान रहा है। उन्होंने पुरुष अनुगमन के स्थान पर कंधे से कंधा मिलाकर काम करना आरंभ किया। इसी का सुपरिणाम है कि देश प्रगतिशीलता के पथ पर अग्रसर है।

इस शोध पत्र में भारतीय ज्ञान परंपरा में नारियों की स्थिति तथा उनके महत्त्व का वर्णन किया जा रहा है।

भारतीय ज्ञान परंपरा से तात्पर्य-मनुष्य अपने अस्तित्व से ही जिज्ञासु रहा है अपनी जिज्ञासाओं से उसने प्रकृति के कई अनसुलझे रहस्यों को उजागर करने का सफल प्रयास किया है। मानव ने जीवन की जटिलताओं में गुम होने के बजाए आत्मिक शांति और ज्ञान प्राप्ति की ओर अग्रसर होता है। वह आत्म ज्ञान प्राप्त हेतु खुद की तलाश और आत्मा और परमात्मा के संबंध को ज्ञात करने की आकांक्षा करता है।

भारतीय चिंतन प्रणाली संस्कृति एवं सभ्यता की आधारशिला है। जैसे नींव के बिना मकान की कल्पना नहीं की जा सकती है, उसी प्रकार उदारता, प्रेम, दया, करुणा, स्नेह, परहित, समाज सेवा जैसे भावों से विहीन मनुष्य का जीवन भी बेकार है। भारतीय ज्ञान परंपरा में विश्व कल्याण की भावना सर्वाधिक मान्य सर्वोच्च है। इसमें कहा गया है कि जब तक मानव आत्म चिन्तन के बिना अपना परिष्कार या निज सुधार नहीं कर सकता है और आत्म परिष्कार रहित वैश्विक कल्याण की कल्पना अधूरी है।

भारतीय ज्ञान परंपरा को समझने से पूर्व भारत शब्द के अर्थ को जानना आवश्यक है। "भारत शब्द दो 'भा' और 'रत' शब्दों के योग से भारत बना है। 'भा' का शाब्दिक अर्थ है-प्रकाश तथा 'रत' का शाब्दिक अर्थ संलग्न है अर्थात् जो हमेशा ज्ञान के प्रकाश से आलोकित है वही भारत है। हमारे प्राचीन संस्कार हमें पृथ्वी को माता मानकर उसका पोषण करने के लिए प्रेरित करते हैं।"[1]

भारत केवल जमीन का टुकड़ा मात्र नहीं है अपितु यह लोगों का द्योतक है। यहां प्राप्त सबकुछ भारत ही है। इस संबंध में पंडित जवाहरलाल नेहरू के विचार उल्लेखनीय हैं-

"भारत वह सबकुछ है जिसे उन्होंने (लोगों) समझ रखा है, किंतु वह इससे भी अधिक है। भारत के नदी और पहाड़, जंगल और खेत, जो हमें अन्न देते हैं, ये सभी हमें प्यारे हैं, किंतु अंततः जिनकी गणना है, वे हैं भारत के लोग, उनके और मेरे जैसे लोग जो इस सारे संसार में फैले हुए हैं। भारत माता वास्तव में यही करोड़ों लोग हैं और 'भारत माता की जय !' से तात्पर्य हुआ इन लोगों की जय।"[2]

सदियों से भारत की उर्वरा धरा तप और साधना को विशेष महत्त्व देती रही है। कथन ध्यातव्य है-

"भारतीय संस्कृति मानव जीवन के चरम साध्य को पाने के लिए 'साधन' की अपेक्षा 'साधना' को विशेष वरीयता प्रदान करती है। 'साधना' के अनेक रूप और मार्ग हैं। भारतीय साहित्य में उन सभी का यथावसर सम्यक् आख्यान और अनुशीलन समय-समय पर होता रहा है।"[3]

जैसी लोगों की सोच होती है वैसा ही उस कालखंड का साहित्य निर्मित होता है। जब कोई प्रवृत्ति काल सापेक्ष नहीं होती है उसे ही परंपरा, प्रणाली या शैली कहते हैं। साधारण शब्दों में निरंतरता का नाम परंपरा है। जिसे संरक्षित करके ही मजबूत जीवन या देश की नींव रखी जा सकती है । "भारत की अजस्र ज्ञान-परंपरा की स्रोतस्विनी

विगत हजारों वर्षों से प्रवाहित होती रही है। वैदिक वाङ्गमय, धनुर्वेद, गांधर्ववेद, आयुर्वेद, अर्थर्वेद, छंदशास्त्र, ज्योतिष, संगीतशास्त्र आदि वेदाङ्ग संस्कृत इतिहास-काव्य, पुराणेतिहास साहित्य-धर्मशास्त्र, भारतीय दर्शन, संस्कृत साहित्य आदि भारतीय ज्ञान-परंपरा के वे आधार स्रोत हैं। जिन्होंने न केवल भारत की बहुमुखी ज्ञान-परंपरा की धारा में निरंतर अभिवृद्धि की बल्कि भारत के ज्ञान-विज्ञान का भी परिचय देते रहे। साथ ही भारत की वैभवशाली विरासत एवं समृद्ध संस्कृति को अक्षुण्ण रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी।"[4]

दूसरे शब्दों में भारतीय ज्ञान परंपरा एक गहन और मजबूत परंपरा है जो वेदों, उपनिषदों, महाकाव्यों, शास्त्रों और लोक साहित्य के जरिए से निर्मित होती है। यह परंपरा सिर्फ दार्शनिक और आध्यात्मिक विचारधारा तक सीमित नहीं रही बल्कि समाज को नैतिक, सांस्कृतिक और बौद्धिक रूप से समृद्ध करने में भी मददगार रही है। भारत की ज्ञान परंपरा केवल शिक्षण ही सीमित नहीं रही अपितु शिक्षणेतर कार्य भी इसमें शामिल हैं। इस विषय में खलील के विचार द्रष्टव्य हैं-

"भारतीय ज्ञान परंपरा पारंपरिक शैक्षणिक विषयों से परे है और बहु-विषयक दृष्टिकोण को अपनाती है, जो अध्ययन के विभिन्न क्षेत्रों को एकीकृत करती है। यह शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक क्षेत्रों के बीच परस्पर क्रिया को समझने में मदद करती है. इससे दुनिया की परस्पर जुड़ी समझ बढ़ती है। इसमें दर्शन, आध्यात्मिकता, विज्ञान, गणित, साहित्य, कला और सामाजिक विज्ञान के कई विषय शामिल हैं। मानव अस्तित्व के विभिन्न पहलुओं को एकीकृत करना ज्ञान प्रणाली का लक्ष्य है। यह शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक आयामों के परस्पर संबंध को समझती है, जो जीवन और ब्रह्मांड की व्यापक समझ देते हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा ने समय के साथ बहुत बदलाव और निरंतरता दिखाई है।"[5]

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि भारतीय ज्ञान परंपरा में ज्ञान की संपूर्णता का बोध होता है। जिसमें मानव के सर्वांगीण विकास को शामिल किया जाता है। यह ज्ञान धर्म, जाति और वर्ग सापेक्ष न होकर मानव कल्याण पर आधारित है।

भारतीय ज्ञान परंपरा में नारियां-किसी भी राष्ट्र का उत्थान तभी संभव है जब उसके निवासियों को समान अवसर दिए जाए। उनमें लैंगिक भेदभाव न किया जाए। भारतीय ज्ञान परंपरा में स्त्रियों को पूज्यनीया और सम्माननीया स्वीकार किया गया है। इस विषय में धार्मिक ग्रंथ स्पष्ट कहते हैं-

"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।

यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः ॥"[6]

अर्थात् जहाँ स्त्रियों का पूजन (सत्कार) होता है वहाँ देवता निवास (वास) करते हैं तथा जहाँ नारियों का सत्कार नहीं होता, वहाँ किए गए सभी अच्छे कार्य भी निष्फल हो जाते हैं।

हमारे समाज में स्त्रियों को सदैव से उच्च स्थान प्राप्त रहा है, परंतु जहां से उन्हें अधिकार देने और उनके नियमों के निर्माण की बात की गई वहीं से वैमनस्यता तथा विषमता आरंभ हुई। इस संबंध में सिमोन का विचार द्रष्टव्य है-

"औरतें बिल्कुल भी ग़लत नहीं हैं, जब वे दुनिया में पेश किये गये नियमों को मानने से इनकार करती हैं, खासकर जब से इन्हें पुरुषों ने उन्हें शामिल किये बिना उनके लिए बनाया है। ज़ाहिर तौर पर उनके और हमारे बीच स्वाभाविक रूप से मनमुटाव और साज़िश चलती रहती है।"[7]

भारतीय नारी त्याग की प्रतिमूर्ति रही है। वह पुरुष वर्ग को पराजित करने के स्थान पर अपने को स्थापित करने पर ध्यान केन्द्रित करती है। हिन्दी की महती साहित्यकार महादेवी वर्मा कहती हैं-

" हमें न किसी पर जय चाहिए, न पराजय। न किसी पर प्रभुत्व चाहिए, न किसी पर प्रभुता। केवल अपना वह स्थान, वे सत्व चाहिए जिनका पुरुषों के निकट कोई उपयोग नहीं है, परन्तु जिनके बिना हम समाज का उपयोगी अंग बन नहीं सकेंगी।"[8]

भारतीय स्त्री में अपनी स्वतंत्रता के लिए बेचैनी है। जिसका प्रभाव साहित्य में भी स्पष्ट दिखाई देता है। वे बने बनाए ढर्रे से मुक्ति चाहती है और एक नवीन चिंतन प्रणाली विकसित करती हुई दिखाई देती है। उनका चिंतन लक्ष्य ध्यातव्य है-

"भारतीय नारीवाद भारत की प्रबुद्ध नारियों और विचारकों के चिन्तन की उपज है जिसका प्रमुख ध्येय सामन्ती व्यवस्था द्वारा स्थापित गुलामी से स्त्री को मुक्त करना है।"[9]

ऐतिहासिक दृष्टि से भारतीय ज्ञान परंपरा में स्त्रियों की स्थिति में ह्रास के लक्षण परिलक्षित हुए हैं। वैदिक कालीन नारियों को सार्वजनिक रूप से सहभागिता की खुली छूट थी। उन्हें धार्मिक अनुष्ठानों में भी भागीदारी प्रदान की जाती रही है। इस बारे में विद्वान कहते हैं-

"महिलाएँ अपने पति के साथ सभाओं में भाग लेती थीं और बलि चढ़ाती थीं। हमारे पास पाँच ऐसी महिलाओं के उदाहरण हैं, जो भजन करती थीं, हालाँकि बाद के ग्रंथों में ऐसी बीस महिलाओं का उल्लेख है।"[10]

तत्कालीन ग्रंथों के अवलोकन से स्पष्ट है कि उस समय स्त्रियां बेहतर स्थिति में थीं। उनकी विशिष्ट पहचान के साथ-साथ उनको विशेषाधिकार भी दिए गए थे और बाल विवाह जैसी कुप्रथाएं प्रचलित नहीं हुई थीं। "सम्भवतः ये मातृ-प्रधान समाज का संकेत हैं। ममतेय जैसे कुछ उदाहरण भी हैं, जिनमें पुत्रों का नामकरण माँ के नाम पर किया गया है। ऋग्वेद में भाई की विधवा से विवाह और विधवा-पुनर्विवाह का उल्लेख है। बाल-विवाह के कोई उदाहरण वहाँ नहीं है, ऋग्वेद में विवाह योग्य आयु 16 से 17 बताई गई है।"[11] इस समय अपाला, घोषा, मुद्रा, मैत्रेयी और गार्गी जैसी विदुषियां थीं।

मध्यकालीन भारतीय साहित्य में जिन महिलाओं का विशेष उल्लेख प्राप्त होता है, उनमें राजस्थान की मीराबाई, दक्षिण भारत की आंडाल, कश्मीर की ललद्यद (लल्लेश्वरी) और कर्नाटक की अक्का महादेवी आदि प्रमुख रही हैं। जिन्होंने अपने ज्ञान, तप और भक्ति भावना के माध्यम से अपनी भिन्न पहचान बनाने के साथ-साथ सामाजिक परिवर्तन लाने का भी कार्य कीं। "सती-प्रथा का कुछ लेखकों ने जोर देकर अनुमोदन किया है जबकि दूसरों ने कुछ शर्ते जोड़कर इसकी अनुमति दी है। देश के विभिन्न भागों में इसके प्रचलन का उल्लेख अनेक यात्रियों ने किया है। ढोलों की भारी आवाज के बीच एक स्त्री के अपने पति की चिता पर जल मरने का उल्लेख इब्न-बतूता ने बड़े भयाक्रांत ढंग से किया गया है। उसके कथनानुसार सती होने के लिए सुल्तान से अनुमति लेनी पड़ती थी।"[12]
मध्ययुगीन साहित्य में महिलाओं को पर्दे में रहने की चर्चा प्राप्त होती है। इसका सबसे बड़ा कारण विदेशी आक्रमणकारियों द्वारा नारियों के शारीरिक एवं मानसिक शोषण को बताया गया है। दूसरा कारण विदेशियों के संपर्क में आने को भी कहा गया है।

"इस काल में उच्च वर्गों में स्त्रियों को अलग रखने और उनके बाहरी व्यक्तियों की मौजूदगी में अपने चेहरे ढँकने की प्रथा, अर्थात् पर्दे की प्रथा व्यापक रूप से प्रचलित हुई। उच्चवर्गीय हिंदुओं में स्त्रियों को दूसरों की वासनामय दृष्टि से दूर रखने की प्रथा थी। यह प्रथा प्राचीन ईरान, यूनान आदि में भी प्रचलित थी। इसे अरबों और तुर्कों ने अपनाया और इसे वे अपने साथ लेकर भारत आए। उनके द्वारा इसका प्रचलन किए जाने के कारण यह भारत और विशेषकर उत्तर भारत में व्यापक रूप से प्रचलित हो गई। आक्रमणकारियों द्वारा हिंदू स्त्रियों को बंदी बनाए जाने के डर को पर्दे के प्रचलन का कारण कहा जाता है। हिंसा के युग में यह संभव था कि स्त्रियों को युद्ध में प्राप्त लूट का कीमती माल माना जाए। लेकिन पर्दा-प्रथा के फैलने का शायद सबसे महत्त्वपूर्ण कारण सामाजिक था। यह समाज के उच्चतर

वर्गों की प्रतिष्ठा का प्रतीक बन गया तथा जो लोग प्रतिष्ठित माना जाना चाहते थे, वे इसकी नकल करने का प्रयास करते थे। इसके लिए धार्मिक औचित्य भी ढूँढ़ लिया गया। कारण जो भी हो, पर्दा प्रथा ने स्त्रियों पर प्रतिकूल प्रभाव डाला और पुरुषों पर उन्हें और अधिक आश्रित बना दिया।"[13]

इतनी पाबंदियों तथा कुप्रथाओं के बावजूद महिलाओं को संपत्ति संबंधी अधिकार प्राप्त थे। "संपत्ति के बारे में टीकाकारों ने पति की संपत्ति पर पुत्रहीन विधवा के अधिकार का समर्थन किया है, बशर्ते वह संपत्ति संयुक्त हो, अर्थात् अभी बँटी न हो। विधवा इस संपत्ति की संरक्षिका ही नहीं होती थी, बल्कि उसको बेचने या किसी को दे देने का पूरा अधिकार था।"[14]

आधुनिक भारत में नारियों ने केवल सामाजिक क्षेत्रों में ही नहीं, बल्कि ज्ञान के अत्यंत जटिल अन्य क्षेत्रों जैसे साहित्य, विज्ञान और दर्शन में भी अपनी बुद्धि का अद्भुत प्रदर्शन की हैं।

स्वतंत्रता से पूर्व आधुनिक भारत में शिक्षा की असली ज्योति सावित्रीबाई फुले थीं। उनके द्वारा 1848 में बालिकाओं के लिए प्रथम विद्यालय खोला गया। उनका अवदान भारतीय ज्ञान परम्परा को फिर हरेक वर्ग की स्त्री तक पहुँचाने का आधार बना था।पंडिता रमाबाई ने नारी शिक्षा और सामाजिक सुधार के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया था। उन्होंने यह प्रमाणित किया कि महिला भारतीय ज्ञान और आधुनिक शिक्षा दोनों में समान रूप से प्रवीण है। सरोजिनी नायडू जैसी नेत्री ने यह प्रमाणित किया कि भारतीय नारी राजनैतिक और सामाजिक नवाचार में सदैव अग्रगामी रही है। उन्होंने बताया कि स्वतंत्रता संग्राम में नारी की भूमिका केवल सहायक की नहीं, बल्कि पथ-प्रदर्शक की थी।

यह कहना उचित है कि प्राचीन 'ब्रह्मवादिनी' परंपरा का ही आधुनिक विस्तार आधुनिक नारियों में परिलक्षित होता है। विज्ञान के गूढ़ क्षेत्रों में भी भारतीय महिलाओं का योगदान विश्व स्तर पर प्रशंसनीय रहा है। जानकी अम्माल (वनस्पति विज्ञान) और असीमा चटर्जी (रसायन शास्त्र) ने उस काल में शोध की नींव डाली थी जब नारियों हेतु शिक्षा के अवसर बहुत कम थे। वर्तमान समय में डॉ. सौम्या स्वामीनाथन जैसी महिला वैज्ञानिकों ने चिकित्सा और सार्वजनिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में विश्व स्तर पर नेतृत्व प्रदान कर भारत का नाम उजागर किया है। यह प्रमाणित करता है कि भारतीय नारी का ज्ञान और मेधा वैदिक काल से लेकर आज के ज्ञान-विज्ञान युग तक अक्षुण्ण रही है।

निष्कर्ष –उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि भारतीय ज्ञान परंपरा में स्त्रियों की स्थिति में काल सापेक्ष रही है, लेकिन उत्तरोत्तर कमी आई है। भारतीय साहित्य में नारी के जो रूप प्राप्त होते हैं उनमें पूज्यनीया, वंदनीया और दयनीया के साथ-साथ सहगामिनी और अग्रगामिनी वाला भी है।

संदर्भ-

1. -जैन, महादेव, भारतीय ज्ञान परंपरा व शोध, पीअर रिव्यूड त्रैमासिक पत्रिका, 2(3), 2022.
2. नेहरू, पंडित जवाहरलाल, भारत की खोज, प्रथम संस्करण, सम्यक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2025, पृ.-74.
3. गौड़, डॉ. रामशरण, भारतीय ज्ञान परंपरा, प्रथम संस्करण, अनिल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2025, पृ.-05.
4. वही, पृ.-7.
5. खलील, टी. एस. इंडियन नॉलेज सिस्टम : अर्थशास्त्र बाय कौटिल्य, नोशन प्रेस, चेन्नई, 2023, पृ.-125.
6. मनुस्मृति, 3/56.
7. बोव्आर, सिमोन द, (अनुवाद-मोनिका सिंह) द सेकेंड सेक्स, दूसरा संस्करण, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2026, पृ.-36.
8. वर्मा, महादेवी, श्रृंखला की कड़ियाँ (अपनी बात), तृतीय संस्करण, लोकभारती, कानपुर, 2001, पृ.-13.

9. मालती, डॉ. के. एम., स्त्री विमर्श : भारतीय परिप्रेक्ष्य, (भूमिका से), आवृत्ति -2017, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2017, पृ.- 1.
10. शर्मा, राम शरण, भारत का प्राचीन इतिहास (अनुवादक- देवशंकर नवीन और धर्मराज कुमार), प्रथम संस्करण, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली, 2023, पृ.-108.
11. वही
12. चन्द्र, सतीश, मध्यकालीन भारत : राजनीति, समाज और संस्कृति (हिन्दी अनुवाद- नरेश 'नदीम'), प्रथम संस्करण, ओरियंट ब्लैकस्वॉन प्रकाशन, हैदराबाद, 2019, पृ.-131.
13. वही .
14. वही.

ईमेल-devikomal085@ggmail.com, मो.-9554521270

www.bohalshodhmanjusha.com Bohal Shodh Manjusha ISSN: 2395-7115
Impact Factor: 8.642 June 2026 Page No. : 105-108
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

AI and Public Policy Innovation in Rural India: Opportunities, Accountability and Inclusion

Shraddha Singh Parihar
Research Scholar (Political Science),
Department of Humanities and Social Science
Mahatma Gandhi Chitrakoot Gramodaya Vishwavidyalaya, Chitrakoot , Satna (M.P.)

Abstract
Artificial Intelligence (AI) is emerging as a transformative force in the architecture of public governance in India, particularly in rural regions where developmental deficits have historically constrained inclusive growth. Rural India continues to confront structural challenges in agriculture, healthcare, social protection, local governance, and service delivery. National initiatives such as Digital India, Drone Didi Scheme, and the strategic AI vision advanced by NITI Aayog have repositioned technology as a catalyst for rural transformation. When embedded within Gram Panchayats and Panchayat Bhavans, AI-powered dashboards, predictive analytics, drone-based agricultural systems, and digital monitoring platforms can significantly enhance efficiency, transparency, and accountability in welfare delivery, pension administration, and public distribution systems. The decentralized governance model of Kerala offers valuable insights into how data-driven planning and participatory democracy can complement technological innovation. Furthermore, the development of indigenous AI ecosystems—exemplified by the rural technology initiatives of Sridhar Vembu and Zoho—highlights the importance of technological self-reliance in achieving inclusive development. Integrating AI with the vision of Providing Urban Amenities to Rural Areas (PURA), articulated by A. P. J. Abdul Kalam, offers a holistic framework for sustainable rural modernization. This paper analyses AI-driven public policy innovation in rural India through the interconnected dimensions of opportunity, accountability, and inclusion, arguing that technological progress must remain anchored in democratic values, ethical governance, and local empowerment.

Keywords:
Artificial Intelligence, Rural Governance, Gram Panchayat, Digital India, Drone Didi, NITI Aayog, Accountability, Inclusion, PURA, Indigenous Technology

Introduction:

Artificial Intelligence represents not merely a technological advancement but a paradigm shift in the philosophy and practice of governance. In India, where nearly two-thirds of the population resides in rural areas, the transformation of public policy through AI holds profound implications for inclusive development. Rural India has long faced multidimensional

challenges—agricultural vulnerability, fragmented landholdings, limited healthcare infrastructure, inadequate educational resources, inefficiencies in welfare distribution, and structural poverty. While constitutional decentralization under the 73rd Amendment empowered Gram Panchayats as institutions of local self-government, the effectiveness of grassroots governance has often been constrained by limited administrative capacity, weak monitoring systems, and information asymmetry. AI-driven public policy innovation offers an opportunity to bridge these gaps by enabling predictive, data-driven, and citizen-centric governance.

The foundation for such transformation was laid through Digital India, which expanded broadband connectivity, digital identity systems, e-governance platforms, and Common Service Centres across rural landscapes. This digital infrastructure has created the enabling ecosystem within which AI applications can operate. In Gram Panchayats, AI-powered governance dashboards can consolidate data from welfare schemes such as MGNREGA, housing programs, sanitation initiatives, pension schemes, and nutrition missions. Instead of fragmented paper-based records, Panchayat Bhavans can function as digital command centres where real-time analytics identify implementation delays, budgetary discrepancies, or beneficiary duplication. Such systems enhance administrative efficiency while strengthening transparency before the Gram Sabha, thereby deepening democratic accountability.

One of the most transformative sectors for AI integration is agriculture. The Drone Didi Scheme exemplifies how technological innovation can intersect with women's empowerment and rural productivity. By training women from self-help groups to operate drones for crop spraying, soil assessment, and field surveillance, the initiative introduces precision agriculture into village economies. When combined with AI-based image processing, drone-generated data can detect crop diseases, nutrient deficiencies, and water stress at early stages. Predictive algorithms can recommend optimal sowing times, fertilizer application, and pest control strategies based on localized climatic patterns. This reduces input costs, enhances yield stability, and mitigates climate-related risks. Beyond productivity gains, the scheme fosters entrepreneurship among rural women, embedding technological literacy within community structures.

The concept of "Local to Global" further expands the scope of AI in rural development. Digital marketplaces supported by AI-driven market analytics enable rural artisans, farmers, and micro-entrepreneurs to access national and international markets. By analysing consumer trends, demand cycles, and price fluctuations, AI platforms can guide producers toward competitive positioning. At the Panchayat level, digital procurement and e-commerce facilitation centres can connect local products—handicrafts, agro-processed goods, traditional textiles—to global supply chains. Such integration transforms rural economies from subsistence-oriented systems into dynamic participants in global trade networks.

AI also holds transformative potential in strengthening accountability within welfare administration. Pension schemes, for example, often face challenges such as ghost beneficiaries, delayed payments, and record inconsistencies. AI-based verification systems utilizing biometric authentication, life certificate validation, and anomaly detection can ensure that benefits reach legitimate recipients without leakage. Predictive analytics can flag unusual transaction patterns, enabling prompt administrative intervention. Similarly, in the Public Distribution System (PDS), AI-driven supply chain monitoring, biometric authentication, and inventory analysis can reduce diversion and corruption. If distribution patterns in a particular village deviate from historical norms, automated alerts can prompt audits and corrective measures. Such integration not only curbs malpractice but reinforces citizens' trust in public institutions.

Healthcare and education also benefit from AI-enabled public policy innovation. Telemedicine platforms equipped with AI diagnostic support can assist rural health workers in early disease detection and risk assessment. Predictive health analytics can identify malnutrition hotspots or epidemiological trends, enabling targeted interventions. In education, adaptive learning platforms powered by AI can personalize instruction according to individual student needs, addressing teacher shortages and bridging rural-urban learning gaps. These applications resonate strongly with the developmental vision articulated by A. P. J. Abdul Kalam through PURA—Providing Urban Amenities to Rural Areas. PURA envisioned integrated physical, electronic, knowledge, and economic connectivity in rural clusters. AI serves as a natural extension of this philosophy, deepening electronic and knowledge connectivity while catalysing economic empowerment.

Kerala's decentralized governance model offers valuable lessons in this regard. The state's emphasis on participatory planning, fiscal devolution, and local accountability demonstrates how grassroots democracy can align with technological modernization. Integrating AI tools within such decentralized frameworks enhances evidence-based planning. Local governments equipped with data analytics can prioritize infrastructure projects, monitor welfare outcomes, and evaluate environmental sustainability with greater precision. The synergy between decentralization and AI ensures that technology does not centralize power but strengthens local autonomy.

Equally critical is the development of indigenous technological ecosystems. Dependence on external digital platforms can compromise data sovereignty and contextual relevance. The rural-centric technology initiatives led by Sridhar Vembu and Zoho illustrate how world-class software development can thrive outside metropolitan centres. By establishing offices and training facilities in rural India, Zoho has demonstrated that high-skill employment and innovation need not be urban-exclusive phenomena. Encouraging rural youth to build indigenous AI applications tailored to Panchayat governance, agriculture management, or local entrepreneurship aligns with the broader vision of technological self-reliance. Indigenous app development ensures that linguistic diversity, cultural context, and grassroots realities inform digital solutions.

However, the transformative promise of AI is accompanied by significant ethical and infrastructural challenges. Digital divides persist across regions, gender, and socio-economic groups. Unequal internet access, unreliable electricity, and limited digital literacy can marginalize vulnerable populations from AI-enabled services. Addressing these gaps requires sustained investment in infrastructure, capacity building, and community-based training. Data privacy and algorithmic transparency are equally vital. AI systems must operate within robust regulatory frameworks that safeguard citizens' rights and ensure explainability. Without transparency, algorithmic decision-making risks reinforcing existing social biases or eroding democratic oversight.

Institutional capacity building is therefore indispensable. Panchayat officials must be trained in data interpretation, digital governance, and ethical technology management. Social audits, citizen feedback mechanisms, and independent oversight bodies must complement AI systems to prevent over-centralization of authority. Technology must remain a tool of empowerment rather than surveillance.

Conclusion : Artificial Intelligence has the potential to redefine public policy innovation in rural India across the interlinked dimensions of opportunity, accountability, and inclusion. From drone-enabled agriculture and AI-monitored pension systems to digital Panchayat dashboards and globalized rural markets, technology can enhance efficiency while strengthening democratic transparency. When aligned with the PURA vision of integrated rural development and supported by indigenous technological ecosystems, AI becomes not merely

an instrument of modernization but a pathway toward equitable transformation. Yet, its success ultimately depends on ethical governance, infrastructural equity, and community participation. Anchored in democratic values and guided by social justice, AI-driven public policy innovation can serve as a cornerstone in India's journey toward sustainable and inclusive development by 2047.

Reference

1. Press information bureau government of india(15 February 2026).India AI Governance Guidelines Enabling Safe and Trusted AI Innovation.
2. Dr. Gaurav Solanki (2025).Artificial Intelligence (AI) in the Indian Rural Economy: Uses, Importance, Challenges, and it's Future.
3. Chatterjee S (2020), "AI strategy of India: policy framework, adoption challenges and actions for government". *Transforming Government: People, Process and Policy*, Vol. 14 No. 5 pp. 757–775, doi: https://doi.org/10.1108/TG-05-2019-0031
4. Anil Kumar Chikatimarla , T. Naga Prasada Rao (July 2024). AI IN RURAL DEVELOPMENT: A STUDY ON THE MONITORING AND IMPACT EVALUATION OF AI INITIATIVES
5. Maheswari, S. R. (1995). Rural Development in India : A Public Policy Approach. *Asia-Pacific Journal of Rural Development*, *5*(2), 121-126. https://doi.org/10.1177/1018529119950208
6. Misra, H., Mellouli, S. & Noel, M. Role of AI in supporting government for digital transformation through Rural-LOSI: learning from use cases. *Int J Syst Assur Eng Manag* (2025). https://doi.org/10.1007/s13198-025-03038-2
7. Goel, R., & Rani, S. (2024). AI in rural india: navigating challenges, embracing opportunities. *International Journal of Engineering Science and Humanities*, *14*(Special Issue 1), 195-205.
8. Maggo, J., & Maggo, T. (2025). Disparities in educational opportunities between urban and rural regions across the globe and the potential of AI to bridge the divide. *International Journal of Business Analytics and Intelligence*, *13*(1), 44.

Email: shraddhasingh9630@gmail.com, Contact no. 9630556906

www.bohalshodhmanjusha.com Bohal Shodh Manjusha ISSN: 2395-7115
Impact Factor: 8.642 June 2026 Page No. : 109-112
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

Role of IT in education

Harinder Pal Singh
Research scholer,
Principal Govt senior secondary school Dabwali Rahurian wali
Dr. Sheeshpal Singh
Guide,
Deptt. Of English, Shri Khushal Das University, Pilibanga, Hanumangarh

Introduction:-

Education is very important basic need for the human beings. As **India is the second largest country in population so to provide formal education for all is a big challenge. The answer to this challenge is OER.** Open educational resources are helpful in bridging the gap between the formal, informal and non-formal education. So, we can say that open educational resources promoteinformal learning. **Higher education system in India comprises undergraduate, postgraduate and doctoral programme.** Nowadays ICT has an important role in the present higher education system. **Open educational resources enable the ICT based lifelong learning and opportunities for collaboration between colleges and universities all around the world.** A learner who is able to access the internet can access learning content in the form of pdf, recording video, audio from any university of the world. **Open educational resources can improve educational practices, integration across courses and technical quality**. These resources facilitate accessible, affordable, collaborative learning, flexible and the open sharing of teaching practices. As 'Cape Town Open Education Declaration 'promote open education as "Educators worldwide are developing a vast pool of educational resources on the internet, open and free for all to use. These educators are creating a world where each and every person on earth can access and contribute to the sum of all human knowledge."

Teachers, learners and management and administration members also review and improve their knowledge,except these students before admission in any course can review course material on open educational resources.

Historical development of open educational resources.The term **'learning object'** was coined by Wayne Hodgins in 1994.Role of learning object's in the history of open educational resources is its popularization of the idea that digital materials can be designed and produced in such a manner as to be reused easily in a variety of pedagogical situations. And the term **"open**

content" was used by David Wiley in 1998. In 2001 Larry Lessigand others founded the Creative Commons and released a flexible set of licenses. It's role in the history of open educational resources is the increase in credibility and confidence their legally superior, much easier to use licenses brought to the open content community.

In 2001 MIT **(Massachusetts Institute of Technology)** initiated its Open Course Ware initiative to publish nearly every university course for free access for non-commercial use. And finally, the term "open educational resources" was firstly coined by UNESCO meeting in 2002. According to UNESCO (2002) "Open educational resources are defined as 'technology enabled, open provision of educational resources for consultation, use and adaptation by a community of users for non- commercial purposes'. They are typically made freely available over the internet. Their principal use is by teachers and educational institutions support course development, but they can also be used directly by students**. Open educational resources include learning objects such as lecture material, simulations,demonstrations, references and readings,experiments, as well as syllabi, curricula and teachers' guides. (UNESCO 2002)**

Abstract:-

This paper examines the evolving landscape of Open Educational Resources (OER) within the context of higher education in India, highlighting both the transformative opportunities and the pressing challenges they present.Encompassing undergraduate, postgraduate, and doctoral programs, India's higher education system is undergoing a digital shift—one that aligns with global movements toward open access and inclusive learning.

First introduced at a UNESCO forum in 2002, the concept of OER reflects a broader commitment to democratizing knowledge. These freely accessible, openly licensed materials have the potential to revolutionize distance and digital learning by enhancing the quality of content, reducing educational costs, and expanding access across socio-economic and geographic boundaries. **OER not only support formal education but also foster informal and non-formal learning, empowering self-directed learners to engage with academic content from institutions around the world.**

In India, the integration of OER into higher education offers a pathway to more equitable and flexible learning environments. **It encourages lifelong learning, bridges educational divides, and supports the development of a more informed and participatory society.** However, the journey is not without obstacles. Technical limitations such as inadequate broadband infrastructure, economic constraints, and a lack of digital literacy continue to hinder widespread adoption.Social resistance, limited institutional incentives, and concerns over the credibility and quality of open resources further complicate the landscape. Moreover,restrictive copyright frameworks and the absence of clear national policies pose additional barriers.

By critically analyzing these dynamics,this paper underscores the need for a strategic and inclusive approach to OER implementation—one that not only addresses infrastructural and pedagogical gaps but also nurtures a culture of openness, collaboration, and innovation in Indian higher education.

Status of Open Educational Resources in India

In a developing country like India, the National Knowledge Commission (NKC, 2007) suggested increasing the use of Open Educational Resources (OER) and Open Access (OA) to solve key problems in education. Making high-quality learning materials widely available is important to **improve teaching methods and raise the overall standard of education. The**

University Grants Commission (UGC) and other national bodies are supporting OER to improve both the quality and reach of education.

India began using OER seriously around 2007, with help from the government and some international funding agencies (James & Bossu, 2014). Some major OER platforms in India include the Digital Library of India by IISc Bangalore, the National Digital Library (NDL) by IIT Kharagpur, and the National Knowledge Network (NKN), started in 2010 based on NKC's advice. Other platforms include Shodhganga by INFLIBNET, Vidyanidhi, Shodh Gangotri, and Eprints@IISc, which was India's first open-access digital library, launched in 2001 by the National Centre for Scientific Information (NCSI). Many joint efforts have also been made to support OER, such as NPTEL (by seven IITs),the Consortium for Educational Communication (CEC) by UGC, Project Ekalavya and Project OSCAR by IIT Bombay, and the National Mission on Education through ICT (NMEICT) by the Ministry of Human Resource Development (MHRD).Other platforms include e-Gyankosh, e-PG Pathshala, the National Institute of Open Schooling (NIOS), and SWAYAM. However, OER in India is still developing, and more efforts are needed to make these resources better and more available to the public.

Opportunities in Higher Education

India has 15 open universities—one national and 14 state-level—and around 200 universities that offer both regular and distance learning. As de Hart, Chetty, and Archer (2015) explain, the main goal of distance education is to remove barriers like location, cost, and background, so that more people can access higher education. OER plays a key role in this by offering free learning materials, digital libraries, and good-quality content. **These resources help students by improving the quality of study materials and lowering costs.** This allows more students to join higher education and supports lifelong learning. OER also helps connect formal, informal, and non-formal learning, making it easier for people to learn in different ways. Anyone with internet access can study materials from universities around the world. Teachers,students, and even administrators can use OER to improve their knowledge. Students can also check course content before joining a program.

According to Kanwar, Kodhandaraman, and Umar (2010), OER in developing countries offers many benefits, such as better teacher training, local content creation, teamwork in education, and support for learners who are often left out.

Challenges in Higher Education:-

In a developing country like India, giving everyone equal and good-quality education is a big challenge. Although many open educational projects have started, they still face several problems. These challenges can be grouped into four main types: technical, economic, legal, and social.

Some of the common problems include poor internet access, lack of money to support and maintain these resources, copyright and licensing issues, low public awareness or interest, and a shortage of people with the technical knowledge or skills to use these tools. Many places also lack the proper infrastructure, and sometimes the quality of the content is not up to the mark. Keeping these open resources running in the long term is also a concern.

A study by the OECD (2007) pointed out some key challenges that are also relevant in India:

1) Technical issues – like not having fast or reliable internet.

2) Economic issues – such as not having enough money to buy the needed computers or software.

3)Social issues – many people don't have the skills to use digital tools.

4)Policy issues – many institutions don't have clear rules or support for using open educational resources.
5)Legal issues – it can take time and money to get permission to use certain materials.

Conclusion:-

As discussed, India has started many open educational resource (OER) projects and both national and state universities are offering free digital learning materials. These resources are open to everyone and can help improve education, especially for people from weaker sections of society. OER has created new opportunities in distance learning. However, challenges like lack of money, technology, legal clarity and public awareness still exist. Even with these problems,the growth of OER in India is promising and more efforts are needed to reach the goal of education for all.

References

1. Central Square Foundation. (2013). Open Educational Resources for K-12 Education in India. Read here
2. CIET-NCERT. (2024). Open Educational Resources (OER) and Licenses. Read here
3. OECD. (2007). Giving Knowledge for Free: The Emergence of Open Educational Resources.
4. Balouva, V. K. (2020). Open Educational Resources: Issues and Challenges in India. IJRAR. Read here
5. Mahendraprabu, M. et al. (2022). Exploring the Opportunities and Challenges of Incorporating OER in India. IJEKS. Read here
6. Ganapathi, J. (2018). Open Educational Resources: Challenges and Opportunities in Indian Primary Education. IRRODL.
7. Balouva, V. K. (2020). Open Educational Resources: Issues and Challenges in India. IJRAR. Read PDF
8. Mahendraprabu, M. et al. (2022). Exploring the Opportunities and Challenges of Incorporating OER in India. IJEKS. Read PDF
9. CIET-NCERT. (2024). Open Educational Resources (OER) and Licenses. Visit Site
10. OECD. (2007). Giving Knowledge for Free: The Emergence of Open Educational Resources.
11. Ganapathi, J. (2018). Open Educational Resources: Challenges and Opportunities in Indian Primary Education. IRRODL. Read PDF
12. Central Square Foundation. (2013).Open Educational Resources for K-12 Education in India.

Harindersohal80@gmail.come
Contact number 9417516129

www.bohalshodhmanjusha.com Bohal Shodh Manjusha ISSN: 2395-7115
Impact Factor: 8.642 June 2026 Page No. : 113-115
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

मादक द्रव्य व्यसन की समस्या का आधुनिक सन्दर्भ

डॉ० जय शंकर पाण्डेय
अवधूत भगवान राम पी.जी. कॉलेज, अनपरा, सोनभद्र (उ.प्र.)

जिस प्रकार से पश्चिमी सभ्यता वाले देशों में शराब पीना एक प्रकार से सामाजिक रूप से स्वीकृत व्यवहार का अंग माना जाता है, ठीक उसी प्रकार से भारत में भाँग, गाँजा या चरस का खाना/पीना सामाजिक रूप से स्वीकृत माना जाता रहा है। साधारण जनता भाँग खाने तथा चरस एवं गाँजा पीने को एक समस्या के रूप में नहीं देखती है। इन पदार्थों के सेवन से उत्पन्न मानसिक तथा शारीरिक दुष्परिणामों को उतना गम्भीर एवं क्षतिपूर्ण नहीं माना जाता है, जितना कि शराब के द्वारा उत्पन्न परिणामों को। भाँग के सेवन करने वाले तथा गाँजा एवं चरस के पीने वाले लोग अपने को भगवान "शिव" का उपासक मानकर इन पदार्थों का सेवन करते हैं। भाँग के बारे में अधिकांश ग्रामीण भारतीय यह मानते हैं कि भांग थकान मिटाती है और भूख को बढ़ाती है। गाँजा अथवा चरस साधु–संतों अथवा योगियों का पेय पदार्थ है जो इनके ज्ञान–चक्षुओं को खोलते हैं और आध्यात्मिक चिन्तन एवं मनन की शक्तियों को बढ़ाते हैं। इन दृष्टिगत लाभों के कारण से गाँजा, भाँग तथा चरस का खाना तथा पीना साधारण भारतीय के लिए एक मनबहलाव का साधन है। अधिकांश गरीब भारतीय (जो शराब पर पैसा खर्च करने की स्थिति में नहीं हैं) इन पदार्थों का सेवन अपने नशे की जरूरत को पूरा करने के लिए करता है। इस सामाजिक–आर्थिक सन्दर्भ में गांजा, भाँग तथा चरस का सेवन कभीं भी वास्तविक रूप में निषेध का विषय न तो रहा है और न भविष्य में हो पायेगा।

भारत के अलावा दूसरे देशों में नशे की समस्या आज गम्भीर रूप धारण कर चुकी है। अमेरीका, जर्मनी, स्पेन जैसे विकसित देशों के लिए यह गम्भीर चुनौती बन गयी है। शराब और सिगरेट के साथ ही साथ अब चरस, कोकीन, हेरोइन, ब्राउन सुगर, क्रेक (पापावरीन क्रेक), एल.एस.डी., पैथाडीन आदि का प्रयोग होने लगा है। अकेले जर्मनी में 10 लाख से अधिक लोग आधुनिक मादक द्रव्य–व्यसन के शिकार हैं। अमेरीका में "कोकीन" और "क्रेक" के नशेबाज सबसे ज्यादा हैं। लैटिन अमेरीका "कोकीन" का विश्व में सबसे बड़ा उत्पादक देश है।[1] "क्रेक" का निर्माण "कोकीन" के रासायनिक शुद्धीकरण के द्वारा होता है। क्रेक का इस्तेमाल करने पर 12 सेकेण्ड के अन्दर ही पूरे शरीर में नशा छा जाता है, जबकि हेरोइन का असर 30 से 40 सेकेण्ड में होता है। अमेरीका के युवकों में "क्रेक" बहुत लोकप्रिय हो रहा है। कभीं – कभीं तो इसकी एक खुराक 40 से 50 डालर तक में मिलती है। 15 से 20 वर्ष आयु समूह के बालक "क्रेक" के नशे में काफी लिप्त हैं। आज अमेरीका में स्थिति यह है कि सड़क दुर्घटनाओं में प्रतिदिन उतनी मौत नहीं होती, जितनी कि नशे की बीमारी से मौत होती है। यहाँ 12 लाख से ज्यादा लोग हेरोइन, कोकीन और क्रेक के नशे के गिरफ्त में हैं। अकेले इंग्लैण्ड में प्रति सप्ताह 2000 व्यक्ति आधुनिक नशे के गलत प्रयोग से मरते हैं। सिगरेट की बीमारी से करीब 1900 व्यक्ति मरते हैं। 60 व्यक्ति दवाईयों के गलत प्रयोग एवं 40 मद्यपान की बीमारी से। यह तथ्य सेंट जार्ज

हॉस्पिटल मेडिकल स्कूल के डॉक्टरों ने एक सर्वे में प्रकट किया है।[2] स्पेन का एक युवक एक दिन में 5 से 6 पैकेट सिगरेट पी लेता है, युवा लड़कियों में यह मात्रा और ही ज्यादा है। विकसित राष्ट्रों के अलावा विकासशील देशों में भी यह समस्या बनी है। पाकिस्तान में 6,60,000 से अधिक हेरोइन के नशेबाज हैं। नेपाल में 1,00,000 से ज्यादा ही हेरोइन के नशेड़ियों की संख्या है। वर्मा, थाईलैंड, हांगकांग, लाओस, इजिप्ट, क्यूबा, युगांडा जैसे देशों के लिए यह गंभीर चुनौती बन गया है।

आधुनिक नशे की गिरफ्त में भारतीय युवा काफी हद तक फँस चुका है, 1980 तक भारत में हेरोइन के नशेबाज नहीं थे, ऐसा इंडियन मेडिकल रिसर्च से जुड़े डाक्टरों का कहना है, लेकिन इस दशक के बाद ज्यादातर मरीज हेरोइन, ब्राउन सुगर, स्मैक के ही मिले, 1979–83 तक सबसे ज्यादा नशेबाज भारत में सिगरेट, बीडी, शराब एवं तम्बाकू के ही थे। इसके बाद "एनाल्जेसिक" दवाईयों का नशे के रूप में प्रयोग करने वाले थे।[3] लेकिन 1984 के बाद हेरोइन, स्मैक, ब्राउन सुगर, क्रेक नशे के रूप में काफी लोकप्रिय हुआ। 1980 में भारत में हेरोइन की चोरी के 17 मुकदमें दर्ज किये गए, जिनसे कुल 08 किलो ग्राम हेरोइन पकड़ी गयी, 1988 में हेरोइन के चोरी के 261 मुकदमें दर्ज हुए, जिनसे 1875[4] कि.ग्रा. हेरोइन पकड़ी गयी। 1989 में 2714 कि.ग्रा., 1990 में 2193 कि.ग्रा. एवं 1991 में 622 कि. ग्रा.[5] हेरोइन पकड़ी गयी। इस बात से यह पता चलता है कि भारत में हेरोइन के नशे का प्रयोग कितना होता है। आज स्थिति यह है कि अन्य मादक पदार्थों की तुलना में "हेरोइन" ब्राउन सुगर काफी लोकप्रिय हुआ है। अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में इसकी कीमत काफी ज्यादा होती है। अतः इस व्यवसाय से जुड़े माफिया गिरोह के लोग सारे मानवीय मूल्यों को ताक में रखकर चोरी–छिपे व्यापार कर कमाई कर रहे हैं। आज अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में एक किलो ब्राउन सुगर की कीमत एक करोड़ रुपए से ज्यादा आंकी जाती है। यूनाइटेड स्टेट ऑफ अमेरीका में तो यह तेल व्यापार के बाद सबसे बड़ा मुनाफे वाला व्यवसाय बन गया है। यही कारण है कि आज सबसे ज्यादा आधुनिक मादक द्रव्य व्यसन के नशेबाज वहाँ हैं।

अब प्रश्न यह उठता है कि इस दिशा–विहीन युवा–वर्ग को नशे के मार्ग से कैसे हटाया जाय! भाषण काम नहीं करेंगे, नसीहतें बेकार जायेंगी और पुरानी संस्कृति का माया–जाल उन्हें मनोग्राही नहीं प्रतीत होता। आवश्यकता है, इन दवाओं के बारे में उन्हें शिक्षित करने की। शिक्षा की पद्धति ऐसी होनी चाहिये जिसमे उन्हें विशेषज्ञों के द्वारा बताया जाय कि इन नशीले दवाईयों से होने वाले दुष्परिणाम तथाकथित लाभों से कहीं अधिक दुखदायी हैं। जब युवक स्वयं संतुष्ट हो जायेंगे कि वास्तव में मादक औषधियाँ विनाश का द्वार खोलती हैं, तब वह पढ़े–लिखे व्यक्ति होने के कारण स्वयं ही इन औषधियों को अपने जीवन से हटा देंगे। इस शिक्षात्मक कार्यक्रम चलाने के साथ ही साथ नशीले पदार्थों के विक्रय पर प्रतिबन्ध लगाना होगा और ऐसी व्यवस्था करनी होगी जिसमें बिना डाक्टर के नुस्खे के यह औषधियाँ खरीदी ही न जा सकें। चूँकि यह देखा गया है कि कुछ लालची डाक्टर पैसे लेकर नुस्खा लिख देते हैं, अतः यह सुझाव भी विचारणीय होगा कि हर नगर में कुछ डाक्टरों को ही यह अधिकार प्राप्त हो कि वह इन नशीली दवाईयों के पाने का नुस्खा लिख सकें। चूँकि समस्याओं के मूल स्रोत का रोकना ही समस्या का सबसे अच्छा समाधान है, अतः इस प्रकार की दवाओं के उत्पादन पर प्रतिबन्ध लगाने का प्रश्न भी विचारणीय है।

भारत वर्तमान समय में "ड्रग व्यापार" का सबसे बड़ा केन्द्र बनता जा रहा है। इसका मुख्य कारण इसकी सीमा रेखा से जुड़े देश हैं। हेरोइन के मुख्य उत्पादक देश "गल्फ कन्ट्री" है। ईरान, अफगानिस्तान, पाकिस्तान एवं नाईजीरिया को जोड़ने वाले 12,000 (बारह हजार) वर्ग कि.मी. को गोल्डेन क्रिसेंट के नाम से जाना जाता है। यहीं "हेरोइन" का उत्पादन होता है। इसी तरह थाईलैंड, वर्मा एवं लाओस का भाग "गोल्डेन ट्रेंगल" के नाम से प्रसिद्ध ड्रग उत्पादन क्षेत्र है। 1990 के पहले तक भारत हेरोइन के व्यापर का केन्द्र नहीं था, लेकिन इसके बाद ईरान, अफगानिस्तान, तुर्की, पाकिस्तान के राजनैतिक एवं भौगोलिक परिवर्तनों के कारण यूरोपीय देशों को चोरी–छिपे 'ड्रग' का व्यापर भारत के मार्ग से होने लगा। इसे ही व्यापार का केन्द्रीय बिन्दु बनाया, जिसके कारण यहाँ भी नशेबाजों की संख्या में वृद्धि होती रही। ईरान में धार्मिक सरकार के नेता आयातुल्लाह खुमानी ने पहली बार ड्रग के खिलाफ व्यापक अभियान छेड़ा, उन्होंने विश्व में पहली बार "मृत्युदण्ड" देने की सजा भी ड्रग के व्यापारी को दी। वर्तमान समय में ड्रग व्यापार से जुड़े माफिया गिरोहों का मुख्य केन्द्र दिल्ली और बम्बई है। पकडे गए तस्करों में से अधिकांश ने यह स्वीकार किया है कि ड्रग के व्यापार के बदले सोने की

तस्करी की जाती थी। यह गौरतलब है कि भारत में 1980 से 1991 तक पकडे गए ड्रग तस्करों में 70 प्रतिषत विदेशी तस्कर हैं, जिनमें नाईजीरिया और पाकिस्तान के तस्कर ज्यादा हैं।

इस प्रकार मादक द्रव्य व्यसन के मामले में भारत की स्थिति बहुत चिन्ताजनक हो गयी है। इससे निपटने के लिए केन्द्रीय तथा राज्य सरकारों को मादक द्रव्यों की व्याधि से मुक्ति प्राप्त करने के हेतु उनके इस्तेमाल, उत्पादन, व्यापार, तस्करी और अन्य देशों के लिए लदान आदि सभी मोर्चों पर संकल्प पूर्वक प्रभावशाली कदम उठाने होंगे। अगर समय रहते इस पर व्यापक प्रतिबन्ध, रोकथाम न लगाई गयी तो आने वाली सदी में अस्पतालों के बिस्तरों पर 70 से 80 प्रतिशत मरीज नशे और एड्स के होंगे, बाकी मरीजों की दूसरी बीमारी नजरअंदाज हो जायेगी।

<u>सन्दर्भ सूची</u>

1. सन्डे मेल, कलकत्ताः 01 दिसम्बर, 1991, पृ.—16.
2. सारटोरीअस नार्मन, पुटिंग ए हायर वैल्यू ऑन हेल्थ, वर्ल्ड हेल्थ मैगजीन, जून 1986 पृ.—2
3. एम.जेड. खान, यूथ एंड एंटी सोशल एन्ड एन्टी लीगल विहैवियर विश्व युवक केन्द्र न्यूज लेटर, अक्टूबर—दिसम्बर 1989, पृ.—14—15.
4. महेश शुक्लः एडिक्शन एमंग इंडियन कालेज गोइंग यूथ पृ.— 3—4.
5. सन्डे मेलः वही

मोबाइल:- 9415689907 E-Mail:- dr.js.pandey1967@gmail.com

पता:- 2nd-RN-03, UPRNN कॉलोनी, अनपरा, सोनभद्र, पिन-231225

www.bohalshodhmanjusha.com Bohal Shodh Manjusha ISSN: 2395-7115
Impact Factor: 8.642 June 2026 Page No. : 116-120
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

MAIN SIX FORMS OF POVERITY UNDER DEVELOPED COUNTRY

Dr. Sheeshpal Singh
Assistant Professor (Dept. of English),
Dept. of English, SKD University Hanumangarh (Rajsthan)

This article is one of my favorite ideas in my mind and I have been analyzing the nature of the poor and their way of thinking through this book for many years now. The poor and the rich are not defined based on how much money they have, but on how they think and execute. The idea explores the root causes of poverty and how to deal with it effectively, presenting a range of innovative ideas and solutions through field research and numerous case studies.

This Article can be used to analyze poverty form six perspectives--

1: The Consumption Trap 2: The Health Trap 3: The Thinking Trap
4: The Emotional Trap 5: The Education Trap 6: The Smart Trap

Since we're talking about this topic today, I'm going to explain it to you in detail to provoke your thoughts, and you compare yourself to see if you've fallen into this trap too!

Those of you who have read this article must not be unfamiliar with the story of Parker, and now, let's analyse it through this story. He is a farmer in Indonesia, always hungry and unable to work to earn money, however, when Abhijit comes to Parker's house he finds that he is not poor, Parker's house is full of various items, such as TV sets, DVDs, mobile phones, as well as tea and sugar. Abhijeet was puzzled and asked why do you buy these useless things instead of filling your stomach first? Parker replied: I have to have some fun. In the slums, people like Parker are not rare. Abhijeet saw a lot of thin-faced poor people crowded in the video shop to buy film discs. He says to these people that it is far more important to eat and earn than to consume.

The First Trap- the consumption trap

However, no matter how hard they try to persuade them, the poor still run away to shop when they have little money. They cannot control their desire for enjoyment and lack the stamina for delayed gratification, thus falling into the consumption trap. This terrible consumption trap can

be found everywhere in life. People would rather spend money on a big meal than take an online class to learn a skill. They would rather spend money on a promotion than get a card to go to the gym. We are always busy spending money in credit installment discount business promotions and have long forgotten to increase our earning power when we should spend money the most. While low-level people are driven by money, high-level people see money as a tool, they know where to spend money as well as where to save, and only by spending money in key places can they not be swallowed up by the spending trap.

The second trap - the health trap.

Sociologists have done a survey, when making money and health conflict, what would you choose? The results show that 70 per cent of people choose to make money and give up their health. When they are not sick, they think they are very healthy and can carry through, and when they are sick and hospitalized, they have to take money to see a doctor. This kind of health trap, as long as you fall into it once, there is no possibility of turning back.

The book mentions that when they did research on the poor, they found many strange phenomena. The government distributes medicines, disinfectants and nutritional tablets, and even though they are free, the poor people don't bother to collect them. Poor working people would rather spend money on alcohol than buy a bottle of cheap iron tablets, and no family felt the need to buy a $100 chlorine packet that prevents 32 types of malaria. The poor seem particularly confident, refusing to give a little of their time and money to take care of their bodies.

But the fact is that it is they who are most vulnerable to illness. There is a solid saying that the distance between an ordinary person and a poor person is separated by a serious illness. The greatest folly of man is his indifference to his body and putting his health last. The two authors attribute this health trap to the fact that awareness does, and action is delayed. Therefore, to avoid poverty due to illness, we need to awaken our consciousness and take care of our bodies in our daily lives.

Third, is the thinking trap.

The author Esther had a friend named Yunus who was a successful entrepreneur. Once Yunus went out and saw three women raising sand on the highway. Curious, he asked them about it and learnt that it was a good business with no cost and no profit. The women brought wet sand from the sea and laid it on the highway, letting cars run over it. When the exhaust dries the sand, they collect it and sell it to rich people. Because the sand is fine and clean, it can be used to polish high-quality tableware.

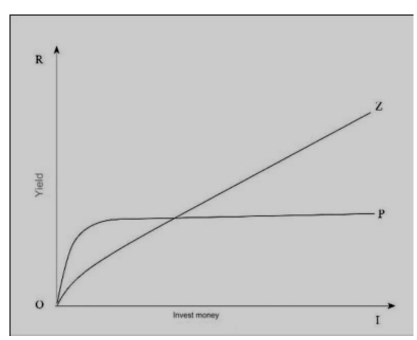

Yunus offered to invest in building a factory for the group and make more money together. But the women refused him, saying: We just want to fill our stomachs.

Yunus helplessly said that poor people cannot get rich, a big reason, for is thinking limitations.

In order to compare the rich and the poor, Esther drew these two curves.

Poor people do business is OP curve, it is easy to start, but to a certain point, it stops, and after that, there is no breakthrough; while the rich do business, is OZ curve, will be in the adjustment and try, continue to make profits, and continue to exceed the original level. The root cause of the difference lies in the mode of thinking. Compared to the rich, the poor cognitive structure, very solidified, cannot be iterative.

Warren Buffett said: ‘In my life, I have never met a rich man who has never lost money, but I have met many poor people who are afraid to do anything and have never lost a dime.’ Being afraid to try, refusing to change, and avoiding challenges may seem safe, but all possibilities are lost.

Where is wealth anyway?

If thinking is a wall, money is on the other side of the wall. Without getting out of the thinking trap, no matter how hard you work, you will not make a lot of money.

Fourth, the Emotional Trap:

In the summer of 2008, the two authors met a poor woman named Tina, who suffered from depression and begged for a living in a dilapidated shack with her disabled mother. She originally ran a garment factory, but because her husband recovered a blank cheque and fell into trouble. That day, when she learnt that her husband had been cheated, she became furious, complaining and cursing, and then she became more and more desperate and simply gave up the business. A few months later, her husband had a serious car accident and asked for a divorce. A series of blows left her devastated and unable to live a good life anymore.

Many people advised her that she could rise again by lifting her spirits. Every time, she said dejectedly, ‘There is no hope, I was born poor. The psychologist Albert has proposed an ABC model. A is the event, B is the emotion triggered by the event, and C is the result triggered by the emotion. Very often, it is not that directly leads to C, but our emotion B that determines the course of events. Like Tina in the story, the misfortune was not simply because of the blank cheque but stemmed from her being too negative. Anyone can have accidents and run into bad things in life. Allowing yourself to lose your temper and get frustrated will only set off a vicious cycle of negativity. It's not something that defines life; it's how we react to it.

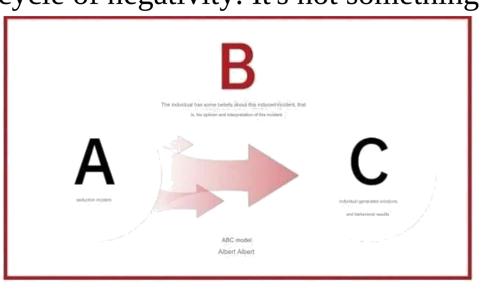

Both authors agree that the poor are more likely to be emotional because they have a hard life, because they can't afford to lose and are afraid of losing. They are caught in many emotional traps from which they cannot extricate themselves. There are many difficulties in life, don't let your emotions be the chasm you can't cross.

Fifth, is the education trap.

There is a saying in the algorithm of life that the poor tend to choose to get what is certain, and they prefer to give up the right of probability. Taking education as an example, the poor can't

wait to gain income through knowledge but will choose to go out and work whenever they have the chance. They are uncertain about whether knowledge can bring gains, but the visible income they get from working part-time can temporarily alleviate their poverty. Yet such a choice comes at a huge opportunity cost. Author Abhijit argued that the poor are poor because they cannot afford to study. However, after coming into contact with a large number of poor people, he realized that this was not the case. In many countries, the poor can attend free public schools, but unfortunately. Most of the poor rush into society at the primary school level.

Abhijeet published a set of statistics that primary education can increase a person's income by 6 per cent, middle school education by 12 percent and high school education by 20 percent. If one goes on to further education, university, graduate school or even a doctorate, the income will rise exponentially. Yet this data is not useful in the slums. Many people have always believed that studying is useless. Utilitarianism and pragmatism have trapped countless families in the education trap. In reality, for the poor with no background and no connections, studying is the only way to change your fate. Give yourself a little time and let knowledge arm your mind in order to break through the barriers of society. Education is a game of small to big, only stick to it, and you can pay the smallest power to get rid of the shackles of poverty.

Sixth, the clever trap.

In India, there was a Mrs. Reddy, the chief executive of a credit company. One day, she met a rag-picker on the road and heard her complaining that it would be nice to have her own trolley. Now, after paying off the car hire every day, she couldn't even afford to buy a pie with the money she made. Upon hearing this, Reddy felt compassion and immediately issued this person a loan at a very low interest rate to help her get her cart. Soon after the kind-hearted Letty promoted this loan and helped tens of thousands of poor people, but unexpectedly, just six months later, Reddy ran into big trouble.

Firstly, some people created scams and refused to repay the loan for various reasons, then some people took the money and disappeared, and there were even rumors that Letty was about to run away because of economic crimes, and her loan could not be repaid. The poor people play clever, everyone can find a reason for not to repay the loan, and finally, the broken-hearted Reddy declares bankruptcy because she could not collect the loan. The poor people take the loan for nothing and seem to have made a bargain, but it turns out that no one really wants to lend to them anymore.

The essence of poverty is in fact, the lack of access to knowledge and cognition, influenced by innate conditions. One day's complacency cannot stop the next day's hunger and cold. A lot of people have been stressing the importance of going out of their comfort zone, and then people living abroad, after paying the monthly salary for rent, utilities and other expenses, still have to maintain the current month's life, and there are even a lot of people who have a mortgage loan and car loan to pay. They simply cannot step out of their comfort zone, not because they dare not, but because they cannot.

Learning to improve one's skills is the easiest way for poor people to escape the constraints of class, and I hope all of you will take it seriously. Broaden your knowledge as much as possible, the wider the scope, the greater the chance of success. The so-called upper circle, when we have a certain achievement in a certain field, naturally also come into contact with, which is why the rich are getting richer and the poor are getting poorer.

Reading this article for the first time triggered a lot of thinking in me, and it provided me with references for every investment plan of our Group. That's why I'm asking you all. Regarding this book, you can read it at your leisure. Reading helps us to be exposed to different ideas and perspectives and broadens our horizons and ways of thinking. Improve your way of thinking and life experience by reading at the least cost. Through reading, we can learn a lot of useful knowledge and skills to improve our cognitive level and problem solving ability. In addition, reading can help us relax, reduce stress and improve our quality of life. Why don't you do it?

Today we have analyzed the causes of poverty in six areas. Everyone must introspect and avoid falling into similar poverty thinking. I want everyone in the society to keep up with my layout of thinking, discard previous habits, and increase their execution and the importance of their ability to improve. It is essential to have the mindset of making money work for you and develop habits after following my long—term trades. This will be a turning point in your life. If you do this in the future, you will appreciate your efforts now. If you can't do this and your investment income doesn't exceed your current job income, please work more and more own your thinking as soon as possible, and allow someone who needs it. Our long—term plan is to get more people involved in our programmes, and change the trap of thinking that has existed since the Poor People's Initiative so that more people can receive an effective education to improve their ability to survive. "**To add bricks and mortar to the social progress of the motherland"**.

Please take the time to carefully review the six forms of poverty highlighted by me. These mindsets can easily trap investors, and understanding them is the first step toward breaking old patterns and building true financial discipline.

The mentor also encourages everyone to stay aligned with our daily trading layouts, let go of outdated habits, and continuously strengthen your execution and decision-making skills.

All the problems relates to the properties of income and expenditures. Few related factors are unknown in this articles next articles will be continued same as. Really its proven that poor is become more poorer and rich is becoming more richer. Now I am taking permission for leave this article amongst you. Thank You.

References-

1. Banerjee, Abhijit V.; Duflo, Esther (26 April 2011). Poor economics: a radical rethinking of the way to fight global poverty (First Ed.). New York: Public Affairs. p. 320. ISBN 978-1-58648-798-0. OCLC 317925786.
2. Robert P. Miles (2004). Warren Buffett Wealth: Principles and Practical Methods Used by the World's Greatest Investor. John Wiley and Sons. ISBN 978-0-471-46511-9.

Mobile no. 8868854524, Email- singhsheeshpal80@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com Bohal Shodh Manjusha ISSN: 2395-7115
Impact Factor: 8.642 June 2026 Page No. : 121-125
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

Feminism: Women's Participation in Social, Political, Spiritual, and Freedom Struggles.

Hemant Kamra
Ph.D Scholar (Deptt. Of English),
Shri Khushal Das University, Hanumangarh, Rajasthan.
Dr. Sheeshpal Singh
Assistant Professor (Deptt. Of English),
SKD University Hanumangarh Raj.

Abstract

This paper explores the dynamic and transformative role of women in India's journey through social reform, political awakening, spiritual discourse and the national freedom struggle viewed through the lens of feminism. Far from being a Western import, Indian feminism has deep indigenous roots, shaped by centuries of resistance to patriarchy and injustice. Women have consistently challenged societal norms, from the Bhakti and Sufi movements, where saints like Meera Bai and Rabia Basri redefined spiritual devotion to 19th-century reformers like Savitribai Phule and Begum Rokeya, who fought for education and gender equality. Politically, women such as Sarojini Naidu, Aruna Asaf Ali, Kamala Devi Chattopadhyay and Usha Mehta played key roles in India's freedom struggle, leading protests, organizing underground movements and inspiring unity across caste and class lines

The feminist spirit also found expression in the formation of early women's organizations like the Women's Indian Association (1917) and the National Council of Women in India (1923), which laid the foundation for women's rights in the country A. Spiritual leaders like Sister Nivedita and Anandamayi Ma challenged male-dominated religious spaces, offering a vision of feminine strength and divine wisdom. These contributions were not only acts of resistance but also of creation of new spaces, new voices and new visions for Indian society. Feminism in India, therefore, is not a singular movement but a layered and evolving journey that continues to shape the nation's conscience. This paper highlights how women's participation across these spheres has been central to India's transformation and how their legacy continues to inspire the ongoing struggle for gender justice and social equity.

Keywords- *Feminism, Freedom Struggle, Opportunities, Political Issues.*

Introduction:-

Feminism in India is not just a modern concept, it is deeply rooted in the country's long history of resistance, reform and resilience. Indian women have played a vital role in shaping the nation's journey, not only by challenging gender inequality but also by actively

participating in social reforms,political movements,spiritual awakening and the freedom struggle. From the early reformers like Savitribai Phule and Begum Rokeya who fought for women's education,to spiritual figures like Sister Nivedita and Anandamayi Ma who redefined the role of women in spiritual life, Indian feminism has always been diverse and dynamic. During the freedom movement, women like Sarojini Naidu, Aruna Asaf Ali, Kamala Devi Chattopadhyay and countless unnamed village women led protests, organized underground activities and inspired unity across caste and class lines.

Women's groups like the Women's Indian Association (1917) and the National Council of Women in India (1923) showed the feminist spirit and helped start the fight for women's rights in the country A. These movements were not only about political freedom but also about social justice, equal rights and spiritual dignity. Feminism in India,therefore, is a multi-layered journey…one that continues to evolve as women assert their voices in every sphere of life, from the household to the parliament, from temples to protest grounds. This paper explores how Indian women have contributed to shaping society through their active roles in social reform, political activism, spiritual leadership and the national freedom struggle.

Feminism in India is not a borrowed ideology but it is a lived experience shaped by centuries of resistance, reform and resilience.Indian women have long been active participants in shaping the nation's destiny,not only by challenging gender-based discrimination but also by contributing meaningfully to social reform,political activism, spiritual discourse and the national freedom struggle. From the Bhakti and Sufi movements, where women saints like Meera Bai and Rabia Basri voiced spiritual equality, to the 19th-century reformers like Savitribai Phule and Begum Rokeya who fought for women's education, the seeds of Indian feminism were sown early and deeply.

During the freedom struggle, women emerged as powerful agents of change. Leaders like Sarojini Naidu, Aruna Asaf Ali, Kamala Devi Chattopadhyay and Usha Mehta mobilized masses, led protests and even operated underground resistance networks. Women from Bengal, Punjab, Maharashtra and Andhra Pradesh took part in both non-violent and revolutionary movements, inspired by leaders like Mahatama Gandhi, Subhas Chandra Bose and Bhagat Singh. The formation of organizations such as the Women's Indian Association (1917) by Annie Besant and the National Council of Women in India (1923) marked the beginning of organized feminist activism in the country.

Spiritually, women like Sister Nivedita, Anandamayi Ma and Mata Amritanandamayi challenged patriarchal norms by occupying spaces traditionally reserved for men, offering a vision of feminine divinity and leadership. Their contributions helped redefine the role of women in religious and philosophical thought.The feminist spirit in India has always been intersectional bridging caste, class, religion, and region while seeking justice, dignity, and equality.

Today, the legacy of these women continues to inspire new generations. Feminism in India is not just about rights. It is about reclaiming space, voice and identity in every sphere of life. This paper explores the rich and layered history of women's participation in India's social, political,spiritual and national movements, highlighting how their courage and vision have shaped the nation's soul.

Status

Feminism in India has evolved as a powerful force rooted in centuries of resistance to patriarchy, inequality and injustice. Indian women have played a vital role in shaping the nation's social,political, spiritual, and national identity. Historically, their contributions have been both visible and invisible ranging from leading reform movements to silently sustaining families and communities during times of upheaval.

In the freedom struggle, women like Sarojini Naidu, Aruna Asaf Ali, Kamala Devi Chattopadhyay and Usha Mehta emerged as national icons,while countless unnamed women participated in protests,underground movements, and civil disobedience campaigns.

Women's involvement not only strengthened the independence movement but also challenged traditional gender roles, paving the way for future generations.

In the social sphere, great reformers like Savitribai Phule, Pandita Ramabai and Begum Rokeya fought for women's education, widow remarriage and the abolition of oppressive customs. These early feminists laid the foundation for a more inclusive and just society. Post-independence, women's movements in the 1970s and 1980s addressed issues like dowry, domestic violence and workplace discrimination, leading to important legal reforms.

Politically,although women gained the right to vote and contest elections after independence,their representation in legislatures remains limited. However, the 73rd & 74th Constitutional Amendments,which introduced reservations for women in local governance, have significantly increased their participation at the grassroots level. Leaders like Indira Gandhi, Jaya Lalithaa, Mayawati, and Mamata Banerjee have shown that women can rise to the highest political offices, though challenges like gender bias and underrepresentation persist.

In the spiritual realm, women like Meera Bai, Rabia Basri, Anandamayi Ma and Mata Amritananda mayi have redefined devotion and spiritual leadership. They challenged male dominated religious traditions and offered a vision of feminine,power, strength,compassion and divine wisdom.Their teachings continue to inspire millions across the world.

Despite these achievements, Indian feminism still faces challenges.Patriarchal norms, gender-based violence, unequal access to education and healthcare and underrepresentation in leadership roles continue to hinder progress. However, the growing awareness,digital activism and intersectional approach of today's feminist movements are helping to reshape the narrative.

Feminism in India is not a single movement but a tapestry of voices rural and urban, secular and spiritual, radical and reformist. It is a journey of reclaiming space, dignity, and equality across all spheres of life.

Opportunities

Feminism in India has opened up a wide range of opportunities for women to participate actively in shaping society across multiple domains. Historically, the feminist movement has not only challenged patriarchal norms but also created new spaces for women to lead, express and transform. In the freedom struggle, women's involvement brought them into the public sphere in unprecedented ways. Their participation in movements like Swadeshi, Non-Cooperation, Civil Disobedience and Quit India helped them gain political awareness and leadership experience, which later translated into demands for equal rights and representation in independent India.

In the social sphere, feminism has empowered women to fight against oppressive practices such as child marriage, dowry, and caste-based discrimination. Reformers like Savitribai Phule and Pandita Ramabai laid the foundation for women's education and social upliftment. Today, feminist movements continue to push for gender-sensitive policies, equal pay and access to education and healthcare, especially for marginalized communities.

Politically,feminism has led to increased representation of women in governance. The 73rd and 74th Constitutional Amendments,which reserved one-third (1/3) of seats in local bodies for women,have enabled thousands of women to enter politics at the grassroots level. Feminist advocacy has also influenced national debates on laws related to domestic violence, sexual harassment and reproductive rights.

In the spiritual realm, feminism has helped reclaim the sacred feminine. Women saints and spiritual leaders like Meera Bai, RabiaBasri, Anandamayi Ma and Mata Amritanandamayi have challenged male dominated religious traditions and offered inclusive spiritual visions. Modern feminist interpretations of ancient texts have also revived interest in goddesses and feminine symbols of power,emphasizing balance,compassion and inner strength.

Feminism has also created opportunities for intersectional dialogue, where issues of caste, class,religion and region are addressed together. It has encouraged the rise of women led organizations, digital activism and community based movements that amplify the voices of the unheard. From village panchayats to global forums, Indian women are now claiming their space, not just as participants but as change makers.

Challenges

While feminism in India has opened many doors for women across social, political, spiritual and national spheres, it continues to face deep-rooted challenges that hinder its full potential. Historically, even though women actively participated in the freedom struggle leading protests, organizing underground movements, and contributing to nationalist causes their rights and voices were often sidelined in favour of broader political goals. As noted by scholars, women’s contributions were frequently viewed as supportive rather than central, and their demands for equality were postponed until after independence.

In the social sphere, patriarchal norms,caste hierarchies and religious conservatism continue to limit women’s mobility, education, and autonomy. Feminist movements often struggle to address the intersectional realities of rural women, Dalit women, and those from minority communities, whose experiences differ vastly from urban, upper-caste narratives.

Politically, despite constitutional guarantees and reservation policies, women remain underrepresented in legislative bodies. Gender stereotypes, lack of party support and political violence discourage many women from entering or sustaining a career in politics. Even when elected,women often face tokenism and are not given meaningful roles in decision making processes.

In the spiritual domain, although India has a rich tradition of female saints and spiritual leaders, institutionalized religion often restricts women’s roles to passive devotion rather than active leadership.Women who challenge these norms-like those advocating for entry into temples or priesthood face social backlash and legal hurdles.

Feminism in India also faces ideological challenges. It is often misunderstood as anti-tradition or anti-family, leading to resistance from conservative sections of society. Moreover, the movement is sometimes fragmented divided by class.

Conclusion

The journey of feminism in India is a testament to the courage, resilience and vision of countless women who have shaped the nation’s destiny across centuries. From the spiritual devotion of Meera Bai and the reformist zeal of Savitribai Phule to the political leadership of Sarojini Naidu and the revolutionary spirit of Aruna Asaf Ali, Indian women have consistently challenged societal boundaries and redefined their roles in public life. The participation of women in the freedom struggle was not only a fight against colonial rule but also a bold assertion of gender equality and national identity.

In the social sphere, women have led movements for education, justice and dignity,often in the face of deep-rooted patriarchy and caste hierarchies.Politically, while representation remains a challenge, the presence of women in grassroots governance and national leadership reflects the growing impact of feminist advocacy. Spiritually, women have reclaimed sacred spaces and offered inclusive visions of divinity, challenging centuries of male-dominated religious traditions.

Yet, the path of feminism in India is far from complete. Structural inequalities, cultural resistance and fragmented movements continue to pose challenges.Feminism must remain inclusive, intersectional and rooted in the lived experiences of women across caste,class, region and religion. It must also embrace both tradition and transformation honouring the past while forging new paths for the future.

In essence,feminism in India is not just a movement, it is a mosaic of voices,struggles and triumphs. It is a call to remember, to resist and to reimagine a society where every woman can live with freedom, dignity and purpose.

References:-

1. Basu, Aparna. (1995). Role of Women in the Freedom Movement. Social Scientist, 23(9/11), 37–47.
2. Dutta, Subhamay (2022) An Introductory Study of the Women's Participation in India's Freedom Struggle, with Special Reference to Bengal. International Journal of History. 4(1), 27–29.
3. Sarkar,Tanika. (2001). Hindu Wife,Hindu Nation: Community, Religion, and Cultural Nationalism. Permanent Black. Analyzes how gender and nationalism intersect in Indian political thought.
4. Kishwar, Madhu. (1990). Women's Rights and the Indian Constitution: A Feminist Review. Manushi, Issue 61.
5. Narayan, Uma. (1997). Dislocating Cultures: Identities, Traditions, and Third World Feminism. Routledge.

www.bohalshodhmanjusha.com Bohal Shodh Manjusha ISSN: 2395-7115
Impact Factor: 8.642 June 2026 Page No. : 126-133
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

उदय प्रकाश की काव्य–संवेदना में सामाजिक चेतना

अलिका कुमारी
शोधार्थी
विश्व विद्यालय हिन्दी विभागराँची विश्वविद्यालय, राँची
सम्प्रति – सहायकशिक्षिका (हिन्दी)
राजकीय कन्या उत्क्रमित उच्च विद्यालय सरायकेला

उदय प्रकाश समकालीन हिन्दी कविता के ऐसे रचनाकार हैं जिनकी काव्य–संवेदना गहरे सामाजिक सरोकारों से जुड़ी हुई है। उनकी कविता समाज की वास्तविक स्थितियों को बिना सजावट के प्रस्तुत करती है। वे कविता को केवल सौंदर्य या भावुकता तक सीमित नहीं रखते, बल्कि उसे सामाजिक अन्याय, शोषण और असामनता के विरूद्ध संघर्ष का माध्यम बनाते हैं।

उदय प्रकाश हिन्दी के उन कवियों में से हैं जिनके यहाँ यथार्थ एहसासभर नहीं है। उनकी कविताओं में यथार्थ अपने तीखेपन के साथ उपस्थित होकर हमारे समय और समाज की पड़ताल करता है। यह समाज बड़ा जटिल है और समय क्योंकि वर्त्तमान हैं, इसलिए बड़ा कठिन है। जबकि अनेक वरिष्ठ और कई नवजात रचनाकार इन्हें अखबारी सनसनी बनाकर शब्दों को जाया कर रहे हैं। इस मायने में उदय प्रकाश की कविताएँ इस लिहाज से उनके समकालीनों से अलग है कि उनमें अपने वक्त की सच्चाइयों का किताबी वर्णन नहीं है। उदय प्रकाश की कविताओं में यह सच्चाइयाँ कभी विचार बनकर उभरती हैं और कभी बिम्बों के माध्यम से उजागर होती हैं।

उदय प्रकाश की काव्य–संवेदना में सामाजिक चेतना अत्यंत सशक्त, जीवंत और यथार्थपरक रूप में दिखाई देती है। वे केवल भावुक कवि नहीं हैं, बल्कि समाज के भीतर मौजूद विसंगतियों, शोषण और अन्याय के प्रति सजग रचनाकार हैं। उनकी कविता आम आदमी के जीवन–संघर्ष से गहराई से जुड़ी हुई है।

उदय प्रकाशजी के कविता–संग्रह 'सुनो कारीगर से कवि–जीवन का आरंभ दृष्टिगत हुआ था। संवेदना में सीझी हुई वैचारिकता ने उनके कवि को अलग पहचान दी थी। लेकिन कथा–क्षेत्र में सिद्धि–प्रसिद्धि अर्जित करते हुए उनके लेखन का कवि–रूप गौण–सा होता गया, जबकि यह उनकी कवि–दृष्टि ही थी, जो हिन्दी कथा में उनके द्वारा संभव नवोन्मेष के मूल में थी। यह कवि दृष्टि सामाजिक तलहट में जीने वाले जन तक पहुँचकर उसे आँकती थी। यह लोक–संवेदना से पूरित और करूणा से संचालित सर्जक चित्त को देखती हुई आँख थी। विश्व–साहित्य के अवगाहन ने जिसके दृष्टि पारस को विस्तार दिया।

उदय प्रकाश जी की कविताओं में आम आदमी, मजदूर, किसान, बेरोजगार, हाशिए पर खड़े लोग प्रमुख रूप से दिखाई देते हैं। वे समाज में व्याप्त अमानवीयता, गरीबी और सत्ता के दमन को बेबाकी से उजागर करते हैं।

उदय प्रकाश की काव्य–संवेदना में सामाजिक चेतना के प्रमुख आयाम –

(क) आम जन जीवन का यथार्थ चित्रण
(ख) व्यवस्था के प्रति तीखा विरोध
(ग) मानवीय संवेदना और करूणा
(घ) भाषा और शिल्प में समाजिकता
(ड.) परिवर्तन की आकांक्षा
(क) आम जन जीवन का यथार्थ चित्रण –

उदय प्रकाश की कविताओं में किसान, मजदूर, निम्न–मध्यवर्ग, बेरोजगार युवक, हाशिए पर खड़ा व्यक्ति को प्रमुख रूप से दिखाया गया है। उदय प्रकाश जी ने इन पात्रों को दया के नहीं, बल्कि संघर्षशील व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत किये हैं। उनकी सामाजिक चेतना आम आदमी के रोज दिन के दुःख, असुरक्षा और सपनों से जुडी हुई होती है। उनकी कविता का मूल सरोकार आम आदमी का जीवन है। वे जीवन को किसी आदर्श रूप में नहीं, बल्कि जैसा वह वास्तव में है, उसी रूप में दिखाते हैं।

उदय प्रकाश जी ने 'इमारत' कविता में इमारत और उस पर काम करने वाले कारीगर के बीच के संबंध को बहुत ही प्रतीकात्मक ढ़ंग से दिखाया है। यहाँ इमारत को एक ऐसी जिन्दा चीज के रूप में दिखाया है जो कारीगर की मेहनत और उम्र का असर अपने अंदर समेटती जाती है। कवि ने 'इमारत' कविता में कारीगर की दयनीय दशा का चित्रण करते हुए लिखते हैं –

''कारीगर नहीं है
लेकिन इमारत में
कारीगर का चेहरा पसीने में
लथपथ है
कारीगर का चेहरा पसीने में
लथपथ है इसलिए
इमारत की दीवालें सीलन से
भर गई हैं''[1]

'इमारत' कविता में कवि यह भी बताना चाहते हैं कि कारीगर की मेहनत और उसकी उम्र इमारत की मजबूती और उसकी स्थिति झलकती है। जैसे–जैसे कारीगर बूढ़ा होता जाता है, इमारत भी उसकी हालत को दर्शाती है। कवि ने गारीगर और इमारत के बीच के संबंध को इन पंक्तियों के माध्यम से उजागर किए हैं–

''कारीगर बूढ़ा हो गया है
उसके बाल झड़ रहे हैं
इसलिए इमारत के प्लास्टर
उखड़ रहे हैं''[2]

उदय प्रकाश की कविता 'डाकिया'' कविता बहुत ही छोटी है, किन्तु इस कविता का अर्थ गहरा और सामाजिक है। कवि बताते हैं कि डाकिया का काम शारीरिक रूप से बहुत थकाने वाला होता है। कवि उसकी मेहनतकश जीवन और सड़क–गलियों की धूल भरी वास्तविकता को दर्शाते हैं। वह चाय के लिए मना करता है, क्योंकि उसके पास रूकने का समय नहीं रहता है और काम का दबाव ज्यादा होता है।

कवि बताते हैं कि डाकिया अपनी चप्पल को अँगूठे में फँसाकर चलता है। यह उसकी गरीबी और अभाव को दिखाता है। इस कविता में कवि ने एक साधारण डाकिया के रोजमर्रा के जीवन को इन पंक्तियों के माध्यम से प्रकट किया है –

''डाकिया
हाँफता है
धूल झाड़ता है
चाय के लिए मना करता है
डाकिया
अपनी चप्पल
फिर अँगूठे में सँभालकर

फँसाता है
और, मनीआर्डर के रूपये
गिनता है।''[3]

'सुनो कारीगर' कविता में कवि ने शिल्पी के माध्यम से अत्यंत सहज ढ़ंग से समय की जटिलता, मध्यवर्गीय व्यक्ति के संघर्ष, व्यवस्थागत अन्तर्विरोध और निराशा को व्यक्त किया है। रोज–रोज की दारूण विपत्तियाँ इंसान के जीवन संघर्ष को तोड़ देता है। पूँजीवादी वयवस्था, भ्रष्ट प्रशासन और मँहगाई आम आदमी को निराश, हताश और क्षुब्ध कर देता है। कवि शिल्पी से इन विपदाओं के खिलाफ सामूहिक विरोध का आह्वान करते हुए व्यवस्था परिवर्त्तन में अपनी भागीदारी के लिए प्रेरित करते हैं–

''यह कच्ची
कमजोर सूत–सी नींद नहीं
जो अपने आप टूटती है
रोज–रोज की दारूण विपत्तियाँ हैं
जो आँखें खोल देती हैं अचानक।''[4]

समकालीन समाज में स्त्रियों पर किए जा रहे अन्याय को उदय प्रकाश जी ने 'पंचनामें में जो दर्ज नहीं है' कविता में स्त्री की दारूण पीड़ा को उजागर किए हैं–

''वे बिस्तर की तरह ठण्डी
और किसी लावारिस लाश की तरह बेबस थीं
जब सारी खिड़कियाँ–दरवाजें बंद कर
बाजे–गाजे के साथ उनकी जँघाएँ खोली गयीं
वे जायकेदार व्यंजनों की तरह मसालों की
खुशबूओं में
महकती थी''[5]

उदय प्रकाश की कविताओं में आमजन के जीवन का यथार्थ अत्यंत सजीव और मार्मिक रूप में चित्रित हुआ है। उनकी कविताओं में गरीब और वंचित वर्ग की दयनीय दशा तथा प्रशासनिक अन्याय का चित्रण दिखाई पड़ती है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि उनकी कविताएँ आम आदमी के जीवन की सच्चाइयों को बिना किसी आडंबर के प्रस्तुत करती हैं। वे यथार्थ को करूणा, व्यंग्य और प्रतीकात्मकता के माध्यम से उभारते हैं इस प्रकार उनकी कविता आमजन जीवन का सजीव दस्तावेज बन जाती है।

(ख) व्यवस्था के प्रति तीखा विरोध–

उदय प्रकाश की कविता सत्ता, पूँजीवाद, उपभोक्तावाद और राजनीतिक पाखंड पर सीधा प्रहार करती है। वे बताते हैं कि कैसे व्यवस्था आम आदमी को कुचलती है ओर उसे हाशिए पर धकेल देती है। उदय प्रकाश की कविताओं में व्यवस्था के प्रति तीखा विरोध बहुत स्पष्ट और मुखर रूप में मिलता है। वे सत्ता, पूँजी, नौकरशाही और शोषणकारी संरचनाओं पर सीधा प्रहार करते हैं।

वर्त्तमान समाज की राजनीतिक व्यवस्था भ्रष्ट हो गई है, पंचायत से लेकर केन्द्र तक की राजनीतिक व्यवस्था एक सी है। राजनेता पूरी तरह अर्थ और स्वार्थ की चपेट में लिप्त है। आधुनिकीकरण के कारण राजनीति से धर्म, सेवा और आदर्श जैसे मूल्य नष्ट हो चुके हैं। अधिकतर राजनेता व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए करोड़ों रूपये का गबन, भ्रष्टाचार व हत्या जैसी बुराईयों की सीमा को भी लांग जाते हैं। समकालीन समाज में अर्थ प्राप्ति और व्यक्तिगत स्वार्थ मुख्य हो गया है। उदय जी की खुफियाँ आँखें 'राज्यसत्ता' कविता में ये सब दिखाई देती हैं–

''राज्यसत्ता
तिहाड़ की दीवाल है
भागलपुर की तेज़ाब है
अन्तुले की नैतिकता और
जगन भाई का लोकतंत्र है।
राज्यसत्ता
अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का

कानून है
और जो इस कानून की जद में है
उसे बोलने नहीं देती राज्यसत्ता।[6]

'मालिक, आप नाटक नाराज हैं' कविता में कवि प्रतिरोध को व्यक्त करने के लिए प्रकृति को आधार बनाया है। यह इसलिए भी संभव हो सकता है कि कविता का नायक भले ही पढ़ा–लिखा मध्यवर्गीय मनुष्य है, मगर उसकी नगर सामंती संरचना वाले ग्रामीण समाज में मालिकों द्वारा मजदूरों और निम्न वर्ग पर किये जाने वाले अत्याचारों को उद्घाटित करते हैं। उदय प्रकाश की विशेषता है कि वे मध्यवर्ग की जमीन पर खड़े होकर अपनी संवेदना के भीतर, व्यापक समाज के दुःख–दर्द को समेट लेते हैं।

उदय प्रकाश की कविता 'पैसा' में आर्थिक विषमता को दिखाया गया है। इस कविता में मँहगाई आम आदमी को निराश, हताश और क्षुब्ध कर देता है। इस कविता में मध्यम वर्ग के लोगों की स्थिति को उजागर किया गया है–

''मेरे कमरे में
भुनते हुए आटे की भाप थी
जीरे और प्याज की गंध में
शंख की तरह बजता वह था।''[7]

उदय प्रकाश की 'सुअर' कविता में समकालीन सत्ता व्यवस्था पर प्रहार किया है। 'सुअर' सरकार (नेता) का प्रतीक है। सरकार उत्पादन बढ़ाने का लक्ष्य जनता के सामने रखती है किन्तु उसका पूरा–पूरा लाभ नेताओं और तंत्र के माध्यम से उद्योगपतियों व पूँजीपतियों को मिलता है। सरकार सुविधा के नाम पर जनता पर ही शोषण करती है। नेता एक ओर जन मूल्यों और आदर्शों की बातें करते हैं, वहीं दूसरी ओर स्वयं अपने कर्त्तव्य से विमुख हो जाते हैं।

गालिब का शेर है– ''मैं हूँ वो सब्जा कि जेहराब उगता है मुझे!''[8] (मैं ऐसा पौधा हूँ, जो विष–जल सींचने से उगता और बढ़ता है।)

बर्तोल्त ब्रेख्त के जीवन पर काफी कुछ यह शेर लागू होता है। नाजीवादी और पूँजीवादी दमन के सामने निरंतर अपराजेय रहने वाला, जीवन भर खानाबदोश की तरह एक देश से दूसरे देश अपने बसने का ठौर–ठिकाना खोजता हुआ यह दरबदर घुमक्कड़ रंगकर्मी और कवि, हरबार अपनी जड़ों पर डाले गए 'विषजल' के बाद, नई–नई रचनाओं के साथ वापस लौटता रहा, और जब अंत में, जीवन भर की भटकन के बाद, दूसरे विश्वयुद्ध की समाप्ति तथा हिटलर तथा नाजियों के पराभव के बाद उसे स्थायी रूप से बसने और चैन की साँस लेने लायक ठिकाना मिला, तो वह नहीं जी सका। वर्षा की शीतल बूँदों ने संभवतः उसे वह विश्रांति दी कि वह मर गया।

''तितली' कविता में समकालीन समाज की सामाजिक, सत्ता व्यवस्था की छिद्रों, कमजोरियों एवं सार्वजनक भ्रष्टाचार को उजागर किया गया है। इस संदर्भ में 'तितली' कविता की कुछ पंक्तियाँ उद्धृत है–

''सरकार एक तितली पकड़ना
चाहती है, उसे चाहिए
एक फूल बैजयन्ती का।''[9]

उदय प्रकाश की एक अन्य 'सुअर' (तीन) नामक कविता में सुअर राजनेता और मेमना प्रजा का प्रतीक है। इस कविता में कवि दिखाना चाहते हैं कि आज के राजनेता किस प्रकार प्रजा पर अपना भरपूर शोषण करते हैं प्रजा के ही खून–पसीने से पोषित नेता अपनी समृद्धि, भोग विलास के साधन को पूरा करते हैं। राजनेता अपनी क्रूरता, अमानवीयता, निष्ठुरता, निर्ममता व संवेदनहीनता से प्रजा को चूस डालती है। जैसे–

''एक दिन सुअर को
खूब जोरों का जुकाम हुआ
नाक बहने लगी
गले में घर्राहट

और खाँसी के झटके
नाक जब ज्यादा बहे
तो उसे पोंछना तो जरूरी है।''[10]

उदय प्रकाश की कविताओं में व्यवस्था–विरोध केवल नारों तक सीमित नहीं है, बल्कि वह मानवीय संवेदना, व्यंग्य और प्रतीकों के माध्यम से गहराई से व्यक्त हुआ है। वे शोषित और उपेक्षित वर्ग की आवाज बनकर सत्ता के अन्याय के खिलाफ खड़े होते हैं।

(ग) मानवीय संवेदना और करूणा –

उदय प्रकाश की कविता का सबसे सशक्त पक्ष उनकी मानवीय संवेदना और करूणा है। वे समाज के उपेक्षित, पीड़ित और संघर्षरत मनुष्य के दुःख को गहराई से महसूस करते है। और उसे अत्यंत आत्मीयता के साथ अभिव्यक्ति करते हैं। उनकी करूणा दया नहीं, बल्कि मानव–गरिमा की रक्षा की चेतना है।

उदय प्रकाश जी की कई कविताएँ गरीब, मजदूर, बेरोजगार, बूढ़े, स्त्रियाँ और बच्चे जैसे कमजोर वर्गों के जीवन–दर्द को सामने लाती हैं। इनमें उनकी पीड़ा के प्रति गहरी सहानुभूति दिखाई देती है।

उदय प्रकाश आधुनिक समाज में रिश्तों के बिखराव, संवेदनहीनता और स्वार्थ को दिखाते हुए करूणा जगाते हैं। उनकी कविता मनुष्य को मनुष्य बने रहने देने की याद दिलाती है। उनकी कविताओं में वह मनुष्य बार–बार आता है जो व्यवस्था द्वारा अपमानित है, अकेला है और जिसे सुनने वाला कोई नहीं। कवि उसकी चुप पीड़ा को शब्द देता है। कवि ने 'सुनो कारीगर' कविता में इसका चित्रण किया है–

''मैं एक अकेला
थका–हारा कवि
कुछ भी नहीं हूँ अकेला
मेरी छोड़ी गयीं अधूरी लड़ाइयाँ
मुझे और थका देंगी
सुनो, यहीं था मैं
अपनी थकान, निराशा, क्रोध
आँसुओं, अकेलेपन और
एकाध छोटी–मोटी
खुशियों के साथ।''[11]

शहरी क्षेत्र में व्याप्त अमानवीयता, संवेदनहीनता, घृणा आदि को कवि ने 'ढ़ेला' कविता में प्रस्तुत किया है। शहर में ग्रामीण समाज के मनुष्य को खेत का ढेला के बराबर समझता है। ग्रामीण युवक को शहर में नौकरी पर रखने के लिए भी संदेह करते हैं।

'कुछ बन जाते हैं' कविता में कवि प्रेम की गरिमा को उजागर करते हैं, जो दिन–प्रतिदिन के विविध क्रिया–कलापों से जुड़कर नई दृष्टि से देखने की चेष्टा की है। वस्तुतः प्रेम मानवीय सबंधों को प्रगाढ़ कर ऊर्जा प्रदान करती है। इन पंक्तियों के माध्यम से मानवीय प्रेम को उजागर किया गया है–

''तुम मिसरी की डली बन जाओ
मैं दूध बन जाता हूँ
तुम मुझमें
घुल जाओ।
तुम ढ़ाई साल की बच्ची बन जाओ
मैं मिसरी घुला दूध हूँ मीठा
मुझे एक साँस में पी जाओ।''[12]

'एक भाषा हुआ करती है' भाषा के माध्यम से मनुष्य की आत्मा, स्मृति और संवेदना की रक्षा की बात कही गई है।

उदय प्रकाश की कविताओं में करूणा केवल भावनात्मक नहीं, बल्कि सामाजिक चेतना से जुड़ी हुई है। वे शोषित, दलित, गरीब और उपेक्षित वर्ग के प्रति सहानुभूति रखते हैं और उनकी पीड़ा को अपनी

कविता का केन्द्र बना लेते हैं।

(घ) भाषा और शिल्प में सामाजिकता–

उदय प्रकाश की कविताओं की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उनकी भाषा और शिल्प स्वयं सामाजिक चेतना के वाहक हैं। उदय प्रकाश जी कविता को अभिजात वर्ग की वस्तु नहीं बनाते, बल्कि उसे आम आदमी की जिंदगी और बोली से जोड़ देते हैं।

उदय जी की कविता की भाषा सरल, सहज और बोलचाल की है। उनकी कविताओं में सड़क, दफ्तर, बाजार, खेत और झुग्गी की भाषा सुनाई देती है। यही जनभाषा उनकी कविताओं को सामाजिक रूप से विश्वसनीय बनाती है।

उदय प्रकाश भाषा में व्यंग्य और कटाक्ष का सहारा लेकर व्यवस्था और सामाजिक पाखंड पर प्रहार करते हैं। यह शिल्प सामाजिक आलोचना को और प्रभावी बना देता है। 'मक्खियों की आत्माएँ' कविता में उदय प्रकाश जी ने बाजारवाद, लोकतंत्र की गिरती नैतिकता और मूल्यों के पतन पर तीखा प्रहार किया है। जैसे–

''जो गुलाम नहीं हैं उन पर संदेह और उनकी हत्या के लिए
मिलती है उन्हें बहुत ही
बहुत मामूली करूणा जैसी पगार
यही है इस लोकतंत्र का सबसे बड़ा रोजगार।''[13]

उदय प्रकाश जी का काव्य–शिल्प कृत्रिम सौंदर्य और जटिल अलंकारों से मुक्त है। वे सीधे और तीखें ढ़ंग से अपनी बात कहते हैं, जिसे सामाजिक यथार्थ बिना किसी आवरण के सामने आता है। उदय प्रकाश जी की कविताएँ अक्सर कथा या संवाद की तरह आगे बढ़ती है। इससे आमजन का जीवन, उसकी आवाज और उसकी समस्या कविता के भीतर जीवंत हो उठती है।

'बचाओ' कविता में भाषा की लुप्त होती जा रही ध्वनि जैसे– 'ष', 'ङ.', 'ऋ' के मूल रूप को बचाने का आग्रह करते हुए लिखते हैं–

''चिंता करो मूर्द्धन्य 'ष' की
किसी तरह बचा सको तो बचाओ 'ङ.'
देखों, कौन चुना कर लिए चला जा रहा है खड़ी पाई
और नागरी के सारे अंक
जाने कहाँ चला गया ऋषियों का 'ऋ'।[14]

उदय प्रकाश की कविता 'एक भाषा हुआ करती है' के माध्यम से समाज की सच्चाई को दिखाना चाहते हैं। कवि बताते हैं कि भाषा भी सत्ता, वर्ग और बाजार के प्रभाव में आ गए हैं। यह भाषा बहुत अधिक बोली और सुनी जाती है। यह कमाई करने वाली और बिकने वाली बड़ी भाषा बन गई है। परन्तु यह दुनिया के सबसे बदहाल, असहाय, गरीब और ठुकराए गए लोगों की भाषा भी है– उन करोड़ों लोगों की, जो लफंगे गरीब और शोषित है। कवि इन पंक्तियों के माध्यम से उजागर करते हैं –

''बहुत अधिक बोली–लिखी, सुनी–पढ़ी जाती,
गाती–बजाती एक बहुत कमाऊ और बिकाऊ बड़ी भाषा
दुनिया के सबसे बदहाल और सबसे असाक्षर, सबसे गरीब
और सबसे खूँखार,
सबसे काहिल और सबसे थके–लुटे लोगों की भाषा,
अस्सी करोड़ या नब्बे करोड़ या एक अरब भुक्खड़ों, नंगों
और गरीब
लफंगों की जनसंख्या की भाषा।'' [15]

निष्कर्ष के तौर पर हम कह सकते हैं कि उदय प्रकाश की कविताओं में भाषा और शिल्प की सामाजिकता उन्हें आधुनिक हिन्दी कविता का जनकवि बनाती है। उनकी कविता भाषा के माध्यम से समाज की आवाज बन जाती है।

(ङ.) परिवर्त्तन की आकांक्षा –

उदय प्रकाश की कविता केवल यथार्थ का चित्रण नहीं करती, बल्कि उसमें परिवर्तन की गहरी आकांक्षा निहित है। वे समाज की विद्रूपताओं, अन्याय और शोषण को उजागर करते हुए पाठक को

निष्क्रिय दर्शक नहीं रहने देते, बल्कि उसे सोचने और बदलने के लिए प्रेरित करते हैं।

उदय प्रकाश की कविताओं में दिखाई देने वाला यथार्थ अक्सर कठोर और निराशाजनक होता है, लेकिन इसके भीतर बेहतर समाज की उम्मीद भी छिपी रहती है। उदय प्रकाश जी मानते हैं कि व्यवस्था अमानवीय है, पर मनुष्य की चेतना और प्रतिरोध की शक्ति से बदलाव संभव है।

उदय प्रकाश जी की कविताओं में निराशा के साथ–साथ बदलाव की उम्मीद भी दिखाई देती है। वे समाज को जागरूक करना चाहते हैं और पाठक को सोचने के लिए मजबूर भी करते हैं।

उदय प्रकाश जी शोषणमुक्त समाज की कल्पना करना चाहते हैं, मानवीय मूल्यों को पुर्नस्थापना करना चाहते हैं, सत्ता और पूँजी के वर्चस्व का विरोध भी करते हैं एवं आम आदमी को अपनी ताकत पहचानने का आग्रह करते हैं।

'दुआ' कविता में एक ऐसे व्यक्ति के बारे में बताया गया है जो कि समाज की अपेक्षाओं से विपरीत चलता है और अपने सिद्धांतों पर अडिग रहता है। एक मुश्किल या खतरनाक स्थिति में भी व्यक्ति की दृढ़ता और अडिगता को दर्शाया गया है जब सब भाग रहे थे, तब भी वह अपनी ही जगह पर टिके रहते हैं। 'दुआ' कविता में इसका वर्णन इस प्रकार से किया गया हैं–

''जब जलते हुए पेड़ से
उड़ रहे थे सारे परिन्दे
मैं उसी डाल पर बैठा रहा।'' [16]

''दो हाथियों की लड़ाई'' कविता में राजनीतिक विडम्बनाओं का वर्णन हुआ है। इस कविता में कवि ने यह बताया है कि जब शक्तिशाली लोग या देश आपस में लड़ते हैं, तो निर्दोष लोग या चीजें नुकसान झेलते हैं, ठीक वैसे ही जैसे जब हाथी लड़ते हैं तो घास को नुकसान होता है।

इस कविता में हाथी की तुलना शक्तिशाली लोगों या देशों से की गई है, और घास की तुलना उन निर्दोष लोगों से की गई है जो लड़ाई से प्रभावित होते है। इन पंक्तियों के माध्यम से इसका चित्रण इस प्रकार किया गया है–

''दो हाथियों का
लड़ना
सिर्फ् दो हाथियों के समुदाय से
संबंध नहीं रखता।
दो हाथियों की लड़ाई में
सबसे ज्यादा कुचली जाती है
घास, जिसका
हाथियों के समूचे कुनबे से
कुछ भी लेना–देना नहीं।''[17]

उदय प्रकाश जी की कविता समकालीन जीवन का जायजा लेती है, अन्याय व शोषण का विरोध करती है तथा सामाजिक परिवर्त्तन के लिए शब्दों की ताकत से कारगर हथियार गढ़ने का प्रयास करती है –

''कि बीत रहा है
कलियुग का एक चरण
कि ढह रहा है,
काल का एक और कठिन कगार
कि पछाड़ मार रहा है
दबी हुई जाति का एक विराट सागर।'' [18]

यह कहा जा सकता है कि उदय प्रकाश की कविता में परिवर्त्तन की आकांक्षा कविता की आत्मा है– जो यथार्थ से टकराते हुए भी उम्मीद और संघर्ष का रास्ता हमें दिखाती है।

उदय प्रकाश की कविता सामाजिक अन्याय के विरूद्ध एक सजग हस्तक्षेप है। उनकी काव्य–संवदेना में सामाजिक चेतना केवल विचार नहीं, बल्कि मानवीय अनुभव का सजीव रूप है। वे कविता को समाज का परिवर्त्तन और मानवीय मूल्यों की रक्षा का माध्यम बताते हैं।

संदर्भ–ग्रंथ सूची

1. सुनो कारीगर, उदय प्रकाश, वाणी प्रकाशन, तीसरा संस्करण 2021 पृ0–18.
2. उपरिवत् पृ0 – 18
3. उपरिवत् पृ0– 20
4. उपरिवत् पृ0 – 9
5. रात में हारमोनियम, उदय प्रकाश, वाणी प्रकाशन, चौथा संस्करण 2020 पृ0– 57
6. अबूतर–कबूतर, उदय प्रकाश, वाणी प्रकाशन, संस्करण 2005, पृ0–71
7. सुनो कारीगर, उदय प्रकाश, वाणी प्रकाशन, तीसरा संस्करण 2021 पृ0–85
8. नयी सदी का पंचतंत्र, उदय प्रकाश, वाणी प्रकाशन तृतीय संस्करण 2020 पृ0– 329
9. अबूतर–कबूतर, उदय प्रकाश, वाणी प्रकाशन, संस्करण 2005 पृ0–83
10. सुनो कारीगर, उदय प्रकाश, वाणी प्रकाशन, तीसरा संस्करण 2021 पृ0–61
11. सुनो कारीगर, उदय प्रकाश, वाणी प्रकाशन, तीसरा संस्करण 2021 पृ0 9–10
12. अबूतर–कबूतर, उदय प्रकाश, वाणी प्रकाशन, संस्करण 2005, पृ0–11
13. एक भाषा हुआ करती है, उदय प्रकाश, वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2020, पृ0–26
14. रात के हारमोनियम, उदय प्रकाश, वाणी प्रकाशन, चौथा संस्करण 2020 पृ0–23
15. एक भाषा हुआ करती है, उदय प्रकाश, वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2020, पृ0–109
16. अम्बर में अबाबील, उदय प्रकाश, वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण–2019 पृ0–22
17. अबूतर–कबूतर, उदय प्रकाश, वाणी प्रकाशन, संस्करण 2005, पृ0–74
18. आधुनिक हिन्दी कविता और काव्यानुभूति, एकांत, श्रीवास्तव, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2019, पृ0–492.

www.bohalshodhmanjusha.com Bohal Shodh Manjusha ISSN: 2395-7115
Impact Factor: 8.642 June 2026 Page No. : 134-138
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

'प्रवादपर्व' में अभिव्यक्त नारी चेतना

DR. Neerada Maria Kurian
Assistant Professor,
Dept. of Hindi, Newman College Thodupuzha

हिन्दी का पाँचवाँ भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त श्री नरेश मेहता नयी कविता के सशक्त हस्ताक्षरों में एक है। मालवा के राजापूर कस्बे में एक गुजराती परिवार में १५ फरवरी १९२४ को श्री नरेश मेहता का जन्म हुआ। उनका वास्तविक नाम पूर्णशंकर शुक्ल है। मेहता वस्तुत: उपनाम है। साहित्य में परम्परागत मूल्यों की प्रतिष्ठा और नवीन मूल्यों की प्रासंगिकता का औचित्य प्रतिपादित करते हुए भी नरेश मेहता ने हिन्दी साहित्य के विभित्र विधाओं में अपना पहचान बनाया है। नयी कविता के प्रतिनिधि कवि श्री नरेश मेहता ने हिन्दी साहित्य को एक नयी दिशा दी है। उनकी लेखनी का स्पर्श जिस विधा को हुआ है यह विधा साहित्य में गौरवान्वित हुई है।

प्रपादपर्व (१९७७)

नरेश मेहता कृत 'प्रवाद पर्व' रामायण की प्रसिद्ध घटना पर आधारित एक विचारमूलक खण्डकाव्य है। इसमें समकालीन परिस्थितियों में निहित तथ्यों की खोज सनातन रामवृत्त से की है। उस युग में सीता की अग्नि परीक्षा के बाद भी एक धोबी ने सीता के चरित्र पर ऊँगली उठाई थी। एक साधारण जन की ऊँगली उठाने पर राम ने उसे न दण्डित किया, न राजद्रोह के अपराध में कारावास भेजा और न ही उस आरोप की उपेक्षा की बल्कि एक सामान्य व्यक्ति के कहने पर आसन्न मातृत्व के संकट से ग्रस्त सीता को वनवास की आज्ञा दे देते है और राजकीय वैभव से भी वंचित कर देते है। इसी प्रसिद्ध घटना को कवि ने अपनी मौलिक प्रतिभा द्वारा यथास्थान थोडा परिवर्तन कर उसे नये प्रसंगों से जोड़ा है। इस कथा को कवि ने पाँच छोटे-छोटे सर्गों में विभक्त किया है जैसे इतिहास और प्रति इतिहास, प्रति इतिहास और तंत्र, शक्ति, एक संबन्ध, एक साक्षात्, प्रति इतिहास और निर्णय और निर्वेद विदा। प्रवाद पर्व खण्डकाव्य में पौराणिक रामवृत्त को आधार बनाकर राज्य, राष्ट्र, लोकतंत्र तथा उसकी आवाज को व्यक्ति निर्णय अथवा प्रभु की अपेक्षा अधिक महत्व दिया है। कवि ने पौराणिक कथा को बिना ठेस पहुंचाये इसमें समकालीन अर्थवत्ता की तलाश की है। 'प्रवादपर्व' आपात् स्थिति के दौरान लिखा गया था। उस समय की जो स्थिति थी उसको कवि ने गहराई से अनुभव किया था। इसलिए इस कृति में जगह-जगह उसके संकेत मिलते हैं। मुख्य रूप से कवि ने इस कृति में राजतंत्र पर ही प्रकाश डाला है।

प्रवाद पर्व में नारी भावना

नारी मुक्ति आन्दोलन की शुरुआत साठोत्तरी युग में ही हो गयी थी। समाज में नारी जन्म से ही भेदभाव की शिकार हो जाती है, सिर्फ मानसिक ही नहीं शरीरिक शोषण का शिकार भी होती है। नारी को पराधीन बनाया गया है। नारी संभ्रम में पड गयी कि क्या करें, क्या न करें। उचित अनुचित का भाव भी नष्ट होने लगा। सामाजिक जीवन के मूल्य निरन्तर घटने लगे। ऐसे समय खण्डकाव्यकारों ने खण्डकाव्य में पौराणिक, एतिहासिक पात्रों के द्वारा संवेदनशीन नारी को प्रस्तुत किया।

श्री नरेश मेहता भी अपनी रचनाओं में आधुनिक नारी के चिन्तन को प्रस्तुत किया है। कवि स्त्री और पुरुष के समान अधिकार का पक्षधर है। उनके अनुसार जीवन के सुख-चैन तथा विकास केलिए स्त्री को पुरुष की अनुगामिनी रहना है। लेकिन उसे स्त्री की विवशता की अनुगामिता बिलकुल स्वीकार नहीं है।

आधुनिक युग की चिन्तन प्रधान नारी के प्रतीक के रूप में 'प्रवादपर्व' की सीता प्रतिष्ठित है। सीता इस बात से अवगत है कि उन्हें इतिहास पुरुष राम के पार्श्व में केवल एक प्रतिमा सा खडा होना है। बीच-बीच में घटनेवाली घटनाओं-वनवास, पंचवटी-निवास, अशोक वाटिका की प्रतीक्षा, आसन्न मातृत्व इत्यादी को सीता अपने दांपत्य जीवन का अविभाज्य अंग मानती है। उसे मालूम है कि इतिहास निर्माता घर-परिवार की भाषा में बात नहीं करते और नहीं कभी वैयक्तिक जीवन जीते है। इसलिए सीता स्वयं को बंधन में बाँधते है। सीता जानती है कि राम वैयक्तिक संबन्धों के परे है। उनका मत है कि-

"राज्य, न्याय और राष्ट्र
व्यक्तियों तथा
संबन्धों से ऊपर होने ही चाहिए।"[१]

उपर्युक्त पंक्तियों में सीता के भारतीय नारी के पारम्परिक आदर्शों का निर्वाह तथा आधुनिक युग की विकसित जनतंत्रात्मकता के प्रति गहरी आस्था दृष्टिगोचर है। वह राम की अनुगामिनी मात्र न होकर उनकी सहधर्मिणी भी है। लेकिन राम के साथ कभी भी साधारण नारी का जीवन नहीं जी सकी है। नरेश मेहता के मन में पत्नी का रूप पति की अनुगामिनी होने का है। इसलिए तो उनकी सीता कहती है-

"मुझे अवगत था
आर्यपुत्र !
आरम्भ से ही मुझे इसकी प्रतीति थी
कि मुझे
इतिहास और
इतिहास पुरुष के पार्श्व में
केवल एक प्रतिमा-सा खडा होना है।"[२]

इस संदर्भ में डॉ. संतोष कुमार तिवारी का कथन विचारणीय है- "नरेशजी ने प्रसंग की मौलिक उद्भावना द्वारा यह स्पष्ट कर दिया है कि सीता ने राम को यज्ञपुरुष के रूप में पाया था, सामान्य राजकुमार के रूप में नहीं।"[३]

'प्रवाद पर्व' की सीता जन-साधारण का अस्तित्व बनाये रखने केलिए राम से स्वयं के त्याग का प्रस्ताव रखती है। वह साधारण जन की अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के पक्षधर है। अपनी चरित्र मर्यादा तथा राम की राजसी गरिमा की रक्षा केलिए सीता किसी भी प्रकार की परीक्षा केलिए तैयार है। वह स्वयं राम से कहती है कि अनाम साधारण जन की अभिव्यक्ति की सुरक्षा केलिए यदि आपको मेरा भी त्याग करना पड़े तो कर दीजिए। यहाँ नरेश मेहता ने सीता को जनतांत्रिक मूल्यों की रक्षा केलिए तत्पर आधुनिक नारी के रूप में चित्रित किया है।

"यदि
अनाम साधारण जन का विश्वास है
जिसे अपने निर्भय अभिव्यक्ति किया है
यह उस तो राज्य, न्याय तथा आपको
उस अनाम प्रजा के विश्वास की
अभिव्यक्ति की
रक्षा करनी चाहिए।"[४]

साधारण जन को सीता ने भी महत्व दिया है। वह कहती है-

“मैं या
कोई भी
राष्ट्र-न्याय और सत्य से बड़ा नहीं।"[५]

श्री नरेश मेहता सीताजी के त्याग को अधिक प्रधानता देने केलिए विशिष्ट जनों से परिपूर्ण राज सभा को संबोधित करते हुए लक्ष्मण से यह कहलवाते है- जिस धोबी ने सीता जैसी पवित्र स्त्री पर लांछन लगाया है उसको न्यायपूर्ण अभिमत देना होगा। लक्ष्मण के अनुसार जिसने परीक्षित सीता के चरित्र पर लांछन लगाया है उसका कोई अवसर या प्रयोजन भी नहीं था। जब की सीता की सार्वजनिक रूप से अग्निपरीक्षा ली जा चुकी है। इतना होने पर भी उनके चरित्र पर अविश्वास ही प्रकट नहीं किया गया वरन नारीत्व का अपमान भी किया गया है। उनके स्वत्व के तिरस्कार को न्यायोचित ठहराने केलिए उनके पास न कोई विधिसम्मत तर्क है और न ही कोई बचाव की भाषा। इसलिए वह कहते हैं इस कारण, समस्त नारी जाति के चरित्र पर कभी न मिटनेवाला ऐतिहासिक प्रश्न चिह्न लगा है। इस कृत्य केलिए मानवता कभी क्षमा नहीं करेंगी। वे कठोर मानवीय वास्तविकता को सभी के सम्मुख रखना चाहते हैं। सबको अनसोचे कारणों, सामाजिक दबावों, यथार्थ तथा एतिहासिक इच्छाओं के सम्मुख न केवल नतमस्तक होना पड़ता है बल्कि अमानुष कार्य भी करने पडते हैं। रावण के विरुद्ध युद्ध एक अमानुष कार्य था,यह भी किया। राजा महा राजाओं से लेकर नंगे पैर चलनेवालों को भी इतिहास के सम्मुख विविश होना पड़ा था।

"प्रकारान्तर से
हमारे इस अमानुषी कृत्य के द्वारा
समस्त नारी जाति के चरित्र और स्यत्व पर
कभी न मिट सकनेवाला
एक ऐतिहासिक प्रश्नचिह्न लगा।
मानवता
हमें चाहे इतिहासीन कर दे
परन्तु बन्धुओ !
भावि मानवता और इतिहास
अकेले इस कर्म केलिए ही
हमें क्षमा नहीं करेंगे।"[६]

परीक्षित सीता की पुनः परीक्षा लेने पर लक्ष्मण कुपित हो उठते हैं। भरी सभा में वे कहते है आज अग्निपरीक्षा से परीक्षित देवीतुल्य तेजस्वी स्त्री पर तर्जनी उठाई गयी है। इसकी उपेक्षा करनी चाहिए। क्योंकि यह अशोभनीय अन्यायपूर्ण असम्मानजनक ही नहीं बल्कि विश्वासपूर्ण विद्वेष और सुनियोजित अभिव्यक्ति हैं। स्वाधीनता या

अभिव्यक्ति स्वतंत्रता का यह अर्थ नहीं कि व्यक्तिगत, रागद्वेष आधारहीन अभिमत वक्तव्यों और शंकाओं को सार्वजनिक रूप से अक्षेपात्मक वाणी दें। जिससे सामान्य जन-जीवन, राज्य और राष्ट्रीय गरिमा तथा शीर्षतम व्यक्तियों की चरित्र-मर्यादा पर आंच आये। स्वतंत्रता तथा स्वाधीनता का अर्थ अराजकता नहीं है। अराजकता राजद्रोह की जननी है। इसलिए अपराध से गंभीर है। लेकिन यह केवल अपराध ही नहीं राजद्रोह है। इसलिए चारित्रिक, नैतिक तथा मूल्यगत संस्कारों तथा मान्यताओं पर एक तर्जनी ने विद्वेषपूर्ण ऐतिहासिक प्रश्न चिह्न लगाया है। लेकिन इसी उपेक्षा या अवमानना करना गुरुतर ऐतिहासिक अपराध होगा। इसलिए वे राम के हाथों न्याय निर्णय देते हुए कहते हैं-

"न्याय
व्यक्तियों को नहीं
संबन्धों को नहीं, बल्कि
उत्पन्न स्थितियों को देखता है और
हमें तथा
इतिहास को इसी की प्रतीक्षा है।"[७]

लक्ष्मण के कथन से मेहताजी नारी पर लगानेवाले आक्षेपों और पवित्र नारियों को भी अपमानित करनेवालों की ओर इशारा करते हैं और उसे घोर अपराध भी स्थापित करते हैं।

यदि घटनाओं के परिप्रेक्ष्य में विचार किया जाय तो वस्तुतः सीता क्षमा, धैर्य एवं त्याग का स्वरूप हैं। एक अनाम साधारण जन की शंका-तर्जनी उनके ही चरित्र पर उठी है और राम को न्यायी शासक के रूप में प्रतिष्ठित करने केलिए जनतांत्रिक शासन का समर्थन करती हैं। सीता अपने कर्तव्य के प्रति सचेत हैं और राम को कर्तव्य से विमुख होते नहीं देखना चाहती है । साधारण जन की आवाज़ को महत्वपूर्ण बतलाते हुए सीता राम से कहती हैं-

"आर्यपुत्र!
यदि सभासद
मंत्री और आपके बंधु उसके साथ
अन्याय कर रहे हों, तो
आपको
मुझे और
इस राज्य को भी त्याग कर
उस अकेले व्यक्ति के पक्ष का समर्थन करना चाहिए।"[८]

राम की चरित्र-मर्यादा पर आँच न आये इस विचार से गीता किसी भी संकट की स्थिति में भी परीक्षा देने को तैयार दिखाई पड़ती है। राम अपने प्रशासकीय गरिमा के निमित्त प्राण-प्रिया आसत्र प्रसवा सीता को वनयास दे देते हैं। वैचारिक दृष्टि से इतना आधुनिक होकर भी सीता, राम की प्रशासकीय मर्यादा केलिए अपने को होम कर आदर्श नारी का रूप स्वीकार करती है। सीता का स्वरूप , मर्यादा, उनकी महता सब केवल राम की इच्छा और आज्ञापालन तक ही सीमित है। आधुनिक नारी के जैसे सीता ने अपने को निष्कलंकित सिद्ध करने की कोई योजना नहीं बनायी। वे यह जानती है कि व्यक्ति जब इतिहास को समर्पित हो जाता है तब ऐसी त्रासदी की घटना अनिवार्य हो जाती है।

व्यक्ति
जब इतिहास को समर्पित हो जाता है

तथ ऐसी त्रासदी की घटना
अनिवार्य हो जाता है।"[९]

सीता अनाम प्रजा के विश्वास की अभिव्यक्ति की रक्षा केलिए, राजगरिमा और चरित्र मर्यादा की रक्षा केलिए, राम को आकुलता से मुक्ति देने केलिए कोई भी परीक्षा देने को तैयार है। वह कहती है-

"साधारणता के इस नारायण का
आर्यपुत्र!
न्याय के प्रति नारायण की अपेक्षा है
और
मुझे भी!![१०]

सीता का यह कथन राम केलिए शक्ति बन जाता है। नरेशजी की सीता ने अपने आप पर होनेवाले अन्याय के प्रति कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की। बल्कि उस दोषारोपण को सहकर निष्कासन केलिए तैयार हो जाती है। यहाँ सीता आदर्श भारतीय नारी का प्रतिनिधित्व करती हुई दृष्टिगोचर होती है। राम एक साधारण धोबी की अभिव्यक्ति की रक्षा केलिए सीता को छोड़ देने को तैयार हो गया लेकिन उस अनाम साधारण व्यक्ति की महत्ता भी उन्होंने सीता केलिए नहीं दी। अग्निपरीक्षा के पश्चात् भी सीता को वनवास प्राप्त होता है। सीता ने भी अपने को निष्कलंक स्थापित करने केलिए कोई उपाय नहीं किया। नरेश मेहता केलिए पत्नि का रूप पति की अनुगामिनी होना ही है।

निष्कर्ष

प्रवादपर्व में कवि ने अभिव्यक्ति स्वातंत्र्य के ज्वलन्त प्रश्न को सीता-परित्याग के माध्यम से उठाया है। वाल्मीकी रामायण में राम सीता का परित्याग तो करते है किन्तु अपने इस कृत्य केलिए वह माफी भी मांगते है। किन्तु नरेश मेहता के राम अपने इस दारुण कृत्य केलिए माफी तो नहीं माँगते अपितु सीता-परित्याग के पहले राम-सीता के बीच में जो संवाद होता है वह ऐसा प्रतीत होता है कि भावनात्मक स्तर पर नारी को छला जा रहा है। सीता की पवित्रता और निर्दोषता को राम ने राजा और पति के रूप में अनदेखा कर दिया है। श्री नरेश मेहता प्रवाद पर्व के माध्यम से आधुनिक नारी के सामने नारी-त्याग की महत्ता को वाणी दी है। भारतीय नारी के समर्पित व्यक्तित्व को प्रस्तुत कर कवि ने उससे जुडे अनेक प्रश्नों पर मौन साध लिया है।

संदर्भ ग्रन्थसूची

१. श्री नरेश मेहता, प्रवादपर्व, पृ. ८०
२. वहीं, रचना की प्रासंगिकता, पृ. ७१
३. डॉ. संतोषकुमार तिवारी, नयी कविता के प्रमुख हस्ताक्षर, पृ. २९२
४. नरेश मेहता, प्रवादपर्व, पृ. ८०
५. वही, पृ. ८१
६. वही, पु. ८८
७. वही, पृ. १४
८. वहीं, पु. ८०-८१
९. वही, पृ. ७७-७८
१०. वही, पु. ८१

www.bohalshodhmanjusha.com Bohal Shodh Manjusha ISSN: 2395-7115
Impact Factor: 8.642 June 2026 Page No. : 139-144
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

अनुवाद के माध्यम से सनातन ज्ञान का वैश्विक प्रसार

शिवशंकर,
सहायक प्रोफेसर हिंदी,
राजकीय स्नातकोत्तर नेहरू महाविद्यालय, झज्जर

सारांश
भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम एवं समृद्ध संस्कृतियों में से एक है। इसकी मूल चेतना सनातन ज्ञान पर आधारित है, जिसमें वेद, उपनिषद, पुराण, रामायण, महाभारत, भगवद्गीता, योग तथा आयुर्वेद जैसी ज्ञान परंपराएँ समाहित हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा केवल आध्यात्मिकता तक सीमित नहीं है, बल्कि मानव जीवन के नैतिक, सामाजिक, वैज्ञानिक एवं दार्शनिक पक्षों को भी दिशा प्रदान करती है। आधुनिक वैश्वीकरण के दौर में अनुवाद ने भारतीय सनातन ज्ञान को विश्व समुदाय तक पहुँचाने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।
अनुवाद के माध्यम से भारतीय ग्रंथों का अंग्रेज़ी, जर्मन, फ्रेंच, रूसी, जापानी, चीनी तथा अन्य अनेक भाषाओं में रूपांतरण हुआ, जिसके फलस्वरूप विश्व समुदाय भारतीय दर्शन और संस्कृति से परिचित हुआ। प्रस्तुत शोध पत्र में सनातन ज्ञान की अवधारणा, अनुवाद की भूमिका, प्रमुख अनुवादकों का योगदान, आधुनिक तकनीक की उपयोगिता, अनुवाद संबंधी चुनौतियाँ तथा वैश्विक स्तर पर भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रासंगिकता का विश्लेषण किया गया है।
मुख्य शब्द : सनातन ज्ञान, अनुवाद, भारतीय संस्कृति, वैश्वीकरण, वेद, उपनिषद, भगवद्गीता।

प्रस्तावना

भारत को प्राचीन काल से ही 'विश्वगुरु' कहा जाता रहा है। इसका प्रमुख कारण यहाँ की समृद्ध ज्ञान परंपरा रही है। भारतीय ऋषियों और मनीषियों ने वेदों, उपनिषदों तथा विभिन्न शास्त्रों के माध्यम से मानव जीवन के गूढ़ प्रश्नों का समाधान प्रस्तुत किया। भारतीय संस्कृति का यह ज्ञान केवल धार्मिक चेतना तक सीमित नहीं रहा, बल्कि उसने मानव जीवन के नैतिक, सामाजिक तथा दार्शनिक पक्षों को भी दिशा प्रदान की।

आधुनिक युग में वैश्वीकरण और तकनीकी विकास के कारण विश्व के विभिन्न देशों के मध्य सांस्कृतिक आदान-प्रदान की प्रक्रिया तीव्र हुई है। इस संदर्भ में अनुवाद ने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। अनुवाद केवल भाषाई रूपांतरण

नहीं, बल्कि संस्कृति, ज्ञान और संवेदना के आदान-प्रदान का माध्यम है। भारतीय सनातन ज्ञान का वैश्विक प्रसार मुख्यतः अनुवाद के माध्यम से ही संभव हुआ है।

मैक्स मूलर, चार्ल्स विल्किंस तथा ए. सी. भक्तिवेदांत स्वामी प्रभुपाद जैसे विद्वानों ने भारतीय ग्रंथों का अनुवाद कर विश्व स्तर पर भारतीय दर्शन को प्रतिष्ठित किया।

डॉ. राधाकृष्णन के अनुसार, "भारतीय दर्शन मानवता को आत्मिक स्वतंत्रता और विश्वबंधुत्व का संदेश देता है।"[1] इसी प्रकार डॉ. भोलानाथ तिवारी का मत है कि "अनुवाद विभिन्न संस्कृतियों के मध्य सेतु का कार्य करता है।"[2]

सनातन ज्ञान : स्वरूप एवं अवधारणा

भारतीय परंपरा में सनातन ज्ञान उस ज्ञान को कहा गया है जो मानवता के कल्याण हेतु युगों-युगों से मार्गदर्शन करता आया है। भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम और समृद्ध संस्कृतियों में से एक है। इस संस्कृति का मूल आधार सनातन ज्ञान है, जो मानव जीवन के समग्र विकास, नैतिक उत्थान, आध्यात्मिक उन्नति तथा विश्वकल्याण की भावना पर आधारित है। 'सनातन' शब्द का अर्थ है—शाश्वत अथवा जो सदैव विद्यमान रहे, जिसका न आदि हो और न अंत। अतः सनातन ज्ञान वह ज्ञान है जो काल, देश और परिस्थिति की सीमाओं से परे होकर सार्वकालिक एवं सार्वभौमिक सत्य का उद्घाटन करता है। यह ज्ञान केवल धार्मिक या आध्यात्मिक विषयों तक सीमित नहीं है, बल्कि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र—शिक्षा, विज्ञान, दर्शन, समाज, राजनीति, चिकित्सा तथा पर्यावरण—को दिशा प्रदान करता है।

भारतीय ज्ञान परंपरा के प्रमुख स्रोत निम्नलिखित हैं—

ऋग्वेद

उपनिषद

भगवद्गीता

रामायण

महाभारत

योग एवं आयुर्वेद ग्रंथ

उपनिषदों में आत्मा और ब्रह्म की एकता का प्रतिपादन मिलता है। भगवद्गीता कर्मयोग, ज्ञानयोग और भक्तियोग का समन्वित दर्शन प्रस्तुत करती है। रामायण आदर्श जीवन मूल्यों का संदेश देती है, जबकि महाभारत धर्म और नीति का विश्वकोश माना जाता है।

बलदेव उपाध्याय के अनुसार, "भारतीय संस्कृति का आधार आध्यात्मिकता है, जिसने सम्पूर्ण मानवता को प्रभावित किया।"[3]

आज जब विश्व मानसिक तनाव, हिंसा और नैतिक संकट से जूझ रहा है, तब भारतीय सनातन ज्ञान शांति, सह-अस्तित्व और संतुलित जीवन का मार्ग प्रस्तुत करता है।

अनुवाद : अर्थ, स्वरूप एवं महत्व

'अनुवाद' शब्द संस्कृत धातु 'वद्' (कहना) में 'अनु' उपसर्ग के योग से बना है, जिसका अर्थ है—'पीछे-पीछे कहना' या 'किसी कथन को पुनः व्यक्त करना'। अंग्रेज़ी में इसके लिए Translation शब्द प्रयुक्त होता है, जो लैटिन भाषा के Translatio शब्द से बना है। इसका अर्थ है—एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाना।

भाषाविज्ञान की दृष्टि से अनुवाद वह प्रक्रिया है जिसमें स्रोत भाषा (Source Language) में व्यक्त विचारों को लक्ष्य भाषा (Target Language) में इस प्रकार प्रस्तुत किया जाता है कि मूल संदेश, भाव और प्रभाव सुरक्षित रहें।

अनुवाद का सामान्य अर्थ है — एक भाषा में व्यक्त विचारों को दूसरी भाषा में समान भाव, शैली और प्रभाव के साथ प्रस्तुत करना। अनुवाद केवल शब्दों का रूपांतरण नहीं है, बल्कि संस्कृति और ज्ञान के हस्तांतरण की प्रक्रिया भी है। भारतीय ज्ञान परंपरा के संदर्भ में अनुवाद का महत्व अत्यंत व्यापक है। संस्कृत भाषा में निहित गूढ़ दार्शनिक अवधारणाओं को विश्व समुदाय तक पहुँचाने का प्रमुख साधन अनुवाद ही है।

डॉ नगेन्द्र के अनुसार, "अनुवाद दो संस्कृतियों के मध्य संवाद स्थापित करने की प्रक्रिया है।"[4]

अनुवाद के माध्यम से भारतीय ग्रंथों को विश्व की अनेक भाषाओं में पढ़ा जाने लगा। इसके परिणामस्वरूप भारतीय दर्शन, योग, आयुर्वेद और अध्यात्म को वैश्विक स्तर पर नई पहचान मिली।

आज डिजिटल माध्यमों ने अनुवाद को और अधिक प्रभावी बना दिया है। इंटरनेट, ई-पुस्तकें और कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित अनुवाद प्रणालियाँ भारतीय ज्ञान परंपरा के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।

वेदों एवं उपनिषदों के अनुवाद द्वारा वैश्विक प्रसार

वेदों एवं उपनिषदों का अनुवाद भारतीय ज्ञान को विश्व के विभिन्न देशों और भाषाओं तक पहुँचाने का प्रभावी माध्यम बना। अठारहवीं और उन्नीसवीं शताब्दी में यूरोपीय विद्वानों ने संस्कृत ग्रंथों के अध्ययन और अनुवाद में विशेष रुचि दिखाई। फ्रांसीसी विद्वान अब्राहम एंकेतिल-दुपेरों ने उपनिषदों का फ़ारसी माध्यम से लैटिन भाषा में अनुवाद किया, जिसने यूरोप में भारतीय दर्शन के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न की। इसके पश्चात मैक्स मूलर ने वेदों का अंग्रेज़ी अनुवाद कर भारतीय संस्कृति को विश्व मंच पर प्रतिष्ठित किया। उनकी प्रसिद्ध कृति "Sacred Books of the East ने पश्चिमी देशों में भारतीय ज्ञान परंपरा के अध्ययन को नई दिशा प्रदान की।"[5]

मुगल राजकुमार दारा शिकोह ने उपनिषदों का फारसी भाषा में अनुवाद 'सिर्रे-अकबर' नाम से कराया। बाद में यही अनुवाद यूरोपीय भाषाओं में पहुँचा।

इन अनुवादों ने भारतीय आध्यात्मिक चिंतन को वैश्विक बौद्धिक विमर्श का हिस्सा बना दिया।

अनुवाद के माध्यम से वेदों और उपनिषदों की शिक्षाएँ विभिन्न भाषाओं और संस्कृतियों में पहुँचीं। आत्मा, ब्रह्म, कर्म, पुनर्जन्म, मोक्ष, सत्य, अहिंसा और विश्वबंधुत्व जैसे सिद्धांतों ने विश्वभर के विद्वानों, दार्शनिकों और चिंतकों को प्रभावित किया। जर्मन दार्शनिक आर्थर शोपेनहावर ने उपनिषदों को "विश्व का सर्वश्रेष्ठ दार्शनिक साहित्य" कहा है।"[6]

इसी प्रकार अनेक पश्चिमी विचारकों ने भारतीय दर्शन के अध्ययन से अपने चिंतन को नई दिशा प्रदान की।

वर्तमान वैश्वीकरण और डिजिटल युग में अनुवाद की भूमिका और अधिक महत्वपूर्ण हो गई है। वेदों एवं उपनिषदों के अनुवाद आज अंग्रेज़ी, फ्रांसीसी, जर्मन, रूसी, स्पेनिश, चीनी, जापानी तथा अन्य अनेक भाषाओं में उपलब्ध हैं। डिजिटल पुस्तकालयों, ई-पुस्तकों तथा ऑनलाइन मंचों के माध्यम से इन ग्रंथों का अध्ययन विश्व के किसी भी भाग में संभव हो गया है। इससे भारतीय ज्ञान परंपरा के वैश्विक प्रसार को नई गति मिली है।

इन अनुवादों के परिणामस्वरूप पश्चिमी समाज भारतीय आध्यात्मिकता, आत्मा और ब्रह्म की अवधारणाओं से परिचित हुआ।

भगवद्गीता का वैश्विक प्रभाव

भारतीय ज्ञान-परंपरा में भगवद्गीता का विशिष्ट स्थान है। यह केवल एक धार्मिक ग्रंथ नहीं, बल्कि जीवन-दर्शन, नैतिकता, कर्तव्य, नेतृत्व, आत्मज्ञान तथा आध्यात्मिक उन्नति का सार्वभौमिक मार्गदर्शक ग्रंथ है। महाभारत के भीष्मपर्व

में संकलित भगवद्गीता में 18 अध्याय और 700 श्लोक हैं, जिनमें श्रीकृष्ण द्वारा अर्जुन को प्रदत्त उपदेशों के माध्यम से मानव जीवन की जटिल समस्याओं का समाधान प्रस्तुत किया गया है। गीता का संदेश किसी विशेष धर्म, जाति या देश तक सीमित न होकर सम्पूर्ण मानवता के लिए प्रासंगिक है। यही कारण है कि इसका प्रभाव राष्ट्रीय सीमाओं से परे जाकर वैश्विक स्तर पर स्थापित हुआ है।

भगवद्गीता विश्व के सर्वाधिक अनूदित ग्रंथों में से एक है। इसका प्रथम अंग्रेज़ी अनुवाद चार्ल्स विल्किंस ने 1785 में किया।

गीता का दर्शन कर्म, ज्ञान और भक्ति का समन्वित स्वरूप प्रस्तुत करता है। यही कारण है कि विश्व के अनेक दार्शनिक, साहित्यकार और चिंतक इससे प्रभावित हुए।

विश्व राजनीति और सामाजिक आंदोलनों पर भी भगवद्गीता का गहरा प्रभाव देखा जा सकता है। महात्मा गांधी ने कहा था — "गीता मेरी आध्यात्मिक माता है।"[7] उन्होंने सत्य तथा अहिंसा के अपने सिद्धांतों को गीता के कर्मयोग से प्रेरित बताया। इसी प्रकार अनेक वैश्विक नेताओं और विचारकों ने संकट की परिस्थितियों में गीता के संदेश से मार्गदर्शन प्राप्त किया।

राल्फ वाल्डो इमर्सन तथा हेनरी डेविड थोरो जैसे विचारकों पर गीता का गहरा प्रभाव पड़ा।

"आधुनिक काल में ए. सी. भक्तिवेदांत स्वामी प्रभुपाद द्वारा रचित "Bhagavad Gita As It Is" ने पश्चिमी देशों में गीता के प्रचार-प्रसार में अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान दिया।"[8]

रामायण, महाभारत और भारतीय संस्कृति का वैश्विक प्रभाव

रामायण भारतीय संस्कृति में आदर्श जीवन, कर्तव्यपरायणता, सत्यनिष्ठा, त्याग और मर्यादा का संदेश प्रदान करती है। इसमें वर्णित आदर्श पात्र—राम, सीता, लक्ष्मण और हनुमान—मानव जीवन के उच्च नैतिक मूल्यों के प्रतीक माने जाते हैं। दक्षिण-पूर्व एशिया के अनेक देशों जैसे इंडोनेशिया, थाईलैंड, कंबोडिया, लाओस तथा मलेशिया में रामायण के स्थानीय रूप विकसित हुए हैं। इन देशों की कला, नृत्य, रंगमंच और स्थापत्य पर रामायण का गहरा प्रभाव दृष्टिगोचर होता है।

इसी प्रकार महाभारत विश्व का सबसे विशाल महाकाव्य माना जाता है, जिसमें धर्म, राजनीति, नैतिकता, न्याय और मानव स्वभाव की जटिलताओं का व्यापक चित्रण मिलता है। महाभारत का एक महत्वपूर्ण अंग भगवद्गीता है, जिसे विश्वभर में आध्यात्मिक और दार्शनिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण ग्रंथ माना जाता है। कर्मयोग, ज्ञानयोग और भक्तियोग के सिद्धांतों ने विश्व के अनेक दार्शनिकों, चिंतकों और नेताओं को प्रभावित किया है। महाभारत का अनुवाद अनेक विदेशी भाषाओं में हुआ है, जिसके माध्यम से भारतीय दर्शन और जीवन-दृष्टि का वैश्विक प्रसार संभव हुआ है।

रामायण और महाभारत के माध्यम से भारतीय संस्कृति के मूल सिद्धांत—'वसुधैव कुटुम्बकम्', 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' तथा धर्म और कर्तव्य की भावना—विश्व समुदाय तक पहुँचे हैं। इन ग्रंथों ने केवल धार्मिक और आध्यात्मिक क्षेत्र में ही नहीं, बल्कि साहित्य, कला, रंगमंच, संगीत, चित्रकला तथा सांस्कृतिक अध्ययन के क्षेत्र में भी गहरा प्रभाव छोड़ा है। अनेक विदेशी विश्वविद्यालयों और शोध संस्थानों में इन महाकाव्यों पर अध्ययन एवं अनुसंधान किया जा रहा है।

रामायण और महाभारत भारतीय संस्कृति और नैतिक मूल्यों के आधार स्तंभ हैं। इनके अनुवादों ने एशिया के अनेक देशों को प्रभावित किया।

थाईलैंड में रामायण 'रामाकियन' नाम से प्रसिद्ध है। इंडोनेशिया, कंबोडिया और लाओस में भी रामकथा के विविध रूप प्रचलित हैं। इन देशों की कला, स्थापत्य तथा नृत्य पर भारतीय संस्कृति की स्पष्ट छाप दिखाई देती है।

कामिल बुल्के ने रामकथा को "विश्व साहित्य की अमूल्य सांस्कृतिक धरोहर" कहा है।[9]

महाभारत के अनुवाद ने भारतीय धर्म, नीति और दर्शन को विश्व स्तर पर प्रतिष्ठित किया।

योग और आयुर्वेद का वैश्विक प्रसार

भारतीय ज्ञान-परंपरा विश्व की प्राचीनतम एवं समृद्धतम ज्ञान-संपदाओं में से एक है। इस परंपरा के दो महत्वपूर्ण स्तंभ योग और आयुर्वेद हैं, जिन्होंने मानव जीवन के शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक तथा सामाजिक कल्याण के लिए अद्वितीय योगदान दिया है। योग जहाँ शरीर, मन और आत्मा के समन्वय का विज्ञान है, वहीं आयुर्वेद स्वस्थ जीवन, रोग-निवारण तथा दीर्घायु की वैज्ञानिक पद्धति के रूप में प्रतिष्ठित है। वर्तमान वैश्वीकरण के युग में इन दोनों भारतीय ज्ञान-परंपराओं का प्रभाव विश्वभर में निरंतर बढ़ रहा है। इनके अनुवाद, अनुसंधान, अंतरराष्ट्रीय संस्थागत सहयोग तथा डिजिटल माध्यमों ने इनके वैश्विक प्रसार को नई दिशा प्रदान की है।

योग आज विश्वव्यापी आंदोलन बन चुका है। योगसूत्रों तथा अन्य योगग्रंथों के अनुवाद ने विदेशी समाज को भारतीय स्वास्थ्य दर्शन से परिचित कराया।

पतंजलि के योगसूत्रों का विभिन्न भाषाओं में अनुवाद हुआ, जिससे योग के वैज्ञानिक स्वरूप को विश्व स्तर पर मान्यता मिली।

आयुर्वेद संबंधी ग्रंथों के अनुवाद ने प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति को वैश्विक पहचान दिलाई। आज अमेरिका, यूरोप और जापान जैसे देशों में आयुर्वेद के प्रति लोगों का आकर्षण निरंतर बढ़ रहा है।

वर्ष 2014 में संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस घोषित किए जाने के बाद योग का वैश्विक महत्व और अधिक बढ़ गया। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस आज विश्व के अनेक देशों में उत्साहपूर्वक मनाया जाता है।

अनुवाद की चुनौतियाँ

सनातन ज्ञान के अनुवाद की सबसे बड़ी चुनौती इसकी दार्शनिक एवं आध्यात्मिक अवधारणाओं का समुचित रूपांतरण है। 'धर्म', 'कर्म', 'मोक्ष', 'ब्रह्म', 'आत्मा', 'योग', 'माया' और 'संस्कार' जैसे शब्द भारतीय दर्शन में अत्यंत व्यापक और बहुआयामी अर्थ रखते हैं। इन अवधारणाओं के लिए अन्य भाषाओं में पूर्णतः समतुल्य शब्द उपलब्ध नहीं हैं। परिणामस्वरूप अनुवाद में मूल अर्थ की सूक्ष्मता और गहनता प्रभावित हो सकती है।

दूसरी प्रमुख चुनौती सांस्कृतिक संदर्भों की है। सनातन ग्रंथों में वर्णित प्रतीक, मिथक, धार्मिक अनुष्ठान, सामाजिक परंपराएँ तथा जीवन-मूल्य भारतीय सांस्कृतिक परिवेश से गहरे जुड़े हुए हैं। विदेशी भाषाओं के पाठकों के लिए इन संदर्भों को समझना सरल नहीं होता। इसलिए अनुवादक को भाषा के साथ-साथ सांस्कृतिक व्याख्या का भी सहारा लेना पड़ता है।

भाषागत जटिलता भी एक महत्वपूर्ण समस्या है। वेदों और उपनिषदों की भाषा वैदिक एवं लौकिक संस्कृत की विशिष्ट शैली से युक्त है। संस्कृत के अनेक शब्द बहुअर्थी, प्रतीकात्मक और संदर्भ-निर्भर होते हैं। एक ही शब्द के विभिन्न संदर्भों में भिन्न अर्थ हो सकते हैं। ऐसे में उचित अर्थ का चयन करना अनुवादक के लिए चुनौतीपूर्ण कार्य बन जाता है। एक अन्य चुनौती अनुवादक की वैचारिक दृष्टि से जुड़ी है। कई बार अनुवादक अपने धार्मिक, सांस्कृतिक या दार्शनिक पूर्वाग्रहों के प्रभाव में मूल पाठ की व्याख्या करता है, जिससे अर्थ-विकृति की संभावना उत्पन्न हो जाती है।

इस संदर्भ में "युजीन नाइडा" का कथन बिल्कुल उचित प्रतीत होता है कि, "सफल अनुवाद वही है जो मूल भाषा के भाव और प्रभाव को लक्ष्य भाषा में सुरक्षित रख सके।"[10]

इस तरह से सनातन ज्ञान के अनुवाद में अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

निष्कर्ष

अनुवाद ने भारतीय सनातन ज्ञान को वैश्विक स्तर पर प्रतिष्ठित करने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसके माध्यम से वेद, उपनिषद, भगवद्गीता, रामायण, योग और आयुर्वेद जैसे अमूल्य ज्ञान स्रोत विश्व समुदाय तक पहुँचे हैं।

अनुवाद केवल भाषा परिवर्तन नहीं, बल्कि सांस्कृतिक संवाद और ज्ञान के वैश्विक आदान-प्रदान का माध्यम है। आधुनिक तकनीक ने इस प्रक्रिया को और अधिक व्यापक बना दिया है। सनातन ज्ञान के अनुवाद में अनेक समस्याएँ भी सामने आती हैं। संस्कृत के अनेक शब्दों का अन्य भाषाओं में पूर्ण भावानुवाद संभव नहीं होता। इसके अतिरिक्त वेदों और उपनिषदों की भाषा अत्यंत गूढ़ और प्रतीकात्मक है। यदि अनुवादक दोनों भाषाओं की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से परिचित न हो तो अर्थ विकृत हो सकता है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि भारतीय ग्रंथों का प्रामाणिक, संवेदनशील और वैज्ञानिक अनुवाद किया जाए ताकि उनकी मूल भावना सुरक्षित रह सके। यदि अनुवाद की प्रक्रिया को और अधिक सुदृढ़ बनाया जाए तो भारतीय सनातन ज्ञान सम्पूर्ण मानवता के लिए शांति, सह-अस्तित्व और नैतिक जीवन का मार्गदर्शक बन सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. राधाकृष्णन, सर्वपल्ली : Indian Philosophy, Oxford University Press, 1996, पृ. 25
2. तिवारी, भोलानाथ : अनुवाद विज्ञान, किताब महल, इलाहाबाद, 2004, पृ. 18
3. उपाध्याय, बलदेव : भारतीय दर्शन, शारदा मंदिर प्रकाशन, वाराणसी, 2010, पृ. 42
4. डॉ नगेंद्र : अनुवाद सिद्धांत और प्रयोग, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 2001, पृ. 31
5. Müller, Max : Sacred Books of the East, Oxford University Press, 1879.
6. Schopenhauer, Arthur : The World as Will and Representation, Dover Publications, 1969, p. 412.
7. गांधी, मोहनदास करमचंद : गीता माता, नवजीवन प्रकाशन, अहमदाबाद, 2005, पृ. 12
8. Prabhupada, A.C. Bhaktivedanta : Bhagavad Gita As It Is, Bhaktivedanta Book Trust, 1983.
9. बुल्के, कामिल : रामकथा : उत्पत्ति और विकास, हिंदी परिषद प्रकाशन, प्रयागराज, 1997, पृ. 55
10. Nida, Eugene : Toward a Science of Translating, Brill Publication, 1964, p. 159.

Mob: 8295606455

email : shivshankarb1973@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com Bohal Shodh Manjusha ISSN: 2395-7115
Impact Factor: 8.642 June 2026 Page No. : 145-149
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

आशा भोसले - संगीत और जिंदगी

डॉ. सांटी जोसफ ,
सह आचार्या ,
हिंदी विभाग ,संत अलोशियस महाविद्यालय , एडत्वा ,अलप्पुषा ,केरल।

सारांश : आठ दशकों से भी अधिक समय तक अपनी सुरीली आवाज़ से भारतीय जनता को मंत्रमुग्ध करनेवाली आशा भोसले जी को सादर नमन। हिंदी फिल्म संगीत जगत की सबसे वर्सटाइल और दिग्गज संगीतज्ञ आशा भोसले जी का 92 वर्ष की आयु में 12 अप्रैल 2026 को निधन हो गया। उन्होंने बीस से भी अधिक भाषाओं में लगभग 12000 से ज्यादा गानों को अपनी आवाज़ दी हैं। वह किसी भी प्रकार के गीत को बेहद सहजता और सुगमता से गाने में सक्षम थी। गज़ल हो ,हिंदुस्थानी शास्त्रीय संगीत हो ,या फिर डांस नंबर ,पॉप, जैज और ब्लूज़ की धुनें बड़ी ही खूबसूरती से निभाया। संगीत के आलावा ,खाना बनाना आशाजी का पसंदीदा काम था। 'आशाज़ ' के नाम से भारत और विदेशों (जैसे दुबई ,यूके)में उनके रेस्टोरेंट्स चल रहे हैं। आशाजी की आवाज़ में हर तरह के गाने गाने का लचीलापन था ,उनकी आवाज़ में जहां एक ओर बच्चों जैसी मासूमियत ओर चुलबुलापन था ,वहीं दूसरी ओर शास्त्रीय संगीत की गंभीरता ओर गहराई भी थी।

मुख्य शब्द: दीदी की छाया से बाहर, आवाज़ का जादू , गाने का लचीलापन , विभिन्न भाषा ,नब्बे से अधिक उम्र में।

पारिवारिक सम्बन्ध : मराठी नाट्य अभिनेता और गायक पंडित दीनानाथ मंगेशकर और शेवंती की बेटी के रूप में 8 सितम्बर 1933 को महाराष्ट्र के सांगली में उनका जन्म हुआ। लता ,उषा ,मीना और हृदयनाथ उनके भाई -बहन हैं। उनके पहले पति गणपतराव भोसले थे।16 साल की उम्र में उन्होंने गणपति राव भोसले के साथ अपनी वैवाहिक जीवन की शुरुआत की थी। वर्षा ,हेमंत और आनंद उनकी संतानें हैं। बाद में उनका तलाक हो गया। 20 साल बाद उन्होंने संगीतकार आर. टी बर्मन से विवाह किया। परिवार के सभी सदस्यों का जीवन हिंदी सिनेमा और संगीत जगत से जुड़ा हुआ है।

प्रस्तावना : घर का माहौल संगीतमय था ,फिर भी आर्थिक स्थिति बहुत ख़राब थी। स्कूल की फीस न भर पाने के कारण उन्हें बचपन में ही स्कूल से निकाल दिया गया था। जब आशाजी केवल 9 वर्ष की थी ,तब उनके पिता का निधन हो गया। परिवार के आर्थिक संकट के कारण बड़ी बहन लता मंगेशकर ने घर की जिम्मेदारी संभाली और साथ ही

मंगेशकर परिवार पुणे से मुंबई जाकर बस गया। पिता के निधन के बाद परिवार के भरण -पोषण के लिए बड़ी बहन लता मंगेशकर ने संगीत को अपनी आजीविका बनाया। बाद में आशा ने भी अपनी बहन के नक़्शे कदम पर चलते हुए फिल्म संगीत की दुनिया में प्रवेश किया। दस वर्ष की आयु में उन्होंने अपनी मधुर आवाज़ के साथ पार्श्व गायन रखा।
16 साल की उम्र में परिवार के खिलाफ जाकर उन्होंने अपनी बहन के सेक्रेटरी गणपत राव भोसले के साथ वैवाहिक जीवन शुरू किया ,लेकिन वह रिश्ता भी उन्हें कई दुःख दे गया। वह विवाह केवल 11 वर्षों तक ही चला। एक बार उनकी आवाज़ को "ख़राब " कहकर उन्हें स्टूडियो से बाहर निकाल दिया गया था। जीवन में इतने बुरे अनुभवों के बावजूद आशाजी कभी डगमगाई नहीं। उनकी तुलना हमेशा उनकी बड़ी बहन लताजी से की जाती थी। उस परछाई से बाहर निकलकर अपनी खुद की पहचान बनाने के लिए आशाजी को बहुत संघर्ष करना पड़ा। अंततः ओ. पी नैयर ने ही आशाजी की आवाज़ की **खनक** को पहचाना। इस जोड़ी ने लगभग 324 गाने बनाए ,जिनमें से अधिकांश सुपरहिट की दुनिया में कदम रहे। इतिहास रचनेवाली अपनी बड़ी बहन लता मंगेशकर की परछाई से बाहर निकलकर उन्होंने संगीत की दुनिया में अपना एक अलग स्थान और सिंहासन सुरक्षित किया।

बहन लता मंगेशकर के हिंदी सिनेमा में गाने की शुरुआत के बाद ,आशा ने भी हिंदी फ़िल्मी गानों को अपनी आवाज़ देना शुरू कर दिया। शुरुआती दिनों में आशा की पहचान लता मंगेशकर की बहन के रूप में ही थी।अपनी बड़ी बहन लताजी के बारे में आशा जी की राय इसप्रकार थी। “ दीदी संगीत का वो हिमालय थीं ,जिसकी परछाई में मैं ने चलना सीखा ,लेकिन गाना हमेशा अपनी शर्तों और अपनी अनूठी लय में गाया। “ 1 बड़ी बहन का समर्थन होने के बावजूद ,उस समय के प्रसिद्ध गायकों की मौजूदगी के कारण आशाजी का पदार्पण इतना आसान नहीं था। “ अगर एक ही जगह पर दो बड़े पेड़ लगे हों ,तो छोटे पेड़ को धुप और हवा पाने के लिए बहुत संघर्ष करना पड़ता है।“ 2 लेकिन बहुत जल्द ,अपनी रचनात्मक प्रतिभा और कड़ी मेहनत के बल पर उन्होंने अपनी एक स्वतंत्र पहचान बना ली। वह किसी भी प्रकार के गीत को बेहद सहजता और सुगमता से गाने में सक्षम थी। गज़ल हो ,हिंदुस्थानी शास्त्रीय संगीत हो ,या फिर डांस नंबर ,पॉप ,जैज और ब्लूज़ की धुनें बड़ी ही खूबसूरती से निभाया। “ लताजी जहां शुद्धता और शालीनता की प्रतीक थीं ,वहीँ आशा भोसले ने भारतीय फिल्म संगीत को आधुनिकता ,चंचलता और बहुआयामी प्रयोगशीलता दी। “ 3 1943 में मराठी फिल्म ‘ माझा बाल ‘ के एक गीत के साथ उन्होंने अपने करियर की शुरुआत की। इसके बाद 1948 में फिल्म ‘ चुनरिया ’ केलिए ‘ चला चला नव बला……’ गाना गाकर उन्होंने हिंदी सिनेमा के संगीत सफर का आगाज़ किया। हालाँकि उन्होंने सबसे पहले 1945 में हिंदी फिल्म ‘ बड़ी माँ ‘ में गाया था ,लेकिन 1948 में रिलीज़ हुई फिल्म चुनरिया को आधिकारिक तौर पर आशा की पहली फिल्म (एक पार्श्व गायिका के रूप में) माना जाता है।

आठ साल बाद 1956 में ओ. पी नैय्यर के संगीत निर्देशन में फिल्म ‘ सीआईडि ‘ के गानों को गाने के साथ ही आशा भोसले एक अग्रणी गायिका के रूप में प्रसिद्ध हो गयी। ओ .पी. नैय्यर ओर आशा की जोड़ी ने कई सुपरहिट गाने दिए। 1966 में फिल्म ‘ तीसरी मंज़िल ‘ के जरिए आशा भोसले ओर आर.डी. बर्मन की जोड़ी की शुरुआत हुई। यह जोड़ी पहले प्यार ओर बाद में विवाह के बंधन में बंध गयी। आर डी बर्मन के संगीत निर्देशन में गाए गए मधुर और विविधता पूर्ण गानों ने आशा की प्रसिद्धि को नई ऊंचाईयों तक पहुंचाया। आशा भोसलेजी की आवाज़ का सबसे बेहतरीन इस्तेमाल आर .डी बर्मन और ओ. पी. नैयर ने किया था। हालाँकि विभिन्न शैलियों ओर दौर के लगभग सभी संगीतकारों के लिए आशा जी ने गाने गाए हैं। उन्होंने हंसराज बहल,वसंत देसाई ,अनु मलिक ,नदीम श्रवण ओर ए. आर .रहमान जैसे दिग्गजों के साथ भी काम किया। आशा जी को पूरे भारत में पहचान दिलानेवाला गाना “ चंदा मामा दूर है……” था ,जिसे संगीतकार बॉम्बे रवि ने फिल्म वचन (1955) के लिए स्वरबद्ध किया था। उत्तरभारत

में आज भी माताऐं अपने बच्चों को सुलाने के लिए इस लोरी को जाती हैं। ओ. पी. नैयर ओर आर. डी. बर्मन के आलावा ,प्रसिद्ध संगीतकार शंकर -जयकिशन ,और ए आर रहमान के साथ मिलकर भी आशाजी ने सुपरहिट गाने दिए। शंकर- जयकिशन की जोड़ी ने आशाजी की बहुमुखी प्रतिभा का बेहतरीन इस्तेमाल किया। उन्होंने आशाजी को चुलबुले ,शास्त्रीय और रोमांटिक हर तरह के गाने दिए। शंकर -जयकिशन के साथ उन्होंने लगभग 214 गाने गए ,जिनमें से अधिकांश सुपरहिट रहे। अक्सर सब लोग दोनों बहनों की आपस में तुलना करते थे। संगीतकार आर. डी. बर्मन की राय में " दुनिया में दो तरह के गायक होते हैं एक वो जो गाना गाते हैं ,और एक वो जो गाने को जीते हैं। उनकी गायकी में एक ऐसी छटपटाहट और नयापन है जो हर पीढ़ी को अपना दीवाना बना लेता है। " 4 ओ. पी. नैयर की राय में " अगर लता (मंगेशकर)संगीत की पवित्र गंगा हैं।,तो आशा (भोसले) संगीत का वह समंदर हैं जिसमें हर तरह की अनगिनत और बेबाक लहरें उठती हैं। "5

नब्बे के दशक में सिनेमा जगत से सन्यास लेने का निर्णय लेनेवाली आशा को संगीत निर्देशक ए. आर. रहमान ने जबरदस्ती वापस लाया। रहमान के संगीत निर्देशन में 1995 में रिलीज़ हुई फिल्म ' रंगीला ' में आशा द्वारा गाए गए सभी गाने सुपरहिट रहे। इसके बाद ताल , दौड़ , लगान ,और इरुवर जैसी फिल्मों में भी ए. आर. रहमान -आशा भोसले की जोड़ी ने कई हिट गाने दिए। उनके कुछ प्रतिष्ठित हिंदी गीतों की सूची दी गयी हैं :

मुड़ मुड़ के न देख… (श्री 420,1955)
ये रात ये मौसम …(दिल्ली का ताग 1958)
अभी न जाओ छोड़कर… (हम दोनों 1961)
ए गुलबदन …(प्रोफेसर1962)
अब के बारस… (बंधिनी ,1963)
दीवाना हुआ बादल… (कश्मीर की कली)
आजा आजा मैं हूँ प्यार तेरा …(तीसरी मंज़िल ,1966)
औ हसीना जुल्फोंवाली… (तीसरी मंज़िल,1966)
रात के हमसफ़र…(अन इवनिंग इन पेरिस.1967)
आओ हुज़ूर तुमको… (किस्मत,1968)
पर्दे में रहने दो पर्दा न उठाओ… (शिकार,1968)
रंगीला रे …(प्रेम पुजारी,1970)
दम मारो दम… (हरे रामा हरे कृष्णा ,1971)
पिया तू अब तो आजा… (कारवान,1971)
दिल जालों का दिल जला के क्या मिला आपको… (संजोग,1971)
जिंदगी एक सफर है सुहाना… (अंदाज़,1971)
हंगामा हो गया …(अनहोनी,1973)
चुरा लिया है तुमने जो दिल को… (यादों की बारात,1973)
होने लगी है रात जवान …(नैना ,1973)
ये मेरा दिल यार का दीवाना …(डॉन,1978)
तौबा तौबा क्या हो गाहों ने दो जो होता है …(मिस्टर नटवरलाल,1979)

दो लव सो की है दिल …(दी ग्रेट गाम्ब्लेर ,1979)
न बोले तुम न मैं ने … (बातों बातों में,1979)
जब छाए मेरा जादू …(लूटमार,1980)
ख़ातूबा ख़ातूबा …(अलीबाबा और 40 चोर,1980)
दिल चीज़ क्या है… (उमरावजान,1981)
इन आंखों की मस्ती… (उमरावजान,1981)
उडी बाबा उडी बाबा प्यार का हवा में उठा जाए… (विधाता,1982)
जवानी जाने मन …(नमक हलाल,1982)
मेरा कुछ सामान तुम्हारे… (एजेसाथ ,1987)
तनहा तनहा… (रंगीला, 1995)
कही आग लगे लग जाये …(ताल ,1999)
राधा कैसे न जले …(लगान ,2001)

आशा भोसले जी को खाना पकाने के नए -नए प्रयोग (कुकिंग एक्सपेरिमेंट्स)करना बहुत पसंद था ,ओर साथ ही क्रिकेट भी। खेलकूद ,खाना पकाने के प्रयोग और "आशाज़ " नाम से विदेशों में रेस्टॉरेंट चेन का संचालन करने जैसी गतिविधियों के कारण उनका जीवन हमेशा सक्रीय रहा। साल 2023 में अपने उन्नीसवीं जन्मदिन के अवसर पर उन्होंने दुबई में लगभग तीन घंड़े लम्बा अपने पसंदीदा गानों का एक लाइव शो भी किया। “ आशा भोसले जब अपने घर पर होती हैं -तो वे अक्सर रसोईघर में ही कोई जादू बिखेरती (खाना पकाती) हुई दिखती हैं। खाना बनाते समय भी वे गुनगुनाती रहती हैं ,तब वे पूरी तरह से एक ठेठ मराठी गृहिणी और प्यारी दादी माँ जैसी नज़र आती हैं। “6

सम्मान एवं पुरस्कार : आशा भोसले ने दो बार सर्वश्रेष्ठ गायिका का राष्टीय पुरस्कार जीता। वह ग्रैमी पुरस्कार के लिए नामांकित होनेवाली पहली भारतीय गायिका भी हैं। 1997 में उस्ताद अली अकबर खान के साथ आए उनके एल्बम लेगसी ने उन्हें इस उपलब्धि तक पहुंचाया। 2006 में यू हाव स्टोलेन माय हार्ट (You’ve stolen my heart) एल्बम के लिए उन्हें दोबारा ग्रैमी नामांकन मिला। साल 2000 में दादा साहेब फाल्के पुरस्कार और 2008 में पद्मविभूषण से नवाजकर देश ने इस अद्वितीय गायिका को सम्मानित किया। 2011 में उन्हें संगीत के इतिहास में विश्व में सर्वाधिक गाने रिकॉर्डिंग करनेवाली गायिका के रूप में गिनीज बुक ऑफ़ वर्ल्ड रिकार्ड्स में उनका नाम शामिल किया गया। जोधपुर नेशनल यूनिवर्सिटी द्वारा उन्हें डी लिट्(डॉक्टर ऑफ़ लेटर्स)की मानद उपाधि से सम्मानित की। इसके आलावा 2015 में बी बी सी ने उन्हें दुनिया की सबसे प्रेरक100 महिलाओं की सूची में शामिल की। कला के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए उन्हें फ्रेडी मर्क्युरीअवार्ड (Freddie Mercury Award) से भी सम्मानित किया गया।

आशा भोसलेजी के निधन के बाद प्रधन्मन्त्री नरेंद्र मोदीजी सहित कई प्रमुख हस्तियों ने उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। कुछ प्रतिक्रियाएं नीचे दी गयी हैं।

गायक उदित नारायण बोले - “ संगीत जगत के लिए एक युग का अंत है। “7

अनु मलिक ने कहा _” मेरी माँ चली गयी थी में ,और मुझे लगता है फिर से मेरी माँ चली गयी। यह बहुत दुखद खबर है। “8

हरिहरन बोले – “ आशाजी ने कभी छोटा महसूस नहीं होने दिया। “ 9

संगीतकार ललित पंडित बोले – “ आशा भोसले आखिरी दिग्गज थीं ,उनके जैसा न कोई था ,न होगा। “ 10

निर्देशक रमेश सिप्पी बोले – " संगीत की वह जादूई आवाज़ हमेशा के लिए शांत हो गई। " 11

संक्षेप : आशा भोसले जी का 12 अप्रैल 2026 को निधन हो गया ,वे अपने पीछे स्वर्ग जैसी सुंदरता से भरे गीत छोड़ गए हैं। सिनेमा क्षेत्र में विशेषकर हिंदी सिनेमा के गानों के लिए आशा भोसले जी का निधन एक कभी न पूरी होनेवाली क्षति हैं। बच्चे हों या बुज़ुर्ग ,आशा जी के गानों को हमेशा यद् रख जाएगा। इसमें कोई संदेह नहीं है कि उनके अत्यंत मधुर गानों को आनेवाली पीढियां गुनगुनाती रहेंगी। उस अमर संगीतज्ञ की यादों के सामने मैं अपना शीश झुकाता हूँ। प्रिय गायिका को सप्रेम विधाई।

सन्दर्भ :

1. स्वरस्वामिनी आशा ,मंजिरी अमे होटे,प्रसाद महाडकर , 2024,डिंपल पब्लिकेशन , पृ 24
2. आशा भोसले "ए म्यूज़िकल बायोग्राफी -राजू भरतन,2016, है हाउस पब्लिशर्स ,इंडिया पृ.78
3. हिंदी सिनेमा का इतिहास और संगीत ,डॉ रमेशकुमार , 2018,राधाकृष्ण प्रकाशन ,नई दिल्ली ,पृ .142
4. आर डी बर्मन ' द मान ,द म्यूज़िक ,अनिरुद्ध भट्टचार्य और बालाजी विट्टल ,2011 , हरपरकॉलिन्स इंडिया ,पृ.186
5. हिंदी सिनेमा का इतिहास और संगीत ,डॉ रमेशकुमार,2018 ,राधाकृष्ण प्रकाशन ,नई दिल्ली ,पृ. 145
6. आशा भोसले 'ए लाईफ़ इन म्यूज़िक ,रम्य सरमा,2024 ,एमेरीलिस ,मंजुल पब्लिशिंग हाउस ,पृ.64

स्रोत :

7.मलयाला मनोरमा -मलयालम भाषा का दैनिक समाचार पत्र,अप्रैल 13,2026

8.दैनिक भास्कर - हिंदी भाषा का दैनिक समाचार पत्र ,अप्रैल 13,2026

9.दीपिका - मलयालम भाषा का दैनिक समाचार पत्र,अप्रैल 13,2026

10.दैनिक भास्कर - हिंदी भाषा का दैनिक समाचार पत्र ,अप्रैल 13,2026

11.केरला कौमुदी -मलयालम भाषा का दैनिक समाचार पत्र,अप्रैल 13,2026

12. विकिपीडिया

Mob:9447120285

E-mail : santyjoseph@aloysiuscollege.ac.in

www.bohalshodhmanjusha.com Bohal Shodh Manjusha ISSN: 2395-7115
Impact Factor: 8.642 June 2026 Page No. : 150-153
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

शांता कुमार के उपन्यास ‘लाजो’ में कांगड़ी संस्कृति एवं लोकजीवन

ऋषभ
पीएच-डी० शोधार्थी,
हिन्दी-विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़

शोध सार-

हिमाचल प्रदेश के प्रसिद्ध साहित्यकार शान्ता कुमार द्वारा रचित ‘लाजो’ एक महत्त्वपूर्ण आंचलिक उपन्यास है, जिसमें कांगड़ा क्षेत्र की संस्कृति का अत्यंत प्रभावशाली चित्रण किया गया है। कांगड़ा घाटी हिमालयी प्रदेश की सबसे सुंदर घाटियों में से एक है, जिसमें सामने नीले आकाश में चमकती धौलाधार पर्वतमाला की बर्फीली चोटियाँ, बगल में पीले सरसों के खेत तथा चारों ओर फैली हरियाली कांगड़ा घाटी की प्राकृतिक छवि को अत्यंत मनोहारी बनाती है। जनसंख्या की दृष्टि से ‘कांगड़ा’ हिमाचल प्रदेश का सबसे बड़ा जिला है और जितना यह विशाल है, उतनी ही व्यापक इसकी संस्कृति भी है। यहाँ के रीति-रिवाज़, विवाह-संस्कार, रहन-सहन, खान-पान, लोकविश्वास और लोकभाषा अपनी विशिष्ट पहचान रखते हैं।

‘लाजो’ उपन्यास केवल लाजो नामक स्त्री के व्यक्तिगत जीवन-संघर्ष की कथा नहीं है, अपितु यह सम्पूर्ण कांगड़ा क्षेत्र की लोकसंस्कृति, सामाजिक मान्यताओं, पारिवारिक मूल्यों तथा ग्राम्य जीवन का सजीव सांस्कृतिक दस्तावेज भी है। लेखक ने कांगड़ा जिले की पालमपुर तहसील के खैरा गाँव का अत्यंत सूक्ष्म और यथार्थ चित्रण करते हुए वहाँ की परम्पराओं और सांस्कृतिक चेतना को कथा के माध्यम से प्रस्तुत किया है। उपन्यास का प्रारम्भ गाँव की शांत और सुहानी सुबह तथा ‘रास्ता-पूजन’ जैसी स्थानीय परम्परा से होता है, जिससे पाठक प्रारम्भ से ही पहाड़ी संस्कृति के वातावरण में प्रवेश कर जाता है।

बीज शब्द- लोक संस्कृति, रीति-रिवाज़, खान-पान, रहन-सहन, लोकगीत, परम्पराएँ, धार्मिक आस्था

प्रस्तावना

“पुराने समय में कांगड़ा जिला में तीन प्रकार के विवाह होते थे। इन्हें (1) पुण्य विवाह (2) बरीणा (3) बट्टा-सट्टा के नाम से पुकारा जाता था। पुण्य विवाह में कन्या पक्ष वर पक्ष से कोई धन राशि या भूमि आदि का लेनदेन नहीं करता था तथा कन्यादान पुण्य कार्य के रूप में किया जाता था। यह प्रथा उच्च राजपूत कुलों तथा उच्च ब्राह्मणों में थी...परन्तु वर्तमान में विवाह के सारे प्राचीन रिवाज़ समाप्त प्रायः है। आज अन्तर्जातिए विवाह तथा प्रेम विवाह का प्रचलन हो रहा है।”[i] इस प्रकार लेखक ने भी ‘लाजो’ उपन्यास में पुण्य विवाह की संस्कृति का अत्यंत विस्तृत और

प्रभावशाली चित्रण किया है। लाजो और प्यारचंद का विवाह कांगड़ा क्षेत्र की सांस्कृतिक चेतना और सामाजिक परम्पराओं का प्रतीक बनकर सामने आता है। विवाह के पश्चात् लाजो का 'अन्द्रोन' अर्थात् वधू-गृह प्रवेश करवाया जाता है। इस अवसर पर गाँव की स्त्रियाँ सामूहिक रूप से एकत्रित होती हैं और परम्परागत विधियों के अनुसार नववधू का स्वागत करती हैं। लेखक लिखते हैं- "लाजो के विवाह के बाद उसका 'अन्द्रोन' (वधू का गृह प्रवेश) भी बड़ी दादी ने करवाया था। उसकी पालकी घर के बाहर रख दी गई थी। पुरोहित ने ठीक लग्न व मुहूर्त निकाला था। उसी के अनुसार बड़ी दादी के नेतृत्व में सब स्त्रियाँ इकट्ठी हुई थीं। दूल्हा प्यारचंद पीछे व दुलहन लाजो को आगे खड़ा कर दिया गया था। एक लाल डोरी के घेरे में दोनों को घेर दिया गया था।"[ii] यह वर्णन कांगड़ा की विवाह-परम्पराओं, धार्मिक आस्था तथा स्त्रियों की सामूहिक भागीदारी को स्पष्ट करता है। लाल डोरी का घेरा दाम्पत्य जीवन की पवित्रता और सामाजिक स्वीकृति का प्रतीक माना गया है। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि विवाह-संस्कार केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक एकता के माध्यम भी हैं।

उपन्यास में कांगड़ा क्षेत्र की जातीय व्यवस्था तथा सामाजिक संरचना का भी अत्यंत यथार्थ चित्रण हुआ है। कांगड़ा घाटी में विभिन्न जातियाँ निवास करती हैं और प्रत्येक जाति की अपनी अलग सांस्कृतिक पहचान है। विशेष रूप से ब्राह्मण समाज की जातीय श्रेष्ठता की भावना तथा अंतर्जातीय विवाह के प्रति विरोध को लेखक ने स्पष्ट रूप से चित्रित किया है। जब प्रेम लाजो से पुनर्विवाह करना चाहता है, तब उसके पिता कहते हैं- "एक ब्राह्मण के लड़के का विवाह अपनी बिरादरी से बाहर राजपूत के घर और वह भी एक विधवा से, यह कैसे हो सकता है? आखिर यह सब तूने सोच कैसे लिया?"[iii] यह कथन तत्कालीन समाज की संकीर्ण मानसिकता तथा विधवा-विवाह के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण को उजागर करता है। इससे स्पष्ट होता है कि सामाजिक मान्यताएँ व्यक्ति की भावनाओं और व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर किस प्रकार नियंत्रण रखती थीं। लेखक ने इस प्रसंग के माध्यम से समाज में व्याप्त जातीय भेद-भाव और रूढ़िवादी सोच को भी सामने रखा है।

हिमाचली संस्कृति में धार्मिक विश्वासों और लोकपरम्पराओं का अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान है। 'लाजो' उपन्यास में बावड़ी-पूजन, रास्ता पूजन तथा अन्य लोकरीतियों का अत्यंत सुंदर और स्वाभाविक चित्रण हुआ है। विवाह के बाद नई बहू को इन परम्पराओं का पालन करना पड़ता है, जिससे वह समाज और परिवार का अभिन्न अंग बन जाती है। लाजो को बावड़ी की पूजा के लिए तैयार करते हुए बड़ी दादी कहती है "लाड़ी घडोलुए चुक कने बाँई जो पूजने ताई चल। सारियाँ जनासाँ तिज्जो निहाला कर दियाँ।"[iv] अर्थात् (बहू, घड़ा उठाओ और बावड़ी की पूजा करने के लिए चलो, सब स्त्रियाँ तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही हैं।) यह परम्परा केवल धार्मिक क्रिया नहीं, बल्कि नई बहू को सामाजिक जीवन से जोड़ने का सांस्कृतिक माध्यम भी है। इसी प्रकार रास्ता-पूजन की परम्परा का उल्लेख करते हुए बड़ी दादी लाजो से कहती है- "लाड़िए रोज भियागा उठी करि बत्ता दी पूजा करा कर। नोई नूहं इक्की साले तिकर बत्ता दी पूजा ज़रुर कर दी।"[v]अर्थात् (नई बहू एक वर्ष तक प्रतिदिन रास्ते की पूजा अवश्य करती है।) यह परम्परा कांगड़ा क्षेत्र की लोकमान्यताओं, धार्मिक विश्वासों तथा सांस्कृतिक निरंतरता का प्रतीक है। इन रीति-रिवाज़ों से यह भी स्पष्ट होता है कि हिमाचली संस्कृति में प्रकृति, मार्ग, जलस्रोत और दैनिक जीवन की वस्तुओं तक को पवित्र माना जाता है।

भारतीय संस्कृति में स्त्रियों का श्रृंगार और आभूषण विशेष महत्त्व रखते हैं। 'लाजो' उपन्यास में हिमाचली स्त्रियों के श्रृंगार और आभूषणों का अत्यंत सुंदर और जीवंत चित्रण मिलता है। लेखक लिखते हैं- "वह बहुत यत्न करती कि उसके चलने की आवाज न हो, तो भी उसके हाथों की लाल चूड़ियाँ खनक जातीं और पाँव की पायजेबें झनक उठतीं।"[vi] इस वर्णन से नववधू लाजो की लज्जा, सौन्दर्य और स्त्री-सुलभ कोमलता का परिचय मिलता है।

चूड़ियाँ और पायजेब केवल आभूषण नहीं, बल्कि सुहाग और स्त्री की सामाजिक पहचान के प्रतीक भी हैं। हिमाचली स्त्रियों के श्रृंगार में सादगी और सौन्दर्य का अद्भुत समन्वय दिखाई देता है।

लोकगीत किसी भी समाज की सामूहिक चेतना और सांस्कृतिक आत्मा के परिचायक होते हैं। 'लाजो' उपन्यास में विवाह तथा अन्य सामाजिक अवसरों पर गाए जाने वाले लोकगीतों का अत्यंत प्रभावपूर्ण चित्रण हुआ है। लेखक लिखते हैं- "रंग-बिरंगे कपड़े पहने स्त्रियों की वह मस्त टोली गीत गाती हुई बावड़ी की ओर चली थी। लाजो के साथ चलने के लिए लड़कियों में होड़-सी लगी थी। ग्राम्य गीतों की सुरीली ऊँची धुन में गाती हुई सब स्त्रियाँ बावड़ी पर पहुँचीं।"[vii] यह चित्रण हिमाचली लोकजीवन की सामूहिकता, उत्सवप्रियता और सांस्कृतिक जीवंतता को प्रकट करता है। लोकगीतों के माध्यम से स्त्रियाँ अपनी भावनाओं को व्यक्त करती हैं तथा सामाजिक सम्बन्धों को और अधिक मधुर बनाती हैं। लोकगीत ग्रामीण जीवन के आनंद, प्रेम, पीड़ा और उत्सव का सजीव दस्तावेज होते हैं।

ग्रामीण संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता उसकी आत्मीयता और सहजता होती है। 'लाजो' उपन्यास में बड़ी दादी का चरित्र इसी आत्मीयता और हास्य-विनोद का प्रतीक बनकर उभरता है। जब लाजो बावड़ी से पानी भरकर लाती है, तब बड़ी दादी प्यारचंद से कहती है-"मुनुआँ, लाड़ियाँ दे सिरे ते घड़ा तू उतार। ए भी आज ज़रुरी रिवाज़ ही है।"[viii] अर्थात् (बेटा, बहू के सिर से घड़ा तुम उतारो। यह भी आज का आवश्यक रिवाज़ है।) इस प्रसंग में ग्रामीण जीवन की सहजता, आत्मीयता तथा हँसी-मजाक की संस्कृति दिखाई देती है। इससे पारिवारिक सम्बन्धों में अपनापन और मधुरता का भाव उत्पन्न होता है।

उपन्यास में कांगड़ा क्षेत्र की ग्रामीण अर्थव्यवस्था और हस्तनिर्मित वस्तुओं का भी उल्लेख मिलता है। यहाँ मिट्टी, बाँस तथा स्थानीय सामग्री से निर्मित वस्तुएँ लोगों की आजीविका का महत्त्वपूर्ण साधन हैं। लेखक लिखते हैं- "लाजो ने घड़ा उठाया और बावड़ी की ओर चल पड़ी। हाथ में एक 'बिन्ना' (पत्तों का बना हुआ नरम गोल गिद्दा जिसे सिर पर घड़े के नीचे रखा जाता है ताकि घड़ा सिर में न चुभे) व घड़ा लिए लाजो गोल-गोल पत्थरों के बने रास्ते पर बढ़ती गई।"[ix] यहाँ 'बिन्ना' स्थानीय हस्तकला और ग्रामीण कारीगरी का प्रतीक है। इससे स्पष्ट होता है कि ग्रामीण जीवन प्रकृति और हस्तनिर्मित वस्तुओं से गहराई से जुड़ा हुआ है।

'लाजो' उपन्यास में ग्रामीण समाज की सामूहिकता और मानवीय संवेदनाओं का अत्यंत मार्मिक चित्रण हुआ है। गाँव के लोग दूसरों के दुःख को अपना दुःख समझते हैं तथा हर संकट में एक-दूसरे का सहारा बनते हैं। प्यारचंद की मृत्यु के बाद पूरा गाँव लाजो और उसके ससुर के दुःख में सहभागी बनता है। बड़ी दादी उन्हें समझाते हुए कहती है "तुसां दोयों दिले जो पक्का करा। होर कुण है तुसां दा? जीण-मरण माहणुए दे हथे नी।"[x] अर्थात् (आप दोनों अपना दिल मजबूत करें। जीवन-मरण मनुष्य के हाथ में नहीं होता।) यह कथन ग्रामीण समाज की सहानुभूति, सामूहिकता तथा मानवीय मूल्यों को प्रकट करता है। गाँव में आज भी 'साथी हाथ बढ़ाना' जैसी भावना जीवित दिखाई देती है।

भाषा किसी भी संस्कृति की आत्मा होती है। 'लाजो' उपन्यास की एक प्रमुख विशेषता इसमें प्रयुक्त कांगड़ी बोली है। शान्ता कुमार ने बड़ी दादी जैसे पात्रों के माध्यम से स्थानीय भाषा को अत्यंत सहज और मधुर रूप में प्रस्तुत किया है। दादी रमेश से कहती है- "सच गलाया तें। ए कुड़ियाँ पराया धन हुंदा। पाला-पोसा कने भेजी दिआ।"[xi] यह संवाद केवल भाषा की मधुरता को ही व्यक्त नहीं करता, बल्कि ग्रामीण समाज की सांस्कृतिक मानसिकता और सामाजिक सोच को भी स्पष्ट करता है। कांगड़ी बोली के प्रयोग से उपन्यास की आंचलिकता और अधिक सशक्त हो उठती है।

निष्कर्ष

अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि शान्ता कुमार द्वारा रचित लाजो कांगड़ा की संस्कृति का अत्यंत सशक्त और जीवंत दस्तावेज है। इसमें कांगड़ा क्षेत्र के रीति-रिवाज़, विवाह-संस्कार, लोकगीत, लोकभाषा, धार्मिक मान्यताएँ, सामाजिक संरचना, स्त्री-जीवन, सामूहिकता तथा मानवीय संवेदनाओं का अत्यंत प्रभावशाली चित्रण हुआ है। लेखक ने लाजो के जीवन-संघर्ष के माध्यम से सम्पूर्ण हिमाचली समाज की सांस्कृतिक चेतना को पाठकों के सामने प्रस्तुत किया है। यह उपन्यास केवल साहित्यिक दृष्टि से ही महत्त्वपूर्ण नहीं, बल्कि सांस्कृतिक अध्ययन की दृष्टि से भी अत्यंत उपयोगी है। वास्तव में 'लाजो' उपन्यास हिमाचल प्रदेश, विशेषतः कांगड़ा क्षेत्र की लोकसंस्कृति का सजीव सांस्कृतिक दस्तावेज सिद्ध होता है।

संदर्भ सूची

[i] शर्मा, रूप, हिम दर्पण, मंडी, करन प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2012 पृष्ठ संख्या 392

[ii] कुमार, शांता, लाजो, नयी दिल्ली, भारतीय प्रकाशन संस्थान, संस्करण 2011, पृष्ठ संख्या 7-8

[iii] वही पुस्तक पृष्ठ संख्या 84

[iv] वही पुस्तक पृष्ठ संख्या 9

[v] वही पुस्तक पृष्ठ संख्या 8

[vi] वही पुस्तक पृष्ठ संख्या 7

[vii] वही पुस्तक पृष्ठ संख्या 10

[viii] वही पुस्तक पृष्ठ संख्या 10

[ix] वही पुस्तक पृष्ठ संख्या 9

[x] वही पुस्तक पृष्ठ संख्या 12

[xi] वही पुस्तक पृष्ठ संख्या 76

पिन-160014, फोन 9816828822

www.bohalshodhmanjusha.com Bohal Shodh Manjusha ISSN: 2395-7115
Impact Factor: 8.642 June 2026 Page No. : 154-160
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

राजस्थान में जल संकट एवं सतत जल प्रबंधन की चुनौतियाँ: एक विश्लेषणात्मक एवं नीतिगत अध्ययन

सलोचना यादव
(UGC NET 2018 भूगोल)
POST -CHHAPOLI TEH-UDAIPURWATI,
DISTRICT -JHUNJHUNU PIN CODE-333302

सारांश (Abstract)
जल मानव जीवन, आर्थिक विकास और पारिस्थितिकीय संतुलन का आधारभूत संसाधन है। राजस्थान, जो भारत का सबसे बड़ा राज्य है, जल संसाधनों की सीमित उपलब्धता और बढ़ती जल मांग के कारण गंभीर जल संकट का सामना कर रहा है। राज्य का अधिकांश भाग शुष्क एवं अर्ध-शुष्क जलवायु क्षेत्र में स्थित है, जहाँ वर्षा कम और अत्यंत अनियमित होती है। बढ़ती जनसंख्या, तीव्र शहरीकरण, कृषि में भूजल का अत्यधिक दोहन, जलवायु परिवर्तन, जल गुणवत्ता में गिरावट तथा पारंपरिक जल संरक्षण प्रणालियों की उपेक्षा ने इस संकट को और गहरा कर दिया है।
यह अध्ययन राजस्थान में जल संकट की वर्तमान स्थिति, उसके प्रमुख कारणों, सामाजिक-आर्थिक प्रभावों तथा सतत जल प्रबंधन की चुनौतियों का विश्लेषण करता है। यह द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है, जिसमें केंद्रीय भूजल बोर्ड (CGWB), जल शक्ति मंत्रालय, राजस्थान सरकार की रिपोर्टों तथा विभिन्न शोध अध्ययनों का उपयोग किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि राज्य की लगभग 70% भूजल इकाइयाँ अतिदोहित श्रेणी में हैं, जिससे भूजल असंतुलन गंभीर रूप ले चुका है। अध्ययन यह निष्कर्ष प्रस्तुत करता है कि वर्षा जल संचयन, सूक्ष्म सिंचाई, भूजल पुनर्भरण, सामुदायिक सहभागिता, प्रभावी जल शासन तथा पारंपरिक जल संरचनाओं के पुनर्जीवन के बिना राजस्थान में जल संकट का स्थायी समाधान संभव नहीं है।

मुख्य शब्द (Keywords):
जल संकट, राजस्थान, भूजल, सतत विकास, जल प्रबंधन, वर्षा जल संचयन, जलवायु परिवर्तन

1.प्रस्तावना

जल पृथ्वी पर जीवन एवं विकास का आधार है। वर्तमान समय में जनसंख्या वृद्धि, शहरीकरण, औद्योगीकरण

तथा जलवायु परिवर्तन के कारण जल संकट एक गंभीर वैश्विक समस्या बन गया है। राजस्थान, जो भारत का सबसे बड़ा राज्य है, सीमित जल संसाधनों एवं शुष्क जलवायु के कारण जल संकट से विशेष रूप से प्रभावित है। राज्य में उपलब्ध जल संसाधनों और बढ़ती जल मांग के बीच बढ़ता असंतुलन विकास के लिए चुनौती बन रहा है। यह संकट केवल प्राकृतिक कारणों का परिणाम नहीं है, बल्कि भूजल के अत्यधिक दोहन, असंतुलित जल उपयोग तथा प्रबंधन संबंधी कमियों से भी जुड़ा हुआ है।

2. **अध्ययन की पृष्ठभूमि**

राजस्थान भारत का सबसे बड़ा राज्य है, जो देश के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का लगभग 10.4 प्रतिशत भाग घेरता है, जबकि इसके पास उपलब्ध जल संसाधनों का हिस्सा अपेक्षाकृत बहुत कम है। राज्य का अधिकांश भाग शुष्क एवं अर्द्ध-शुष्क जलवायु क्षेत्र में स्थित है, जहाँ वर्षा की मात्रा कम तथा वितरण असमान है। पश्चिमी राजस्थान में औसत वार्षिक वर्षा 100–300 मिमी तक सीमित रहती है, जबकि दक्षिणी एवं दक्षिण-पूर्वी क्षेत्रों में अपेक्षाकृत अधिक वर्षा होती है। पिछले कुछ दशकों में कृषि विस्तार, शहरीकरण तथा ट्यूबवेल आधारित सिंचाई के कारण भूजल पर निर्भरता बढ़ी है, जिससे जल संसाधनों पर दबाव लगातार बढ़ रहा है।

3. **शोध समस्या**

राजस्थान में जल संकट एक गंभीर एवं बहुआयामी समस्या के रूप में उभर रहा है। भूजल स्तर में निरंतर गिरावट, जल गुणवत्ता में ह्रास तथा पारंपरिक जल स्रोतों के क्षरण ने जल उपलब्धता को प्रभावित किया है। बढ़ती जनसंख्या, शहरीकरण एवं कृषि विस्तार के कारण जल की मांग लगातार बढ़ रही है, जबकि उपलब्ध संसाधन सीमित हैं। विभिन्न सरकारी योजनाओं एवं प्रयासों के बावजूद जल संकट की समस्या पूरी तरह नियंत्रित नहीं हो पाई है। इस संदर्भ में यह अध्ययन इस प्रश्न का उत्तर खोजने का प्रयास करता है कि क्या वर्तमान जल प्रबंधन व्यवस्था राजस्थान के जल संकट का प्रभावी एवं दीर्घकालिक समाधान प्रदान करने में सक्षम है।

4. **अध्ययन के उद्देश्य**

(A). राजस्थान में जल संकट की वर्तमान स्थिति का विश्लेषण करना।

(B). जल संकट के प्रमुख कारणों की पहचान करना।

(C). जल संकट के सामाजिक एवं आर्थिक प्रभावों का अध्ययन करना।

(D). सतत जल प्रबंधन की चुनौतियों का मूल्यांकन करना।

(E). नीतिगत सुझाव प्रस्तुत करना।

5. **साहित्य समीक्षा**

राजस्थान में जल संकट पर विभिन्न शोधकर्ताओं द्वारा व्यापक अध्ययन किए गए हैं। अधिकांश अध्ययनों में जल संकट को राज्य की प्रमुख पर्यावरणीय एवं विकासात्मक चुनौती माना गया है। Chinnasamy et al. (2015) के अध्ययन में पाया गया कि सीमित वर्षा तथा भौगोलिक परिस्थितियों के कारण वर्षा जल का बड़ा भाग भूजल पुनर्भरण में परिवर्तित नहीं हो पाता, जिससे जल उपलब्धता प्रभावित होती है। इसी प्रकार Coyte et al. (2019) ने राजस्थान के भूजल में फ्लोराइड, नाइट्रेट एवं अन्य रासायनिक प्रदूषकों की उच्च मात्रा को सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए गंभीर चुनौती बताया। हाल के अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि भूजल का अत्यधिक दोहन, जलवायु परिवर्तन तथा बढ़ती जल मांग राज्य में जल संकट को और अधिक जटिल बना रहे हैं।

6 **शोध अंतराल (Research Gap)**

राजस्थान में जल संकट से संबंधित उपलब्ध साहित्य में भूजल दोहन, जल गुणवत्ता तथा जलवायु परिवर्तन के प्रभावों पर अनेक अध्ययन किए गए हैं। हालांकि, अधिकांश शोध किसी एक विशिष्ट पहलू तक सीमित हैं। जल संकट के सामाजिक, आर्थिक, पर्यावरणीय एवं नीतिगत आयामों को एकीकृत दृष्टिकोण से विश्लेषित करने वाले अध्ययन अपेक्षाकृत कम हैं। विशेष रूप से सतत जल प्रबंधन की चुनौतियों तथा उनके व्यावहारिक समाधान पर व्यापक शोध का अभाव देखा जाता है। प्रस्तुत अध्ययन इस शोध अंतराल को भरने का प्रयास करता है तथा राजस्थान में जल संकट और सतत जल प्रबंधन का समग्र विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

7 अनुसंधान पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन वर्णनात्मक (Descriptive) एवं विश्लेषणात्मक (Analytical) प्रकृति का है। अध्ययन में राजस्थान के जल संकट तथा सतत जल प्रबंधन से संबंधित द्वितीयक आँकड़ों का उपयोग किया गया है। आवश्यक जानकारी केंद्रीय भूजल बोर्ड (CGWB), जल शक्ति मंत्रालय, राजस्थान सरकार की रिपोर्टों, शोध पत्रिकाओं, नीति दस्तावेजों तथा विभिन्न सरकारी प्रकाशनों से प्राप्त की गई है। अध्ययन में उपलब्ध साहित्य एवं आँकड़ों का विश्लेषण करने हेतु विषयवस्तु विश्लेषण (Content Analysis), तुलनात्मक विश्लेषण तथा नीतिगत विश्लेषण की विधियों का प्रयोग किया गया है। इन विधियों के माध्यम से जल संकट के कारणों, प्रभावों तथा प्रबंधन संबंधी चुनौतियों का समग्र मूल्यांकन किया गया है।

8. **राजस्थान में जल संकट की वर्तमान स्थिति**

राजस्थान में भूजल संकट गंभीर स्तर पर पहुँच चुका है। केंद्रीय भूजल बोर्ड के अनुसार राज्य की 302 भूजल इकाइयों में से 214 अतिदोहित (Over-Exploited) श्रेणी में हैं, जबकि केवल 37 इकाइयाँ सुरक्षित हैं। वर्ष 2024 में अधिक वर्षा के बावजूद भूजल स्तर में अपेक्षित सुधार नहीं हुआ।

तालिका 1: राजस्थान की भूजल इकाइयों की स्थिति :-

श्रेणी	**इकाइयों की संख्या**	**प्रतिशत (%)**
सुरक्षित (Safe)	**37**	12.25
अर्द्ध-गंभीर (Semi-Critical)	**21**	6.95
गंभीर (Critical)	**27**	8.94
अतिदोहित (Over-Exploited	**214**	70.86
लवणीय (Saline)	**3**	0.99
कुल	302	100

9. जल संकट के प्रमुख कारण

राजस्थान में जल संकट एक जटिल एवं बहुआयामी समस्या है, जिसके पीछे प्राकृतिक, सामाजिक, आर्थिक तथा प्रशासनिक कारकों का संयुक्त प्रभाव है। राज्य में जल संकट के प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं—

1. **भूजल का अत्यधिक दोहन** – सिंचाई, पेयजल एवं औद्योगिक आवश्यकताओं के लिए भूजल पर अत्यधिक निर्भरता के कारण जल स्तर लगातार गिर रहा है।

2. **कम एवं असमान वर्षा** – राज्य के अधिकांश भागों में वर्षा कम तथा असमान रूप से वितरित होती है, जिससे जल उपलब्धता प्रभावित होती है।
3. **जलवायु परिवर्तन** – बढ़ते तापमान, अनियमित मानसून तथा सूखे की बढ़ती घटनाएँ जल संसाधनों पर अतिरिक्त दबाव डालती हैं।
4. **बढ़ती जनसंख्या एवं शहरीकरण** – जनसंख्या वृद्धि और शहरी विस्तार के कारण जल की मांग निरंतर बढ़ रही है।
5. **कृषि क्षेत्र में जल का अकुशल उपयोग** – पारंपरिक सिंचाई पद्धतियों तथा अधिक जल मांग वाली फसलों के कारण जल की बड़ी मात्रा व्यर्थ होती है।
6. **पारंपरिक जल संरक्षण संरचनाओं का क्षरण** – जोहड़, बावड़ी, टांका एवं तालाब जैसी संरचनाओं की उपेक्षा से जल संचयन क्षमता घट रही है।
7. **जल प्रदूषण एवं गुणवत्ता में गिरावट** – फ्लोराइड, नाइट्रेट, लवणता तथा औद्योगिक प्रदूषण जल की उपयोगिता को कम करते हैं।
8. **जल प्रबंधन संबंधी कमियाँ** – विभागीय समन्वय की कमी, कमजोर नियमन एवं योजनाओं के अपर्याप्त क्रियान्वयन से समस्या बढ़ती है।
9. **औद्योगिकीकरण एवं आर्थिक गतिविधियाँ** – बढ़ते उद्योग जल संसाधनों पर अतिरिक्त दबाव उत्पन्न करते हैं।
10. **जन-जागरूकता का अभाव** – जल संरक्षण के प्रति सीमित जागरूकता एवं जल के अपव्यय से संकट और गंभीर हो जाता है।

10. तालिका 1: राजस्थान में प्रमुख जल गुणवत्ता समस्याएँ एवं उनके प्रभाव

क्र.सं.	**जल गुणवत्ता समस्या**	**प्रमुख प्रभावित क्षेत्र**	**प्रमुख प्रभाव**
1	फ्लोराइड प्रदूषण	नागौर, अजमेर, जयपुर, सीकर, झुंझुनूं	दंत एवं अस्थि फ्लोरोसिस, स्वास्थ्य समस्याएँ
2	लवणता	जैसलमेर, बाड़मेर, बीकानेर, गंगानगर	पेयजल अनुपयुक्त, कृषि उत्पादकता में कमी
3	नाइट्रेट प्रदूषण	अलवर, भरतपुर, जयपुर, टोंक, दौसा	स्वास्थ्य जोखिम, विशेषकर बच्चों में रोग
4	उच्च TDS	जैसलमेर, बाड़मेर, बीकानेर, नागौर	जल की गुणवत्ता एवं स्वाद में गिरावट
5	आर्सेनिक प्रदूषण	गंगानगर, हनुमानगढ़ एवं सीमावर्ती क्षेत्र	त्वचा रोग, कैंसर एवं अन्य स्वास्थ्य जोखिम

11. **सामाजिक प्रभाव**

जल संकट का समाज पर व्यापक प्रभाव पड़ता है। दूषित एवं अपर्याप्त जल के कारण फ्लोरोसिस, जलजनित रोग तथा कुपोषण जैसी स्वास्थ्य समस्याएँ बढ़ती हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में विशेषकर बालिकाओं और महिलाओं का काफी समय जल संग्रहण में व्यतीत होता है, जिससे शिक्षा एवं अन्य गतिविधियाँ प्रभावित होती हैं। इसके अतिरिक्त, जल की

कमी के कारण ग्रामीण आबादी बेहतर जीवन एवं रोजगार की तलाश में शहरी क्षेत्रों की ओर पलायन करने को मजबूर होती है।

12. **आर्थिक प्रभाव**

राजस्थान में जल संकट का प्रभाव राज्य की अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों पर प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से पड़ता है। कृषि, पशुपालन, उद्योग, पर्यटन तथा ऊर्जा जैसे प्रमुख आर्थिक क्षेत्र जल पर निर्भर हैं, इसलिए जल की कमी आर्थिक विकास के लिए गंभीर चुनौती बन जाती है।

कृषि क्षेत्र में सिंचाई जल की कमी के कारण फसल उत्पादन एवं उत्पादकता में गिरावट आती है। भूजल स्तर नीचे जाने से सिंचाई की लागत बढ़ती है, जिससे किसानों की आय प्रभावित होती है। **पशुपालन क्षेत्र** में जल एवं चारे की कमी के कारण पशुओं की उत्पादकता घटती है तथा ग्रामीण परिवारों की आय कम होती है।

औद्योगिक क्षेत्र में जल की उपलब्धता कम होने से उत्पादन लागत बढ़ती है तथा नए निवेश की संभावनाएँ प्रभावित होती हैं। जल संकट के कारण कई उद्योगों को अतिरिक्त लागत पर जल प्राप्त करना पड़ता है। **पर्यटन उद्योग** भी प्रभावित होता है, क्योंकि झीलों एवं जलाशयों के जल स्तर में कमी से पर्यटन आकर्षण घटता है।

ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि एवं पशुपालन की आय कम होने से **ग्रामीण-शहरी पलायन** बढ़ता है, जिससे शहरी क्षेत्रों पर अतिरिक्त दबाव पड़ता है। दूषित जल के कारण स्वास्थ्य समस्याएँ बढ़ती हैं, जिससे परिवारों एवं सरकार का **स्वास्थ्य व्यय** बढ़ जाता है।

जल संकट से निपटने के लिए सरकार को पेयजल आपूर्ति, जल संरक्षण परियोजनाओं, पाइपलाइन विस्तार तथा राहत कार्यों पर अधिक खर्च करना पड़ता है। इसके अतिरिक्त, जल प्राप्ति की बढ़ती लागत तथा निवेश में कमी आर्थिक विकास की गति को प्रभावित करती है। परिणामस्वरूप कृषि, उद्योग एवं सेवा क्षेत्र प्रभावित होते हैं, जिससे राज्य के **सकल राज्य घरेलू उत्पाद (GSDP)** पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इस प्रकार जल संकट राजस्थान के आर्थिक विकास एवं सतत प्रगति के लिए एक गंभीर चुनौती है।

13. **सतत जल प्रबंधन की चुनौतियाँ (Challenges of Sustainable Water Management)**

राजस्थान में सतत जल प्रबंधन जल संकट के समाधान के लिए अत्यंत आवश्यक है, परंतु इसके प्रभावी क्रियान्वयन में कई गंभीर चुनौतियाँ मौजूद हैं। राज्य में पेयजल, सिंचाई और औद्योगिक आवश्यकताओं के लिए भूजल पर अत्यधिक निर्भरता के कारण इसका स्तर लगातार गिर रहा है और कई क्षेत्रों में जल गुणवत्ता भी खराब हो रही है। इसके साथ ही जलवायु परिवर्तन, अनियमित मानसून और असमान वर्षा वितरण जल उपलब्धता को और अधिक अस्थिर बना रहे हैं।

भौगोलिक असमानता के कारण पश्चिमी राजस्थान में जल की भारी कमी है, जबकि अन्य क्षेत्रों में अपेक्षाकृत अधिक उपलब्धता है, जिससे संतुलित जल प्रबंधन कठिन हो जाता है। कृषि क्षेत्र में पारंपरिक सिंचाई पद्धतियों के कारण जल की दक्षता कम है और अधिक जल-आधारित फसलों का उत्पादन संसाधनों पर दबाव बढ़ाता है।

पारंपरिक जल संरचनाओं जैसे जोहड़, बावड़ी और तालाबों का क्षरण भी एक बड़ी समस्या है, जिससे स्थानीय जल संरक्षण प्रणाली कमजोर हो रही है। जल गुणवत्ता में फ्लोराइड, नाइट्रेट और लवणता जैसी समस्याएँ स्वास्थ्य और उपयोगिता दोनों को प्रभावित करती हैं।

इसके अतिरिक्त संस्थागत समन्वय की कमी, वित्तीय संसाधनों का अभाव, आधुनिक तकनीकों (GIS, AI, IoT) का सीमित उपयोग तथा कमजोर जल शासन व्यवस्था भी प्रमुख बाधाएँ हैं। जन-जागरूकता और सामुदायिक सहभागिता की कमी के कारण जल संरक्षण प्रयास अपेक्षित सफलता नहीं प्राप्त कर पाते।

14. **नीतिगत सुझाव (Policy Recommendations) –**

- **वर्षा जल संचयन को अनिवार्य बनाना:** सभी सरकारी भवनों, शहरी परिसरों और नए निर्माणों में वर्षा जल संचयन प्रणाली अनिवार्य की जाए।
- **भूजल दोहन पर नियंत्रण:** नए बोरवेल/ट्यूबवेल के लिए लाइसेंस प्रणाली लागू हो तथा अतिदोहित क्षेत्रों में सख्त प्रतिबंध लगाया जाए।
- **डिजिटल निगरानी व्यवस्था:** भूजल उपयोग की निगरानी हेतु डिजिटल मीटरिंग और नियमित ऑडिट प्रणाली विकसित की जाए।
- **भूजल पुनर्भरण को बढ़ावा:** चेक डैम, परकुलेशन टैंक, रिचार्ज कुएँ एवं वाटरशेड विकास कार्यक्रमों का विस्तार किया जाए।
- **कृषि में जल दक्षता:** ड्रिप और स्प्रिंकलर सिंचाई तकनीकों को व्यापक रूप से अपनाया जाए और किसानों को अनुदान दिया जाए।
- **फसल विविधीकरण:** कम जल-आवश्यकता वाली फसलों (बाजरा, दालें, तिलहन) को बढ़ावा दिया जाए।
- **पारंपरिक जल संरचनाओं का पुनर्जीवन:** जोहड़, बावड़ी, टांका, तालाब आदि का संरक्षण एवं पुनर्निर्माण किया जाए।
- **शहरी जल प्रबंधन सुधार:** स्मार्ट मीटरिंग, पाइपलाइन लीकेज नियंत्रण और अपशिष्ट जल पुनर्चक्रण को बढ़ावा दिया जाए।
- **जल गुणवत्ता सुधार:** फ्लोराइड व नाइट्रेट प्रभावित क्षेत्रों में जल शोधन संयंत्र स्थापित किए जाएँ।
- **आधुनिक तकनीकों का उपयोग:** GIS, AI, IoT आधारित जल निगरानी प्रणाली विकसित की जाए।
- **सामुदायिक सहभागिता:** जल संरक्षण को जन-आंदोलन बनाकर पंचायत स्तर पर समितियाँ गठित की जाएँ।
- **जलवायु अनुकूलन रणनीति:** सूखा प्रबंधन और जलवायु-लचीली कृषि को नीति में शामिल किया जाए।
- **एकीकृत जल शासन (IWRM):** सभी विभागों के बीच समन्वय और डेटा आधारित निर्णय प्रणाली लागू की जाए।

15. **निष्कर्ष**

राजस्थान का जल संकट प्राकृतिक परिस्थितियों और मानव गतिविधियों दोनों का परिणाम है। अनियमित वर्षा, जलवायु परिवर्तन और मरुस्थलीय भौगोलिक स्थिति के साथ-साथ भूजल का अत्यधिक दोहन, तीव्र जनसंख्या वृद्धि

और कृषि में जल की अधिक खपत इस समस्या को और गंभीर बना रहे हैं। इसके अतिरिक्त जल गुणवत्ता में गिरावट भी एक बड़ी चुनौती है, जिससे पेयजल उपलब्धता प्रभावित होती है।

यदि वर्तमान प्रवृत्तियाँ इसी प्रकार जारी रहीं, तो भविष्य में यह संकट राज्य के सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय विकास के लिए गंभीर बाधा बन सकता है। इसलिए सतत जल प्रबंधन को प्राथमिकता देना अत्यंत आवश्यक है। इसमें वर्षा जल संचयन, भूजल पुनर्भरण, आधुनिक सिंचाई तकनीक, पारंपरिक जल संरचनाओं का संरक्षण तथा प्रभावी जल नीति का क्रियान्वयन महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। साथ ही सामुदायिक सहभागिता और आधुनिक तकनीक का उपयोग जल सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए अनिवार्य है।

संदर्भ (Reference)

- Chinnasamy, P., Maheshwari, B., & Prathapar, S. (2015). *Water*, 7(10), 5547–5565.
- Coyte, R. M., et al. (2019). *Science of the Total Environment*, 688, 1216–1227.
- Central Ground Water Board. (2025). *Dynamic Ground Water Resources Assessment Report*.
- Government of India, Ministry of Jal Shakti. (2025). *Ground Water Assessment Report*.
- Government of Rajasthan, Water Resources Department. (n.d.). *Various reports*.
- Sharma, P., et al. (2025). *Hydrogeological Evaluation and Management of Groundwater Resources in Rajasthan*.
- United Nations. (2024). *World Water Development Report*.
- Central Ground Water Board (CGWB). (n.d.). *Ground Water Year Book*.
- NITI Aayog. (2019). *Composite Water Management Index*.
- Singh, R., & Kumar, A. (n.d.). *Water Resources and Climate Change in Rajasthan*.
- Intergovernmental Panel on Climate Change (IPCC). (2023). *Assessment Reports*.
- Ministry of Jal Shakti, Government of India. (n.d.). *Water Resources Publications*.
- Rajasthan State Action Plan on Climate Change. (n.d.). *Government of Rajasthan*.
- United Nations-Water. (n.d.). *World Water Development Reports*.

Email - **yadav1salochana@gmail.com**
Mobile number – 7689020607

www.bohalshodhmanjusha.com Bohal Shodh Manjusha ISSN: 2395-7115
Impact Factor: 8.642 June 2026 Page No. : 161-167
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

ਗੁਰੂ ਅਰਜਨ ਦੇਵ ਜੀ ਦੀਆਂ ਵਾਰਾਂ ਵਿਚ ਪੇਸ਼ ਅਧਿਆਤਮਕ ਚਿੰਤਨ

ਡਾ ਅਮਨਦੀਪ ਕੌਰ
ਨਿਗਰਾਨ,
ਗੁਰਸਾਹਿਬ ਸਿੰਘ
ਖੋਜਾਰਥੀ,
ਪੰਜਾਬੀ ਵਿਭਾਗ, ਗੁਰੂ ਕਾਸ਼ੀ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ, ਤਲਵੰਡੀ ਸਾਬੋ(ਪੰਜਾਬ)

ਵਾਰ ਸ਼ਬਦ ਦੇ ਅਰਥ ਕਈ ਤਰ੍ਹਾਂ ਕੀਤੇ ਜਾਂਦੇ ਹਨ, ਜਿਵੇਂ ਵਾਰ ਕਰਨਾ, ਵਾਰ ਰੋਕਣਾ, ਹੱਲਾ ਕਰਨਾ, ਵਾਰ-ਵਾਰ ਕਹਿਣਾ, ਦਰਵਾਜ਼ਾ, ਜੱਸ ਜਾਂ ਉਸਤਤੀ ਕਰਨਾ, ਵਾਰੇ ਜਾਣਾ ਆਦਿ। ਪ੍ਰਮੁੱਖ ਰੂਪ ਵਿਚ ਵਾਰ ਇਕ ਅਜਿਹੀ ਰਚਨਾ ਹੈ ਜਿਸ ਵਿਚ ਕਿਸੇ ਸੂਰਮੇ ਦੀ ਸੂਰਮਤਾਈ ਦਾ ਬਿਆਨ ਛੰਦ ਵੱਧ ਰੂਪ ਵਿੱਚ ਕੀਤਾ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਭਾਈ ਕਾਨ੍ਹ ਸਿੰਘ ਨਾਭਾ ਦੇ ਮਹਾਨ ਕੋਸ਼ ਵਿੱਚ ਲਿਖਿਆ ਹੈ, "ਯੁੱਧ ਸੰਬੰਧੀ ਕਾਵਿਯ ਉਹ ਰਚਨਾ ਜਿਸ ਵਿਚ ਸੂਰਬੀਰਤਾ ਦਾ ਵਰਣਨ ਹੋਵੇ, ਵਾਰ ਸ਼ਬਦ ਦਾ ਅਰਥ ਪਉੜੀ ਛੰਦ ਵੀ ਹੋਇਆ ਹੈ, ਕਿਉਂਕਿ ਯੋਧਿਆਂ ਦੀ ਸੂਰਬੀਰਤਾ ਦਾ ਜੱਸ ਪੰਜਾਬੀ ਕਵੀਆਂ ਨੇ ਬਹੁਤ ਕਰਕੇ ਇਸੇ ਛੰਦ ਵਿਚ ਲਿਖਿਆ ਹੈ। ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਵਿਚ ਕਰਤਾਰ ਦੀ ਮਹਿਮਾ ਭਰੀ ਬਾਣੀ ਜੋ ਪਉੜੀ ਛੰਦਾਂ ਨਾਲ ਸਲੋਕ ਮਿਲਾ ਕੇ ਲਿਖੀ ਗਈ ਹੈ ਵਾਰ ਨਾਮ ਤੋਂ ਪ੍ਰਸਿੱਧ ਹੈ।"1

ਵਾਰ ਸ਼ਬਦ ਦੀ ਉਤਪਤੀ ਵਿਦਵਾਨਾਂ ਨੇ ਵਾਰ ਦੀ ਧਾਤੂ ਤੋਂ ਹੀ ਮੰਨੀ ਹੈ ਇਸ ਦੇ ਅਰਥ ਕਈ ਤਰ੍ਹਾਂ ਕੀਤੇ ਹਨ। ਡਾਕਟਰ ਗੋਪਾਲ ਸਿੰਘ ਦਰਦੀ ਅਨੁਸਾਰ, "ਵਾਰ ਜਿਸ ਦਾ ਮੁੱਢ ਸ਼ਾਇਦ ਯੂਨਾਨੀ ਓੜ ਭਾਵ ਮਿੱਥ ਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਆਮ ਕਰਕੇ ਬਹਾਦਰ ਯੋਧਿਆਂ ਦੀ ਉਸਤਤੀ ਗਾਉਣ ਲਈ ਰਚੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ। ਅੰਗਰੇਜ਼ੀ ਵਿਚ ਓੜ ਦੀ ਬਣਤਰ ਕਿਸੇ ਹੱਦ ਤੱਕ ਗੁੰਝਲਦਾਰ ਤੇ ਵਧੀਕ ਫੈਲਾਓ ਵਿਚ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਪਰ ਪੰਜਾਬੀ ਵਿਚ ਵਾਰਾਂ ਦਾ ਆਸਾ (ਸਿਵਾਏ ਗੁਰੂ ਸਾਹਿਬਾਨ ਦੀਆਂ ਰਚੀਆਂ ਵਾਰਾਂ ਦੇ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਦਾ ਆਸਾ ਜਾਂ ਮੂਲ ਮਨੋਰਥ ਰੱਬ ਦੀ ਉਸਤਤੀ ਗਾਉਣ ਜਾਂ ਵਹਿਮ ਭਰਮ ਦੇ ਵਿਰੁੱਧ ਮਨੁੱਖੀ ਮਨਾਂ ਨੂੰ ਤਿਆਰ ਕਰਨਾ ਹੈ) ਯੁੱਧਾਂ ਘੋਲਾਂ ਦੇ ਇਨ-ਬਿਨ ਨਕਸ਼ੇ ਚਿਤਰਨ ਤੇ ਖਾਸ-ਖਾਸ ਵਿਅਕਤੀਆਂ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਸਬੰਧੀ ਉਹ ਵਾਰ ਲਿਖੀ ਗਈ ਹੋਵੇ ਦੀ ਬਹਾਦਰੀ ਦੇ ਜੱਸ ਗਾਉਣੇ ਰਿਹਾ ਹੈ।"2

ਵਾਰ ਪੰਜਾਬੀ ਦਾ ਇੱਕ ਪ੍ਰਸਿੱਧ ਕਾਵਿ ਰੂਪ ਹੈ। ਡਾਕਟਰ ਰਤਨ ਸਿੰਘ ਜੱਗੀ ਅਨੁਸਾਰ 'ਉਹ ਵਾਰਤਾ ਜੋ ਆਪਣੇ ਆਪ ਵਿੱਚ ਕਿਸੇ ਹੱਲੇ ਜਾਂ ਟੱਕਰ ਦਾ ਜ਼ਿਕਰ ਕਰਦੀ ਹੋਵੇ ਅਤੇ ਪਾਠਕਾਂ ਜਾਂ ਸਰੋਤਿਆਂ ਨੂੰ ਉਤਸ਼ਾਹਿਤ ਕਰੇ ਪੰਜਾਬੀ ਵਾਰ ਕਾਵਿ ਰੂਪ ਹੈ।'3 ਗੁਰੂ ਕਾਵਿ ਦੇ ਰਚਨਾ-ਕਾਲ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਬੀਰ ਰਸੀ ਵਾਰਾਂ ਦੀ ਸਿਰਜਨਾ ਕੀਤੀ ਗਈ ਸੀ। ਜਿਵੇਂ ਰਾਏ ਕਮਾਲ ਦੀ ਮੌਜ ਦੀ ਵਾਰ, ਟੁੰਡੇ ਅਸਰ ਰਾਜੇ ਦੀ ਵਾਰ, ਸਿਕੰਦਰ ਬਿਰਾਹਮ ਦੀ ਵਾਰ, ਲਲਾ ਬਹਿਲੀਆ ਦੀ ਵਾਰ, ਹਸਨੇ ਮਹਿਮੇ ਦੀ ਵਾਰ ਅਤੇ ਮੂਸੇ ਦੀ ਵਾਰ ਆਦਿ ਗੁਰਮਤਿ ਕਾਵਿ ਵਿਚ ਸਭ ਤੋਂ ਵੱਧ ਵਾਰਾਂ ਰਚਣ ਦਾ ਸਿਹਰਾ ਭਾਈ ਗੁਰਦਾਸ ਦੇ ਸਿਰ ਸਜਿਆ। ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਨੇ 39 ਵਾਰਾਂ ਦੀ ਰਚਨਾ ਕੀਤੀ ਹੈ। ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਵਿੱਚ 22 ਵਾਰਾਂ ਦਰਜ ਕੀਤੀਆਂ ਗਈਆਂ ਹਨ। ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਵਿੱਚੋਂ ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਦੇਵ ਜੀ ਦੀਆਂ ਤਿੰਨ, ਗੁਰੂ ਅਮਰਦਾਸ ਜੀ ਦੀਆਂ ਚਾਰ, ਗੁਰੂ ਰਾਮਦਾਸ ਜੀ ਦੀਆਂ ਅੱਠ, ਗੁਰੂ ਅਰਜਨ ਦੇਵ ਜੀ ਦੀਆਂ ਛੇ ਅਤੇ ਇੱਕ ਵਾਰ ਸੱਤਾ ਅਤੇ ਬਲਵੰਡ ਦੀ ਹੈ। ਇਸ ਕਾਵਿ ਰੂਪ ਵਿੱਚ ਯੁੱਧ ਕਹਾਣੀ ਜੰਗੀ ਵਾਤਾਵਰਣ ਅਤੇ ਬਹਾਦਰੀ ਦੇ ਕਾਰਨਾਮਿਆਂ ਦਾ ਵਰਨ ਕੀਤਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਵਾਰ ਲਈ ਪ੍ਰਮਾਣਿਕ ਛੰਦ ਪਉੜੀ ਹੈ। ਬਹਾਦਰੀ ਦੇ ਕਾਰਨਾਮਿਆਂ ਦੀ ਪੇਸ਼ਕਾਰੀ ਜ਼ਿਆਦਾਤਰ ਪਉੜੀ ਛੰਦ ਵਿੱਚ ਹੀ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਅਧਿਆਤਮਕ ਵਾਰਾਂ ਦਾ ਰੂਪ ਅਤੇ ਪ੍ਰਕਿਰਤੀ ਬਿਲਕੁਲ ਵੱਖਰੀ ਕਿਸਮ ਦੀ ਹੈ। ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਵਿੱਚ ਦਰਜ ਵਾਰਾਂ ਵਿੱਚ ਪਰਮਾਤਮਾ ਦਾ ਜੱਸ ਗਾਇਣ ਕਰਨ ਲਈ ਪਉੜੀ ਛੰਦ ਹੀ ਵਰਤਿਆ ਗਿਆ।

ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਦੇਵ ਜੀ ਨੇ ਜੋ ਸਿੱਖੀ ਦੀ ਨੀਂਹ ਰੱਖੀ ਸੀ ਉਸ ਲਈ ਉਹਨਾਂ ਨੇ ਆਪਣੀ ਬਾਣੀ ਦਾ ਸੁਰ ਹਰ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੇ ਡਰ ਭੈ ਤੋਂ ਮੁਕਤ ਬੁਲੰਦ ਅਤੇ ਵਿਦਰੋਹੀ ਰੱਖਿਆ। ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਦੇਵ ਜੀ ਦਾ ਵਿਦਰੋਹੀ ਸੁਰ ਆਪਣੇ ਆਪ ਵਿੱਚ ਸ਼ਕਤੀਸ਼ਾਲੀ ਸੰਦੇਸ਼ ਹੈ ਇਸ ਦੇ ਉਲਟ ਪੰਚਮ ਪਾਤਸ਼ਾਹ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਅਰਜਨ ਦੇਵ ਜੀ ਨੇ ਸਰਬ ਸਾਂਝੇ ਹਿਤ ਸਾਂਝੀਵਾਲਤਾ ਸਰਬ ਸਤਿਕਾਰ ਅਤੇ ਮਨੁੱਖ ਮਾਤਰ ਦੀ ਬਰਾਬਰੀ ਦਾ ਸੁਰ ਉੱਚਾ ਕੀਤਾ। ਗੁਰੂ ਅਰਜਨ ਦੇਵ ਜੀ ਦੀ ਬਾਣੀ ਵਿੱਚ ਅਨੇਕਾਂ ਅਜਿਹੇ ਸੰਕੇਤ ਮੌਜੂਦ ਹਨ ਜੋ ਮਨੁੱਖ ਮਾਤਰ ਨੂੰ ਈਰਖਾ ਲਾਲਚ ਹਉਮੈ ਤੇ ਸਵਾਰਥ ਦਾ ਤਿਆਗ ਕਰਕੇ ਮਿਲਣਸਾਰਤਾ ਵੱਲ ਪ੍ਰੇਰਿਤ ਕਰਦੇ ਹਨ। ਜਾਹਰ ਹੈ ਗੁਰੂ ਅਰਜਨ ਦੇਵ ਜੀ ਦੀ ਕਹਿਣ ਸ਼ੈਲੀ ਪ੍ਰੇਰਨਾਜਨਕ ਅਤੇ ਮਿੱਠੀ ਸੀਰਤ ਵਾਲੀ ਹੈ ਇਹਨਾਂ ਦੀ ਬਾਣੀ ਵਿੱਚ ਵਿਅੰਗ ਤਾਂ ਹੈ ਪਰ ਤਿੱਖੀ ਕੌੜੀ ਟਿੱਪਣੀ ਨਹੀਂ।

ਗੁਰੂ ਅਰਜਨ ਦੇਵ ਜੀ ਨੇ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਵਿੱਚ ਦਰਜ 22 ਵਿਚੋਂ 6 ਵਾਰਾਂ ਦੀ ਰਚਨਾ ਕੀਤੀ ਹੈ। ਗੁਰੂ ਅਰਜਨ ਦੇਵ ਜੀ ਦੀ ਬਾਣੀ ਬਾਕੀ ਸਾਰੇ ਗੁਰੂ ਸਾਹਿਬਾਨਾਂ ਨਾਲੋਂ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਵਿੱਚ ਜ਼ਿਆਦਾ ਮਾਤਰਾ ਵਿੱਚ ਦਰਜ ਹੈ। ਗੁਰੂ ਅਰਜਨ ਦੇਵ ਜੀ ਨੇ 30 ਰਾਗਾਂ ਵਿਚ ਬਾਣੀ ਦੀ ਰਚਨਾ ਕੀਤੀ। ਜਿੰਨਾ ਵਿਚੋਂ ਛੇ ਰਾਗਾਂ ਵਿੱਚ ਉਹਨਾਂ ਦੀਆਂ ਵਾਰਾਂ ਹਨ। ਇਹਨਾਂ ਵਾਰਾਂ ਦੇ ਵਿਸ਼ਿਆਂ ਦੀ ਗੱਲ ਕਰੀਏ ਤਾਂ ਇਹਨਾਂ ਵਾਰਾਂ ਵਿਚ ਆਪ ਜੀ ਦੀ ਬਾਣੀ ਦਾ ਮੁੱਖ ਬਲ ਗੁਰੂ ਸੋਭਾ, ਗੁਰੂ ਨਾਮ, ਗੁਰੂ ਹੁਕਮ, ਗੁਰਬਾਣੀ ਗਾਇਨ, ਗੁਰੂ ਸੇਵਾ, ਗੁਰੂ ਸਿੱਖ, ਗੁਰੂ ਸੰਗਤ ਦੇ ਮਿਲਾਪ ਆਦਿ ਨੂੰ ਦ੍ਰਿੜ੍ਹ ਕਰਵਾਉਣ ਉਪਰ ਹੈ। ਅਜਿਹੇ ਸੁਨੇਹੇ ਗੁਰੂ ਅਰਜਨ ਦੇਵ ਜੀ ਤੋਂ ਪੂਰਬ ਵਰਤੀ ਗੁਰੂ ਸਾਹਿਬਾਨ ਦੀ ਬਾਣੀ ਰਚਨਾ ਤੋਂ ਵੀ ਪ੍ਰਾਪਤ ਹੁੰਦੇ ਹਨ। ਗੁਰੂ ਅਰਜਨ ਦੇਵ ਜੀ ਨੇ ਇਸ ਕਾਵਿ ਰੂਪ ਦੁਆਰਾ ਨਾਮ ਸਿਮਰਨ ਕਰਕੇ ਪ੍ਰਭੂ ਪ੍ਰਾਪਤੀ ਦੇ ਮਾਰਗ ਨੂੰ ਦ੍ਰਿੜ੍ਹ ਕਰਵਾਇਆ। ਗੁਰੂ ਸਾਹਿਬ ਸੰਸਾਰੀ ਪਦਾਰਥਾਂ ਦਾ ਮੋਹ ਤਿਆਗ ਕੇ ਸੁਆਸ-ਸੁਆਸ ਪਰਮਾਤਮਾ ਦਾ ਸਿਮਰਨ ਕਰਨ ਵਾਲੇ ਜੀਵਾਂ ਨੂੰ ਪੂਰਨ ਗੁਰੂ ਅਥਵਾ ਪੂਰਨ ਮਨੁੱਖ ਹੋਣ ਦਾ ਉਪਦੇਸ਼ ਦਿੰਦੇ ਹਨ।

ਜਿਨਾ ਸਾਸਿ ਗਿਰਾਸਿ ਨ ਵਿਸਰੈ ਹਰਿ ਨਾਮਾਂ ਮਨਿ ਮੰਤੁ।।

ਧੰਨੁ ਸਿ ਸੇਈ ਨਾਨਕਾ ਪੂਰਨੁ ਸੋਈ ਸੰਤੁ॥ 4

ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਅਰਜਨ ਦੇਵ ਜੀ ਨੇ ਗਉੜੀ ਕੀ ਵਾਰ ਅਤੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀਆਂ ਬਾਕੀ ਦੀਆਂ ਸਾਰੀਆਂ ਵਾਰਾਂ ਦੇ ਮੰਗਲਾਚਰਨ ਵਿਚ ਪਰਮਾਤਮਾ ਦੇ ਇੱਕ ਹੋਣ ਦੀ ਅਤੇ ਸਤਿਗੁਰੂ ਦੀ ਮਿਹਰ ਨਾਲ ਹੀ ਉਸ ਪਰਮਾਤਮਾ ਨੂੰ ਪਾਏ ਜਾਣ ਦੀ ਤਾਕੀਦ ਕੀਤੀ ਹੈ।

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ॥

ਇਸ ਉਪਰੰਤ ਉਹਨਾਂ ਦੀਆਂ ਵਾਰਾਂ ਵਿਚ ਅਗਲਾ ਤੱਤ ਟੱਕਰ ਦੇ ਰੂਪ ਵਿੱਚ ਪੇਸ਼ ਹੋਇਆ ਹੈ। ਜਿਸ ਵਿਚ ਉਹਨਾਂ ਨੇ ਗੁਰਮੁਖ ਅਤੇ ਮਨਮੁਖ ਬੰਦੇ ਦੇ ਚੰਗੇ ਅਤੇ ਭੈੜੇ ਕਰਮਾਂ ਦਾ ਟਕਰਾਅ ਬੰਦੇ ਦੇ ਅੰਦਰ ਚਲਦੇ ਹੋਏ ਦਵੰਦ ਨੂੰ ਪੇਸ਼ ਕੀਤਾ ਹੈ। ਗੁਰੂ ਅਰਜਨ ਦੇਵ ਜੀ ਨੇ ਗਉੜੀ ਕੀ ਵਾਰ ਵਿਚ ਸਤਸੰਗਤ ਦੀ ਮਹਾਨਤਾ ਗੁਰਮੁਖ ਅਤੇ ਮਨਮੁਖ ਦੀ ਦਸ਼ਾ ਬਾਰੇ ਦਰਸਾਇਆ ਹੈ। ਭਾਵੇਂ ਪਰਮਾਤਮਾ ਸਭ ਵਿਚ ਸਭ ਥਾਂ ਵਿਆਪਕ ਹੈ, ਪਰ ਫਿਰ ਵੀ ਉਹੀ ਮਨੁੱਖ ਚੰਗੇ ਰਹਿ ਸਕਦੇ ਹਨ ਜੋ ਸਤਸੰਗਤ ਕਰਦੇ ਹਨ। ਉਹਨਾਂ ਨੇ ਆਪਣੀ ਇਸ ਵਾਰ ਵਿਚ ਸਤਸੰਗਤ ਨਾਲ ਜਾਣੂ ਕਰਵਾਇਆ ਹੈ। ਸਤਸੰਗਤ ਵਿੱਚ ਜਾਣ ਨਾਲ ਗੁਰੂ ਦੇ ਦੱਸੇ ਰਾਹ ਉੱਪਰ ਚੱਲਣ ਨਾਲ ਮਨੁੱਖ ਦਾ ਸੁਭਾਅ ਨਾਮ ਸਿਮਰਨ ਵਾਲਾ ਬਣ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਜੇ ਮਨੁੱਖ ਪਰਮਾਤਮਾ ਦਾ ਨਾਮ ਭੁੱਲ ਜਾਵੇ ਤਾਂ ਮਾਇਆ ਉਸ ਉਪਰ ਅਧਿਕਾਰ ਕਰ ਲੈਂਦੀ ਹੈ। ਉਹ ਮਨੁੱਖ ਨੂੰ ਕਾਬੂ ਕਰ ਲੈਂਦੀ ਹੈ, ਜਿਸ ਕਾਰਨ ਮਨੁੱਖ ਵਿਕਾਰ ਹੰਢਾਉਂਦਾ ਹੈ, ਦੁਖੀ ਰਹਿੰਦਾ ਹੈ। ਪਰ ਜਦੋਂ ਉਹ ਪਰਮਾਤਮਾ ਦੇ ਨਾਮ ਨੂੰ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰ ਲੈਂਦਾ ਹੈ ਤਾਂ ਉਸ ਨੂੰ ਸੋਝੀ ਹੋ ਜਾਂਦੀ ਹੈ ਕਿ ਇਹ ਸਭ ਕੁਝ ਝੂਠ ਹੈ, ਸਾਰੇ ਰਸ ਕੌੜੇ ਤੇ ਦੁਖਦਾਈ ਹਨ। ਨਾਮ ਹੀ ਅਸਲੀ ਜੀਵਨ ਰੂਪੀ ਸਫ਼ਰ ਦਾ ਖਰਚਾ ਹੈ ਇਸ ਦੀ ਬਰਕਤ ਨਾਲ ਹੀ ਮਾਇਆ ਦੀ ਤ੍ਰਿਸ਼ਨਾ ਕਾਮਾਦਿੱਕ ਵਿਕਾਰਾਂ ਤੋਂ ਛੁਟਕਾਰਾ ਪਾਇਆ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ, ਮੌਤ ਦਾ ਡਰ ਦੂਰ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਮਨ ਪਰਮਾਤਮਾ ਦੀ ਹਜ਼ੂਰੀ ਵਿਚ ਲੀਨ ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਹਰ ਸਮੇਂ ਤਨ-ਮਨ ਵਿੱਚ ਖੇੜਾ ਰਹਿੰਦਾ ਹੈ। ਜੋ ਮਨੁੱਖ ਪਰਮਾਤਮਾ ਦਾ ਨਾਮ ਸਿਮਰਨ ਕਰਦੇ ਹਨ ਉਹਨਾਂ ਦੇ ਪੈਰਾਂ ਦੀ ਧੂੜ ਲੱਖਾਂ ਕਰੋੜਾਂ ਤੀਰਥਾਂ ਨਾਲੋਂ ਜ਼ਿਆਦਾ ਪਵਿੱਤਰ ਹੁੰਦੀ ਹੈ, ਕਿਉਂਕਿ ਅਜਿਹੇ ਮਨੁੱਖ ਪਰਮਾਤਮਾ ਨੂੰ ਅੰਗ ਸੰਗ ਵੇਖਦੇ ਹਨ। ਜਿਸ ਕਰਕੇ ਕਿਸੇ ਦਾ ਦਿਲ ਨਹੀਂ ਦੁਖਾਉਂਦੇ ਸਭ ਨਾਲ ਪਿਆਰ ਤੇ ਨਿਮਰਤਾ ਨਾਲ ਰਹਿੰਦੇ ਹਨ। ਉਹਨਾਂ ਦਾ ਮਨ ਪਵਿੱਤਰ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਨਾਮ ਸਿਮਰਨ ਵਾਲੇ ਮਨੁੱਖ ਹੀ ਮਾਇਆ ਦੇ ਕਿਲ੍ਹੇ ਉੱਪਰ ਜਿੱਤ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰਦੇ ਹਨ।

ਸਾਧਸੰਗਿ ਮਿਲਿ ਪਾਈਐ ਮਨਿ ਸਚੇ ਭਾਣਾ॥

ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭ ਸਰਣਾਗਤੀ ਸਦ ਸਦ ਕੁਰਬਾਣਾ॥1॥5

ਗੁਰੂ ਅਰਜਨ ਦੇਵ ਜੀ ਨੇ ਆਪਣੀ ਗੁਜਰੀ ਕੀ ਵਾਰ ਵਿਚ ਗੁਰਮੁਖ ਅਤੇ ਮਨਮੁਖ ਜੀਵਾਂ ਅਤੇ ਪਰਮਾਤਮਾ ਤੇ ਗੁਰੂ ਦਾ ਜੱਸ ਗਾਇਨ ਕਰਨ ਬਾਰੇ ਵੀ ਜ਼ਿਕਰ ਕੀਤਾ ਹੈ। ਵੱਡੇ ਵੱਡੇ ਬੰਦਿਆਂ ਤੋਂ ਲੈ ਕੇ ਸਾਰੇ ਜੀਵਾਂ ਤੱਕ ਦੀ ਇਸ ਰੰਗ ਬਿਰੰਗੇ ਜਗਤ ਵਿਚ ਪਰਮਾਤਮਾ ਨੇ ਆਪ ਸਿਰਜਣਾ ਕੀਤੀ ਹੈ। ਉਹਨਾਂ ਨੂੰ ਆਪਣੇ ਹੁਕਮ ਰੂਪੀ ਧਾਗੇ ਵਿੱਚ ਪਰੋਇਆ ਹੈ। ਉਹਨਾਂ ਵਿਚ ਤਾਣੇ ਪੇਟੇ ਵਾਂਗ ਸਮਾਇਆ ਹੋਇਆ ਹੈ। ਉਹ ਅੰਤਰਜਾਮੀ ਹੈ, ਸਭ ਕੁਝ ਉਸੀ ਦੇ ਹੁਕਮ ਅਨੁਸਾਰ ਹੁੰਦਾ ਹੈ, ਕਈ ਜੀਵਾਂ ਨੂੰ ਵਿਕਾਰਾਂ ਵਿੱਚ ਫਸਾ ਕੇ ਖ਼ੁਆਰ ਕਰ ਰਿਹਾ ਹੈ ਕਿਸੇ ਉੱਪਰ ਮਿਹਰ ਕਰਕੇ ਆਪਣਾ ਨਾਮ ਜਪਾ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਇਹ ਸਭ ਉਸ ਦੀ ਰਜਾ ਵਿੱਚ ਹੀ ਹੋ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਮਨੁੱਖ ਦੀ ਕੋਈ ਵੀ ਸਿਆਣਪ ਜਾਂ ਚਲਾਕੀ ਕੰਮ ਨਹੀਂ ਕਰਦੀ। ਜਿਸ ਵਡਭਾਗੀ ਮਨੁੱਖ ਉਪਰ ਪਰਮਾਤਮਾ ਦੀ ਬਖਸ਼ਿਸ਼ ਹੁੰਦੀ ਹੈ ਉਸੇ ਨੂੰ ਹੀ ਉਸ ਸਤਿਗੁਰੂ ਦੀ ਸੰਗਤ ਮਿਲਦੀ ਹੈ। ਗੁਰੂ ਕੋਲ

ਨਾਮ ਦਾ ਅਥਾਹ ਭੰਡਾਰ ਹੈ ਜਿਉਂ-ਜਿਉਂ ਜੀਵ ਗੁਰੂ ਨੂੰ ਆਪਣਾ ਮਨ ਸੌਂਪਦਾ ਹੈ, ਉਸ ਦੀ ਭੈੜੀ ਮੱਤ ਦੂਰ ਹੁੰਦੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ ਤੇ ਉਸ ਨੂੰ ਗੁਰੂ ਨਾਮ ਦੇ ਭੰਡਾਰ ਵਿੱਚੋਂ ਨਾਮ ਦੀ ਬਖਸ਼ਿਸ਼ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਫਿਰ ਅਜਿਹੇ ਨਾਮ ਦੇ ਪਿਆਰੇ ਜੀਵ ਨੂੰ ਨਾਮ ਦਾ ਖ਼ਜ਼ਾਨਾ ਸਾਰੇ ਖ਼ਜ਼ਾਨਿਆਂ ਨਾਲੋਂ ਵੱਧ ਪਿਆਰਾ ਲੱਗਣ ਲੱਗ ਪੈਂਦਾ ਹੈ। ਨਾਮ ਸਿਮਰਨ ਨਾਲ ਮਨ ਸ਼ਾਂਤ ਤੇ ਠੰਡਾ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਸਬਰ ਸੰਤੋਖ ਮਿਲਦਾ ਹੈ। ਜੀਵ ਵਿਕਾਰਾਂ ਵੱਲੋਂ ਆਪਣਾ ਮਨ ਹਟਾ ਕੇ ਪਰਮਾਤਮਾ ਦੀ ਹਜ਼ੂਰੀ ਵਿਚ ਲਗਾਉਂਦਾ ਹੈ ਤੇ ਫਿਰ ਖੋਟੇ ਪਾਸੇ ਨਹੀਂ ਜਾਂਦਾ। ਇਹ ਸਾਰੀ ਸੰਸਾਰਕ ਖੇਡ ਪਰਮਾਤਮਾ ਦੇ ਹੱਥਾਂ ਵਿੱਚ ਹੈ ਉਹ ਆਪਣੀ ਮਰਜ਼ੀ ਨਾਲ ਮਨੁੱਖ ਨੂੰ ਵਿਕਾਰਾਂ ਵੱਲ ਧੱਕਦਾ ਹੈ। ਇਹ ਸਾਰੇ ਕਾਮਾਦਿਕ ਵਿਕਾਰ ਇੰਨੇ ਤਾਕਤਵਰ ਹਨ ਕਿ ਵੱਡੇ ਵੱਡੇ ਤਿਆਗੀ ਵੀ ਇਸ ਦੀ ਮਾਰ ਹੇਠ ਆ ਜਾਂਦੇ ਹਨ। ਇਸ ਤੋਂ ਬਚਾਓ ਦਾ ਰਸਤਾ ਕੇਵਲ ਪਰਮਾਤਮਾ ਦੀ ਕਿਰਪਾ ਸਦਕਾ ਸਤਿਗੁਰੂ ਦੀ ਓਟ ਹੈ ਅਤੇ ਸਤਿਗੁਰੂ ਹੀ ਮਨੁੱਖ ਨੂੰ ਪਰਮਾਤਮਾ ਦਾ ਨਾਮ ਖ਼ਜ਼ਾਨਾ ਦਿੰਦਾ ਹੈ। ਨਾਮ ਅਜਿਹੀ ਦਵਾਈ ਹੈ ਜਿਸ ਨਾਲ ਨਾ ਠੀਕ ਹੋਣ ਵਾਲੇ ਆਤਮਿਕ ਰੋਗ ਵੀ ਠੀਕ ਹੋ ਜਾਂਦੇ ਹਨ। ਨਾਮ ਦੀ ਬਰਕਤ ਨਾਲ ਮਨੁੱਖ ਦਾ ਅੰਦਰ ਖਿੜਿਆ ਰਹਿੰਦਾ ਹੈ, ਜੀਵਨ ਸੁਖੀ ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ, ਕੋਈ ਵੀ ਵਿਕਾਰ ਉਸ ਅਧਿਕਾਰ ਨਹੀਂ ਕਰ ਸਕਦਾ। ਨਾਮ ਨਾਲ ਰੱਤੇ ਮਨੁੱਖ ਅਤੇ ਪਰਮਾਤਮਾ ਇੱਕ ਰੂਪ ਹੋ ਜਾਂਦੇ ਹਨ।

ਹਉ ਮਾਗਉ ਤੁਝੈ ਦਇਆਲ ਕਰਿ ਦਾਸਾ ਗੋਲਿਆ॥
ਨਉ ਨਿਧਿ ਪਾਈ ਰਾਜੁ ਜੀਵਾ ਬੋਲਿਆ॥
ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਦਾਸਾ ਘਰਿ ਘਣਾ॥
ਤਿਨ ਕੈ ਸੰਗਿ ਨਿਹਾਲੁ ਸ੍ਰਵਣੀ ਜਸੁ ਸੁਣਾ॥ 6

ਗੁਰੂ ਅਰਜਨ ਦੇਵ ਜੀ ਜੈਤਸਰੀ ਕੀ ਵਾਰ ਵਿਚ ਗੁਰੂ ਸਾਹਿਬ ਨਾਮ ਦੀ ਮਹਿਮਾ ਕਰਦੇ ਹੋਏ ਗੁਰੂ ਦਾ ਜੱਸ ਵੀ ਕਰਦੇ ਹਨ ਅਤੇ ਨਾਲ ਹੀ ਗੁਰਮੁਖ ਤੇ ਮਨਮੁਖ ਦੀ ਦਸ਼ਾ ਦਾ ਜ਼ਿਕਰ ਵੀ ਕਰਦੇ ਹਨ ਜੀਵ ਨੂੰ ਪਰਮਾਤਮਾ ਦਾ ਨਾਮ ਹੀ ਜਪਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ, ਜੋ ਗੁਰੂ ਦੀ ਸ਼ਰਨ ਪਿਆ ਹੀ ਮਿਲਦਾ ਹੈ। ਪਰਮਾਤਮਾ ਸਭ ਤਾਕਤਾਂ ਦਾ ਮਾਲਕ ਹੈ ਉਸ ਨੇ ਆਪ ਹੀ ਇਸ ਸੰਸਾਰ ਦੀ ਸਿਰਜਣਾ ਕੀਤੀ ਹੈ ਤੇ ਉਹੀ ਸਭ ਪਾਸੇ ਵਿਆਪਕ ਹੈ। ਇਸ ਬਾਰੇ ਜੀਵ ਨੂੰ ਸੋਝੀ ਵੀ ਪਰਮਾਤਮਾ ਆਪ ਹੀ ਦਿੰਦਾ ਹੈ। ਜੀਵ ਇਸ ਨਾਸ਼ਵਾਨ ਸੰਸਾਰ ਦੇ ਮੋਹ ਮਾਇਆ ਅਤੇ ਵਿਕਾਰਾਂ ਵਿਚ ਫਸ ਕੇ ਪਰਮਾਤਮਾ ਨੂੰ ਭੁੱਲ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਤੇ ਇਹੀ ਸਭ ਗੱਲਾਂ ਉਸ ਲਈ ਡਰ ਦਾ ਕਾਰਨ ਬਣਦੀਆਂ ਹਨ। ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਤੋਂ ਉਸ ਨੂੰ ਕੇਵਲ ਦੁੱਖ ਹੀ ਮਿਲਦੇ ਹਨ। ਇਸ ਲਈ ਪਰਮਾਤਮਾ ਕੋਲੋਂ ਉਸ ਦੇ ਨਾਮ ਦੀ ਦਾਤ ਹੀ ਮੰਗਣੀ ਚਾਹੀਦੀ ਹੈ। ਜੇ ਕਿਸੇ ਜੀਵ ਨੂੰ ਦੁਨਿਆਵੀ ਤੌਰ ਤੇ ਸਾਰੇ ਸੁੱਖ ਪ੍ਰਾਪਤ ਹਨ, ਪਰੰਤੂ ਉਸ ਨੇ ਨਾਮ ਨੂੰ ਵਿਸਾਰਿਆ ਹੋਇਆ ਹੈ ਤਾਂ ਉਹ ਗੰਦ ਦੇ ਕੀੜੇ ਦੇ ਸਮਾਨ ਹੈ, ਕਿਉਂਕਿ ਨਾਮ ਤੋਂ ਬਿਨਾਂ ਕਿਸੇ ਨੂੰ ਵੀ ਆਤਮਿਕ ਸੁੱਖ ਦੀ ਪ੍ਰਾਪਤੀ ਨਹੀਂ ਹੈ। ਪਰ ਦੂਜੇ ਪਾਸੇ ਜੇ ਦੁਨਿਆਵੀ ਤੌਰ ਤੇ ਕਿਸੇ ਮਨੁੱਖ ਕੋਲ ਕੁਝ ਵੀ ਨਹੀਂ ਹੈ ਨਾ ਪੈਸਾ ਨਾ ਸਾਕ ਸਬੰਧੀ ਪਰ ਪਰਮਾਤਮਾ ਦੇ ਨਾਮ ਨਾਲ ਭਿੱਜਿਆ ਪਿਆ ਹੈ, ਤਾਂ ਉਹ ਸਭ ਦਾ ਰਾਜਾ ਹੈ। ਸਾਰੀ ਦੁਨਿਆਵੀ ਰਸ ਨਾਮ ਰਸ ਦੇ ਸਾਹਮਣੇ ਫਿੱਕੇ ਹਨ। ਜੀਵ ਅੰਦਰ ਮਾਇਆ ਦੀ ਤ੍ਰਿਸ਼ਨਾ ਵਧਦੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ, ਪਰ ਗੁਰੂ ਦੀ ਕਿਰਪਾ ਨਾਲ ਜਦੋਂ ਜੀਵ ਨਾਮ ਸਿਮਰਦਾ ਹੈ ਤਾਂ ਉਸ ਦੇ ਅੰਦਰੋਂ ਮਾਇਆ ਦਾ ਹਨੇਰਾ ਖ਼ਤਮ ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਜਿਵੇਂ ਮੱਛੀ ਪਾਣੀ ਤੋਂ ਬਿਨਾਂ, ਚਾਤ੍ਰਿਕ ਮੀਂਹ ਦੀ ਬੂੰਦ ਤੋਂ ਬਿਨਾਂ, ਭੌਰਾ ਫੁੱਲ ਤੋਂ ਬਿਨਾਂ ਨਹੀਂ ਰਹਿ ਸਕਦੇ। ਓਵੇਂ ਹੀ ਗੁਰਮੁਖ ਜੀਵ ਨਾਮ ਤੋਂ ਬਿਨਾਂ ਨਹੀਂ ਰਹਿ ਸਕਦੇ। ਉਹ ਜੀਵ ਵਡਭਾਗੀ ਹਨ ਜੋ ਨਾਮ ਸਿਮਰਦੇ ਹਨ ਉਹਨਾਂ ਦਾ ਮਨ ਸ਼ਾਂਤ ਰਹਿੰਦਾ ਹੈ ਤੇ

ਮਾਇਆ ਉਹਨਾਂ ਉੱਪਰ ਆਪਣਾ ਅਸਰ ਨਹੀਂ ਪਾ ਸਕਦੀ। ਇਸ ਲਈ ਜੀਵ ਨੂੰ ਹਮੇਸ਼ਾ ਪਰਮਾਤਮਾ ਕੋਲ ਨਾਮ ਦੀ ਦਾਤ ਦੀ ਅਰਜ਼ ਹੀ ਕਰਨੀ ਚਾਹੀਦੀ ਹੈ।

ਪੂਰਬਿ ਹੋਵੈ ਲਿਖਿਆ ਹਰਿ ਚਰਣ ਸਮਾਉ॥

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਪ੍ਰਭ ਰਾਖਿ ਲੇਹੁ ਨਾਨਕ ਬਲਿ ਜਾਉ॥5॥ *7*

ਆਪਣੀ ਰਾਮਕਲੀ ਦੀ ਵਾਰ ਵਿਚ ਗੁਰੂ ਅਰਜਨ ਦੇਵ ਜੀ ਨੇ ਪਰਮਾਤਮਾ ਦੀ ਮਹਿਮਾ ਕਰਦੇ ਹੋਏ ਨਾਲ ਹੀ ਗੁਰੂ ਅਤੇ ਗੁਰਮੁਖ ਦੀ ਮਹਿਮਾ ਵੀ ਕੀਤੀ ਹੈ। ਮਨਮੁਖ ਦੇ ਜੀਵਨ ਉੱਪਰ ਵੀ ਝਾਤ ਪਾਉਂਦੇ ਹਨ। ਪਰਮਾਤਮਾ ਨੇ ਆਪ ਹੀ ਇਸ ਜਗਤ ਦੀ ਸਿਰਜਣਾ ਕੀਤੀ ਹੈ। ਉਹ ਸਰਬ ਵਿਆਪਕ ਤੇ ਸਭ ਕੁਝ ਆਪੇ-ਆਪ ਹੀ ਹੈ ਉਹ ਸਭ ਨੂੰ ਰਿਜ਼ਕ ਦੇਣ ਵਾਲਾ ਤੇ ਸਭ ਦਾ ਰਖਵਾਲਾ ਹੈ, ਸਭ ਦੇ ਅੰਗ ਸੰਗ ਹੈ। ਉਸ ਤੋਂ ਕਿਸੇ ਕਿਸਮ ਦਾ ਲੁਕਾ ਛੁਪਾ ਨਹੀਂ ਹੋ ਸਕਦਾ ਸੰਸਾਰ ਵਿਚ ਅਨੇਕਾਂ ਵਿਕਾਰ ਹਨ, ਪਰ ਜਿਸ ਜੀਵ ਉੱਪਰ ਪਰਮਾਤਮਾ ਮਿਹਰ ਕਰਦਾ ਹੈ ਉਹ ਉਸ ਅੰਦਰ ਆਤਮਿਕ ਬਲ ਬਖ਼ਸ਼ ਕੇ ਉਸ ਨੂੰ ਇਹਨਾਂ ਤੋਂ ਮੁਕਤ ਕਰਵਾ ਦਿੰਦਾ ਹੈ। ਪਰੰਤੂ ਇਹਨਾਂ ਤੋਂ ਮੁਕਤੀ ਵੀ ਤਦ ਹੀ ਹੁੰਦੀ ਹੈ ਜੇ ਜੀਵ ਗੁਰੂ ਦੀ ਸ਼ਰਨ ਪੈ ਕੇ ਪਰਮਾਤਮਾ ਦਾ ਨਾਮ ਜਪੇ ਅਜਿਹੇ ਨਾਮ ਸਿਮਰਨ ਵਾਲੇ ਜੀਵ ਦੀ ਸੰਗਤ ਕਰਨ ਨਾਲ ਹੋਰ ਵੀ ਕਈ ਜੀਵ ਨਾਮ ਸਿਮਰਨ ਨੂੰ ਆਪਣਾ ਜੀਵਨ ਆਸਰਾ ਬਣਾ ਲੈਂਦੇ ਹਨ। ਨਾਮ ਸਿਮਰਨ ਵਾਲੇ ਜੀਵ ਨੂੰ ਮਿਲ ਕੇ ਵਿਕਾਰਾਂ ਨਾਲ ਭਰੇ ਹੋਏ ਮਨ ਵਾਲਾ ਜੀਵ ਵੀ ਪਵਿੱਤਰ ਹੋ ਜਾਂਦਾ। ਪਰ ਵੱਡੇ ਭਾਗਾਂ ਵਾਲਿਆਂ ਨੂੰ ਹੀ ਅਜਿਹੇ ਗੁਰਮੁਖਾਂ ਤੇ ਗੁਰੂਆਂ ਦੀ ਚਰਨ ਧੂੜ ਮਿਲਦੀ ਹੈ। ਨਾਮ ਸਿਮਰਨ ਵਾਲਿਆਂ ਨੂੰ ਕੇਵਲ ਪਰਮਾਤਮਾ ਦਾ ਜੱਸ ਹੀ ਪਿਆਰਾ ਲੱਗਦਾ ਹੈ ਤੇ ਉਹਨਾਂ ਦੇ ਅੰਦਰੋਂ ਮੇਰ-ਤੇਰ ਖ਼ਤਮ ਹੋ ਜਾਂਦੀ ਹੈ। ਉਹਨਾਂ ਨੂੰ ਸਾਰਾ ਸੰਸਾਰ ਹੀ ਇੱਕ ਵੱਡਾ ਪਰਿਵਾਰ ਦਿਖਾਈ ਦਿੰਦਾ ਹੈ। ਉਹ ਚਿੰਤਾ ਵਿਕਾਰ ਮਾਇਆ ਤੇ ਤ੍ਰਿਸ਼ਨਾ ਰਹਿਤ ਹੋ ਜਾਂਦੇ ਹਨ ਉਹ ਆਪਣਾ ਜੀਵਨ ਸਫਲ ਕਰ ਜਾਂਦੇ ਹਨ। ਪਰਮਾਤਮਾ ਦੇ ਨਾਮ ਨਾਲ ਸੰਸਾਰ ਰੂਪੀ ਸਮੁੰਦਰ ਪਾਰ ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਕਿਸੇ ਕਿਸਮ ਦੀ ਸਿਆਣਪ ਚਤੁਰਾਈ ਪਾਖੰਡ ਤੀਰਥ ਇਸ਼ਨਾਨ ਜਾਂ ਵਿੱਦਿਆ ਨਾਲ ਪਰਮਾਤਮਾ ਨੂੰ ਨਹੀਂ ਪਾਇਆ ਜਾ ਸਕਦਾ। ਉਹ ਤਾਂ ਪ੍ਰੇਮ ਦਾ ਮਾਰਗ ਹੈ ਜਿਸ ਨੂੰ ਉਪਰੋਕਤ ਕਿਸੇ ਵੀ ਕਰਮਕਾਂਡ ਨਾਲ ਜਿੱਤਿਆ ਨਹੀਂ ਜਾ ਸਕਦਾ। ਗੁਰਮੁਖ ਦੀ ਆਤਮਿਕ ਖ਼ੁਰਾਕ ਹੀ ਨਾਮ ਹੈ ਜਿਸ ਕਰਕੇ ਉਹ ਇਸ ਤੋਂ ਬਿਨਾਂ ਇਕ ਪਲ ਵੀ ਨਹੀਂ ਰਹਿ ਸਕਦਾ। ਉਸ ਦੇ ਅੰਦਰੋਂ ਪਸ਼ੂ ਬਿਰਤੀ ਖ਼ਤਮ ਹੋ ਜਾਂਦੀ ਹੈ। ਪਰ ਨਾਮ ਦਾ ਅਮੋਲਕ ਹੀਰਾ ਕੇਵਲ ਗੁਰੂ ਪਾਸੋਂ ਹੀ ਮਿਲ ਸਕਦਾ ਹੈ। ਗੁਰਮੁਖ ਹਉਮੈ ਹੰਕਾਰ ਤੋਂ ਬਚ ਕੇ ਸਭਨਾਂ ਦੇ ਪੈਰਾਂ ਦੀ ਧੂੜ ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ, ਪ੍ਰੰਤੂ ਜੋ ਜੀਵ ਪਰਮਾਤਮਾ ਦਾ ਨਾਮ ਨਹੀਂ ਜਪਦਾ ਉਸ ਨੂੰ ਹਰੇਕ ਕਿਸਮ ਦੇ ਦੁੱਖ ਕਲੇਸ਼ ਚਿੰਬੜ ਜਾਂਦੇ ਹਨ। ਕਿਸੇ ਵੀ ਉਪਾਅ ਨਾਲ ਉਹਨਾਂ ਤੋਂ ਖ਼ਲਾਸੀ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦੀ। ਆਤਮਿਕ ਗੁਣਾਂ ਤੋਂ ਅਜਿਹਾ ਜੀਵ ਕੰਗਾਲ ਰਹਿੰਦਾ ਹੈ ਤੇ ਖਿਝਿਆ ਰਹਿੰਦਾ ਹੈ, ਵਿਕਾਰ ਉਸ ਉੱਪਰ ਕਾਬੂ ਪਾ ਲੈਂਦੇ ਹਨ। ਸਾਰੀ ਉਮਰ ਹਉਮੈ ਵਿੱਚ ਹੀ ਰਹਿੰਦਾ ਹੈ। ਪਰ ਪਰਮਾਤਮਾ ਦਾ ਜੱਸ ਕਰਨ ਨਾਲ ਸਾਰੇ ਗਿਆਨ ਇੰਦਰੇ ਕਾਬੂ ਵਿੱਚ ਆ ਜਾਂਦੇ ਹਨ ਤੇ ਪਰਮਾਤਮਾ ਦਾ ਜੱਸ ਕਰਨ ਵਾਲੇ ਜੀਵ ਨੂੰ ਪਰਮਾਤਮਾ ਦਾ ਭਾਣਾ ਮਿੱਠਾ ਮੰਨ ਕੇ ਮਨ ਨੂੰ ਕਾਬੂ ਕਰਨ ਲਈ ਬਲ ਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਪਰਮਾਤਮਾ ਦੀ ਮਿਹਰ ਨਾਲ ਹੀ ਜੀਵ ਨੂੰ ਗੁਰੂ ਮਿਲਦਾ ਹੈ। ਜਿਸ ਕੋਲੋਂ ਉਸ ਨੂੰ ਨਾਮ ਦੀ ਦਾਤ ਮਿਲਦੀ ਹੈ ਤੇ ਮਨੁੱਖ ਨੂੰ ਸੋਝੀ ਹੋ ਜਾਂਦੀ ਹੈ ਕਿ ਪਰਮਾਤਮਾ ਹੀ ਸਭ ਦਾ ਸਿਰਜਣਹਾਰਾ ਹੈ ਸਰਬ ਵਿਆਪਕ ਹੁੰਦਿਆਂ ਵੀ ਸਭ ਤੋਂ ਨਿਰਲੇਪ ਹੈ।

ਕਰਦਾ ਅਨਦ ਬਿਨੋਦ ਕਿਛੂ ਨ ਜਾਣੀਐ॥

ਸਰਬ ਧਾਰ ਸਮਰਥ ਹਉ ਤਿਸੁ ਕੁਰਬਾਣੀਐ॥
ਗਾਇਐ ਰਾਤਿ ਦਿਨੰਤੁ ਗਾਵਣ ਜੋਗਿਆ॥
ਜੋ ਗੁਰ ਕੀ ਪੈਰੀ ਪਾਹਿ ਤਿਨੀ ਹਰਿ ਰਸੁ ਭੋਗਿਆ॥2॥ 8

ਮਾਰੂ ਕੀ ਵਾਰ ਵਿਚ ਵੀ ਗੁਰੂ ਸਾਹਿਬ ਨੇ ਪਰਮਾਤਮਾ ਦੇ ਜੱਸ ਦੇ ਨਾਲ-ਨਾਲ ਇਸ ਜਗਤ ਬਾਰੇ ਵੀ ਜਾਣਕਾਰੀ ਦਿੱਤੀ ਹੈ ਕਿ ਕਿਵੇਂ ਮਨੁੱਖ ਇਸ ਸੰਸਾਰ ਵਿੱਚ ਉਲਝ ਕੇ ਪਰਮਾਤਮਾ ਨੂੰ ਭੁੱਲ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਤੇ ਫਿਰ ਪਰਮਾਤਮਾ ਦੀ ਮਿਹਰ ਨਾਲ ਹੀ ਕੋਈ ਜੀਵ ਉਸ ਦਾ ਨਾਮ ਸਿਮਰਨ ਕਰਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਵਿਚ ਗੁਰੂ ਦੀ ਮਹਿਮਾ ਵੀ ਕੀਤੀ ਹੈ। ਪਰਮਾਤਮਾ ਨੇ ਇਸ ਸੰਸਾਰ ਦੀ, ਮਾਇਆ ਦੀ ਅਤੇ ਸਾਰੇ ਜੀਵਾਂ ਦੀ ਰਚਨਾ ਆਪ ਹੀ ਕੀਤੀ ਹੈ, ਪਰ ਜੀਵ ਨੂੰ ਪਰਮਾਤਮਾ ਇਹਨਾਂ ਦਿਸਦੀਆਂ ਅੱਖਾਂ ਨਾਲ ਦਿਖਾਈ ਨਹੀਂ ਦਿੰਦਾ। ਜੀਵ ਇਸ ਮਾਇਆ ਦੇ ਮੋਹ ਵਿਚ ਫਸ ਕੇ ਪਰਮਾਤਮਾ ਨੂੰ ਭੁੱਲ ਜਾਂਦੇ ਹਨ। ਪਰ ਜਿਹੜੇ ਜੀਵ ਪਰਮਾਤਮਾ ਦੀ ਹੀ ਮਿਹਰ ਨਾਲ ਗੁਰੂ ਦੀ ਸ਼ਰਨ ਪੈ ਜਾਂਦੇ ਹਨ ਅਤੇ ਨਾਮ ਸਿਮਰਨ ਕਰਦੇ ਹਨ ਉਹ ਇਸ ਜਾਲ ਵਿਚ ਫਸਣੋਂ ਬਚ ਜਾਂਦੇ ਹਨ। ਪਰਮਾਤਮਾ ਨੂੰ ਯਾਦ ਕਰਨ ਦਾ ਨਿਯਮ ਵੀ ਪਰਮਾਤਮਾ ਨੇ ਆਪ ਹੀ ਬਣਾਇਆ ਹੈ। ਇਸ ਮਾਇਆ ਤੋਂ ਬਚਣ ਲਈ ਇੱਕੋ-ਇਕ ਰਾਹ ਕੇਵਲ ਪਰਮਾਤਮਾ ਦਾ ਨਾਮ ਹੀ ਹੈ। ਇਹ ਸੰਸਾਰ ਇਕ ਅਖਾੜੇ ਦੀ ਨਿਆਈ ਹੈ, ਜਿਸ ਵਿਚ ਕਾਮਾਦਿਕ ਵਿਕਾਰ ਰੂਪੀ ਠੱਗ ਇਸ ਜੀਵ ਦੇ ਆਤਮਿਕ ਜੀਵਨ ਨੂੰ ਲੁੱਟੀ ਜਾ ਰਹੇ ਹਨ। ਜਿਸ ਨਾਲ ਜੀਵ ਆਪਣੀ ਜੀਵਨ ਬਾਜ਼ੀ ਹਾਰ ਜਾਂਦਾ ਹੈ, ਪਰ ਜਿਸ ਜੀਵ ਉੱਪਰ ਪਰਮਾਤਮਾ ਮਿਹਰ ਕਰਦਾ ਹੈ ਉਹ ਗੁਰੂ ਦੀ ਸ਼ਰਨ ਪੈ ਕੇ ਨਾਮ ਸਿਮਰਨ ਕਰਦਾ ਹੋਇਆ ਇਨ੍ਹਾਂ ਵਿਕਾਰਾਂ ਦੀ ਕੈਦ ਚੋਂ ਛੁੱਟ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਬਾਹਰੀ ਭੇਖ ਤੀਰਥ ਇਸ਼ਨਾਨ ਆਦਿ ਨਾਲ ਇਹਨਾਂ ਵਿਕਾਰਾਂ ਤੋਂ ਛੁਟਕਾਰਾ ਨਹੀਂ ਪਾਇਆ ਜਾ ਸਕਦਾ। ਇਹ ਸੰਸਾਰ ਨਾਸ਼ਵਾਨ ਹੈ, ਜੋ ਇੱਥੇ ਆਇਆ ਉਸ ਨੇ ਜ਼ਰੂਰ ਜਾਣਾ ਹੈ ਸਿਰਫ਼ ਗੁਰਮੁਖ ਹੀ ਆਪਣਾ ਜੀਵਨ ਸਵਾਰ ਕੇ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਪਰ ਇਹ ਸਭ ਕੁਝ ਜੀਵ ਦੇ ਵੱਸ ਨਹੀਂ ਜਿਵੇਂ ਪਰਮਾਤਮਾ ਕਰਦਾ ਹੈ ਜੀਵ ਓਵੇਂ ਹੀ ਕਰਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਉਸ ਦੇ ਹੁਕਮ ਅਨੁਸਾਰ ਹੀ ਕੋਈ ਜੀਵ ਜੀਵਨ ਬਾਜ਼ੀ ਹਾਰਦਾ ਜਾਂ ਜਿੱਤਦਾ ਹੈ।

ਵੈਰੁ ਕਰੇ ਨਿਰਵੈਰ ਨਾਲਿ ਝੂਠੇ ਲਾਲਚਾ॥
ਮਾਰਿਆ ਸਚੈ ਪਾਤਿਸਾਹਿ ਵੇਖਿ ਧੁਰਿ ਕਰਮਚਾ॥
ਜਮਦੂਤੀ ਹੈ ਹੇਰਿਆ ਦੁਖ ਹੀ ਮਹਿ ਪਚਾ॥
ਹੋਆ ਤਪਾਵਸੁ ਧਰਮ ਕਾ ਨਾਨਕ ਦਰਿ ਸਚਾ॥15॥ 9

ਆਪਣੀ ਬਸੰਤ ਕੀ ਵਾਰ ਵਿੱਚ ਗੁਰੂ ਅਰਜਨ ਦੇਵ ਜੀ ਫ਼ਰਮਾਉਂਦੇ ਹਨ ਕਿ ਜੋ ਮਨੁੱਖ ਗੁਰੂ ਦਾ ਆਸਰਾ ਲੈ ਕੇ ਪਰਮਾਤਮਾ ਦਾ ਨਾਮ ਸਿਮਰਨ ਕਰਦਾ ਹੈ ਉਹ ਪੰਜੇ ਮਹਾਂਬਲੀ ਵਿਕਾਰਾਂ ਉਪਰ ਕਾਬੂ ਪਾ ਲੈਂਦਾ ਹੈ। ਉਹਨਾਂ ਦੇ ਅੰਦਰੋਂ ਵਿਕਾਰ ਰੂਪੀ ਸਾਰੀ ਮੈਲ ਖ਼ਤਮ ਹੋ ਜਾਂਦੀ ਹੈ। ਗੁਰੂ ਦੀ ਮਿਹਰ ਸਦਕਾ ਪ੍ਰਭੂ ਦੇ ਗੁਣ ਗਾਉਂਦੇ ਹੋਏ ਉਸ ਤੱਕ ਪਹੁੰਚ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਇਹ ਵਾਰ ਗੁਰੂ ਅਰਜਨ ਦੇਵ ਜੀ ਦੀਆਂ ਸਾਰੀਆਂ ਵਾਰਾਂ ਨਾਲੋਂ ਆਕਾਰ ਪੱਖੋਂ ਛੋਟੀ ਹੈ ਇਸ ਦੀਆਂ ਪੌੜੀਆਂ ਨਾਲ ਸਲੋਕ ਦਰਜ ਨਹੀਂ ਹਨ।

ਮਿਲਿ ਸਾਧੂ ਸੁਖੁ ਊਪਜੈ ਲਥੀ ਸਭ ਛਾਈ॥
ਨਾਨਕੁ ਸਿਮਰੈ ਏਕੁ ਨਾਮੁ ਫਿਰਿ ਬਹੁੜਿ ਨ ਪਾਈ॥1॥ 10

ਗੁਰੂ ਅਰਜਨ ਦੇਵ ਜੀ ਨੇ ਵਾਰਾਂ ਵਿਚ ਪ੍ਰਭੂ ਦੀ ਸਰਬ ਉੱਚਤਾ ਤੇ ਸਰਬ ਵਿਆਪਕਤਾ ਦਾ ਵਰਨ ਕੀਤਾ ਹੈ, ਪ੍ਰੇਮ ਭਗਤੀ ਨਾਲ ਪ੍ਰਭੂ ਮਿਲਾਪ ਦੀ ਪ੍ਰੇਰਨਾ ਦਿੱਤੀ ਹੈ, ਪ੍ਰਭੂ ਦੀ ਉਸਤਤ ਦੇ ਨਾਲ-ਨਾਲ ਗੁਰੂ ਦੀ ਵਡਿਆਈ ਦੀ ਅਭਿਵਿਅੰਜਨਾ ਕੀਤੀ ਹੈ। ਇਸ ਦੇ ਨਾਲ ਹੀ ਗੁਰੂ ਨੂੰ ਸਰਬ ਕਲਾ ਸੰਪੰਨ ਦੇ ਰੂਪ ਵਿੱਚ ਵਿਅਕਤ ਕੀਤਾ ਗਿਆ ਹੈ, ਸਿਮਰਨ ਦੇ ਮਹੱਤਵ ਨੂੰ ਦਰਸਾਇਆ ਗਿਆ ਹੈ ਜਿਸ ਨਾਲ ਜੀਵ ਪਰਮਾਤਮਾ ਨਾਲ ਅਭੇਦ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰਨ ਦੇ ਸਮਰੱਥ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਗੁਰੂ ਅਰਜਨ ਦੇਵ ਜੀ ਨੇ ਵਾਰ ਕਾਵਿ ਰੂਪ ਵਿਚ ਗੁਰਮੁਖ ਅਤੇ ਮਨਮੁਖ ਸ਼ੁਭ ਅਤੇ ਅਸ਼ੁਭ ਸੰਗਤ ਅਤੇ ਕੁਸੰਗਤ ਅਤੇ ਨੇਕੀ ਅਤੇ ਬਦੀ ਦੀ ਟੱਕਰ ਨੂੰ ਪੇਸ਼ ਕਰਕੇ ਪਰਮਾਤਮਾ ਨੂੰ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰਨ ਦਾ ਉਪਦੇਸ਼ ਦਿੱਤਾ ਹੈ।

ਹਵਾਲੇ ਤੇ ਟਿੱਪਣੀਆਂ :

1 ਭਾਈ ਕਾਨ੍ਹ ਸਿੰਘ ਨਾਭਾ, ਮਹਾਨ ਕੋਸ਼,ਪੰਨਾ ਨੰ: 1091

2 ਗੋਪਾਲ ਸਿੰਘ ਦਰਦੀ, ਸਾਹਿਤ ਦੀ ਪਰਖ, ਪੰਨਾ ਨੰ: 68

3 ਡਾ ਰਤਨ ਸਿੰਘ ਜੱਗੀ, ਵਿਚਾਰ ਵਿਸ਼ਲੇਸ਼ਣ, ਪੰਨਾ ਨੰ: 142

4 ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ, ਪੰਨਾ ਨੰ: 319

5 ਉਹੀ, ਪੰਨਾ ਨੰ: 318

6 ਉਹੀ, ਪੰਨਾ ਨੰ: 518

7 ਉਹੀ, ਪੰਨਾ ਨੰ: 707

8 ਉਹੀ, ਪੰਨਾ ਨੰ: 957

9 ਉਹੀ, ਪੰਨਾ ਨੰ: 1099

10 ਉਹੀ, ਪੰਨਾ ਨੰ: 1193

gold.sidhusirsa@gmail.com, 9416414001

www.bohalshodhmanjusha.com Bohal Shodh Manjusha ISSN: 2395-7115
Impact Factor: 8.642 June 2026 Page No. : 168-174
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

ਪਰਵਾਸ : ਵਰ ਜਾਂ ਸਰਾਪ -ਇਕ ਸਮਾਜਿਕ ਅਧਿਐਨ

ਡਾ ਅਮਨਦੀਪ ਕੌਰ,
ਅਸਿਸਟੈਂਟ ਪ੍ਰੋਫੈਸਰ, ਪੰਜਾਬੀ
ਗੁਰੂ ਕਾਸ਼ੀ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ, ਤਲਵੰਡੀ ਸਾਬੋ ਮੋਬਾਇਲ

ਮਨੁੱਖ ਇੱਕ ਸਭਿਅਕ ਸਮਾਜ ਵਿੱਚ ਰਹਿਣ ਵਾਲਾ ਪ੍ਰਾਣੀ ਹੈ। ਇੱਕ ਸਭਿਅਕ ਸਮਾਜ ਦੀ ਇਹੀ ਫਿਤਰਤ ਹੁੰਦੀ ਹੈ ਕਿ ਉਹ ਨਿਰੰਤਰ ਵਿਕਾਸਸ਼ੀਲ ਰਹਿੰਦਾ ਹੈ । ਵਿਕਾਸ ਦੀਆਂ ਪੈੜਾਂ ਉੱਤੇ ਚੱਲਦਾ ਹੋਇਆ ਮਨੁੱਖ ਵਿਸ਼ਵ ਦੇ ਇੱਕ ਕੋਨੇ ਤੋਂ ਦੂਜੇ ਕੋਨੇ ਵਿੱਚ ਜਾਣ ਦਾ ਹੀਲਾ ਵਸੀਲਾ ਵੀ ਕਰਦਾ ਹੈ, ਕਿਉਂਕਿ ਉਸ ਅੰਦਰ ਨਵੀਆਂ ਥਾਵਾਂ, ਨਵੇਂ ਲੋਕਾਂ, ਨਵੀਆਂ ਦਿਸ਼ਾਵਾਂ ਨਾਲ ਵਿਚਰਨ ਦੀ ਚਾਹਤ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਮਨੁੱਖੀ ਸੁਭਾਅ ਦੀ ਫਿਤਰਤ ਦੇ ਅਨੁਸਾਰ ਕਈ ਵਾਰੀ ਮਨੁੱਖ ਵਿਸ਼ਵ ਦੇ ਕਿਸੇ ਹੋਰ ਕੋਨੇ ਵਿੱਚ ਵਸਣ ਲਈ ਪਰਵਾਸ ਧਰਦਾ ਹੈ । ਪਰਵਾਸ ਸ਼ਬਦ ਅੰਗਰੇਜ਼ੀ ਭਾਸ਼ਾ ਦੇ ਸ਼ਬਦ (Immigration) ਇੰਮੀਗ੍ਰੇਸ਼ਨ ਦਾ ਸਮਾਨ ਅਰਥੀ ਹੈ। ਇਹ ਪਰ ਅਤੇ ਵਾਸ ਦੋ ਸ਼ਬਦਾਂ ਦੇ ਸੁਮੇਲ ਤੋਂ ਬਣਿਆ ਹੈ। ਪਰ ਦਾ ਅਰਥ ਹੈ ਪਰਾਇਆ ਤੇ ਵਾਸ ਦਾ ਅਰਥ ਹੈ ਵੱਸ ਜਾਣਾ ਭਾਵ ਕਿ ਆਪਣੀ ਜਨਮ ਭੂਮੀ ਨੂੰ ਛੱਡ ਕੇ ਕਿਸੇ ਹੋਰ ਥਾਂ ਤੇ ਵਸਣਾ ਹੀ ਪ੍ਰਵਾਸ ਅਖਵਾਉਂਦਾ ਹੈ। ਪਰਵਾਸ ਕਿਸੇ ਵਿਅਕਤੀ ਜਾਂ ਵਿਅਕਤੀ ਦੇ ਸਮੂਹ ਦੁਆਰਾ ਇੱਕ ਖਾਸ ਭੂਗੋਲਿਕ, ਸਮਾਜਿਕ, ਆਰਥਿਕ ਅਤੇ ਸੱਭਿਆਚਾਰਕ, ਪਰਸਥਿਤੀ ਨੂੰ ਛੱਡ ਕੇ ਕਿਸੇ ਹੋਰ ਸੱਭਿਆਚਾਰਿਕ, ਆਰਥਿਕ, ਸਮਾਜਿਕ ਤੇ ਭੂਗੋਲਿਕ ਖਿੱਤੇ ਵਿੱਚ ਜਾ ਕੇ ਵਸਣ ਦੀ ਪ੍ਰਕਿਰਿਆ ਨੂੰ ਕਿਹਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ।

ਭਾਈ ਕਾਨ੍ਹ ਸਿੰਘ ਨਾਭਾ ਅਨੁਸਾਰ, " ਪਰਵਾਸ ਦਾ ਅਰਥ ਵਿਦੇਸ਼ ਦਾ ਨਿਵਾਸ ਹੈ"।1

ਇਨਸਾਇਕਲੋਪੀਡੀਆ ਆਫ਼ ਬਰਟੇਨਿਕਾ ਵਿੱਚ ਦਿੱਤੀ ਇੱਕ ਪਰਿਭਾਸ਼ਾ ਵੀ ਪਰਵਾਸ ਦੇ ਸੰਕਲਪ ਨੂੰ ਸਪਸ਼ਟ ਕਰਦੀ ਹੈ। "Migrant is the makement of people from one place in order to settle in another."2

ਅੰਗਰੇਜ਼ੀ ਪੰਜਾਬੀ ਕੋਸ਼ ਅਨੁਸਾਰ,

"Immigrant ਦਾ ਅਰਥ ਅਵਾਸੀ ਕਿਸੇ ਦੂਜੇ ਦੇਸ਼ ਵਿੱਚ ਆ ਕੇ ਵਸਿਆ ਵਿਅਕਤੀ ਅਤੇ ਸ਼ਬਦ Emigrant ਦਾ ਅਰਥ ਪਰਵਾਸੀ/ ਪ੍ਰਦੇਸ਼ ਵਾਸੀ ਹੈ"।3

ਇਸ ਪ੍ਰਕਾਰ ਪਰਵਾਸੀ ਉਹ ਵਿਅਕਤੀ ਹੈ ਜਿਹੜਾ ਆਪਣਾ ਦੇਸ਼ ਛੱਡ ਕੇ ਕਿਸੇ ਹੋਰ ਦੇਸ਼ ਵਿੱਚ ਜਾ ਕੇ ਵਸਦਾ ਹੈ। ਅਵਾਸੀ ਸ਼ਬਦ ਉਸ ਵਿਅਕਤੀ ਲਈ ਵਰਤਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਜੋ ਆ +ਵਾਸੀ ਆ ਕੇ ਵਸਿਆ ਹੈ। ਅਜੋਕੇ ਸਮੇਂ ਵਿੱਚ ਪਰਵਾਸ ਸੰਬੰਧੀ ਅਨੇਕਾਂ ਸਬਦ ਪ੍ਰਚਲਿੱਤ ਹਨ, ਜੇ ਸਮਕਾਲ ਦੀ ਗੱਲ ਕੀਤੀ ਜਾਵੇ ਤਾਂ ਪ੍ਰਵਾਸ ਲਈ ਸ਼ਬਦ ਡਾਇਸਪੋਰਾ ਵੀ ਵਰਤਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਪਰ ਅਸਲ ਵਿੱਚ ਡਾਇਸਪੋਰਾ ਦਾ ਸੰਬੰਧ ਜਿਆਦਾਤਰ ਯਹੂਦੀਆਂ ਦੁਆਰਾ ਆਪਣੀ ਮਾਤ ਭੂਮੀ ਨੂੰ ਛੱਡ ਕੇ ਵਸਣ ਨਾਲ ਸੰਬੰਧਿਤ ਹੈ। ਇਸ ਲਈ ਇਸ ਤੋਂ ਖਿੰਡਣ ਤੇ ਵਸਣ ਦਾ ਜੋ ਸਬੰਧ ਹੈ, ਉਹ ਇਸ ਨਾਲ ਜੋੜ ਲਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਵੀਹਵੀਂ ਸਦੀ ਵਿੱਚ ਡਾਇਸਪੋਰਾ ਸ਼ਬਦ ਦਾ ਅਰਥ ਵਿਸਤਾਰ ਕਿਸੇ ਵੀ ਸਮੁਦਾਇ ਦਾ ਆਪਣੀ ਭੂਮੀ ਤੋਂ ਖਿੰਡਣ/ਵਸਣ ਦਾ ਹੋ ਗਿਆ ਹੈ। ਅਜੋਕੇ ਸਮੇਂ ਵਿੱਚ ਸੰਸਾਰ ਦੇ ਭਾਸ਼ਾ ਅਤੇ ਸਮਾਜ ਵਿਗਿਆਨੀ ਇਸ ਨੂੰ ਹਰ ਪ੍ਰਕਾਰ ਦੇ ਪ੍ਰਵਾਸ ਨਾਲ ਜੋੜ ਕੇ ਪ੍ਰਵਾਨ ਕਰ ਰਹੇਂ ਹਨ। ਜਿਵੇ ਏਸ਼ੀਅਨ ਡਾਇਸਪੋਰਾ, ਅਫਰੀਕੀ ਡਾਇਸਪੋਰਾ, ਪੰਜਾਬੀ ਡਾਇਸਪੋਰਾ ਆਦਿ। ਡਾਇਸਪੋਰਾ ਸ਼ਬਦ ਚਾਹੇ ਪੰਜਾਬੀ ਸਾਹਿਤ ਅਤੇ ਸੱਭਿਆਚਾਰ ਦੁਆਰਾ ਪ੍ਰਵਾਣ ਕਰ ਲਿਆ ਗਿਆ ਹੈ ਪਰ ਜਦੋਂ ਕਈ ਵਿਦਵਾਨ ਇਸ ਨੂੰ ਆਪਣੇ ਅਧਿਆਨ ਦਾ ਵਿਸ਼ਾ ਬਣਾਉਣਾ ਚਾਹੁੰਦੇ ਹਨ ਤਾਂ ਉਹ ਜਿਆਦਾਤਰ ਪਰਵਾਸ ਸ਼ਬਦ ਨੂੰ ਹੀ ਤਰਜੀਹ ਦਿੰਦੇ ਹਨ।

ਪੰਜਾਬ ਕਿਸੇ ਵੇਲੇ ਸੋਨੇ ਦੀ ਚਿੜੀ ਸ਼ਬਦ ਨਾਲ ਨਿਵਾਜਿਆ ਜਾਂਦਾ ਸੀ। ਵਿਦੇਸ਼ੀ ਹਾਕਮ ਪੰਜਾਬ ਦੀ ਅਮੀਰੀ ਅਤੇ ਖੁਸ਼ਹਾਲੀ ਕਰਕੇ ਪੰਜਾਬ ਵਿੱਚ ਵਪਾਰ ਤੇ ਰਾਜ ਕਰਨ ਦੇ ਇਰਾਦੇ ਨਾਲ ਆ ਕੇ ਵੱਸਦੇ ਰਹੇ ਹਨ ਪਰ ਵਿਸ਼ਵੀਕਰਣ ਦੀ ਦੌੜ ਵਿੱਚ ਇਕ ਭਾਰੀ ਬਦਲਾਅ ਆਇਆ ਹੈ, ਹੁਣ ਨੋਜਵਾਨ ਮੁੰਡੇ- ਕੁੜੀਆਂ ਵਿਦੇਸ਼ ਦੀ ਧਰਤੀ ਦਾ ਰੁੱਖ ਕਰ ਰਹੇ ਹਨ। ਗ਼ਰੀਬੀ ਬਦਲੇ ਅਮੀਰੀ, ਮਾਨਸਿਕ ਗੁਲਾਮੀਂ ਬਦਲੇ ਮਾਨਸਿਕ ਅਜਾਦੀ, ਪੈਸੇ ਬਦਲੇ ਡਾਲਰਾਂ ਅਤੇ ਪੌਡਾਂ ਦੀ ਹੋੜ, ਐਸ਼ ਪ੍ਰਸਤੀ ਬਦਲੇ ਵਿਦੇਸ਼ ਇਹਨਾਂ ਨੂੰ ਰਾਸ ਆ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਪਰਵਾਸ ਬਾਰੇ ਵਿਚਾਰ ਚਰਚਾ ਕਰਦਿਆਂ ਅਨੇਕਾਂ ਪਹਿਲੂ ਉੱਭਰ ਕੇ ਸਾਹਮਣੇ ਆਉਂਦੇ ਹਨ ਕਿ ਪਰਵਾਸ ਇਕੋ ਵੇਲ਼ੇ ਵਰ ਵੀ ਹੈ ਤੇ ਸਰਾਪ ਵੀ ਹੈ।

ਜੇਕਰ ਪਰਵਾਸ ਦੇ ਵਰਦਾਨ ਬਾਰੇ ਗੱਲ ਕਰਨੀ ਹੋਵੇ ਤਾਂ ਉਸਦਾ ਇਤਿਹਾਸਕ ਪੱਖ ਵੀ ਅੱਖੋਂ ਪਰੋਖੇ ਨਹੀਂ ਕੀਤਾ ਜਾ ਸਕਦਾ। ਪਰਵਾਸ ਦੇ ਵਰਤਾਰੇ ਦੀ ਪਿੱਠ ਭੂਮੀ ਵਿੱਚ ਅਨੇਕਾਂ ਅਜਿਹੇ ਤੱਤ ਕਾਰਜਸ਼ੀਲ ਹਨ, ਜਿਨਾਂ ਕਾਰਨ ਪਰਵਾਸ ਧਾਰਨ ਕਰਨਾ ਪਿਆ। ਜਦੋਂ ਅੰਗਰੇਜ਼ਾਂ ਨੇ ਆਪਣੇ ਪੈਰ ਭਾਰਤ ਵਿੱਚ ਪਸਾਰੇ ਤਾਂ ਸੁਭਾਵਿਕ ਸੀ ਕਿ ਭਾਰਤੀ ਪੰਜਾਬੀ ਵੀ ਅੰਗਰੇਜ਼ਾਂ ਪ੍ਰਤੀ ਰੁਚਿਤ ਹੁੰਦੇ। ਅੰਗਰੇਜ਼ਾਂ ਨੇ ਵਪਾਰ ਦੀ ਨੀਤੀ ਤਹਿਤ ਭਾਰਤ ਵਿੱਚ ਕੱਚਾ ਮਾਲ ਬਾਹਰ ਲਿਜਾ ਕੇ ਮਹਿੰਗੇ ਭਾਅ ਫਿਰ ਭਾਰਤ ਵਿੱਚ ਵੇਚਿਆ, ਜਿਸ ਨਾਲ ਭਾਰਤੀ ਪੰਜਾਬੀ ਕਾਮੇ ਆਰਥਿਕ ਪੱਖੋਂ ਕਮਜ਼ੋਰ ਹੋਣੇ ਸ਼ੁਰੂ ਹੋ ਗਏ ।ਭਾਰਤੀ ਮਜ਼ਦੂਰਾਂ ਤੇ ਕਾਮਿਆਂ ਨੂੰ ਬਾਹਰ ਲਿਜਾ ਕੇ ਕਾਰਖਾਨਿਆਂ ਵਿੱਚ ਨੌਕਰੀਆਂ ਦਿੱਤੀਆਂ ਗਈਆਂ ਜਿਸ ਨਾਲ ਉਹ ਪਰਵਾਸ ਦੇ ਰਸਤੇ ਉੱਤੇ ਤੁਰੇ। ਜਮੀਨਾਂ ਸੰਬੰਧੀ ਬਣੇ ਨਵੇਂ ਕਾਨੂੰਨਾਂ ਦੇ ਹੋਂਦ ਵਿੱਚ ਹੋਣ ਕਾਰਨ ਕਿਸਾਨੀ ਦੇ ਕਿੱਤੇ ਵਿੱਚ ਗਿਰਾਵਟ ਆਈ, ਕਰਜੇ ਦੀ ਮਾਰ ਹੇਠ ਦੱਬੀ ਕਿਰਤੀ ਕਿਸਾਨੀਂ ਨੇ ਆਪਣੀਆਂ ਜ਼ਮੀਨਾਂ ਜਾਇਦਾਦਾਂ ਛਡਾਉਣ ਲਈ ਕਾਮਿਆਂ ਦੇ ਰੂਪ ਵਿੱਚ ਬਾਹਰ ਜਾ ਕੇ ਖੰਡ ਮਿਲਾਂ ਵਿੱਚ ਕੰਮ ਸ਼ੁਰੂ ਕੀਤਾ।

ਭਾਰਤੀ ਪੰਜਾਬੀਆਂ ਨੇ ਸਭ ਤੋਂ ਜਿਆਦਾ ਪਰਵਾਸ ਕੈਨੈਡਾ, ਇੰਗਲੈਂਡ, ਅਮਰੀਕਾ ਆਦਿ ਵਿਕਸਿਤ ਪੂੰਜੀਵਾਦੀ ਦੇਸ਼ਾਂ 'ਚ ਕੀਤਾ। ਸ਼ੁਰੂ- ਸ਼ੁਰੂ ਵਿੱਚ ਪਰਵਾਸ ਦਾ ਜੀਵਨ ਸੁਖਾਲਾ ਨਹੀਂ ਸੀ, ਪਰ ਆਪਣੀ ਮਿਹਨਤ ਤੇ ਬਲ ਦੇ ਰਾਹੀ ਨਵੇਂ ਮੁਲਕ ਦੀਆਂ ਤਲਖ਼ ਪ੍ਰਸਥਿਤੀਆਂ ਨਾਲ ਨਜਿੱਠਦੇ ਹੋਏ ਆਰਥਿਕ, ਸਮਾਜਿਕ ਰਾਜਨੀਤਿਕ, ਧਾਰਮਿਕ, ਰੁਤਬਿਆਂ ਨੂੰ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕੀਤਾ। 2 ਅਪ੍ਰੈਲ 1947 ਨੂੰ ਕੈਨੇਡਾ ਵਿੱਚ ਭਾਰਤੀਆਂ ਨੂੰ ਪਹਿਲੀ ਵਾਰੀ ਵੋਟ ਪਾਉਣ ਦਾ ਅਧਿਕਾਰ ਮਿਲਿਆ। ਹੋਟਲਾਂ ਦੇ ਮਾਲਕ, ਵੱਡੇ ਪੱਧਰ ਦੇ ਵਪਾਰੀਆਂ ਦੇ ਰੂਪ ਵਿੱਚ ਪੰਜਾਬੀ ਉਭਰ ਕੇ ਸਾਹਮਣੇ ਆਏ, ਇਸ ਲਈ ਪਰਵਾਸ ਵਰਦਾਨ ਹੀ ਸਾਬਿਤ ਹੋਇਆ ਹੈ। ਭਾਰਤ ਪਾਕਿਸਤਾਨ ਦੀ ਵੰਡ ਦਾ ਸਭ ਤੋਂ ਵੱਧ ਖਮਿਆਜਾ ਪੰਜਾਬੀਆਂ ਨੇ ਹੀ ਭੁਗਤਿਆ। ਇਸ ਬਟਵਾਰੇ ਤਹਿਤ ਸਭ ਤੋਂ ਵੱਧ ਪਰਵਾਸ ਪੰਜਾਬੀਆਂ ਨੂੰ ਕਰਨਾ ਪਿਆ। ਬਟਵਾਰੇ ਦੇ ਤਹਿਤ ਪੰਜਾਬੀ ਆਰਥਿਕ ਤੌਰ ਤੇ ਪੂਰੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਪੱਛੜ ਗਏ ਤੇ ਇਸ ਘਟਨਾ ਦੇ ਕਾਰਨ ਅਨੇਕਾਂ ਪੰਜਾਬੀਆਂ ਨੇ ਆਰਥਿਕ ਤੰਗੀ ਤੋਂ ਛੁਟਕਾਰਾ ਪਾਉਣ ਲਈ ਯੂਰਪ ਅਤੇ ਉੱਤਰੀ ਅਮਰੀਕਾ ਵੱਲ ਆਪਣਾ ਕਾਨੂੰਨੀ ਤੇ ਗੈਰ ਕਾਨੂੰਨੀ ਤੌਰ ਤੇ ਰੁੱਖ ਕੀਤਾ। ਪੰਜਾਬ ਵਿੱਚ ਨਕਸਲਵਾਦੀ ਲਹਿਰ ਦੇ ਤਹਿਤ ਵੀ ਕਈ ਨੌਜਵਾਨ ਝੂਠੇ ਪੁਲਿਸ ਮੁਕਾਬਲਿਆਂ ਤੋਂ ਬਚਣ ਲਈ, ਝੂਠੇ ਪਰਚਿਆਂ ਤੋਂ ਬਚਣ ਲਈ ਪਰਵਾਸ ਦੇ ਰਾਹ ਤੇ ਤੁਰ ਗਏ। ਸਾਕਾ ਨੀਲਾ ਤਾਰਾ ਤਹਿਤ ਸਿੱਖਾਂ ਦੇ ਪਰਿਵਾਰ ਢਹਿ ਢੇਰੀ ਹੋ ਗਏ। ਅਨੇਕਾਂ ਘਰਾਂ ਦੇ ਚਿਰਾਗ ਬੁਝ ਗਏ, ਅਜਿਹੀ ਹਾਲਤ ਵਿੱਚ ਪੰਜਾਬੀਆਂ ਨੇ ਬਾਹਰਲੇ ਮੁਲਕਾਂ ਵਿੱਚ ਰੁੱਖ ਕੀਤਾ। ਚਾਹੇ ਪੰਜਾਬੀ ਕਿਸੇ ਵੀ ਹਾਲਤ ਵਿੱਚ ਬਾਹਰ ਗਏ ਹੋਣ ਪਰ ਉਥੇ ਜਾ ਕੇ ਜੋ ਮਿਹਨਤਾਂ ਉਹਨਾਂ ਨੇ ਕੀਤੀਆਂ ਤਾਂ ਪਰਵਾਸ ਉਹਨਾਂ ਲਈ ਵਰਦਾਨ ਬਣ ਕੇ ਸਾਹਮਣੇ ਆ ਗਿਆ।

ਪਰਵਾਸ ਦਾ ਸਭ ਤੋਂ ਵੱਡਾ ਵਰਦਾਨ ਆਰਥਿਕਤਾ ਨਾਲ ਸੰਬੰਧਿਤ ਹੈ। ਜੇਕਰ ਪੰਜਾਬ ਅਤੇ ਵਿਦੇਸ਼ ਦੇ ਆਰਥਿਕ, ਸਮਾਜਿਕ, ਰਾਜਨੀਤਿਕ ਢਾਂਚਿਆਂ ਉੱਤੇ ਨਿਗ੍ਹਾ ਮਾਰੀ ਜਾਵੇ ਤਾਂ ਕਈ ਅਜਿਹੇ ਅਮੀਰ ਪਰਿਵਾਰਾਂ ਦਾ ਜ਼ਿਕਰ ਆਉਂਦਾ ਹੈ, ਜਿਨਾਂ ਨੇ ਵਿਦੇਸ਼ੀ ਧਰਤੀ ਉੱਤੇ ਉਤੇ ਹੋਟਲ, ਟਰਾਂਸਪੋਰਟ, ਪੈਟਰੋਲ ਪੰਪ, ਸਥਾਪਿਤ ਕੀਤੇ ।ਵਿਦੇਸ਼ੀ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀਆਂ ਵਿੱਚ ਪ੍ਰੋਫੈਸਰ, ਡਾਕਟਰ, ਸਾਇੰਟਿਸਟ ਬਣੇ। ਰਾਜਨੀਤਿਕ ਖੇਤਰ ਵਿੱਚ ਮੱਲਾਂ ਮਾਰੀਆਂ ਅਤੇ ਮਾਰ ਰਹੇ ਹਨ। ਇਹ ਪੰਜਾਬੀ ਵਿਦੇਸ਼ ਦੀ ਧਰਤੀ ਤੇ ਪਰਵਾਸੀ ਹੋਣ ਦੇ ਬਾਵਜੂਦ ਵੀ ਅਨੇਕਾਂ ਵਿਦੇਸ਼ੀਆਂ ਨੂੰ ਰੁਜ਼ਗਾਰ ਦੇ ਰਹੇ ਹਨ। ਬੋਬੀ ਜਿੰਦਲ, ਸੰਤ ਸਿੰਘ ਛਤਵਾਲ, ਉੱਜਲ ਦੁਸਾਂਝ, ਗੁਰਬਖਸ਼ ਸਿੰਘ ਮੱਲੀ, ਜਗਰੂਪ ਸਿੰਘ, ਪਰਿਵਾਰ ਰੱਖੜਾ, ਲਾਰਡ ਸਵਰਾਜਪਾਲ, ਕਲਪਨਾ ਚਾਵਲਾ ਆਦਿ ਨੇ ਵਿਦੇਸ਼ੀ ਧਰਤੀ ਤੇ ਮੱਲਾਂ ਮਾਰੀਆਂ ਹਨ। ਆਰਥਿਕਤਾ ਮਨੁੱਖੀ ਜੀਵਨ ਵਿੱਚ ਮਹੱਤਵਪੂਰਨ ਰੋਲ ਨਿਭਾਉਂਦੀ ਹੈ। ਆਰਥਿਕ ਪੱਖ ਜੀਵਨ ਦੇ ਸਾਰੇ ਪੱਖਾਂ ਨੂੰ ਪ੍ਰਭਾਵਿਤ ਕਰਦਾ ਹੈ।ਡਾਕਟਰ ਹਰਚੰਦ ਸਿੰਘ ਬੇਦੀ ਆਰਥਿਕਤਾ ਨੂੰ ਪ੍ਰਮੁੱਖ ਅਧਾਰ ਮੰਨਦੇ ਹੋਏ ਲਿਖਦੇ ਹਨ।

''ਮਨੁੱਖੀ ਵਿਹਾਰ ਨਿਸ਼ਚਿਤ ਤੇ ਨਿਰਧਾਰਿਤ ਕਰਨ ਵਾਲੇ ਪਹਿਲੂਆਂ ਵਿੱਚੋਂ ਆਰਥਿਕਤਾ ਸਭ ਤੋਂ ਅਹਿਮ ਹੈ। ਆਰਥਿਕਤਾ ਕਿਸੇ ਵੀ ਸਮਾਜ ਵਿੱਚ ਲਈ ਮਾਨਵੀ ਰਿਸ਼ਤਿਆਂ ਨੂੰ ਸੰਚਾਲਿਤ ਕਰਨ ਵਿੱਚ ਫੈਸਲਾ ਭੂਮਿਕਾ ਅਦਾ ਕਰਦੀ ਹੈ। ਪ੍ਰਵਾਸੀਆਂ ਦੇ ਪਰਵਾਸ ਦਾ ਮੂਲ ਕਾਰਨ ਪ੍ਰਤੱਖ ਜਾਂ ਪ੍ਰੋਖ ਰੂਪ ਵਿਚ ਆਰਥਿਕਤਾ 'ਤੇ ਹੀ ਆਧਾਰਿਤ ਹੈ। ਇਹ ਇੱਕ ਵੱਖਰਾ ਤੱਥ ਹੈ ਕਿ ਕੁਝ ਪਰਵਾਸੀ ਨਿਮਨ ਵਰਗੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਦੀਆਂ ਤੋਟਾਂ ਤ੍ਰਿਪਤੀਆਂ ਅਤੇ ਦੁੱਖਾਂ ਤੋਂ ਮੁਕਤੀ ਪ੍ਰਾਪਤ

ਕਰਨ ਲਈ ਹੀ ਜਾਂਦੇ ਹਨ ਤੇ ਕੁਝ ਮੱਧਵਰਗ ਵਰਗੀਆਂ ਸੁੱਖ ਸਹੂਲਤਾਂ ਦੀ ਪ੍ਰਾਪਤੀ ਦੇ ਉਦੇਸ਼ ਨਾਲ ਜਾਂਦੇ ਹਨ। ਦੋਹਾਂ ਹਾਲਤਾਂ ਵਿੱਚ ਦ੍ਰਿਸ਼ਟੀ ਆਰਥਿਕਤਾ ਤੇ ਹੀ ਕੇਂਦਰਿਤ ਹੈ।''4

ਦੇਸ਼ ਦਾ ਭਵਿੱਖ; ਨੌਜਵਾਨ ਪੀੜੀ ਉਚੇਰੀ ਸਿੱਖਿਆ ਲਈ ਚੰਗੀ ਪੜ੍ਹਾਈ ਤੇ ਸਿਖਲਾਈ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰਨ ਲਈ ਵਿਦੇਸ਼ਾਂ ਵਿੱਚ ਜਾਂਦੀ ਹੈ ਅਤੇ ਕਈ ਉੱਚੀ ਸਿੱਖਿਆ ਹਾਸਿਲ ਕਰਕੇ ਪੰਜਾਬ ਵਿੱਚ ਆ ਕੇ ਆਪਣਾ ਕਾਰੋਬਾਰ ਵੀ ਸਥਾਪਿਤ ਕਰਦੇ ਹਨ। ਜਿਸ ਨਾਲ ਪੰਜਾਬ ਦੀ ਆਰਥਿਕਤਾ ਨੂੰ ਫਾਇਦਾ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਵਿਦੇਸ਼ੀ ਧਰਤੀ ਉੱਤੇ ਵੱਸਦੇ ਕਈ ਪਰਵਾਸੀ ਪਰਿਵਾਰ ਕੁਝ ਲੋੜਵੰਦ ਸੰਸਥਾਵਾਂ ਦੇ ਰਾਹੀਂ, N.O.G ਵੀ ਪੰਜਾਬ ਵਿੱਚ ਚਲਾ ਰਹੇ ਹਨ, ਜਿਸ ਨਾਲ ਦੋ ਪਹਿਲੂ ਉਭਰ ਕੇ ਸਾਹਮਣੇ ਆਉਂਦੇ ਹਨ।

(1) ਆਰਥਿਕ ਖੁਸ਼ਹਾਲੀ

(2) ਲੋੜਵੰਦ ਲੋਕਾਂ ਦੀ ਸਹਾਇਤਾ

ਜਿਨਾਂ ਵੀ ਨੌਜਵਾਨਾਂ ਨੂੰ ਪੰਜਾਬ ਵਿੱਚ ਰੁਜ਼ਗਾਰ ਨਹੀਂ ਮਿਲਦਾ ਜਾਂ ਜੋ ਘੱਟ ਪੜ੍ਹੇ ਲਿਖੇ ਹਨ ,ਉਹਨਾਂ ਲਈ ਵਿਦੇਸ਼ ਜਾਣਾ ਇੱਕ ਵਰਦਾਨ ਹੈ ਕਿਉਂਕਿ ਕੁਝ ਪਰਿਵਾਰ ਅਜਿਹੇ ਹੁੰਦੇ ਹਨ ਜਿਨਾਂ ਦੀਆਂ ਨਿੱਜੀ ਲੋੜਾਂ ਦੀ ਪੂਰਤੀ ਵੀ ਬੜੀ ਮੁਸ਼ਕਿਲ ਨਾਲ ਹੁੰਦੀ ਹੈ, ਪਰ ਪਰਵਾਸ ਕਾਰਨ ਉਹਨਾਂ ਦੀ ਜੀਵਨ ਸ਼ੈਲੀ ਵਿੱਚ ਅਜਿਹਾ ਬਦਲਾਅ ਆਉਂਦਾ ਹੈ ਕਿ ਉਹਨਾਂ ਦੀ ਪਹਿਲੀ ਕਿਸੇ ਪੀੜੀ ਨੇ ਉਹ ਸੁੱਖ ਸਹੂਲਤ ਨਹੀਂ ਮਾਣੀ ਹੁੰਦੀ। ਅਜਿਹੇ ਲੋਕਾਂ ਲਈ ਪਰਵਾਸ ਇੱਕ ਵਰਦਾਨ ਹੈ। ਵਿਦੇਸ਼ੀ ਧਰਤੀ ਤੇ ਬੈਠੇ ਪੰਜਾਬੀ ਸਾਹਿਤਕਾਰ ਵੀ ਪਰਵਾਸੀ ਪੰਜਾਬੀ ਸਾਹਿਤ ਰਾਹੀ ਪੰਜਾਬੀ ਭਾਸ਼ਾ ਅਤੇ ਸੱਭਿਆਚਾਰ ਨੂੰ ਬਚਾਉਣ ਦਾ ਯਤਨ ਕਰ ਰਹੇ ਹਨ। ਵਿਦੇਸ਼ੀ ਧਰਤੀ ਉੱਤੇ ਪੰਜਾਬੀ ਭਾਸ਼ਾ ਸਬੰਧੀ ਵਿਸ਼ਵ ਪੱਧਰੀ ਪੰਜਾਬੀ ਕਾਨਫ਼ਰੰਸਾਂ ਕੀਤੀਆਂ ਜਾ ਰਹੀਆਂ ਹਨ, ਜਿਸ ਤਰਾਂ ਅੰਤਰਰਾਸ਼ਟਰੀ ਪੱਧਰ ਤੇ ਪੰਜਾਬੀ ਦੀ ਪਹਿਚਾਣ ਹੋਰ ਗੂੜ੍ਹੀ ਹੋ ਰਹੀ ਹੈ। ਇਹ ਪਛਾਣ ਪਰਵਾਸ ਤੇ ਪਰਵਾਸੀ ਸਾਹਿਤਕਾਰਾਂ ਨਾਲ ਹੀ ਸੰਭਵ ਹੋਈ ਹੈ। ਗਿਆਨ ਸਿੰਘ ਕੰਗ, ਅਜਾਇਬ ਸਿੰਘ ਚੱਠਾ, ਸੁਖੀ ਬਾਠ ਆਦਿ ਨਾਮਵਰ ਸ਼ਖਸ਼ੀਅਤਾਂ ਇਸੇ ਸ਼੍ਰੇਣੀ ਅਧੀਨ ਦੀਆਂ ਹੁੰਦੀਆਂ ਹਨ। ਕਈ ਐਨ .ਆਰ.ਆਈਜ਼. ਪੰਜਾਬ ਵਿੱਚ ਆ ਕੇ ਆਪਣੇ ਪਿੰਡਾਂ ਕਸਬਿਆਂ ਵਿੱਚ, ਕਬੱਡੀ ਆਦਿ ਖੇਡਾਂ ਦੇ ਰਾਹੀਂ ਮੇਲੇ ਕਰਵਾਉਂਦੇ ਹਨ ਤੇ ਇਹਨਾਂ ਮੇਲਿਆਂ ਵਿੱਚ ਡਾਲਰਾਂ ਦਾ ਹੜ੍ਹ ਲਿਆ ਦਿੰਦੇ ਹਨ। ਜਿਸ ਨਾਲ ਵਿਦੇਸ਼ੀ ਡਾਲਰ ਪੰਜਾਬ ਦੇ ਪੈਸੇ ਵਿੱਚ ਵਾਧਾ ਕਰਦਾ ਹੈ। ਦੇਖਿਆ ਜਾਵੇ ਤਾਂ ਚਾਹੇ ਉਹ ਪੰਜਾਬ ਹੈ ਜਾਂ ਵਿਦੇਸ਼ ਦੀ ਧਰਤੀ ਪੰਜਾਬੀ ਲਈ ਪਰਵਾਸ ਕਿਸੇ ਵਰਦਾਨ ਤੋਂ ਘੱਟ ਨਹੀਂ ਹੈ ਕਿਉਂਕਿ ਸਿਹਤ ਸਹੂਲਤਾਂ, ਸਾਫ ਵਾਤਾਵਰਨ, ਬੇਰੁਜ਼ਗਾਰੀ ਤੋਂ ਛੁਟਕਾਰਾ, ਭ੍ਰਿਸ਼ਟਾਚਾਰੀ ਤੋਂ ਮੁਕਤੀ, ਸੁਚੱਜਾ ਕਾਨੂੰਨ ਪ੍ਰਬੰਧ, ਪੈਨਸ਼ਨ, ਚੰਗਾ ਖਾਣ-ਪੀਣ, ਪਰਵਾਸੀ ਪੰਜਾਬੀ ਆਸਾਨੀ ਨਾਲ ਹੀ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰ ਲੈਂਦਾ ਹੈ।

ਕੁਝ ਨੋਜਵਾਨ ਵਿਦੇਸ਼ੀ ਧਰਤੀ ਤੇ ਡਾਲਰਾਂ ਦੀ ਕਮਾਈ ਕਰਕੇ ਅਮੀਰ ਹੋਏ ਹਨ। Reverse migration ਦੇ ਤਹਿਤ ਵਿਦੇਸ਼ੀ ਤਕਨਾਲੋਜੀ ਅਤੇ ਵਸੀਲਿਆਂ ਰਾਹੀਂ ਹੁਣ ਪੰਜਾਬ ਵਿੱਚ ਆ ਕੇ ਰੋਜ਼ਗਾਰ ਸਥਾਪਿਤ ਕਰ ਰਹੇਂ ਹਨ।ਮਨਦੀਪ ਕੌਰ ਟਾਂਗਰਾ ਦਾ ਨਾਮ ਕਿਸੇ ਜਾਣ ਪਹਿਚਾਣ ਦਾ ਮੁਹਤਾਜ ਨਹੀਂ ਹੈ। ਜੋ ਅਜਿਹੇ ਨੋਜਵਾਨਾਂ ਨੂੰ ਉਤਸ਼ਾਹਿਤ ਕਰ ਰਹੀਂ ਹੈ। ਚਾਹੇ ਕੁਝ ਪੰਜਾਬੀਆਂ ਨੇ ਪਰਵਾਸ ਰਾਹੀਂ ਪੰਜਾਬ ਵਿੱਚ ਵਾਪਿਸ ਆਕੇ ਆਪਣਾ ਰੁਜ਼ਗਾਰ ਸਥਾਪਿਤ

ਕੀਤਾ ਹੈ ਪਰ ਉਹ ਵੀ ਨਿਜੀ ਸੰਪਤੀ ਦੇ ਵਾਧੇ ਅਧੀਨ ਹੀ ਅਜਿਹਾ ਕਰ ਰਹੇ ਹਨ। ਆਪਣੇ ਧੀਆਂ ਪੁੱਤਰਾਂ ਲਈ ਜਾਇਦਾਦਾਂ ਬਣਾ ਕੇ ਆਪਣੀ ਹੀ ਪੀੜ੍ਹੀ ਦਾ ਭਵਿੱਖ ਸੁਰੱਖਿਅਤ ਕਰਨ ਲਈ ਤਤਪਰ ਹਨ।

ਪਰਵਾਸ ਜੇਕਰ ਪਰਵਾਸੀਆਂ ਲਈ ਵਰਦਾਨ ਸਾਬਿਤ ਹੋਇਆ ਹੈ ਤਾਂ ਇਹ ਕਿਸੇ ਸਰਾਪ ਤੋਂ ਵੀ ਘੱਟ ਨਹੀਂ ਹੈ ਕਿਉਂਕਿ ਸਕਾਰਾਤਮਕਤਾ ਦੇ ਨਾਲ-ਨਾਲ ਨਕਾਰਾਤਮਕ ਸਿੱਟੇ ਵੀ ਸਾਹਮਣੇ ਆਏ ਹਨ।ਸਭ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਵਿਚਾਰ ਆਉਂਦਾ ਹੈ ਕਿ ਪੰਜਾਬ ਦਾ ਪੈਸਾ ਨੌਜਵਾਨ ਪੀੜੀ ਦੇ ਬਾਹਰ ਦੇ ਰੁਝਾਨ ਕਰਨ ਬਾਹਰ ਦੀਆਂ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀਆਂ, ਕਾਲਜਾਂ ਨੂੰ ਜਾ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਇੱਕ ਵਿਦਿਆਰਥੀ ਜਿਹੜੀ ਪੜ੍ਹਾਈ +2 ਤੋਂ ਬਾਅਦ 10 ਲੱਖ ਵਿੱਚ ਕਰ ਸਕਦਾ ਹੈ ਉਹੀ ਪੜ੍ਹਾਈ ਵਿਦੇਸ਼ੀ ਧਰਤੀ ਤੇ 50-60 ਲੱਖ ਰੁਪਏ ਲਾ ਕੇ ਕਰਦਾ ਹੈ। ਪੰਜਾਬ ਦੇ ਵਿਦਿਅਕ ਅਦਾਰਿਆਂ ਨੂੰ ਘਾਟਾ ਪੈ ਰਿਹਾ ਹੈ ਦੂਸਰੇ ਪਾਸੇ ਕਿਸਾਨ ਕਰਜਾਈ ਹੋ ਰਿਹਾ ਹੈ ਉਹ ਆਪਣੀਆਂ ਜ਼ਮੀਨਾਂ ਕੋਠੀਆਂ ਨੂੰ ਗਹਿਣੇ ਰੱਖ ਕੇ ਬੈਂਕਾਂ ਤੋਂ ਕਰਜ਼ਾ ਲੈ ਰਿਹਾ ਹੈ ਅਤੇ ਆਪਣੀਆਂ ਜੱਦੀ ਪੁਸ਼ਤੀ ਜ਼ਮੀਨਾਂ ਤੋਂ ਵਾਂਝਾ ਹੋ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਕਰਜਾਈ ਕਿਸਾਨ ਖੁਦਕੁਸ਼ੀਆਂ ਕਰ ਰਹੇ ਹਨ।

ਵਿਦਿਆਰਥੀ ਜੀਵਨ ਵਿੱਚੋਂ ਸਿੱਖਿਆ ਮਨਫੀ ਹੋ ਰਹੀ ਹੈ। ਨੌਜਵਾਨ ਵਰਗ ਹੁਣ ਤੱਕ +2 ਦੀ ਪੜ੍ਹਾਈ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਆਈਲੈਟਸ ਕਰਨ ਨੂੰ ਤਰਜੀਹ ਦਿੰਦਾ ਰਿਹਾ ਹੈ ਤਾਂ ਕਿ ਪਾਸਪੋਰਟ ਉੱਤੇ ਵਿਦੇਸ਼ੀ ਮੁਹਰ ਲਗਾਈ ਜਾ ਸਕੇ।ਅਮੀਰੀ ਸਟੇਟਸ ਦੇ ਕਾਰਨ ਪੰਜਾਬ ਵਿੱਚ ਚੰਗੀਆਂ ਸਰਕਾਰੀ ਨੌਕਰੀਆਂ ਵਾਲੇ ਵੀ ਪਰਵਾਸ ਵਿੱਚ ਚੌਥੇ ਦਰਜੇ ਦੇ ਕੰਮ ਕਰਨ ਨੂੰ ਤਰਜੀਹ ਦਿੰਦੇ ਹਨ, ਪਰ ਆਪਣੀ ਮਾਨਸਿਕਤਾ ਨੂੰ ਕਿਸੇ ਅੱਗੇ ਪੇਸ਼ ਕਰਨ ਤੋਂ ਸੰਕੋਚ ਕਰਦੇ ਹਨ। ਪ੍ਰਵਾਸ ਕਾਰਨ ਬੱਚੇ ,ਜਵਾਨ ਤੇ ਬਜ਼ੁਰਗ ਤਿੰਨੋਂ ਹੀ ਮਾਨਸਿਕ ਅਤੇ ਸਰੀਰਕ ਸੰਤਾਪ ਭੋਗ ਰਹੇ ਹਨ। ਪਰਵਾਸੀ ਪੰਜਾਬੀ ਦੇ ਪੰਜਾਬ ਵਿੱਚ ਰਹਿੰਦੇ ਰਿਸ਼ਤੇਦਾਰ ਵਿਛੋੜੇ ਦੀ ਮਾਰ ਨੂੰ ਝੱਲਦੇ ਹਨ। ਬੱਚੇ, ਮਾਂ- ਪਿਓ ਦੇ ਪਿਆਰ ਤੋਂ ਵਾਂਝੇ, ਜਵਾਨ ਪਤੀ-ਪਤਨੀ ਵਿੱਚ ਦੂਰੀਆਂ, ਬਜ਼ੁਰਗ ਮਾਪਿਆਂ ਨੂੰ ਵਿਛੋੜੇ ਦਾ ਝੋਰਾ ਬਰਬਾਦ ਕਰਕੇ ਰੱਖ ਦਿੰਦਾ ਹੈ। ਅਜਿਹੇ ਪਰਿਵਾਰ ਮਾਨਸਿਕ ਰੂਪ ਵਿੱਚ ਵਿਕਾਸ ਨਹੀਂ ਕਰ ਸਕਦੇ ਨਤੀਜੇ ਵਜੋਂ ਡਿਪਰੈਸ਼ਨ ਵਰਗੀਆਂ ਬਿਮਾਰੀਆਂ ਦਾ ਸ਼ਿਕਾਰ ਹੋ ਜਾਂਦੇ ਹਨ। ਦੂਜੇ ਪਾਸੇ ਵਿਦੇਸ਼ੀ ਧਰਤੀ ਤੇ ਪਰਵਾਸੀ ਵਿਛੋੜੇ ਦਾ ਦਰਦ ਸਹਿੰਦਾ ਹੋਇਆ, ਕਰਜੇ ਦੀ ਮਾਰ ਵਿੱਚ ਦੱਬਿਆ ਹੋਇਆਂ, ਡਾਲਰਾਂ ਦੀ ਕਮਾਈ ਵਾਸਤੇ ਰਾਤ ਦਿਨ ਸ਼ਿਫਟਾਂ ਲਾਉਣ ਲਈ ਨਸ਼ਿਆਂ ਦਾ ਸਹਾਰਾ ਲੈ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਪੰਜਾਬ ਦੀ ਜਵਾਨੀ ਨਸ਼ਿਆਂ ਰਾਹੀਂ ਆਪਣੇ ਸਰੀਰ ਦੀ ਮਸ਼ੀਨਰੀ ਨੂੰ ਚਲਾਉਣ ਦਾ ਯਤਨ ਕਰ ਰਹੀ ਹੈ। ਨੌਜਵਾਨ ਕੁੜੀਆਂ ਦਾ ਵਿਦੇਸ਼ਾਂ ਦੀ ਧਰਤੀ ਤੇ ਸਰੀਰਕ ਸ਼ੋਸ਼ਣ ਹੋ ਰਿਹਾ ਹੈ ਇਸ ਤੋਂ ਵੱਡਾ ਸਰਾਪ ਕੀ ਹੋ ਸਕਦਾ ਹੈ।

ਅਸੀਂ ਹਰ ਰੋਜ਼ ਅਖਬਾਰਾਂ ਵਿੱਚ ਨੌਜਵਾਨਾਂ ਦੀਆਂ ਹਾਰਟ ਅਟੈਕ ਨਾਲ ਮੌਤ ਦੀਆਂ ਖਬਰਾਂ ਪੜਦੇ ਹਾਂ ਤਾਂ ਇਹ ਪਰਵਾਸ ਦਾ ਵਰਤਾਰਾ ਸਾਨੂੰ ਝੰਜੋੜ ਕੇ ਰੱਖ ਦਿੰਦਾ ਹੈ। ਪਰਵਾਸ ਦਾ ਸਭ ਤੋਂ ਵੱਡਾ ਨੁਕਸਾਨ ਪੰਜਾਬੀ ਸੱਭਿਆਚਾਰ ਨੂੰ ਹੋਇਆ ਹੈ। ਇਸ ਪਰਵਾਸ ਕਾਰਨ ਪੱਛਮੀ ਸੱਭਿਆਚਾਰ, ਪੱਛਮ ਦੀ ਸਾਹਿਤ, ਰਹਿਣ ਸਹਿਣ, ਖਾਣ ਪੀਣ ਦੇ ਢੰਗ ਵਧੇਰੇ ਪ੍ਰਭਾਵਿਤ ਕਰ ਰਹੇ ਹਨ। ਪੱਛਮ ਦੇ ਪਹਿਰਾਵੇ ਅਤੇ ਰਹਿਣ ਸਹਿਣ ਲਈ ਮੁੰਡਿਆਂ ਦੇ ਨਾਲ ਨਾਲ ਕੁੜੀਆਂ ਤੇ ਵੀ ਗਹਿਰਾ ਪ੍ਰਭਾਵ ਪਿਆ ਹੈ ਜੋ ਕਿ ਆਪਣੇ ਬੱਚਿਆਂ ਨੂੰ ਵੀ ਵਿਦੇਸ਼ੀ ਵਸਤੂਆਂ ਨੂੰ ਤਰਜੀਹ ਦੇਣ ਲਈ ਕਹਿ ਰਹੀਆਂ ਹਨ। ਕਿਉਂਕਿ ਮਾਵਾਂ ਦਾ ਬੜਾ ਵੱਡਾ ਰੋਲ ਹੁੰਦਾ ਬੱਚੇ ਦੀ ਸ਼ਖਸ਼ੀਅਤ ਉਸਾਰੀ ਕਰਨ ਲਈ, ਪਰ ਜਦੋਂ ਮਾਂ ਹੀ ਸੱਭਿਆਚਾਰ ਤੋਂ ਵਾਂਝੀ ਹੋ ਰਹੀ ਹੈ ਤਾਂ

ਆਉਣ ਵਾਲੀ ਨਸਲ ਸੱਭਿਆਚਾਰ ਨੂੰ ਕੀ ਦੇ ਸਕਦੀ ਹੈ। ਵਿਦੇਸ਼ਾਂ ਵਿੱਚ ਰਹਿ ਰਹੇ ਪੰਜਾਬੀ ਪਰਿਵਾਰਾਂ ਦੇ ਵਿਆਹ ਵਿਦੇਸ਼ੀਆਂ ਨਾਲ ਹੋ ਰਹੇ ਹਨ। ਪਰਵਾਸੀ ਬੱਚੇ ਪੰਜਾਬੀ ਖਾਣ-ਪੀਣ, ਰਹਿਣ-ਸਹਿਣ ਨੂੰ ਮਾਨਸਿਕ ਤੌਰ ਤੇ ਵੀ ਨਕਾਰ ਚੁੱਕੇ ਹਨ, ਇਸ ਨਾਲ ਸੱਭਿਆਚਾਰ ਨੂੰ ਖਤਰਾ ਪੈਦਾ ਹੋ ਰਿਹਾ ਹੈ

ਪਰਵਾਸੀ ਭਾਰਤੀ ਪੰਜਾਬੀ ਮਾਨਸਿਕ ਸੰਤਾਪ ਹੰਢਾ ਰਿਹਾ ਹੈ ਜਿਸ ਨੂੰ ਚਾਅ ਕੇ ਵੀ ਛੱਡ ਨਹੀਂ ਸਕਦਾ। ਇਸ ਬਾਰੇ ਬੜਾ ਹੀ ਭਾਵਪੂਰਤ ਨਾਟਕ ਕੈਂਮਲੂਪਸ ਦੀਆਂ ਮੱਛੀਆਂ ਦਾ ਜ਼ਿਕਰ ਕੀਤਾ ਜਾ ਸਕਦਾ ਕਿ ਕਿਵੇਂ ਇਹ ਨਾਟਕ ਪਰਵਾਸ ਦੇ ਵਰ ਅਤੇ ਸਰਾਪ ਦੇ ਪੱਖ ਨੂੰ ਬਾਖ਼ੂਬੀ ਬਿਆਨ ਕਰ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਪਰਵਾਸੀ ਵਿਅਕਤੀ ਆਪਣੇ ਸੱਭਿਆਚਾਰ ਤੇ ਅਤੀਤ ਨੂੰ ਛੱਡ ਨਹੀਂ ਸਕਦਾ, ਉਸਦੀ ਅਗਲੀ ਪੀੜੀ, ਉਸ ਦੇ ਅਤੀਤ ਅਤੇ ਸੱਭਿਆਚਾਰ ਨੂੰ ਸਮਝ ਨਹੀਂ ਰਹੀ ਅਤੇ ਉਸ ਦੀ ਤੀਜੀ ਪੀੜ੍ਹੀ ਸੱਭਿਆਚਾਰ ਅਤੇ ਅਤੀਤ ਨੂੰ ਮੁੱਢੋਂ ਹੀ ਨਕਾਰ ਚੁੱਕੀ ਹੈ। ਇਸ ਹਾਲਤ ਵਿੱਚ ਪਰਵਾਸ ਵਰ ਦੇ ਨਾਲ - ਨਾਲ ਸਰਾਪ ਵੀ ਹੋ ਨਿਬੜਦਾ ਹੈ।

ਪਰਵਾਸ ਕਾਰਨ ਰਿਸ਼ਤੇ- ਨਾਤਿਆਂ ਦੀ ਪਵਿੱਤਰਤਾ ਵਿੱਚ ਬਹੁਤ ਵੱਡੀ ਗਿਰਾਵਟ ਆਈ ਹੈ। ਪਰਵਾਸ ਕਾਰਨ ਭੈਣ-ਭਰਾ, ਮਾਮਾ ਭਾਣਜੀ, ਚਾਚਾ ਭਤੀਜੀ ਆਦਿ ਰਿਸ਼ਤਿਆਂ ਨੂੰ ਕਾਗਜ਼ੀ ਵਿਆਹਾਂ ਰਾਹੀਂ ਸ਼ਰਮਸਾਰ ਕੀਤਾ ਗਿਆ ਹੈ। ਪਤੀ-ਪਤਨੀ ਫਰਜ਼ੀ ਵਿਆਹਾਂ ਰਾਹੀ, ਵੱਟੇ ਸੱਟੇ ਦੇ ਵਿਆਹਾਂ ਰਾਹੀ, ਵਿਆਹ ਦੇ ਪਵਿੱਤਰ ਰਿਸ਼ਤੇ ਨੂੰ ਦਾਗ਼ ਲਾ ਰਹੇ ਹਨ। ਬਾਹਰ ਦੇ ਲਾਲਚ ਕਾਰਨ ਆਪਣੀਆਂ ਧੀਆਂ ਪੁੱਤਰਾਂ ਨੂੰ ਆਪਣੀ ਉਮਰ ਤੋਂ ਵੱਡੇ ਜਾਂ ਦਹਾਜੂ ਨਾਲ ਨੜਿਆ ਜਾ ਰਿਹਾ ਹੈ, ਨੌਜਵਾਨ ਕੁੜੀਆਂ ਵੀ ਵਿਦੇਸ਼ ਦੀ ਧਰਤੀ ਤੇ ਵਸਣ ਕਾਰਨ ਆਪਣੀ ਪਿਉ ਦੇ ਉਮਰ ਦੇ ਵਿਅਕਤੀ ਨਾਲ ਵਿਆਹ ਕਰਵਾ ਰਹੀਆਂ ਹਨ। ਕੁਝ ਪਰਵਾਸੀ ਪਰਵਾਸ ਦੇ ਕਾਰਨ ਪੰਜਾਬ ਰਹਿੰਦੇ ਆਪਣੇ ਬੱਚਿਆਂ ਅਤੇ ਪਤਨੀ ਨੂੰ ਭੁੱਲ ਚੁੱਕੇ ਹਨ ਅਤੇ ਵਿਦੇਸ਼ ਵਿਚ ਹੋਰ ਵਿਆਹ ਕਰਵਾ ਰਹੇ ਹਨ। ਡਾਲਰਾਂ ਦੀ ਚਮਕ ਦੇਖ ਕੇ ਲਾਲਚ ਅਧੀਨ ਬੰਨੇ ਹੋਏ ਰਿਸ਼ਤੇ ਬਹੁਤੇ ਹੰਢਣਸਾਰ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦੇ। ਇਹਨਾਂ ਰਿਸ਼ਤਿਆਂ ਵਿੱਚ ਬੰਨੇ ਰਹਿਣ ਕਾਰਨ ਵਿਆਹ ਬਾਹਰੇ ਸੰਬੰਧ ਬਣਨੇ ਆਮ ਗੱਲ ਹੋ ਜਾਂਦੀ ਹੈ, ਜਿਸ ਦਾ ਅੰਤ ਸਿਰਫ ਖੁਦਕੁਸ਼ੀ ਜਾਂ ਕਤਲ ਰਾਹੀ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਵਿਆਹ ਵਰਗੇ ਪਵਿੱਤਰ ਰਿਸ਼ਤੇ ਨੂੰ ਇਹ ਸਰਾਪ ਪਰਵਾਸ ਕਾਰਨ ਹੀ ਲੱਗਿਆ ਹੈ। ਜਿਹਨਾਂ ਧੀਆਂ ਪੁੱਤਰਾਂ ਨੂੰ ਮਾਂ ਪਿਓ ਇਕੱਲਿਆਂ ਘਰੋਂ ਬਾਹਰ ਨਹੀਂ ਜਾਣ ਦਿੰਦੇ, ਉਹੀ ਪਰਵਾਸ ਦੇ ਲਾਲਚ ਕਾਰਨ ਇਕੱਲੇ ਬਾਹਰ ਧੱਕ ਦਿੱਤੇ ਜਾਂਦੇ ਹਨ। ਜਿਸ ਉਮਰ ਵਿਚ ਦੁਨੀਆਦਾਰੀ ਦੀ ਕੋਈ ਸਮਝ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦੀ, ਉਸ ਉਮਰੇ ਪਰਵਾਸ ਦੇ ਕਾਰਨ ਵਿਆਹ ਰਾਹੀ ਕਬੀਲਦਾਰੀ ਵਿਚ ਫਸਾਇਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਅਜਿਹਾ ਵਿਆਹ ਬਰਬਾਦੀ ਦੀ ਨਿਸ਼ਾਨੀ ਹੁੰਦਾ ਹੈ, ਜਿਸ ਦੀ ਤਾਜ਼ਾ ਉਦਾਹਰਣ ਬੇਅੰਤ ਕੌਰ ਨਾਮੀ ਅਠਾਰਾਂ ਸਾਲਾਂ ਦੀ ਕੇਨੈਡੀਅਨ ਕੁੜੀ ਹੈ ਜਿਸ ਦਾ ਪਤੀ ਪੰਜਾਬ ਵਿੱਚ ਖੁਦਕੁਸ਼ੀ ਕਰਦਾ ਹੈ। ਇਹ ਸਰਾਪ ਪਰਵਾਸ ਰਾਹੀ ਹੀ ਮਿਲਿਆ ਹੈ।

ਪੰਜਾਬੀਆਂ ਦੇ ਸੁਭਾਅ ਦਾ ਮੁੱਖ ਗੁਣ ਪਿਆਰ ਤੇ ਅਪਣੱਤ ਮੰਨਿਆ ਜਾਂਦਾ ਰਿਹਾ ਹੈ ਪਰ ਪਰਵਾਸ ਨੇ ਮਨੁੱਖ ਦੇ ਮਨ ਵਿੱਚ ਵਪਾਰੀਕਰਨ ਦੀ ਨੀਤੀ ਨੂੰ ਭਾਰੂ ਬਣਾ ਦਿੱਤਾ ਹੈ ਕਿ ਉਹ ਹਰ ਪੱਖੋ ਆਪਣਾ ਮੁਨਾਫਾ ਸੋਚਦਾ ਹੈ ਜਦੋਂ ਕੋਈ ਨਵਾਂ ਪਰਵਾਸੀ ਪਰਵਾਸ ਕਰਕੇ ਵਿਦੇਸ਼ੀ ਧਰਤੀ ਤੇ ਆਉਂਦਾ ਹੈ ਤਾਂ ਮਹਿੰਗੇ ਘਰਾਂ, ਮਹਿੰਗਾ ਖਾਣ ਪੀਣ, ਘੱਟ ਪੈਸਿਆਂ ਦੇ

ਬਦਲੇ ਉਹਨਾਂ ਦਾ ਸ਼ੋਸ਼ਣ ਪਹਿਲਾਂ ਗਏ ਪਰਵਾਸੀਆਂ ਦੁਆਰਾ ਹੀ ਕੀਤਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਇਹ ਤੋਹਫਾ ਉਹਨਾਂ ਨੂੰ ਪਰਵਾਸ ਦੇ ਰੂਪ ਵਿੱਚ ਮਿਲਿਆ ਹੋਇਆ ਹੈ ਕਿਉਂਕਿ ਵਿਦੇਸ਼ੀ ਧਰਤੀ ਤੇ ਰਹਿੰਦੇ ਹੋਏ ਵਪਾਰੀਕਰਨ ਦੇ ਤਹਿਤ ਆਪਣੇ ਵਿੱਚੋਂ ਪਿਆਰ ਅਤੇ ਅਪਣੱਤ ਨੂੰ ਬਿਲਕੁਲ ਅਲੋਪ ਹੀ ਕਰ ਚੁੱਕੇ ਹਨ। ਪੱਛਮੀ ਸੱਭਿਆਚਾਰ ਦੇ ਪ੍ਰਭਾਵ ਕਾਰਨ ਮਨੁੱਖ ਕੁਦਰਤ ਨਾਲ ਵੀ ਛੇੜ ਛਾੜ ਕਰ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਵਿਆਹ ਤੋ ਬਿਨਾਂ ਪਤੀ-ਪਤਨੀ ਦੇ ਰੂਪ ਵਿੱਚ ਰਹਿਣਾ ਪਰਵਾਸ ਰਾਹੀਂ ਮਿਲਿਆ ਸਰਾਪ ਹੈ ਜਿਸ ਨੇ ਮਨੁੱਖ ਨੂੰ ਸਰੀਰਕ ਤੇ ਮਾਨਸਿਕ ਰੋਗੀ ਬਣਾ ਦਿੱਤਾ ਹੈ। ਮੁੰਡੇ;ਮੁੰਡਿਆਂ ਨਾਲ, ਕੁੜੀਆਂ;ਕੁੜੀਆਂ ਨਾਲ ਵਿਆਹ ਕਰਾ ਰਹੀਆਂ ਹਨ। ਵਿਆਹ ਦੇ ਪਵਿੱਤਰ ਬੰਧਨ ਵਿੱਚ ਬੱਝ ਕੇ ਜੀਵਨ ਦਾ ਵਿਕਾਸ ਕਰਨ ਦੀ ਥਾਂ ਆਪਣੇ ਸਰੀਰ ਨਾਲ ਖਿਲਵਾੜ ਕਰ ਰਹੇਂ ਹਨ। ਜਿਸ ਨਾਲ ਕਈ ਨਾਮੁਰਾਦ ਬੀਮਾਰੀਆਂ ਨਾਲ ਜੂਝ ਰਹੇ ਹਨ। ਭਾਰਤੀ ਸੰਸਕ੍ਰਿਤੀ ਅਤੇ ਪੰਜਾਬੀ ਸੱਭਿਆਚਾਰ ਪਤੀ-ਪਤਨੀ ਦੇ ਰਿਸ਼ਤੇ ਨੂੰ ਕਾਨੂੰਨੀ ਮਾਨਤਾ ਦਿੰਦਾ ਹੈ। ਪਰ ਵਿਦੇਸ਼ੀ ਸਭਿਆਚਾਰ ਦੇ ਅਸਰ ਕਾਰਨ ਇਹ ਰਿਸ਼ਤਾ ਸੰਤਾਪ ਹੰਢਾ ਰਿਹਾ ਹੈ।

ਇਸ ਪ੍ਰਕਾਰ ਪਰਵਾਸ ਦੇ ਅਨੇਕਾਂ ਪਹਿਲੂ ਹਨ ਇਹ ਇਕੋ ਵੇਲੇ ਵਰਦਾਨ ਵੀ ਹੈ ਤੇ ਸਰਾਪ ਵੀ ਹੈ। ਜਦੋਂ ਅਸੀਂ ਪ੍ਰਵਾਸ ਸੰਬੰਧੀ ਵਿਚਾਰ ਕਰਦੇ ਹਾਂ ਤਾਂ ਸਮਝ ਸਕਦੇ ਹਾਂ ਕਿ ਇਸ ਰਾਹੀ ਆਰਥਿਕ, ਸਮਾਜਿਕ, ਧਾਰਮਿਕ, ਰਾਜਨੀਤਿਕ ਜਾਂ ਸਭਿਆਚਾਰਕ ਬਦਲਾਅ ਜਾਂ ਆਦਾਨ-ਪ੍ਰਦਾਨ ਕਿਵੇਂ ਹੋਇਆ ਹੈ। ਕਿਵੇਂ ਵਿਸ਼ਵੀਕਰਨ ਦੇ ਰਾਹੀ ਮਨੁੱਖ ਦੀ ਸੋਚ ਤੇ ਰਹਿਣ- ਸਹਿਣ ਵਿੱਚ ਬਦਲਾਅ ਹੋਇਆ ਹੈ ਤੇ ਦੂਜੇ ਪਾਸੇ ਹੀ ਆਰਥਿਕ, ਸਮਾਜਿਕ, ਧਾਰਮਿਕ, ਰਾਜਨੀਤਿਕ ਅਤੇ ਸਭਿਆਚਾਰਕ ਹਾਲਾਤਾਂ ਦੇ ਰਾਹੀ ਮਨੁੱਖ ਦਾ ਕਿਵੇਂ ਸ਼ੋਸ਼ਣ ਵੀ ਹੋਇਆ ਹੈ। ਇਹ ਸਭ ਪਹਿਲੂ ਪਰਵਾਸ ਦੇ ਰਾਹੀਂ ਹੀ ਅਸੀਂ ਸਮਝ ਸਕਦੇ ਹਾਂ।

ਹਵਾਲੇ ਅਤੇ ਟਿੱਪਣੀਆਂ

1.ਭਾਈ ਕਾਨ੍ਹ ਸਿੰਘ ਨਾਭਾ, ਗੁਰੁ ਸ਼ਬਦ ਰਤਨਾਕਰ ਮਹਾਨ ਕੋਸ਼, ਪੰਨਾ 803

2.Encyclopedia of Britain, Vol 15, page 421

3.ਅੰਗਰੇਜੀ ਪੰਜਾਬੀ ਕੋਸ਼, ਪੰਜਾਬੀ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ, ਪਟਿਆਲਾ, ਪੰਨਾ 452

4.ਜਗਦੀਪ ਸਿੰਘ ਬੇਦੀ, ਸਮੀਖਿਆ ਸਭਿਆਚਾਰ, ਪੰਨਾ 53

9780947349

ਈਮੇਲ- dramandeepkaur2601@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com Bohal Shodh Manjusha ISSN: 2395-7115
Impact Factor: 8.642 June 2026 Page No. : 175-178
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

ਅਜੀਤ ਕੌਰ ਦੀਆਂ ਕਹਾਣੀਆਂ ਵਿੱਚ ਨਾਰੀ ਸਰੋਕਾਰ
(ਗੁਲਬਾਨੋ, ਦਾਇਰੇ ਅਤੇ ਫਾਲਤੂ ਔਰਤ ਦੇ ਸੰਦਰਭ 'ਚ)

ਡਾ. ਲਖਵਿੰਦਰ ਕੌਰ
ਅਸਿਸਟੈਂਟ ਪ੍ਰੋਫੈਸਰ,
ਪੰਜਾਬੀ ਵਿਭਾਗ, ਡੀ.ਏ.ਵੀ ਕਾਲਜ, ਬਠਿੰਡਾ

ਅਜੀਤ ਕੌਰ ਦਾ ਪੰਜਾਬੀ ਕਹਾਣੀ ਜਗਤ ਵਿੱਚ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਸਥਾਨ ਹੈ।ਉਹ ਆਪਣੇ ਕਹਾਣੀ ਸੰਗ੍ਰਹਿ 'ਗੁਲਬਾਨੋ' ਨਾਲ ਪੰਜਾਬੀ ਕਹਾਣੀਆਂ ਵਿੱਚ ਪ੍ਰਵੇਸ਼ ਕਰਦੀ ਹੈ। ਕਹਾਣੀਕਾਰਾ ਦੀਆਂ ਬਹੁਤੀਆਂ ਕਹਾਣੀਆਂ ਦਾ ਵਿਸ਼ਾ ਖੇਤਰ ਔਰਤ- ਮਰਦ ਦੇ ਆਪਸੀ ਸੰਬੰਧਾਂ ਅਤੇ ਉਸ ਵਿੱਚੋਂ ਪੈਦਾ ਹੋਈਆਂ ਸਥਿਤੀਆਂ ਦੁਆਲੇ ਘੁੰਮਦਾ ਹੈ। ਸ਼ੁਰੂ ਸ਼ੁਰੂ ਵਿੱਚ ਉਸ ਦੀਆਂ ਕਹਾਣੀਆਂ ਸਿਰਫ਼ ਔਰਤ ਦੀ ਸਮਾਜਿਕ ਸਥਿਤੀ ਨੂੰ ਹੀ ਬਿਆਨ ਕਰਦੀਆਂ ਹਨ ਪਰੰਤੂ ਹੌਲੀ ਹੌਲੀ ਉਸ ਵਿੱਚ ਆਰਥਿਕ, ਰਾਜਨੀਤਿਕ ਅਤੇ ਸਮਾਜਿਕ ਵਿਸ਼ੇ ਵੀ ਸ਼ਾਮਿਲ ਹੋ ਜਾਂਦੇ ਹਨ। ਅਜਿਹਾ ਹੋਣਾ ਸੁਭਾਵਿਕ ਹੈ ਕਿਉਂਕਿ ਕੋਈ ਵੀ ਸਾਹਿਤਕਾਰ ਸਮਾਜ ਵਿੱਚੋਂ ਵਿਸ਼ੇ ਗ੍ਰਹਿਣ ਕਰਕੇ ਹੀ ਸਾਹਿਤਕ ਰਚਨਾ ਕਰਦਾ ਹੈ ਜਿਸ ਦੌਰਾਨ ਸਮਾਜ ਵਿੱਚ ਵਾਪਰਦੀ ਹਰ ਚੰਗੀ ਮਾੜੀ ਘਟਨਾ ਦਾ ਪ੍ਰਭਾਵ ਉਸਦੀ ਰਚਨਾ ਉੱਪਰ ਪੈਣਾ ਸੁਭਾਵਿਕ ਹੈ।

ਅਜੀਤ ਕੌਰ ਦੀਆਂ ਕਹਾਣੀਆਂ ਦੇ ਪਾਤਰਾਂ ਦੀ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਤਾ ਇਹ ਹੈ ਕਿ ਸਮਾਜ ਵੱਲੋਂ ਪ੍ਰਵਾਨਿਤ ਕੀਤੇ ਪਤੀ - ਪਤਨੀ ਦੇ ਰਿਸ਼ਤੇ ਹੀ ਵਿਆਹ ਬਾਹਰੇ ਸੰਬੰਧ ਸਥਾਪਿਤ ਕਰਕੇ ਵਿਆਹ ਪ੍ਰਬੰਧ ਉੱਪਰ ਪ੍ਰਸ਼ਨ ਖੜੇ ਕਰਦੇ ਹਨ। ਪਰੰਤੂ ਅਜੀਤ ਕੌਰ ਔਰਤ ਨੂੰ ਦਮਿਤ ਧਿਰ ਵਜੋਂ ਹੀ ਪੇਸ਼ ਕਰਦੀ ਹੈ। ਉਸ ਅਨੁਸਾਰ ਇਸ ਮਰਦ - ਪ੍ਰਧਾਨ ਸਮਾਜ ਵਿੱਚ ਔਰਤ ਦੀ ਹੋਂਦ ਨਾ - ਮਾਤਰ ਹੀ ਦਿਖਾਈ ਦਿੰਦੀ ਹੈ। ਮਰਦ ਹਮੇਸ਼ਾ ਹੀ ਔਰਤ ਤੋਂ ਉੱਪਰ ਸਮਝਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਔਰਤ ਨੂੰ ਹਮੇਸ਼ਾ ਹੀ ਇੱਕ ਵਸਤੂ ਦੇ ਰੂਪ ਵਿੱਚ ਚਿਤਰਦਾ ਹੈ। ਅਜੀਤ ਕੌਰ ਦੀਆਂ ਕਹਾਣੀਆਂ ਵਿੱਚ ਔਰਤ ਕਈ ਪ੍ਰਕਾਰ ਨਾਲ ਮਰਦ ਦੇ ਸ਼ੋਸ਼ਣ ਦਾ ਸ਼ਿਕਾਰ ਹੁੰਦੀ ਨਜ਼ਰ ਆਉਂਦੀ ਹੈ। ਉਸ ਦੀਆਂ ਕਹਾਣੀਆਂ ਵਿਚਲੀਆਂ ਔਰਤ ਪਾਤਰ ਸਮਾਜ ਵੱਲੋਂ ਪ੍ਰਵਾਨਿਤ ਅਤੇ ਅਪ੍ਰਵਾਨਿਤ ਦੋਹਾਂ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੇ ਰਿਸ਼ਤਿਆਂ ਵਿੱਚ ਦੁੱਖ ਭੋਗਦੀਆਂ ਅਤੇ ਸ਼ੋਸ਼ਣ ਦੀਆਂ ਸ਼ਿਕਾਰ ਹੁੰਦੀਆਂ ਪੇਸ਼ ਹੋਈਆਂ ਹਨ।

' ਗੁਲਬਾਨੋ' ਅਜੀਤ ਕੌਰ ਦੀ ਸਭ ਤੋਂ ਪਹਿਲੀ ਕਹਾਣੀ ਹੈ ਜੋ ਜਾਗੀਰਦਾਰੀ ਪ੍ਰਥਾ ਵਿੱਚ ਮਰਦ ਦੀ ਔਰਤ ਉੱਪਰ ਕਬਜ਼ੇ ਦੀ ਰੁਚੀ ਨੂੰ ਦਰਸਾਉਂਦੀ ਹੈ। ਜਗੀਰਦਾਰੀ ਪ੍ਰਥਾ ਵਿੱਚ ਵਿਆਹ ਔਰਤ ਨੂੰ ਗੁਲਾਮੀ ਵੱਲ ਲੈ ਕੇ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਉੱਥੇ ਮਰਦ ਦੀ ਆਜ਼ਾਦੀ ਦੀ ਗੱਲ ਕਰਦਾ ਹੈ। ਇਹ ਕਹਾਣੀ ਵੀ ਔਰਤ ਦੀ ਇਸੇ ਸਥਿਤੀ ਨੂੰ ਪੇਸ਼ ਕਰਦੀ ਹੈ। ਜਗੀਰਦਾਰੀ ਸਮਾਜ ਵਿੱਚ 'ਗੁਲਬਾਨੋ' ਦੀ ਆਪਣੀ ਕੋਈ ਵਿਅਕਤੀਗਤ ਹੋਂਦ ਨਹੀਂ ਅਤੇ ਉਹ ਪੂਰੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਮਰਦ ਦੇ ਗੁਲਾਮ ਹੈ।ਮਰਦ ਦੀ ਹਰੇਕ ਵਧੀਕੀ ਨੂੰ ਉਹ ਇੱਕ ਆਦਤ ਵਾਂਗ ਸਵੀਕਾਰਦੀ ਹੈ। 'ਗੁਲਬਾਨੋ' ਦਾ ਪਤੀ ਖੁਸ਼ਦਿਲ ਖਾਨ ਆਪਣੀ ਪਤਨੀ ਦੀ ਖ਼ੂਬਸੂਰਤੀ ਨੂੰ ਕੈਦ ਕਰਕੇ ਰੱਖਦਾ ਹੈ। 'ਗੁਲਬਾਨੋ' ਨੂੰ ਆਪਣੇ ਗਵਾਂਢ ਦੀਆਂ ਔਰਤਾਂ ਨੂੰ ਮਿਲਣ ਦੀ ਆਜ਼ਾਦੀ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦੀ। ਖੁਸ਼ਦਿਲ ਖਾਨ ਲਈ ਉਸਦੀ ਪਤਨੀ ਸਿਰਫ਼ ਹੰਢਾਉਣ ਵਾਲੀ ਵਸਤੂ ਅਤੇ ਹੱਡਮਾਸ ਦਾ ਪੁਤਲਾ ਹੈ। ਇਸ ਕਰਕੇ 'ਗੁਲਬਾਨੋ' ਆਪਣੇ ਪਤੀ ਨਾਲ ਦਿਲੀ ਸਾਂਝ ਨਹੀਂ ਪਾ ਸਕਦੀ ਅਤੇ ਉਹ ਚੰਨਣ ਨਾਲ ਪਿਆਰ ਕਰਨ ਲੱਗਦੀ ਹੈ, ਜਦੋਂ ਖੁਸ਼ਦਿਲ ਨੂੰ ਇਹ ਗੱਲ ਪਤਾ ਲੱਗਦੀ ਹੈ ਤਾਂ ਉਹ ਆਪਣੀ ਪਤਨੀ ਨੂੰ ਕੋਠੇ ਤੋਂ ਹੇਠਾਂ ਸੁੱਟ ਦਿੰਦਾ ਹੈ।

"ਇੱਕ ਗੁਲਬਾਨੋ ਸੀ, ਜਿਹੜੀ ਖੁਸ਼ਦਿਲ ਖਾਨ ਦੇ ਕੋਲ ਸੀ........ ਪਰ ਉਸ ਤੋਂ ਕੋਹਾਂ ਦੂਰ ਸੀ। ਇੱਕ ਗੁਲਬਾਨੋ ਸੀ, ਜਿਹੜੀ ਚੰਨਣ ਤੋਂ ਕੋਹਾਂ ਦੂਰ ਸੀ........ ਪਰ ਸਾਹੋਂ ਨੇੜੇ ਸੀ।"[1]

ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਜਾਗੀਰਦਾਰੀ ਪ੍ਰਥਾ ਵਿੱਚ ਔਰਤ ਦੀ ਹੋਂਦ ਸਿਰਫ ਜ਼ੀਰੋ ਹੈ। ਉਹ ਇਹਨਾਂ ਗੱਲਾਂ ਨਾਲ ਸਮਝੌਤਾ ਕਰਕੇ ਅੰਦਰੋਂ ਅੰਦਰੀ ਦੁੱਖ ਸਹਿੰਦੀ ਹੈ ਪਰੰਤੂ ਜਦੋਂ ਉਹ ਆਜ਼ਾਦ ਹੋਣਾ ਲੋਚਦੀ ਹੈ ਤਾਂ ਉਸਨੂੰ ਇਸ ਕਠੋਰ ਪ੍ਰਬੰਧ ਸਦਕਾ ਦੁਖਾਂਤ ਭੋਗਣਾ ਪੈਂਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਕਹਾਣੀ ਦੀ ਨਾਇਕਾ ਦੀ ਹੋਣੀ ਸਾਡੇ ਸਮਾਜ ਦਾ ਉਹ ਯਥਾਰਥ ਪੇਸ਼ ਕਰਦੀ ਹੈ ਜੋ ਅੱਜ ਵੀ ਲੁਕਵੇਂ ਰੂਪ ਵਿੱਚ ਕਿਤੇ ਨਾ ਕਿਤੇ ਵਾਪਰ ਰਿਹਾ ਹੈ।

ਅਜੀਤ ਕੌਰ ਦੀ 'ਦਾਇਰੇ' ਕਹਾਣੀ ਵੀ ਔਰਤ ਮਰਦ ਦੇ ਅਸਹਿਜ ਸੰਬੰਧਾਂ ਦੀ ਗਾਥਾ ਬਿਆਨ ਕਰਦੀ ਹੈ। ਇਸ ਦੀ ਕਹਾਣੀ ਦੀ ਨਾਇਕਾ ਸੋਨਾ ਵੀ ਅਸਾਵੇਂ ਗ੍ਰਿਹਸਥ ਸੰਬੰਧ ਭੋਗਦੀ ਹੈ। ਸਮਾਜਿਕ ਸੰਸਥਾਵਾਂ ਅਤੇ ਉਹਨਾਂ ਦੇ ਬਣਾਏ ਕੀਮਤ ਪ੍ਰਬੰਧ ਮਨੁੱਖ ਦੀਆਂ ਲੋੜਾਂ ਦੀ ਪੂਰਤੀ ਕਰਦੇ ਹਨ। ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਔਰਤ- ਮਰਦ ਦੇ ਆਪਸੀ ਸਰੀਰਕ ਸੰਬੰਧਾਂ ਦੇ ਨਾਲ-ਨਾਲ ਭਾਵਨਾਤਮਕ ਸਾਂਝ ਵੀ ਬਹੁਤ ਜ਼ਰੂਰੀ ਹੈ। ਇਸ ਰਿਸ਼ਤੇ ਵਿੱਚ ਕਿਸੇ ਇੱਕ ਦੀ ਕਮੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਵਿੱਚ ਠਹਿਰਾਅ ਲੈ ਆਉਂਦੀ ਹੈ। ਇਸ ਕਹਾਣੀ ਦੀ ਪਾਤਰ ਸੋਨਾ ਇਸੇ ਤ੍ਰਾਸਦੀ ਦਾ ਸ਼ਿਕਾਰ ਹੈ। ਸੋਨਾ ਦਾ ਪਤੀ ਉਸਨੂੰ ਸਿਰਫ਼ ਇੱਕ ਭੋਗਣ ਵਾਲੀ ਵਸਤੂ ਸਮਝਦਾ ਹੈ। ਉਸ ਨਾਲ ਮਾਨਸਿਕ ਤੌਰ ਤੇ ਕੋਈ ਰਿਸ਼ਤਾ ਕਾਇਮ ਨਹੀਂ ਕਰਦਾ। ਅਜੀਤ ਕੌਰ ਵਿੱਚ ਇਹ ਖ਼ਾਸੀਅਤ ਹੈ ਕਿ ਉਹ ਸਿਰਫ਼ ਕਹਾਣੀਆਂ ਲਿਖਦੀ ਹੀ ਨਹੀਂ ਸਗੋਂ ਉਹ ਕਹਾਣੀਆਂ ਵਾਂਗ ਸੋਚਦੀ ਅਤੇ ਉਹਨਾਂ ਵਾਂਗੂੰ ਵਿਚਰਦੀ ਵੀ ਹੈ।

ਸੋਨਾ ਜਦੋਂ ਸਮਾਜਿਕ ਬੰਧਨਾਂ ਵਿੱਚੋਂ ਬਾਹਰ ਨਿਕਲਦੀ ਹੈ,ਆਪਣੀ ਮਾਨਸਿਕ ਤ੍ਰਿਪਤੀ ਲਈ ਨਵਾਂ ਹਾਣ ਲੱਭਦੀ ਹੈ ਤਾਂ ਗਰਭਵਤੀ ਹੋ ਜਾਂਦੀ ਹੈ।ਸਮਾਜਿਕ ਕਾਇਦੇ ਅਨੁਸਾਰ ਉਸਦਾ ਪਤੀ ਇਹ ਗੱਲ ਬਰਦਾਸ਼ਤ ਨਹੀਂ ਕਰਦਾ ਅਤੇ ਉਸ ਦੀ ਖੂਬ ਕੁੱਟ- ਮਾਰ ਕਰਦਾ ਹੈ। ਸੋਨਾ ਦੇ ਦਰਦ ਦੀ ਪੇਸ਼ਕਾਰੀ ਕਹਾਣੀਕਾਰਾ ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਕਰਦੀ ਹੈ :-

" ਬੀਬੀ ਜੀ, ਜਉਨ ਆਦਮੀ ਹਮੈ ਬੈਲ ਸਮਝੀਨ ਔਨ ਖੇਤੀ ਕੇ ਵਾਸਤੇ ਛੋੜ ਆਈ ਹਨ ਨੋਹ ਤਉ ਆਪਨਾ ਆਦਮੀ ਰਹੀਨ, ਔਰ ਨੋਹ ਜਉਨ ਹਮਾਰੀ ਦੁਖ ਸੁਖ ਮੈਂ ਖ਼ਬਰਗੀਰੀ ਦੀਅਨ ਔਰ ਜਉਂ ਹਮ ਬਿਲਖ ਬਿਲਖ ਕੇ ਰੋਣੇ ਤਉਨ ਹਮੈਂ ਗਲੈ ਲਗਾਈ ਹਨ, ਵੋਹ ਪਰਾਇਆ ਕਈਸੈ ਭਾਈਨ। "[2]

ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਮਰਦ ਪ੍ਰਧਾਨ ਸਮਾਜ ਵਿੱਚ ਔਰਤ ਦੀ ਹੋਂਦ ਆਜ਼ਾਦ ਨਹੀਂ।ਇਸ ਕਰਕੇ ਸੋਨਾ ਦਾ ਪਤੀ ਉਸਦਾ ਗਰਭਪਾਤ ਕਰਵਾ ਦਿੰਦਾ ਹੈ। ਗ੍ਰਹਿਸਥੀ ਜੀਵਨ ਬਤੀਤ ਕਰਦਿਆਂ ਮਰਦ ਜਦੋਂ ਚਾਹੇ ਕਿਸੇ ਪਰਾਈ ਇਸਤਰੀ ਨਾਲ ਸੰਬੰਧ ਬਣਾ ਸਕਦਾ ਹੈ ਪਰੰਤੂ ਔਰਤ ਨੂੰ ਪਤੀ ਵੱਲੋਂ ਪੂਰਾ ਪਿਆਰ ਨਾ ਮਿਲਣ ਦੇ ਬਾਵਜੂਦ ਵੀ ਉਸ ਦੀ ਇੰਨੀ ਹਿੰਮਤ ਨਹੀਂ ਕਿ ਉਹ ਪਰਾਏ ਮਰਦ ਨਾਲ ਗੱਲ ਵੀ ਕਰ ਸਕੇ।

ਅਜੀਤ ਕੌਰ ਦੀ 'ਫਾਲਤੂ ਔਰਤ' ਕਹਾਣੀ ਦੀ ਗੀਤਾ ਆਪਣੇ ਪਤੀ ਦੇ ਜ਼ੁਲਮ ਨੂੰ ਬਰਦਾਸ਼ਤ ਨਹੀਂ ਕਰਦੀ ਅਤੇ ਅਲੱਗ ਹੋ ਕੇ ਆਪਣੇ ਪਿਤਾ ਦੇ ਘਰ ਵਾਪਸ ਆ ਜਾਂਦੀ ਹੈ।ਉਹ ਆਰਥਿਕ ਤੌਰ ਤੇ ਨਿਰਭਰ ਹੈ ਅਤੇ ਘਰ ਦੇ ਬਾਕੀ ਜੀਆਂ ਦਾ ਵੀ ਸਹਾਰਾ ਬਣਦੀ ਹੈ। ਸਰੀਰਕ ਅਤੇ ਮਾਨਸਿਕ ਜ਼ਰੂਰਤਾਂ ਦੀ ਤ੍ਰਿਪਤੀ ਲਈ ਉਸਦੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਵਿੱਚ ਕਈ ਮਰਦ ਆਉਂਦੇ ਅਤੇ ਜਾਂਦੇ ਹਨ।ਉਹ ਸਿਰਫ਼ ਉਸਨੂੰ ਭੋਗਣ ਦੀ ਵਸਤੂ ਸਮਝਦੇ ਹਨ। ਪਰ ਜਦੋਂ ਉਸਦੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਵਿੱਚ ਉਮੇਸ਼ ਨਾਮ ਦਾ ਵਿਅਕਤੀ ਆਉਂਦਾ ਹੈ ਤਾਂ ਉਸਨੂੰ ਲੱਗਦਾ ਹੈ ਕਿ ਉਸ ਨੂੰ ਆਪਣਾ ਹਾਣ ਪ੍ਰਾਪਤ ਹੋ ਗਿਆ ਹੈ।ਜਿਸ ਦੀ ਉਸਨੂੰ ਤਲਾਸ਼ ਸੀ।ਪਰੰਤੂ ਉਮੇਸ਼ ਵਿਆਹਿਆ ਵਰ੍ਹਿਆ ਆਦਮੀ ਸੀ ਅਤੇ ਉਹ ਸਿਰਫ਼ ਆਪਣਾ ਰੋਜ਼ ਦਾ ਥਕੇਵਾਂ ਦੂਰ ਕਰਨ ਲਈ ਗੀਤਾ ਕੋਲ ਆਉਂਦਾ ਜਾਂਦਾ ਸੀ। ਉਮੇਸ਼ ਵੀ ਜਦ ਆਪਣੀਆਂ ਸਰੀਰਕ ਲੋੜਾਂ ਦੀ ਪੂਰਤੀ ਕਰ ਲੈਂਦਾ ਹੈ ਤਾਂ ਉਸ ਦਾ ਗੀਤਾ ਪ੍ਰਤੀ ਵਿਵਹਾਰ ਇਕਦਮ ਹੀ ਬਦਲ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਇਸ ਕਹਾਣੀ ਵਿੱਚ ਔਰਤ ਅਤੇ ਮਰਦ ਦਾ ਆਪਸੀ ਰਿਸ਼ਤਾ ਸਿਰਫ਼ ਭੋਗਵਾਦੀ ਰੁਚੀ ਅਧੀਨ ਹੀ ਸੀਮਤ ਹੁੰਦਾ ਨਜ਼ਰ ਆਉਂਦਾ ਹੈ। ਗੀਤਾ ਜਿਸ ਪ੍ਰਕਾਰ ਦੇ ਮਰਦ ਦੀ ਤਲਾਸ਼ ਕਰਦੀ ਹੈ,ਉਹ ਸਮਕਾਲੀ ਸਮਾਜਿਕ ਸੱਭਿਆਚਾਰਿਕ ਵਰਤਾਰੇ ਵਿੱਚ ਸੰਭਵ ਨਹੀਂ ਕਿਉਂਕਿ ਉਹ ਵਿਆਹੇ ਮਰਦਾਂ ਨਾਲ ਦੋਸਤੀ ਕਰਦੀ ਹੈ ਜੋ ਕੁੱਝ ਸਮੇਂ ਦਾ ਸਾਥ ਮਾਨਣ ਲਈ ਘਰੇਲੂ ਜ਼ਿੰਮੇਵਾਰੀਆਂ ਤੋਂ ਥੋੜ੍ਹੇ ਸਮੇਂ ਲਈ ਹੀ ਬਾਹਰ ਆਉਂਦੇ ਹਨ। ਗੀਤਾ ਵੀ ਨੂੰ ਵੀ ਉਮੇਸ਼ ਦੇ ਵਿਆਹੇ ਹੋਣ ਦਾ ਪਤਾ ਲੱਗਣ ਤੇ ਆਪਣੀ ਥਾਂ ਕਿਤੇ ਵੀ ਨਜ਼ਰ ਨਹੀਂ ਆਉਂਦੀ ਅਤੇ ਉਹ ਆਪਣੇ ਆਪ ਨੂੰ ਫਾਲਤੂ ਔਰਤ ਦੇ ਰੂਪ ਵਿੱਚ ਸਮਝਦੀ ਹੋਈ ਫਾਲਤੂ ਔਰਤ ਦੇ ਅਕਸ ਨੂੰ ਆਪਣੇ ਸ਼ਬਦਾਂ ਵਿੱਚ ਬਿਆਨ ਕਰਦੀ ਹੈ ਕਿ :-

"ਖਰਚ ਕਰਕੇ ਸੌਣ ਵਾਲੀ ਤੀਵੀਂ। ਤੇ ਮੁਫ਼ਤ ਵਿੱਚ ਜਿਹਦੇ ਨਾਲ ਸੌਂ ਸਕੇ, ਉਹ ਤੀਵੀਂ, ਮੁਫਤ ਵਾਲੀ ਤੀਵੀਂ ਬੀਵੀ ਹੁੰਦੀ ਏ। ਸਿਰਫ਼ ਰੋਟੀ ਕੱਪੜੇ ਤੇ ਨੌਕਰ ਗੁਲਾਮ ਪਰ ਫੇਰ ਵੀ ਬੀਵੀ ਦੀ ਪੋਜੀਸ਼ਨ ਰਿਸਪੈਕਟੇਬਲ ਏ।ਖ਼ਰਚ ਕਰਕੇ ਜਿਹਦੇ ਨਾਲ ਸੌਵੇਂ ਉਹ ਪ੍ਰਾਸਟੀਚਿਊਟ ਹੁੰਦੀ ਏ, ਵੇਸ਼ਿਆ, ਤੇ ਇਨ੍ਹਾਂ ਦੋਹਾਂ ਦੇ ਵਿਚਕਾਰ ਜਿਹੜੀ ਔਰਤ ਹੁੰਦੀ ਏ, ਜਿਦੇ ਤੇ ਖ਼ਰਚ ਵੀ ਨਹੀਂ ਕਰਨਾ ਪੈਂਦਾ।ਰੋਟੀ ਕੱਪੜਾ ਦੇਣ ਦਾ ਇਕਰਾਰ ਵੀ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦਾ, ਸਮਾਜ ਵਿੱਚ ਉਹਦੇ ਨਾਲ ਸੌਣ ਵਾਲੇ ਮਰਦ ਦੇ ਰੁਤਬੇ ਮੁਤਾਬਕ ਉਹਦੀ ਇੱਜ਼ਤ ਵੀ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦੀ, ਚੋਰੀ ਦਾ ਰਿਸ਼ਤਾ, ਉਹ ਕੀ ਹੁੰਦੀ ਏ, ਉਹ ਔਰਤ ਕੀ ਹੁੰਦੀ ਏ ਉਮੇਸ਼? ਫਾਲਤੂ ਔਰਤ! ਫਾਲਤੂ! ਸੁਪਰ ਫਲੂਅਸ।"[3]

ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਆਪਣੀ ਹੋਂਦ ਨੂੰ ਕਿਆਸਦੀ ਗੀਤਾ ਆਪਣੇ ਆਪ ਨੂੰ ਇੱਕ ਰੱਦੀ ਸਮਾਨ ਵਾਂਗ ਸਮਝਦੀ ਹੈ। ਜਿਸ ਦੀ ਕੋਈ ਕਦਰ ਨਹੀਂ ਕਰਦਾ। ਉਸ ਨੂੰ ਇਸ ਫਾਲਤੂ ਕਿਸਮ ਦੇ ਵਹਿਮ ਦਾ ਸ਼ਿਕਾਰ ਆਪਣੀ ਹੋਣੀ ਦਾ ਸ਼ਿਕਾਰ ਬਣਾਉਂਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਹੁਣ ਨਿਰਾਸ਼ਾ,ਭਟਕਣਾ, ਉਡੀਕ ਅਤੇ ਮਾਨਸਿਕ ਤਣਾਓ ਕਾਰਨ ਬਿਮਾਰ ਹੋ ਜਾਂਦੀ ਹੈ।

ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਅਸੀਂ ਕਹਿ ਸਕਦੇ ਹਾਂ ਕਿ ਅਜੀਤ ਕੌਰ ਦੀਆਂ ਕਹਾਣੀਆਂ ਦੀਆਂ ਇਹ ਪਾਤਰ ਪਰੰਪਰਾਗਤ ਸੰਸਕਾਰਾਂ ਪ੍ਰਤੀ ਬਗਾਵਤ ਤਾਂ ਕਰਦੀਆਂ ਹਨ ਪਰੰਤੂ ਪੂਰੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਸਮਾਜਿਕ ਪ੍ਰਤੀਮਾਨਾਂ ਦੀ ਉਲੰਘਣਾ ਨਹੀਂ ਕਰਦੀਆਂ। ਇਹਨਾਂ ਇਸਤਰੀ ਪਾਤਰਾਂ ਦਾ ਅਜਿਹਾ ਸੋਚਣਾ ਸਹੀ ਵੀ ਹੈ ਕਿਉਂਕਿ ਉਹ ਪਰੰਪਰਾਗਤ ਸੰਸਕਾਰਾਂ ਤੋਂ ਭਾਵੇਂ ਆਜ਼ਾਦ ਹੋ ਵੀ ਜਾਣ ਪਰ ਸਮਾਜਿਕ ਤੌਰ ਤੇ ਉਹ ਉਸ ਤੋਂ ਕਦੇ ਵੀ ਸੱਖਣੀਆਂ ਨਹੀਂ ਹੋ ਸਕਦੀਆਂ।ਜਿਸ ਕਾਰਨ ਉਹ ਦੁੱਖ

ਭੋਗਦੀਆਂ ਦਿਖਾਈ ਦਿੰਦੀਆਂ ਹਨ। ਇਸ ਦੀ ਵਜ੍ਹਾ ਅਜੀਤ ਕੌਰ ਦੀ ਸਿਰਜਣਾਤਮਕ ਬਿਰਤੀ ਅਤੇ ਉਸਦੀਆਂ ਕਹਾਣੀਆਂ ਦੇ ਵਿਚਾਰਧਾਰਾਈ ਪੱਖਾਂ ਉੱਪਰ ਗਾਲਿਬ ਦ੍ਰਿਸ਼ਟੀਕੋਣ ਦਾ ਕਬਜ਼ਾ ਹੋਣ ਕਰਕੇ ਹੈ, ਜਿਸ ਕਰਕੇ ਉਹ ਜੀਵਨ ਦੇ ਜਿਸ ਪ੍ਰਬੰਧ ਵਿਰੁੱਧ ਬਗਾਵਤ ਕਰਦੀ ਹੈ, ਉਸ ਵਿੱਚ ਹੀ ਆਪਣੀਆਂ ਖੁਸ਼ੀਆਂ ਤਲਾਸ਼ਦੀ ਹੈ।ਉਹ ਵਿਆਹ ਰੂਪੀ ਜਿਸ ਵਿਰੋਧੀ ਲਿੰਗ ਵਾਲੇ ਜਿਸ ਪ੍ਰਬੰਧ ਨੂੰ ਔਰਤ ਦੇ ਦਮਨ ਦਾ ਕਾਰਨ ਮੰਨਦੀ ਹੈ,ਮੁੜ ਕੇ ਉਸੇ ਵਿੱਚ ਹੀ ਆਪਣੀ ਹੋਂਦ ਨੂੰ ਤਲਾਸ਼ਦੀ ਹੈ।ਇਸ ਪ੍ਰਕਾਰ ਅਜੀਤ ਕੌਰ ਦੀਆਂ ਕਹਾਣੀਆਂ ਦੀ ਪਾਤਰ ਨਾ ਤਾਂ ਸੱਭਿਆਚਾਰਿਕ ਮਾਹੌਲ ਵਿੱਚ ਆਦਰਸ਼ਕ ਬਣ ਕੇ ਵਿਚਰਦੀ ਹੈ, ਨਾ ਹੀ ਸੰਪੂਰਨ ਰੂਪ ਵਿੱਚ ਵਿਦਰੋਹ ਕਰਦੀ ਹੈ ਤੇ ਨਾ ਹੀ ਮਜ਼ਲੂਮ ਧਿਰ ਬਣ ਕੇ ਸਭ ਕੁੱਝ ਬਰਦਾਸ਼ਤ ਕਰਨ ਲਈ ਤਿਆਰ ਹੈ। ਇਸ ਕਰਕੇ ਹੀ ਉਸ ਦੀਆਂ ਕਹਾਣੀਆਂ ਦੀਆਂ ਇਸਤਰੀ ਪਾਤਰਾਂ ਦੇ ਪੱਲੇ ਸੱਖਣਾਪਣ, ਇਛਾਵਾਂ ਦੀ ਅਪੂਰਤੀ, ਇਕੱਲਤਾ, ਮਾਨਸਿਕ ਸੰਤਾਪ, ਉਦਾਸੀ ਆਦਿ ਆਉਂਦਾ ਹੈ।

ਹਵਾਲੇ

1. ਅਜੀਤ ਕੌਰ, ਗੁਲਬਾਨੋ, ਰਚਨਾ ਪਬਲਿਸਿੰਗ ਹਾਊਸ, ਦਿੱਲੀ, 1963, ਪੰਨਾ-13
2. ਉਹੀ, ਬੁੱਤ- ਸ਼ਿਕਨ, ਲਾਹੌਰ ਬੁੱਕ ਸ਼ਾਪ, ਲੁਧਿਆਣਾ, 1966, ਪੰਨਾ-28
3. ਉਹੀ, ਸਾਵੀਆਂ ਚਿੜੀਆਂ, ਨਵਯੁਗ ਪਬਲਿਸ਼ਰਜ਼, ਦਿੱਲੀ, 1987, ਪੰਨਾ -77

ਮੋ: 9464212113

ਈਮੇਲ-lakhwinderbrar5775@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com Bohal Shodh Manjusha ISSN: 2395-7115
Impact Factor: 8.642 June 2026 Page No. : 179-183
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

गाँधी जी के आंदोलन में रोहतकवासियों का योगदान : सविनय अवज्ञा आन्दोलन एक संक्षिप्त विश्लेषण

डॉ० कविता राठी
सहायक प्राध्यापक, इतिहास विभाग
राजकीय महाविद्यालय, बड़ौता, सोनीपत (हरियाणा)

वर्तमान युग में इतिहास लेखन में क्षेत्रीय लेखन की महत्ता बढ़ती जा रही है। इतिहास लेखन के हर छोटे–से–छोटे पहलू को समझने के लिए क्षेत्रीय इतिहास लेखन बहुत आवश्यक हो गया है। इसी सन्दर्भ में हरियाणा के क्षेत्रीय इतिहास लेखन के स्त्रोत के रूप में रोहतक का सविनय अवज्ञा आन्दोलन में क्या योगदान रहा, प्रस्तुत शोध–पत्र में यह देने का प्रयास किया है। इस विषय पर आज तक हरियाणा के क्षेत्रीय इतिहास लेखन में बहुत कम कार्य हुआ है। इसी कारण शोध–पत्र के विषय के रूप में इसका चुनाव किया है।

हरियाणा क्षेत्रीय इतिहास के संदर्भ में अब तक जो कार्य हुआ है, उसका सर्वेक्षण यहाँ करने का प्रयास किया है, जो इस प्रकार है – उर्वशी दलाल ''लैंड रेवन्यू सैटलमेन्ट इन गुड़गांव डिस्ट्रिक्ट'', राजवीर सिंह ''दा फेमिन इन हरियाणा'', सरिता रानी ''आर्य समाज इन हरियाणा : एन एसेसमैंट ऑफ इट्स सोशलइपैक्ट'', अनिता कुमारी ''प्रजामण्डल मूवमेंट इन पटौदी स्टेट'', अंजु लता ''भारत के स्वतंत्रता संग्राम में रोहतक का योगदान, 1857–1947'', सुधा देवी ''वर्तमान समय में चौधरी छोटूराम के विचारों की प्रासंगिकता'', कमलेश देवी ''हरियाणा में स्वतंत्रता आन्दोलन 1920–1947 (हरियाणा के मुख्य समाचार पत्रों का अध्ययन)'', शर्मिला यादव ''1857 के विद्रोह में मेवात की भूमिका'', कविता राठी ''लोहारू की ऐतिहासिक धरोहर : हरियाणा के क्षेत्रीय इतिहास लेखन का एक प्रयास'' आदि कार्य अब तक हुआ है। क्षेत्रीय इतिहास की इसी शोध–पृष्ठभूमि में वर्तमान शोधपत्र स्थित है।

सविनय अवज्ञा आन्दोलन

1929 के प्रारम्भ में देश में सर्वत्र असंतोष का वातावरण व्याप्त था। आर्थिक मंदी के फलस्वरूप कृषि सम्बन्धी उपज के भाव 50 प्रतिशत से अधिक गिर जाने के कारण किसानों की स्थिति इतनी विकट हो गई थी कि वे एक गज कपड़ा या एक बोतल लैम्प का तेल भी नहीं खरीद सकते थे। सरकारी नीति के कारण व्यावसायिक और औद्योगिक वर्ग में भी तीव्र असन्तोष था। इसी समय सरदार भगतसिंह और बटुकेश्वर दत्त के क्रांतिकारी कार्यो और 'लाहौर षड्यन्त्र अभियोग' के कारण भी राजनीतिक वातावरण बहुत अधिक गर्म था। देश की स्थिति का गम्भीरतापूर्वक अध्ययन करने के बाद महात्मा गांधी ने ऐतिहासिक सविनय अवज्ञा आन्दोलन प्रारम्भ करने का निश्चय किया।[1] उन्होंने 1930 में नमक कानून को तोड़ कर

सविनय अवज्ञा आन्दोलन को शुरू किया। 12 मार्च, 1930 को गांधी जी ने साबरमती आश्रम से अपने 78 सहयोगियों के साथ मिलकर डाण्डी समुद्र तट पर जाकर अवैध नमक बनाया। सुभाष चन्द्र बोस ने इस अभियान की तुलना नेपोलियन के एलबा से पैरिस की ओर किये जाने वाले अभियान से की थी।[2]

प्रस्थान के समय महात्मा जी ने अपनी यह ऐतिहासिक घोषणा की थी : ''यदि स्वराज्य न मिला, तो या तो रास्ते में मर जाऊँगा, या आश्रम के बाहर रहूँगा। नमक कर न उठा सका तो आश्रम लौटने का इरादा भी नहीं है।''[3]

पहले गांधी जी ने डाण्डी में नमक कानून तोड़ा, इसके बाद समूचे देश में नमक कानून तोड़ा जाने लगा। हजारों की तादाद में लोग इन समारोहों में एकत्र होते, गिरफ्तारियां होती, लाठियां बरसायी जाती, गोलियां चलती, फिर भी अपार जन–समूह कांग्रेस के झंडे के नीचे आन्दोलन में हिस्सा लेता।[4] नमक कानून उल्लंघन के अतिरिक्त नागरिक अवज्ञा के अन्य कार्यक्रम थे – विद्यार्थियों द्वारा सरकारी शैक्षणिक संस्थाओं तथा सरकारी कर्मचारियों द्वारा दफ्तरों का बहिष्कार, शराब, अफीम तथा विदेशी कपड़ा बेचने वाली दुकानों पर धरना, विदेशी कपड़ो की होली जलाना, टैक्स न देना आदि।[5] जन–समूह ने इन कार्यक्रमों को अपनाकर अंग्रेजी सरकार का विरोध किया।

रोहतक में सविनय अवज्ञा आन्दोलन

सविनय अवज्ञा आन्दोलन को शानदार ढ़ंग से चलाने के लिए हरियाणा के राष्ट्रवादियों ने महात्मा जी का आदेश पाते ही यह फैसला लिया कि 15 तारीख को हरियाणा और पूरे पंजाब में राष्ट्रवादी एकजुट होकर झज्जर तहसील (जिला रोहतक) को एक ग्राम जाहिदपुर में, जहाँ अत्यधिक खारा पानी होने के कारण नमक बनाने के कुंए हैं, विधिवत् नमक बनाकर बहुत बड़ा आन्दोलन शुरू करें, लेकिन दूसरी तरफ सरकार भी चौकस थी। सरकार ने योजना को असफल करने का प्रयास किया, जाहिदपुर में काम नहीं हो सका, पर दूसरे स्थानों पर हुआ। रोहतक में उस समय काफी गहमा–गहमी रही। 10 अप्रैल को वहाँ मोहल्ला कलालान में मंदिर के पास खारे पानी को लेकर नमक बनाया गया। पुलिस खड़ी–खड़ी देखती रही। किसी पर हाथ डालने की हिम्मत न हुई। शाम को अनाज मंडी में जलसा हुआ। काफी लोग इकट्ठा हुए। गांधी जी द्वारा भेजे गए अंबाला के सूरजभान ने जलसे की अध्यक्षता की वह अपने साथ दिल्ली से नमक लाया था। उसकी नीलामी की गई, 100 रूपये मिले।[6] झज्जर में भी ऐसा ही प्रसार 13 अप्रैल से शुरू हुआ। पुलिस यहाँ भी चुपचाप खड़ी देखती रही। ऐसी ही घटना जिले के सोनीपत, बेरी, सांघी और बहुत से बड़े गाँव में घटित हुई।[7]

रोहतक के 22 सत्याग्रही दाण्डी गये और नमक सत्याग्रह किया। इन्हें गिरफ्तार करके सजाऐं दी गई और ये यरवदा जेल में रहे। मोखरा ग्राम के चौ० तुही राम ने भी नमक सत्याग्रह में भाग लिया। बाधपुर के चौ० शिवचंद पहले कई बार जेल जा चुके थे। दिल्ली के करीब वायसराय की गाड़ी के नीचे बम विस्फोट हुआ, यह बम रोहतक में पं० लेखराम आदि क्रांतिकारियों ने बनाया था।[8] आन्दोलनकारियों ने विदेशी माल का बहिष्कार भी किया। गोपीचंद भार्गव, नेकीराम शर्मा, सूरजभान और अब्दुल गफार खां इत्यादि नेताओं ने विदेशी कपड़े के बहिष्कार के प्रोग्राम को लोकप्रिय बनाने के लिए हरियाणा भर का दौरा किया। अनेक स्थानों पर विदेशी कपड़ों की होली जलाई गई।[9] अम्बाला, रोहतक, भिवानी के व्यापारियों ने विदेशी कपड़ों का व्यापार न करने का वायदा किया। रोहतक और अम्बाला में शराब की दुकानों पर पिकेटिंग की गई।[10] 24 मार्च, 1931 को रेलवे मंडी रोहतक के सभी बजाजों ने एक जगह एकत्र होकर सर्वसम्मति से निर्णय लिया था कि भविष्य में विदेशी कपड़ा नहीं मंगाया जाएगा और दो अढ़ाई महीने की अवधि में जो कपड़ा दुकानों पर पड़ा था उसे बेच दिया जाए।[11] स्कूलों के विद्यार्थियों ने भी आन्दोलन में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। रोहतक में वैश्य और गौड स्कूल के छात्रों ने आन्दोलन की सफलता के लिए खूब काम किया।[12]

सरकार की प्रतिक्रिया

रोहतक, झज्जर, आस–पास के गाँव, भिवानी, दादरी और पानीपत ने आन्दोलन में राजनैतिक भागीदारी अदा की। सरकार ने प्रारम्भिक रूप में आन्दोलन के मुख्य नेताओं को पकड़ कर जेल में डाल दिया। 1930 में बहुत बड़ी संख्या में लोगों को जेल में डाल दिया गया और सजा दी गई। रोहतक जिले से

गिरफ्तार होने वाले थे – पण्डित श्री राम शर्मा, शामलाल, राव मंगलीराम, भरत सिंह, कामरेड राम शरण दास, चौ० श्योचांद, चौ० चंदगी राम, चौ० राम सिंह जाखड़, मामचंद, बदलू राम, लाला काशी राम, दौलत राम गुप्ता, सरदार त्रिलोक सिंह, स्वामी आत्मानन्द,[13] रामफूल सिंह, मोहन स्वामी, हरिसिंह, शिवचन्द, नान्हू राम, जुगपलाल, आशाराम, चन्दू लाल, जुगलाल कासनी, रामचन्द्र, लाल मुहम्मद हरफूल, माडू सिंह, अग्रसेन, मानसिंह, हीरा, सुखदेव, सुखवन्त, शिव बख्श सिंह, ब्रह्म स्वरूप, तनसुख राय, बलदेव सिंह, खैर मुहम्मद आदि।[14] 20 अप्रैल, 1931 को मोखरा (रोहतक का एक गाँव) में रूरल कान्फ्रेंस हुई, जहाँ चित्रा देवी ने राष्ट्रीय झण्डे को फहराया। जुलाई, 1931 में उनको रोहतक में भाषण देते हुए गिरफ्तार कर लिया गया। वह हरियाणा की प्रथम महिला थी जो राजनैतिक गतिविधियों में भागीदारी के कारण गिरफ्तार हुई। औरतों ने भिवानी, हिसार, अम्बाला तथा रोहतक में आन्दोलन में भागीदारी दिखाई। रोहतक में सबसे ज्यादा संख्या में औरतों ने भागीदारी दिखाई थी। यहाँ 55 औरतों ने पंजीकरण करवाया। रोहतक में 1930 में सजा पाने वाले महिलाऐं थी – श्रीमती मुनी देवी, (डिगल गाँव), श्रीमती धापो देवी (रोहतक), श्रीमती दडंका देवी (कानही गाँव) और श्रीमती कस्तुरी बाई (रोहतक) आदि।[15] अंग्रेजों ने देशभक्तों को पकड़कर कठोर यातनाऐं दी।

गाँधी–इरविन समझौता

जबकि सत्याग्रह आन्दोलन चल ही रहा था तो गांधी जी एवं वायसराय इरविन के बीच समझौता हो गया (5 मार्च, 1931)। इस समझौते के अनुसार सत्याग्रह उठा लिया गया। किन्तु दुर्भाग्य से यह स्थिति बहुत थोड़े दिन रही। गांधी जी दिसम्बर, 1931 में दूसरी गोलमेज कान्फ्रेंस से असफल होकर लौटे। यहाँ आते ही सरकार ने उन्हें 4 जनवरी, 1932 को गिरफ्तार कर लिया। साथ ही देशव्यापी दमन चक्र भी चल पड़ा। हरियाणा में भी धर–पकड़ शुरू हो गई। सत्याग्रह फिर आरम्भ हुआ और जत्थे पर जत्थे गिरफ्तारियों के लिए पेश होने लगे। रोहतक, हिसार, अम्बाला, करनाल, गुड़गांव से कई सत्याग्राहियों ने गिरफ्तारियां दी। पुलिस ने कांग्रेस के दफ्तरों को ताले लगा दिए और भय का आलम चारों तरफ बरपा कर दिया।[16] 10 अप्रैल, 1931 तक अकेले रोहतक जिले में कांग्रेस के 5,000 नए मेम्बर बन गए थे और 180 गाँवों में कांग्रेस कमेटियां स्थापित हो गई थी। रोहतक में लगभग 180 लोगों ने गिरफ्तारियां दी। 10 जनवरी, 1932 को जब रोहतक शहर में स्वतंत्रता दिवस मनाने हेतु लोगों ने जुलूस निकाला, तो पुलिस ने अंधाधुन्ध लाठी चार्ज कर दिया। कई लोगों को सख्त चोटें आई। फिरोजपुर बांगर के रहने वाले छोटूराम की तो इसमें आँख ही चली गई। 17 जनवरी को वहीं शांतिपूर्ण ढ़ंग से पिकेटिंग करते हुए वालंटियरों को पुलिस ने फिर पीटा। 29 जनवरी को पेशावर दिवस मनाते हुए लोगों पर फिर पुलिस ने पाशविक हमला करके बहुत से लोगों को घायल कर दिया। जबकि आन्दोलन अपनी चरम सीमा पर चल रहा था। तो गांधी जी ने अनुसूचित जातियों के चुनावों में पृथक् प्रतिनिधि चुनने का अधिकार देने के सरकारी फैसले के विरोध में आमरण अनशन कर दिया (20 सितम्बर, 1932), गांधी जी की बात मान ली गई। फलतः 26 सितम्बर को गांधी जी ने व्रत तोड़ दिया। व्रत तोड़ते समय गांधी जी ने कहा कि 'यह यज्ञ जो मैंने शुरू किया है तभी खत्म होगा जबकि हिन्दू धर्म में से छुआछूत का आखरी अंश खत्म हो जाएगा। गांधी जी के इन शब्दों का हरियाणा वासियों पर काफी प्रभाव पड़ा। 17 सितम्बर को रोहतक में हिन्दुओं ने पंचायत करके दलितों के लिए सब मन्दिरों के कपाट खोल दिए। जिला रोहतक के दूबलधन, लडायन, ढ़ाकला, मोखरा, बरौदा, चिड़ी, राठधाना, चुलकाना, मठगाँव, सांघी, हुमायूंपुर, कासन आदि गाँवों में दलितोद्वार के लिए सभाऐं हुई।[17] रोहतक में जिलाधीश की कोठी पर रामसिंह जाखड़ और करनाल जिले के श्री पाती राम ने तिरंगा फहराया।[18] 1932 में मास्टर नान्हूराम इस आन्दोलन में भाग लेने के कारण एक वर्ष की कठोर कैद और 3,000 रूपये के जुर्माने की सजा मिली। चूंकि उन्होंने जुर्माना नहीं दिया, इसलिए 3 माह के लिए और जेल में रहना पड़ा।[19]

सत्याग्रह स्थगित

सरकार ने 8 मई, 1933 को गांधी जी को जले से रिहा कर दिया। इन्होंने जेल से बाहर आते ही 12 सप्ताह के लिए सत्याग्रह को स्थगित कर दिया। 14 जुलाई, 1933 को उन्होंने पुनः इसे प्रारम्भ किया। लेकिन बदले हुए स्वरूप में यह ज्यादा विकसित नहीं हो पाया। गांधी जी ने 7 अप्रैल को आन्दोलन समाप्त कर दिया।[20]

सत्याग्रह का प्रभाव

हरियाणा के जन जीवन पर इस सत्याग्रह काा आशातीत प्रभाव पड़ा। जन–मानस को राष्ट्रीय चेतना का नया स्वरूप मिला। नेशनल रिफार्म पार्टी बिल्कुल समाप्त हो गई और यूनियनिस्ट पार्टी के प्रभाव को भी धक्का लगा।[21] हरियाणा की इस आन्दोलन के दौरान घुंघट और पर्दे में रहने वाली स्त्रियां भी मैदान में आ डटीं, और राष्ट्रीय आन्दोलन को सफल बनाने हेतु खूब प्रचार किया।[22]

निष्कर्ष

अतः निष्कर्ष रूप से हम कह सकते है कि हरियाणा जैसे छोटे से क्षेत्र के इस जिले रोहतक ने सविनय अवज्ञा आन्दोलन में अहम् भूमिका निभाई। गांधी जी द्वारा दिए गए निर्देशो के अनुसार जगह–जगह नमक कानून तोड़कर विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार किया गया। इस आन्दोलन के परिणामस्वरूप जन साधारण में जागृति आई। कृषक वर्ग भी अपनी स्थिति सुधारने के लिए आन्दोलन में कूद पड़ा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. जैन, पुखराज, स्वतंत्रता आन्दोलन का इतिहास (1857–1947), एस० चन्द एण्ड कम्पनी, 1998, पृ० 104
2. ग्रोवर, बी० एल० व अन्य, आधुनिक भारत का इतिहास, एस० चन्द एण्ड कम्पनी, 1981, पृ० 316
3. विद्यावाचस्पति, इन्द्र, भारतीय स्वाधीनता संग्राम का इतिहास, सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन, 2011, पृ० 318
4. नम्बूद्रीपाद, ई० एम० एस०, गांधी जी और उनका 'वाद', पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस प्रा० लि०, नई दिल्ली, पृ० 63
5. वरमानी, आर० सी०, भारत में उपनिवेशवाद तथा राष्ट्रवाद, गितांजलि पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 2003, पृ० 252
6. यादव, के० सी०, हरियाणा इतिहास के झरोखे से, हरियाणा इतिहास एवं संस्कृति अकादमी, गुड़गांव, 2012, पृ० 232
7. यादव, के० सी०, मॉर्डन हरियाणा हिस्ट्री एंड क्लचर, मनोहर पब्लिशर्जस एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, 2002, पृ० 177
8. गोस्वामी, मदनमोहन, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस 1885–1985 हरियाणा स्मारिका, चण्डीगढ़ प्रकाशन, पृ० 48
9. यादव, के० सी०, हरियाणा : इतिहास एवं संस्कृति, खण्ड 2, 1803 से 1966 तक, मनोहर पब्लिशर्जस एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, 1982, पृ० 240
10. मित्तल, एस० सी०, हरियाणा : ए हिस्ट्रोरिक्ल परोस्पैक्टिव, एटलान्टिक पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 1986, पृ० 130
11. रल्हन, ओ० पी०, हरियाणा शिरोमणि, पण्डित श्री राम शर्मा (1899–1989), पंडित श्री राम शर्मा सेवा आश्रम, रोहतक, पृ० 150
12. यादव, के० सी०, मॉर्डन हरियाणा हिस्ट्री एण्ड क्लचर, पूर्वोक्त, पृ० 179
13. सिंह, प्रद्युमन व अन्य, फ्रीडम स्ट्रगल इन हरियाणा एण्ड दि इण्डियन नेशनल कांग्रेस, 1885–1985, हरियाणा प्रदेश कांग्रेस कमेटी, चण्डीगढ़, पृ० 97
14. यादव, के० सी०, हरियाणा : इतिहास एवं संस्कृति, पूर्वोक्त, पृ० 245
15. सिंह, ज्ञान, स्वराज कथा, चौ० रणबीर सिंह शोध पीठ, रोहतक, 2012, पृ० 180
16. यादव के० सी०, फोगाट, हरियाणा : ऐतिहासिक सिंहावलोकन, हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला, 1991, पृ० 46–47
17. यादव, के० सी०, हरियाणा का इतिहास आदिकाल से 1966 ई० तक, होप इण्डिया पब्लिकेशन्स, गुडगांव, 2012, पृ० 483–484
18. प्रभाकर, देवीशंकर, स्वाधीनता संग्राम और हरियाणा, उमेश प्रकाशन, दिल्ली, 1976, पृ० 210

19. यादव, के० सी०, आजादी का सफरनामा मास्टर नान्हू राम की डायरी 1941, हरियाणा : इतिहास एवं संस्कृति अकादमी, 2011, पृ० 26
20. यादव, के० सी०, हरियाणा : इतिहास एवं संस्कृति, पूर्वोक्त, पृ० 249–250
21. प्रभाकर, देवीशंकर, पूर्वोक्त, पृ० 206
22. यादव, के० सी०, हरियाणा : इतिहास एवं संस्कृति, पूर्वोक्त, पृ० 250

ईमेल : krsaharan87@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com Bohal Shodh Manjusha ISSN: 2395-7115
Impact Factor: 8.642 June 2026 Page No. : 184-187
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

संस्कृत साहित्य में स्त्री विमर्श

डॉ० विनीता कुमारी गुप्ता
सह आचार्य,
बाबा खेतानाथ महिला विद्यापीठ भीटेड़ा , बहरोड़

यह सत्य है कि कवि क्रान्ति द्रष्टा होते हैं। उनके विचार स्वतंत्र होते हैं, जैसा उनको समाज में दिखता है वैसा ही वे अपने मनोभावों को व्यक्त कर समाज के सम्मुख लाने का प्रयत्न करते हैं तथा अपनी मान्यताओं की प्रस्थापना करने में सफल होते हैं। जैसा कि कहा भी गया है कि, ‘‘कविर्मनीषी परिभूः स्वयंभूः तथा अपारे काव्य संसारे कवि रेकः प्रजापतिः। यथास्मै रोचते विश्वं तथैव परिवर्तते।’’

अतीत के दास समाज और सामन्ती समाज से लेकर आज भी पूञ्जीवादी समाज में नारी उपेक्षित, शोषित, और परतंत्र रही है नारी सदैव पुरुष वर्ग के मनोविनोद का साधन रही है चाहे वह दासी के रूप में हो या पत्नी के रूप में या वेश्या के रूप में। आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर न होने के कारण ही पुरुष प्रभुत्व समाज में नारी शोषित रही है। संस्कृत साहित्य के आदिकवि वाल्मीकि, व्यास, कालिदास, भवभूति के ग्रन्थों को देखें तो स्पष्ट होता है कि नारी अस्मिता के लिये सामाजिक विसंगतियों पर प्रहार करते हैं और नारी समाज को उच्च पद पर स्थापित करने का प्रयास करते हैं जैसे- सीता-राम, राधा-कृष्ण, लक्ष्मी नारायण आदि- स्त्री पात्रों का नाम पुरुष के नाम के पूर्व लगाना ही स्त्री समाज की उच्चता को दर्शाता है। आदि कवि वाल्मीकि, कालिदास भवभूति जन मानस के कवि हैं इन लोगों ने अपने चतुर्दिक वातावरण को तत्कालीन परिस्थितियों में निकट से देखा एवं अनुभव किया। इसलिये इन कवियों के काव्यों में पर्याप्त विषय वैविध्य है।

नारी शब्द नृ $ अञ् $ डीष् नि से बना है। नारी की स्त्री संज्ञा उसके लज्जाशील होने के कारण है ऋग्वेद में ‘‘नृ’’ का प्रयोग नेतृत्व करने, दान देने और वीरता करने के अर्थ में ग्रहण किया है। स्त्री शब्द ‘‘सत्यै’’ धातु से बना है। योग दर्शन के प्रणेता महर्षि पतंजलि के अनुसार, ‘‘सत्यास्ति अस्यां गर्भ’’ इति। स्त्री के उसके भीतर गर्भ की स्थिति होने से उसे ‘‘स्त्री’’ कहा गया है।1

महिला शब्द महा $ इलच $ आ त्र महिला है। नारी को सरस्वती, धन की देवी, लक्ष्मी और शक्ति की देवी दुर्गा के नाम से भी जाना जाता है। श्री दुर्गासप्तसती में "श्री महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वत्यो देवताः, श्री दुर्गा, प्रीत्यर्थं… कहकर देवी के विवध रूपों को वर्णन किया गया है। मनुस्मृति में कहा गया है-

"स्त्रियः श्रियश्च गेहेषु ना विशेषोऽस्ति कश्चन" अर्थात मनु मानते हैं कि (मनु 9/26) स्त्री और श्री में कोई भेद नहीं होता है। "संस्कृति" शब्द सम् उपसर्ग पूर्वक कृ धातु तृच प्रत्यय से निष्पन्न है जिसका अर्थ है-सुधारना, सुन्दर बनाना-परिपूर्ण बनाना-किसी देश की संस्कृति वहां के रीति-रिवाज परम्परा, रहन-सहन, आचार-विचार, खान-पान, धर्म-कर्म, दर्शन-संस्कार आदि को मिलाकर बनती है। भारतीय संस्कृति का आदर्श, "सत्यं शिवं सुन्दरं" है। भारतीय संस्कृति की विशेषता है-करुणा, दया, उदारता, परोकार-त्याग बन्धत्व, सहिष्णुता आदि भारतीय संस्कृति की आधार शिला गंगा, गायत्री-गौ-गीता चार 'ग' पर आधारित है।2 भारतीय संस्कृति का उद्घोष है-ईशा वास्यमिदं सर्वम् यत्किन्च जगत्यां जगत्। तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः मा गृधः कस्यस्विधनम्।।" (ईशा0)।

हमारा चिन्तन "आत्मवेत् सर्वभूतेषु, सर्वेभवन्तु सुखिनः सर्वेसन्तु निरामयः........।3 माता भूमिः पुत्रोऽहम् पृथिव्या4 वसुधैव कुटुम्बकम् का है। हमारी संस्कृति अध्यात्म प्रधान, सर्वसमावेशी, समन्वयवादी, गतिशील शाश्वत सिद्धान्तों पर आधारित है विश्व के सर्वोत्कृष्ट विचारों का ज्ञान ही भारतीय संस्कृति है। सारी दुनिया का ज्ञान-विज्ञान जहाँ समाप्त होता है वहीं से भारतीय संस्कृति का सूर्योदय होता है यदि हम विनाश से बचना चाहते है तो हमें अपनी संस्कृति की यत्नपूर्वक रक्षा करनी चाहिये। संस्कृति "कल्चर" नीतिगत बाह्य अवधारणा है जबकि संस्कृति सत्य शोधक आन्तरिक रसमयता का प्रवाह है।

भारतीय समाज में नारी त्याग तथा तपस्या की प्रतीक है। मनुस्मृतिकार मनु के इस वचन से नारी समाज को एक नवीन ऊर्जा की प्राप्ति होती है।

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।
यत्र एतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफला क्रियाः।। (मनु0 3/56)

जहाँ स्त्रियों की पूजा की जाती है, उनका सम्मान किया जाता है वहां देवता लोग निवास करते हैं और जहाँ पूजा न करके अपमानित किया जाता है मर्यादा के अनुरूप स्थान नहीं दिया जाता है वहां सारी क्रियांए निष्फल हो जाती है।

स्त्रियों का पूजन देवताओं के समाराधन का मुख्य साधन है। यदि वैदिक इतिहास को पलटकर देखें तो नारी भारतीय संस्कृति में अतीव उन्नत गौरव की अधिकारिणी सदा से रही है। स्त्रीत्व के नाते उसमें स्वभाववशात् अनेक प्रकार की दुर्बलताएं स्वतः विद्यामान रहती है। इसलिये भारतीय समाजशास्त्रियों ने , "न स्त्री स्वातन्त्रयमर्हति" का उदघोष किया है।5

इस कथन से एक भ्रान्ति होती है कि यह स्त्री समाज की निन्दा या अपमान सूचक है किन्तु यदि तत्कालिक परिस्थितियों को भी ध्यान दिया जाय तो उस समय समाज तत्जन्य वस्तुस्थिति के अनुरूप रहा होगा। क्योंकि हमारा भारतीय समाज पुरुष प्रधान समाज रहा है और पुरुष प्रधान समाज होने के नाते बल एवं पौरूष का समूचा स्रोत पुरुष को ही माना जाता था। इसलिए धर्मशास्त्रियों ने नारी के संरक्षण का भार शक्ति के स्रोत पुरुष पर ही छोड़ दिया है।भेदभाव पाश्चात्य देशों में था क्योंकि इस बात की पुष्टि स्वामी विवेकानन्द के कथन से होती है-

"यह आश्चर्य की बात है कि कैम्ब्रिज और आक्सफोर्ड वि0वि0 के दरवाजे स्त्रियों के लिये आज भी बन्द है यही स्थिति हावर्ड और येल के विश्वविद्यालयों की भी है पर कलकत्ता वि0वि0 ने बीस वर्ष पूर्व ही स्त्रियों के लिये अपना द्वार खोल

दिया था। मुझे स्मरण है कि जिस वर्ष मैं बी0ए0 में उत्तीर्ण हुआ था, उस साल कई लड़कियाँ भी मेरे साथ बी0ए0 में उत्तीर्ण हो हुई थी। उन लोगों की पाठ्यपुस्तके और अन्यान्य विषय लड़कों के ही समान थे। फिर भी बहुत सी लड़कियाँ सफलता पूर्वक उत्तीर्ण हुई।

स्वामी विवेकानन्द जी आगे कहते है कि हमारे धर्म में तो लड़कियों को शिक्षा देने का निषेध है ही नहीं। प्राचीन ग्रन्थों में लिखा है कि विद्यापीठों में लड़के लड़कियाँ दोनों ही जाते थे।

महाकवि भवभूति ने यदि राम को एक आदर्श राजा के रूप में वर्णित किया है तो माता सीता को एक आदर्श सती स्त्री, तपस्विनी, कुशल वहू आदि के रूप में चित्रित किया है।

दाम्पत्य जीवन का जितना स्वाभाविक और मार्मिक वर्ण भवभूति ने किया है उतना अन्यत्र दुर्लभ है। दाम्पत्य भाव सुख-दुख में एक रूप रहता है जीवन की सभी अवस्थाओं में व्याप्त रहता है। इसमें हृदय को विश्राम मिलता है। वृद्धावस्था इसके रस को हर नहीं सकती है। यह विवाह से मृत्यु तक परिपक्व प्रेमरूप में रहता है। अतएव इसकी कामना की जाती है।

भवभूति कहते हैं, “स्नेहश्च निमित्तसव्य पेक्षश्च इति विप्रतिषिद्धमेतत” प्रेम हो और फिर वह किसी कारण पर आश्रित हो, ये दोनों बातें एक दूसरे के सर्वथा विरूद्ध है। प्रेम तत्व एक दुरूह तत्व है जिसे यथार्थतः जानना उतना कठिन नहीं है जितना उसका आचरण में लाना। गृहस्थ जीवन में इसी प्रेम तत्व की साधना सिखलायी जाती है-महाकवि भवभूति ने इसी तत्व की सुन्दर व्याख्या की है-

अद्वैतं सुखदुःखयोर नुगुणं सर्वास्वस्थासु यद
विश्रामो हृदयस्य यत्र जरसा यस्मिन्नहार्यो रसः।
कालेनावरणात्ययात् परिणते यत्स्नेहसारे स्थितं
भद्रं प्रेम सुमानुषस्य कथम्प्येकं हि तत् प्राप्यते।।

उत्तर रामचरितम् (1/39)

भवभूति कहते हैं प्रेम का रहस्य तो केवल हृदय ही जानता है-

हृदयं त्वेय जानाति प्रीतियोगं परस्परम् (6/32)

(उत्तर रामचरितम्)

जीव को भगवान की ओर उन्मुख करने का साधन नारी है।

संस्कृत अलंकार साहित्य में तीन प्रकार के शब्द माने गये हैं-

1-प्रभुसम्मित शब्द 2- सुहत सम्मित शब्द 3- कान्ता सम्मित शब्द

काव्य के लक्षण में-आचार्यकहते हैं कि कान्ता सम्मित शब्द वे होते हैं जो प्रियतमा के कमनीय वचन के समान जो शब्द रसमय होने से शीघ्र ही हृदय पर प्रभाव डालते हैं और सहृदय व्यक्ति मानने के लिये बाध्य हो जाता है।

जैसे-रस प्रधान काव्य।

इस प्रकार साहित्य में नारी को विशेष रूप से महत्व दिया गया है और सम्पूर्ण विमर्श के केन्द्र में नारी को केन्द्रित किया गया है।

काव्यं यशसे अर्थ कृते व्यवहारविदे...
कान्ता सम्मित तयोपदेशयुजे।11

महर्षि व्यास के महाकाव्य महाभारत में नारियों का चित्रण हुआ है लेकिन रामायण कालीन संस्कृति के समान समुन्नत एवं सुसंस्कृत नहीं प्रतीत होती है। धार्मिक विश्वास और नैतिक नियमों में भी परिवर्तन न हो गया था। रावण सीता का बलात अपहरण करता है पर जब हनुमान सीता को राम के पास अपनी पीठ पर बैठाकर ले जाना चाहते हैं तब सीता पर पुरुषस्पर्श के भय से यह प्रस्ताव अस्वीकाार कर देती है। रावण वध के अनन्तर सीता को अपनी पवित्रता का प्रमाण देने के लिये अग्नि परीक्षा देनी पड़ी है। किन्तु काम्यक् वन में जब जयद्रथ द्रोपदी का बलात् अपहरण करता है तब उसके पतिगण द्रोपदी के चरित्र के सम्बन्ध में कुछ भी सन्देह नहीं करते। इससे प्रतीत होता है कि राम के समय पतिव्रत की भावना अधिक कठोर थी तथा नैतिक आदर्श अत्युच्च था।

इस प्रकार हम देखते हैं कि महर्षि वाल्मीकि, कालिदास, व्यास, महाकवि भवभति ने अपनी रचनाओं में नारी पक्षों के प्रति आदर भाव प्रकट किया है सीता, पार्वती, गौतमी धारिणी, शकुन्तला, यक्षिणी, द्रोपदी आदि स्त्रियों का चरित्र वर्तमान में भी अनुकरणीय है और युगों-युगों तक इन स्त्रियों का चरित्र नारी समाज के लिये आदर्श बना रहेगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ-

1. भारत राष्ट्र चिन्तन- रामजन्म सिंह पृष्ठ-45
2. दुआ (श्रीमती) सरला, आधुनिक हिन्दी साहित्य में नारी पृष्ठ-149
3. गरूण पुराण उ0 खण्ड
4. अथर्ववेद
5. भा0 धर्म और दर्शन आचार्य वल्देव उपाध्याय पृष्ठ-438
6. डा0 कृष्ण मणि त्रिपाठी 14/87 चौखम्भा सुरभारती, वाराणसी।
7. पाण्डेय प्रद्युम्न- कुमार संभवम् पृष्ठ 6/85 चौखम्भा
8. त्रिपाठी डा0 कृष्ण मणि, रघुवंशम् 12/5, 6-चौखम्भा सुरभारती, वाराणसी।
9. वही 8/67
10. पाण्डेय डा0 रमाशंकर, मालविकाग्नि मित्रम-चौखम्भा सुरभारती वाराणसी पृष्ठ-39
11. द्विवेदी डा0 कपिलदेव, आभिज्ञान शाकुन्तलम्-सप्तम अंक-पृष्ठ 421
12. आचार्य बल्देव उपाध्याय-भा0 धर्म और दर्शन-पृष्ठ 445
13. बाल संस्कार पाठशाला, गीता परिवार-संगमनेर, पुर्ण महाराष्ट्र संवत् 2066 पृष्ठ-9
14. हितोपदेश
15. विवेकानन्द साहित्य, अद्वैत आश्रम कोलकाता वर्ष-1963 ई पृष्ठ सं0 320-21
16. वही-पृष्ठ सं0 321
17. काव्य प्रकाशः आचार्य विश्वेश्वर

www.bohalshodhmanjusha.com Bohal Shodh Manjusha ISSN: 2395-7115
Impact Factor: 8.642 June 2026 Page No. : 188-194
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

संजीव के उपन्यास `रह गई दिशाएं इसी पार ` और `अहेर `में व्यक्त समाज , सत्ता और पूँजी का अन्तर्सम्बन्ध

डॉ. राजेश कुमार राव
एसोसिएट प्रोफेसर,
हिंदी विभाग, दयाल सिंह कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

शोध -सार :
हिंदी कथा - साहित्य में संजीव का लेकन कई मायनों में अपने समकालीनों से अलग है। भिन्न होने का एक महत्वपूर्ण कारण उनकी खोजपरक और अन्वेषी दृष्टि है। इस शोध –परक और अन्वेषी दृष्टि के कारण साहित्य को सामाजिक दृष्टि और उपादेयता से जोड़ने में न केवल सफल होते हैं बल्कि साहित्य के माध्यम से समाज को कई प्रकार से नकारात्मकता की गहरी साजिश के रूप में प्रभावित करने वाली सत्ता और पूँजी के अन्तर्सम्बन्धों को समझने में कारगर होते हैं।

बीज शब्द :
समाज, सत्ता , पूँजी , राजनीति ,आदिम प्रवृति , **अन्तर्सम्बन्ध , नियति, विज्ञान , अन्वेषण, आस्था , धर्म ,** जमींदार, महाजन , जीवन , मृत्यु अमरता, अस्तित्व , शोषण।

मूल आलेख :
इस महत्वपूर्ण विषय के अन्वेषण के लिए आधार के रूप में मैंने उनके दो उपन्यासों - `रह गई दिशाएं इसी पार ` और `अहेर ` को केन्द्र में रखा है। इन दोनों उपन्यासों में धर्म , जाति , विज्ञान , समाज और सत्ता तथा पूँजीवादी ताकतों के आपसी गठजोड़ को तार्किक विश्लेषण के साथ समझने की कोशिश की गई है। विज्ञान को आज जिस तरह से पूँजीपति अपने फायदे के लिए प्रयोग कर रहें हैं उसको ` रह गई दिशाएं इसी पार ` में प्रस्तुत किया है । दूसरी तरफ़ अपनी सत्ता कायम करने लिए जाति के इस्तेमाल का मारक अस्त्र ` अहेर ` उपन्यास में देखा जा सकता है। गौर करने वाली बात है कि इन तमाम चीझों के केन्द्र में सत्ता और पूँजी का गठजोड़ अपनी पूरी तार्किकता के साथ स्पष्ट रूप में अन्तर्निहित है।

‘रह गई दिशाएं इसी पार’ प्रसिद्ध कथाकार संजीव का प्रयोगशील उपन्यास है। यह प्रयोगशीलता कई स्तरों पर चलती है। इन प्रयोगों के बीच बृहत्तर मानव समाज उनकी चिंता के केन्द्र में है। वे, अब तक के बनाए अपने ही दायरे को तोड़ते हैं बल्कि कहना चाहिए कि, हिंदी कथा-साहित्य के दायरे को तोड़ते हैं। पूरी तार्किकता के साथ। नए समाज का स्वप्न देखते हैं। साहित्यिक - दार्शनिक की तरह। संजीव, वर्तमान मनुष्य की नियति का ही प्रश्न नहीं उठाते बल्कि

अब तक के विकास को भी रेखांकित करते हैं। उसकी यात्रा की खोज करते हैं। वैज्ञानिक की तरह नहीं, साहित्यिक-वैज्ञानिक की तरह। वे, उपन्यास में नई संभावनाओं को गढ़ने की कोशिश करते हैं।

टेस्ट-ट्यूब बेबी के बहाने, जन्म, मृत्यु, धर्म, विज्ञान तथा ईश्वर एवं मनुष्य के सम्बन्धों पर एक दार्शनिक, वैज्ञानिक की तरह खुलकर बहस करते हैं। जीवन और मृत्यु किसी ईश्वर की देन नहीं बल्कि यह शुद्ध वैज्ञानिक फार्मूले पर निर्धारित है - "जिस तरीके से एक स्पर्म एक (अंडे) से मिलकर भ्रूण बनता है ...... उसी तरह मौत भी चेतना या मस्तिष्क के रुक जाने को कहें या हर पल होने वाली लघु मृत्युओं का समुच्चय?" आस्था और धर्म का मनुष्य के जीवन से गहरा जुड़ाव है। आम व्यक्ति बिना आस्था के नहीं रह सकता - "आस्थाजीन होकर हम कैसे रह सकते हैं? रिश्ते न भी हों तो भी हमें ईजाद कर लेने होंगे, ईश्वर न भी हो तो ईश्वर भी (पृष्ठ -309)1 "। धर्म ने जहाँ एक ओर मनुष्य को जीवन जीने का मार्ग बताया, वहीं धर्म के ठेकेदारों ने पूंजीपतियों के साथ मिलकर एक नए भ्रष्टाचार को जन्म दिया। धर्म की असली रोशनी को मद्धिम करने वाले ठगों और बाबाओं ने, भोली-भाली जनता को बरगलाकर, हमेशा से अपना उल्लू ही सीधा किया है - "एक स्वामी जी ने कहा, आप अभेदानन्द या किस्नू को कैसे रोक पायेंगे जबकि खुद आप आंख की दवा के नाम पर डिस्टिल्ड वाटर देते हैं (पृ. 49) 2।" किस्नू बिजारिया और अभेदानन्द इसी ठग और बाबाओं के प्रतिनिधि चरित्र हैं, जो मासूम जनता को, धर्म और ईश्वर के नाम पर लूटते हैं।

विज्ञान ने मनुष्य के जीवन में क्रांतिकारी बदलाव लाया। उसने जहाँ एक ओर मनुष्य का जीवन सुविधाजनक बनाया वहीं मनुष्य और मनुष्य के सम्बन्धों में परिवर्तन कर दिया। क्लोनिंग के कारण कैथरिन नानी से माँ हो गई। ऐलिस, जिम की माँ भी और बहन भी, बिजारिया ऐलिस का बाप और पति भी - "हाँ यह सच है माम, पर आधा सच। जिम मेरा बेटा है। सिर्फ किस्नू का ही नहीं और तुम मेरी माँ हो, सौतन नहीं (पृ. 217) 3।"

'रह गईं दिशाएं इसी पार' हिंदी उपन्यास की परम्परा में अलग ढंग का उपन्यास है। या, यों कहना चाहिए कि, उपन्यास लेखन में एक मोड़ है। यह वैज्ञानिक खोज का उपन्यास है। प्रेम, सेक्स, अजरता, अमरता और अनन्त के रहस्यों पर घूमती यह पृथ्वी कई सवाल छोड़ती है। आहार, निद्रा, भय, मैथुन के बीच घूमते मनुष्य के जीवन में सेक्स कार्य है या कारण - "काम (सेक्स) कार्य है या कारण? कारण! तो फिर कार्य क्या है - सृष्टि ... इंसान ही है जिसके लिए काम सिर्फ सृष्टि के लिए नहीं, जीवन की आनंदभरी ... (पृ. 102) 4।" प्रेम और सेक्स पर विज्ञान का अलग ही दर्शन है - "विज्ञान का दर्शन कहता है कि जीवन स्थितियां रासायनिक संघटकों का विचलन मात्र हैं। ...न, यह प्रेम नहीं, सेक्स है। क्या प्रेम सेक्स से अलग होता है? स्त्री-पुरुष के जैविक आकर्षण में सेक्स ही प्रेम है। प्रेम ही सेक्स' (पृ. 102) 5।"

अजरता और अमरता का प्रश्न सृष्टि के प्रारंभ से ही गहन चिंतन का विषय रहा है। विश्व के करीब-करीब सभी प्राचीन धर्मों और सभ्यताओं में मृत्यु के पार पहुँचने की कल्पना की गई है। हिंदू पौराणिक मिथकों में देवताओं को अजर-अमर बताया गया है। अमरता की आकांक्षा उद्योगपति विस्नू बिजारिया की भी है। वह एक ऐसे वर्ग से आता है जो धन के लिए किसी भी हद तक जा सकता है। नैतिकता का प्रश्न उसके लिए हद दर्जे का बेमानी प्रश्न है। मनुष्यता को शर्मसार करने वाले कृत्य और सामान्य जनता के शोषण से कमाए हुए धन को दिखावे के लिए समाजसेवी संस्थाओं से लेकर मंदिरों-मठों में दिल खोलकर दान देता है। अमर होने के लिए बड़े-बड़े वैज्ञानिक अपनी प्रयोगशाला में रखता है। लेकिन अनेक कोशिशों के बावजूद आज तक कोई भी भौतिक प्राणी मृत्यु पर विजय प्राप्त नहीं कर पाया - "अजर और अमर होने की अपनी तमाम कोशिशों के बावजूद न कोई अजर रह पाता है और न अमर। लाशों की बदबू को न चंदन ढंक पाता, न डीप फीज, न वैज्ञानिक और आध्यात्मिक मिथ (भूमिका - राजेंद्र यादव) 6।"

संजीव, जिस वातावरण को रचते हैं, उसमें डूब जाते हैं। वे, नारा नहीं देते, जीवन से नारा लेते हैं। अन्दर से आवाज़ आती है, इसलिए जिंदगी को जीने के लिए विज्ञान के साथ सामाजिक विज्ञान की भी जरूरत को महसूस करते हैं। उनके पास कथा कहने का जीव वैज्ञानिक फार्मूला है। जिंदगी से जुड़े अहम मसले को व्यक्त करने की छटपटाहट है। मानवता को बचा लेने की बेचैनी है । लेकिन डाली (क्लोन) को जिस तरह से समय नष्ट कर डालता है, उसी तरह से समय आज तक किसी की पकड़ में नहीं आ पाया। व्यक्ति या कोई भी सत्ता, समय सापेक्ष होती है, मूल्य सापेक्ष होती है - "चाणक्य, मनु, शंकराचार्य, मुहम्मद साहब, वाशिंगटन, फ्रैंकलिन, जेफरसन या रैले जैसे लोग काफी सचेत बुद्धिजीवी थे। जाति, धर्म, सेक्स और स्वामी का सवाल आने पर बड़े-बड़ों का आसन डोल जाता है.... हर व्यक्ति अपने समय की संतान होता है। मूल्य सापेक्ष होता है (पृ. 285) 7।"

'गोदान' उपन्यास में जमींदार, महाजन आदि किसानों का शोषण करते हैं। 'रह गईं दिखाएं इसी पार' में मछली मारने वाले मछुआरों का बड़े व्यवसायी और ट्रालर वाले शोषण करते हैं। शोषण चारों तरफ है। बड़े आदमी, छोटे आदमी का, पूंजीपति पूरे देश और समाज का। नाम दिया जाता है 'अस्तित्व' का। 'अस्तित्व' सबके लिए अलग-अलग संदर्भ लिए हुए है - "सागर तटीय लाखों मछुआरों के लिए, अस्तित्व का मतलब रोजी-रोटी के उनके पारंपरिक अधिकार को बनाये रखने का था तो एलिस ओसेन फूड्स जैसी राष्ट्रीय और बहुराष्ट्रीय कंपनियों के लिए इसका मतलब था उनके अधिकारों को छीनकर उस पर अपना एकाधिकार जमाना (पृ. 202) 8।"

अस्तित्व ने व्यक्ति के अन्दर अविश्वास और भय का वातावरण पैदा किया। अविश्वास और भय ने ऐसे व्यक्ति का निर्माण किया जो सफलता के लिए कुछ भी कर सकता है । इस भय, अविश्वास और संघर्ष के कारण व्यक्ति में आयडेंटिटी क्राइसिस पैदा हो गई - "ये ओड़िया, तेलंगा, तमिल, मलयाली, कर्नाटक, मराठी, मारवाड़ी और दूसरे इक्कीसवीं सदी में लोग एक-दूसरे से पूछने लगे - "जिन्दगी इत्तेफाक है / हर खुशी इत्तेफाक है / कल भी इत्तेफाक थी / आज भी इत्तेफाक है (पृ. 274) 9।"

मिथक, इतिहास, विज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं मनुष्य से जुड़ी बड़ी से बड़ी और सूक्ष्म से सूक्ष्म विषय को चिन्तन में रखते हुए उपन्यास की निर्मिति हुई है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी ने मनुष्य के आपसी सम्बन्धों को बदलकर रख दिया। बदलते समय में मनुष्य के रिश्ते तेजी से बदले और जटिल हुए। मनुष्य उस आइसवर्ग की तरह हुआ जिसका एक भाग ऊपर, सात भाग पानी में होता है। उसके अन्दर चल रहे परिवर्तनों को पकड़ना इतना आसान नहीं है। अतुल बिजारिया यानी जीम, टेस्ट-ट्यूब बेबी है - "वह सब वैसा है और नहीं भी है। भावनाओं के तीव्रतम आवेग में भी वह निर्वेद, निस्संग और अजनबी है (भूमिका - राजेन्द्र यादव) 10।" विज्ञान के द्वारा हम जिस सिंथेटिक इंसानों को आगे बढ़ाएंगे, उसके बाद क्या होगा, मनुष्य और सिंथेटिक इंसानों में श्रेष्ठता की जंग शुरु हो जाऐगी । अविश्वास और भय का वातावरण समाज में चारों तरफ फैलने का डर रहेगा जबकि जीवन के लिए विश्वास, आस्था और जिजीविषा का होना जरूरी है। यह विश्वास और जिजीविषा ही है, जो मनुष्य को चुनौतियों से लड़ने की ओर प्रेरित करती है। यही मनुष्य का सत्य है। दिशाएँ तो आखिर मनुष्य ही तय करता है, अपना और पूरी मानवता का।

'रग गईं दिशाएं इसी पार' हिंदी-साहित्य में जैविकी पर रचा पहला मत्त्वपूर्ण उपन्यास है। महत्त्वपूर्ण है यह प्रयास लेकिन उससे ज्यादा महत्त्वपूर्ण है - संजीव की चिन्ताएँ। आधुनिकता के जिस आलोक में उन्होंने समय, समाज और काल को देखने की कोशिश की है, वह एक नए युग की ओर ले जाएगा। जीवन, मृत्यु, अजरता, अमरता, इतिहास, विज्ञान टेक्नोलॉजी और अनन्त के रहस्यों पर जिस तरीके से बात की गई है, वह पाठक के, चिन्तन के धरातल को और विस्तृत करेगा। मनुष्य के लिए विज्ञान की जरूरतों का जो डंका पीटा जाता है, उसकी सीमाओं की ओर भी स्पष्ट संकेत किया गया है।

कई संदर्भों और अर्थों में संजीव का लेखन अपने समय की मुक्कमल तस्वीर खींचता है। उनके पास कथा कहने का वैज्ञानिक फार्मूला है। सब कुछ व्यक्त करने का, जिंदगी से जुड़े हर पहलू को सूक्ष्मता से समझने का माद्दा है - "कहने का मन तो यही करता है कि भारतीय पाठक के लिए यह पच्चीस-पचास साल पहले संभव कर दी गई रचना है (भूमिका - राजेन्द्र यादव) 11।"

छियालीस छोटे-छोटे अध्यायों में विभक्त इस उपन्यास में, बिम्बों, प्रतीकों और मिथकों की भरमार है। दिमाग एक बारगी झनझना जाता है। वातावरण को इस प्रकार संयोजित किया गया है कि, उसके अन्दर से शब्द फूटते हैं, वे बोलते हैं, बाते करते हैं। आम आदमी की तरह, ऋषि-मुनि की तरह, वैज्ञानिक-दर्शनिक की तरह, साहित्यिक और पहुँचे हुए बौद्धिक व्यक्ति की तरह । गद्य में कविता का रस है, संजीव की भाषा में - "एक ही बेटा है और वह बीमार रहता है। बीमार रहता है और सात समंदर पार रहता है (पृ. 116)12।" उपन्यास में शिल्प के स्तर पर लगातार प्रयोग है। इसको व्यक्त करने के लिए शब्द कम पड़ जाते हैं। इसीलिए कहना पड़ रहा है कि, अपनी विषयवस्तु और प्रयोगशीलता के कारण सम्भव है कि, 'रह गई दिशाएं इसी पार' के बाद हिंदी उपन्यास अपने नए कलेवर में करवट लेगा।

कथाकार संजीव के उपन्यास 'किशनगढ़ के अहेरी' को पढ़ने के बाद कथाकार और ` हंस `पत्रिका के (उस समय के) संपादक राजेन्द्र यादव ने उन्हें सुझाव दिया था कि उपन्यास में आई `अहेर ` यानी आखेट की अवधारणा इसमें पर्याप्त रूप से नहीं उभर पाई है, इसलिए अच्छा होगा कि आखेट की समग्र परंपरा को समाहित करते हुए वे इसका पुनर्लेखन करें। संजीव ने इस सुझाव को थोड़ा देर से ही सही लेकिन पूरी गंभीरता से लिया और नतीजा है कि यह तीन दशक पुराना उपन्यास अब एक नए और विस्तृत कलेवर में या कहें की पुनर्जन्म लेकर 'अहेर' नाम से प्रकाशित हुआ । इस उपन्यास की विषयवस्तु इतनी सघन और जटिल है कि इस पर चर्चा करने के लिए थोड़ा चौकस रहने की जरूरत है। जाहिर है कि तीन दशक पहले की स्थितियों-परिस्थितियों और आज के सवाल के बीच तालमेल बैठाने की कोशिश की गई है। इस कोशिश में यदा-कदा कुछ प्रसंग छोड़कर संजीव प्रायः सफल रहे हैं।

'अहेर' की कहानी किशनगढ़ गाँव को केंद्र में रखकर लिखी गई है। इस गाँव के लोग आसपास के जंगलों में निरीह जानवरों का शिकार करते हैं। पूरे गाँव में आखेट या शिकार के प्रति गजब़ का आकर्षण है - पागलपन की हद तक। सबसे बड़ा अहेरी बनने की उनमें प्रतिद्वंद्विता भी । इस होड़ में जानवर ही नहीं आदमी भी मारे जाएँ तो मारे जाएँ, लेकिन गाँव में वही रहेगा जो सबसे बड़ा अहेरी हो।

संजीव विषयवस्तु में प्रयोगशील और शोध करने वाले उपन्यासकार हैं। इस क्रम में हालाँकि 'अहेर' उनके एक पिछले उपन्यास की कड़ी में है, लेकिन इस तथ्य के अलावा वास्तव में विषयवस्तु के लिहाज से यह उनके अब तक के प्रकाशित उपन्यासों से एकदम अलग है। इस उपन्यास में आखेट से संबंधित इतनी जानकारियाँ और ब्योरे हैं कि आश्चर्य होता है कि क्या ये वही संजीव हैं जिन्होंने 'सर्कस', 'सूत्रधार', 'जंगल जहाँ शुरू होता है', 'आकाशचंपा' और 'रह गई दिशाएँ इसी पार' आदि उपन्यास लिखे हैं! बावजूद इसके कि उपन्यास का नाम 'अहेर' है और यह मात्र शिकार की कथा नहीं है, यह मनुष्य की आदिम प्रवृत्तियों का उपन्यास है, जिसमें वह अपने से कमजोर-लाचार जीव का आखेट अपने सुख, स्वार्थ, फायदे के लिए करता आया है। यह आखेट जानवर का हो या मनुष्य का इससे शिकारी को कोई फर्क नहीं पड़ता। क्योंकि अहेर एक आदिम इंस्टिक्ट है। यही कारण है कि यहाँ हर कोई किसी की घात में बैठा एक शिकारी है। वह सतर्क भी है, क्योंकि शिकार उसका भी किया जा सकता है । यह शिकार और शिकारी के मध्य परस्पर चलने वाले घात-प्रतिघात की कथा है। यह जंगल कानून से भी ज्यादा एक आदिम स्थिति

है, जहाँ कब-कौन-कैसे मारा जाएगा कोई नहीं जानता। मनुष्य की यह आदिम प्रवृत्ति आज भी उसमें बाकी है । संजीव का यह उपन्यास इसी का रूपक है।

संजीव की अधिकांश कहानियाँ हों या उपन्यास वे निजी या पारिवारिक विषय की न होकर सामाजिक हैं। 'अहेर' भी एक सामाजिक उपन्यास है। यह आधुनिक विमर्श का उपन्यास है। संजीव इस उपन्यास के द्वारा किशनगढ़ गाँव के लोगों के सामाजिक-सांस्कृतिक अंतर्विरोधों को सामने लाने की कोशिश करते हैं। लोकतंत्र और आधुनिक चेतना उत्पन्न होने से इस गाँव के दलितों और पिछड़ों में भी अपने हक के लिए एक समझ विकसित हो चुकी है। लिहाजा वर्चस्व के अब कई केंद्र बन चुके हैं। जब जातियों के अपने स्वार्थ टकराते हैं तो गाँव, गाँव नहीं रह जाता शिकारगाह में परिवर्तित हो जाता है। जिस तरह निरीह जानवरों का शिकार किशनगढ़ के अहेरी करते हैं उसी तरह शोषित-दलित जनता का शिकार सामंतवादी ताकतें मिलकर करती हैं। कोई हिरण का शिकार कर रहा है तो कोई इज्जत का। कुछ लोग तो पूरी मनुष्यता का ही शिकार किया करते हैं। इसीलिए संजीव इस उपन्यास को 'आखेट' की बहुआयामी आदिम 'इंस्टिक्ट' और अनुषंगों का समायोजन मानते हैं।

अगर किशनगढ़ को भारत का प्रतीक मान लिया जाए तो वहाँ वही रहेगा जो अहेरी होगा। जीने के लिए अहेरी होना जरूरी है। गाँव की जाति व्यवस्था यहाँ देश की जाति व्यवस्था की सच्चाई का संकेत करती है। इसीलिए संजीव , धर्म और जाति व्यवस्था से बड़ा आखेटक किसी को नहीं मानते। उपन्यास के पात्रों जय, चाँदनी और राजा कक्का को इन्हीं धर्म और जाति व्यवस्था के अहेरी मार देते हैं। जय, मार्क्सवादी है। अपनी विचारधारा से प्रभावित होकर वह जिस किसान सभा का निर्माण करता है वह जातिगत उभार के समांतर अप्रासंगिक हो रही है। और एक वक्त आता है कि वह बहुतों की आँख की किरकिरी बन जाता है। इन 'बहुतों' में सभी जातियों के लोग हैं। सभा कार्यालय को तोड़ दिया जाता है। क्या जय के साथ घटित होने वाली ये घटनाएँ देश और समाज में मार्क्सवाद की विफलता का ही एक रूपक हैं? शायद हाँ और शायद नहीं भी। जय 'मैला आँचल' के कालीचरण का एक ताजा संस्करण है। उसका अंत विचारधारा की आश्वस्तियों से कहीं ज्यादा भीषण हो चुके सामाजिक यथार्थ को दिखाता है। सही है कि संप्रदाय, अस्मिता, जाति, क्षेत्र और भाषा की राजनीति करने वाली पार्टियाँ आज हमारे राष्ट्रीय फलक पर ज्यादा प्रभावी हैं, पर क्या मार्क्सवाद की राजनीति करने वालों को इस उभार के पीछे कोई अपनी असफलता भी दिखती है?

संजीव की मार्क्सवादी दृष्टि भी इस प्रश्न से अपनी तरह से जूझती है। वे एक ओर वर्ग, वर्ण और लैंगिक भेदभाव के विरोध में तो दिखते हैं, पर उनकी विचारधारा मार्क्सवाद, दलितवाद और पिछड़ावाद का एक कॉकटेल बनकर रह गई है। उनका वैचारिक आदर्शवाद यथार्थ का थोड़ा-सा धक्का लगते ही भुरभुरा जाता है। वैचारिकताओं के अपने बहुतेरे अंतर्विरोध हैं। जरूरत पड़ने पर इनरपति सिंह, ज्योतिषी बाबा और चंदर का मिलना अगड़ों-पिछड़ों का साथ मिलकर दलितों का शोषण करना एक तरह से यह बताता है कि समाज को संचालित करने वाली चीजें एकरेखीय नहीं हैं , उनमें गहरे अन्तर्विरोध समाहित हैं । अगड़ों, पिछड़ों और दलितों में भी आंतरिक धरातल पर अहम का टकराव है। अगड़े अपने स्वार्थ के लिए अपनी ही जाति के जय की हत्या कर देते हैं और उसकी पत्नी चाँदनी के साथ बलात्कार करते हैं। पिछड़ों और दलितों में भी अपने-अपने जातिगत अहम का टकराव है, और यही कारण है कि उनकी एकता भी जल्दी ही टूट जाती है। इसीलिए राजा कक्का को मुसहर होने की वजह से मार दिया जाता है।

संजीव इस उपन्यास के द्वारा यह बताने की पुरजोर कोशिश करते हैं कि आखेट हमारे दिल, दिमाग और मन में छुपा हुआ है। यह मनुष्य की प्रवृत्ति है कि वह अपने स्वार्थ के लिए जरूरत पड़ने पर खुद से निरीह या कमजोर का शिकार करता है। संजीव लिखते हैं - ''मनुष्य को पशु बनते देखना एक यंत्रणादायी सच है। लेकिन यह सत्य है

कि जिस समाज में मानव की गरिमा स्थापित नहीं है उस समाज में शाश्वत युद्ध चलता रहेगा। 13" अकारण नहीं कि उपन्यास में लेखक ने डेढ़ सौ साल पहले अवध के रेजीडेंट रहे विलियम हेनरी स्लीमेन की डायरियों का भी हवाला लिया है। डायरियों में उल्लिखित अवध की जनता के शोषण का वो हवाला आज तक अलग-अलग रूपों में जारी है। इस तरह संजीव हमारे देश में सदियों से चल रहे `अहेर ` का एक संदर्भ बनाते हैं। आधुनिक विकास के इतने पहिए घूमने के बावजूद अहेर की प्रथा आज भी बदस्तूर है। उसकी शक्ल में थोड़े-बहुत बदलाव भले हो गए हों, लेकिन असल स्थिति जहाँ की तहाँ ही है। आज जातिवादी, पूँजीवादी, सांप्रदायिक ताकतें और सत्ता के लिए किसी भी हद तक जाने वाले राजनीतिक दल जमकर समाज का शोषण रूपी आखेट कर रहे हैं। अकारण नहीं कि किशनगढ़ के पुराने अहेरियों के जाने के बाद स्थानीय विधायक रुपई सिंह नया अहेरी बनकर आता है - वो भी लोकतंत्र के गर्भ से। वह अपनी ही जाति के ठाकुर जयपाल सिंह की हवेली खरीद लेता है - "यह बात...? बहुत जोरों से हँसते हैं रुपई सिंह, उनकी हँसी गोमती की घाटी और बीहड़ों में दूर-दूर तक फैल जाती है। फिर बहुत धीरे से बहुत बड़ी बात कहते हैं - 'इसलिए कि अब हमने हवेली को खरीद लिया है'। अहेर का वही पुश्तैनी अंदाज!"14।

दुनिया कहीं भी पहुँच गई हो रुपई सिंह का मन-मस्तिष्क आज भी वहीं का वहीं है, और यही इस उपन्यास का मूल संदर्भ है। इसीलिए अहेर और अहेरी के बीच जान लेने और जान बचाने का खेल आज भी चल रहा है। संजीव एक आदिम इंस्टिक्ट के नए रंग और समकालीन ढंग की चर्चा इस उपन्यास में करते हैं। उपन्यास 'अहेर' सदियों से रूप बदलती यथास्थिति का एक पाठ है। वह बहुत से प्रश्न छोड़ता है, जाहिर है कोई समाधान उसके पास नहीं है।

निष्कर्ष

कह सकते हैं कि संजीव के दोनों उपन्यास `रह गई दिसाएं इसी पार ` और` अहेर` में समाज , सत्ता और पूँजी के अन्तर्निहित सम्बन्धों की ही पड़ताल ही नहीं की गई है बल्कि हमें कई नए निष्कर्षों की ओर भी दोनों उपन्यास संकेत करता है। वह बताता है कि किसी भी तरह से सत्ता प्राप्त करना मनुष्य की आदिम प्रवृति है। इस आदिम प्रवृति के कारण ही आज पूरा संसार एक भयानक युद्ध के मुहाने पर बैठा हुआ है। संजीव के दोनों उपन्यास इस पहलू को बहुत गंभीरता , सूक्ष्मता और गहराई के साथ प्रस्तुत करते हैं।

आधार ग्रंथ :

1- **रह गई दिशाएं इसी पार (उपन्यास) , संजीव , पहला संस्करण -2011 , राजकमल प्रकाशन , दरियागंज , नई दिल्ली , ISBN -978-81-267-2086—6**
2- **अहेर (उपन्यास) , संजीव ,संस्करण -2020 ,राजकमल प्रकाशन ,दरियागंज , नई दिल्ली , ISBN -9789389598087**

संदर्भ :

1- **रह गई दिशाएं इसी पार (उपन्यास) , संजीव , पृष्ठ -309, राजकमल प्रकाशन , दरियागंज , नई दिल्ली ,ISBN -978-81-267-2086-6**
2- **वही,पृष्ठ -49**
3- **वही, पृष्ठ-217**
4- **वही , पृष्ठ-102**
5- **वही, पृष्ठ-102**
6- **वही, पृष्ठ-(भूमिका – राजेन्द्र यादव)**

7- वही, पृष्ठ-285
8- वही , पृष्ठ-202
9- वही, पृष्ठ-274
10- वही , पृष्ठ – (भूमिका –राजेन्द्र यादव)
11- वही , पृष्ठ – (भूमिका – राजेन्द्र यादव)
12- वही, पृष्ठ-116
13- अहेर (उपन्यास), संजीव , पृष्ठ -49, संस्करण -2020 ,राजकमल प्रकाशन ,दरियागंज , नई दिल्ली , ISBN -9789389598087
14- वही, पृष्ठ -110

संपर्क : डॉ. राजेश कुमार राव
एसोसिएट प्रोफेसर ,
हिंदी विभाग, दयाल सिंह कॉलेज ,
दिल्ली विश्वविद्यालय , लोधी रोड , नई दिल्ली-11003
ई-मेल: rajeshkrrao.hindi@dsc.du.ac.in

www.bohalshodhmanjusha.com Bohal Shodh Manjusha ISSN: 2395-7115
Impact Factor: 8.642 June 2026 Page No. : 195-201
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

Shri Guru TegBahadurJi Di Bani: DarshnikAdhyayan

ਸ਼੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਤੇਗ ਬਹਾਦਰ ਜੀ ਦੀ ਬਾਣੀ: ਦਾਰਸ਼ਨਿਕ ਅਧਿਐਨ

ਬਲਵਿੰਦਰ ਕੌਰ
ਸਹਾਇਕ ਪ੍ਰੋਫੈਸਰ ,
ਡੀ ਏ ਵੀ ਕਾਲਜ ਬਠਿੰਡਾ

ਸ਼੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਤੇਗ ਬਹਾਦਰ ਜੀ ਸਿੱਖਾਂ ਦੇ ਨੌਵੇਂ ਗੁਰੂ ਹੋਏ ਆਪ ਜੀ ਦਾ ਜਨਮ ਮੀਰੀ ਪੀਰੀ ਦੇ ਮਾਲਕ ਸਿੱਖਾਂ ਦੇ ਛੇਵੇਂ ਗੁਰੂ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਹਰਗੋਬਿੰਦ ਸਾਹਿਬ ਜੀ ਦੇ ਘਰ ਮਾਤਾ ਨਾਨਕੀ ਜੀ ਦੀ ਕੁੱਖੋਂ 1621 ਈਸਵੀ ਨੂੰ ਗੁਰੂ ਕੇ ਮਹਿਲ ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ ਵਿਖੇ ਹੋਇਆ।ਸ਼ਹੀਦਾਂ ਦੇ ਸਰਤਾਜ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਸਾਹਿਬ ਜੀ ਦੀ ਪੰਜਵੀਂ ਜੋਤ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਅਰਜਨ ਦੇਵ ਜੀ ਆਪ ਜੀ ਦੇ ਦਾਦਾ ਜੀ ਸਨ। ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਅਰਜਨ ਦੇਵ ਜੀ ਨੂੰ ਸ਼ਹੀਦ ਹੋਏ 15 ਸਾਲ ਹੋ ਚੁੱਕੇ ਸਨ। "ਆਪ ਜੀ ਬਚਪਨ ਤੋਂ ਹੀ ਬੜੇ ਸੁੰਦਰ, ਸਿਹਤ ਮੰਦ,ਸੰਤ ਸਰੂਪ, ਕੋਮਲ ਚਿਤ, ਗੰਭੀਰ ਅਤੇ ਉਦਾਰ ਬਿਰਤੀਆਂ ਦੇ ਮਾਲਕ ਸਨ।"1 ਆਪ ਜੀ ਨੇ ਬਚਪਨ ਤੋਂ ਹੀ ਸ਼ਸਤਰ ਸੰਗੀਤ ਅਤੇ ਹੋਰ ਹਰ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੀ ਪ੍ਰਚਲਿਤ ਵਿਦਿਆ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕੀਤੀ। ਆਪ ਜੀ ਬੜੇ ਹੀ ਮਿਲਾਪੜੇ,ਦਾਨੀ ਸੁਭਾਅ ਦੇ ਮਾਲਕ ਸਨ। ਆਪ ਬਚਪਨ ਤੋਂ ਹੀ ਪ੍ਰਭੂ ਭਗਤੀ ਵਿੱਚ ਲੀਨ ਰਹਿੰਦੇ ਸਨ। ਪਿਤਾ ਗੁਰੂ ਹਰਗੋਬਿੰਦ ਸਾਹਿਬ ਜੀ ਨੇ ਆਪ ਜੀ ਲਈ ਮਹਾਨ ਗੁਰੂ ਵਿਅਕਤੀ ਹੋਣ ਦੀ ਭਵਿੱਖਬਾਣੀ ਉਚਾਰਨ ਕੀਤੀ ਅਤੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਪੰਜਵੇਂ ਗੁਰੂ ਅਰਜਨ ਦੇਵ ਜੀ ਦੀ ਜੋਤ ਆਪ ਜੀ ਵਿੱਚ ਬਿਰਾਜਮਾਨ ਹੋਵੇਗੀ। ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਤੇਗ ਬਹਾਦਰ ਜੀ ਸਿੱਖ ਇਤਿਹਾਸ ਵਿੱਚ ਕੇਵਲ ਸ਼ਹੀਦ ਧਰਮ ਦੇ ਰਾਖੇ ਵਜੋਂ ਨਹੀਂ ਸਗੋਂ ਇੱਕ ਮਹਾਨ ਅਧਿਆਤਮਿਕ ਵਿਅਕਤੀ ਵਜੋਂ ਵੀ ਜਾਣੇ ਜਾਂਦੇ ਹਨ ਆਪ ਜੀ ਨੇ ਬਹੁਤ ਸਾਰੀ ਬਾਣੀ ਦੀ ਰਚਨਾ ਕੀਤੀ ਜੋ ਕਿ ਰਾਗ ਬਸੰਤ, ਰਾਗ ਭੈਰਵ, ਰਾਗ ਪਰਭਾਤੀ, ਰਾਗ ਸੋਰਠ ਅੰਦਰ ਦਰਜ ਹੈ। ਗੁਰੂ ਜੀ ਦੀ ਬਾਣੀ ਵਿੱਚ ਮਨੁੱਖੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਦੇ ਦਰਦ,ਆਤਮਕ ਮੁਕਤੀ, ਮਾਇਆ ਦੇ ਬੰਧਨ ਅਤੇ ਰੱਬੀ ਰਜ਼ਾ ਵਰਗੇ ਸਰੋਕਾਰ ਗੂੜ੍ਹੇ ਰੂਪ ਵਿੱਚ ਪ੍ਰਗਟ ਹੁੰਦੇ ਹਨ। ਆਪ ਜੀ ਨੂੰ 1675 ਈਸਵੀ ਵਿੱਚ ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਚਾਂਦਨੀ ਚੌਂਕ ਵਿੱਚ ਸ਼ਹੀਦ ਕੀਤਾ ਗਿਆ। ਕਸ਼ਮੀਰੀ ਪੰਡਤਾਂ ਦੇ ਆਪਣੇ ਧਰਮ ਦੀ ਰਾਖੀ ਲਈ ਗੁਹਾਰ ਲਾਉਣ ਤੇ ਆਪ ਜੀ ਨੇ ਆਪਣਾ ਸੀਸ ਵਾਰ ਦਿੱਤਾ। ਆਪ ਜੀ ਦੇ ਨਾਲ ਆਪਦੇ ਪਿਆਰੇ ਭਾਈ ਮਤੀ ਦਾਸ ਜੀ ਭਾਈ ਸਤੀ ਦਾਸ ਜੀ ਅਤੇ ਭਾਈ ਦਿਆਲਾ ਜੀ ਨੂੰ ਵੀ ਤਸੀਹੇ ਦੇ ਕੇ ਸ਼ਹੀਦ ਕੀਤਾ ਗਿਆ। ਆਪ ਜੀ ਦੀ ਬਾਣੀ ਅਤੇ ਬਲਿਦਾਨ ਦੋਵੇਂ ਸਿੱਖ ਧਰਮ ਨੂੰ ਆਤਮਕ ਤੇ

ਨੈਤਿਕ ਪੱਖੋਂ ਮਜਬੂਤ ਕਰਦੇ ਹਨ। ਆਪ ਜੀ ਨੇ 59 ਸ਼ਬਦਾਂ ਅਤੇ 57 ਸਲੋਕਾਂ ਦੀ ਰਚਨਾ ਕੀਤੀ। ਆਪ ਜੀ ਦੀ ਬਾਣੀ ਆਤਮਕ ਉੱਤਮਤਾ, ਜਗਤ ਰਹਿਤ ਵਿਹਾਰ, ਉਚ ਦਰਜੇ ਦੇ ਅਧਿਆਤਮਿਕ ਦਰਸ਼ਨ ਅਤੇ ਨਾਮ ਦੀ ਮਹਿਮਾ ਨੂੰ ਪੇਸ਼ ਕਰਦੀ ਹੈ।

ਸਰੋਕਾਰ: ਗੁਰੂ ਜੀ ਫ਼ਰਮਾਉਂਦੇ ਹਨ ਕਿ ਸੰਸਾਰ ਜਿਵੇਂ ਦਿਸਦਾ ਹੈ ਅਸਲ ਵਿੱਚ ਇਹ ਸਥਿਰ ਨਹੀਂ ਨਾਸ਼ਮਾਨ ਹੈ। ਮਨੁੱਖ ਸੰਸਾਰ ਦੀ ਬਾਹਰੀ ਚਕਾਚੌਂਧ ਤੋਂ ਪ੍ਰਭਾਵਿਤ ਹੋ ਕੇ ਸੁਫਨੇ ਭਰੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਬਤੀਤ ਕਰਦਾ ਹੈ। ਇਹ ਸੰਸਾਰ ਝੂਠਾ ਹੈ।

"ਸਾਧੋ ਰਚਨਾ ਰਾਮ ਬਨਾਈ।।
ਇਕ ਬਿਨਸੈ ਇਕ ਅਸਥਿਰ ਮਾਨੈ
ਅਚਰਜ ਲਖਿਓ ਨ ਜਾਈ।।"੧।।ਰਹਾਉ।। 2 ਗਉੜੀ,੨੧੯

ਗੁਰੂ ਜੀ ਦੀ ਬਾਣੀ ਦੇ ਕੇਂਦਰ ਵਿੱਚ ਆਤਮਿਕ ਚਿੰਤਨ ਅਤੇ ਆਤਮ ਮੁਕਤੀ ਦਾ ਸਰੋਕਾਰ ਸਭ ਤੋਂ ਮਹੱਤਵਪੂਰਨ ਹੈ। ਮਨੁੱਖ ਦਾ ਮਨ ਸੰਸਾਰ ਵੱਲੋਂ ਹਟਾ ਕੇ ਪਰਮਾਤਮਾ ਦੀ ਭਗਤੀ ਵਿੱਚ ਲੀਨ ਕਰਨਾ ਹੈ ਕਿਉਂਕਿ ਇਹ ਸੰਸਾਰ ਨਾਸ਼ਵਾਨ ਹੈ ਕੇਵਲ ਪ੍ਰਭੂ ਦੀ ਭਗਤੀ ਹੀ ਅੰਤ ਵਿੱਚ ਸਹਾਈ ਹੁੰਦੀ ਹੈ ਸੰਸਾਰਕ ਵਸਤੂਆਂ ਦਾ ਮੋਹ ਅੰਤ ਵੇਲੇ ਬੰਧਨਾਂ ਵਿੱਚ ਪਾ ਦਿੰਦਾ ਹੈ। ਜੇਕਰ ਮਨੁੱਖ ਆਤਮਿਕ ਚਿੰਤਨ ਕਰਦਾ ਹੈ ਭਾਵ ਆਤਮਾ ਨੂੰ ਪਰਮਾਤਮਾ ਨਾਲ ਜੋੜਦਾ ਹੈ, ਅਭੇਦ ਕਰਦਾ ਹੈ ਤਾਂ ਹੀ ਉਸ ਦੀ ਆਤਮਾ ਮੁਕਤੀ ਦਾ ਮਾਰਗ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰਦੀ ਹੈ ਨਹੀਂ ਤਾਂ ਫਿਰ ਮਨੁੱਖ ਜੂਨਾਂ ਵਿੱਚ ਭਟਕਦਾ ਰਹਿੰਦਾ ਹੈ

ਆਪ ਜੀ ਅਨੁਸਾਰ,

"ਨਿਜ ਕਰ ਦੇਖਿਓ ਜਗਤੁ ਮੈ ਕੋ ਕਾਹੁ ਕੋ ਨਾਹਿ।। ਨਾਨਕ ਥਿਰੁ ਹਰਿ ਭਗਤਿ ਹੈ ਤਿਹ ਰਾਖਹੁ ਮਨ ਮਾਹਿ।।(3)48/1428

ਗੁਰਬਾਣੀ ਵਿੱਚ ਪਰਮਾਤਮਾ ਦੀ ਭਗਤੀ ਨੂੰ ਹੀ ਸਪਸ਼ਟ ਕੀਤਾ ਗਿਆ ਹੈ।ਮਨੁੱਖ 84 ਲੱਖ ਜੂਨਾਂ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਮਨੁੱਖਾ ਦੇਹੀ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰਦਾ ਹੈ ਤੇ ਉਹ ਵੀ ਜਨਮ ਲੈਂਦਿਆਂ ਹੀ ਮਾਤਾ-ਪਿਤਾ, ਭੈਣ ਭਰਾ, ਸਾਕ ਸਬੰਧੀਆਂ ਦੇ ਮੋਹ ਵਿੱਚ ਪੈ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਤੇ ਆਪਣੇ ਮੂਲ ਮਨੋਰਥ ਨੂੰ ਭੁੱਲ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਕੇਵਲ ਮਨੁੱਖਾ ਜਨਮ ਹੀ ਹੈ ਜਿਸ ਵਿੱਚ ਪਰਮਾਤਮਾ ਨੂੰ ਭਗਤੀ ਸਾਧਨਾ ਨਾਲ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕੀਤਾ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ। ਪਰ ਇਹ ਭਗਤੀ ਕਰਮਕਾਂਡਾਂ ਵਾਲੀ ਨਹੀਂ ਹੋਣੀ ਚਾਹੀਦੀ ਗੁਰਬਾਣੀ ਮਨੁੱਖ ਦੇ ਕਲਿਆਣ ਵਿੱਚ ਯਕੀਨ ਰੱਖਦੀ ਹੈ।

ਮੱਧ ਯੁੱਗ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਅਧਿਆਤਮਿਕਤਾ ਦੇ ਵਿਕਾਸ ਲਈ 4 ਮਾਰਗ ਮੰਨੇ ਜਾਂਦੇ ਸਨ। ਕਰਮ ਮਾਰਗ ਜੋ ਕਿ ਕਰਮਕਾਂਡਾਂ ਵਿੱਚ ਲਿਪਟਿਆ ਹੋਇਆ ਸੀ ਪਰ ਗੁਰਬਾਣੀ ਵਿੱਚ ਕਰਮਕਾਂਡਾਂ ਨੂੰ ਕੋਈ ਥਾਂ ਨਹੀਂ।ਦੂਜਾ ਗਿਆਨ ਮਾਰਗ ਵੀ ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨ ਨੂੰ ਭੁੱਲ ਕੇ ਤਰਕ ਅਤੇ ਸ਼ਾਸਤਰਾਂ ਦੇ ਗਿਆਨ ਵਿੱਚ ਉਲਝਿਆ ਹੋਇਆ ਸੀ। ਗੁਰਮਤਿ ਵਿੱਚ ਕੇਵਲ ਅਨੁਭਵ ਆਧਾਰਿਤ ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨ ਨੂੰ ਪ੍ਰਵਾਨ ਕੀਤਾ ਗਿਆ। "ਤੀਜਾ ਯੋਗ ਮਾਰਗ ਵਿੱਚ ਗੁਰੂ ਸਾਹਿਬਾਨ ਨੇ ਹਠ ਯੋਗ ਜਾਂ ਇਸ ਤੋਂ ਪੂਰਬਲੇ ਰੂਪ ਨੂੰ ਨਾ ਮੰਨ ਕੇ ਇਸ ਦੇ ਸਥਾਨ ਤੇ ਸਹਿਜ ਯੋਗ ਨੂੰ ਅਪਣਾਉਣ ਦੀ ਤਾਕੀਦ ਕੀਤੀ ਕਿਉਂਕਿ ਇਸ ਵਿੱਚ ਕਿਸੇ ਪ੍ਰਕਾਰ ਦੇ ਯਤਨ ਦੀ ਲੋੜ ਨਹੀਂ ਸਹਿਜ ਸੁਭਾਵਿਕ ਚਿੱਤ ਦੀ ਸ਼ੁੱਧਤਾ ਨਾਲ ਆਤਮਾ ਨੂੰ ਪਰਮਾਤਮਾ ਵੱਲ ਮੋੜਨਾ ਹੈ।" 4

ਚੌਥਾ ਮਾਰਗ ਭਗਤੀ ਮਾਰਗ ਹੈ। ਗੁਰੂ ਤੇਗ ਬਹਾਦਰ ਜੀ ਦੀ ਬਾਣੀ ਦਾ ਸਰੋਕਾਰ ਇਸੇ ਲਈ ਭਗਤੀ ਨਾਲ ਹੈ ਕਿਉਂਕਿ ਭਗਤੀ ਸਾਰਿਆਂ ਲਈ ਹੈ। ਗ੍ਰਹਿਸਤ ਧਰਮ ਵਿੱਚ ਭਗਤੀ ਸਭ ਤੋਂ ਜਿਆਦਾ ਅਨੁਕੂਲ ਹੈ ਉਸ ਸਮੇਂ ਦੀਆਂ ਪ੍ਰਸਥਿਤੀਆਂ ਮੁਤਾਬਕ ਕੇਵਲ ਭਗਤੀ ਹੀ ਮਨੁੱਖਤਾ ਦੇ ਕਲਿਆਣ ਲਈ ਉਪਯੋਗੀ ਸੀ।

ਗੁਰੂ ਜੀ ਸਪਸ਼ਟ ਕਰਦੇ ਹਨ ਕਿ ਪਰਮਾਤਮਾ ਦੀ ਭਗਤੀ ਤੋਂ ਬਿਨਾਂ ਮਨੁੱਖੀ ਜੀਵਨ ਵਿਅਰਥ ਹੈ ਜਿਵੇਂ ਜਲ ਤੋਂ ਬਿਨਾਂ ਮਛਲੀ ਦਾ ਜੀਵਨ ਹੈ:

"ਗੁਨ ਗੋਬਿੰਦ ਗਾਇਓ ਨਹੀ ਜਨਮ ਅਕਾਰਥ ਕੀਨੁ।।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਭਜੁ ਮਨਾ ਜਿਹਿ ਬਿਧਿ ਜਲ ਕੋ ਮੀਨੁ।।"5

ਗੁਰੂ ਜੀ ਫਰਮਾਉਂਦੇ ਹਨ ਕਿ ਮਨੁੱਖ ਜਨਮ ਤੋਂ ਹੀ ਰਿਸ਼ਤਿਆਂ ਦੇ ਮੋਹ ਵਿੱਚ ਫਸ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਲਗਾਤਾਰ ਇਸ ਜਗਤ ਵਿੱਚ ਧੀਆਂ ਪੁੱਤਰਾਂ ਦੇ ਝੂਠੇ ਮੋਹ ਵਿੱਚ ਮਨੁੱਖਾ ਜਨਮ ਅਜਾਈਂ ਗਵਾ ਲੈਂਦਾ ਹੈ। ਇਹ ਰਿਸ਼ਤੇ ਨਾਤੇ ਧੀਆਂ, ਪੁੱਤਰ ਕੋਈ ਵੀ ਕਿਸੇ ਦੇ ਕੰਮ ਨਹੀਂ ਆਉਂਦਾ ਕੇਵਲ ਪਰਮਾਤਮਾ ਹੀ ਮਨੁੱਖ ਦੀ ਬਾਂਹ ਫੜ ਕੇ ਭਵ ਸਾਗਰ ਤੋਂ ਪਾਰ ਉਤਾਰਾ ਕਰ ਸਕਦਾ ਹੈ। ਇਹਨਾਂ ਰਿਸ਼ਤਿਆਂ ਵਿੱਚ ਬੱਝਾ ਮਨੁੱਖ ਪਰਮਾਤਮਾ ਦਾ ਨਾਮ ਸਿਮਰਨ ਭੁੱਲ ਕਿ ਮ੍ਰਿਗ ਤ੍ਰਿਸ਼ਨਾ ਵਾਂਗ ਝੂਠੇ ਸੰਸਾਰ ਦੀ ਚਕਾਚੌਂਧ ਚੌਂਧ ਵਿੱਚ ਫਸਿਆ ਰਹਿੰਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਇਸ ਵਿੱਚੋਂ ਕੇਵਲ ਪਰਮਾਤਮਾ ਹੀ ਆਪ ਸਹਾਈ ਹੋ ਕੇ ਬਚਾ ਸਕਦਾ ਹੈ।

"ਪੂਤ ਮੀਤ ਮਾਇਆ ਮਮਤਾ ਸਿਉਂ ਇਹ ਬਿਧਿ ਆਪੁ ਬੰਧਾਵੈ।।

ਮ੍ਰਿਗ ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਜਿਉ ਝੂਠੇ ਇਹ ਜਗ ਦੇਖਿ ਤਾਸਿ ਉਠ ਧਾਵੈ।।"6 (ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੯)

ਮਾਇਆ ਅਤੇ ਵਾਸ਼ਨਾ_ ਮਾਇਆ ਦੇ ਚੱਕਰ ਵਿੱਚ ਫਸੇ ਮਨੁੱਖ ਦੀ ਬੇਬਸੀ ਗੁਰੂ ਜੀ ਦੀ ਬਾਣੀ ਵਿੱਚ ਉਭਰਦੀ ਹੈ। ਗੁਰੂ ਜੀ ਮਾਇਆ ਦੀ ਨਿਸਥਿਰਤਾ ਅਤੇ ਨਾਮ ਸਿਮਰਨ ਦੇ ਨਿਸ਼ਚਿਤਤਾ ਨੂੰ ਉਭਾਰ ਕੇ ਵਾਸ਼ਨਾ ਤੋਂ ਦੂਰ ਰਹਿਣ ਦੀ ਸਿੱਖਿਆ ਦਿੰਦੇ ਹਨ।

ਦਰਦ ਅਤੇ ਵਿਛੋੜਾ- ਗੁਰੂ ਜੀ ਦੀ ਬਾਣੀ ਵਿੱਚ ਦਰਦ ਤੇ ਵਿਛੋੜਾ ਇੱਕ ਰੂਹਾਨੀ ਤਕਲੀਫ ਦੇ ਰੂਪ ਵਿੱਚ ਆਉਂਦੇ ਹਨ। ਇਹ ਵਿਛੋੜਾ ਵਿਆਕੁਲ ਪ੍ਰੇਮ ਹੈ ਜੋ ਨਾਮ ਦੇ ਮਾਰਗ ਰਾਹੀਂ ਆਤਮਿਕ ਮਿਲਾਪ ਤੱਕ ਲੈ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਪਰਮਾਤਮਾ ਦੇ ਨਾਮ ਦੀ ਤਾਂਘ ਹੀ ਨਾਮ ਜਪਣ ਦੀ ਪਉੜੀ ਬਣਦੀ ਹੈ ਨਾਮ ਜਪਣ, ਪ੍ਰਭੂ ਦੀ ਸਿਫਤ ਸਲਾਹ ਕਰਨ ਨਾਲ, ਮਨੁੱਖੀ ਆਤਮਾ ਦਾ ਪਰਮਾਤਮਾ ਨਾਲ ਮਿਲਾਪ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਫਿਰ ਦਰਦ ਅਤੇ ਵਿਛੋੜਾ ਸੰਸਾਰਕ ਨਾ ਹੋ ਕੇ ਅਧਿਆਤਮਿਕ ਬਣ ਜਾਂਦਾ ਹੈ।

ਦੁਖ - ਸੁਖ: ਦੁਖ ਸੁਖ ਵਿੱਚ ਘਿਰਿਆ ਇਨਸਾਨ ਘਬਰਾ ਕੇ ਪਰਮਾਤਮਾ ਦੀ ਹਸਤੀ ਤੋਂ ਇਨਕਾਰੀ ਹੁੰਦਾ ਨਾਸਤਿਕ ਬਣ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਅੰਦਰੋਂ ਮਨੁੱਖਤਾ ਗਵਾ ਕੇ ਹੈਵਾਨ ਦਾ ਰੂਪ ਲੈ ਲੈਂਦਾ ਹੈ। ਸੁੱਖਾਂ ਵਿੱਚ ਵੀ ਇਨਸਾਨ ਹੰਕਾਰੀ ਬਣ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਪਰਮਾਤਮਾ ਦੀ ਕੀਤੇ ਨੂੰ ਭੁਲਾ ਕੇ ਸਭ ਆਪਣੇ ਨਾਮ ਮੈਂ ਦੇ ਲੇਖੇ ਲਾਉਂਦਾ ਹੈ। ਚੰਗੇ ਬੁਰੇ ਦੀ ਪਹਿਚਾਣ ਭੁੱਲ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਭਾਵ ਕਿ ਦੁੱਖਾਂ ਦੀ ਨਵਿਰਤੀ ਲਈ ਅਤੇ ਸੁੱਖਾਂ ਲਈ ਦਰ ਦਰ ਤੇ ਖੁਆਰ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਇਸ ਲਈ ਗੁਰੂ ਜੀ ਦੁੱਖ ਸੁੱਖ ਤੋਂ ਨਿਰਲੇਪ ਪਰਮਾਤਮਾ ਦਾ ਨਾਮ ਜਪਣ ਦੀ ਪ੍ਰੇਰਨਾ ਦਿੰਦੇ ਹਨ। ਇਸ ਲਈ ਸੁੱਖ ਦੁੱਖ ਤੋਂ ਨਿਰਲੇਪ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਦਾ ਨਾਮ ਮਨੁੱਖ ਨੂੰ ਉਸਦੇ ਅਸਲ ਮਨੋਰਥ ਦੀ ਪਛਾਣ ਕਰਵਾਉਂਦਾ ਹੈ।

"ਸੁਖ ਦੁਖ ਰਹਤ ਸਦਾ ਨਿਰਲੇਪੀ ਜਾ ਕਉ ਕਹਤ ਗੁਸਾਈ

ਸੋ ਤੁਮ ਹੀ ਮਹਿ ਬਸੈ ਨਿਰੰਤਰ ਨਾਨਕ ਦਰਪਨ ਨਿਆਈ।।"7 (ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੯)

ਕੰਚਨ ਮਾਟੀ ਕੰਚਨ ਲੋਹਾ- ਗੁਰੂ ਜੀ ਫਰਮਾਉਂਦੇ ਹਨ ਕਿ ਇਨਸਾਨ ਮਨੁੱਖਾ ਜਨਮ ਲਾਲਚ, ਮਾਇਆ ਦੇ ਵੱਸ ਪੈ ਕੇ ਅਜਾਈ ਗਵਾ ਲੈਂਦਾ ਹੈ ਇਸ ਲਈ ਗੁਰੂ ਜੀ ਮਨੁੱਖ ਨੂੰ ਸਮਝਾਉਂਦੇ ਹਨ ਕਿ ਸੋਨੇ ਨੂੰ ਮਿੱਟੀ ਜਾਂ ਲੋਹਾ ਖਿਆਲ ਕਰਨਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ ਕਿਉਂਕਿ ਇਹ ਮਾਇਆ ਵੀ ਵਸਤੂਆਂ ਅੰਤਲੇ ਸਮੇਂ ਮਨੁੱਖ ਦੇ ਕੰਮ ਨਹੀਂ ਆਉਣੀਆਂ। ਸਭ ਇੱਥੇ ਹੀ ਰਹਿ ਜਾਣਾ ਹੈ ਇਸ ਲਈ ਇਸ ਦਾ ਲਾਲਚ ਛੱਡ ਕੇ ਪ੍ਰਭੂ ਦੀ ਭਗਤੀ ਵਿੱਚ ਮਨ ਜੋੜਨਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ ਕਿਉਂਕਿ ਪ੍ਰਭੂ ਭਗਤੀ, ਨਾਮ ਸਿਮਰਨ ਵਿੱਚ ਬਿਤਾਈਆਂ ਘੜੀਆਂ ਪਲ ਹੀ ਉਸਦੇ ਲੇਖੇ ਲੱਗਦੇ ਹਨ।

"ਸੁਖ ਦੁਖ ਦੋਨੋ ਸਮ ਕਰਿ ਜਾਨੈ ਅਉਰ ਮਾਨ ਅਪਮਾਨਾ।।
ਹਰਖ ਸੋਗ ਤੇ ਰਹੈ ਅਤੀ ਤਾ, ਤਿਨਿ ਜਗ ਤਤੁ ਪਛਾਨਾ।।
ਉਸਤਤ ਨਿੰਦਾ ਦੋਊ ਤਿਆਗੈ, ਖੋਜੈ ਪਦੁ ਨਿਰਬਾਨਾ।।
ਜਨ ਨਾਨਕ ਇਹ ਖੇਲੁ ਕਠਨੁ ਹੈ ਕਿਨਹੂ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਾਨਾ।।"8(ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੯)।

ਭਗਤੀ ਦੁਆਰਾ ਮੌਤ ਦਾ ਭਉ ਦੂਰ ਕਰਨਾ- ਗੁਰੂ ਜੀ ਜੀਵ ਨੂੰ ਸਮਝਾਉਂਦੇ ਹਨ ਕਿ ਜਿਸ ਪਰਮਾਤਮਾ ਹੀ ਹੈ ਜਿਸ ਨੇ ਦਰੋਪਦੀ ਦੀ ਲਾਜ ਰੱਖੀ, ਧਰੂ ਭਗਤ ਦੇ ਔਖੇ ਸਮੇਂ ਵਿੱਚ ਆਪ ਸਹਾਇਤਾ ਕਰੀ,ਜੇਕਰ ਅਜਾਮਲ ਪਾਪੀ ਤੇ ਵੇਸ਼ਿਆਂ ਨੇ ਮਰਨ ਲੱਗਿਆਂ ਨਰਾਇਣ ਨਾਮ ਉਚਾਰਨ ਕੀਤਾ ਤਾਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਤੇ ਵੀ ਮਿਹਰ ਕਰੀ ਕਿਉਂਕਿ ਉਹ ਪ੍ਰਭੂ ਹੀ ਹੈ ਜਿੱਥੇ ਸਾਰੇ ਬੰਧਨ ਘੇਰਾ ਪਾ ਲੈਣ ਕੋਈ ਹੀਲਾ ਨਾ ਹੋਵੇ ਉਥੇ ਪਰਮਾਤਮਾ ਦਾ ਨਾਮ ਜਪਣ ਤੇ ਅਰਦਾਸ ਬੇਨਤੀ ਕਰਨ ਨਾਲ ਪਰਮਾਤਮਾ ਹਰ ਮੁਸ਼ਕਲ ਵਿੱਚ ਆਪ ਸਹਾਈ ਹੁੰਦਾ ਹੈ।ਉਹ ਪ੍ਰਭੂ ਭਗਤੀ ਕਰਨ ਤੇ ਬਖਸ਼ ਕੇ ਆਵਾਗਵਣ ਦੇ ਚੱਕਰ ਤੋਂ ਛੁਡਾ ਕੇ ਅਮਰ ਪਦ ਮੁਕਤੀ ਬਖਸ਼ੇਗਾ।

"ਬਲ ਛੁਟਕਿਓ ਬੰਧਨ ਪਰੇ ਕਛੂ ਨ ਹੋਤ ਉਪਾਏ।।
ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਅਬ ਓਟ ਹਰਿ ਗਜਿ ਜਿਉ ਹੋਹੁ ਸਹਾਇ।।"9(ਸ:੫੩)

ਵਿਕਾਰਾਂ ਤੋਂ ਬਚਣਾ- ਮਨੁੱਖੀ ਜੀਵ ਸਦਾ ਵਿਕਾਰਾਂ ਵਿੱਚ ਫਸਿਆ ਰਹਿੰਦਾ ਹੈ।ਵਿਕਾਰਾਂ ਦੇ ਮੋਹ ਵਿਚ ਉਹ ਜਾਇਜ਼ ਨਾਜਾਇਜ਼ ਕੰਮ ਕਰਦਾ ਹੈ। ਗੁਰੂ ਜੀ ਸਾਨੂੰ ਇਹਨਾਂ ਵਿਕਾਰਾਂ ਤੋਂ ਬਚਣ ਲਈ ਕਹਿੰਦੇ ਹਨ ਕਿਉਂਕਿ ਵਿਕਾਰ ਅਧਿਆਤਮਿਕ ਮਾਰਗ ਵਿੱਚ ਰੁਕਾਵਟ ਦਾ ਕਾਰਨ ਬਣਦੇ ਹਨ। ਗੁਰੂ ਜੀ ਵਿਕਾਰਾਂ ਤੋਂ ਉੱਪਰ ਉੱਠ ਕੇ ਆਪਣੇ ਅੰਦਰ ਵਸਦੇ ਪਰਮਾਤਮਾ ਨਾਲ ਜੁੜਨ ਲਈ ਪ੍ਰੇਰਦੇ ਹਨ। ਇਹੋ ਹੀ ਸੱਚਾਈ ਹੈ ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਹੀ 84 ਲੱਖ ਜੂਨਾਂ ਤੋਂ ਮੁਕਤ ਦੀ ਪ੍ਰਾਪਤ ਹੁੰਦੀ ਹੈ।

"ਸਾਧੋ ਇਹੁ ਮਨੁ ਗਹਿਓ ਨ ਜਾਈ।।
ਚੰਚਲ ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਸੰਗਿ ਬਸਤੁ ਹੈ ਯਾ ਤੇ ਥਿਰੁ ਨ ਰਹਾਈ।।੧।।"ਰਹਾਉ।। 10
ਲੋਭਿ ਗ੍ਰਸਿਓ ਦਸਹੁ ਦਿਸ ਧਾਵਤ ਆਸਾ ਲਾਗਿਓ ਧਨ ਕੀ।। 11

ਨਾਮ ਸਿਮਰਨ ਤੇ ਰੱਬੀ ਰਜ਼ਾ- ਗੁਰੂ ਜੀ ਸੰਸਾਰਕ ਜੀਵਨ ਦੀ ਅਸਲੀ ਕਾਮਯਾਬੀ ਨਾਮ ਸਿਮਰਨ ਵਿੱਚ ਮੰਨਦੇ ਹਨ। ਗੁਰੂ ਜੀ ਫਰਮਾਉਂਦੇ ਹਨ ਕਿ ਮਨੁੱਖ ਨੂੰ ਆਪਣਾ ਅਸਲ ਮਨੋਰਥ ਯਾਦ ਰੱਖਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ ਜਿਸ ਲਈ ਉਹ 84 ਲੱਖ ਜੂਨਾਂ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਮਨੁੱਖਾਂ ਦੀ ਹੀ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰਦਾ ਹੈ ਇਸ ਲਈ ਆਪਣਾ ਜੀਵਨ ਨਾਮ ਸਿਮਰਨ ਵਿੱਚ ਗੁਜ਼ਾਰਨਾ ਅਤੇ ਰੱਬੀ ਰਜ਼ਾ ਵਿੱਚ ਰਹਿਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ ਕਿਉਂਕਿ ਪਰਮਾਤਮਾ ਦਾ ਫੈਸਲਾ ਅਟੱਲ ਹੈ ਅਤੇ ਸਾਰੇ ਜੀਵਾਂ

ਲਈ ਫ਼ਲਦਾਇਕ ਹੈ। ਰਜ਼ਾ ਵਿੱਚ ਰਹਿਣ ਨਾਲ ਮਨੁੱਖ ਦੁੱਖ ਸੁੱਖ ਦੀ ਅਵਸਥਾ ਤੋਂ ਉੱਪਰ ਉੱਠ ਜਾਂਦਾ ਹੈ।ਆਪਣੀ ਦੇਹ ਦਾ ਗੁਮਾਨ ਨਹੀਂ ਕਰਨਾ ਚਾਹੀਦਾ ਕਿਉਂਕਿ ਮਨੁੱਖ ਦੇ ਕੀਤੇ ਕਰਮਾਂ ਦਾ ਲੇਖਾ ਹੋਣਾ ਹੈ ਇਸ ਲਈ ਮਨ ਤੇ ਕਾਬੂ ਪਾ ਕੇ ਵਿਕਾਰਾਂ 'ਤੇ ਜਿੱਤ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰਨੀ ਚਾਹੀਦੀ ਹੈ ਕਿਉਂਕਿ ਪ੍ਰਭੂ ਹੀ ਸਭ ਕੁਝ ਦੇਣ ਵਾਲਾ ਹੈ ਜੇਕਰ ਉਹ ਲੈਣ ਤੇ ਆ ਜਾਵੇ ਤਾਂ ਪਹਿਲਾਂ ਜਿਨਾਂ ਵਿੱਚ ਇਹ ਸਭ ਖ਼ਤਮ ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ।

"ਗਰਬ ਕਰਤੁ ਹੈ ਦੇਹ ਕੋ ਬਿਨਸੈ ਛਿਨ ਮੈ ਮੀਤ॥
ਜਿਹਿ ਪ੍ਰਾਨੀ ਹਰਿ ਜਸੁ ਕਹਿਓ ਨਾਨਕ ਤਿਹਿ ਜਗੁ ਜੀਤਿ"॥੪੨॥12(ਸ: ਮ:੯)

ਸਰਬ ਸ਼ਕਤੀਮਾਨ ਪ੍ਰਭੂ ਦੀ ਯਾਦ : ਪਰਮਾਤਮਾ ਸਰਬ ਸ਼ਕਤੀਮਾਨ ਹੈ।ਸਾਡੇ ਜੀਵਨ ਦੀ ਡੋਰ ਪਰਮਾਤਮਾ ਦੇ ਹੱਥ ਵਿੱਚ ਹੈ।ਪਰਮਾਤਮਾ ਜੋ ਚਾਹੇ ਉਹ ਕਰ ਸਕਦਾ ਹੈ।ਇਹ ਗੁਰੂ ਤੇਗ ਬਹਾਦਰ ਜੀ ਦਾ ਜੀਵਨ ਤਜਰਬਾ ਅਤੇ ਵਿਸ਼ਵਾਸ ਹੈ ਕਿ ਪਰਮਾਤਮਾ ਬੇਅੰਤ ਅਤੇ ਅਨੰਤ ਹੈ।ਪਰਮਾਤਮਾ ਪਲਾਂ ਛਿਨਾ ਵਿੱਚ ਰਾਜੇ ਤੋਂ ਭਿਖਾਰੀ ਤੇ ਭਿਖਾਰੀ ਤੋਂ ਰਾਜ ਕਰਵਾ ਸਕਦਾ ਹੈ ਇਸ ਲਈ ਕਦੇ ਵੀ ਕਿਸੇ ਚੀਜ਼ ਦਾ ਗੁਮਾਨ ਨਹੀਂ ਕਰਨਾ ਚਾਹੀਦਾ। ਇਸ ਲਈ ਸੰਸਾਰਕ ਵਸਤੂਆਂ ਦਾ ਜੋੜਨਾ ਵਿਅਰਥ ਹੈ ਸਭ ਇੱਥੇ ਹੀ ਰਹਿ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਪਰਮਾਤਮਾ ਵੱਲੋਂ ਮਿਲੇ ਮਨੁੱਖਾ ਜਨਮ ਦਾ ਸਮਾਂ ਉਸ ਦੀ ਯਾਦ ਵਿੱਚ ਹੀ ਲਾਉਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ।

"ਛਿਨ ਮਹਿ ਰਾਉ ਰੰਕ ਕਉ ਕਰਈ ਰਾਉ ਰੰਕ ਕਰਿ ਡਾਰੇ।
ਰੀਤੇ ਭਰੇ ਭਰੇ ਸਖਨਾਵੈ ਯਹ ਤਾ ਕੋ ਬਿਵਹਾਰੇ॥
ਅਪਨੀ ਮਾਇਆ ਆਪ ਪਸਾਰੀ ਆਪਹਿ ਦੇਖਨਹਾਰਾ।
ਨਾਨਾ ਰੂਪ ਧਰੇ ਬਹੁ ਰੰਗੀ ਸਭ ਤੇ ਰਹੈ ਨਿਆਰਾ॥"13(ਬਿਹਾਗੜਾ ਮਹਲਾ ੯)

ਗੁਰੂ ਜੀ ਅਨੁਸਾਰ ਪਰਮਾਤਮਾ ਕਣ ਕਣ ਵਿੱਚ, ਜ਼ਰ੍ਹੇ ਜ਼ਰ੍ਹੇ ਵਿੱਚ ਨਿਵਾਸ ਕਰਦਾ ਹੈ। ਪਰਮਾਤਮਾ ਦੀ ਜੋਤ ਹਰੇਕ ਮਨੁੱਖ ਦੇ ਅੰਦਰ ਹੈ ਇਸ ਲਈ ਕੁਝ ਵੀ ਬੋਲਣ ਲੱਗਿਆਂ, ਕਿਸੇ ਨੂੰ ਕੁਝ ਕਹਿਣ ਲੱਗਿਆਂ, ਕਿਸੇ ਬਾਰੇ ਸੋਚ ਵਿਚਾਰ ਰੱਖਣ ਲੱਗਿਆਂ, ਧਿਆਨ ਰੱਖਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ। ਪਰਮਾਤਮਾ ਨੂੰ ਪਾਉਣ ਲਈ ਉਸਨੂੰ ਬਾਹਰ ਨਹੀਂ ਲੱਭਣਾ ਪੈਂਦਾ। ਤੀਰਥਾਂ ਤੇ ਜਾਣ ਨਾਲ, ਬਿਭੂਤੀ ਮਲਣ ਨਾਲ, ਹੱਠ ਯੋਗ ਕਰਨ ਨਾਲ, ਸਰੀਰਕ ਕਸ਼ਟ ਸਹਿਣ ਕਰਨ ਨਾਲ, ਸਰੋਵਰਾਂ ਤੇ ਇਸ਼ਨਾਨ ਕਰਨ ਨਾਲ ਪਰਮਾਤਮਾ ਨੂੰ ਨਹੀਂ ਪਾਇਆ ਜਾ ਸਕਦਾ। ਪਰਮਾਤਮਾ ਨੂੰ ਪਾਉਣ ਲਈ ਆਪਣੇ ਮਨ ਤੇ ਕਾਬੂ ਕਰਨਾ ਜ਼ਰੂਰੀ ਹੈ। ਮਨ ਨੂੰ ਜਿੱਤਣ ਨਾਲ ਵਿਕਾਰਾਂ ਨੂੰ ਕਾਬੂ ਕਰ ਕੇ ਜਗ ਨੂੰ ਜਿੱਤਿਆ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ। ਪ੍ਰਭੂ ਦੀ ਯਾਦ ਹੀ ਜੀਵਨ ਦਾ ਅਸਲ ਮਨੋਰਥ ਹੈ ਪਰ ਪ੍ਰਭੂ ਦੀ ਯਾਦ ਨੂੰ ਵਿਸਾਰ ਕੇ ਮਨੁੱਖ ਦੁਨਿਆਵੀ ਝੰਜਟਾਂ ਨੂੰ ਤਰਜੀਹ ਦੇ ਕੇ ਆਪਣੇ ਮੂਲ ਮਨੋਰਥ ਤੋਂ ਦੂਰ ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਮਨੁੱਖ ਨੂੰ ਆਪਣਾ ਮਨ ਸਾਫ਼ ਰੱਖਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਸ਼ੁੱਧ ਅਮਲ ਕਰਨੇ ਚਾਹੀਦੇ ਹਨ ਪਰ ਸ਼ੁਭ ਅਮਲ ਕਰਕੇ ਹੰਕਾਰ ਨਹੀਂ ਕਰਨਾ ਚਾਹੀਦਾ ਕਿਉਂਕਿ ਹੰਕਾਰ ਸਾਰੇ ਗੁਣਾਂ ਦਾ ਨਾਸ਼ ਕਰ ਦਿੰਦਾ ਹੈ। ਮਨੁੱਖ ਨੂੰ ਚੇਤੇ ਰੱਖਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ ਕਿ ਪਰਮਾਤਮਾ ਦੀ ਦਰਗਾਹ ਵਿੱਚ ਅਮਲਾਂ ਦੇ ਨਬੇੜੇ ਹੋਣੇ ਹਨ ਇਸ ਲਈ ਦਰ-ਦਰ ਦੀ ਭਟਕਣਾ ਛੱਡ ਕੇ ਗ੍ਰਹਿਸਥ ਵਿੱਚ ਰਹਿੰਦਿਆਂ, ਸੁੱਚੀ ਕਿਰਤ ਕਮਾਈ ਕਰਦਿਆਂ, ਚੰਗੇ ਕੰਮ ਕਰਨੇ ਚਾਹੀਦੇ ਹਨ ਕਿਸੇ ਵੀ ਭਰਮ ਭੁਲੇਖੇ ਵਿੱਚ ਨਹੀਂ ਰਹਿਣਾ ਚਾਹੀਦਾ।ਗੁਰੂ ਜੀ ਫਰਮਾਉਂਦੇ ਹਨ:

"ਕਾਹੇ ਰੇ ਬਨ ਖੋਜਨ ਜਾਈ॥
ਸਰਬ ਨਿਵਾਸੀ ਸਦਾ ਅਲੇਪਾ ਤੋਹੀ ਸੰਗਿ ਸਮਾਈ॥ ੧॥ ਰਹਾਉ॥

ਪੁਹਪ ਮਧਿ ਜਿਉ ਬਾਸ ਬਸਤ ਹੈ ਮੁਕਰ ਮਾਹਿ ਜੈਸੇ ਛਾਈ॥

ਤੈਸੇ ਹੀ ਹਰਿ ਬਸੇ ਨਿਰੰਤਰ ਘਟ ਹੀ ਖੋਜਹੁ ਭਾਈ॥੧॥

ਬਾਹਰ ਭੀਤਰਿ ਏਕੋ ਜਾਨਹੁ ਇਹ ਗੁਰ ਗਿਆਨ ਬਤਾਈ॥

ਜਨ ਨਾਨਕ ਬਿਨੁ ਆਪਾ ਚੀਨੈ ਮਿਟੈ ਨ ਭ੍ਰਮ ਕੀ ਕਾਈ"॥੨॥ (ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੯) 14

ਨਾਮ ਅਤੇ ਭਗਤੀ: ਗੁਰੂ ਜੀ ਅਨੁਸਾਰ ਮਨੁੱਖ ਸੰਸਾਰ ਵਿੱਚ ਕਮਾਉਣ ਅਤੇ ਖਾਣ ਹੀ ਨਹੀਂ ਆਇਆ। ਮਨੁੱਖ ਦਾ ਸਭ ਤੋਂ ਵੱਡਾ ਫਰਜ਼ ਪ੍ਰਭੂ ਦੀ ਰਜ਼ਾ ਵਿੱਚ ਰਹਿ ਕੇ ਉਸ ਸਰਬ ਸ਼ਕਤੀਮਾਨ ਪਰਮਾਤਮਾ ਦੀ ਯਾਦ ਵਿੱਚ ਜੁੜੇ ਰਹਿਣਾ ਹੈ। ਸਵਾਸ ਸਵਾਸ ਪ੍ਰਭੂ ਨੂੰ ਧਿਆਉਣਾ ਹੈ। ਇੱਕ ਖਿਨ ਲਈ ਵੀ ਪ੍ਰਭੂ ਦੀ ਯਾਦ ਨੂੰ ਵਿਸਾਰਨਾ ਨਹੀਂ ਚਾਹੀਦਾ ਪ੍ਰਭੂ ਹਰ ਜਗਹਾ ਹਾਜ਼ਰ ਨਾਜ਼ਰ ਹੈ ਇਸ ਲਈ ਮਨੁੱਖ ਦਾ ਫਰਜ਼ ਹੈ ਕਿ ਆਪਣੇ ਰੋਜ਼ਾਨਾ ਦੇ ਕਾਰ-ਵਿਹਾਰ ਕਰਦਿਆਂ ਵੀ ਪਰਮਾਤਮਾ ਨੂੰ ਯਾਦ ਕਰੇ। ਹਰ ਪਲ ਲਈ,ਹਰ ਕੰਮ ਲਈ ਪਰਮਾਤਮਾ ਦਾ ਸ਼ੁਕਰ ਗੁਜ਼ਾਰ ਬਣੇ। ਦਸਾਂ ਨਹੁੰਆਂ ਦੀ ਕਿਰਤ ਕਮਾਈ ਕਰੇ, ਹੱਥੀ ਦਾਨ ਕਰੇ ਅਤੇ ਵੰਡ ਕੇ ਛਕੇ। ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਮਨੁੱਖ ਪਰਮਾਤਮਾ ਦੀਆਂ ਬਰਕਤਾਂ ਰਿਧੀਆਂ ਸਿੱਧੀਆਂ ਦਾ ਪਾਤਰ ਬਣਦਾ ਹੈ ਪਰਮਾਤਮਾ ਲੋਕ ਪਰਲੋਕ ਵਿੱਚ ਸਹਾਈ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਪਰਮਾਤਮਾ ਹੀ ਸਰਬ ਸੁੱਖਾਂ ਦਾ ਦਾਤਾ ਹੈ।

"ਰਾਮ ਭਜੁ ਰਾਮ ਭਜੁ ਜਨਮ ਸਿਰਾਤੁ ਹੈ॥" (ਜੈਜੈਵੰਤੀ ਮ:੯)15

"ਤਿਹ ਨਰ ਜਨਮ ਅਕਾਰਥ ਖੋਇਆ ਯਹ ਰਾਖਹੁ ਮਨ ਮਾਹੀ"॥(ਬਿ.ਮ:੯) 16

ਗੁਰੂ ਜੀਆਂ ਅਨੁਸਾਰ ਇਹ ਜਗਤ ਇੱਕ ਸੁਫਨਾ ਹੈ ਇਹੀ ਅਟੱਲ ਸੱਚਾਈ ਹੈ। ਇੱਥੇ ਕੁਝ ਵੀ ਸੱਚ ਨਹੀਂ।ਅੰਤਲੇ ਸਮੇਂ ਕੁਝ ਵੀ ਮਨੁੱਖ ਦੇ ਨਾਲ ਨਹੀਂ ਜਾਣਾ। ਕੇਵਲ ਪਰਮਾਤਮਾ ਦਾ ਨਾਮ ਹੀ ਸੱਚਾ ਹੈ ਅਤੇ ਹਰ ਥਾਂ ਸਹਾਈ ਹੁੰਦਾ ਹੈ।

"ਜਿਉ ਸੁਪਨਾ ਅਰੁ ਪੇਖਨਾ ਐਸੇ ਜਗੁ ਕਉ ਜਾਨਿ॥

ਇਨ ਮੈ ਕਛੁ ਸਾਚੋ ਨਹੀ ਨਾਨਕ ਬਿਨੁ ਭਗਵਾਨ॥"(ਸ:ਮ:੯)17

ਸਮਾਜਿਕ ਅਤੇ ਰਾਜਨੀਤਿਕ ਪੱਖ: ਗੁਰੂ ਜੀ ਦੀ ਬਾਣੀ ਸਿਰਫ ਧਾਰਮਿਕ ਪੱਖੋਂ ਹੀ ਨਹੀਂ ਬਲਕਿ ਸਮਾਜਕ ਰੂਪ ਵਿੱਚ ਵੀ ਸੇਧ ਦਿੰਦੀ ਹੈ। ਉਹਨਾਂ ਨੇ ਧਰਮ ਦੀ ਰਾਖੀ ਲਈ ਸ਼ਹੀਦੀ ਦਿੱਤੀ ਪਰ ਉਨਾਂ ਦੀ ਬਾਣੀ ਵਿੱਚ ਵੀ ਇਹ ਸੰਦੇਸ਼ ਵਿਆਪਕ ਹੈ ਕਿ ਧਰਮ, ਜਾਤ, ਲਿੰਗ ਜਾਂ ਪੇਸ਼ੇ ਦੇ ਆਧਾਰ ਤੇ ਕੋਈ ਵੰਡ ਨਹੀਂ ਹੋਣੀ ਚਾਹੀਦੀ ਕਿਉਂਕਿ ਪਰਮਾਤਮਾ ਦੀ ਜੋਤ ਹਰੇਕ ਮਨੁੱਖ ਵਿੱਚ ਹੈ ਅਤੇ ਸਾਰੇ ਹੀ ਇਨਸਾਨ ਰੱਬ ਦੇ ਬਣਾਏ ਹਨ ਇਸ ਲਈ ਕਿਸੇ ਨਾਲ ਕੋਈ ਭੇਦਭਾਵ ਨਹੀਂ ਹੋਣਾ ਚਾਹੀਦਾ।

ਭਾਸ਼ਾਈ ਵਿਸ਼ਲੇਸ਼ਣ ਅਤੇ ਰੂਪਕ ਚਿਤਰ: ਆਪ ਜੀ ਦੀ ਭਾਸ਼ਾ ਸਧਾਰਨ ਪੰਜਾਬੀ ਗੁਰਮੁਖੀ ਹੈ। ਜੋ ਸਾਰਿਆਂ ਦੀ ਪਹੁੰਚ ਵਿੱਚ ਹੈ ਅਤੇ ਸੰਤ ਕਵੀ ਰਿਵਾਇਤ ਨੂੰ ਅੱਗੇ ਵਧਾਉਂਦੀ ਹੈ ਉਹਨਾਂ ਨੇ ਰੂਪਕ, ਉਪਮਾ ਅਲੰਕਾਰ,ਮਾਨਵੀਕਰਨ ਦਾ ਵਿਆਪਕ ਚਿਤਰ ਪੇਸ਼ ਕੀਤਾ ਹੈ।

ਸਿੱਖ ਦਰਸ਼ਨ ਵਿੱਚ ਥਾਂ : ਗੁਰੂ ਤੇਗ ਬਹਾਦਰ ਜੀ ਦੀ ਬਾਣੀ ਸਿੱਖ ਧਰਮ ਦੇ ਆਤਮਕ, ਮੌਲਿਕ ਅਤੇ ਨੈਤਿਕ ਆਦਾਨ ਪ੍ਰਦਾਨ ਦੀ ਸਰੋਤ ਹੈ। ਉਹਨਾਂ ਦੀ ਬਾਣੀ ਵਿੱਚ ਆਤਮਕ ਬੋਧ, ਧਰਮ ਦੀ ਰਾਖੀ, ਮਾਇਆ ਦੀ ਨਿਸ਼ਥਿਰਤਾ ਅਤੇ ਨਾਮ ਸਿਮਰਨ ਦੇ ਸੰਦੇਸ਼ ਅਸਲ ਵਿੱਚ ਗੁਰਬਾਣੀ ਦੀ ਰੂਹ ਹਨ।

ਉਪਰੋਕਤ ਵਿਚਾਰ ਪਿੱਛੋਂ ਅਸੀਂ ਇਸ ਸਿੱਟੇ ਉੱਤੇ ਪੁੱਜਦੇ ਹਾਂ ਕਿ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਤੇਗ ਬਹਾਦਰ ਜੀ ਪਵਿੱਤਰ,ਉੱਚ ਕੋਟੀ ਦਾ ਜੀਵਨ ਜਿਉਣ ਵਾਲੇ ਆਦਰਸ਼ਵਾਦੀ ਭਗਤ ਹੋਏ। ਆਪ ਜੀ ਕਹਿਣੀ ਅਤੇ ਕਰਨੀ ਦੇ ਪੱਕੇ ਸਨ। ਆਪ ਜੀ ਦੀ ਬਾਣੀ ਮਨੁੱਖ ਨੂੰ ਅਸਲ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਦੀ ਸੋਝੀ ਬਖਸ਼ਣ ਵਾਲੀ ਹੈ। ਮਨੁੱਖ ਨੂੰ ਉੱਚੇ ਆਚਰਨ ਵਾਲਾ ਇਨਸਾਨ ਬਣਾਉਂਦੀ ਹੈ।ਪ੍ਰਭੂ ਪਿਆਰ ਹੀ ਬਾਣੀ ਦਾ ਲਕਸ਼ ਹੈ।ਆਪ ਜੀ ਦੀ ਬਾਣੀ ਜੀਵਨ ਤੋਂ ਟੁੱਟ ਚੁੱਕਿਆਂ ਨੂੰ ਉੱਚਾ ਚੁੱਕਦੀ ਹੈ। ਨਿਰਾਸ਼ਾਵਾਦ ਤੋਂ ਆਸ਼ਾਵਾਦੀ ਬਣਾਉਂਦੀ ਹੈ। ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਦੇ ਮੂਲ ਮਕਸਦ ਦੀ ਸੋਝੀ ਬਖਸ਼ਦੀ ਹੈ। ਗੁਰੂ ਜੀ ਦੀ ਬਾਣੀ ਦਾ ਧੁਰਾ ਸਰਬੱਤ ਦਾ ਭਲਾ ਹੈ। ਆਪ ਜੀ ਦੀ ਬਾਣੀ ਨੂੰ ਪੜ੍ਹ ਕੇ ਭਵ ਸਾਗਰ ਤੋਂ ਪਾਰ ਲੰਘਿਆ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ।ਆਪ ਜੀ ਦੀ ਬਾਣੀ ਜੀਵਨ ਨੂੰ ਸਫ਼ਲ ਬਣਾਉਣ ਵਿੱਚ ਹਰ ਤਰ੍ਹਾਂ ਸਹਾਈ ਹੁੰਦੀ ਹੈ।

ਹਵਾਲੇ ਅਤੇ ਟਿੱਪਣੀਆਂ

1.ਹਿੰਦ ਦੀ ਚਾਦਰ ਗੁਰੂ ਤੇਗ ਬਹਾਦਰ ਜੀ ਜੀਵਨ,ਚਿੰਤਨ ਅਤੇ ਬਾਣੀ ਬਿਕਰਮ ਸਿੰਘ ਘੁੰਮਣ, ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਨ ਵਰਾ 2013 ਵਾਰਿਸ ਸ਼ਾਹ ਫਾਊਂਡੇਸ਼ਨ, ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ ਪੰਨਾ 29

2. ਹਿੰਦ ਦੀ ਚਾਦਰ ਗੁਰੂ ਤੇਗ ਬਹਾਦਰ ਜੀ ਜੀਵਨ ਚਿੰਤਨ ਅਤੇ ਬਾਣੀ ਬਿਕਰਮ ਸਿੰਘ ਘੁੰਮਣ ,ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਨ ਵਰਾ 2013 ਵਾਰਿਸ ਸ਼ਾਹ ਫਾਊਂਡੇਸ਼ਨ, ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ ਪੰਨਾ 21 3. ਸਲੋਕ ਮਹਲਾ ੯ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਜੀ ਅੰਗ 1426

4. ਗੁਰੂ ਤੇਗ ਬਹਾਦਰ:ਬਾਣੀ ਵਿਸ਼ਲੇਸ਼ਣ ਡਾਕਟਰ ਰਤਨ ਸਿੰਘ ਜੱਗੀ, ਡਾਕਟਰ ਗੁਰਸ਼ਰਨ ਕੌਰ ਜੱਗੀ, ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਨ ਵਰਾ 2011, ਗੁਰਮਤਿ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਨ, ਪੰਨਾ 42

5. ਗੁਰੂ ਤੇਗ ਬਹਾਦਰ ਜੀ ਬਾਣੀ ਵਿਸ਼ਲੇਸ਼ਣ: ਡਾਕਟਰ ਰਤਨ ਸਿੰਘ ਜੱਗੀ ਡਾਕਟਰ ਗੁਰਸ਼ਰਨ ਕੌਰ ਜੱਗੀ, ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਨ ਵਰਾ 2011 ਮ ਗੁਰਮਤ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਨ ਪੰਨਾ 42

6. ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੯ ,ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਜੀ ਅੰਗ 219

7.ਸੋਰਠ ਮਹਲਾ ੯, ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਜੀ ਅੰਗ 632

8.ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੯, ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਜੀ ਅੰਗ 219

9. ਗੁਰੂ ਤੇਗ ਬਹਾਦਰ ਜੀ ਜੀਵਨ,ਸੰਦੇਸ਼ ਅਤੇ ਸ਼ਹਾਦਤ: ਤਾਰਨ ਸਿੰਘ, ਸ਼ਹਾਦਤ ਦੀ ਤੀਜੀ ਸ਼ਤਾਬਦੀ ਦੇ ਅਵਸਰ ਤੇ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਿਤ ਸਿਮਰਤੀ ਪੰਜਾਬੀ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ ਪਟਿਆਲਾ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਨ ਵਰ੍ਹਾ 1976 ਪੰਨਾ 89

10.ਰਾਗ ਗਉੜੀ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਜੀ ਅੰਗ (219)

11. ਰਾਗ ਆਸਾ ਮਹਿਲਾ ੯ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਜੀ (ਅੰਗ 411)

12. ਸਲੋਕ ਮਹਲਾ ੯ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਜੀ ਸਲੋਕ(42)

13. ਬਿਹਾਗੜਾ ਮਹਿਲਾ ੯ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਜੀ (ਅੰਗ 537)

14. ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੯, ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਜੀ (ਅੰਗ 684)

15.ਜੈ ਜੈਵੰਤੀ ਮਹਲਾ ੯,ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਜੀ (ਅੰਗ 1352)

16. ਸਲੋਕ ਮਹਲਾ ੯ (ਸਲੋਕ ੨)ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਜੀ toਅੰਗ (831)

17. ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਜੀ ਸਲੋਕ ਮਹਲਾ ੯(੨੩)

(97818-14514) Balwinderkaur14514@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com Bohal Shodh Manjusha ISSN: 2395-7115
Impact Factor: 8.642 June 2026 Page No. : 202-206
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

सांप्रदायिकता के बीच मानवीय चेतना - प्रियंवद के उपन्यास 'वे वहाँ कैद हैं' में

डॉ. मेय फ्लावर के ए
एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
सेंट मैरीज़ कॉलेज, त्रिशूर, केरल – 680020

सार:
1994 में प्रकाशित प्रियंवद का लघु उपन्यास 'वे वहाँ कैद हैं' सांप्रदायिकता और उसके गर्भ से उत्पन्न फासीवाद का संवेदनशील दस्तावेज़ है। प्रस्तुत शोध पत्र में चिन्मय, दादू, मसूद, गुटली, सुख्खी बाबू आदि पात्रों के माध्यम से धर्म-राजनीति गठजोड़, धार्मिक कट्टरता, जातिवाद और आतंकवाद का विश्लेषण किया गया है। उपन्यास देश-विभाजन के बाद हिन्दू-मुस्लिम संबंधों की त्रासदी को यथार्थ के धरातल पर उद्घाटित करता है I उपन्यासकार यह स्पष्ट करता है कि हिंसक मानसिकता ही सांप्रदायिकता का वास्तविक स्रोत है।

मुख्य शब्द: सांप्रदायिकता, जातिवाद, धार्मिक कट्टरता, आतंकवाद, फासीवाद, प्रियंवद, हिन्दू-मुस्लिम दंगे, धर्म-राजनीति

प्रस्तावना

1994 में प्रकाशित प्रियंवद का प्रथम लघु उपन्यास ‘वे वहाँ कैद हैं’ सांप्रदायिकता, फासीवादी प्रवृत्तियों और उनके सामाजिक दुष्परिणामों का सशक्त एवं यथार्थपरक चित्रण प्रस्तुत करता है। यह उपन्यास केवल हिंदू-मुस्लिम संबंधों में बढ़ती कटुता, अविश्वास और हिंसा का दस्तावेज़ नहीं है, बल्कि उन राजनीतिक और आर्थिक शक्तियों का भी पर्दाफाश करता है, जो अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए धर्म का उपयोग करती हैं। संवेदनशील भाषा और प्रभावशाली कथानक के माध्यम से प्रियंवद ने सांप्रदायिक उन्माद से उत्पन्न भय, आतंक और मानवीय त्रासदी को अत्यंत मार्मिक ढंग से अभिव्यक्त किया I उपन्यास में चिन्मय जहाँ हिंदू राष्ट्र की अवधारणा और सांप्रदायिक उन्माद का प्रतिनिधित्व करता है, वहीं दादू मानवता, सह-अस्तित्व और करुणा के मूल्यों का प्रतीक बनकर उभरता है। इस प्रकार उपन्यास सांप्रदायिकता और इंसानियत के बीच चलने वाले संघर्ष को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करता है।ज्योतिष जोशी के शब्दों में, *‘वे वहाँ कैद हैं’* में प्रियंवद ने हिंदू- मुस्लिम सांप्रदायिकता के उभार और उसके दुष्परिणामों को रेखांकित करते हुए यह स्पष्ट किया है कि इसके पीछे राजनीतिक एवं आर्थिक लाभ प्राप्त करने के लिए तत्पर एक प्रभावशाली वर्ग सक्रिय रहता है।‘1यह कथन उपन्यास की मूल संवेदना को अभिव्यक्त करता है, जहाँ सांप्रदायिकता अंततः समाज में घृणा, हिंसा और विघटन को जन्म देती है। इस दृष्टि से ‘वे वहाँ कैद हैं’ केवल

एक साहित्यिक कृति नहीं, बल्कि भारतीय समाज में सांप्रदायिक राजनीति और उसके अमानवीय परिणामों का गंभीर एवं विचारोत्तेजक विश्लेषण है।

सांप्रदायिक राजनीति

प्रियंवद ने सांप्रदायिक उभार को मनुष्यता-विरोधी मुहिम के रूप में देखा है और उसकी चरम परिणति में बर्बरता की छाया देखी है। इस बर्बरता का सूत्रधार चिन्मय है, जो धीरे-धीरे उग्र हिंदू नेता के रूप में उभरता है और सारे शहर को हिंदू आक्रामकता से भर देता है।वह लोगों के बीच त्रिशूल बाँटने की तैयारियाँ करता है। हिन्दू धर्म को बचाने के लिए बंद का आह्वान भी करता है। उसका कहना था -- "बहुत से हिन्दू आजकल जान-बूझकर मांस खाने लगे हैं... शराब पीने लगे हैं... जिससे हिंसा का मुकाबला हिंसा से कर सकें। बुनियादी तौर पर हिन्दू हिंसक नहीं होता। करुणा होती है उसके मन में। यह सब खाने से करुणा मर जाती है... इसलिए।" 2चिन्मय किसी भी तरह लोगों के मन में सांप्रदायिकता की आग जलाना चाहता है ताकि वह और उसके दल के लोग आसानी से हिन्दू राज्य की स्थापना कर सकें।उपन्यास में ऐसे कई संदर्भ हैं जहाँ चिन्मय हिन्दू राष्ट्र का समर्थन करता है। जब कुछ गुण्डों ने दादू को अपमानित किया तब चिन्मय ने उन पर हमला किया। उसने यह बात अविनाश को बताई। देर तक उनके बीच बातें होती रहीं। तभी उसने अविनाश से कहा कि "अब अगला चरण पूर्ण हिन्दू राष्ट्र निर्माण का है... शायद लोग मारे भी जाएँ पर वह दिन हिन्दू राष्ट्र की नींव का दिन होगा।" 3

जातिवाद: मानवीय रिश्तों का संहार

भारतीय इतिहास में जाति व्यवस्था ने देश की एकता बनाने में बहुत बड़ी भूमिका निभाई है। लेकिन आज जाति की सामाजिक-धार्मिक शक्ति के दुरुपयोग के कारण भारत में सांप्रदायिकता, अलगाववाद, आतंकवाद आदि तेजी से बढ़ रहे हैं। जातिवाद की धारा ही ऐसी होती है कि वह मानवीय रिश्तों का संहार कर देती है। जातिग्रस्त मन हर समय भड़ककर दूसरों को मारने-काटने पर आमादा रहता है। प्रियंवद ने अपने उपन्यास में जातिवाद के कारण हुए दंगे-फसाद, हत्या आदि का चित्रण किया है।

देश-विभाजन के साथ हिन्दू-मुस्लिम समाज भी आपस में भावनात्मक स्तर पर बँट गया था। फलस्वरूप हिन्दुओं के मन में मुसलमानों के प्रति तथा मुसलमानों के मन में हिन्दुओं के प्रति घृणा की भावना थी। इस उपन्यास के पात्र सुख्खी बाबू, गुटली और मसूद इसके उदाहरण हैं। सुख्खी बाबू और उनके गुण्डे हिन्दू दल के थे। मसूद मुसलमान था। कट्टर जातिवाद के कारण दोनों एक-दूसरे के दुश्मन बन जाते हैं।सुख्खी बाबू एक ठेकेदार थे। पहले शहर में हिन्दू-मुस्लिम दंगे हुए तब वह सुख्खी था। उस दंगे में पूरी बस्ती जल गई। "छत पर खड़े होकर देखने से चारों ओर आग ही आग दिखती थी... काले धुएँ से हर वक्त आसमान ढका रहता था। गली-कूचों के अंदर अँधेरे घरों तक से खींच-खींचकर लोगों को मारा गया।" 4एक बार बस्ती में हिन्दू-मुस्लिम दंगे हुए तो मसूद के ताऊ शाकिर अली ने ही सुख्खी बाबू को शरण दी थी। इसीलिए सुख्खी बाबू उनका एहसान कभी नहीं भूला। जब वे धनी हो गए तो उन्होंने अली को एक पुराना अहाता खरीदकर दे दिया। उसमें कबाड़ का काम शुरू करवा दिया। 1947 के बँटवारे में शाकिर अली हिन्दुस्तान छोड़कर पाकिस्तान चला गया। तब से उसकी देखभाल मसूद के हाथ में आ गई। वह बहुत कम किराया सुख्खी बाबू को देता था। शाकिर अली का भतीजा होने के कारण सुख्खी बाबू ने भी उस पर उतना ध्यान नहीं दिया। लेकिन एक बार जब सुख्खी बाबू मसूद के अहाते में आया तो मसूद ने उसकी बेइज्जती की। उनकी मित्रता शत्रुता में बदल गई। जातिभेद ने इन्सानी रिश्तों के बीच खाई खोद दी। मैत्री से अधिक जाति को महत्व दिया जाने लगा। सुख्खी बाबू का कथन इस बात को स्पष्ट करता है -- "अब शाकिर अली के भतीजे से नहीं, एक मुसलमान से अपना दो करोड़ रुपये का अहाता खाली कराना है।" 5सुख्खी बाबू ने गुटली का सहारा लेकर मसूद को अहाते से निकालने की कोशिश की। गुटली हिन्दू दल का था, वह एक गुण्डा भी था। एक-दो बार उसने अहाते

में जाकर मसूद को वहाँ से खाली करने के लिए कहा। "मसूद ने उसको और उसके मालिक को हिन्दू होने की गालियाँ दीं और चाकू दिखाया।" 6तब से लेकर गुटली के मन में सांप्रदायिकता की आग जलने लगी। गुटली उस दिन से मसूद को अहाते से बाहर निकालने का रास्ता सोच रहा था।

धर्म और राजनीति का अंत:संबंध

राजनीति आधुनिक समाज में एकता लाने वाली एक बड़ी शक्ति है। भारत में मिश्रित आबादी है। यहाँ अलग-अलग जातीय समूहों, राष्ट्रीय नेताओं, धार्मिक मान्यताओं के लोग एक साथ रहते हैं। जातिगत भेदों और अंतरों को बढ़ा-चढ़ाकर प्रस्तुत करने से और राजनीति में धर्म एवं जाति का दुरुपयोग करने से जातियों के बीच दुश्मनी बढ़ जाती है। यह कभी-कभी सांप्रदायिकता और आतंक का रूप धारण कर लेती है। सांप्रदायिकता के विकास का मुख्य कारण धर्मनिरपेक्ष ताकतों, समूहों एवं व्यक्तियों की मौकापरस्त राजनीति है। उन राजनीतिज्ञों ने निजी स्वार्थ के लिए राजनीति में धर्म की घुसपैठ को छूट दी। सांप्रदायिक ताकतों के साथ समझौता किया। राजनीति में धर्म को एक हथियार के रूप में इस्तेमाल करना शुरू किया। उपन्यास का सुख्खी बाबू ऐसा ही एक पात्र है।हिन्दुओं की हत्याओं के बाद देश में बंद की आवाजें उठीं। सुख्खी बाबू ने हिन्दू संगठन के नेताओं को चाय पर बुलाया। इसके पीछे सुख्खी बाबू का स्वार्थ था। वह बंद का बहाना बनाकर अहाता खाली करवाकर मसूद को वहाँ से निकालना चाहता था। इस संदर्भ का फायदा उठाकर राजनीति की रोटी सेंकने वाले अचानक सक्रिय होकर सामने आ गए। सुख्खी बाबू भी राजनीति में शामिल था। उसने राजनीति में पैसा लगाया। वह सभी दलों के लोगों से अच्छे संबंध निभाने लगा। उसने धर्म को राजनीति में लाकर अपनी जमीन मसूद से छुड़वाने का तंत्र भी बनाया।

धार्मिक कट्टरता और उसका आतंकी स्वरूप

प्रस्तुत उपन्यास में प्रियंवद ने धर्म के नाम पर आम आदमी पर किए जाने वाले अत्याचारों पर प्रकाश डाला है। हिन्दू दल के नेता चिन्मय बंद के समर्थक थे। बंद के कुछ दिन पहले कुछ लड़के दादू के घर आए। देखने में बड़े गुण्डे एवं बदमाश थे। वे बंद के दिन दादू के घर की छत पर माइक बाँधना चाहते थे। बंद वाले दिन उस पर भजन-कीर्तन करेंगे। इसके द्वारा वे हिन्दू राष्ट्र की घोषणा भी करना चाहते थे। दादू और अविनाश ने इसका इनकार किया क्योंकि उनके मन में मानवीयता के प्रति गहरी आस्था थी। जब दादू और अविनाश ने साफ इनकार किया तो वे लोग क्रुद्ध हो गए। वे कई प्रकार की धमकियाँ भी देने लगे। वे धर्म के नाम को लेकर अपने आपको सही ठहराने लगे। उनका कहना था -- "आज हिन्दुओं से गद्दारी कर रहे हैं।" 7 आज भी ऐसे लोग हैं जो धर्म का सहारा लेकर अपनी गलतियों को सही ठहराते हैं। वे लोगों के मन में सांप्रदायिकता का बीज बोने का प्रयत्न करते हैं। इस प्रकार संकुचित सांप्रदायिक भावना के कारण पूरी बस्ती में कर्फ्यू, दंगे, लूटमार और आगजनी का सिलसिला शुरू हो गया। बंद वाले दिन तीन आगजनी और पाँच कत्ल हुए। बंद का फायदा उठाकर गुण्डे लड़कों ने चिन्मय को चाकू मार दिया। कभी-कभी सांप्रदायिकता इस प्रकार आतंक की ओर बढ़ जाती है। धर्म के नाम पर दूसरों के साथ जबरदस्ती करना एक प्रकार का आतंक है, विशेषकर दूसरे धर्म के लोगों पर अत्याचार करना।

सांप्रदायिक दंगे: कारण एवं परिणाम

देश-विभाजन से लेकर आज तक हिन्दू-मुस्लिम दंगे आज भी उस विषम परिस्थिति को जन्म देते हैं, जहाँ इन्सानियत का कोई महत्व नहीं रह जाता। हिन्दू-मुस्लिम एक-दूसरे के रक्त के प्यासे बन जाते हैं। जब दंगा प्रारंभ होता है, एक समूह दूसरे समूह के व्यक्ति पर आक्रमण के लिए उतारू हो जाता है। रामधारी सिंह दिनकर के शब्दों में—"जब एक जाति भयानक रूप से सांप्रदायिक हो उठती है, तब दूसरी जाति भी अपने अस्तित्व का ध्यान करने लगती है। और उसके भाव भी शुद्ध नहीं रह पाते। अच्छे से अच्छे हिन्दू को भी यह समझाया जाए कि मुसलमान तुमसे घृणा करते हैं, तो इस जहरीले आघात से वह अविचलित नहीं रह सकता। हिन्दुओं में सांप्रदायिकता की वृद्धि

इसी प्रकार हुई है और जब हिन्दुओं में सांप्रदायिकता दिखाई पड़ी, तब तक मुसलमानों की सांप्रदायिकता और बढ़ गई और दोनों जातियों के बहुत से लोग परस्पर शत्रु हो उठे।"8उपन्यास में ऐसे कई संदर्भ हैं लोग धर्म के नाम पर आपस में लड़ते-मरते हैं।शहर में बंद और सांप्रदायिक तनाव के दौरान हिन्दू और मुस्लिम समुदायों के बीच अविश्वास, घृणा और हिंसा बढ़ती जाती है। गुटली और मसूद की व्यक्तिगत दुश्मनी धीरे-धीरे सांप्रदायिक संघर्ष का रूप ले लेती है। दंगों, आगजनी, हत्या और प्रतिशोध की घटनाएँ पूरे शहर को आतंक और भय के वातावरण में धकेल देती हैं। गुटली की हत्या के बाद बस्ती में यह खबर आसानी से फैल गई कि 'हिन्दू बम मार रहे हैं'। दंगे और अधिक भड़क उठते हैं। निर्दोष लोग भी इसकी चपेट में आ जाते हैं। लेखक यह दिखाता है कि सांप्रदायिकता का चरम रूप आतंकवाद है, जो समाज की मानवता और सह-अस्तित्व की भावना को नष्ट कर देता है। इसके विपरीत दादू का चरित्र इंसानियत, करुणा और मानवीय मूल्यों का प्रतीक बनकर सामने आता है। वह मसूद को बचाने का प्रयास करता है, किंतु अंततः उसे और उसके परिवार को इसकी भारी कीमत चुकानी पड़ती है।

सांप्रदायिकता के बीच मानवीय चेतना

सांप्रदायिक हिंसा का वास्तविक स्रोत संप्रदायों की भिन्नता में नहीं बल्कि हमारी हिंसक मानसिकता में है। इसका एक उत्तम उदाहरण है दादू के परिवार की हत्या। क्योंकि अपने ही धर्म के लोगों ने ही दादू, प्रातू एवं जीवन की हत्या की है। उन गुण्डों ने प्रातू का बलात्कार भी किया है। कुछ लोग दंगों के सहारे अपना स्वार्थ सिद्ध करते हैं। इसके लिए वे गुण्डों का इस्तेमाल भी करते हैं। इस उपन्यास का सुख्खी बाबू ऐसा ही एक पात्र है जो अपने राजनीतिक एवं आर्थिक लक्ष्य के लिए गुटली एवं लुका जैसे गुण्डों की सहायता से लोगों पर अत्याचार करता है।

सांप्रदायिकता के कारण कभी सामाजिक विघटन होता है तो कभी सांस्कृतिक। दादू के विचारों से इसका समर्थन करने की कोशिश लेखक ने की है। "एक पतनोन्मुख, मरते हुए समाज के पूरे लक्षण ही होते हैं। कैसे धीरे-धीरे एक पूरा समाज, पूरी सभ्यता इसी तरह विघटित होती हुई पतन तक पहुँचती है... विघटित होने वाले समाज का भविष्य निश्चित रूप से तलवार से सज्जित होगा... यदि चुनौतियाँ बड़ी होती हैं तो सभ्यता का लोप हो जाता है।" 9 उपन्यास में लेखक ने दादू की बेटी कादंबरी के खत के माध्यम से इराकी युद्ध का जो चित्रण किया है वह परोक्ष रूप में आतंकवाद का ही चित्रण है। कादंबरी के पत्र से यह पता चलता है कि "वह इराक की एक गहरी अँधेरी खाई में है। गोलियों की आवाज़ और बारूद की गंध यहाँ खाई तक बिल्कुल साफ आ रही है... हर घर में हत्या की एक परछाई है... सब जगह मैंने यही देखा है। लंका... इराक... बेरुत... दक्षिण अफ्रीका... लैटिन अमेरिकी देश।" 10इस खत के माध्यम से लेखक ने पूरी दुनिया में फैले हुए आतंक की ओर पाठक का ध्यान आकृष्ट किया है। "पन्द्रह साल का हर लड़का मुजाहिद है दादू। कुरान के उन्माद में डूबा, हिंसक और उग्र।" 11इससे यह पता चलता है कि लोगों के मन में सांप्रदायिकता की भावना जगाकर उन्हें आतंकवादी बना दिया जाता है।

निष्कर्ष

उपन्यास यह स्पष्ट करता है कि सांप्रदायिक हिंसा का वास्तविक कारण धर्म नहीं, बल्कि मनुष्य की हिंसक मानसिकता और स्वार्थपरता है। दादू का चरित्र मानवता, करुणा और सह-अस्तित्व का प्रतीक बनकर उभरता है, जो सांप्रदायिकता के विरुद्ध मानवीय मूल्यों की स्थापना करता है।उपन्यास यह संदेश देता है कि सांप्रदायिकता और आतंकवाद समाज की एकता, संस्कृति और मानवता के लिए घातक हैं तथा इनके विरुद्ध मानवीय चेतना, सहिष्णुता और सद्भाव ही सबसे प्रभावी उपाय हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. ज्योतिष जोशी, *उपन्यास की समकालीनता*, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2007, पृ. 94।

2. प्रियंवद. वे वहाँ कैद हैं_. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1994. पृ. 8।
3. वहीं पृ 111
4. वहीं पृ 26
5. वहीं पृ 30
6. वहीं पृ 30
7. वहीं पृ 31
8. रामधारी सिंह दिनकर, *संस्कृति के चार अध्याय*, लोकभारती प्रकाशन, पृ. 618।
9. वहीं पृ 97
10. वहीं पृ 6
11. वहीं पृ 95

mayflowerallese@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com Bohal Shodh Manjusha ISSN: 2395-7115
Impact Factor: 8.642 June 2026 Page No. : 207-210
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

ਬਲਜੀਤ ਕੌਰ ਬੱਲੀ ਦੇ ਨਾਵਲਾ 'ਚ ਪੰਜਾਬੀ ਸਮਾਜ ਅਤੇ ਸਭਿਆਚਾਰ ਦੀ ਪੇਸ਼ਕਾਰੀ

ਕਿਰਨਦੀਪ ਕੌਰ
(ਖੋਜਾਰਥੀ),
ਟਾਂਟੀਆ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ, ਸ਼੍ਰੀ ਗੰਗਾ ਨਗਰ

ਪੰਜਾਬੀ ਸਾਹਿਤ ਵਿੱਚ ਬਲਜੀਤ ਕੌਰ ਬੱਲੀ ਨੇ ਅਮ੍ਰਿਤਾ ਪ੍ਰੀਤਮ, ਦਲੀਪ ਕੌਰ ਟਿਵਾਣਾ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਆਪਣੀਆਂ ਨਾਵਲੀ ਰਚਨਾਵਾਂ **'ਆਪਣੀ ਛਾਵੇਂ', 'ਠਰੀ ਰਾਤ', 'ਧੁੱਪ ਦੀ ਵਾਟ' ਅਤੇ 'ਗੁਆਚੇ ਸੂਰਜ'** ਨਾਲ ਆਪਣੀ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਜਗ੍ਹਾ ਬਣਾ ਲਈ ਹੈ। ਪੰਘੂੜੇ ਤੋਂ ਲੈ ਕੇ ਅਰਥੀ ਤੱਕ ਇਸ ਸੰਸਾਰਿਕ ਯਾਤਰਾ ਦੌਰਾਨ ਮਨੁੱਖ ਦੀ ਜਿੰਦਗੀ ਵਿੱਚ ਬਹੁਤ ਕੁੱਝ ਵਾਪਰਦਾ ਹੈ। ਜੀਵਨ ਵਿੱਚ ਵਾਪਰਦੀਆਂ ਇਨ੍ਹਾਂ ਚੰਗੀਆਂ-ਮਾੜੀਆਂ ਘਟਨਾਵਾਂ ਤੋਂ ਸਾਹਿਤਕਾਰ ਦਾ ਹਿਰਦਾ ਸਦਾ ਪ੍ਰਭਾਵਿਤ ਹੁੰਦਾ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਇਸ ਪ੍ਰਭਾਵ ਨੂੰ ਸਾਹਿਤਕਾਰ ਪਾਤਰਾ ਦੇ ਚਰਿੱਤਰ ਅਤੇ ਸ਼ਖ਼ਸੀਅਤ ਦੇ ਚਿਤਰਣ ਰਾਹੀਂ ਪੇਸ਼ ਕਰਦਾ ਹੈ।ਬਲਜੀਤ ਕੌਰ ਬੱਲੀ ਦੇ ਨਾਵਲਾਂ ਬਾਰੇ ਖਾਸ ਤੌਰ 'ਤੇ ਉਸਦੇ ਪਹਿਲੇ ਨਾਵਲ 'ਆਪਣੀ ਛਾਵੇਂ" ਬਾਰੇ ਇਹ ਗੱਲ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਤੌਰ 'ਤੇ ਆਖੀ ਜਾ ਸਕਦੀ ਹੈ ਕਿ ਉਸਦੀ ਨਾਇਕਾ ਦੀਸ਼ ਦਾ ਜੀਵਨ ਲੇਖਿਕਾ ਦੀ ਆਪਣੀ ਨਿੱਜੀ ਜਿੰਦਗੀ ਦੇ ਕਾਫ਼ੀ ਨੇੜੇ ਹੈ। 'ਆਪਣੀ ਛਾਵੇਂ' ਨਾਵਲ ਵਿੱਚ ਪਰੰਪਰਕ ਸੋਚ ਅਤੇ ਆਧੁਨਿਕ ਸੋਚ ਵਿਚਕਾਰ ਤਨਾਉ ਪੈਦਾ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਦੀਸ਼ ਦਾ ਪਤੀ ਭੁਪਿੰਦਰ ਸਿੰਘ ਜੋ ਕਿ ਪਰੰਪਰਕ ਸੋਚ ਦਾ ਮਾਲਕ ਹੈ, ਉਹ ਔਰਤ ਨੂੰ ਆਪਣੀ ਜਾਇਦਾਦ ਸਮਝਦਾ ਹੋਇਆ ਉਸਨੂੰ ਗੁਲਾਮਾਂ ਦੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਆਪਣੇ ਅਧੀਨ ਰੱਖਣਾ ਚਾਹੁੰਦਾ ਹੈ, ਇਸੇ ਰੁਚੀ ਅਧੀਨ ਉਹ ਦੀਸ਼ ਤੇ ਸ਼ੱਕ ਕਰਦਾ ਹੈ। ਇਸੇ ਸ਼ੱਕ ਅਤੇ ਗੁਲਾਮ ਬਣਾਉਣ ਦੀ ਇੱਛਾ ਦੀ ਪੂਰਤੀ ਨਾ ਹੋਣ ਕਰਕੇ ਰਿਸ਼ਤਿਆਂ ਵਿੱਚ ਤਰੇੜ ਆ ਜਾਂਦੀ ਹੈ। ਦੀਸ਼, ਜੋ ਕਿ ਪੇਸ਼ੇ ਵਜੋਂ ਸਕੂਲ ਅਧਿਆਪਕਾ ਹੈ, ਸਾਡੇ ਪੁਰਾਣੇ ਸੰਸਕਾਰਾਂ ਅਨੁਸਾਰ, 'ਔਰਤ ਨੂੰ ਪੈਰ ਦੀ ਜੁੱਤੀ ਸਮਝਣਾ ਸਵੀਕਾਰ ਨਹੀਂ ਕਰਦੀ। ਦੀਸ਼, ਜੋ ਕਿ ਪੰਜ ਭਰਾਵਾਂ ਦੀ ਲਾਡਲੀ ਭੈਣ ਅਤੇ ਆਪਣੀ ਮਾਂ ਦੀ ਸ਼ਿਦੀ ਧੀ ਹੈ, ਜਿਸ ਬਾਰੇ ਉਸਦੀ ਮਾਂ ਕਹਿੰਦੀ ਹੈ:-

"ਜਦੋਂ ਤੂੰ ਜੰਮੀ ਸੈਂ ਦੀਸ਼ ਤਾਂ ਤੇਰੇ ਪਿਉ ਨੇ ਖੁਸਰੇ ਨਚਾਏ ਸਨ। ਚਾਰ ਪੁੱਤਾਂ ਪਿੱਛੋਂ ਮੱਸੀ ਧੀ ਦਾ ਮੂੰਹ ਦੇਖਿਆ ਸੀ ਅਸੀਂ। ਤੇਰੇ ਹੋਣ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਅਸੀਂ ਸੋਚਦੇ ਸਾਂ, ਅਸੀਂ ਕਿਵੇਂ ਕਿਸੇ ਜੱਟ ਦੀਆਂ ਚਾਰ ਧੀਆਂ ਲਿਆਵਾਂਗੇ, ਜਦੋਂ ਹੱਥੀ ਇੱਕ ਦਾ

ਵੀ ਦਾਨ ਨਾ ਕੀਤਾ। ਸਾਡਾ ਪੁੰਨ ਕਿਵੇਂ ਲੱਗੂ। ਫੇਰ ਦੇਖ ਲੈ, ਖੂਹੀਂ ਟੋਬੀ ਪੈ-ਪੈ ਛੱਪੜਾਂ ਦੇ ਕੰਕਰ ਭੰਨ ਲਾ-ਲਾ ਕੇ ਮਸੀ ਤੇਰਾ ਮੂੰਹ ਦੇਖਿਆ।"1

ਜਿੱਥੇ ਇੱਕ ਪਾਸੇ ਸਾਡੇ ਸਮਾਜ ਵਿੱਚ ਧੀ ਦੇ ਜੰਮਣ 'ਤੇ ਸੋਗ ਮਨਾਇਆ ਜਾਂਦਾ ਸੀ, ਉਥੇ ਦੀਸ਼ ਦੇ ਪਾਲਣ-ਪੋਸ਼ਣ ਵਿੱਚ ਉਸਨੂੰ ਪੁੱਤਰਾਂ ਨਾਲੋਂ ਵੀ ਉਚੇਰੀ ਥਾਂ ਮਿਲਦੀ ਹੈ। ਪੁੱਤਰਾਂ ਵਾਂਗ ਪਾਲਣ ਕਰਕੇ ਦੀਸ਼ ਦੇ ਮਨ ਵਿੱਚ 'ਮੈਂ ਵੀ ਕੁਝ ਹਾਂ", ਦਾ ਅਹਿਸਾਸ ਭਰ ਗਿਆ, ਉਹ ਆਖਦੀ ਹੈ:-

"ਕੋਈ ਸੁਣੇ ਤਾਂ ਮੂੰਹ ਵਿਚ ਉਂਗਲਾ ਪਾ ਲਵੇਗਾ। ਮਾਪਿਆਂ ਕਿਹੋ ਜਿਹਾ ਮਾਣ ਤੇ ਗੌਰਵ ਮੇਰੇ ਅੰਦਰ ਭਰ ਦਿੱਤਾ ਸੀ।"2

ਦੂਸਰੀ ਤਰਫ ਦੀਸ਼ ਜਦੋਂ ਸਹੁਰੇ ਜਾਂਦੀ ਹੈ ਤਾਂ ਉਸਦਾ ਸਹੁਰਾ ਘਰ ਜਗੀਰਦਾਰੀ ਕਦਰਾਂ-ਕੀਮਤਾਂ ਦੁਆਰਾ ਮਨੁੱਖੀ ਜੀਵਨ ਅਤੇ ਅਜ਼ਾਦੀ 'ਤੇ ਕਠੋਰ ਜਕੜਬੰਦੀ ਦੀ ਪ੍ਰਤੀਨਿਧਤਾ ਕਰਦਾ ਹੈ। ਉਸਦੇ ਸਹੁਰੇ ਨੇ ਪਹਿਲੀ ਘਰ ਵਾਲੀ ਮਰ ਜਾਣ ਪਿੱਛੋਂ ਆਪਣੀ ਉਮਰ ਤੋਂ ਕਾਫੀ ਛੋਟੀ ਉਮਰ ਦੀ ਆਪਣੀ ਸਾਲੀ ਬਸੰਤ ਕੌਰ ਲਿਆਂਦੀ ਹੋਈ ਹੈ। ਬਸੰਤ ਕੌਰ ਦੇ ਪੇਕੇ ਆਪਣੀ ਨਿਘਰੀ ਆਰਥਕ ਹਾਲਤ ਕਾਰਨ ਆਪਣੀ ਜਵਾਨ ਧੀ ਨੂੰ ਅਧਖੜ ਸੁਰਜਨ ਦੇ ਲੜ ਲਾ ਦਿੰਦੇ ਹਨ। ਪਿੰਡਾਂ ਦੀ ਸੰਸਕ੍ਰਿਤਕ ਪਰੰਪਰਾ ਅਨੁਸਾਰ ਛੋਟੀ ਭੈਣ ਦਾ ਉਸਦੇ ਪਤੀ ਨਾਲ ਵਿਆਹ ਕਰ ਦਿੱਤਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਗਰੀਬੀ ਅਤੇ ਸਾਂਸਕ੍ਰਿਤਕ ਰਿਵਾਜ ਕਰਕੇ ਬਸੰਤ ਕੌਰ ਨਾਲ ਵੀ ਅਜਿਹਾ ਵਾਪਰਦਾ ਹੈ। ਜਾਗੀਰਦਾਰੀ ਸਮਾਜ ਵਿਚ ਔਰਤ ਦੇ ਹਾਲਾਤਾਂ ਦਾ ਪਤਾ ਦੀਸ਼ ਨੂੰ ਉਹਦੇ ਵਿਆਹ ਵਾਲੀ ਰਾਤ ਹੀ ਆਖੇ ਬੋਲਾਂ ਤੋਂ ਲੱਗਦਾ ਹੈ। ਜਦੋਂ ਉਹ ਦੀਸ਼ ਨੂੰ ਦੁੱਧ ਦਾ ਗਿਲਾਸ ਦਿੰਦੀ ਹੈ, ਤੇ ਦੀਸ਼ ਨਾਂਹ ਕਰਦੀ ਹੈ, **"ਪੀ ਲੈ-ਪੀ ਅੱਜ ਈ ਖਾਤਰਾਂ ਹੁੰਦੀਆਂ- ਫੇਰ ਨੀ ਪੁੱਛਣਾ ਕਿਸੇ ਨੇ।3**

ਦੀਸ਼ ਦੇ ਮਨ ਅੰਦਰ ਖੁੱਲ੍ਹ ਕੇ ਜੀਉਣ ਦੀ ਇੱਛਾ ਅਤੇ ਇਸ ਘਰ ਦੇ ਦਮ-ਘੁੱਟਵੇਂ ਮਾਹੌਲ ਬਾਰੇ ਦੀਸ਼ ਆਖਦੀ ਹੈ:-

"ਬਠਿੰਡੇ ਦੀਆਂ ਖੁੱਲ੍ਹੀਆਂ ਹਵਾਵਾਂ ਵਿੱਚ ਪਲਣ ਵਾਲੀ ਪਟਿਆਲੇ ਸ਼ਾਹੀ ਰਸਮਾਂ ਵਿਚ ਦਮ ਘੁੱਟਕੇ ਰਹਿ ਗਈ।"4

ਦੀਸ਼ ਨੂੰ ਵਿਆਹ ਵਾਲੇ ਦਿਨ ਸਹੁਰੇ ਪਿੰਡ ਜਦੋਂ ਬੱਸ 'ਚੋਂ ਉਤਾਰ ਕੇ ਲਿਆਂਦਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਤਾਂ ਤਾਈ ਹਰਨਾਮੀ ਦੀ ਇਸ ਤਾੜਨਾ 'ਤੇ ਕਿ ਭੁਪਿੰਦਰ ਸਿੰਘ ਬਹੂ ਦਾ ਪੱਲਾ ਫੜ ਕੇ ਤੁਰੇ, ਮਰਦਾਂਵੀ ਅਤੇ ਜਗੀਰੂ ਹੈਂਕੜ ਨਾਲ ਭਰਿਆ ਭੁਪਿੰਦਰ ਸਿੰਘ ਆਖਦਾ ਹੈ:-

"ਤਾਈ ਹੁਣ ਨੀ ਇਹ ਜਾਂਦੀ ਕਿਤੇ ਡਾਹਾ ਪਾ ਲਿਆ ਡਾਹਾ।"5

ਵਿਆਹ ਸਮੇਂ ਦੀਆਂ ਕੁੱਝ ਰੀਤਾਂ ਅਤੇ ਲੋਕ ਵਿਸ਼ਵਾਸ ਵੀ ਸਾਹਮਣੇ ਆਉਂਦੇ ਹਨ। ਜਿਵੇਂ ਵਿਆਹੀ ਹੋਈ ਦੀਸ਼ ਤੋਂ ਸੱਸ ਪਾਣੀ ਵਾਰ ਕੇ ਪੀਂਦੀ ਹੈ,

"ਭੁਪਿੰਦਰ ਦੀ ਵੱਡੀ ਭੈਣ ਨੇ ਭੁਪਿੰਦਰ ਨੂੰ ਪਟੜੇ ਤੋਂ ਹੇਠਾਂ ਖਿਸਕਾ ਦਿੱਤਾ, ਉਸਨੇ ਆਨੰਦਾਂ ਵੇਲੇ ਵੀ ਪਹਿਲਾਂ ਉਠਾਇਆ ਸੀ ਭੁਪਿੰਦਰ ਸਿੰਘ। 'ਲਉ ਜੀ ਹੁਣ ਪੈ ਗਿਆ ਬਹੂ ਤੇ ਰੋਹਬ।6

ਅਜਿਹਾ ਕਰਨ ਪਿੱਛੇ ਅਜਿਹਾ ਮੰਨਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਕਿ ਲਾਵਾਂ ਵੇਲੇ ਮੁੰਡਾ-ਕੁੜੀ ਵਿਚੋਂ ਜਿਹੜਾ ਪਹਿਲਾਂ ਉੱਠਦਾ ਹੈ, ਉਸਦਾ ਦੂਜੇ 'ਤੇ ਰੋਹਬ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਤੋਂ ਇਲਾਵਾ ਦੀਸ਼ ਦੀ ਨਨਾਣ ਦੀ ਮਨੋ-ਸਥਿਤੀ ਉਜਾਗਰ ਹੁੰਦੀ ਹੈ ਕਿ ਇੱਕ ਤਾਂ ਨਨਾਣ-ਭਰਜਾਈ ਦਾ ਰਿਸ਼ਤਾ ਈਰਖਾ ਵਾਲਾ ਹੈ। ਦੂਜਾ ਸਾਡੇ ਸਮਾਜ ਵਿਚ ਔਰਤ ਹੀ ਔਰਤ ਤੋਂ ਕਿਤੇ ਨਾ ਕਿਤੇ ਉਸਦਾ ਅਧਿਕਾਰ

ਖੋਹਦੀ ਹੈ। ਇਹ ਵੀ ਲੋਕ ਵਿਸ਼ਵਾਸ ਹੈ ਕਿ ਵਹੁਟੀ ਆਉਣ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਜੇਕਰ ਗਿੱਧਾ ਪਾਉਣ ਦੀ ਰਸਮ ਕੀਤੀ ਜਾਵੇ ਤਾਂ ਵਹੁਟੀ ਚਲਾਕ ਹੁੰਦੀ ਹੈ, ਜਿਸਦਾ ਪਤਾ ਇਨ੍ਹਾਂ ਸ਼ਬਦਾਂ ਤੋਂ ਲੱਗਦਾ ਹੈ,

"ਨੀ ਬੀਬੀ ਅਸੀਂ ਗਿੱਧਾ ਪਾਉਣੈ ਹੁਣ। 'ਵੇਗਾਂ।" ਸਿਆਣੀਆਂ ਬਹੁਤੀਆਂ ਬਹੂ ਆਈ ਤੋਂ ਕੌਣ ਗਿੱਧਾ ਪੌਂਦਾ। ਸ਼ਰੀਕਣੀਆਂ ਤਾਂ ਪਹਿਲਾਂ ਹੀ ਮਿਹਣੇ ਦਿੰਦੀਆਂ- ਅਖੇ ਦੇਖਾਂਗੇ ਜਦੋਂ ਬਣਾ ਲੇਂਗੀ ਮਾਸਟਰਣੀ ਨੂੰਹ ਨਾਲ- ਤੁਸੀਂ ਹੋਰ ਚੰਦ ਚੜ੍ਹਾ ਦਿਉ।"7

ਬਹੂ ਆਉਣ 'ਤੇ ਮੇਲ ਰਲ ਕੇ ਗਿੱਧਾ ਪਾਉਂਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਬੋਲੀਆਂ ਰਾਹੀਂ ਔਰਤਾਂ ਆਪਣੇ ਮਨ ਦੇ ਭਾਵਾਂ ਨੂੰ ਪੇਸ਼ ਕਰਦੀਆਂ ਹਨ। ਇੱਕ ਜਠਾਣੀ ਨੇ ਬੋਲੀ ਪਾਈ,

"ਨਾਰ ਦਹਾਜੂ ਦੀ ਭਰ-ਭਰ ਅੱਖੀਆਂ ਡੋਲ੍ਹੇ, ਨਾਲ ਦਹਾਜੂ ਦੀ ।

ਦੂਜੀ ਜਠਾਨੇ ਨੇ ਜਿਵੇਂ ਹੁੰਗਾਰਾ ਭਰਿਆ ਬੋਲ ਸ਼ਰੀਕਾਂ ਦੇ... ।

ਮੈਂ ਨੀਂ ਬਾਬਲਾ ਸਹਿੰਦੀ, ਬੋਲ ਸ਼ਰੀਕਾ ਦੇ.......।"

ਤਾਈ ਨੇ ਵੀ ਆਪਣੇ ਮਨ ਦੀ ਭੜਾਸ ਕੱਢੀ,

"ਘਰ ਨੀ ਟੋਲਦੀਆਂ, ਬਦਲੇ ਖੋਰੀਆਂ ਮਾਵਾਂ, ...ਏਸ ਜਵਾਨੀ ਨੂੰ ਕਿਹੜੇ ਖੂਹ ਵਿੱਚ ਪਾਵਾਂ, ਏਸ ਜਵਾਨੀ ਨੂੰ......।"8

ਇਨ੍ਹਾਂ ਬੋਲੀਆਂ ਰਾਹੀਂ ਸਾਡੇ ਸਮਾਜ ਵਿੱਚ ਅਣਜੋੜ ਵਿਆਹ, ਦੁਹਾਜੂ ਨਾਲ ਵਿਆਹ ਅਤੇ ਸ਼ਰੀਕੇਬਾਜੀ ਦੇ ਭਾਵ ਉਜਾਗਰ ਹੁੰਦੇ ਹਨ।

ਜਿੱਥੇ ਇੱਕ ਪਾਸੇ ਦੀਸ਼ ਦੇ ਪੇਕੇ ਘਰ ਵਿਚ ਉਸਨੂੰ ਪੁੱਤਰਾਂ ਵਾਂਗ ਲਾਡ ਕੀਤਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ, ਉੱਥੇ ਜਗੀਰਦਾਰੀ ਸਮਾਜ ਦੀਆਂ ਕਦਰਾਂ-ਕੀਮਤਾਂ ਨੂੰ ਘੁੱਟ ਕੇ ਫੜੀ ਬੈਠਾ ਇਹ ਸਮਾਜ ਧੀ ਦੇ ਪੈਦਾ ਹੋਣ ਤੇ ਸੋਗ ਮਨਾਉਂਦਾ ਸੀ। ਇਹ ਕਾਰਣ ਹੈ ਕਿ ਦੀਸ਼ ਦੀ ਕੁੱਖ ਤੋਂ ਕੁੜੀ ਪੈਦਾ ਹੋਣ ਤੇ ਉਸਦੇ ਸਹੁਰੇ ਘਰ ਵਿੱਚ ਉਸ ਨਾਲ ਬੁਰਾ ਸਲੂਕ ਕੀਤਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ, ਜਿਸਦਾ ਚਾਨਣਾ ਉਸਦੀ ਸੱਸ ਦੇ ਬੋਲਾਂ ਤੋਂ ਹੁੰਦਾ ਹੈ,

"ਲੈ ਜੰਮ ਧਰਿਆ ਕੂੜਾ, ਮੈਨੂੰ ਤਾਂ ਪਹਿਲਾਂ ਹੀ ਪਤਾ ਸੀ। ਬੂਥੀ ਹੀ ਦਿਸਦੀ ਸੀ ਇਹਦੀ ਸੱਸ ਆਖ ਰਹੀ ਸੀ। ਲੈ ਪੈ ਗਈ ਹੁਣ ਤਾਂ ਬਾਈ ਦੇ ਗਲ ਵੀ ਕਬੀਲਦਾਰੀ, ਨਨਾਣ ਇਉਂ ਹਮਦਰਦੀ ਵਜੋਂ ਆਖ ਰਹੀ ਸੀ।"9

ਉਪਰੋਕਤ ਸਤਰਾਂ ਤੋਂ ਸੱਸ, ਨਨਾਣ ਅਤੇ ਪਤੀ ਦੇ ਵਿਚਾਰਾਂ ਦਾ ਪਤਾ ਲੱਗਦਾ ਹੈ ਕਿ ਸਾਡੇ ਸਮਾਜ ਵਿੱਚ ਕਿਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਔਰਤ ਹੀ ਔਰਤ ਦੀ ਦੁਸ਼ਮਣ ਬਣ ਬੈਠਦੀ ਹੈ।

ਪੇਂਡੂ ਸੱਭਿਆਚਾਰ ਦਾ ਇੱਕ ਗੁਣ ਪ੍ਰਾਹੁਣਾਚਾਰੀ ਵੀ ਹੈ। ਦੀਸ਼ ਜਦੋਂ ਪਤੀ ਨਾਲ ਨਰਾਜ ਹੋ ਕੇ ਘਰ ਛੱਡ ਕੇ ਜਾਂਦੀ ਹੈ ਤਾਂ ਉਸਦਾ ਦਿਉਰ ਮਨਜੀਤ ਉਸਦਾ ਪਤਾ ਲੈਣ ਉਸਦੇ ਪੇਕੇ ਪਿੰਡ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਤਾਂ ਸੁਰਿੰਦਰ ਵੱਲੋਂ ਕੀਤੀ ਸੇਵਾ ਦਾ ਜ਼ਿਕਰ ਉਹ ਇਸ ਤਰ੍ਹਾ ਕਰਦਾ ਹੈ,

"ਮੇਰੇ ਸਾਹਮਣੇ ਘਰ ਦੀ ਤਾਜੀ ਕੱਢੀ ਦੀ ਇੱਕ ਬੋਤਲ ਇੱਕ ਪਲੇਟ ਵਿਚ ਗੰਢਾ ਤੇ ਅੰਬ ਦਾ ਆਚਾਰ ਤੇ ਇੱਕ ਵੱਡੇ ਕੋਲ ਵਿਚ ਤੌੜੀ ਦੀ ਰਿਝੀ ਮਾਹਾਂ ਦੀ ਦਾਲ ਪਈ ਆਪਣੀ-ਆਪਣੀ ਮਹਿਕ ਖਲਾਰ ਰਹੀਆਂ ਸਨ।"10

ਪਿੰਡ ਦੀਆਂ ਕੁੜੀਆਂ ਮਨਜੀਤ ਨਾਲ ਮਖੌਲ ਕਰ ਰਹੀਆਂ ਸਨ। ਇਹੋ-ਜਿਹਾ ਖੁੱਲ੍ਹਾ-ਡੁੱਲਾ ਮਾਹੌਲ ਸਾਡੇ ਪੇਂਡੂ ਸੱਭਿਆਚਾਰ ਵਿਚ ਹੀ ਮਿਲਦਾ ਹੈ।

ਤਲਾਕ ਲੈ ਕੇ ਜਾਂ ਉਂਝ ਵੀ ਆਪਣੇ ਪਤੀ ਤੋਂ ਅਲੱਗ ਰਹਿਣ ਵਾਲੀ ਔਰਤ ਨੂੰ ਸਾਡੇ ਸਮਾਜ ਵਿੱਚ ਚੰਗਾ ਨਹੀਂ ਸਮਝਿਆ ਜਾਂਦਾ। ਦੀਸ਼ ਜਦੋਂ ਆਪਣੇ ਪਤੀ ਨਾਲੋਂ ਅਲੱਗ ਹੋ ਕੇ ਅੱਗੇ ਪੜ੍ਹਨ ਲਈ ਪਟਿਆਲੇ ਦਾਖਲਾ ਲੈ ਲੈਂਦੀ ਹੈ ਤਾਂ ਉਹ ਆਪਣੀ ਬਦਲੀ ਪਟਿਆਲੇ ਕਰਵਾਉਣਾ ਚਾਹੁੰਦੀ ਹੈ, ਪਰ ਉਸਦਾ ਪਤੀ ਇਸ ਕੰਮ ਵਿੱਚ ਦੀ ਕਈ ਅੜਚਨਾਂ ਖੜ੍ਹੀਆਂ ਕਰਦਾ ਹੈ। ਦਫਤਰ ਦੇ ਕਰਮਚਾਰੀ ਉਸ ਨਾਲ ਗਲਤ ਵਿਵਹਾਰ ਕਰਦੇ ਹਨ। ਉਹ ਪਟਿਆਲੇ ਤੋਂ ਦੂਰ ਨੌਕਰੀ ਕਰਦੀ ਹੋਈ ਲੋਕਾਂ ਦੀਆਂ ਘਟੀਆ ਗੱਲਾਂ ਵੀ ਸੁਣਦੀ ਹੈ। ਉਸਦਾ ਦੰਪਤੀ ਜੀਵਨ ਤੋਂ ਵਿਸ਼ਵਾਸ ਉਠ ਜਾਂਦਾ ਹੈ, ਪਰ ਉਹ ਭੁਪਿੰਦਰ ਸਿੰਘ ਨੂੰ ਤਲਾਕ ਦੇਣ ਤੋਂ ਮਨ੍ਹਾਂ ਕਰ ਦਿੰਦੀ ਹੈ। ਅਜਿਹੇ ਇਕੱਲੇਪਣ ਵਿੱਚ ਮਨਜੀਤ, ਦੀਸ਼ ਕੋਲ ਆ ਕੇ ਰਹਿੰਦਾ ਹੈ, ਕਿਉਂਕਿ ਸ਼ੁਰੂ ਤੋਂ ਹੀ ਮਨਜੀਤ ਦਾ ਵਤੀਰਾ ਦੀਸ਼ ਨਾਲ ਹਮਦਰਦੀ ਵਾਲਾ ਸੀ। ਇਹ ਹਮਦਰਦੀ ਪਿਆਰ ਵਿੱਚ ਬਦਲ ਜਾਂਦੀ ਹੈ ਅਤੇ ਉਹ ਪਤੀ-ਪਤਨੀ ਵਾਂਗ ਰਹਿੰਦੇ ਹੋਏ ਜਿੰਦਗੀ ਬਤੀਤ ਕਰਨ ਲੱਗਦੇ ਹਨ। ਦੀਸ਼ ਦਾ ਮਨਜੀਤ ਨਾਲ ਰਹਿਣਾ ਉਸਦੀ ਧੀ ਬੱਬੂ ਅਤੇ ਪੁੱਤਰ ਰਿੰਪੀ ਨੂੰ ਪਸੰਦ ਨਹੀਂ, ਇਹੀ ਕਾਰਣ ਹੈ ਕਿ ਰਿੰਪੀ ਆਪਣੀ ਮਾਂ ਨੂੰ ਗੁੱਸੇ ਕਰੀ ਚਿੱਠੀ ਲਿਖਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਬੱਬੂ ਵੀ ਦੀਸ਼ ਨੂੰ ਮਿਲਣ ਤੋਂ ਇਨਕਾਰ ਕਰ ਦਿੰਦੀ ਹੈ। ਆਖਿਰ ਇਹ ਅਪ੍ਰਵਾਨਿਤ ਰਿਸ਼ਤਾ ਤਿੜਕਦਾ ਹੋਇਆ ਅੰਤ ਟੁੱਟ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਸਾਡਾ ਸੱਭਿਆਚਾਰ ਕਦੇ ਦੀ ਔਰਤ ਨੂੰ ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੀ ਜਿੰਦਗੀ ਬਤੀਤ ਕਰਨ ਦੀ ਇਜ਼ਾਜਤ ਨਹੀਂ ਦਿੰਦਾ। ਦੀਸ਼ ਦਾ ਸ਼ਰਾਬ ਪੀਣਾ ਵੀ ਨੈਤਿਕ ਕਦਰਾਂ ਕੀਮਤਾਂ ਦੇ ਉਲਟ ਹੈ। ਮਨਜੀਤ ਦੇ ਛੱਡ ਜਾਣ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਦੀਸ਼ ਆਪਣੇ ਆਪ ਨੂੰ ਖੜ੍ਹਾ ਕਰਕੇ ਆਪਣੀ ਹੀ ਛਾਂ ਵਿਚ ਜਿਉਣਾ ਚਾਹੁੰਦੀ ਹੈ।

ਹਵਾਲੇ ਅਤੇ ਟਿੱਪਣੀਆਂ :

1. **ਬਲਜੀਤ ਕੌਰ ਬੱਲੀ, ਆਪਣੀ ਛਾਵੇਂ, ਪੰਨਾ 87-88**
2. **ਬਲਜੀਤ ਕੌਰ ਬੱਲੀ, ਆਪਣੀ ਛਾਵੇਂ, ਪੰਨਾ 87-88**
3. **ਉਹੀ,ਪੰਨਾ-94**
4. **ਉਹੀ,ਪੰਨਾ-93**
5. **ਉਹੀ,ਪੰਨਾ-90**
6. **ਉਹੀ,ਪੰਨਾ-90**
7. **ਉਹੀ,ਪੰਨਾ-95**
8. **ਉਹੀ,ਪੰਨਾ -96**
9. **ਉਹੀ,ਪੰਨਾ-87**
10. **ਉਹੀ,ਪੰਨਾ-58**

Gmail id - brarkirandeep82@gmail.com
ਮੋਬ:-78373-18187

www.bohalshodhmanjusha.com Bohal Shodh Manjusha ISSN: 2395-7115
Impact Factor: 8.642 June 2026 Page No. : 211-215
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

SOCIO - CULTURAL STUDY IN *ŚĀHENDRAVILĀSA* OF ŚRĪDHARA VEṄKAṬEŚA

Dr.S.Madhurambika
Assistant Professor,
Department of Sanskrit (S.S)
Ethiraj College For Women, Chennai

Śāhendravilāsa (ŚV) is a historical Mahākāvya in eight sargas (totally 645 *ślokas*) on the life of king Śāhaji-II written by Śrīdhara Veṅkateśa popularly known as Ayyāvāḻ, who belongs to 17th Cent.C.E. This kāvya is much oriented towards the Bhosala royal lineage. It does not fail in providing information on the socio-cultural aspects of the people of Śāhaji's time.

A glimpse of the general society and the cultural life of Tanjore in the 17th century are beautifully captured by the poet in the description of the city, festive occasions, the socio traditions like the *varṇāśramadharma*, family systems, education, rites and rituals, sports and amusements and the flora and fauna.

These aspects as seen through the pen of the author reflecting the 17th Cent. C.E society of Tanjore shall be brought to light in this article.

1. *VARṆĀŚRAMADHARMA*

Any ancient Hindu society followed the *varṇāśramadharma*- the four *varṇas* based on the diversity of deeds *viz. Brāhmaṇa*, *Kṣatriya, Vaiśya* and *Śūdra*. *ŚV* records the fact of (i) Brāhmaṇas being well versed in the Vedas (*ŚV*.VIII.83ab)[1] and (ii) the assets of the land *'maṇḍalamaṇḍanaṁ'*(II.6) being taken care of by the king- *'pṛthivī suralokaguptiḥ'*(I.46) *abhiguptabhūsurā* (II.99).

The other terms for the Brāhmaṇas used in the text are *dvija* (II.90, VIII.82) and *mahīsura* (I.9, II.91).

As the kāvya *ŚV* is about king Śāhaji II, there is much information on *Kṣatriyas*. Nothing much is said about the other two *varṇas*. There is a reference in chapter VII that the king of Setu

1. यत्राम्नायपुराणदर्शनमुखस्फारस्फुरद्भारती-
तत्वावेदनधोरणीसफलितच्छात्रा धरित्रीसुराः।

gifted a land occupied by the best of tradesmen. Agriculture was also conducted in proper ways that the country was rich in producing of land and forest.

2. FAMILY SYSTEM

Description of Marriage –

The marriage celebrations of Śāhaji II the hero of the kāvya has been described in detail in of canto II of *ŚV*. The whole city of Tanjore gears up to celebrate the prince's marriage (*ŚV*.II.55). Also the marriage rituals as well as the feast are well described by the poet. (II.58-61) As the bride and the groom clasped their hands the women-folk sang the auspicious Hara-Gauri marriage song (II.64):

अधिसन्निधि शाहभूविभो-स्सह वध्वोन्मिषतः शुभावहम्।
उदगीयत सुन्दरीजनै-र्हरगौरीपरिणीतिमङ्गळम्॥

Then the groom Śāhaji tied the marriage knot – *śubhasūtra-bandhana* with the blessing of all assembled there (II.66):

सुदृशश्शुभसूत्रबन्धनं कृतवान् शाहविभुस्तदा बुधाः।
समतन्वत सादरं तयोःपरमायुर्जननीश्शुभाशिषः॥

Kings of neighbouring countries and the vassals attended the marriage with special gifts – *upahāra* for the newly wed (II.54).

3. EDUCATION

The education of prince Śāhaji-II in its various aspects is also recorded in *ŚV*. The princes being trained in military and archery is elaborated in Canto II where prince Śāhaji-II is trained in the martial arts like *Khuralī*. His intense practice in weaponry and wrestling with his companions are portrayed well (II.28ab):

कलयन् खुरळीषु खेलनं सवयोभिस्सह भूपतेस्सुतः।

The poet mentions in a single verse (II.51) that the prince was well educated in all subjects and that he was a great scholar:

खुरळीविहृतौ धनुर्गतावपि विद्यान्तरशीलनेष्वपि।
प्रतिपत्तुमियतया जनो न किलासीदलमस्य पाण्डितीम्॥

At the same time as said earlier this text records the fact that the *brāhmaṇas* who were the teachers had a host of students well trained in various subjects like Vedas, Purāṇas, Darśanas and so on (VIII.83ab):

It is inferred from the above details and the then prevailing political conditions that military education was given much prominence to the princes.

4. RITES AND RITUALS

The three fires are alluded to in comparing the three sons of Śāhaji-I *viz*. Śambhāji, Śivāji, Ekoji to Garhāpatya, Āhavanīya and Dakṣināgni (*ŚV*.I.29):

एकोजिशंभाजिशिवाजिनामख्यातेन सूनुत्रितयेन येन ।
मालोजिभूमीपतिमौलिसूनुस्तेजस्त्रयेणेव रराज लोकः॥

Also as already mentioned above in family system, the ritual of *śubhasūtra-bandhana* and the groom marking the bride's forehead with the vermillion was followed during the marriage ceremony.

The rituals are observed when king Śāhaji proceeded for hunting expedition is mentioned in third canto of this kavya.

5. SPORTS AND AMUSEMENTS

Sports and amusements mentioned in *ŚV* are- *Khuralī, mṛgayā, śyenavinoda* and summer sports like water-sports and boating. Apart from these sports, common amusements were music, dance and firework displays. These are discussed here in order.

5.a. Khuralī

In the second canto of *Śāhendravilāsa*, Śrīdhara Ayyāvāḷ brings to light in five verses as to how prince Śāhaji was trained in the martial arts, especially in wrestling and the wielding of weapons.

Of the many sports, Khuralī is particularly mentioned as a sport in which prince Śāhaji II was trained and was an expert. Details about this sport are given earlier.

5.b. Hunting

Hunting as a sport was a privilege to the Royal class of the then society. Kauṭilya (3rd Cent.C.E) opines that hunting is an essential sport for a king as it has many benefits. (*Arthaśāstra* VIII. 3.46)

मृगायां तु व्यायाम श्लेष्मपित्तभेदस्वेदनाशश्चले स्थिरे च काये।
लक्ष्यपरिचय कोपभयस्थाने हितेषु च मृगायां चित्तज्ञानमनित्ययानं चेति॥

The poet Ayyāvāḷ had taken an opportunity to describe the hunting expedition of king Śāhaji II providing a pen portrayal of the preparations of king's march for the same in the third canto. The description of the hunt reveals the skill of the king in archery and the various people involved in aiding him.

In the actual hunt, the king stationed the army and entered into the deep forest trying to spot the wild animals like boar and tiger that were hidden in the forests (*ŚV*.III.42):

न्यवेश्यत क्वापिचमूः क्षितिक्षिता व्यगाह्यतान्तर्मृगयोचितैस्समम्।
अदृश्यतारण्यतले दुरासदा वराहशार्दूलततिस्ततस्ततः॥

The poet brings out the fact that king Śāhaji was also trained in the *Śabdhavedi* art of hunting animals. The poet says that the king would shoot the arrow in the direction of the sound and hit the target without fail even when they were far out of sight reminding all-around of great warriors like Arjuna who were experts in *Śabdavedi* skill of archery (*ŚV*.III. 63):

निशम्य शब्दं विसृजन् शिलीमुखान्मृगेष्वमोघं दृगनास्पदेष्वपि।
प्रभुस्समस्मारयदर्जुनादिमान् स शब्दवेधिप्रमुखेषु पण्डितः॥

5.c. Śyena-vinoda – Catching the falcons

The author then describes in detail the skill of the king in capturing the birds employing a trained falcon. As he saw the birds flying high at a distance he let free the falcon perched on his fist (*ŚV*.III. 48):

स लक्षयन् दूरचरान् पतत्रिणःकुतूहली श्येनवरं नरेश्वरः।
उदक्षिपन्मुष्टिनिविष्टपक्षतिं यथोचितादेशविचक्षणो हि सः॥

It is clearly understood that various techniques employed to trap the animals by the hunters seem to be in keeping with those mentioned in the *Śyainikaśāstra* (III.15-16)[2].

Thus Śrīdhara Veṅkaṭeśa Ayyāvāḷ shows in this kavya that hunting was not only a sport, an exercise to the king, training in shooting targets but also an important aspect in establishing healthy relationship with citizens, artists, army officials and tribes of the country side and the forest as mentioned in *Sāmrājyalakṣmīpīṭikā* (130.4-5)[3].

***5.d. Salila- kṛīḍā* – Water Sport**

The poet describes king Śāha enjoying the *salila krīḍā* with his queens in seventh canto.

The pond with the fully blown lotuses and gentle ripples seemed to welcome the king (VII.36) with lotuses offered as the *Pūrṇakalaśa* (VII.37):

सा विलाससरसीमहीपतावागते विकसिताम्बुजानना।
हृतिमावहदिवोर्मिकाभुजैरेहि चारु विहरेति कौतुकात्॥

5.e. Nau-vihāra – Boating

In the same, seventh canto, the poet provides a pen pictures in about nine verses on the indulgence of king Śāhaji II in a boat ride. The king enjoyed the *'nauvihāra'* with his retinue of damsels all his desires being fulfilled (VII.59):

नौविहारमिति मेदिनीपतिस्संविधाय कुसुमायुधोपमः।
आस्त संप्रमुदिताशयो भृशं सुन्दरीभिरधिकेलिमन्दिरम्॥

5.f. Other amusements

The poet while describing the darkness mentions the play hide and seek as *upamā* to the sun (IV.14).

6. *VISPHULIṄGA* – FIRE-WORKS

In the second canto of *ŚV,* the poet describes that the display of fireworks formed a part of Śāhaji-II's marriage procession. The fire wheels set to rotate in front of king Śāhaji is fancied to be sparkling and rotating fast in anger having seen its equivalent splendour in the king (*ŚV*.II.79):

कृतचक्रपरिभ्रमोऽनलप्रचयो यन्त्रभवः प्रभोर्धुरि। स्वसमत्वरुषा तदोजसा विनिगृह्येव विघूर्णितोऽस्फुरत्॥

In the fourth canto, when king Śāhaji returns with his army after the hunt to the city of Tanjore, he is welcomed with all grandeur by the display of fireworks.

---

2. आश्वीनान्या सजालान्या काल्यान्या यावशी परा। सापेक्षान्या पदप्रेक्षा तथा श्वगणिका परा॥
श्येनपाताष्टमी चैताःक्रमेण परिकीर्तिताः। स्वलक्षणमथैषां हि तथा कर्तव्यतोच्यते॥

3. तथा धर्म्मार्ज्जनमपि वृकव्याघ्रादि हिंसनात्। वधेन हरिणादीनां शस्यादीनाञ्च रक्षणात्॥
नैककर्मोपयोग्यानाम् अटवीनां निरीक्षणात्। वित्रासनाच्च चौरणां तथाटविकरञ्जनात्॥
सार्वभौमो नरपतिर्मण्डलस्येश्वरोऽपि वा। पुरो जनपदे चैव मृगबाधानिवृत्तये॥

From the above description one can infer that the firework industry was well developed during the 17-18th Cent. C.E. These being played in marriage procession or to receive the king from a hunt also reveals that the fireworks were popular and frequently used.

7. FLORA AND FAUNA

Tamāla, Takkola, Rasāla, Sāla, Jāla, Kadala and *Terā,* and series of *Kera* trees are mentioned in various contexts in the *Śāhendravilāsa*. Flowers like *Campaka*, *Indīvara*, *Ketaki* and *Kuṭaja* are also mentioned. *Tamāla*, *takkola* and *rasāla* trees were in full blossom oozing out their nectar and housing the various birds.

While describing the king's hunt, the poet mentions various animals hunted down by the king. In the same context, the trained falcons used to lure the bigger birds are also described. Other fauna are also described in various contexts.

Conclusion

To conclude this article, this kāvya has brought forth the glory of the period in the celebrations with fire-works, the socio traditions like the *varṇāśramadharma*, education, rites and rituals, sports and amusements and the flora and fauna. The socio-cultural richness about the city of Tanjore in 17th C.E as depicted in the *Śāhendravilāsa* alone have been dealt in this article.

From the study of the kāvya *Śāhendravilāsa* (*ŚV)* it is to be observed that the poet has made a master stroke in all his descriptions. The historical events are well recorded by the poet thus making a valuable contribution to this genre of literature – Historical Mahākāvya.

Bibliography :-

1. *Śāhendravilāsa* of Śrīdhara Veṅkaṭeśa (Ayyāvāḷ), ed. with Historical Introduction and notes by Dr. V.Raghavan , Thanjavur Mahārāja Serfoji's Sarasvati Mahal Library and Research Centre (TMSSML), Thanjavur, 2016.
2. *Sāmrājyalakṣmipīṭikā*, ed. by Sri.K.Vasudeva Sastri and K.S.Subramanya Sastri, Tanjore Saraswathi Series No.58, pub. by Prof.M.Sadasivam, Tanjore, 1990.
3. *Śyainika Śāśtra* by Rājā Rudradeva of Kumaon ed. with English tr. by Haraprasād Shāstri, Eastern Book Linkers, Delhi, 1982.
4. *Kauṭīliya Arthaśāstra*, (Vols. 1-3), R.P. Kangle, Motilal Banarasidass, Delhi, 1986. tr. into English by R.Shamasastri, Motilal Banarsidass, Delhi.

www.bohalshodhmanjusha.com Bohal Shodh Manjusha ISSN: 2395-7115
Impact Factor: 8.642 June 2026 Page No. : 216-221
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

प्रेमचंद के साहित्य में किसान जीवन

डा. विजय कुमार धत्तरवाल
सह आचार्य हिंदी विभाग,
श्री जे. जे. टी. विश्वविद्यालय, झुंझुनू

शोध सार - भारत सदैव से कृषि प्रधान देश रहा है। यहां की अधिकतर आबादी गांवों में निवास करती है और इन ग्राम- वासियों का प्रधान कार्य कृषि है। कृषि के साथ ही पशुपालन भी गहरा जुड़ा हुआ है। प्राचीन काल से ही कृषि और पशुपालन ग्रामीण अर्थव्यवस्था का प्रमुख आधार रहा है। इसीलिए भारतीय अर्थव्यवस्था को कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था कहा जाता है। देश की लगभग दो-तिहाई आबादी इस कार्य में लगी हुई है,जिसे हम किसान कहते हैं। भारत की आत्मा में बसने वाले इन किसानों का जीवन हमेशा से साहित्यकारों, कलाकारों और बुद्धिजीवियों के अध्ययन, विवेचन, विश्लेषण और शोध का विषय रहा है।

प्रस्तुत शोध में प्रेमचंद द्वारा रचित कहानियों एवं उपन्यासों में चित्रित कृषक जीवन का विस्तृत अध्ययन और विश्लेषण किया गया हैI आलोच्य लेखक ने अपनी कहानियों एवं उपन्यासों का मूल कथ्य कृषक जीवन के इर्द-गिर्द ही बुना है। कृषक जीवन के तमाम रूढ़ियों,उनके रुचि संस्कार,उनके अंधविश्वास और उनकी कर्मठता को व्यापक रूप से चित्रित और विश्लेषित किया गया है। प्रेमचंद के समग्र साहित्य में किसान का सूदखोरों के कभी न निकलने वाले जाल में फंसने, जन्म मृत्यु और विवाह के संस्कारों के चलते कर्ज के दुष्चक्र में ओर अधिक उलझते जाने, फिर लगान और नजराने की दोहरी मार पडने पर अपने संकट के दिनों के लिए रखे गए गहनों, आजीविका के आधार, प्राणों से प्रिय पशुओं और अंततः अपनी इज्जत से प्यारी भूमि को गिरवी रखने व बेचने पर मजबूर होने और अंततः किसान से मजदूर बनकर भी ऋण जाल के दुष्चक्र से निकलने के प्रयास में दुखद रूप से इस लोक से विदा होने की विडम्बना का चित्रण किया गया हैI उसकी सभी साध,इच्छाएं,महत्वाकांक्षाएं अधूरी रह जाती है। इसी किसान जीवन की त्रासदी को प्रेमचंद ने अपने साहित्य में प्रमुखता से चित्रित और विश्लेषित किया है। आलोच्य लेखक के समग्र साहित्य का विवेचन विश्लेषण करने पर सार रूप से कह सकते हैं कि किसान कर्ज में पैदा होता है, कर्ज में ही पलता है और कर्ज में ही इस लोक से विदा हो जाता है। इस प्रकार प्रस्तुत आलेख में कृषक जीवन से जुड़ी पशुपालन और खेती की सभी गतिविधियां प्राकृतिक वातावरण और किसान जीवन के संस्कार और परंपराएं और उनके विश्वास उनकी तमाम पीड़ाएं

उनकी तमाम लाचारी बेबसी और पशुओं के प्रति अगाध प्रेम को समग्र साहित्य में वर्णित और विश्लेषित किया गया है।

बीज शब्द- लगान, नजराना, किसान, साहूकार, सूद, बैल, हल, फसल, खेती, खलिहान बीघे, कुडकी, मरजाद, हिसाब, पटवारी, कारिंदा, भूसा, कचहरी, जेठ, बैसाख।

प्रेमचंद के कर्मक्षेत्र का विस्तार अवध प्रांत के बनारस जनपद के आसपास के ग्रामीण और शहरी जीवन के इर्द-गिर्द फैला हुआ था। प्रेमचंद का साहित्यिक जीवन 1901 में शुरू हुआ जब उन्होंने नवाब राय के नाम से उर्दू में लिखना शुरू किया बाद में उन्होंने हिंदी में लिखना शुरू किया और प्रेमचंद नाम अपनाया उन्होंने कई प्रसिद्ध उपन्यास और कहानी लिखी जिनमें गोदान,गबन, सेवा सदन, कर्मभूमि, रंगभूमि, प्रेमाश्रम, पूस की रात, कफन और पंच परमेश्वर शामिल है। प्रेमचंद ने हंस और जागरण पत्रिका का संपादन करते हुए गांधी जी के असहयोग आंदोलन में भी सक्रिय रूप से भाग लिया ।इस प्रकार उनके जीवन में कृषक जीवन और उससे जुड़ी समस्याओं का गहरा अनुभव और उनकी पीड़ा की गहरी अनुभूति भी थी। अंग्रेजी शासन में राजे-रजवाडे और जमींदार किसानों के श्रम पर पलते थे ,उस समय किसानों का भूमि पर मालिकाना हक नहीं होता था,इसलिए जमींदारों द्वारा किसानो पर भारी लगान व नजराने का बोझ लादा जाता था, ऊपर से साहूकार के कर्ज और सूद का बोझ। लगान व नजराने के बाद जो कुछ बचता था, किसान को उसी से संतुष्ट होना पड़ता था। प्रेमाश्रम उपन्यास का नायक दुखरन इसी चिंता को बयां करते हुए कहता है-" क्या जाने क्या हो गया कि अब खेती में बरकत ही नहीं रही ।पांच बीघे रबी बोई थी, लेकिन दस मन की भी आशा नहीं है और गुड़ का तो तुम जानते ही हो जो हाल हुआ है। कोन्हाडे में ही बीसेसर साह ने तोला लिया। बाल बच्चों के लिए शीरा तक ना बचा। देखें भगवान कैसे पार लगाते हैं।"1

साहूकार के ऋण जाल में फंसा किसान ताउम्र भी उससे बाहर नहीं निकल पाता है, उसकी अगली पीढ़ी भी उस भार को ढोती रहती है। एक बार शंकर ने साहूकार विप्र से सवा सेर गेंहू उधार लिया था,अगली ही फसल पर उसे वापस दे भी दिया था, फिर भी विप्र जी के ऋण से उऋण नहीं हो पाया। शंकर के माध्यम से प्रेमचंद ने भारत के आम किसान की दुर्दशा का चित्रण "सवा सेर गेंहू" में इस प्रकार किया है, "पांच बीघे के आधे रह गए, एक बैल रह गया, खेती क्या खाक होती। अंत को यहां तक नौबत पहुंची की खेती केवल मर्यादा रक्षा का साधन मात्र रह गयी, जीविका का भार मजूरी पर आ पड़ा। सात वर्ष बीत गए, एक दिन शंकर मजूरी करके लौटा,तो राह में विप्र जी ने टोककर कहा,शंकर कल आकर के अपने बीज-बेंग का हिसाब कर ले। तेरे यहां साढे पांच मन गेहूं कब के बाकी पड़े हुए हैं और तू देने का नाम नहीं लेता, हजम करने का मन है क्या?"2

किसान का प्रकृति के साहचर्य में रहते हुए प्रकृति के साथ अनुकूलन हो जाता है। वह जेठ-वैसाख की गर्मी व पूस की रात की ठंड के सहज ही अनुकूल हो जाता है और प्रकृति के अनुसार ही हृदय से उदार भी होता है। जब कोई उसके द्वार आता है,तो उसे खुले मन से दान देता है। 'सुजान भगत' कहानी का नायक सुजान भगत भी सीधा-सादा किसान है,जो धर्म कीर्ति की ओर झुका हुआ है उसके घर पर जब कोई मांगने आता है, तो उसको वह खुले हाथ दान दक्षिणा करता है। एक बार उसके पुत्र भोला ने उसे भीख देने पर टोक दिया,तो वह सोचता है कि भोला को पत्नी बुलाकी द्वारा तो टोकना चाहिए था- "लड़कों को ना मालूम हो कि मैंने कितने श्रम से यह गृहस्थी जोड़ी है, पर यह तो जानती है। दिन को दिन और रात को रात नहीं समझा। भादो की अंधेरी रात में मडैया लगा के जुवार की रखवाली करता था। जेठ-वैशाख की दोपहरी में भी दम ना लेता था, और अब मेरा घर पर इतना भी अधिकार नहीं है कि भीख तक न दे सकूं।"3

किसान अपनी खेती को आवारा पशुओं से बचाने के लिए दिन-रात रखवाली करता है, चाहे तेज गर्मी हो, बहुत सर्दी हो, वह रात को खेत में रखवाली करते हुए अर्द्ध निद्रा में रहता है, जिससे उसमें आलस का भाव भी आ जाना स्वाभाविक है। 'पूस की रात' कहानी में हल्कू जब पौष माह की गहरी सर्दी में खेत में रखवाली करते हुए बिना गर्म कपड़ो के चारपाई पर लेट जाता है, तब उस दशा का वर्णन कहानी में यों हुआ है-" फिर खेत के चरे जाने की आहट मिली। अब वह अपने को धोखा ना दे सका। उसे अपनी जगह से हिलना जहर लग रहा था।
कैसा दंदाया हुआ था। इस जाडे- पाले में खेत में जाना, जानवरों के पीछे दौड़ना असह्य जान पड़ा। वह अपनी जगह से न हिला।"4

ऐसा नहीं है कि किसान पशुओं से घृणा करता है, वह उनसे बहुत गहरा भावात्मक लगाव भी रखता है। वह तो आवारा पशुओं से अपनी खेती को बचाने के लिए उन्हें भगाता है, नहीं तो पालतू पशु तो उसकी जीविका के आधार दोनों हाथों के समान है। 'दो बैलों की कथा' कहानी में प्रेमचंद ने दो बैलों- हीरा और मोती को कहानी का चरित्र नायक बनाकर मनुष्य और पशु को भावात्मक स्तर पर एक कर दिया है। जब झूरी काछी के द्वारा मजबूरी में हीरा और मोती को अपने साले गया के हाथ बेचा जाता है, और अगले ही दिन सुबह जब वे वहां से भाग कर झूरी के घर लौट आते हैं, तो झूरी उनको भगाता नहीं है बल्कि प्रेम से सहलाता है-"झूरी बैलों को देखकर स्नेह से गदगद् हो गया। दौड़कर उन्हें गले लगा लिया। प्रेमालिंगन और चुंबन का यह दृश्य बड़ा ही मनोहर था।"5

पशु किसान जीवन का आधार है। आजादी से पहले भारत में ऊंट-बैल से ही खेती व माल ढुलाई होती थी।'बलिदान' कहानी में जब किसान गिरधारी के द्वारा बेदखली से बचने हेतु मजबूरन अपने बैल मंगल सिंह को बेचता है, तो उसकी दशा का चित्रण बड़ा ही भावुक है-" ये मेरे खेतों के कमाने वाले, मेरे जीवन के आधार, मेरे अन्नदाता, मेरी मान मर्यादा की रक्षा करने वाले, जिनके लिए पहर रात से उठकर छांटी काटता था, जिनके खली -दाने की चिंता अपने खाने से ज्यादा रहती थी, जिनके लिए सारा दिन भर हरियाली उखाड़ा करता था, ये मेरी आशा की दो आंखें, मेरे इरादे के दो तारे, मेरे अच्छे दिनों के दो चिह्न, मेरे दो हाथ, अब मुझसे विदा हो रहे हैं।"6

किसान जिस प्रकार अपने गाय-बैल भावात्मक लगाव से नामकरण करता है, उसी प्रकार वह अपने खेतों के भी नामकरण करता है, और यह परंपरा आज भी पायी जाती है। 'बलिदान'कहानी में भी किसान गिरधारी का खेतों से भावात्मक लगाव यों परिलक्षित होता है,
"यह खेत गिरधारी के जीवन का अंश हो गए थे। उनके एक-एक अंगुल भूमि उसके रक्त में रंगी हुई थी। उसके एक-एक परमाणु उसके पसीने से तर हो रहा था। उनके नाम उसकी जिह्वा पर उसी तरह आते थे,जिस तरह तीनों बच्चों के। कोई चौबीसौ था, कोई बाइसो था, कोई नाल बेला, कोई तलैयावाला।"7

किसान व खेती की हालत अनाथ बालक के समान है। पहले तो उसपर जमींदार के लगान व नजराने की नजर रहती है, दूसरी साहूकार के सूद व मूल की नजर चढ जाती है, तीसरी आवारा पशुओं और चौथे प्राकृतिक प्रकोपों की नजर रहती है। इन सबसे बचकर कहीं भाग्य से कुछ अनाज कभी-कभी उसके हाथ आता है। इन्हीं प्राकृतिक प्रकोपों का वर्णन आलोच्य लेखक ने अपनी कहानी 'मुक्तिधन' के माध्यम से किया है," खेती की हालत अनाथ बालक की-सी है। जल और वायु अनुकूल हुए तो अनाज के ढेर लग गए। इनकी कृपा नहीं हुई, तो लहलहाते हुए खेत कपटी मित्र की भांति दगा दे गए। ओला और पाला, सुखा और बाढ़, टिड्डी और लाही, दीमक और आंधी से प्राण बचे ,तो फसल खलिहान में आई? और खलिहान से आग और बिजली दोनों ही का बैर है। इतने दुश्मनों से बची तो फसल, नहीं तो फैसला!"8

किसान स्वाभाविक रूप से ही आशावादी व कल्पनाशील होता है। वह वित्तीय प्रबंधन मे दक्ष नहीं होता है। वह खड़ी फसल को देखकर भावी योजनाओं की परिकल्पना कर लेता है। ऐसी ही आशावादी परिल्पना का चित्रण कहानी 'मुक्तिमार्ग' का नायक झींगुर करता है-

"झींगुर अपने ऊख के खेतों को देखता, तो उस पर नशा- सा छा जाता। तीन बीघे ऊख थी। इसके 600 रुपये तो अनायास ही मिल जाएंगें। और जो भगवान ने डांडी तेज कर दी, तो फिर क्या पूछना? दोनों बैल बुड्ढे हो गए। अबकी नई गोयी बटेसर के मेले से ले आएगा। कहीं दो बीघे खेत और मिल गए तो लिखा लेगा। रूपयों की क्या चिंता है। बनिए अभी से उसकी खुशामद करने लगे थे।"9

किसान आजीवन कर्ज में जीता है। साहूकार के कड़े सूद को उतारने के लिए कभी प्राणों से प्रिय अपने गाय-बैल बेचता है,तो कभी मरजाद के प्रतीक गहनों को और गहने भी जब बेटी के हों तो, उसकी लाचारी व विवशता बड़ी ही मार्मिक बन जाती है। ऐसा ही एक प्रसंग 'बेटी का धन' कहानी में आता है, जब सुक्खू चौधरी पर ठाकुर जीतन सिंह द्वारा बकाया लगान की नालिश कर दी गई, तो बेटी गंगाजली अपने गहने झगडू साहू के पास गिरवी रख कर नालिश से बचने का उपाय बताती है, तो पहले चौधरी बेटी के गहने गिरवी रखना मान-मर्यादा के विपरीत मानते हुए मना कर देता है, किंतु बेटी के द्वारा ऐसा न करने पर बेतवा नदी में डूबने की शपथ लेने पर, वह झगडू साहू को बेटी के गहने गिरवी रखने को तैयार हो जाता है, उसका मार्मिक चित्रण कहानी में यों हुआ है-" रात का समय था। बेतवा नदी के किनारे -किनारे मार्ग को छोड़कर सुक्खू चौधरी गहने की गठरी कांख में दबाए इस तरह चुपके-चुपके चल रहे थे मानो पाप की गठरी लिए जाते हैं। जब वह झगड़ु साहू के मकान के पास पहुंचे तो ठहर गए,आंखें खूब साफ की, जिससे किसी को यह बोध ना हो कि चौधरी रोता था।"10

लगान, सूद और नजराना देने के बाद भी किसान पर अकस्मात ही आने वाली प्राकृतिक आपदाओं का आघात,उन्हें खेती से विमुख कर रहा था। वे किसानी छोड़ मजदूर बन रहे थे। 'खून सफेद' कहानी में अकालग्रस्त किसानों की इसी दुर्दशा का वर्णन दृष्टव्य है-

"किसानों ने बहुतेरे जप-तप तक किए,ईंट और पत्थर देवी देवताओं के नाम से पूजाए, बलिदान किए, पानी की अभिलाषा में रक्त के पनाले बह गए, लेकिन इंद्रदेव किसी तरह न पसीजे।

न खेतों में पौधे थे, न गोचरों में घास, न तालाबों में पानी। बड़ी मुसीबत का सामना था। जिधर देखिए,धूल उड़ रही थी। दरिद्रता और क्षुधा पीड़ा के दारुण दृश्य दिखाई देते थे। लोगों ने पहले तो गहने और बरतन गिरवी रखे और अंत में बेच डाले। फिर जानवरों की बारी आई और अब जीविका का अन्य कोई सहारा ना रहा, तब जन्म भूमि पर जान देने वाले किसान बाल बच्चों को लेकर मजदूरी करने निकल पड़े।"11

'पूस की रात' कहानी में भी हल्कू की स्त्री मुन्नी कर्ज से मुक्ति न मिलने पर हल्कू से खेती छोड़ने का आग्रह करती है-"मैं कहती हूं,तुम क्यों नहीं खेती छोड़ देते? मर -मर कर काम करो, उपज हो तो बाकी दे दो, चलो छुट्टी हुई। बाकी चुकाने के लिए ही तो हमारा जनम हुआ है। पेट के लिए मजूरी करो। ऐसी खेती से बाज आए।"12

'सेवासदन' उपन्यास में भी लाग-बाग न देने पर चैतू अहीर को ठाकुरद्वारे पर बांधकर,इतना पीटा जाता है कि उसके प्राण निकल जाते हैं-"एक दिन कई महात्मा चैतू को पकड़ लाये। ठाकुरद्वारे के सामने उस पर मार पड़ने लगी। चैतू भी बिगड़ा। हाथ तो बंधे हुए थे, मुंह से लात घूंसों का जवाब देता रहा और जब तक जबान बंद ना हो गई,चुप न हुआ। इतना कष्ट देकर ठाकुर जी को संतोष न हुआ, उसी रात उसके प्राण ही हर लिए।"13

भारतीय जनमानस में 'उत्तम खेती, मध्यम व्यापार, अधम चाकरी' की कहावत प्राचीन काल से चलती आ रही है। लेकिन आधुनिक पीढी का प्रतिनिधित्व करने वाला गोबर, जब अपने पिता होरी को खेती छोड़,मजदूरी करने का आग्रह करता है, तो होरी उसे खेती की मान-मर्यादा को बताते हुए कहता है, "जो दस रुपये महीने का नौकर है, वह भी हमसे अच्छा खाता- पहनता है, लेकिन खेतों को छोड़ा तो नहीं जाता। खेती छोड़ दें ,तो और करें क्या ?नौकरी कहीं मिलती है? फिर मरजाद भी तो पालना ही पड़ता है। खेती में जो मरजाद है, वह नौकरी में तो नहीं है।"14

'गोदान' उपन्यास कृषक जीवन की महागाथा है। इसमे प्रेमचंद ने किसान जीवन के सभी पक्षों को महाकाव्यत्मक रुप में वर्णित किया है। उपन्यास का नायक 'होरी' समस्त किसान वर्ग का प्रतिनिधि चरित्र बन गया। किसान जीवन के यथार्थ दर्शन कराने वाला एक प्रसंग यहां दृष्टव्य है-"हारे हुए महीप की भांति उसने अपने को इन तीन बीघे के किले में बंद कर लिया था और उसे प्राणों की तरह बचा रहा था। फाके सहे, बदनाम हुआ, मजूरी की, पर किले को हाथ से न जाने दिया, मगर अब वह किला भी हाथ से निकला जाता था। तीन साल से लगान बाकी पड़ा हुआ था और अब पंडित नोखेराम ने उस पर बेदखली का दावा कर दिया था।"15

धनीया जब होरी से कहती हैं कि हम जमींदार के खेत जोतते हैं तो जमीदार को लगान देते हैं, फिर हम उनकी खुशामद क्यों करें। तब होरी ने किसान की बेबसी ,विवशता के चलते अपनी व्यवहार कुशलता को दर्शाते हुए कहा कि, "यह इसी मिलते-जुलते रहने का परसाद है कि अब तक जान बची हुई है, नहीं कहीं पता नहीं लगता कि किधर गए। गांव में इतने आदमी तो है, किस पर बेदखली नहीं आयी, किस पर कुडकी नहीं आयी। जब दूसरे के पाँव तले गर्दन दबी हुई हो, तो उन पांवों को सहलाने में ही कुशल है।"16

प्रेमचंद पहले कथाकार हैं, जिन्होंने कृषक जीवन का समग्रता से चित्रण किया है। कपिल देव सिंह तो उन्हें भारत में कृषक जीवन का सच्चा शिल्पी मानते हुए कहते हैं- "वास्तव में भारत में कृषक जीवन का अपना और सच्चा शिल्पी कोई है, तो वे प्रेमचंद ही हैं। क्या बांग्ला, क्या मराठी, क्या गुजराती किसी भी भारतीय में प्रेमचंद के जोड़ का उपन्यासकार पाना असंभव है। गोदान तो कृषक जीवन की नूतन गीता है"17

निष्कर्ष- प्रेमचंद ने अपनी कहानियों और उपन्यासों के माध्यम से समकालीन ग्रामीण संस्कृति को जीवंत कर दिया। ग्रामीण संस्कृति का मूलाधार कृषि होती है। कृषि से जुड़ी सभी गतिविधियों, आचार-विचार, परंपरा-विश्वास, रीति-रिवाज, कर्मकांड और व्यवहार तथा उससे जुड़े अन्य व्यवसायों का सजीव वर्णन-चित्रण, उनके साहित्य में यथार्थ रूप में चित्रित हुए हैं। जमींदारी के शोषक रुप का जितना वास्तविक वर्णन प्रेमचंद ने किया है,वैसा अन्यत्र दुर्लभ है। किसान के शोषण के सभी रूप- लाग-बाग, ऊंचा लगान, नजराना, नालिश, बेदखली, कोर्ट-कचहरी की रिश्वतखोरी और साहूकार द्वारा मनमानी दर पर दिये जाने वाले सूद के दुष्चक्र में फंसे किसान का मार्मिक चित्रण प्रस्तुत शोध आलेख में किया गया है। खेती और पशुपालन एक- दूसरे के पूरक हैं। आलोच्य लेखक के समग्र साहित्य में किसान जीवन व कृषि के आधार गाय-बैल को को मानवीय भाव भूमि पर चित्रित किया है। गाय, उसके जीवन की साध है,तो बैल कृषि के आधार स्तंभ हैं और प्रकृति उसकी सहज सहचरी है। प्रकृति के अनुकूलन-प्रतिकूलन के साथ रहते हुए किसान के अनवरत संघर्ष की गाथा आलोच्य लेखक के साहित्य की विशिष्टता है। 'गोदान'उपन्यास के माध्यम से प्रेमचंद ने किसान जीवन व उससे जुड़े समस्त पहलुओं को जीवंत रूप में विश्व के पाठकों के सामने खोलकर रख दिया है। उत्तर भारत की संस्कृति को प्रेमचंद के साहित्य के माध्यम से आसानी से समझा जा सकता है। किसान जीवन और ग्रामीण संस्कृति की जितनी गहरी व मार्मिक अभिव्यक्ति प्रेमचंद के साहित्य में है, वैसी विश्व साहित्य मे दुर्लभ है।

संदर्भ –

1. प्रेमचंद: *प्रेमाश्रम सरस्वती प्रेस,* इलाहाबाद, 1973, पृ.11
2. प्रेमचंद: *सवा सेर गेंहू*, सरस्वती प्रेस बनारस, 1945, पृ.194
3. प्रेमचंद: *सुजान भगत*, मानसरोवर भाग-5, सरस्वती प्रेस, बनारस, 1945, पृ.182
4. प्रेमचंद: *पूस की रात*, प्रतिनिधि कहानियां, भीष्म साहनी, राजकमल प्रकाशन दिल्ली, 1990, पृ.44
5. प्रेमचंद: *दो बैलों की कथा,* मानसरोवर भाग-2, यूनिकोड, संजय खत्री, 2012, पृ.174
6. प्रेमचंद: *बलिदान,* मानसरोवर भाग-8, यूनिकोड, संजय खत्री, 2012, पृ.80
7. वही, पृ.76
8. प्रेमचंद: *मुक्तिधन*, मानसरोवर भाग-3, सरस्वती प्रेस, बनारस, 1947, पृ.173
9. प्रेमचंद: *मुक्तिमार्ग,* मानसरोवर भाग-3, सरस्वती प्रेस, बनारस, 1947, पृ.230
10. प्रेमचंद: *बेटी का धन,* मानसरोवर भाग-8, 2012, पृ.38
11. प्रेमचंद: *खून सफेद*, मानसरोवर भाग-8, 2012, पृ.5
12. प्रेमचंद: *पूस की रात*, भीष्म साहनी, प्रतिनिध कहानियां राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2018, पृ.42
13. प्रेमचंद: *सेवासदन,* वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2002, पृ.8
14. प्रेमचंद: *गोदान,* वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2000, पृ.19
15. वही पृ.357
16. वही पृ.5
17. कपिलदेव सिंह: *गोदान गवेषणा*, 2012, पृ.191

ई-मेल: vijaykumardhattarwal72@gmail.com
मोबाइल नंबर: 9460037237

www.bohalshodhmanjusha.com Bohal Shodh Manjusha ISSN: 2395-7115
Impact Factor: 8.642 June 2026 Page No. : 222-227
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

सरकारी योजनाओं की किसान तक पहुँच और हिंदी कृषि पत्रकारिता

श्रेया उत्तम
शोधार्थी,
हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय।

मानव जीवन के विकास क्रम में आग की खोज के बाद जो सबसे बड़ी क्रांति हुई वह है- 'कृषि की ख़ोज'. जिसने लोगों के खानाबदोशी और यायावरी से भरे हुए जीवन को बदल दिया और उसे घरेलू बना दिया. भारत में कृषि केवल एक पेशा या आजीविका का साधन मात्र नहीं है बल्कि यह इस देश की आत्मा है, यह संस्कृति है और जीवन जीने का एक महापर्व है. सिन्धु घाटी सभ्यता के पहले बीज से लेकर आज की आधुनिक तकनीकों तक, भारत की कहानी इस देश के किसानों के पसीने से सींची गयी है. ऋग्वेद के मन्त्रों से लेकर कबीर के दोहों तक, गाँवों की चौपालों से लेकर संसद के गलियारों तक, कृषि हमारे समाज का केंद्र बिंदु रही है. भारत जैसे विशाल जनसँख्या वाले देश में, कृषि संबंधित विषय पर बात करने के लिए उपयोग किया जाने वाला सबसे पहला वाक्य होता है- "भारत एक कृषि प्रधान देश है". भारत को 'कृषि प्रधान' कहना सिर्फ़ एक तथ्य नहीं है, यह तो एक असीम कृतज्ञता का भाव है जो हम अन्नदाता के प्रति रखते हैं. जब सुबह की पहली किरण के साथ किसान अपने हल, फावड़े लेकर खेत में उतरता है तो वह केवल बीज नहीं बोता है बल्कि 140 करोड़ सपनों और उम्मीदों को अंकुरित करता है.

भारत का हर त्योहार पोंगल, बैसाखी, बीहू, मकर संक्राति, प्रकृति की इसी देन और फ़सल के उत्सव का ही दूसरा नाम है. इतनी खूबसूरती, हरियाली और विविधताओं से भरी हुई सुजलाम सुफलाम की इस धरती में, जब किसान और खेती-बाड़ी से जुड़े किसी भी विषय के बारे में बात की जाती है तो हमारे मन में किसान की पहली छवि क्या बनती है?

किसान विषय की चर्चा होते ही- क्या हमारे मन में 'गोदान' के निरीह, लाचार, मजबूर 'होरी' की छवि उभरती है? या फिर कड़कड़ाती ठण्ड में ठिठुरते हुए 'पूस की रात' के 'हल्कू' की याद आती है?

क्या किसान की बात होते ही साहित्य प्रेमियों के दिमाग में 'नागार्जुन' की कविता कानों में गूंजती है-

"बहुत दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की रही उदास.
बहुत दिनों तक कानी कुतिया सोयी उसके पास."

क्या किसान कहते ही कर्ज के बोझ से दबा, फांसी के फंदे से लटकता हुआ 'संजीव' के उपन्यास 'फांस' का पात्र 'शिबू' याद आता है? या फिर अपने सूखे खेत में बारिश की आस में बैठा हुआ, आसमान की ओर बड़ी हसरत से तकता हुआ किसी मैगज़ीन के मुख्य पृष्ठ पर छपा हुआ जर्जर शरीर वाले किसी किसान का चित्र याद आता है?

किसान जोकि देश की रीढ़ है, आत्मा है, अन्नदाता है, तो इस अन्नदाता की छवि दरिद्रता, आत्महत्या और ऋणग्रस्तता में लिपटी हुई क्यों दिखाई देती है? उसका जीवन इतना शोषित और कष्टों से भरा हुआ क्यों दिखाई देता है?

साहित्य के नए पुराने सभी उदाहरणों को एक साथ रखकर देखा जाये तो पुराने और नए किसान में आजादी के 75 वर्षों के बाद भी कोई खास परिवर्तन नज़र नहीं आता है.

तेज़ी से बदलते हुए समय और समाज में अवधारणाएं बदलती हैं तो चिंतन के केंद्र, सत्ता के केंद्र, अर्थव्यवस्था के केंद्र भी बदलते हैं। इन बदलावों में मीडिया के आयामों में भी परिवर्तन दिखाई देता है लेकिन पिछले दो दशकों में किसान और किसानी पर लिखे गए साहित्य में कुछ गिने-चुने उपन्यासों और कहानियों को छोड़ दिया जाये तो कोई खास साहित्य-समृद्धि दिखाई नहीं देती. लेकिन हमारे सामने इससे अधिक चिंता का विषय कृषि पत्रकारिता को लेकर है.

हिंदी मीडिया की प्राथमिकता से गाँव गायब हो रहे हैं. मुख्यधारा मीडिया में राजनीति, क्राइम, खेल और मनोरंजन से जुडी हुई खबरें खूब धूमधाम से चलती हैं. लेकिन किसान क्या चाहता है, उसकी समस्या क्या है, उसकी फ़सल की स्थिति क्या है, उसकी आवश्यकताएं क्या हैं, ऐसे अनेक महत्वपूर्ण प्रश्नों से हिंदी मीडिया का सरोकार कम दिखाई देता है.

सेंटर फॉर मीडिया स्टडीज' (सीएमएस) की रिसर्च के मुताबिक पिछले पांच साल में राष्ट्रीय दैनिकों के पहले पन्ने पर ग्रामीण ख़बरों की जगह का औसत है -0.67 प्रतिशत, जबकि 2011 की जनगणना में ग्रामीण आबादी है-69 प्रतिशत। अपार जनसंख्या के 69 फीसदी को अखबार के पहले पेज पर सिर्फ 0.67 प्रतिशत जगह दी जाती है.[i] ये आंकड़े तथ्य हैं जो इस देश की कृषि और कृषि पत्रकारिता दोनों की हालत पर आंसू बहाने के लिए पर्याप्त हैं.

आज़ादी से ठीक बाद की स्थिति-

आज़ादी के बाद देश की कृषि अर्थव्यवस्था को अपनी जर्जर स्थिति से उबारने में, सोना उगलने वाली धरती को अकालों की चपेट से निकालने में, पैदावार और उपज बढ़ाने में, कृषि के क्षेत्र में नए प्रयोग करने में और सरकार के प्रयासों को जनता तक पहुँचाने में **'भारतीय कृषि पत्रकार संघ'** और देश के 30 हज़ार ग्रामीण कृषि-पत्रों का विशेष योगदान रहा है.

भूमंडलीकरण के इस दौर में हिंदी मीडिया में कृषि की वर्तमान स्थिति इसके उलट दिखाई देती है. कॉर्पोरेट मीडिया के आने के बाद और पत्रकारिता में चमक-दमक बढ़ने से बहुत कुछ बदल गया है. 'जो दिखता है वही बिकता है' के बाज़ारी जुमलों ने खेती-बाड़ी को पत्रकारिता के क्षेत्र में हाशिये का विषय बना दिया है.

सरकारी योजनाओं में किसान

भारत में कृषि का भविष्य बहुत सारी मौजूदा सरकारी नीतियों और नीतिगत सुधारों की दशा-दिशा पर निर्भर करता है. कृषि में बढ़ते लागत खर्च तथा वैज्ञानिक तरह से खेती करने के लिए पूँजी की आवश्यकता होती है. इसके लिए मंझले और छोटे किसान जो आर्थिक रूप से सक्षम नहीं है उन्हें समय पर बीज, उर्वरक, कीटनाशक जैसे ज़रूरी संसाधन उपलब्ध नहीं हो पाते हैं. इसके साथ ही सूखा, बाढ़, प्राकृतिक आपदाएं और जलवायु परिवर्तन जैसी प्राकृतिक

समस्याओं का सामना भी उसी किसान को करना पड़ता है, इससे समय पर संशाधन और पूँजी उपलब्ध न होने से उसकी फसल पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है .

सरकार की पॉलिसी पर नज़र डालें तो कृषि सेक्टर को उम्दा बनाने के लिए सरकार ने बजट में बढ़ोतरी की है. 2026-2027 बजट में कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय को 140528.78 करोड़ की राशि कृषि एवम सम्बद्ध कार्यकलापों के लिए प्रदान की गयी है. साथ ही प्राथमिक सहकारी समितियों के प्रोत्साहन के लिए अलग से कार्य किया जा रहा है.

सरकार खेती-किसानी की विभिन्न समस्याओं को हल करने के लिए अनेक योजनाएं चलाती है. किसानों को जमींदारों और साहूकारों के ब्याज के जाल से बचाने और समय पर किसानों को ऋण उपलब्ध कराने के लिए **'किसान क्रेडिट कार्ड'**[ii] के माध्यम से 2 % की ब्याज सब्सिडी और 3 % का शीघ्र पुनर्भुगतान सरकार प्रदान करती है.
भारत में छोटे और सीमांत किसानों को सहायता प्रदान करने के लिए 'प्रधानमंत्री किसान मानधन योजना' एक सरकारी पेंशन योजना है। जिसमें पात्र किसानों को 60 वर्ष की आयु प्राप्त होने पर मासिक पेंशन मिलती है.

पारंपरिक कृषि उपकरणों पर निर्भर रहने के स्थान पर, आधुनिक कृषि उपकरणों की खरीद को आसान बनाने और अधिक उपज बढ़ाने के लिए सरकार **'किसान समाम योजना'**[iii] और सोलर पैनल पर सब्सिडी देकर बिजली और पानी की पहुँच को **'प्रधानमंत्री कुसुम योजना'**[iv] के तहत आसान बना रही है.

बड़े पैमाने पर दुग्ध उत्पादन के लिए **'डेयरी उद्यमिता विकास योजना'**[v], मिट्टी की उर्वरकता बढ़ाने के लिए **'मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना'**[vi], **जैविक खेती योजना** और नैनो यूरिया व नीम कोटेड यूरिया के प्रयोग को सरकार बढ़ावा दे रही है.

सिंचाई को सुलभ बनाने के लिए **'कृषि सिंचाई योजना', जीरो वाटर, मोर क्रॉप स्कीम', 'टपक सिंचाई'** आदि के माध्यम से किसानों की सूखे व बारिश की कमी के चलते पानी से होने वाले खेती के नुकसान को कम करने में ये योजनायें अपनी भूमिका निभा रही हैं.
जब इतने बड़े पैमाने पर सरकार के द्वारा काम किया जाता है इसके बाद भी ये सेक्टर हमेशा आर्थिक, सामाजिक व पर्यावरणीय संकट से जूझता हुआ दिखाई देता है; इसका कारण क्या हो सकता है? कॉर्पोरेट के क्षेत्र में कृषि क्षेत्र को लेकर इतना निराशाजनक रवैया है कि सरकार के इतने खर्च के बावजूद "देश के सकल घरेलू उत्पाद में कृषि का योगदान महज 14 प्रतिशत है और कुल रोजगार में 42 प्रतिशत है"[vii].

प्रश्न अभी भी वही है कि कृषि को सुलभ बनाने के लिए सरकार के द्वारा किये जाने वाले प्रयास क्या वास्तव में किसानों और मेहनतकश लोगों तक पहुँच पा रहे हैं? इन सरकारी योजनाओं को जनता तक पहुँचाने में और जनता की चुनौतियों और समस्याओं को सरकार तक पहुँचाने में कृषि पत्रकारिता और मुख्यधारा का मीडिया अपना काम कितना संतोषजनक कर रहा है इसकी जांच-पड़ताल करने की आवश्यकता है.
डाउन टू अर्थ की एक रिपोर्ट के मुताबिक 2016 में **फसल बीमा योजना** लागू होने बाद भी इसके दायरे में आने वाले क्षेत्र व किसान सीमित ही रहे. गांव में चरम मौसम की घटनाओं में वृद्धि के कारण फसल के नुकसान की गंभीरता के बावजूद फसल बीमा चुनने वाले किसानों की संख्या में गिरावट दर्ज की गई है। लोन लेने वाले बहुत से किसानों ने बताया कि वे लगातार प्रीमियम देते रहे क्योंकि उन्हें नहीं पता था कि योजना अब अनिवार्य नहीं रह गई है। इस योजना ने किसानों को चरम मौसम की घटनाओं से बचाने में किस प्रकार मदद की, यह जानने के लिए डाउन टू अर्थ ने आठ राज्यों में यात्रा

की। इन राज्यों में मौजूदा रबी और खरीफ के मौसम में फसलों को व्यापक नुकसान हुआ है। इन राज्यों से मिले अनुभव बताते हैं कि योजना में कई विसंगतियां हैं।[viii]

किसान और सरकार के बीच अधूरी संचार-व्यवस्था और योजनाओं में विद्यमान विसंगतियों पर डाउन टू अर्थ, गाँव कनेक्शन, योजना, कुरुक्षेत्र जैसी मैगज़ीन और वेबसाइट लगातार रिपोर्टिंग करती रहती हैं. लेकिन मुख्य समाचार-पत्रों और दृश्य मीडिया से ये मुद्दे लगभग गायब दिखाई देते हैं.

विगत वर्षों में केंद्र सरकार द्वारा चलाई जाने वाली जन कल्याणकारी योजनाओं में से 50 प्रतिशत से अधिक को बंद कर दिया गया है और कई महत्वपूर्ण योजनाओं के लिए साल-दर-साल दी जाने वाली वित्तीय धनराशि में लगातार कमी की जा रही है।

डिजिटल और कमर्शियल मार्केटिंग के युग में कंट्रीडीलाईट जैसे एप्प, अमूल, मदर डेरी कंपनी के दूध एवं उससे बनने वाले उत्पादों और उसकी शुद्धता का दंभ भरने वाले विज्ञापनों से स्पोटीफाय, मुख्य समाचार पत्र, एफएम रेडियो, मैगज़ीन के पृष्ठ विज्ञापनों से भरे रहते हैं लेकिन किसी निजी मीडिया संस्थान को इस बात की चिंता नहीं होती कि पशुपालन और डेयरी मंत्रालय की 12 में से सिर्फ दो योजनाएं ही क्यों सक्रिय अवस्था में हैं.[ix] मंत्रालय ने तीन महत्वपूर्ण योजनाओं को समाप्त कर दिया है, जिसमें सहकारी समितियों के माध्यम से डेयरी, राष्ट्रीय डेयरी योजना आदि शामिल हैं। कृषि और किसान मंत्रालय की 20 में से तीन (कृषोन्नति योजना, कृषि सहकारिता पर एकीकृत योजना और राष्ट्रीय कृषि विकास योजना) योजनाएं ही चल रही हैं।[x]

महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम (मनरेगा) के लिए वित्त वर्ष 2022-23 में आवंटन राशि 73,000 करोड़ थी। यह पिछले साल के आवंटन के मुकाबले लगभग 25 प्रतिशत कम है। वित्त वर्ष 21-22 में 98,000 करोड़ रुपए आवंटित किया गया था।[xi] 2025 में मनरेगा को प्रतिस्थापित करके वीबी-जी राम जी अधिनियम, 2025 लाया गया है. जिसे पूर्व निर्धारित निश्चित बजट और केंद्र-राज्य साझेदारी के साथ चलाया जाना है.

ज़मीन के प्रति लगाव-

भारतीय समाज में, कृषि सेक्टर और किसान की स्थिति इतनी दोयम दर्जे की होने के बावजूद गाँव का आदमी खेती-किसानी छोड़ना नहीं चाहता है. प्रेमचंद के होरी की तरह उसकी मानसिकता यही है कि 'खेती में जो मरजाद है वो नौकरी में तो नहीं है'. सरकारी नौकरी न सही लेकिन प्राइवेट नौकरी के लिए यही मानसकिता आज भी भारतीय गाँवों की जड़ में है. साथ में अपनी पुश्तैनी जमीन के प्रति गहरा लगाव उसे इस मिटटी से बाँध कर रखता है.

महेश कटारे, किसानों पर मौसम की मार के बावजूद जिजीविषा की उम्मीद को कहानी में व्यक्त करते हुए कहते हैं कि, 'इस साल रूठा है तो अगले बरस दया दिखायेगा।' उम्मीद जिंदा रख कर किसान जूझता रहता है। मगर उसके हाथ नाउम्मीदी फिर आती है। अगले साल भी ओलावृष्टि की मार पड़ती है। किसानों की कमर टूट जाती है। सरकार के पास ऐसी प्राकृतिक आपदाओं के जख्म पर, लगाने को कुछ मरहम हैं, कुछ झाड़-फूंक है। राहत के नाम पर, लिए गए कर्ज की अवधि को बढ़ाना, वसूली को कुछ समय के लिए स्थगित कर देना, आत्महत्या करने वाले किसानों को कुछ आर्थिक मदद देकर अपने को जन हितैषी बताने का प्रमाण है। फसल बर्बाद होती है तो मंत्री, अफसर बर्बाद हुई फसल का जायजा लेने निकलते हैं। फसलमारी तैयार की जाती है। मगर कभी पाला, कभी बाढ़ , कभी सूखा रोग का रोना चलता रहता है। किसानों की समस्याओं का कोई स्थाई इलाज नहीं है किसी के पास। बस उनकी सोच इतनी है कि किसानों को लगते रहना चाहिए कि सरकार उनकी चिंता कर रही है।[xii]

क्या है भविष्य-

सरकार की योजनाओं का ठीक से क्रियान्वयन ठीक तरह से हो रहा है या नहीं इसपर डाउन टू अर्थ, ट्रेक्टर जंक्शन, गाँव कनेक्शन, एग्रीपोर्टल जैसी वेबसाइट और लोकल मीडिया चैनल लगातार विशेष रिपोर्टिंग करते है. मिटटी की बिगड़ती गुणवत्ता में हिन्दू जैसे समाचार पत्रों पर लेख प्रकाशित किये जाते हैं जिसे पढ़कर देश का युवा यूपीएससी जैसी परीक्षाओं को निकालता है. लेकिन हिंदी समाचार-पत्रों में कृषि बीट की ख़बरों के प्रति उदासीनता, चिंता का विषय है. कृषि क्षेत्र में मौजूदा और उभरती चुनौतियों और स्थिरता की समस्याओं से निपटने के लिए उत्पाद, प्रक्रिया और संगठनात्मक नवाचारों के अलावा संस्थागत नवाचारों की आवश्यकता है जिन्हें अवसरों में बदला जा सकता है। भारतीय कृषि व्यवसाय भविष्य है, जिसमें कृषि भी शामिल है। इसकी ओर हिंदी मीडिया को ध्यान से और गंभीरता से देखने की आवश्यकता है.

कृषि सेक्टर सुनहरा तभी होगा, जब सरकार, कॉरपोरेट एजेंसियां, सहकारी संस्थाएं और फार्मर प्रोड्यूसर्स कंपनियां मिलकर काम करेंगी. इसके साथ ही मीडिया संस्थानों को कृषि बीट पर विशेष ध्यान देना होगा. रेडियो, एफएम और लोकल कृषि पत्रकारों की नैतिक ज़िम्मेदारी बनती है कि किसान और सरकार के बीच जो खाई बन गयी है उसको किस प्रकार पाटना है इसके विकल्प तलाशे जायें.

सरकारी योजनाओं को सरल भाषा में प्रचार करके, गाँवों में शिविर लगाकर, कृषि वैज्ञानिकों को बुलाकर उनके अनुभवों को साझा करके, बड़े स्तर पर जागरूकता फैलानी चाहिए. साथ ही किसान भाइयों और बहनों को सरकारी हेल्पलाइन नंबर में अपनी समस्या से सम्बंधित सवाल पूछने के लिए प्रेरित करना चाहिए. कृषि विश्वविद्यालयों से निकलने वाले छात्रों और श्रेष्ठ मीडिया संस्थानों में पढ़ने वाले छात्रों को खेती-किसानी के प्रति सोचने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए. लटक-झटक वाली पत्रकारिता और एक ज़िम्मेदार पत्रकारिता के बीच के अंतर को छात्रों के मस्तिष्क में रोपना होगा. किसान सिर्फ कृषि आन्दोलनों में ही नहीं है बल्कि उसकी असली समस्याएं दिल्ली से कहीं दूर स्थित दूर-दराज के गाँवों में हैं. जहाँ पर सरकार की योजनायें और कॉर्पोरेट मीडिया की पहुँच में भले ही देरी होती हो लेकिन कार्पोरेट कम्पनियां गाँव में अपने कदम तेज़ी से पसार रही हैं. इसलिए लड़खड़ाती कृषि पत्रकारिता को याद रखना चाहिए कि जब हल और कुदाल पर जंग लग रहा हो तब ज़बान का वार और कलम की धार कुंद नहीं पड़ने देनी चाहिए.

संदर्भ-

[i] ग्रामीण पत्रकारिता के खतरे - Press Service Sarvodaya (spsmedia.in)

[ii] देश में किसानों के लिए चल रही सरकार की योजनाएं (kisansamadhan.com)

[iii] देश में किसानों के लिए चल रही सरकार की योजनाएं (kisansamadhan.com)

[iv] देश में किसानों के लिए चल रही सरकार की योजनाएं (kisansamadhan.com)

[v] https://www.nabard.org/hindi/content.aspx?id=591

[vi] देश में किसानों के लिए चल रही सरकार की योजनाएं (kisansamadhan.com)

[vii] https://pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1793840

[viii] कृषि के सुनहरे भविष्य के लिए क्या करना चाहिए? (downtoearth.org.in)

[ix] https://www.downtoearth.org.in/hindistory/agriculture/government-schemes/in-the-last-three-years-the-government-abolished-50-percent-of-the-welfare-schemes-

85702#:~:text=%E0%A4%95%E0%A5%87%E0%A4%82%E0%A4%A6%E0%A5%8D%E0%A4%B0%E0%A5%80%E0%A4%AF%20%E0%A4%AE%E0%A4%B9%E0%A4%BF%E0%A4%B2%E0%A4%BE%20%E0%A4%8F%E0%A4%B5%E0%A4%82%20%E0%A4%AC%E0%A4%BE%E0%A4%B2%20%E0%A4%B5%E0%A4%BF%E0%A4%95%E0%A4%BE%E0%A4%B8,%E0%A4%B8%E0%A4%AE%E0%A4%BE%E0%A4%AA%E0%A5%8D%E0%A4%A4%20%E0%A4%95%E0%A4%B0%20%E0%A4%A6%E0%A4%BF%E0%A4%AF%E0%A4%BE%20%E0%A4%97%E0%A4%AF%E0%A4%BE%20%E0%A4%B9%E0%A5%88%E0%A5%A4

[x] https://www.aajtak.in/business/news/story/govt-slashed-mgnrega-budget-allocation-for-fy23-estimate-73000-crore-rupee-tutk-1403837-2022-02-02

[xii] हिन्दी कहानी और किसान अनुभूति / सुभाष चन्द्र कुशवाहा / रचना समय - मार्च 2016 / कहानी विशेषांक 2 | रचनाकार (rachanakar.org)

www.bohalshodhmanjusha.com Bohal Shodh Manjusha ISSN: 2395-7115
Impact Factor: 8.642 June 2026 Page No. : 228-231
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

वैज्ञानिक साहित्य की उपलब्धियाँ एवं उपादेयता

एम. सुब्रमण्यम
शोध छात्र,
हिंदी विभाग, आंध्र विश्वविद्यालय, विशाखापत्तनम, आँध्रप्रदेश
एन. सत्यनारायण
शोध निर्देशक,
हिंदी विभाग प्रमुख, आंध्र विश्वविद्यालय विशाखापट्टनम, आंध्र प्रदेश

प्रस्तावना : विज्ञान आज के मानव जीवन का अविभाज्य एवं घनिष्ठ अंग बन गया है। मानव जीवन का कोई भी क्षेत्र विज्ञान के अस्तित्व पूर्ण आविष्कारों से अछूता नहीं रहा। आज विज्ञान ने पुरुष,नये साहित्यकार, राजनीतिज्ञ, उद्योगपति, कृषक, सैनिक, अभियंता, शिक्षक, धर्मज्ञ और तत्त्वज्ञ सभी को और सभी क्षेत्रों में अपने प्रीतम प्रदेय से अनुग्रहित किया है। विज्ञान के चरण गृहणी के रसोई घर से लेकर बड़ी-बड़ी प्रचीरों वाले भवनों में ही दृष्टिगत नहीं होते। परंतु यह स्थल और जल की सीमाओं को लाँघकर अंतरिक्ष में भी गतिशील हैं। वस्तुत: विज्ञान आदतन मानव की सबसे बड़ी शक्ति बन गया है। इसके बल से मनुष्य प्रकृति और प्राणी जगत का शिरोमणि बन सका है। अभी ऋतुओं के प्रकोप से भयाक्रांत नहीं है। उष्णता और शीतलता दी है। बटन दबाकर किसी भी कार्य को संपन्न करने की ताकत दी है। अब वह अंतरिक्ष लोक में प्रवेश कर मनुष्य को बौद्धिक विकास प्रदान की है। वैज्ञानिक चिंतन पद्धति में अंधविश्वासों, और रूढ़ी परंपराओं से मुक्त होकर स्वस्थ एवं संतुलित ढंग से सोच विचार कर आगे बढ़ रहा है। और यथार्थ एवं सम्यक जीवन जी रहा है। इससे मनुष्य के मन में युगों के अंधविश्वासों, भ्रमपूर्ण और दकियानूसी विचारों से मुक्ति मिली है। वैज्ञानिक चिंतन से आशय स्वस्थ एवं संतुलित चिंतन से है।

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान का इतिहास : भारत का अंतरिक्ष सम्बन्धी अनुभव बहुत पुराना है। भारत और चीन के बीच रेशम मार्ग से विचारों एवं वस्तुओं का आदान प्रदान हुआ करता था। जब टीपू सुल्तान द्वारा मैसूर युद्ध में अंग्रेजों को खदेड़ने में रॉकेट के प्रयोग को देखकर विलियम कंग्रीव प्रभावित हुआ, तो उसने 1804 में कंग्रीव रॉकेट का आविष्कार किया, रॉकेट पड़ोसी देश चीन का आविष्कार था और आतिशबाजी के रूप में पहली बार प्रयोग में लाया गया। आज के आधुनिक तोपखानों की मंगल भाटी ने इसरो की खोज 1945 में की थी।1947 में अंग्रेजों की बेड़ियों से मुक्त होने के बाद, भारतीय वैज्ञानिक और राजनीतिज्ञ भारत की रॉकेट तकनीक के सुरक्षा क्षेत्र में उपयोग, एवं अनुसंधान एवं विकास की संभाव्यता की वजह से विख्यात हुए। “भारत जनसांख्यिकीय दृष्टि से विशाल होने की वजह से, दूरसंचार के क्षेत्र में कृत्रिम उपग्रहों की प्राथमिक संभाव्यता को देखते हुए, भारत में अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन की स्थापना की गई।”[1] भारतीय अन्तरिक्ष कार्यक्रम डॉ विक्रम साराभाई की संकल्पना है, जिन्हें भारतीय

अन्तरिक्ष कार्यक्रम का जनक कहा गया है। वे वैज्ञानिक कल्पना एवं राष्ट्र-नायक के रूप में जाने गए। 1957 में स्पूतनिक के प्रक्षेपण के बाद, उन्होंने कृत्रिम उपग्रहों की उपयोगिता को भांपा। भारत के प्रधान मंत्री जवाहर लाल नेहरू, जिन्होंने भारत के भविष्य में वैज्ञानिक विकास को अहम् भाग माना, 1961 में अंतरिक्ष अनुसंधान को परमाणु ऊर्जा विभाग की देखरेख में रखा। परमाणु उर्जा विभाग के निदेशक होमी भाभा, जो कि भारतीय परमाणु कार्यक्रम के जनक माने जाते हैं, 1962 में 'अंतरिक्ष अनुसंधान के लिए भारतीय राष्ट्रीय समिति' (इनकोस्पार) का गठन किया, जिसमें डॉ॰ साराभाई को सभापति के रूप में नियुक्त किया। जापान और यूरोप को छोड़कर, हर मुख्य अंतरिक्ष कार्यक्रम की तरह, भारत ने अपने विदित सैनिक प्रक्षेपास्त्र कार्यक्रम को सक्षम कराने में लगाने के बजाय, कृत्रिम उपग्रहों को प्रक्षेपण में समर्थ बनाने के उद्धेश्य हेतु किया। 1962 में भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम की स्थापना के साथ ही, इसने अनुसंधित रॉकेट का प्रक्षेपण शुरू कर दिया, जिसमें भूमध्य रेखा की समीपता वरदान साबित हुई। ये सभी नव-स्थापित थुंबा भू-मध्यीय रॉकेट अनुसंधान केन्द्र से प्रक्षेपित किए गए, जो कि दक्षिण केरल में तिरुवंतपुरम के समीप स्थित है। शुरुआत में, अमेरिका एवं फ्रांस के अनुसंधित रॉकेट क्रमशः नाइक अपाचे एवं केंटोर की तरह, उपरी दबाव का अध्ययन करने के लिए प्रक्षेपित किए गए, जब तक कि प्रशांत महासागर में पोत-आधारित अनुसंधित रॉकेट से अध्ययन शुरू न हुआ। ये इंग्लैंड और रूस की तर्ज पर बनाये गये। फिर भी पहले दिन से ही, अंतरिक्ष कार्यक्रम की विकासशील देशी तकनीक की उच्च महत्वाकांक्षा थी और इसके चलते भारत ने ठोस इंधन का प्रयोग करके अपने अनुसंधित रॉकेट का निर्माण शुरू कर दिया, जिसे रोहिणी की संज्ञा दी गई। भारत अंतरिक्ष कार्यक्रम ने देशी तकनीक की आवश्यकता, एवं कच्चे माल एवं तकनीक आपूर्ति में भावी अस्थिरता की संभावना को भांपते हुए, प्रत्येक माल आपूर्ति मार्ग, प्रक्रिया एवं तकनीक को अपने अधिकार में लाने का प्रयत्न किया। जैसे-जैसे भारतीय रोहिणी कार्यक्रम ने और अधिक संकुल एवं वृहताकार रोकेट का प्रक्षेपण जारी रखा, अंतरिक्ष कार्यक्रम बढ़ता चला गया और इसे परमाणु उर्जा विभाग से विभाजित कर, अपना अलग ही सरकारी विभाग दे दिया गया। परमाणु उर्जा विभाग के अंतर्गत इन्कोस्पार कार्यक्रम से 1969 में भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन का गठन किया गया, जो कि प्रारम्भ में अंतरिक्ष मिशन के अंतर्गत कार्यरत था और परिणामस्वरूप जून, 1972 में, अंतरिक्ष विभाग की स्थापना की गई। 2003 के दशक में डॉ॰ साराभाई ने टेलीविजन के सीधे प्रसारण के जैसे बहुल अनुप्रयोगों के लिए प्रयोग में लाये जाने वाले कृत्रिम उपग्रहों की सम्भव्यता के सन्दर्भ में नासा के साथ प्रारंभिक अध्ययन में हिस्सा लिया और अध्ययन से यह ज्ञान प्राप्त हुआ कि, प्रसारण के लिए यही

1. भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो), 28 अगस्त, **2023**

सबसे सस्ता और सरल साधन है। "शुरुआत से ही, उपग्रहों को भारत में लाने के फायदों को ध्यान में रखकर, साराभाई और इसरो ने मिलकर एक स्वतंत्र प्रक्षेपण वाहन का निर्माण किया, जो कि कृत्रिम उपग्रहों को कक्ष में स्थापित करने, एवं भविष्य में वृहत प्रक्षेपण वाहनों में निर्माण के लिए आवश्यक अभ्यास उपलब्ध कराने में सक्षम था।"[1] रोहिणी श्रेणी के साथ ठोस मोटर बनाने में भारत की क्षमता को परखते हुए, अन्य देशो ने भी समांतर कार्यक्रमों के लिए ठोस रॉकेट का उपयोग बेहतर समझा और इसरो ने कृत्रिम उपग्रह प्रक्षेपण वाहन (एस.एल.वी.) की आधारभूत संरचना एवं तकनीक का निर्माण प्रारम्भ कर दिया। अमेरिका के स्काउट रॉकेट से प्रभावित होकर, वाहन को चतुर्स्तरीय ठोस वाहन का रूप दिया गया।

आर्यभट्ट (उपग्रह) पहला भारतीय उपग्रह : भारत का पहला उपग्रह आर्यभट्ट सोवियत संघ द्वारा कॉसमॉस-3एम प्रक्षेपण यान से 19 अप्रैल 1975 को कपूस्टिन यार से लांच किया गया था। इसके बाद स्वदेश में बने प्रयोगात्मक रोहिणी उपग्रहों की श्रृंखला को भारत ने स्वदेशी प्रक्षेपण यान उपग्रह प्रक्षेपण यान से लांच किया। वर्तमान में, इसरो पृथ्वी अवलोकन उपग्रह की एक बड़ी संख्या चल रहा है।

इन्सैट शृंखला : इन्सैट (भारतीय राष्ट्रीय उपग्रह प्रणाली) इसरो द्वारा लांच एक बहुउद्देशीय भूस्थिर उपग्रहों की श्रृंखला है। जो भारत के दूरसंचार, प्रसारण, मौसम विज्ञान और खोज और बचाव की जरूरत को पूरा करने के लिए है। इसे 1983 में शुरू किया गया था। इन्सैट एशिया-प्रशांत क्षेत्र में सबसे बड़ी घरेलू संचार प्रणाली है। यह अंतरिक्ष विभाग, दूरसंचार विभाग, भारत मौसम विज्ञान विभाग, ऑल इंडिया रेडियो और दूरदर्शन का एक संयुक्त उद्यम है। संपूर्ण समन्वय और इनसैट प्रणाली का प्रबंधन, इनसैट समन्वय समिति के सचिव स्तर के अधिकारी पर टिकी हुई है।

भारतीय सुदूर संवेदन उपग्रह शृंखला : भारतीय सुदूर संवेदन उपग्रह (आईआरएस) पृथ्वी अवलोकन उपग्रह की एक श्रृंखला है। इसे इसरो द्वारा बनाया, लांच और रख रखाव किया जाता है। आईआरएस श्रृंखला देश के लिए रिमोट सेंसिंग सेवाएं उपलब्ध कराता है। "भारतीय सुदूर संवेदन उपग्रह प्रणाली आज दुनिया में चल रही नागरिक उपयोग के लिए दूरसंवेदी उपग्रहों का सबसे बड़ा समूह है। सभी उपग्रहों को ध्रुवीय सूर्य समकालिक कक्षा में रखा जाता है।"[1] प्रारंभिक संस्करणों 1(ए, बी, सी, डी) नामकरण से बना रहे थे। लेकिन बाद के संस्करण अपने क्षेत्र के आधार पर ओशनसैट, कार्टोसैट, रिसोर्ससैट नाम से नामित किये गए।

राडार इमेजिंग सैटेलाइट : इसरो वर्तमान में दो राडार इमेजिंग सैटेलाइट संचालित कर रहा है। रीसैट-1 को 26 अप्रैल 2012 को ध्रुवीय उपग्रह प्रक्षेपण यान(PSLV) से सतीश धवन

1. द डिप्लोमेट. मूल से 25 जून 2013

अंतरिक्ष केंद्र,श्रीहरिकोटा से लांच किया गया था। रीसैट-1 एक सी-बैंड सिंथेटिक एपर्चर रडार (एसएआर) पेलोड ले के गया। जिसकी सहायता से दिन और रात दोनों में किसी भी तरह के ऑब्जेक्ट पर राडार किरणों से उसकी आकृति और प्रवत्ति का पता लगाया जा सकता था। तथा भारत ने रीसैट-2 जो 2009 में लांच हुआ था। इसराइल से 11 करोड़ अमेरिकी डॉलर में खरीद लिया था। 11 दिसंबर 2019 को इसरो ने पीएसएलवी सी-48 रॉकेट के साथ रीसैट-2बीआर1 लॉन्च किया।

अन्य उपग्रह : इसरो ने भूस्थिर प्रायोगिक उपग्रह की श्रृंखला जिसे जीसैट श्रृंखला के रूप में जाना जाता को भी लांच किया। इसरो का पहला मौसम समर्पित उपग्रह कल्पना-1 को 12 सितंबर 2002 को ध्रुवीय उपग्रह प्रक्षेपण यान द्वारा लांच किया गया था। इस उपग्रह को मेटसैट-1 के रूप में भी जाना जाता था। लेकिन फरवरी 2003 में भारतीय प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने स्पेस शटल कोलंबिया में मारी गयी भारतीय मूल की नासा अंतरिक्ष यात्री कल्पना चावला की याद में इस उपग्रह का नाम कल्पना-1 रखा। "इसरो ने 25 फरवरी, 2013 12:31 यूटीसी पर सफलतापूर्वक भारत-फ्रांसीसी उपग्रह सरल लांच किया। सरल एक सहकारी प्रौद्योगिकी मिशन है। यह समुद्र की सतह और समुद्र के स्तर की निगरानी के लिए इस्तेमाल की जाती है।"[1] जून 2014 में, इसरो ने पीएसएलवी-सी23 प्रक्षेपण यान के माध्यम से फ्रेंच पृथ्वी अवलोकन उपग्रह स्पॉट CAN-X5, जर्मनी का उपग्रह AISAT लांच किये। 7 (714 किलो) के साथ सिंगापुर का पहला नैनो उपग्रह VELOX-I, कनाडा का उपग्रह यह इसरो का चौथा वाणिज्यिक प्रक्षेपण था। 1 जनवरी 2024 को नए साल के पहले ही दिन इसरो ने साल की शुरुआत में ही खगोल विज्ञान के सबसे बड़े रहस्यों में से एक ब्लैक होल के बारे में जानकारी जुटाने के लिए उपग्रह भेज कर की है। सुबह 9.10 बजे भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन के इस पहले एक्स-रे पोलरीमीटर उपग्रह यानी 'एक्सपोसैट' को रॉकेट पोलर सैटेलाइट लॉन्च व्हीकल (पीएसएलवी) सी 58 के जरिए लॉन्च किया। यह महज 21 मिनट में अंतरिक्ष में 650 किमी ऊंचाई पर जाएगा। इस रॉकेट का यह 60वां मिशन होगा। इस मिशन में एक्सपोसैट के साथ साथ 10 अन्य उपग्रह भी पृथ्वी की निचली कक्षा में स्थापित होंगे। एक समृद्ध खगोल अनुसंधान के महत्वपूर्ण क्षेत्र में भारतीय

अंतरिक्ष मिशन इस मिशन के अंतर्गत, एक साधारित उपग्रह के साथ साथ कई अन्य उपग्रह भी भेजे गए हैं, जो खगोल अनुसंधान में नए मील के पथिकों की भूमिका निभा सकते हैं।

अंतरिक्ष यात्री प्रशिक्षण और अन्य सुविधाएं : इसरो मानवयुक्त वाहन पर उड़ान के लिए दल को तैयार करने के लिए बंगलौर में एक अंतरिक्ष यात्री प्रशिक्षण केंद्र की स्थापना करेगी। केंद्र में चयनित अंतरिक्ष यात्रियों को शून्य गुरुत्वाकर्षण में अस्तित्व, बचाव और वापिस के

1. भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो), 28 अगस्त, **2023**

संचालन में प्रशिक्षित करने के लिए सिमुलेशन सुविधाओं का उपयोग किया जायेगा।

निष्कर्ष : भारत का पहला अंतरिक्ष स्टेशन का एक छोर क्रू मॉड्यूल और रॉकेट के लिए डॉकिंग पोर्ट होगा, जो अंतरिक्ष यात्रियों को ले जाएगा। भारत इसके लिए 21 वीं सदी का एक विशेष डॉकिंग पोर्ट विकसित कर रहा है और यह अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन के डॉकिंग पोर्ट के समान हो सकता है। एक बार पूरा होने पर भारतीय अंतरिक्ष स्टेशन में चार अलग-अलग मॉड्यूल और चार जोड़े सौर पैनल हो सकते हैं। स्पेस स्टेशन में ऑक्सीजन उत्पन्न करने और कार्बन डाइऑक्साइड को हटाने और उपयुक्त आर्द्रता को आर्दश स्तर पर रखने की सारी सुविधाएं है। स्पेस स्टेशन से हम अलग-अलग ग्रहों पर मिशन पर जाने वाले अंतरिक्ष यात्री डेटा और सैंपल इस सेंटर तक पहुंचाएंगे और वहीं रिसर्च करके वैज्ञानिक रिजल्ट पता लगा लेंगे। जिससे धरती पर रहने वाले लोगों का फायदा होगा। अभी तक अंतरिक्ष से डेटा और सैंपल धरती पर लाया जाता है और इसरो की लैब में रिसर्च होती है, लेकिन अकसर डेटा-सैंपल किन्हीं कारणों से धरती तक नहीं पहुंच पाते, इन्हीं सब कारणों से स्पेस स्टेशन की जरूरत महसूस हुई।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो), 2000
2. पत्र सूचना कार्यालय, भारत सरकार. 7 जनवरी 2014
3. द डिप्लोमेट. मूल से 25 जून 2013
4. विज्ञान प्रगति पत्रिका, अगस्त,1990

दूरभाष संख्या - 7075553228

ई -मेल : mangipudisiri1986@gmail. com

www.bohalshodhmanjusha.com Bohal Shodh Manjusha ISSN: 2395-7115
Impact Factor: 8.642 June 2026 Page No. : 232-234
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

वर्तमान शिक्षा में अपेक्षित परिवर्तन एवं तकनीकी युग में बच्चों के व्यवहारगत परिवर्तन : एक समालोचनात्मक अध्ययन

डॉ सुकन्या चल्ला
ए पी टी डब्लू आर एस गर्ल्स करेडु, उलावपडु मंडलम, प्रकाशम जिला, आंध्र प्रदेश

इक्कीसवीं शताब्दी का समाज तीव्र तकनीकी विकास, वैश्वीकरण तथा सूचना-क्रांति के प्रभाव से निरंतर परिवर्तित हो रहा है। शिक्षा, जो समाज परिवर्तन का प्रमुख साधन मानी जाती है, इस परिवर्तन से अछूती नहीं रही है। वर्तमान समय में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence), डिजिटल शिक्षण, ऑनलाइन प्लेटफॉर्म, स्मार्ट कक्षाएँ तथा वर्चुअल लर्निंग जैसी व्यवस्थाओं ने शिक्षा के स्वरूप को परिवर्तित कर दिया है। दूसरी ओर, तकनीकी उपकरणों के अत्यधिक उपयोग ने बच्चों के व्यवहार, सामाजिक संबंधों, भावनात्मक विकास तथा संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं पर गहरा प्रभाव डाला है।

आज के बच्चे पारंपरिक पीढ़ियों की अपेक्षा अधिक तकनीकी रूप से दक्ष हैं, किंतु उनमें धैर्य, सामाजिक सहभागिता, एकाग्रता तथा संवेदनात्मक जुड़ाव में कमी देखने को मिल रही है। ऐसे में शिक्षा व्यवस्था के समक्ष यह चुनौती है कि वह तकनीकी प्रगति और मानवीय मूल्यों के मध्य संतुलन स्थापित करे।

शिक्षा किसी भी राष्ट्र की प्रगति का आधार होती है। यह केवल ज्ञानार्जन का माध्यम नहीं, बल्कि व्यक्तित्व निर्माण, सामाजिक अनुकूलन तथा नैतिक मूल्यों के विकास का भी प्रमुख साधन है। समय के साथ समाज की आवश्यकताएँ बदलती हैं और शिक्षा को भी उन आवश्यकताओं के अनुरूप परिवर्तित होना पड़ता है।

वर्तमान युग को डिजिटल युग कहा जाता है। इंटरनेट, स्मार्टफोन, सोशल मीडिया, कृत्रिम बुद्धिमत्ता तथा सूचना प्रौद्योगिकी ने बच्चों की जीवनशैली, सोचने के तरीके तथा व्यवहार को गहराई से प्रभावित किया है। बच्चे अब पुस्तकालयों की अपेक्षा इंटरनेट पर अधिक निर्भर हो रहे हैं। ज्ञान तक उनकी पहुँच बढ़ी है, किंतु सूचना की अधिकता ने एकाग्रता और विश्लेषणात्मक सोच को भी प्रभावित किया है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने भी शिक्षा को कौशल-आधारित, प्रौद्योगिकी-सम्मत तथा छात्र-केंद्रित बनाने पर बल दिया है। इसके बावजूद वर्तमान शिक्षा प्रणाली में अनेक ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ व्यापक परिवर्तन की आवश्यकता अनुभव की जा रही है।

वर्तमान शिक्षा में अपेक्षित परिवर्तन :

वर्तमान शिक्षा प्रणाली का बड़ा भाग अभी भी परीक्षा-केंद्रित एवं अंक-प्रधान है। विद्यार्थी विषयों को समझने के बजाय याद करने पर अधिक बल देते हैं। आज आवश्यकता है कि शिक्षा में समस्या-समाधान, आलोचनात्मक चिंतन, रचनात्मकता तथा नवाचार को प्रोत्साहित किया जाए।

डिजिटल युग में तकनीकी ज्ञान अनिवार्य हो गया है। विद्यालयों में कोडिंग, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, साइबर सुरक्षा तथा डिजिटल नागरिकता जैसे विषयों को प्रारंभिक स्तर से शामिल किया जाना चाहिए।

शैक्षणिक उपलब्धि के साथ-साथ विद्यार्थियों के भावनात्मक विकास पर भी ध्यान देना आवश्यक है। विद्यालयों में जीवन कौशल, सहानुभूति, आत्म-नियंत्रण तथा सामाजिक उत्तरदायित्व से संबंधित गतिविधियों को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।

प्रत्येक बालक की सीखने की गति एवं क्षमता अलग होती है। तकनीकी साधनों की सहायता से विद्यार्थियों की आवश्यकताओं के अनुसार शिक्षण सामग्री उपलब्ध कराई जा सकती है।

तकनीकी प्रगति के साथ-साथ नैतिक मूल्यों का विकास भी आवश्यक है। सत्यनिष्ठा, सहिष्णुता, सहयोग तथा मानवीय संवेदनाओं को शिक्षा का अभिन्न अंग बनाया जाना चाहिए।

तकनीकी युग में बच्चों के व्यवहारगत परिवर्तन :

डिजिटल उपकरणों का अत्यधिक उपयोग बच्चों की ध्यान केंद्रित करने की क्षमता को प्रभावित कर रहा है। त्वरित सूचना प्राप्त करने की आदत के कारण लंबे समय तक किसी विषय पर ध्यान बनाए रखना कठिन हो रहा है।

ऑनलाइन संचार के बढ़ते प्रभाव के कारण प्रत्यक्ष सामाजिक संपर्क कम हुआ है। बच्चे मित्रों और परिवार के साथ वास्तविक संवाद की अपेक्षा आभासी संवाद को अधिक महत्व देने लगे हैं।

तकनीकी माध्यम तत्काल परिणाम उपलब्ध कराते हैं। इससे बच्चों में धैर्य की कमी तथा तुरंत सफलता प्राप्त करने की अपेक्षा बढ़ रही है।

सोशल मीडिया संस्कृति ने बच्चों में स्वयं को प्रदर्शित करने की प्रवृत्ति को बढ़ावा दिया है। इससे कई बार आत्मकेंद्रित सोच तथा बाहरी मान्यता पर अत्यधिक निर्भरता विकसित होती है।

अत्यधिक स्क्रीन समय, ऑनलाइन प्रतिस्पर्धा तथा सोशल मीडिया तुलना के कारण तनाव, चिंता, अकेलापन तथा अवसाद जैसी समस्याएँ बढ़ रही हैं।

तकनीक बच्चों को नए अवसर प्रदान करती है, किंतु अत्यधिक निर्भरता उनकी स्वतंत्र कल्पनाशक्ति एवं मौलिक चिंतन को सीमित भी कर सकती है।

शिक्षा और व्यवहार के मध्य संबंध :

शिक्षा केवल सूचना प्रदान करने का माध्यम नहीं है, बल्कि व्यवहार निर्माण की प्रक्रिया भी है। यदि शिक्षा प्रणाली तकनीकी साधनों का संतुलित उपयोग करते हुए मानवीय मूल्यों, सामाजिक कौशल तथा भावनात्मक बुद्धिमत्ता को विकसित करे, तो बच्चों के व्यवहारगत विकास को सकारात्मक दिशा प्रदान की जा सकती है।

विद्यालय, परिवार तथा समाज को संयुक्त रूप से यह सुनिश्चित करना होगा कि तकनीक बच्चों के विकास का साधन बने, न कि उनकी सामाजिक एवं मानसिक समस्याओं का कारण।

निष्कर्ष :

वर्तमान शिक्षा प्रणाली एक परिवर्तनशील दौर से गुजर रही है। तकनीकी प्रगति ने शिक्षा को अधिक सुलभ, प्रभावी तथा व्यापक बनाया है, किंतु इसके साथ बच्चों के व्यवहार में अनेक महत्वपूर्ण परिवर्तन भी देखने को मिल रहे हैं। इसलिए शिक्षा का उद्देश्य केवल तकनीकी दक्षता विकसित करना नहीं, बल्कि संतुलित, संवेदनशील, नैतिक एवं सामाजिक रूप से उत्तरदायी नागरिकों का निर्माण करना होना चाहिए। भविष्य की शिक्षा वही होगी जो तकनीक और मानवीय मूल्यों के मध्य संतुलन स्थापित कर सके।

संदर्भ

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020), भारत सरकार।
2. Piaget, J. (1964). Cognitive Development Theory.
3. Vygotsky, L.S. (1978). Mind in Society.
4. Bandura, A. (1977). Social Learning Theory.
5. OECD (2024). Future of Education and Skills Report.

www.bohalshodhmanjusha.com Bohal Shodh Manjusha ISSN: 2395-7115
Impact Factor: 8.642 June 2026 Page No. : 235-239
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

भारतीय साहित्य में इतिहास की परिभाषा एवं उसका स्वरूप

डॉ0 प्रतिमा कुमारी शुक्ला
सहायक आचार्या,
इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग,
जगद्गुरू रामभद्राचार्य दिव्यांग राज्य विश्वविद्यालय, चित्रकूट उ0प्र0,
आशीष कुमार शुक्ल
शोध छात्र,
इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग,
जगद्गुरू रामभद्राचार्य दिव्यांग राज्य विश्वविद्यालय, चित्रकूट उ0प्र

सारांश– निरुक्त में इतिहास की व्युत्पत्ति है– 'इति' (इस प्रकार से) 'ह' (निश्चयेन) 'आस' (था, वर्तमान था) अर्थात् प्राचीन काल में निश्चय रूप से होने वाली घटना इतिहास के द्वारा निर्दिष्ट की जाती थी। इतिहास का अर्थ प्राचीन काल में वास्तव रूप में घटित होने वाली सद्घटना का द्योतक है। आगे चलकर पुराणों में इतिहास शब्द का प्रयोग निःसंशय 'इतिवृत्त' अर्थ में पाया जाने लगा। भारतीय परम्परा में पहले इतिहास लेखन की परम्परा के दो माध्यम होते थे– गद्य और पद्य। और यदि मूलतः देखा जाए तो भारतीय इतिहास पद्य में ही लिखता है। राजशेखर, कल्हण आदि ने कहा– भारत के दो इतिहास हैं– परिक्रिया और पुराकल्प। इतिहास में उन्हीं घटनाओं एवं व्यक्तियों का उल्लेख किया जाना चाहिए जिनके स्मरण मात्र से समाज की धार्मिक, आध्यात्मिक, सामाजिक एवं राजनीतिक क्षेत्र में कुछ प्रेरणा सीखने को मिले। प्रत्येक घटना ऐतिहासिक घटना अथवा व्यक्ति ऐतिहासिक व्यक्ति नहीं हो सकता। भारतीय दृष्टिकोण के अनुसार महत्वपूर्ण व्यक्तियों के प्रसंग में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का प्रतिपादन करना ही इतिहास है। विष्णु धर्मोत्तर पुराण में कहा गया है– **('धर्मार्थ काम मोक्षाणामुपदेश समन्वितम्। पूर्ववृत्त कथा युक्त इतिहासं प्रचक्षते।)**। अर्थात धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष के उपदेश से युक्त पूर्व घटित कथाओं से युक्त आख्यान को इतिहास कहते हैं।

मुख्य शब्द– निःश्वास, उत्साहित, लिपिबद्ध, उद्भव, अतीत, अवधारणा, धात्वर्थ, निष्पत्ति, व्युत्पत्ति, पूर्वकालिक, निश्चितता, विश्वस्त, पारायण, अनुशीलन, जीवनवृत्त, इतिकर्तव्यता, प्रेरणास्पद, वर्तन, अवनति, पतनोन्मुख, गुणात्मक, ऋणात्मक, इतिवृत्ति, संस्करण, अनर्थोन्मुख, भद्र, श्रवणीय, अनुकरणीय, समावेश, विषदीकरण, उद्धृत, वेदार्थ, गाथा, नाराशंसी, पुनरावृत्ति, गतार्थ, प्रणीत, निरूपण, समकक्ष, आख्यायिका, अन्तर्गत, अन्तर्भाव, दुर्लभ, परिक्रिया, पुराकल्प, मनीषा, अपौरुषेय, भागवताचार्य, आख्यान, संज्ञापित, उद्गाता, संज्ञित, तत्पश्चात्, नाचिकेतोपाख्यान, सिद्धान्त, उपब्रंहण, मन्तव्य, वेदभाष्यकार, अन्वयव्यतिरेकात्मक, रोचनात्मक, फलश्रुत, अनुगुणित, अन्योन्याश्रय, दिग्दर्शन, पृष्ठभूमि आदि।

इतिहास शब्द अत्यंत प्राचीन है। ऋग्वेद से लेकर उपनिषद पर्यंत ऋषियों ने इतिहास शब्द का बार–बार नाम लिया है। छान्दोग्य उपनिषद के प्रथम अध्याय में ही देवर्षि नारद ने इतिहास की चर्चा की और बृहदारण्यक उपनिषद में याज्ञवल्क्य ने इतिहास शब्द को परमात्मा का निःश्वास कहा है। यथा–

'एतस्य महतो निःश्वसितम् ऋग्वेदः यजुर्वेदः सामवेदः आथर्वणः इतिहासः पुराणमचइते'।

व्यक्ति अपने अतीत को लेकर बहुत उत्साहित होता है। अतीत में घटित बातों को व्यक्ति वर्षों तक स्मरण में रखना चाहता है। इन्हीं स्मरण में आई बातों को संजोकर रखने तथा लिपिबद्ध करने के तरीके से ही इतिहास और पुराण जैसे ग्रंथों का उद्भव हुआ। भारत में अतीत के ज्ञान के लिए यदि कुछ स्रोत शेष थे तो उसे इतिहास और जो कुछ याद रहा उसे पुराण के रूप में लिपिबद्ध किया गया। प्राचीन काल में पुराण का सम्बन्ध इतिहास से इतना घनिष्ठ था कि दोनों सम्मिलित रूप से 'इतिहास–पुराण' नाम से अनेक स्थलों पर उल्लिखित होने पर भी लोगों में यह गलत धारणा–

प्रचलित है कि भारतीय लोग ऐतिहासिक कल्पना से सर्वथा अपरिचित थे, किन्तु यह अवधारणा पूर्णतः अप्रामाणिक एवं असत्य है। यास्क के कथनानुसार– 'ऋग्वेद में ही त्रिविध ब्रह्म के अन्तर्गत 'इतिहास–मिश्र' मन्त्र पाये जाते हैं।'[1] इतिहास के स्वरूप और प्राचीनता को जानने से पहले इतिहास की परिभाषा को जानना अति आवश्यक है। इसी सन्दर्भ में पूज्य गुरुदेव पद्मविभूषण जगद्गुरु आद्य रामानन्दाचार्य स्वामी श्री रामभद्राचार्य जी जीवनपर्यन्त कुलाधिपति (ज0रा0 दिव्यांग राज्य विश्वविद्यालय, चित्रकूट उ0प्र0) के शब्दों में इतिहास की परिभाषा निम्नलिखित है–

इतिहास शब्द की चार धात्वर्थों के अनुसार निष्पत्ति की जा सकती है–

1. 'अस गतिदीप्त्यादानेशु' (पा.धा.पा. 688)
2. 'हसे हसने' (पा.धा.पा. 721)
3. 'अस् भूवि' (पा.धा.पा. 1065)
4. 'असुक्षेपणे' (पा.धा.पा. 1209)

1. **अस गतिदीप्त्यादानेशु–**

प्रथम पक्ष में इतिहास शब्द के तीन खण्ड किये जा सकते हैं– इति+ह+आस। यहाँ 'इति' और 'ह' ये दो शब्द अव्यय हैं, 'अस्' धातु है। अच् अथवा घञ् प्रत्यय है। 'इति' शब्द प्रकार या इतिवृत्त का वाचक है। 'ह' शब्द का 'निश्चय' अर्थ है। अस् धातु के पाणिनी ने गति, दीप्ति और आदान अर्थ स्वीकारे हैं। इस दृष्टि से यहाँ व्युत्पत्ति निम्न प्रकार से समझनी होगी–

'इति वृत्तम् ह निश्चयेन आसयति गमयति इति इतिहासः'।

अर्थात् जो प्रस्ताव पूर्वकालिक घटना को निश्चय पूर्वक प्रस्तुत करता है, उसी विवरण को इतिहास कहते हैं। जैसे वाल्मीकीय रामायण श्रीराम की घटना को निश्चय पूर्वक प्रस्तुत करता है, अतः यह इतिहास है। महर्षि वाल्मीकि इस प्रस्ताव की निश्चितता पर विश्वस्त होकर कहते हैं–

'एवमेतत्पुरावृत्तमाख्यानं भद्रमस्तु वः।
प्रव्याहरत विस्रब्धं बलं विष्णो प्रवर्धताम्।।' (वा.रा.– 6/128/118)

अर्थात् यह ऐतिहासिक आख्यान इसी प्रकार से पूर्व में घटित हुआ। इसको तुम सब विश्वासपूर्वक मनन करो और पढ़ो। तुम्हारा कल्याण हो और इस श्रीराम के इतिहास का पारायण करने से भगवान विष्णु का भी बल बढ़े।

'अस्' धातु की दूसरे अर्थात् दीप्ति रूप अर्थ के अनुसार व्युत्पत्ति इस प्रकार होगी–

'इति वृत्तम् ह निश्चयेन असति दीप्यते येन स इतिहासः'।

अर्थात् इतिहास उस प्रेरणापूर्वक घटना के विवरण को कहते हैं जिससे अनुशीलन करने वाले मनुष्य का जीवनवृत्त प्रकाशित हो उठता है। इस व्युत्पत्ति मे इति ह पूर्वक अस् धातु से करण में घञ् प्रत्यय समझना चाहिए।

अस् धातु का तीसरा अर्थ है आदान (ग्रहण करना) और यहाँ इति का अर्थ है इति कर्तव्यता।

'इति कर्तव्यता ह निश्चयेन असन्ति आददते यस्मिन यस्माद्वा स इतिहासः'।

अर्थात् जिसमें या जिससे मनुष्य अपनी इतिकर्तव्यता को ग्रहण कर लेता है, उसी प्रेरणास्पद अतीत घटना क्रम को इतिहास कहते हैं इसलिए 'स्वयं साहित्य दर्पण' के रचयिता विश्वनाथ कहते हैं–

'रामादिवद वर्तितव्यम न रावणादिवत्'।

हमें श्रीराम आदि की भाँति वर्तन (आचरण) करना चाहिए रावण की भाँति नहीं।

इस प्रकार इति कर्तव्यता का निर्देश करने वाला विश्व में यदि कोई विवरण है तो वह है सर्वप्रथम वाल्मीकीय रामायण।

2. हसे हसने–

इतिहास की व्युत्पत्ति यदि हमें हसे धातु से करनी है तो वहाँ इति शब्द का अर्थ होगा, जीवन की अवनति पूर्ण घटना। इस व्युत्पत्ति में इति अव्यय, हसे धातु और अच् प्रत्यय होगा–

:इति विनाशशीलम् चरित्रम हसति यः स इतिहासः'।

अर्थात् इतिहास वह आदर्शपूर्ण घटनाओं का विवरण है जो व्यक्ति के पतनोन्मुख चरित्रों की हंसी उड़ाता है अर्थात् जो जीवन के गुणात्मक पक्षों का समर्थन करता है और ऋणात्मक पक्षों की निन्दा करता है। उसी प्रामाणिक घटना विवरण को इतिहास कहते हैं। जैसे वाल्मीकीय रामायण श्रीराम के इतिवृत्त की प्रशंसा करता है और रावण के इतिवृत्त की निन्दा करता है।

3. अस भूवि–

यदि भू अर्थात् सत्तार्थक अस् धातु से इतिहास की व्युत्पत्ति की जाय तो यहाँ इति का अर्थ होगा 'इतिवृत्त', ह का अर्थ होगा 'निश्चय' और अस् का अर्थ होगा 'सत्ता' और अच् प्रत्यय का अर्थ होगा 'भूतकाल'।

'इतिवृत्तम ह निश्चयेन आसीत् इति इतिहासः'।

यह घटना पूर्वकाल में इसी प्रकार प्रामाणिक रूप से घटी थी, इस प्रकार भूतकालिक प्रामाणिक घटना का विवरण इतिहास है। यहाँ भूतकालिक अधिकरणार्तक घञ् प्रत्यय से भी इतिहास शब्द को निष्पन्न किया जा सकता है–

'इतिवृत्तम ह निश्चयेन आसीत् यस्मिन् स इतिहासः'।

4. असुक्षेपणे–

चतुर्थ पक्ष में क्षेपणार्थक अस धातु से कर्ता में अच् प्रत्यय करके इतिहास शब्द को निष्पन्न किया जा सकता है–

'इति अवनति परम वृत्तम् अस्यति क्षिपति यः स इतिहासः'।

अर्थात इतिहास जीवन की श्रेष्ठ घटनाओं का वह संस्करण है जो अनुशीलन करने वाले मानव के जीवन के सभी अनर्थोन्मुख विचारों को फेंक देता है। इस कसौटी पर भी वाल्मीकीय रामायण सबसे अधिक खरा उतरता है। आज भी भद्र लोग महाभारत में नकारात्मक पक्ष और रामायण में सकारात्मक पक्ष के दर्शन करते हैं। इसीलिए भारतीय मानस की एक सामान्य अवधारणा यह है कि महाभारत के नायक श्रीकृष्ण का चरित्र केवल श्रवणीय है परन्तु रामायण के नायक श्रीराम का चरित्र श्रवणीय भी है और अनुकरणीय भी।

पूज्य गुरुदेव श्री रामभद्राचार्य जी की परिभाषा को पढ़ने के बाद एक ही बात समझ में आती है कि जितने भी प्राचीन साहित्यिक ग्रंथ हैं उनमें इतिहास शब्द का बारम्बार प्रयोग हुआ है। चाहे वे ग्रन्थ वेद हों, पुराण हों, उपनिषद हों या महाकाव्य। सभी साहित्यों में इतिहास शब्द का समावेश हुआ है। यास्क ने अपने निरुक्त में ऋचाओं के विषदीकरण के लिए ब्राह्मण ग्रंथों की कथाओं को 'इतिहासमाचक्षते' कहकर उद्धृत किया । इतना ही नहीं निरुक्त में वेदार्थ व्याख्या[2] के अवसर पर उद्धृत अनेक विभिन्न सम्प्रदायों में ऐतिहासिकों का भी एक पृथक स्वतन्त्र सम्प्रदाय था जिसका स्पष्ट परिचय 'इति ऐतिहासिकाः' निरुक्त के इस निर्देश से मिलता है। ऋग्वेद का गाथा नाराशंसी प्रकरण भी इतिहास का ही अंग है। पुराणों में इतिहास शब्द की पुनरावृत्ति हुई है। अथर्ववेद तथा कुछ पुराणों में पुराण शब्द इतिहास को गतार्थ करता है तो कभी इतिहास पुराण को गतार्थ करता है। कौटिल्य ने इतिहास के क्षेत्र में पुराण को ग्रहण किया है।[3] वायु पुराण, पद्मपुराणादि में भी इतिहास की व्याख्या की गई है।[4]

यास्क ने अपने निरुक्त में प्राचीन आचार्यों द्वारा प्रणीत कथाओं को इतिहास कहा है। उन्होंने वेदार्थ का निरुपण करने वाले विभिन्न सम्प्रदायों में ऐतिहासिकों के भी एक सम्प्रदाय का उल्लेख 'इति ऐतिहासिकाः' कहकर किया है। उनका यह भी कथन है कि वेदों का यथार्थ अर्थ समझने के लिए इतिहास पुराण का अध्ययन परम आवश्यक है। महर्षि वेदव्यास ने तो स्पष्ट ही कह दिया है।[5] राजशेखर

ने उपवेदों की गणना अथर्ववेद के समकक्ष की है। वहाँ इसे इतिहास–वेद कहा गया है और इसके अन्तर्गत पुराण, इतिवृत्त, आख्यायिका, उदाहरण, धर्मशास्त्र तथा अर्थशास्त्र का अन्तर्भाव माना है। पुराण इतिहास ग्रंथ हैं। इनके द्वारा वर्णित घटनाओं में इतिहास सम्बन्धी बातों की खोज सर्वथा दुर्लभ नहीं है।

इतिहास ग्रंथ दो प्रकार के होते हैं– परिक्रिया और पुराकल्प। **('परिक्रिया पुराकल्प इतिहासगतिर्द्विधा। स्यादेकनायका पूर्वा द्वितीया बहुनायका।)**'[6] प्रथम में चरित नायक केवल एक व्यक्ति होता है तथा द्वितीय में अनेक व्यक्तियों का चरित्र वर्णित होता है। रामायण प्रथम कोटि का (परिक्रिया) इतिहास ग्रंथ है तथा महाभारत द्वितीय कोटि (पुराकल्प) का इतिहास ग्रंथ है। कुछ इतिहासकार कल्हण की राजतरंगिणी को भारत का प्रथम इतिहास ग्रंथ मानते हैं जिसका खण्डन करते हुए पूज्य गुरुदेव श्री रामभद्राचार्य जी कहा करते हैं कि राजतरंगिणी से लगभग चार हजार वर्ष पूर्व भागवताचार्य ने इतिहास की चर्चा की और भारतीय मनीषा की दृष्टि में अपौरुषेय कहे जाने वाले वेद के ज्ञान काण्ड जिसे 'उपनिषद' भी कहा जाता है में 'इतिहास' शब्द का प्रयोग हुआ है और वाल्मीकीय रामायण के रचयिता महर्षि वाल्मीकि ने श्रीराम के आख्यान को इतिहास कहा।[7] महर्षि वाल्मीकि श्रीराम कथा को प्रथम तो आख्यान शब्द से संज्ञापित करते हैं, पुनः विश्राम में उसी को 'इतिहास' कहते हैं।[8] ठीक इसी प्रकार श्रीराम कथा के अन्तिम उद्गाता महाकवि गोस्वामी तुलसीदास ने सम्पूर्ण रामकथा को 'इतिहास' शब्द से संज्ञित किया है।[9] सर्वप्रथम ऋग्वेद तत्पश्चात् पुराण, उपनिषद, भागवत, महाकाव्यों आदि पुरातन ग्रंथों में 'इतिहास' शब्द का प्रयोग हुआ है। ब्रह्मा जी के चारों मुखों से 'इतिहास' निकला है। इसको पंचम वेद भी कहते हैं– 'इतिहास पुराणंच पंचमों वेद उच्चते'। पूज्य चरण श्री रामभद्राचार्य के कथनानुसार मूलरूप से इतिहास दो हैं– रामायण और महाभारत। संक्षेप में इन्हें 'राम' कहते हैं। 'रा' से रामायण और 'म' से महाभारत। महाभारत को साधारतया इतिहास कहा जाता है। वह स्वयं अपने को 'इतिहास', 'इतिहासोत्तम' कहता है।[10] महाभारत के अनुशासन पर्व के 71वें अध्याय में समग्र 'नाचिकेतोपाख्यान' प्राचीन इतिहास के रूप में वर्णित है।[11] हमारे यहाँ वैदिक सिद्धान्तों के उपबृहंण के लिए इतिहास की कल्पना की गई है। यास्क ने अपने निरुक्त में ऐतिहासिक सम्प्रदाय का भी उल्लेख किया है और उसके भी अनेक मन्तव्य उद्धृत किये हैं। इससे स्पष्ट है कि प्राचीन भारत में ऐसे विद्वानों की सत्ता थी जो ऐतिहासिक घटनाओं की जानकारी के लिए वेदों का उपयोग करते थे और वेदों में इतिहास की सत्ता स्वीकार करते थे। सायणाचार्य, महीधर आदि वेदभाष्यकारों ने भी अनेक वेद मंत्रों का अर्थ इतिहासपरक रूप में किया है।[12] वाल्मीकीय रामायण और महाभारत जैसे महाकाव्य संस्कृत साहित्य के दो ऐसे ग्रंथ है जो वैदिक युग के इतिहास के अनुशीलन के लिए बहुत उपयोगी हैं। इन महाकाव्यों में प्राचीन भारतीय अनुभूति बड़े ही सुन्दर एवं कलात्मक ढंग से सुरक्षित है। इन्हीं ग्रंथों को प्राचीन काल में 'इतिहास' कहा जाता था। वस्तुतः ये भारत के प्राचीन आर्यों के इतिहास कहे जाते हैं। चूँकि रामायण के आधार पर ही भारतीय चिन्तकों ने इतिहास की परिभाषाएँ निश्चित कीं इसलिए रामायण ही इतिहास लक्षणों का लक्ष्य बना। अतएव इतिहास के वे सभी लक्षण, इतिहास में ही संगठित हो जाते हैं जिनपर प्राच्य और प्रतीच्य विद्वानों ने अपना मस्तिष्क खपाया। इसलिए रामायण ही इतिहास है और इतिहास ही रामायण। यह अन्वयव्यतिरेकात्मक वक्तव्य यहाँ किसी भी प्रकार असंगत नहीं कहा जा सकता। वैदिक काल से ही इतिहास को गद्य और पद्य इन दोनों विधाओं में प्रस्तुत किया जाता रहा है। वेदों में तो इतिहास के कतिपय सूत्र मिलते हैं। पुराणों में रोचनात्मक फलश्रुत के लिए उनसे अनुगुणित आख्यानों का भी कथन हुआ है जिन्हें विम्ब विधान से प्रस्तुत किया गया परन्तु आदिकाव्य में ऐसा कुछ भी नहीं हुआ। यहाँ जो कुछ कहा गया वह सब कुछ अतीत में घटित हुआ इसलिए आदिकाव्य का इतिहास से अन्योन्याश्रय अथवा शरीर भाव कहना चाहिए।

वाल्मीकीय रामायण के आधार पर ही भारतीय इतिहास की पृष्ठभूमि बनी। इसलिए उसे ही इतिहास का आधार मानना चाहिए और वाल्मीकीय रामायण में वर्णित उत्कर्षों और अपकर्षों की क्रमिक कथा ही इतिहास की विकास यात्रा बनी। क्योंकि इतिहास जीवन के उन सभी पहलुओं का दिग्दर्शन कराता है जहाँ दुःख के साथ सुख, शोक के साथ हर्ष, विशाद के साथ प्रसाद जैसे मानवीय मूल्यों का उपबृहंण होता है। वाल्मीकीय रामायण इतिहास का पर्यायवाची है। वाल्मीकीय रामायण से ही इतिहास को प्रथम दृष्टि मिली। अतएव ऐतिहासिक विचारों का श्रीगणेश वाल्मीकीय रामयण को आधार मानकर ही हुआ। इतिहास की सम्पूर्ण परम्पराओं का जन्मस्थल वाल्मीकीय रामायण ही है। आज भी कौसल सभ्यता विश्व की सम्पूर्ण सभ्यताओं की निदर्शिका बनी हुई है। स्वयं महर्षि वाल्मीकीय कहते हैं–

'कोसलोनाममुदित स्फीतोजनपदोमहान'।
'निविष्टः सरयूतीरे प्रभूतधनधान्यवान्।' (वा0रा0–1/5/5)

वस्तुतः श्रेष्ठ आख्यानों के प्रामाणिक संस्करण का नाम इतिहास है। हमारे यहाँ उन आख्यानों को इतिहास कहा गया है जिसके पढ़ने और सुनने से व्यक्ति सदाचार परायण हो सके। अतः सद्घटनाओं के प्रामाणिक विवरण को इतिहास तथा दुर्घटनाओं के प्रामाणिक विवरण को हमारे यहाँ इतिवृत्त कहते हैं।

निष्कर्ष–

इस प्रकार प्राचीन साहित्यिक ग्रंथों के इन श्लोकों, मंत्रों एवं छन्दों को पढ़ने से एक बात तो अवश्य स्पष्ट हो जाती है कि इतिहास शब्द अति अर्वाचीन एवं भारतीयों की ही देन है। पाश्चात्य मनीषियों ने अपनी कुमनीषा के परिणामस्वरूप चिन्तन के कारण ही हमारे प्राचीन ग्रंथों जैसे रामायण आदि को प्रागैतिहासिक मान लिया। जबकि इस तथ्य में न कोई सार तत्व है और न ही इसकी पुष्टि में उनके पास कोई ठोस प्रमाण ही हैं क्योंकि इतिहास तो सृष्टि के साथ प्रारम्भ होने वाली घटना है। अतः विदेशियों द्वारा प्रागैतिहासिक कहना सर्वथा भ्रममूलक ही नहीं अनुचित भी है। अतएव यह स्पष्ट है कि इतिहास का स्वरूप अतिप्राचीन है। पुरातन साहित्यों में इतिहास की प्राचीनता स्वयं दृष्टव्य है।

सन्दर्भ (References)

1. त्रितं कूपेऽवहितमेतत् सूक्तं प्रतिबभौ।
   तत्र ब्रह्मोतिहास–मित्रमिड्मिश्रं गाथामिश्रं भवति।।
   –(निरुक्त 4/6 उद्धृत, उपाध्याय, आचार्य बलदेव, पुराण विमर्श, पृ0–4)।
2. ऋग्वेदं भगवोऽध्येमि यजुर्वेदं सामवेदमाथर्वणमितिहासपुराणं पन्चमं वेदानां वेदम्।।
   – (छान्दोग्य 7/1 उद्धृत, उपाध्याय, आचार्य बलदेव, पुराण विमर्श, पृ0–4)।
3. पुराणमितिवृत्तमाख्यायिकोदाहरणं धर्मशास्त्र चेति इतिहासः।।
   – (अर्थशास्त्र 1/5)
4. (1) अत्राप्युदाहरन्तीमितिहासं पुरातनम्।
   पुराणं परमं पुण्यं सर्वपापहरं शुभम्। (पद्मपुराण, उत्तरखण्ड 29/1)
   (2) इयं यो ब्राह्मणों विद्वानितिहासं पुरातनम्।
   श्रृणुयाच्छ्रावयेद्वापि तथाऽध्यापयतेऽपि च।। (वायु पुराण 103 अ. 46, 51)
   (3) इतिहासमिमं पुण्यं शाडिल्योऽपि मुनीश्वरः।
   पठते चित्रकूटस्थो ब्रह्मानन्दपरिप्लुतः।।
   (पद्मपुराण, उत्तरखण्ड, 193/190)
5. इतिहासपुराणाभ्यां वेदं समुपबृंहयेत्।
   बिभेत्यल्पश्रुताद् वेदो मामयं प्रहरिष्यति।। (महाभारत, आदि पर्व)
6. काव्य मीमांसा, प्रथम परिच्छेद,कारिका सं0–7।
7. ऐतादायुष्यमाख्यानम् पठन् रामायणम् नरः (वा.रा. 1/1/99)
8. 'पूजयंश्च पठंश्चैनमितिहासम् पुरातनम्। (वा.रा. 6/128/115)
9. 'कहेउ परम पुनीत इतिहासा' (रा.मानस 7/ 126/1)
   'यह इतिहास पुनीत अति उमहि कह्यो वृषकेतु (रा. मानस 1/152)
10. 'इतिहासोत्तमादस्माज्जायन्ते कविबुद्धया' (आदिपर्व. 2, 245 उद्धृत, उपाध्याय, आचार्य बलदेव, पुराण विमर्श, पृ0–7)।
11. उपाध्याय, आचार्य बलदेव, पुराण विमर्श, पृ0–265।
12. विद्यालंकार, सत्यकेतु, प्राचीन भारतीय इतिहास का वैदिक युग, पृ0–4।

Email- pratimashukla79@gmail.com, M.N.-9936664717

www.bohalshodhmanjusha.com Bohal Shodh Manjusha ISSN: 2395-7115
Impact Factor: 8.642 June 2026 Page No. : 240-245
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

ত্রৈলোক্যনাথ মুখোপাধ্যায় : কঙ্কাবতী উপন্যাসে সমাজবাস্তবতা

রতন বর্মন
(গবেষক)
মুঙ্গের বিশ্ববিদ্যালয়, বাংলা বিভাগ মুঙ্গের, বিহার - 811201

সারসংক্ষেপ:

ত্রৈলোক্যনাথ মুখোপাধ্যায় বাংলা সাহিত্যে ব্যঙ্গ কৌতুকের স্রষ্টা হিসেবে পরিচিত।কঙ্কাবতী (১৮৯২) উপন্যাসে উনিশ শতকের বাংলার সমাজজীবনের বাস্তব চিত্র প্রতিফলিত হয়েছে। উপন্যাসটিতে তৎকালীন সমাজের কুসংস্কার, অশিক্ষা, দারিদ্র্য, উচ্চ-নীচ ভেদাভেদ এবং নারীর অসহায় অবস্থার ছবি ফুটে উঠেছে। লেখক উপন্যাসে কল্পনা ও রূপকথার আবরণ ব্যবহার করলেও সমাজের নানা অসঙ্গতি ও মানুষের জীবনসংগ্রামকে বাস্তবধর্মীভাবে উপস্থাপন করেছেন। সাধারণ মানুষের সুখ-দুঃখ, শোষণ-বঞ্চনা এবং সমাজের প্রভাবশালী শ্রেণির আধিপত্য তা ক্রমশ প্রকাশ পেয়েছে। বিশেষ করে তৎকালীন সমাজে নারীজীবনের সীমাবদ্ধতা,অবহেলা ও সামাজিক অনাচারের বিরুদ্ধে লেখকের সচেতন দৃষ্টিভঙ্গি লক্ষ করা যায়। ফলে কঙ্কাবতী শুধু একটি কল্পকাহিনি নয়, বরং তা সমকালীন সমাজবাস্তবতার একটি গুরুত্বপূর্ণ সাহিত্যিক দলিল হিসেবে বাংলা সাহিত্যে পরিগণিত হয়।

ভূমিকা:

ত্রৈলোক্যনাথ মুখোপাধ্যায় একজন বাঙালি সাহিত্যিক। বাংলা সাহিত্যের ইতিহাসে তিনি ব্যঙ্গকৌতুক রসের স্রষ্টা হিসেবে পরিচিত। তিনি জন্মগ্রহণ করেন ২২শে জুলাই ১৮৪৭ সালে চব্বিশ পরগণা জেলার রাহুতা গ্রামে।ত্রৈলোক্যনাথ মুখোপাধ্যায়ের স্কুল শিক্ষকতার মধ্য দিয়ে কর্মজীবনের সূচনা ঘটে। পরবর্তীকালে তিনি বিভিন্ন ধরনের পেশার সঙ্গে নিযুক্ত হন এবং ভারত সরকারের প্রতিনিধি হিসেবে ইউরোপের একাধিক রাষ্ট্রে কর্মসূত্রে কিছুকাল অবস্থান করেন।তাঁর

রচিত গ্রন্থগুলি হল - ভারতের শিল্পদ্রব্য সম্পর্কে তথ্য সংগ্রহ করে তিনি 'A Rough List of Indian Art Manufacturers' নামে একটি বর্ণনামূলক পুস্তিকা (১৮৮১-১৮৮২) রচনা করেন। কয়েক বছরের মধ্যে তাঁর 'A Descriptive Catalogue of Indian Products '(১৮৮৮), 'A Handbook of Indians Products' (১৮৮৮), এবং ভ্রমণ কাহিনী 'A Visit to Europe' (১৮৮৮)।

ত্রৈলোক্যনাথ মুখোপাধ্যায় রচিত বাংলা গ্রন্থগুলি হল - 'কঙ্কাবতী '(১৮৯২), 'সেকালের কথা' (১৮৯৪), 'ফোকলা দিগম্বর' (১৯০০), ময়না কোথায়?', (১৯০৪), 'পাপের পরিণাম' (১৯০৮), 'ভূত ও মানুষ' (১৮৯৬), 'ডমরুচরিত' (১৯২৩)। ত্রৈলোক্যনাথ মুখোপাধ্যায় ১৮৯৬ সালে পেনশন গ্রহণ করেন। ১৯১৯ সালের ৩ নভেম্বর (১৭ কার্তিক ১৩২৬) পুরীর সমুদ্রতীরে মৃত্যু হয়।

সূচক শব্দ: কঙ্কাবতী, ব্যঙ্গ-বিদ্রূপ, পরাবাস্তবতা, উদ্ভট রস।

বিষয় প্রবর্তন:

বাংলা সাহিত্যের ইতিহাসে উনিশ শতক ছিল নবজাগরণের যুগ। এই সময়ে ততৎকালীন সমাজ জীবনের বিভিন্ন ধরনের কুসংস্কার, অসঙ্গতি, দারিদ্র্য, শ্রেনীবৈষম্য ও মানবিক সংকট সাহিত্যিকদের রচনায় বিশেষভাবে প্রতিফলিত হয়। বাংলা উপন্যাসের অন্যতম প্রধান সাহিত্যিক ত্রৈলোক্যনাথ মুখোপাধ্যায় রচিত "কঙ্কাবতী" বাংলা সাহিত্যে একটি উল্লেখযোগ্য সামাজিক উপন্যাস। যদিও এতে রপকথার উপাদান ও কল্পনার মিশ্রণ রয়েছে, তবুও এর অন্তর্নিহিত বিষয়বস্তু সমকালীন সমাজের বাস্তবচিত্র অত্যন্ত সুস্পষ্টভাবে ফুটে উঠেছে।

সমসাময়িক লেখকদের মধ্যে ত্রৈলোক্যনাথ মুখোপাধ্যায় ব্যতিক্রমী ব্যক্তি ছিলেন।তিনি রুপকথা, হাস্যরস, উদ্ভট রস, ব্যঙ্গ-বিদ্রূপের মধ্য দিয়ে সমাজের বিভিন্ন দিককে রচনায় তুলে ধরেছেন। আর এইখানেই তিনি তৎকালীন লেখকদের থেকে আলাদা। একজন সমাজ সচেতন, সমাজ দরদী মানুষ ও লেখক। ত্রৈলোক্যনাথ মুখোপাধ্যায়ের লেখার একটি অন্যতম বৈশিষ্ট্য হলো ব্যঙ্গরস। তাঁর বিভিন্ন উপন্যাস ও ছোটোগল্পে তিনি ব্যঙ্গের মাধ্যমে সমাজের অসঙ্গতিগুলোকে উন্মোচন করেছেন। সমাজের ভণ্ডামি, কুসংস্কার, লোভ, স্বার্থপরতা ও অন্যায় আচরণকে তিনি কৌতুক ও ব্যঙ্গের মাধ্যমে প্রকাশ করেছেন। ফলে পাঠক যেমন আনন্দ লাভ করে, তেমনি সমাজের বাস্তব সমস্যাগুলিও উপলব্ধি করতে পারে। সাহিত্য-সাধক-চরিত্রমালা' গ্রন্থে ব্রজেন্দ্রনাথ বন্দ্যোপাধ্যায় বলেছেন - "ত্রৈলোক্যনাথকে আদর্শ করিয়া পরবর্তীকালে বাংলাদেশে ব্যঙ্গ ও আজগুবি রসের ক্ষেত্রে কয়েকজন সাহিত্যিক খ্যাতনামা হইয়াছেন; কিন্তু দুঃখের বিষয়, ত্রৈলোক্যনাথ স্বয়ং তাহার যথাযোগ্য আসন পান নাই।.........যদি কেহ তাঁহার 'কঙ্কাবতী', 'ভূত ও মানুষ', 'ডমরুচরিত' প্রভৃতি পুস্তকগুলি পাঠ করেন, তাহারা নিঃসংশয়ে বাংলা সাহিত্যে এক সম্পূর্ণ নতুন রসের সন্ধান পাইবেন, বাংলা ভাষায় এমন আজগুবি ও ভুতুড়ে গল্প আর কেহ রচনা করিতে পারেন নাই। ত্রৈলোক্যনাথের ভাষা ও ভাব সম্পূর্ণ তাহার নিজস্ব। ইংরেজি শিক্ষায় বিশেষভাবে শিক্ষিত এমন একজন পন্ডিত ব্যক্তি যে কেমন করিয়া এমন সহজে সরল বাংলা গল্প লিখিতে পারিলেন, তাহা ভাবিলে বিস্মিত হইতে হয়। যাহার কর্ম্মোদ্যম ও পান্ডিত্য একদিন 'বিশ্বকোষ' রচনায় নিয়োজিত হইয়াছিল, তিনিই বাংলাদেশের বালক-বালিকা এবং বৃদ্ধ-

বৃদ্ধাদের অবসর বিনোদনের জন্য এমন বিচিত্র কাহিনী সৃষ্টি করিয়া গিয়েছেন, যাহার জুড়ি আজ পর্যন্ত মিলিল না। ত্রৈলোক্যনাথের রচনায় বিশেষত্ব এই যে এইগুলি সরস হইয়াও নির্দোষ।"

সমাজ বাস্তবতা ও সাহিত্য বাস্তবতার স্বরুপ:

মানুষ সামাজিক জীব।সমাজে তার বাস, যে সমাজে সে বসবাস করে তার থাকে চিহ্নিত করার মতো কতগুলো বিশেষ বৈশিষ্ট্য। সেই মৌলিক বৈশিষ্ট্যগুলোর ওপর ভিত্তি করে অবয়ব পায় বিদ্যমান সমাজের চেহারা ও চরিত্র। সমাজ বাস্তবতাই সমাজচেতনার স্বরুপ নির্ধারণ করে।সাহিত্য তার নিজস্ব ভঙ্গিতে এই বাস্তবতার স্বরুপ আমাদের সামনে উন্মোচিত করে।

সমাজবাস্তবতা বলতে বোঝায় সমাজের প্রকৃত অবস্থা যা মানুষের জীবনযাপন, সামাজিক, অর্থনৈতিক অবস্থা, কুসংস্কার, শোষণ-বঞ্চনা ও নৈতিক সংকটকে বাস্তবভাবে উপস্থাপন করা। সাহিত্যিক যখন সমাজের প্রকৃত রূপকে অলঙ্কারহীনভাবে তুলে ধরেন, তখন তা সমাজবাস্তবতার পরিচয় বহন করে। কঙ্কাবতী উপন্যাসে লেখক ব্যঙ্গ-বিদ্রূপ মধ্য দিয়ে সমাজবাস্তবতার চিত্র প্রকাশ করেছেন।

ত্রৈলোক্যনাথ মুখোপাধ্যায়ের "কঙ্কাবতী" উপন্যাসে সমাজ বাস্তবতা:

ত্রৈলোক্যনাথ মুখোপাধ্যায় "কঙ্কাবতী" উপন্যাসটি সমগ্র বাংলা সাহিত্যের এক অভিনব রচনা। "কঙ্কাবতী" উপন্যাসটি এক সামাজিক ব্যঙ্গমূলক উপন্যাস। উপন্যাসটিতে মোট ষোলটি অধ্যায়ে বিন্যস্ত রয়েছে। 'কঙ্কাবতী'-র প্রথম খন্ড গার্হস্থ জীবনমূলক এবং দিতীয় খন্ড অবাস্তব কল্পনা প্রধান। এই উপন্যাস রচনার পেছনে পাশ্চাত্য লেখক লুইস ক্যারলের "Alice's Adventures in Wonferland" (1865) নামক রুপকথাধর্মী রচনার ছায়াপাত রয়েছে।

উপন্যাসটিতে অলৌকিক ও রুপকথার মাধ্যমে সমাজ বাস্তবতার এক অনন্য প্রতিচ্ছবি দেখতে পাওয়া যায়। এখানে সমাজের কাহিনীগুলো যেভাবে ধরা পরেছে তা না বললেই নয়।আমরা সবাই জানি যে সাহিত্য হল সমাজের দর্পণ।' কঙ্কাবতী 'উপন্যাসটিতে উনিশ শতকের গ্রামীণ সমাজের পরিকাঠামো ধরা পরেছে। এখানে তৎকালীন সমাজের শ্রেণীবৈষম্য, উচ্চবর্ণের জমিদার, সমাজপতিদের অত্যাচার অনাচার, শাপের দোহাই দিয়ে অশাস্ত্রীয় কার্যকলাপ ইত্যাদি ফুটে উঠেছে।

কঙ্কাবতী উপন্যাসে সমাজের ধনী ও দরিদ্র শ্রেণির মধ্যে বৈষম্য স্পষ্টভাবে প্রকাশিত হয়েছে। উচ্চবিত্ত শ্রেণি তাদের ক্ষমতা ও সম্পদের জোরে নিম্নবিত্তদের ওপর আধিপত্য বিস্তার করে। দরিদ্র মানুষেরা সামাজিক মর্যাদা থেকে বঞ্চিত হয় এবং নানা ধরনের শোষণের শিকার হয়। লেখক দেখিয়েছেন যে সমাজে অর্থ ও ক্ষমতার ভিত্তিতেই মানুষের মূল্যায়ন করা হয়। সমাজের এই বৈষম্য লেখক ব্যঙ্গ-বিদ্রূপের মধ্য দিয়ে কঠিন বাস্তবতা হিসেবে উপন্যাসে প্রতিফলিত করেছেন।

এই উপন্যাসে আমরা দেখি তনু রায়কে,তিনি কঙ্কাবতীর পিতা; কঙ্কাবতীর জীবনের ভালো-মন্দের সঙ্গে জড়িত। তিনি টাকার লোভে আশি বছরের বৃদ্ধের সঙ্গে তার মেয়ের বিয়ে দেওয়ার

চেষ্টা করেন।প্রথা অনুযায়ী নিজের বিয়ের সময় পাত্রীপক্ষকে পণ দিয়েছে,তাই নিজের মেয়েদের বেলায় মেয়েদের ভবিষ্যৎ থেকে তার কাছে অর্থলোভটাই বড়ো হয়ে উঠেছে। তার দুই মেয়ে বিধবা হয়ে বাড়িতেই আছে তবুও তার হুঁশ নেই। বরং তিনি তার স্ত্রীকে সান্ত্বনা দিয়ে বলেন-----
"বিধাতার লেখা কেহ মুছিতে পারে না।"

গ্রামে সমাজ পতিদের অন্যতম তনু রায়। তার দলে পরে জমিদার জনার্দন চৌধুরী, ষাড়েশ্বর। টাকার লোভে অন্ধ দুই পিতা-পুত্র। এই নির্লজ্জ অর্থলোভের চরম প্রকাশ বাঘের সঙ্গে কঙ্কাবতীর বিবাহের রুপকের মধ্য দিয়ে। তার মেয়ে কঙ্কাবতীর কণ্ঠে পিতার প্রতি ধিক্কার ধ্বনিত হয়েছে।

জনার্দন চৌধুরী তো রুপোর টাকা দিতেন, বাঘ দিল প্রচুর স্বর্ণমুদ্রা রুপক -এর তাৎপর্য এই যে, টাকার লোভে তনু রায় হিংস্র জন্তুর হাতেও মেয়েকে সমর্পন করতে পারেন। এখানে এই সামাজিক দৃষ্টিভঙ্গি ত্রৈলোক্যনাথ মুখোপাধ্যায় রুপকের মধ্য দিয়ে তুলে ধরেছেন। আমরা উপন্যাসের আর এক জায়গায় সুস্পষ্টভাবে দেখতে পারব যে তনু রায়ের কৃপনতা কতটা নিচে নেমে গেছে। তার মেয়েকে বিদায়ের সময় ও মায়ের মৃত্যুকালে। তার মায়ের ভালো কাপড়খানা খুলে নিয়ে ছেঁড়া ন্যাকড়া জড়িয়ে দিয়েছিলেন।

ত্রৈলোক্যনাথ মুখোপাধ্যায়ের উপন্যাসে নারীর প্রাধান্যই বেশি লক্ষ্য করা যায়। উপন্যাসে দেখতে পাব নারীর অবস্থান ও তার সামাজিক সংকটও বাস্তবতার সঙ্গে উপস্থাপিত হয়েছে।তৎকালীন সময়ে নারীরা পুরুষতান্ত্রিক সমাজের দ্বারা প্রতিনিয়ত নানা বঞ্চনার শিকার ছিল। তাদের স্বাধীনতা ছিল সীমিত এবং সামাজিক নিয়ম কানুনের বেড়াজালে তাদেরকে আবদ্ধ থাকতে হতো। নারীরাই যেন সমাজে বেশি অবহেলিত, আক্রান্ত। তাই ত্রৈলোক্যনাথ মুখোপাধ্যায়ের সহানুভূতিও নারীর প্রতি একটু বেশি ছিল। রুপকথার কঙ্কাবতীকে তিনি নতুন করে নির্মাণ করেছেন। তাই কঙ্কাবতীর মধ্যে বাস্তবতা ও পরাবাস্তবতার মিশ্রণ ঘটিয়েছেন। জনার্দন চৌধুরীর সঙ্গে বিয়ে হলে তার জীবনে হয়তো নেমে আসত দুঃখ দুর্দশা। কিন্তু রুপকথার রাজকন্যাদের করুন পরিণতি ঘটে না। রাজকুমার এসে রাজকুমারীকে উদ্ধার করে। এখানে রাজকুমার হলো খেতু। খেতুর সঙ্গে কঙ্কাবতীর বিয়ের মাধ্যমে সমস্ত অশুভ শক্তির পরাজয় ঘটে। বাস্তবে কঙ্কাবতীদের জীবনে হয়তো সুখকর পরিণতি ঘটেনি কিন্তু রুপকের মধ্য দিয়ে ত্রৈলোক্যনাথ মুখোপাধ্যায় কঙ্কাবতীদের জীবন সুখকর করতে চেয়েছেন। তিনি গ্রাম্যজীবনের কাহিনী তুলে ধরে বাস্তবতা দেখাতে চেয়েছেন। বাস্তব জগতে কঙ্কাবতীকে সামাজিক নিপীড়ন সহ্য করতে হয়েছে, তাই বলাই যেতে পাতে উনিশ শতকে সমাজ জীবনে বন্দিনী নারীসত্তা কঙ্কাবতীর মধ্য দিয়েই সুস্থ স্বাভাবিক জীবনের স্বাদ পেয়েছে।

উপন্যাসে দরিদ্র মানুষের জীবনসংগ্রামের বাস্তব চিত্র অত্যন্ত মর্মস্পর্শীভাবে উপস্থাপিত করেছে লেখক । সমাজের নিম্নবিত্ত মানুষেরা কীভাবে প্রতিদিন জীবিকার জন্য সংগ্রাম করে, অভাব-অনটনের মধ্যে দিন কাটায় এবং সামাজিক অবহেলার শিকার হয়, তা লেখক তুলে

ধরেছেন। কঙ্কাবতীর জীবন ও তার পারিপার্শ্বিক পরিবেশে দরিদ্র মানুষের দুঃখ-কষ্টের চিত্র ফুটে উঠেছে। এই চিত্র উনিশ শতকের বাংলার সাধারণ মানুষের বাস্তব অবস্থারই প্রতিফলন।

ত্রৈলোক্যনাথ মুখোপাধ্যায় রচিত ছোটোগল্প গুলিতেও তিনি রুপকথার পরাবাস্তবতা বা অতিপ্রাকৃতের আড়ালে তুলে ধরেছেন সমাজের দারিদ্রতা, ক্ষুদা,হৃদয়হীনতা, ধর্মীয় সংস্কার,রীতিনীতি, উঁচু-নীচু ভেদ প্রভৃতি দিকগুলোকে। বিভিন্ন ছোটোগল্পে তিনি রুপকথা, উদ্ভট রস,ব্যঙ্গ-বিদ্রূপের বা হাস্যরসের মাধ্যমে গল্পগুলোকে শুধুমাত্র মমনোগ্রাহী করেননি, এর মাধ্যমে তুলে ধরেছেন ততৎকালীন সমাজের বাস্তবতাকে। আঘাত হেনেছেন,ব্যঙ্গ-বিদ্রূপ করেছেন সমাজের অন্ধবিশ্বাস, রীতিনীতি, ধর্মবিশ্বাসের উপর। যেমন 'ডমরুচরিত' এর স্বদেশী কোম্পানি, ভিখু ডাক্তার 'চঞ্চলার গাইগরু' ইত্যাদি গল্পে সমাজ বাস্তবতার বিভিন্ন দিকগুলিকে তুলে ধরা হল।

'স্বদেশী কোম্পানি' গল্পে বাস্তব অবাস্তবের সংমিশ্রণে একটি কাহিনী পরিবেশন করেছেন লেখক। কিন্তু এর মধ্য দিয়েই তুলে ধরেছেন মধ্যবিত্তদের আর্থিক অনিশ্চয়তার সুযোগ নিয়ে একটি কোম্পানি খোলার গল্পেবং তাতে সাধারণ মানুষ্ প্রতারিত হওয়ার গল্প।

'ভিখু ডাক্তার' গল্পে রয়েছে কিছু গ্রামীণ ডাক্তারের অবিশ্বাস্য চিকিৎসা পদ্ধতির প্রসঙ্গ। অবিশ্বাস্য কাহিনীর সঙ্গে শেষে তিনি এও বলেছেন যে রোগ ভালো হওয়ার পর ডাক্তাদের উপেক্ষা করা হত।

'চঞ্চলার গাইগরু' একটি উদ্ভট রসের গল্প।এখানে অদ্ভুত কাহিনির দ্বারা গল্প উপস্থাপন করা হয়েছে। তার সঙ্গে এও বলা হয়েছে ডমরুধর যে বিপদে পরেছে তার মুখ্যকারণ সে গতবছর তার বাড়ির পূজোতে ত্রুটি করেছিল।

এরপর 'ভূত ও মানুষ' গল্পগ্রন্থের অন্তর্গত 'লল্লু' গল্পে বিভিন্ন অধ্যায়ে তৎকালীন সমাজে ইংরেজ শাসনকালে মানুষের আফিম সেবনের কথা।

উপসংহার:

পরিবর্তনশীল সমাজে শিক্ষার অগ্রগতির সঙ্গে মানুষের সামাজিক জীবনের কিছু পরিবর্তন ঘটলেও বর্তমান সমাজেও উচ্চবিত্ত সমাজপতিদের দ্বারা সাধারণ জনগণ প্রতিনিয়ত শোষিত হচ্ছে।সমাজে কুসংস্কার, জাতিভেদ অনেকাংশে কমে গেলেও তা পুরোপুরি নিশ্চিহ্ন করা যায়নি। অত্যাধুনিক যুগে বসবাস করলেও সমাজের ছোট-বড় অনেক কলুষতাকে আমরা পুরোপুরি বর্জন করতে পারিনি। সামাজিক অর্থনৈতিক পরিবর্তনের সঙ্গে সঙ্গে শুধুমাত্র সামাজিক শোষণের পদ্ধতি বদলে যায়,তাই সমাজের নিম্নবিত্ত শ্রেণি আজও ঘরের ভেতরে বাইরে উভয় স্থানে লাঞ্চিত হতে হয়। ত্রৈলোক্যনাথের যুগের সমাজের সঙ্গে বহিরঙ্গে মিল না থাকলেও সমাজের অন্তঃস্থলে বৃহৎ কোনো পরিবর্তন সাধিত হয়নি। লেখক তৎকালীন সময়ে যে সকল সামাজিক সমস্যার সম্মুখীন হয়েছিলেন তা আজও সমাজের বিভিন্ন স্তরে বিদ্যমান। তাই একথা নিঃসন্দেহে বলা যায় কথাকার ত্রৈলোক্যনাথ মুখোপাধ্যায় যে সময়ে যে সকল সমস্যার উল্লেখ ও তার থেকে উত্তরণের প্রচেষ্টা করেছিলেন তা আজও সমানভাবে প্রাসঙ্গিক।

গ্রন্থপঞ্জি :

১)মুখোপাধ্যায়,ত্রৈলোক্যনাথ,- কঙ্কাবতী, ওরিয়েন্ট বুক কোম্পানি,কলিকাতা-১২
২)বন্দ্যোপাধ্যায় ;সরোজ-বাংলা উপন্যাসের কালান্তর, দে'জ পাবলিশিং,কল-৭৩;ডিসেম্বর - পৃ-৩২২
৩) বন্দ্যোপাধ্যায়, শ্রীকুমার- বঙ্গসাহিত্যে উপন্যাসের ধারা; মডার্ণ বুক এজেন্সি প্রাইভেট লিমিটেড - কল-৭৩১৯৮৪;সপ্তম সংস্করণ
৪)মুখোপাধ্যায়, অরুণকুমার-কালের প্রতিমা-দে'জ পাবলিশিং,১৩ বঙ্কিম চ্যাটার্জি স্ট্রিট, কল্কাতা-৭০০০৭৩
৫)আচার্য্য,দেবেশ কুমার-বাংলা সাহিত্যের ইতিহাস, আধুনিক যুগ, ২য় খন্ড
৬)বন্দ্যোপাধ্যায় অসিত কুমার - বাংলা সাহিত্যের সম্পূর্ণ ইতিবৃত্ত-মডার্ণ বুক এজেন্সি প্রাইভেট লিমিটেড-১০ বঙ্কিম চ্যাটার্জি স্ট্রিট - কল-৭০০০৭৩

Mobile No.: 6296515557
Email Id. Ratanbarman303@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com Bohal Shodh Manjusha ISSN: 2395-7115
Impact Factor: 8.642 June 2026 Page No. : 246-248
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

रामचरित मानस की प्रासंगिकता

डॉ० रीनू चतुर्वेदी
207 भाटागांव सिटी होंडा शोरूम के पास रायपुर छत्तीसगढ़

भूमिका –

हिन्दी साहित्य में हर के काव्य जो समय के साथ अपने उपयोगिता को बनाए रखते हैं वे काव्य ही प्रासंगिक एवं प्रषंसनीय होते हैं इस क्रम में रामचरित मानस का नाम सर्वप्रथम आता है क्योंकि ये आज के समय में हर मनुष्य एवं पाठक के हृदय में अपना छाप छोड़े हुए हैं किसी भी काव्य रचना की यह बड़ी विषेषता होती है कि वह लम्बे समय तक प्रासंगिक हों। ये विषेष लोकप्रियता मानस में है। आज के समय पर रामचरित मानस हर वर्ग का पाठक पढ़ना पसंद करता है। कारण कि इसमें उपदेष मात्र ही नहीं है बल्कि ये प्रायोगिक भी है। रामचरित मानस में षास्त्र भी हैं उतना ही लोक भी षास्त्र प्रमाण के रूप में अतिष्योक्ति नही है कि अगर हम कहें कि षास्त्र का निचोड़ हमारे मानस में विद्यमान हैं, हमें मानस धर्म से परिचय कराती हैं तो मर्यादा का पाठ पढ़ाती है।

मर्यादा भी ऐसी नही जो जटिल हो बल्कि ऐसी जो सहज हों। रामचरित मानस में ''प्रेम के विविध प्रकार तो हैं ही'' करुणा का श्रोत भी प्रवाहित होता है।

इन सबके होते हुए रामचरित मानस की प्रासंगिकता का होना कोई बड़ी बात नही है यह महाकाव्य जितना आज प्रासंगिक है उतना आगे भी रहेगा और तब भी था जब इसकी रचना की गई थी।

स्पष्टतः रामचरित मानस चिरकाल तक प्रासंगिक रहेगा। क्योंकि यह यथार्थ के करीब हैं इसमें सद्भावना, सौहार्द्र हैं। यही कारण है कि ये प्रासंगिक रहेगा।

रामचरित मानस की प्रासंगिकता–

रामचरित मानस में गुण–दोष, प्रेम–करूणा, सत्य यथार्थ सबका बराबर रूप से उल्लेख हैं तो प्रासंगिक भी यह अवष्य ही होगा। सबसे बड़ी बात जो इसमें देखने को मिलती हैं वह है आपसी समझ व प्रेम जिससे एक राज्य का राजा अर्थात (राम) सम्पूर्ण विष्व के राजा बन गये।

''सिय राम मय सब जग जानी,
करहु प्रणाम जोरि जुग पाहीं।''

(बालकाण्ड)

तुलसीदास जी संकेत के माध्यम से उद्घोषणा कर देते हैं कि सम्पूर्ण विष्व ही राममय हैं पर इस सम्पूर्ण विष्व के राम बनने के पीछे इनके परिवार का भी विषेष योगदान रहा है। और इसके (मानस) की नारियां भी अपना विषेष योगदान रखती हैं। क्योंकि इसमें पारिवारिक सभ्यता को भी दर्षाया गया है परिवार घर की स्त्रियों से हीं चलता हैं।

'' जन्में एक संग सब भाई, भोजन सपन के लिए लरिकाई''

(बालकाण्ड)

भाई से भाई का प्रेम का जो चित्रण किया गया हैं आज के समय पर वो सबसे ज्यादा प्रासंगिक हैं कारण कि ज्येष्ठ भ्राता राम के प्रति जो आदर्ष प्रेम भरत का था अगर वे आज के समय पर प्रेम मात्र की भाईयों के बीच रहे तो बहुत हैं भगवान श्रीराम वचनबद्धता के कारण राज्य का त्याग करते हैं तो भरत प्रेमवष राज्य नहीं करना चाहते वे भले एक साथ ही जन्म लिए हो साथ में भोजन किया हो एक ही गुरूकुल मे अध्ययन किए और माता की आज्ञा से राज्य से निष्कासित करने पर भी न राम को क्रोध आता न ही भाई के प्रति निष्पक्ष उत्पन्न होती इसके उलट वे भरत को राज्य करने की आज्ञा देते हैं।

''समाचार तेहि समय सुनि सीय उठी अकुलाई
जाई सासु पद कमल जुग बंदि बैठि सिर नाई''

(अयोध्या काण्ड)

एक पत्नी बहु की क्या मर्यादा होती है यह कोई माता सीता से सीखे राम को किसी भी अपराध के कारण वन नहीं मिल रहा था बल्कि किसी बहकाबें में आकर माता कैकई के मंद मति या बुद्धि के काम न करने से मिल रहा था फिर भी इसमें प्रतिवाद नहीं हुआ किसी ने भी प्रतिवाद करना सहीं नही समझा यहा तक की अपने समय के सबसे विद्वान राजा जनक की पुत्री सीता जी ने भी नहीं (यह जनक का नाम इसलिए लिया गया की कोई सीता माता को अबला न समझे) मानस में है तो सिर्फ संवाद जो कि मर्यादा एवं आदर्ष गुणों से निहित है, इतना सब कुछ हो जाने पर भी माता सीता ने किसी से दोष नही रखा बल्कि अपने सास (माता कौषल्या) से खुद वन जाने के लिए आज्ञा माँगती हैं निष्ठुरता के साथ नहीं विनम्रता पूर्वक उनके चरणों में अपना षीष रखकर उन्हें किसी से षिकायत नहीं हैं बल्कि वे स्वयं अपराध बोध महसूस करती हैं। ''जहाँ नारी की विनम्रता हैं वहां पर मानस की प्रांसगिकता अपने आप ही आ जाती हैं'' मानस के प्रांसगिकता का यह एक अद्‌भुत प्रमाण हैं।

''धरम न दूसर सत्य समाना, आगम–निगम पुरान बखाना''

(बालकाण्ड)

आज के समय पर धर्म का आड़ लेकर न जाने क्या–क्या कार्य किए जा रहें हैं व्यक्ति सत्य को लेकर उलझन में रहता हैं उसका भी सटीक उत्तर इस बालकाण्ड में ही विदित हैं कि आपका सत्य ही आपका धर्म हैं, अगर धर्म को सही ढंग से कर लिया गया तो वहीं सत्य के समान ही आपको फल देगा और प्रमाण के तौर पर गोस्वामी तुलसीदास जी ने षास्त्र एवं पुराण का प्रमाण दिया हैं अगर रचना करने वाला ही सहज हो, जो हर बात को प्रमाण के साथ व्यक्त कर रहा हैं तो रचना तो प्रासंगिक होगी ही। वास्तव में रामचरित मानस जीवन को प्रसंषनीय बनाने का वह मजबूत आधार हैं जो हर विकट परिस्थिति को झेल सकता हैं। क्योंकि रामचरित मानस स्फूर्ती, साहस, धैर्य का अद्‌भुत समावेष किए हुए हैं। यह मनुष्य के मस्तिष्क में आदर्ष व मर्यादा का संचार करता हैं। रामचरित मानस प्रासंगिक इसलिए भी हैं क्योंकि इसकी भाषा सरल है (अवधी भाषा में लिखा गया है) जिससे यह किसी भी वर्ग के पाठकों को पढ़ना आसान हैं। महानगरों के पाठक वर्ग से लेकर ग्रामीण क्षेत्र के व्यक्ति भी इसे सहजता से पढ़ सकते हैं और इसके आदर्ष जीवन को अपने जीवन पर उतार सकते हैं। यही कारण है कि यह महाकाव्य रामचरित मानस आज के समय पर प्रासंगिक हैं और आगे भी रहेगा।

उपसंहार–

राम–नाम की अर्जी जब मैं आठो याम लगाऊँ,
ग्रह नक्षत्र बिगड़ जाए तो किसका नाम लगाऊँ
आघातों से आहत है मन प्रभु जो तुम्ही बताओं
कैसे इन पीड़ाओं पर पूर्ण विराम लगाऊँ।।

बिल्कुल सत्य बात हैं कि जीवन में जब भी कोई कठिन समस्या आती हैं तो राम–नाम का उच्चारण मात्र ही काफी होता हैं उस समस्या से लड़ने के लिए क्योंकि राम ने भी तो संघर्ष ही किया हैं। अपने सत्य

को स्थापित करने के लिए रामचरित मानस में सब कुछ हैं सबका स्वीकार हैं। सबके प्रश्नों का उत्तर हैं। यही सिद्ध करता हैं कि आज के समय के लिए रामचरित मानस कितना उपयोगी है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचीः–

1. **रामचरित मानस (बालकाण्ड चौपाई)**
2. **रामचरित मानस (आयोध्या काण्ड चौपाई)**
3. **रामचरित मानस (आयोध्या काण्ड चौपाई)**

मोबाइल :- 9755590287

ईमेल :- preenu@1710@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com Bohal Shodh Manjusha ISSN: 2395-7115
Impact Factor: 8.642 June 2026 Page No. : 249-254
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

नई कहानी में आधुनिकताबोध : यथार्थ और अंत:संघर्ष

अर्पिता बिस्वाल
शोधार्थी, हिंदी-विभाग,
दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

शोध सार

हिंदी कथा-साहित्य के विकासक्रम को देखें तो एक बात स्पष्ट तौर पर दिखाई देता है कि नई कहानी आंदोलन ने साहित्य की संवेदना को एक नया स्वरूप प्रदान किया। इस आंदोलन ने आधुनिकताबोध के माध्यम से मनुष्य के भीतर के यथार्थ को कहानी के केंद्र में रखने की कोशिश की है। प्रस्तुत शोध आलेख का उद्देश्य नई कहानी में आधुनिकताबोध को समझना है, खासकर निरंतर परिवर्तित हो रहे यथार्थ और उसके अंतःसंघर्ष के विविध आयामों के संदर्भ में। आजादी के बाद भारतीय समाज एक बदलाव के दौर से गुजर रहा था, जिसके कारण सामाजिक और आर्थिक असमानताओं ने व्यक्ति के भीतर गहरे मानसिक द्वंद्व पैदा किए। यह एक बड़ा कारण रहा जिससे नई कहानी में 'भोगा हुआ यथार्थ' एक प्रमुख विषय बनकर सामने आता है। इसमें मध्यवर्गीय जीवन की असुरक्षा, रिश्तों का टूटना और पहचान का संकट जैसी परिस्थितियाँ दिखाई देती हैं। इसी संदर्भ में कमलेश्वर की 'खोई हुई दिशाएँ', हरिशंकर परसाई की 'भोलाराम का जीव' और निर्मल वर्मा की 'परिंदे' जैसी कहानियाँ आधुनिक जीवन की विडम्बनाओं और व्यक्ति के भीतर के संघर्ष को प्रभावी ढंग से सामने लाने का सचेत प्रयास कही जा सकती हैं। ऐसे में नई कहानी आधुनिक भारतीय समाज के जटिल यथार्थ और मनुष्य के अंतःसंघर्ष को समझने का एक सशक्त माध्यम बनकर उभरती हैं।

बीज शब्द: नई कहानी, आधुनिकताबोध, भोगा हुआ यथार्थ, मध्यवर्गीय चेतना, संबंध-विघटन, सामाजिक विडम्बना, अनुभव की प्रामाणिकता, अंतःसंघर्ष।

मूल आलेख

आधुनिकता का सम्बन्ध केवल बाहरी बदलावों और तकनीकी विकास से नहीं है, साहित्य में इसका अर्थ इससे कहीं व्यापक होता है। देखा जाए तो आधुनिकता तब आती है जब मनुष्य अपने रूढ़ मूल्यों, रिश्तों और अंधविश्वासों पर सवाल उठाने लगता है। जब परंपरा महज हमारे अंधानुकरण की चीज नहीं रह जाती, उसे बिना सोचे-समझे मानने की जगह विज्ञान और तर्क की कसौटी पर रख के देखने की कोशिश करें।

स्वतंत्रता के पश्चात भारतीय समाज में जिस प्रकार की परिस्थितियाँ निर्मित हुई उसने जन मानस के भीतर कुछ बड़े बदलाव को जन्म दिया। यह बदलाव समकालीन राजनीतिक कारणों से उपजी थी, जिसमें भारत की आजादी, विभाजन, विस्थापन और नए भारत के लिए एक राष्ट्र के तौर पर उभरने की चुनौतियाँ शामिल रहीं। इस

बदलते यथार्थ ने आम लोगों के भीतर एक तरह की बेचैनी पैदा की। भारतीय समाज का एक बड़ा हिस्सा यथार्थ के बदलते स्वरूप में ऐसे ही बदलाव के दौर से गुज़र रहा था। गरीबी और विभाजन की पीड़ा ने लोगों को गाँवों से शहरों की ओर पलायन होने को मजबूर किया, संयुक्त परिवार वाली संरचना धीरे-धीरे टूटने लगे। इसी प्रक्रिया में एक नया मध्यवर्ग बना, जिसकी इच्छाएँ तो आधुनिक थीं, लेकिन जड़ें परंपरा में ही थीं।

इस नए मध्यवर्ग की स्थिति सबसे ज़्यादा उलझी हुई दिखाई पड़ती है। आर्थिक असुरक्षा, समाज में आगे बढ़ने की होड़, बड़ी-बड़ी इच्छाएँ और कम साधन, इन सबने मिलकर उसके भीतर असंतुलन, घुटन, तनाव और अकेलेपन की भावना पैदा की। व्यक्ति का जीवन ज़्यादा निजी तो हुआ, लेकिन इसके साथ वह और ज़्यादा असुरक्षित भी हो गया। इसी पृष्ठभूमि में 'नई कहानी' के उदय को देखा जा सकता है। यह कहानीयाँ पूर्व की परंपरा को दोहराने की जगह उन अनुभवों को सामने लाती है, जिन्हें लेखक खुद महसूस करता है और जो हमारी सामाजिक-राजनीतिक परिस्थितियों से पैदा होते हैं। यहीं से कहानी का केंद्र भी बदलता हुआ दिखाई देता है और उसका ध्यान व्यक्ति के अंदरूनी जीवन, उसकी असुरक्षा, असंतोष और संघर्षों पर केंद्रित होने लगता है।

स्वतंत्रता-उत्तर भारतीय समाज और मध्यवर्गीय चेतना

ऊपर हम बात कर चुके हैं कि आज़ादी के बाद भारतीय समाज एक मानसिक बदलाव के दौर से गुजर रहा था। इस दौर में स्थिरता और सुरक्षा की भावना धीरे-धीरे कम होती जा रही थी। नया मध्यवर्ग आधुनिक मूल्यों को अपनाना तो चाहता था, लेकिन वह सामाजिक और सांस्कृतिक दबावों से पूरी तरह मुक्त नहीं हो पा रहा था। इसी वजह से उसके भीतर लगातार टकराव पैदा हो रहा था। यही टकराव 'नई कहानी' का भावनात्मक आधार बना। हरीशंकर परसाई स्वतंत्रता के बाद के साहित्य के बारे में लिखते हैं कि "भाव और विचार की दृष्टि से प्रथम उल्लेखनीय परिवर्तन-यह हुआ है हम गांधीवाद के अति आदर्शवादी प्रभाव से मुक्त होकर अधिक ठोस यथार्थ की भूमि पर खड़े हैं। आज हम जीवन को उसकी महत्ता, पूरी सुन्दरता और पूरी कुरूपता के साथ देखने के लिए आग्रहशील हैं।"1 इससे यह साफ समझ में आता है कि नई कहानी के रूप में उभरी स्वतंत्रता-उत्तर कहानी में यथार्थ के प्रति एक ईमानदार दृष्टि विकसित हुई। जीवन की कुरूपताओं को स्वीकार करना ही आधुनिक संवेदना की शुरुआत है।

इसी संदर्भ में भीष्म साहनी की कहानी "चीफ की दावत" मध्यवर्गीय मानसिकता को बहुत बारीकी से सामने लाती है। कहानी का प्रसंग बहुत साधारण लगता है एक सरकारी अफ़सर अपने घर में अपने बड़े अधिकारी के स्वागत की तैयारी कर रहा है। लेकिन इसी तैयारी के बीच उसकी वृद्ध माँ एक समस्या बनकर सामने आती हैं। वे उस पारंपरिक जीवन और संस्कृति का प्रतीक हैं, जिससे आधुनिक मध्यवर्ग खुद को अलग करना चाहता है। इसलिए शामनाथ को यह चिंता रहती है कि कहीं उनकी मौजूदगी उसके "सभ्य" और "आधुनिक" माहौल को बिगाड़ न दे। कहानी में यह सोच बहुत स्पस्ट तरीके से तब सामने आती है जब शामनाथ कहता है "तुम चली जाओगी, तो फुलकारी कौन बनाएगा? साहब से तुम्हारे सामने ही फुलकारी देने का इकरार किया है।"2 यहाँ शामनाथ को माँ के जाने से कोई समस्या नहीं है, उसे केवल उनकी उपयोगिता की चिंता है। यह स्थिति उस संवेदनहीन और दिखावटी आधुनिकता को दिखाती है, जहाँ प्रेम और अपनापन कम होते जा रहे हैं और उनकी जगह स्वार्थ और मूल्यहीनता ले रही है। दरअसल, आधुनिकता के नाम पर बनी यह मध्यवर्गीय सोच पूंजीवादी और शहरी जीवन का असर है, जहाँ इंसान लगातार उपयोगी बने रहने के दबाव में अपनी भावनाओं से दूर होता जाता है।

इसी तरह अमरकांत की कहानी 'जिन्दगी और जोक' समाज के उस वर्ग की ओर ध्यान आकर्षित करती है, जो सामाजिक और आर्थिक संरचना के सबसे निचले स्तर पर जीवन-यापन करने के लिए संघर्ष कर रहा है। कहानी का पात्र रजुआ अभाव, भूख और उपेक्षा से भरा जीवन जीता है। उसका जीवन साधारण दिखाई देता है,

किंतु उसके भीतर छिपी पीड़ा अत्यंत गहरी है। उसकी बीमारी, भूख और यहाँ तक कि उसकी मृत्यु भी समाज के लिए कोई महत्वपूर्ण प्रश्न नहीं बनती। इस संदर्भ में यह प्रश्न स्वाभाविक रूप से उभरता है कि क्या हमारे समाज में ऐसे लोग भी हैं, जिनके जीवन का कोई मूल्य नहीं रह गया है? यदि ऐसा है, तो इसके पीछे कौन-सी सामाजिक और आर्थिक व्यवस्थाएँ कार्य कर रही हैं?

इस दृष्टि से यह कहानी आधुनिकता के उस पक्ष को उजागर करती है, जो विकास और प्रगति की प्रचलित धारणाओं पर प्रश्नचिह्न लगाता है। एक ओर समाज प्रगति और विकास की ओर बढ़ता दिखाई देता है, वहीं दूसरी ओर बड़ी संख्या में लोग बुनियादी सुविधाओं और सम्मानजनक जीवन से वंचित रह जाते हैं।

आधुनिकता का प्रभाव केवल सामाजिक संरचना तक सीमित नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति के मानसिक संसार को भी प्रभावित करता है। प्रतिस्पर्धा, असुरक्षा, आत्म-संदेह और पहचान की खोज जैसी मनःस्थितियाँ आधुनिक जीवन का हिस्सा बन चुकी हैं। विशेष रूप से स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद विकसित मध्यवर्गीय चेतना ने 'नई कहानी' को ऐसा आधार प्रदान किया, जहाँ विसंगति, कुंठा, अकेलापन और आंतरिक संघर्ष जैसे अनुभव स्वाभाविक रूप से कथा-विषय बनकर उभरते हैं।

संबंध-विघटन और अंत:संघर्ष

यदि आधुनिकता को एक लगातार चलने वाली प्रक्रिया के रूप में समझें, तो उसका सबसे गहरा असर मनुष्य के रिश्तों पर दिखाई देता है। आज़ादी के बाद समाज में व्यक्ति पहले से ज़्यादा आत्मकेंद्रित, प्रतिस्पर्धी और संदेह से भरा हुआ होने लगा। इसका असर यह हुआ कि रिश्तों में पहले जैसी स्थिरता नहीं रही; उसकी जगह असुरक्षा और बातचीत की कमी ने ले ली। रिश्तों का यही टूटाव 'नई कहानी' की मुख्य संवेदना बनकर सामने आता है। इसी स्थिति को देवीशंकर अवस्थी नए लेखकों के बारे में बताते हुए कहते हैं कि नया लेखक अपने अनुभवों और भावनाओं को परंपरागत विचारों से अलग करने की कोशिश करता है।

नई कहानी के लेखक रिश्तों को आदर्श मानकर नहीं, बल्कि अपने अनुभव की सच्चाई के आधार पर देखते हैं। इसी संदर्भ में निर्मल वर्मा की कहानी "परिन्दे" बहुत महत्वपूर्ण है। नई कहानी की शुरुआती रचनाओं में शामिल यह कहानी आधुनिक मनुष्य के भीतर के अकेलेपन को बहुत सूक्ष्म ढंग से दिखाती है। कहानी की नायिका लतिका अपने पुराने प्रेम की यादों में बंधी रहती है। वह वर्तमान में रहते हुए भी बार-बार अतीत में लौटकर अपने जीवन का अर्थ खोजती है। वर्तमान में उसके सामने कई संभावनाएँ होते हुए भी उसे कुछ भी स्थिर और भरोसेमंद नहीं लगता।

कहानी में एक जगह लतिका डॉक्टर से पूछती है "सब कुछ होने के बावजूद वह क्या कुछ है जो हमें चलाए चलता है, हम रुकते हैं तो भी अपने बहाव में वह हमें घसीट लिये जाता है?" 3 यह आधुनिक जीवन का वही टकराव है, जहाँ बाहर से हमें स्वतंत्रता का एहसास होता है, लेकिन भीतर एक अनदेखी मजबूरी हमें चलाती रहती है। हम रुकना चाहते हैं, पर रुक नहीं पाते जैसे जीवन अपने आप चलता जा रहा हो।

इसी तरह मन्नू भंडारी की कहानी "यही सच है" आधुनिक स्त्री चेतना का एक मजबूत उदाहरण प्रस्तुत करती है। कहानी में लेखिका ने एक ऐसी स्त्री-छवि का निर्माण किया है जो पारंपरिक नैतिक मूल्यों और सामाजिक बंधनों से मुक्त होकर अपनी स्वतंत्र पहचान स्थापित करती है। वह अपने जीवन के निर्णयों की स्वामिनी है तथा जीवनसाथी के चयन से लेकर सही-गलत के निर्धारण तक किसी बाहरी सत्ता पर निर्भर नहीं रहती। इस प्रकार यह 'दीपा' स्त्री-अस्मिता, आत्मनिर्णय और स्वतंत्र चेतना का प्रतिनिधित्व करती है। यह स्वतंत्रता पारंपरिक बंधनों से बाहर निकलने का संकेत देती है और अपनी सच्चाई और संवेदनशीलता के कारण पाठकों को प्रभावित करती है। मन्नू भंडारी इस कहानी-संग्रह के बारे में कहती हैं कि इन कहानियों में पात्र पहले से ज़्यादा जटिल हैं, उनकी संवेदना गहरी है और

भाषा भी अधिक परिपक्व है “यही सच है’ की कहानियाँ अधिक सधी हुई और अधिक मँजी हुई हैं। इकहरे की जगह द्वन्द्वग्रस्त पात्र, संवेदना की गहराई भाषा-शैली का निखार यह राय मेरी नहीं, पाठकों और समीक्षकों की है।”4

लेकिन आधुनिकता केवल स्वतंत्रता ही नहीं देती, इसके भीतर एक तरह का टकराव भी होता है। एक तरफ यह व्यक्ति को निर्णय लेने की आज़ादी देती है, तो दूसरी तरफ मानसिक उलझनें, आत्म-संघर्ष और अस्तित्व का बोझ भी बढ़ा देती है। यानी हम कह सकते हैं कि आधुनिकता एक साथ अवसर भी देती है और संकट भी पैदा करती है।

इसी क्रम में मोहन राकेश की कहानी ‘एक और ज़िंदगी’ दांपत्य संबंधों की जटिलता को गहराई से दिखाती है, जबकि राजेंद्र यादव की कहानी ‘टूटना’ आधुनिक व्यक्तिवाद के कारण पैदा हुए रिश्तों के संकट को सामने लाती है। यहाँ स्त्री और पुरुष का संबंध दो अलग-अलग व्यक्तित्वों के अहं और आत्मसम्मान के टकराव के रूप में सामने आता है। बातचीत की कमी धीरे-धीरे रिश्तों को भीतर से कमजोर करती जाती है, और दोनों पास होते हुए भी भावनात्मक रूप से दूर हो जाते हैं।

इस संदर्भ में राजेंद्र यादव ‘अनुभव की प्रामाणिकता’ की बात करते हुए कहते हैं कि “व्यक्तिगत होना ही अनुभव का प्रामाणिक होना नहीं है, परिवेश-सापेक्ष होना प्रामाणिक होना है।”5 इससे यह समझ सकते हैं कि नई कहानी में जो रिश्तों का टूटना दिखता है, वह सिर्फ व्यक्तिगत समस्या नहीं है, बल्कि उसके पीछे पूरे सामाजिक ढाँचे और परिवेश की भूमिका होती है।

पहचान का संकट और आधुनिकता का गहरा सामाजिक परिप्रेक्ष्य

नई कहानी केवल रिश्तों के टूटने तक सीमित नहीं है, इसके अतिरिक्त यह आधुनिक जीवन की उलझनों, शहरों के भीतर बढ़ते अकेलेपन और प्रशासन की अमानवीयता को भी गहराई से दिखाती है। इसी कारण नई कहानी में यथार्थ का स्वरूप अधिक जटिल और बहुआयामी है।

इसी संदर्भ में कमलेश्वर की कहानी ‘खोई हुई दिशाएँ’ महानगरीय जीवन में बढ़ते अकेलेपन और पहचान के संकट को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करती है। नायक चंदर भीड़-भाड़ से भरे महानगर में रहते हुए भी स्वयं को अकेला महसूस करता है। कहानी के आरंभ में ही लेखक उसकी मनःस्थिति को स्पष्ट करते हैं “आस-पास से सैकड़ों लोग गुज़रते हैं पर कोई उसे नहीं पहचानता।...यह राजधानी! जहाँ सब अपना है, अपने देश का है...पर कुछ भी अपना नहीं है।” 6 यह कथन महानगरीय जीवन की उस विडंबना को सामने लाता है, जहाँ लोगों की संख्या तो लगातार बढ़ रही है, लेकिन आत्मीयता और अपनापन कम होता जा रहा है।

चंदर का अनुभव उन अनेक लोगों की स्थिति को व्यक्त करता है जो रोजगार और बेहतर जीवन की तलाश में महानगरों में आते हैं लेकिन बड़े शहरों की व्यस्तता और औपचारिक संबंधों के वजह से धीरे-धीरे अकेले होते जाते हैं। परिणामस्वरूप वह अपने आसपास के लोगों के बीच रहते हुए भी उनसे जुड़ाव महसूस नहीं कर पाता। कई बार ऐसा भी होता है कि व्यक्ति अपने घर और परिवार के बीच रहकर भी स्वयं को अजनबी अनुभव करने लगता है।

इस प्रकार हरिशंकर परसाई की कहानी ‘भोलाराम का जीव’ व्यंग्य के माध्यम से प्रशासनिक व्यवस्था और नौकरशाही की विसंगतियों को उजागर करती है। कहानी का नायक भोलाराम एक सरकारी कर्मचारी है, जो पाँच वर्षों तक अपनी पेंशन प्राप्त करने के लिए दफ्तरों के चक्कर लगाता रहता है, किंतु अंततः भूख, अभाव और चिंता के कारण उसकी मृत्यु हो जाती है। मृत्यु के बाद भी उसका जीव यमलोक नहीं पहुँच पाता। जब नारद उसके संबंध में जानकारी लेने दफ्तर पहुँचते हैं, तो एक बाबू बताता है कि उसकी अर्जियाँ तो आई थीं, पर उन पर “वज़न” नहीं

रखा गया था, इसलिए वे उड़ गई होंगी। यहाँ "वज़न" रिश्वत का प्रतीक है, जिसके बिना सरकारी व्यवस्था में किसी कार्य का आगे बढ़ना कठिन दिखाई देता है।

कहानी का सबसे महत्वपूर्ण प्रसंग तब सामने आता है, जब भोलाराम का जीव फ़ाइलों के भीतर से बोल उठता है "मुझे नहीं जाना। मैं तो पेंशन की दरख्वास्तों में अटका हूँ। यहीं मेरा मन लगा है। मैं अपनी दरख्वास्तें छोड़कर नहीं जा सकता।" 7 यह जीव वास्तव में उस आम आदमी और उसकी विवशता का प्रतीक है, जिसकी समस्याएँ प्रशासनिक प्रक्रियाओं और दफ्तरों की फ़ाइलों में उलझकर रह जाती हैं।

इस प्रकार नई कहानी में आधुनिकता का सामाजिक रूप अनेक स्तरों पर अभिव्यक्त होता है। पारिवारिक विघटन, अकेलापन, पहचान का संकट, प्रशासनिक भ्रष्टाचार और मानवीय संबंधों में बढ़ती दूरी जैसी समस्याएँ इसके प्रमुख विषय बनकर सामने आती हैं। इन स्थितियों के चित्रण के पीछे लेखक के अपने अनुभव तथा उसके समय का सामाजिक यथार्थ सक्रिय रहता है।

इसलिए यह प्रश्न स्वाभाविक रूप से उभरता है कि नई कहानी में व्यक्त सामाजिक यथार्थ लेखक के निजी अनुभवों से किस प्रकार निर्मित होता है और वह पाठकों को गहराई से प्रभावित करने के साथ-साथ कई बार असहज भी क्यों कर देता है।

भोगा हुआ यथार्थ और पाठकीय असहजता

यदि नई कहानी को समग्र रूप से देखें, तो साफ़ समझ में आता है कि इसका सबसे बड़ा आधार "भोगा हुआ यथार्थ" है। यानी वे अनुभव, जिन्हें लेखक और समाज ने खुद जिया है। इसी वजह से नई कहानी में जीवन की प्रस्तुति अधिक व्यक्तिगत, ईमानदार और कई बार तीखी लगती है। 'राजेंद्र यादव' भी इसी बात की ओर इशारा करते हैं कि जब हम अपने अनुभव से थोड़ा अलग होकर उसे देख पाते हैं, तभी हम उसे नया अर्थ दे सकते हैं। यानी लेखक केवल अपने अनुभव को दोहराता नहीं, बल्कि उसे समझकर उसके भीतर छिपे अर्थों को सामने लाता है। 'मुक्तिबोध' इसे अनुभव का "तीसरा क्षण" कहते हैं।

नई कहानी की कई रचनाएँ जैसे 'जिन्दगी और जोंक', 'चीफ की दावत', 'परिन्दे' और 'खोई हुई दिशाएँ' इन सभी में यह दिखता है कि आधुनिक जीवन की समस्याएँ किसी बड़ी घटना से नहीं, बल्कि रोज़मर्रा की साधारण स्थितियों से पैदा होती हैं। कहीं जीवन के लिए संघर्ष करता आदमी है, कहीं मध्यवर्ग का हीनताबोध, कहीं रिश्तों में बढ़ता अकेलापन और कहीं शहरों में पहचान खोने की स्थिति। लेकिन यहाँ एक सवाल उठता है कि नई कहानी पढ़ते समय पाठक कई बार असहज क्यों हो जाता है?

नामवर सिंह लिखते हैं "सचाई यह कि जो पाठक अथवा आलोचक इस सीमा को जितना ही जानता है, उतना ही अधिक किसी कहानी को वह 'उपलब्ध' कर सकता है। क्योंकि उसके सामने उस छूटे हुए या अवशिष्ट अंश को प्राप्त करने की समस्या लगातार बनी रहती है।.. इस तरह उसे नई-नई पद्धतियों के आविष्कार करने पड़ते हैं।" 8

दरअसल नई कहानी पारंपरिक कहानियों की तरह पाठक को सांत्वना नहीं देती। वह न तो जीवन की समस्याओं का कोई साफ़ समाधान देती है और न ही कोई नैतिक शिक्षा। इसके उलट, वह पाठक को उन्हीं जटिल स्थितियों से रूबरू कराती है, जिन्हें वह अपने आसपास महसूस करता है। यही कारण है कि ऐसी कहानियाँ कई बार बेचैन कर देती हैं, क्योंकि उनका यथार्थ हमारे अपने जीवन से जुड़ा होता है।

इस तरह कहा जा सकता है कि नई कहानी का आधुनिकता-बोध "भोगे हुए यथार्थ" पर टिका हुआ है। यहाँ कहानियाँ जीवन की सच्ची अनुभूतियों को सामने लाती हैं। इसलिए कहानी और जीवन के बीच एक गहरा रिश्ता बनता है, जहाँ कहानी जीवन को समझने का जरिया बनती है और जीवन कहानी को अर्थ देता है।

निष्कर्ष

इस अध्यन से यह समझ में आता है कि नई कहानी में जो आधुनिकता-बोध दिखाई देता है, वह आज़ादी के बाद के भारतीय समाज में आए व्यापक बदलावों की प्रतिक्रिया है। नई कहानी ने पुरानी आदर्शवादी कथा-परंपरा से अलग होकर जीवन की नई और जटिल स्थितियों को केंद्र में रखा। इसमें मध्यवर्ग की असुरक्षा, सामाजिक विडम्बनाएँ, टूटते रिश्ते और व्यक्ति के भीतर चल रहा संघर्ष मुख्य विषय बनकर सामने आए। साथ ही, नई कहानी ने साहित्य को "भोगे हुए यथार्थ" से जोड़ा, यानी उन अनुभवों से जो वास्तव में जिए गए हैं।

हालाँकि इन कहानियों में अकेलापन, कुंठा, मोहभंग और संबंधों का संकट अधिक दिखाई देता है, फिर भी इन्हें केवल नकारात्मक रूप में नहीं देखा जा सकता। आधुनिकता ने मनुष्य को सवाल करने की आज़ादी दी, परंपरागत मान्यताओं को चुनौती देने का साहस दिया और अपने अनुभवों को महत्व देना सिखाया। खासकर स्त्री-चेतना के संदर्भ में यह बदलाव और भी स्पष्ट है, जहाँ स्त्री पहली बार अपने अनुभवों, इच्छाओं और फैसलों के साथ सामने आती है।

इस तरह नई कहानी में आधुनिकता का रूप एक साथ कई तरह का है, यह भीतर का संघर्ष भी है और आत्म-चेतना भी, यह मोहभंग भी है और नई संवेदना की शुरुआत भी। अंत में, नई कहानी ने साहित्य को जीवन के और करीब लाया और मनुष्य के अनुभवों को सच्चे रूप में अभिव्यक्त किया। इसी कारण यह आधुनिक हिंदी साहित्य में उस चेतना का प्रतिनिधित्व करती है, जो अपने समय को समझती है और उसे संवेदनशील तरीके से व्यक्त करती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. देवीशंकर अवस्थी, नई कहानी: संदर्भ और प्रकृति, राजकमल प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, संस्करण: 2019, ISBN: 978-81-267-0377-7, पृ. 57
2. राजेंद्र यादव (सम्पा.), एक दुनिया: समानान्तर, राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा. लि., जगतपुरी, दिल्ली, संस्करण: 2021, ISBN: 978-81-7119-852-8, पृ. 219
3. राजेंद्र यादव (सम्पा.), एक दुनिया: समानान्तर, राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा. लि., जगतपुरी, दिल्ली, संस्करण: 2021, ISBN: 978-81-7119-852-8, पृ. 184
4. मन्नू भंडारी, सम्पूर्ण कहानियाँ, राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा. लि., जगतपुरी, दिल्ली, संस्करण: 2025, ISBN: 978-81-19092-18-5, पृ. xiii
5. राजेंद्र यादव, कहानी: स्वरूप और संवेदना, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, संस्करण: 2013, ISBN: 81-7055-739-9, पृ. 152
6. राजेंद्र यादव (सम्पा.), एक दुनिया: समानान्तर, राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा. लि., जगतपुरी, दिल्ली, संस्करण: 2021, ISBN: 978-81-7119-852-8, पृ. 134
7. राजेंद्र यादव (सम्पा.), एक दुनिया: समानान्तर, राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा. लि., जगतपुरी, दिल्ली, संस्करण: 2021, ISBN: 978-81-7119-852-8, पृ. 360
8. नामवर सिंह, कहानी: नई कहानी, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज, संस्करण: 2023, ISBN: 978-81-8031-908-2, पृ. 107

पता: अर्पिता बिस्वाल

शोधार्थी, हिंदी-विभाग

दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली - 110007

Email: arpitabiswal.du@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com Bohal Shodh Manjusha ISSN: 2395-7115
Impact Factor: 8.642 June 2026 Page No. : 255-260
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

भारतदेशे संस्कृतिभाषापरम्पराणां समन्वयः समीक्षात्मकं अध्ययनम्

विनीत कुमार शुक्ल
शोधार्थी
वेदविभागः–सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

सारांशः–

भारतदेशः विश्वस्य प्राचीनतमसंस्कृतिसम्पन्नेषु राष्ट्रेषु प्रमुखः अस्ति। अत्र विविधतायां एकता इति मूलतत्त्वं प्रतिपाद्यते। अस्मिन् देशे संस्कृतिः, भाषा, परम्परा च त्रयम् अत्यन्तं सुसम्बद्धं दृश्यते। एतेषां त्रयाणां समन्वयेन भारतीयजीवनपद्धतिः निर्मिता अस्ति। वेद, उपनिषद्, स्मृतिग्रन्थाः, पुराणानि च अस्य समन्वयस्य आधारभूतानि स्रोतांसि सन्ति। अस्मिन् शोधपत्रे भारतस्य सांस्कृतिकस्वरूपम्भाषिकवैविध्यम् परम्पराणां स्वरूपं च विवेचितम्। ततः एतेषां परस्परसम्बन्धः तथा आधुनिकपरिप्रेक्ष्ये तेषां प्रासंगिकता अपि विशदीकृता।

मुख्यषब्दः संस्कृति, भाषा, परम्परा, समन्वय, भारतीयदर्शनम्–

प्रस्तावना–

भारतदेशः एकता में विविधता" इति सिद्धान्तस्य जीवितरूपम् अस्ति। अत्र भिन्नभाषाः भिन्नाचाराः भिन्नपरम्पराः सन्ति तथापि सर्वे एकस्मिन् सांस्कृतिकसूत्रे बद्धाः सन्ति। संस्कृतिः मानवजीवनस्य संस्कारात्मकः पक्षः अस्ति, भाषा तस्य संप्रेषणस्य साधनम्, परम्परा तु तस्य आचरणरूपा अभिव्यक्तिः।

ऋग्वेद 1.164.46

"एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति"

अस्य मन्त्रस्य अभिप्रायःसत्यं एकं, किन्तु तस्य रूपाणि बहूनि। एषः भारतीयसंस्कृतेः आधारभूतदर्शनम्।

भारतीयसंस्कृतेः स्वरूपम्–

संस्कृतिः नाम मानवजीवनस्य उन्नयनाय निर्मिता मूल्यव्यवस्था। भारतीयसंस्कृतिः आध्यात्मिकता, नैतिकता, सहिष्णुता, समन्वयशीलता च इत्यादिभिः गुणैः युक्ता अस्ति।

संस्कृतिः–परिभाषा

"संस्क्रियते इति संस्कृतिः"– या मनुष्यस्य जीवनं परिष्करोति सा संस्कृति।

सांस्कृतिकमूल्याः–

धर्मः
अहिंसा
सत्यं
दया
त्यागः

तैत्तिरीयोपनिषद् 1.11.2

"सत्यं वद, धर्मं चर"
एतेन स्पष्टं भवति यत् भारतीयसंस्कृतिः नैतिकताम् अधिष्ठाय वर्तते।
आध्यात्मिकता– भारतीयसंस्कृतिः भौतिकतायाः अपेक्षया आध्यात्मिकतायाम् अधिकं बलं ददाति।
"आत्मानं विद्धि"
भारतीयभाषाणां वैविध्यम्
भारतदेशः बहुभाषिकराष्ट्रम् अस्ति। अत्र २२ अनुसूचितभाषाः सन्ति।
संस्कृतभाषायाः महत्त्वम्–
संस्कृतभाषा सर्वासां भाषाणां जननी इति कथ्यते।
"संस्कृतं नाम दैवी वाक्"
भाषासमन्वयः–
भारतदेशे विभिन्नभाषाः सन्ति–
हिन्दी
तमिल
तेलुगु
कन्नड
बंगाली
मराठी
असमिया
एतेषां मध्ये परस्परं शब्दविनिमयः, सांस्कृतिकसाम्यं च दृश्यते।
ऋग्वेद 10.191.2
"सं गच्छध्वं सं वदध्वं"
अयं मन्त्रः सामूहिकसंवादस्य महत्त्वं दर्शयति।
भारतीयपरम्पराणां स्वरूपम्– परम्परा नामकृयत् पितृपैतामहादिभ्यः प्राप्तं तदेव परम्परा।
प्रमुखाः परम्पराः–
यज्ञपरम्परा
संस्कारप्रणाली (१६ संस्काराः)
उत्सवपरम्परा
गुरुकुलव्यवस्था
यजुर्वेद 36.18
"कृण्वन्तो विश्वमार्यम्"
संस्काराः–
भारतीयजीवने १६ संस्काराः प्रमुखाः–
गर्भाधानम्, नामकरणम्, उपनयनम्, विवाहः इत्यादयः।
उत्सवाः–
दीपावली
होली
नवरात्रि
एते उत्सवाः सांस्कृतिकएकतां बोधयन्ति।
समन्वयस्य तात्त्विकाधारः–
भारतीयदर्शनम् समन्वयप्रधानम् अस्ति।
"वसुधैव कुटुम्बकम्"
अर्थः–समस्तं विश्वं कुटुम्बवत्।

अथर्ववेद 12.1.12

"माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः"

अयं मन्त्रः राष्ट्रीयभावनां सुदृढां करोति।

संस्कृति–भाषा–परम्पराणां परस्परसम्बन्धः–

एतेषां त्रयाणां सम्बन्धः अत्यन्तं घनिष्ठः–

तत्वम् कार्यम्

संस्कृति मूल्यप्रदानम्

भाषा संप्रेषणम्

परम्परा आचरणम्

ऋग्वेद 10.191.4

"समानी व आकूतिः"

ऐतिहासिकदृष्ट्या समन्वयः–

वैदिककालः–

वेदेषु समन्वयस्य मूलरूपं दृश्यते।

उत्तरवैदिककालः–

उपनिषदः दार्शनिकसमन्वयस्य उदाहरणम्।

मध्यकालः–

भक्तिआन्दोलनं भाषासमन्वयस्य उत्कृष्टदृष्टान्तः।

आधुनिककालः–

राष्ट्रनिर्माणे भाषा–संस्कृति–परम्पराणां योगदानम्।

आधुनिकपरिप्रेक्ष्ये प्रासंगिकता–

अद्यतनयुगे वैश्वीकरणस्य प्रभावः अस्ति, तथापि–

योगः वैश्विकः अभवत्

आयुर्वेदः स्वीकृतः

भारतीयसंस्कृतिः लोकप्रियता प्राप्तवती

"धर्मो रक्षति रक्षितः"

समस्याः एवं समाधानम्

समस्याः–

पाश्चात्यसंस्कृतेः प्रभावः

भाषाभेदजन्यविवादाः

परम्पराणां अवहेलना

समाधानम्–

शिक्षायां संस्कृतिसमावेशः

मातृभाषायाः संरक्षणम्

परम्पराणां पुनर्जीवनम्

अतः निष्कर्षतः वयं वदामः–

भारतदेशे संस्कृति, भाषा, परम्परा च त्रयम् एकसूत्रे बद्धम् अस्ति। एतेषां समन्वयेन भारतीयसमाजस्य स्थैर्यं, एकता, प्रगति च सुनिश्चितं भवति।

ऋग्वेद 10.191.3

"समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः"

भारतस्य आत्मा तस्य संस्कृतिः, भाषा (संस्कृतम्), तथा च परम्परासु निहिता अस्ति। एतद् विषयमधिकृत्य एकः समीक्षात्मकः लेखः अधः प्रस्तुतोऽस्ति–

भारतवर्षं विश्वस्य सा सांस्कृतिकी स्थली अस्ति, यत्र विविधतायाम् एकतायाः दर्शनं भवति। अत्रत्यं जीवनदर्शनं, भाषाः, परम्पराः च परस्परं सम्बद्धाः सन्ति। संस्कृतिः शब्दस्य अर्थः एव परिष्कारः इति भवति।
संस्कृतिः सकला भाषा, परम्परा च तन्मयी।
भारतस्य अस्मितायाः मूलाधारत्रयं वर्ततेकृ 'संस्कृतिः, संस्कृतभाषा, परम्परा च।'

संस्कृतभाषा— संस्कृतेः वाहिका—

संस्कृतं केवलं भाषा नास्ति, अपितु एषा विचारधारणी अस्ति। भारतस्य समस्तं ज्ञानं, विज्ञानं, दर्शनं च अस्यामेव निहितम् अस्ति।

वैचारिकी एकता—

संस्कृतभाषायां भारतस्य भौगोलिकं सांस्कृतिकं च एकीकरणं कृतम्। यथा विष्णुपुराणे उक्तम्—

उत्तरं यत्समुद्रस्य हिमाद्रेश्चौव दक्षिणम्।

वर्षं तद् भारतं नाम भारती यत्र सन्ततिः॥ (विष्णुपुराणम् २.३.१)

समीक्षारू आधुनिककाले यदा भाषावादः राष्ट्रं विभजति, तदा संस्कृतं सेतु रूपेण कार्यं करोति। दक्षिणभारतस्य मन्दिरेभ्यः उत्तरभारतस्य तीर्थपर्यन्तं संस्कृतमन्त्राः एव अस्मान् योजयन्ति।

परम्पराणां वैज्ञानिकं पक्षम्—

भारतीयपरम्पराः केवलं अन्धविश्वासाः न सन्ति, अपितु तासां पृष्ठे गम्भीरं विज्ञानं वर्तते।

नमस्कारपरम्परा—

भारतीयसंस्कृतौ यदा वयं परस्परं मिलित्वा श्नमस्तेश इति कुर्मः, तदा तत्र मनोवैज्ञानिकं वैज्ञानिकं च तत्त्वं भवति।

हस्तमर्दनं कीटाणूनां प्रसारः भवति। अञ्जलिमुद्रा अञ्जलिमुद्रायाः निर्माणेन मस्तिष्कस्य द्वौ भागौ सक्रियौ भवतः, एकाग्रता च वर्धते।

यज्ञपरम्परा—

यज्ञः केवलं धार्मिकं कर्म नास्ति, अपितु पर्यावरणशुद्धेः प्रक्रिया अस्ति।

अन्नाद्भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्नसम्भवः।'

यज्ञाद्भवति पर्जन्यो यज्ञः कर्मसमुद्भवः॥' (भगवद्गीता ३.१४)

समन्वयस्य त्रिस्तरीया संरचना—

संस्कृति—भाषा—परम्पराणां समन्वयः अधोलिखितरीत्या अवगन्तुं शक्यते—

आधुनिककाले समस्याः आव्हानानि च—

अद्यतनकाले पाश्चात्यीकरणस्य प्रभावेण अस्माकं समन्वये केचन भेदाः आगताः सन्ति—

- भाषाक्षयः संस्कृतस्य स्थाने आङ्ग्लभाषायाः अन्धनुकरणम्।
- परम्परात्यागः युवानः परम्पराणां वैज्ञानिकं कारणं विना ताः त्यजन्ति।
- सांस्कृतिकप्रदूषणम् उपभोक्तावादः भारतीय त्याग दर्शनस्य स्थानं गृह्णाति।

समाधानदिशः—

वर्तमानस्य समस्यानां समाधानं पुनः तस्मिन् एव समन्वये अस्ति। यदा वयं आधुनिकता सह अध्यात्म योजयामः, तदा एव विकासः भवति।

अध्यात्मविद्या विद्यानां (गीता १०.३२)

निष्कर्षः—

भारतदेशे संस्कृतिभाषा—परम्पराणां समन्वयः अतीव गौरवपूर्णः विषयः अस्ति, यतः अयं देशः आदिकालात् एव विविधतायाः मध्ये एकतां धारयन् विश्वे अद्वितीयस्थानं धारयति, अत्र न केवलं भौगोलिकविविधता दृश्यते, अपि तु भाषासु, धर्मेषु, आचारेषु, वेशभूषासु, उत्सवेषु च महान् वैचित्र्यम् अस्ति, तथापि एतेषां सर्वेषां मध्ये एकः गूढः सांस्कृतिकसूत्रः अस्ति यः सर्वान् बध्नाति, सः एव समन्वयः इति कथ्यते, भारतीयसंस्कृतिः न केवलं परम्परायाः संरक्षणं करोति, अपि तु नूतनतायाः अपि स्वागतं करोति, अतः अयं देशः "संस्कृति—संगमभूमिः" इति प्रसिद्धः अस्ति,

वेदेषु अपि समन्वयस्य महत्त्वं प्रतिपादितम् अस्ति यथा–**"संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्"** इति ऋग्वेदवाक्येन सहकारस्य, संवादस्य च आवश्यकता दर्शिता, अत्र संस्कृतभाषा मूलाधाररूपेण स्थित्वा सम्पूर्णभारतीयसंस्कृतेः आधारं निर्माति, संस्कृतम् न केवलं भाषा, अपि तु ज्ञानस्य, विज्ञानस्य, दर्शनस्य, साहित्यस्य च भाण्डारम् अस्ति, वेदाः, उपनिषदः, रामायणम्, महाभारतम्, पुराणानि च अस्यां भाषायां रचितानि, यत्र– **धर्मः, अर्थः, कामः, मोक्षः** इति चतुर्विधपुरुषार्थाः निरूपिताः सन्ति, तैत्तिरीयोपनिषदि उक्तम्–**"सत्यं वद, धर्मं चर"** इति, अनेन भारतीयजीवनस्य नैतिकाधारः सूचितः, भाषाविविधता अपि भारतस्य विशेषता अस्ति, अत्र हिन्दी, संस्कृतम्, तमिळ्, तेलुगु, कन्नड, मलयालम्, बंगाली, मराठी, गुजराती, उर्दू इत्यादयः बहवः भाषाः प्रचलन्ति, किन्तु एतासां सर्वासां मूलं किञ्चित् संस्कृतभाषायां दृश्यते, यतः अस्याः प्रभावः सर्वत्र विस्तीर्णः अस्ति, यथा प्रसिद्धः श्लोकः–**"जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी"** इति, मातृभूमेः गौरवं प्रकाशयति, भारतीयपरम्पराः अपि बहुविधाः सन्ति, अत्र यज्ञपरम्परा, पूजाविधानम्, तीर्थयात्रा, व्रतानि, उत्सवाः च प्रमुखाः सन्ति, दीपावली, होली, नवरात्रि, रक्षाबन्धनम्, ईद्, क्रिसमस् इत्यादयः उत्सवाः विभिन्नधर्मसमुदायानां सन्ति, तथापि सर्वे मिलित्वा आनन्दं वितरन्ति, अयं समन्वयः भारतीयजीवनस्य आत्मा अस्ति, ऋग्वेदे पुनः उक्तम्–**"एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति"** इति, यत् सत्यं एकम् अस्ति किन्तु तस्य व्याख्या विभिन्नरूपेण भवति, भारतीयदर्शनपरम्परा अपि अतीव समृद्धा अस्ति, सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा, वेदान्त इत्यादयः षड्दर्शनानि जीवनस्य रहस्यानि उद्घाटयन्ति, योगशास्त्रे शरीर–मनसोः समन्वयः प्रतिपाद्यते, पतञ्जलिना योगसूत्रेषु उक्तम्–**"योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः"** इति, आयुर्वेदः अपि भारतीयसंस्कृतेः अमूल्यः अंशः अस्ति, यः स्वास्थ्यसंरक्षणस्य विज्ञानं प्रदर्शयति, नाट्यशास्त्रं भरतमुनिना रचितं कला–संस्कृतेः उत्कृष्टं उदाहरणम् अस्ति, यत्र नृत्य, संगीत, अभिनयः च समन्विताः सन्ति, भारतीयसमाजे परिवारव्यवस्था अपि अत्यन्तं महत्त्वपूर्णा अस्ति, यत्र संयुक्तपरिवारप्रणाली दीर्घकालं यावत् प्रचलिता आसीत्, गुरुकुलव्यवस्था ज्ञानप्रसारणस्य मुख्यं साधनम् आसीत्, उपनिषदि उक्तम्–**"आचार्यदेवो भव"** इति, गुरोः महत्त्वं दर्शयति, भारतीयसंस्कृतेः मूलं धर्मः अस्ति, धर्मः न केवलं पूजा, अपि तु कर्तव्यपालनम्, नैतिकता, समाजसेवा च अस्ति, महाभारते उक्तम्–**"धर्मो रक्षति रक्षितः"** इति, धर्मस्य संरक्षणेन एव मानवजीवनं सुरक्षितं भवति, भक्ति–आन्दोलनं भारतीयसंस्कृतेः समन्वयस्य उत्तमं उदाहरणम् अस्ति, यत्र विभिन्नभाषासु भक्तिकाव्यानि रचितानि, कबीरः, तुलसीदासः, सूरदासः, मीराबाई इत्यादयः संताः समाजे समरसतां प्रसारितवन्तः, सूफीपरम्परा अपि प्रेम, सहिष्णुता, मानवता च शिक्षयति, आधुनिककाले अपि भारतः एतासां परम्पराणां संरक्षणं कुर्वन् विज्ञान–प्रौद्योगिकीक्षेत्रे अपि प्रगत्याः मार्गे अग्रे गच्छति, अयं समन्वयः परम्परा–नवीनता च उभययोः समुचितसन्तुलनं दर्शयति, संविधानम् अपि भारतस्य विविधतायाः मध्ये एकतां स्थापयति, अत्र सर्वे नागरिकाः समानाधिकारिणः सन्ति, **"सर्वधर्मसमभावः"** इति सिद्धान्तः अत्र प्रतिपादितः, भारतीयसंस्कृतिः विश्वाय अपि सन्देशं ददाति, यथा–**"वसुधैव कुटुम्बकम्"** इति, सम्पूर्णं विश्वं एकं परिवारम् इव मन्यते, एषः विचारः वैश्विकशान्तेः आधारः अस्ति, अन्ते प्रार्थनामन्त्रः–**"सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः, सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्दुःखभाग्भवेत्"** इति–भारतीयसंस्कृतेः सार्वभौमिकमानवतावादं प्रकाशयति, अतः स्पष्टं भवति यत् भारतदेशे संस्कृतिभाषा–परम्पराणां समन्वयः न केवलं ऐतिहासिकः, अपि तु जीवितः, गतिशीलः, प्रेरणादायकः च अस्ति, यः मानवसमाजस्य समग्रविकासाय मार्गदर्शकः भवति, इति।

संस्कृतिः अस्माकं प्राणः, भाषा (संस्कृतम्) अस्माकं शरीरम्, परम्परा च अस्माकं क्रिया अस्ति। एतेषां त्रयाणां समन्वयेन एव विश्वगुरु इति पदं पुनः प्राप्तुं शक्यते।

भारतस्य विकासः केवलं आर्थिकः न भवेत्, अपितु सः 'सांस्कृतिक–उत्कर्ष' सह भवेत्। यतो हि–

यत्र संस्कृतिः तत्र विजयः।

परिशिष्टम्–

वैश्विकबन्धुत्वम् – सर्वे भवन्तु सुखिनः।
पर्यावरणप्रेम – माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः।
ज्ञाननिष्ठा – तमसो मा ज्योतिर्गमय।

ग्रन्थसूची–

1. ऋग्वेद संहिता (संज्ञान सूक्त)

2. श्रीमद्भगवद्गीता (शाङ्करभाष्यम्)
3. कौटिल्य अर्थशास्त्रम्
4. मनुस्मृतिः (संस्कारप्रकरणम्)
5. आधुनिकसांस्कृतिकसमीक्षा (डॉ. राधाकृष्णन्)
6. ऋग्वेदः– चौखम्बा पुस्तक भवन, वाराणसी
7. यजुर्वेदः– चौखम्बा पुस्तक भवन, वाराणसी
8. अथर्ववेदः– चौखम्बा पुस्तक भवन, वाराणसी
9. तैत्तिरीयोपनिषद्– गीताप्रेस, गोरखपुर
10. मनुस्मृतिः– चौखम्बा पुस्तक भवन, वाराणसी
11. महाभारतम्– चौखम्बा पुस्तक भवन, वाराणसी
12. संस्कृतसाहित्यकोशः– चौखम्बा पुस्तक भवन, वाराणसी
13. वैदिक वांग्मय का इतिहास– (बलदेव उपाध्याय)

सम्पर्क सूत्र– 9936933912
ईमेल– ptvineetshukla.pr@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com Bohal Shodh Manjusha ISSN: 2395-7115
Impact Factor: 8.642 June 2026 Page No. : 261-268
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

The Interrelations among Marginalisation and Internal Migration: Changing Dynamics of Development in India

Anulakshmi Sankar. V,
Research Scholar,
Department of Sociology, University of Madras, Chennai, India -600 005
Dr. M. Thamilarasan,
Professor and Head,
Department of Sociology, University of Madras, Chennai, India-600 005

Abstract:
Marginalisation refers to a situation in which someone has been kept in a powerless or unimportant position within the system, which may lead to social unrest. Migration can be defined as the movement of individuals or groups from one geographical area to alternative area, looking for temporary or permanent residence, with or without their will. The process of change which addresses common issues related to poverty, inequality, human rights and gender inequalities and works towards the well-being of the individuals can be termed as development. There are studies which looks in these concepts separately. But the paper tries to understand the interrelation between marginalisation, migration and its positive and negative outcomes on the development processes in India. The Paper is descriptive, and the data used for the study were collected from secondary sources like government reports, academic articles, books, newspapers, and Internet sources. The study concludes that these concepts are deeply intertwined; understanding the dynamics of the concepts is crucial for the social inclusion and better development of Indian society.

Keywords: Marginalisation, Migration, Development, Economic system, Labour.

Introduction

India, as we all know, is a country with the highest population and is emerging as a world power. But at the same time, the country also faces challenges of significant social, financial and political disparities in all areas of life. When we examine the interrelationship among Marginalisation, migration, and understanding how it changes the dynamics of development, it is a complexly interconnected web of diversities and disparities within the Indian social context. Marginalisation is a multifaceted phenomenon that includes systemic inequalities and discriminatory practices in Indian society. It includes socio-economic, geographical and political dimensions of discrimination. Migration is the movement of individuals or groups from one place to another, seeking temporary or permanent residence, with or without their consent. The factors may include the attainment of livelihood, better opportunities and even distrust, which may lead to the migration of communities and societies. Development is

another multifaceted concept, and its relation with Marginalisation and migration is complex. Development denotes the social progress or growth in different areas of society, and the need to understand the relation it has with Marginalisation and migration is very important.

Marginalisation is not an individual phenomenon; it is rooted in every society in its different forms, which affects the people negatively. Report named "Equality, Excellence and Inclusiveness" by OECD states that

"The challenges we face are how to ensure our education systems give every child the quality learning experiences that they need to develop and realise their potential, and to do so in ways that value who they are, their language, identity and culture. How do we harness diversity, create fairness, and ensure our learning environments engage and achieve the best outcomes for all individuals, not just for a few?" (Schleicher,2014).

Even though there is available literature on the concept of marginalisation, the term has not been defined clearly anywhere (Messiou,2012). The concepts like inclusion and exclusion are always discussed in relation to marginalisation, and the term social exclusion often appears as marginalisation. Migration is the movement of individuals or groups from one place to another, seeking temporary or permanent residence, with or without their consent. Messiou (2012) argues that the term marginalisation is not a single concept, as there are several conceptualisations of the term. According to Razer et al., it is a situation in which some people do not have enough space for actively participating in those societal activities, in which they can also be a part. Thus, to be socially excluded is to be marginalised from that society. The feeling of marginalisation comes to them when they feel that they do not belong anywhere, and also no feeling of being a valued person in those communities where they can be or were a part.

The term migration is an umbrella term which includes different categories of people, including migrant workers, smuggled migrants and those migrants who can be categorised as international students whose migration status is not specifically addressed in international law. According to the current data provided by the International Organisation of Migration, the global estimate of migrants in 2020 is nearly 281 million, which is nearly 3.6 percentage of the total global population, and among them, 59 million are displaced within their countries, which is caused by the conflicts, violence and disasters. Those who are internally displaced migrants often end up living in conditions like overcrowded and unsanitary situations, which have very few jobs and services available. Looking into India, the 2011 census says that there are nearly 454 million migrants in India, which has increased from the 2001 census. Internal migration increases primarily due to employment and marriage, which eventually contribute to shaping India's socio-economic and political life in the origin and destination regions. Out of 10 people, two of them are internal migrants in India, and they might be crossing district or state borders frequently. When looking into the urbanisation of Indian cities, which has increased from 27.81 in the 2001 census to 31.16 in the 2011 census gives a clear picture of the demographic explosion and the rural-urban migration which is caused by poverty. Development can be seen as a process that brings change with an intention of improving the well-being of the individual and groups in that society, focusing on the areas of poverty, human and gender rights, and environmental protection. The country is developing, but there are areas where challenges are persisting. It includes inequality in consumption, child malnutrition, unemployment and women's participation in the labour workforce.

Marginalisation, Migration and Development are three important concepts in the area of sociology. Their interconnections and contributions to the different aspects of society are what the paper tries to study thoroughly. The paper looks into the dimensions of Marginalisation, and its relation with migration, especially the internal migrations in the

country, and finally, to have an idea about the positive and negative consequences that these migrations bring to Indian society and its development.

Review of Literature

Rajan, Irudaya, S., et.al. (2023). By using the unit-level data of the 64th round (2007-2008) of the National Sample Survey and the Employment, Unemployment and Migration Particulars, the author tries to understand temporary migration through the lens of caste, which is in Indian society. The study states that the internal migration in India can be considered as one of the important strategies among the people who are struggling for their livelihoods. It is also visible that the temporary migration among the disadvantaged people is high in number when compared to the OBC and other categories. The paper says that the caste based marginalizations and exclusion can be one of the reasons that eventually lead people to migrate for their livelihoods in different parts of the country.

Prasad, Raghu, Jeeru. (2022) The paper discusses the issues and challenges of the marginalised section on social exclusion and social inclusion in India in the 21st century. By disintegrating the marginalised communities, especially the Dalits, in the development activities of the communities, they are getting more socially excluded within their communities and society. By providing the opportunities for education, better health, welfare of families, employment opportunities they can be empowered. The literature shows the picture of how the marginalised sections of society are socially excluded and how it impacts the relationship between the Marginalisation and development.

Yoganandham, G.(2022). The article discusses the existing inequality in the wealth distribution among the Indian people, and it also delves into the relationship between migration and marginality. Migration to the urban areas is always a strategy to improve economic security and reduce poverty. But still, the benefits of these migrations also vary across different social groups. The paper also sheds light on the fact that marginalised communities often face challenges in benefiting from migration. The study gives a comprehensive analysis of the interplay between different factors like employment, labour market and inequality and development happening in India and also predict that there will be a slower GDP growth for India in the upcoming years. Looking in to the interplay between migration and Marginalisation and development is always multi perspective. The current study understanding inequalities, marginality and its impact on migration and development in Indian society.

Sharma,Malavika.(2021). The study tries to understand the nodes of marginality by focusing on the issues like displacement and mitigation happening in the Kashmir. As the after effects of the partition of 1947, the people got displaced and migrated to different areas of Kashmir. Many of them are still in the refugee camps and resettlement colonies. The paper focuses on how their identities and migration are interrelated with the Marginalisation of the community and the people. As a borderland community, they are experiencing geographical isolation on one side and underdevelopment on the other side. They are always in the urge to move out of the circle of Marginalisation, migration, identity issues and the category of refugees to the citizens.

Helms, Benjamin.(2019). The study tries to summarise the essence of political science, migration studies, economics and many more streams of knowledge to extract the real reasons and problems of migration. The author is dividing the migration process into different stages; the reader is able to read between the lines and to understand the motivations and situations that lead the migrant to migrate. The causes can be income differentials, social ties he or she has in the new place, and political and social conditions that are forcing them. But still the researcher understands that there are unexplored and unrevealed factors or situations that deep down decide the migration destination, time and the pattern.

Lopez Nini, A.T. (2019). The paper explores the relationship between Marginalisation and migration in the Coatecas Altas, Oaxaca, Mexico. The paper says that the place with an increased degree of Marginalisation, which includes the lack or improper public services, less availability of quality education, and access to health services, leads to various deprivations and vulnerabilities. These fewer opportunities and poor living conditions led to the movement of the community to the United States. On one side, the migration leads to family disintegration in society; on the other hand, remittances from the migrants are not enough to increase the overall quality of life. The paper concludes that the migration from the Coatecas Altas is both a consequence and a response to the Marginalisation prevalent in that society.
Muller, Armin. (2016) The papers provide light into the matter of Marginalisation and labour migration. The study sees the realities of marginalised communities and their responses to marginalisation more comprehensively through the ethnographic study. The study focuses on understanding the role of institutions in this process of marginalisation. The paper also discusses by highlighting the reform policy of Deng Xiaoping, and analysing how some citizens of the People's Republic have become rich first and then become middle class to understand the influence of China's social policy on the social stratification and economic inequality. A substantial distance in terms of income, education, and privilege separates them from urban workers, migrant workers and offspring. The reproduction of class differences across generations in China's education system also raised the question of social mobility in society.
Bakewell, O.(2009) the paper dive deep in to understanding the relationship between migration, diaspora and development by critically examining the available literature in the area of study. The study points to the rediscovery of the concepts of migration and diaspora and their interrelationship to understand the development. The concept of migration and development is growing in different aspects. The paper tries to completely analyse the inner layers of these concepts and how these concepts have evolved over a period of time, with the involvement of the other actors and situations involved in it.
Manalansan, M.F. (2006). The development of the term sexuality, especially in migration studies are interrelated with the intersectionality of race, caste and class. The coming of queer identities in the picture of sexuality also contributed to the changing narratives of sexuality in the migration literature, too. The paper also highlights the importance of disciplines such as anthropology, history and sociology in sexuality and migration research. In conclusion, the researcher understands that the inclusion of queer perspectives can help to go beyond glorifying the normal gendered agents and also highlight the migrant workers who are desiring and pleasure seekers. It also helps to expand the notion of refugees, asylum, recruitment, and assimilation, particularly.
Kundu, Amitabh &Gupta, Shalini. (1996). The study tries to understand the relationship between migration, urbanisation, and Regional Inequality by analysing the migration pattern using data, mainly the male data from the census. The study says that the spatial disparity in development should encourage migration towards developed states and regions, as per the neo-classical model of growth and labour mobility. The study shows that the manufacturing sector in 1991 was mainly focused on those developed states and large cities, which were very few in number then, to promote the industries. It contributed to the interstate migration and interstate disparity in the industrial development as a whole.

Research Methodology

The paper tries to recognise the interrelation among marginalisation, migration and development in India. The interconnected concepts play a key part in the social and financial conditions of the Indian society. To understand the multilayered relationship between the Marginalisation happening in the country, its impact on migration, especially on the internal

migration in the society, and the consequences of these migrations on the changing dynamics of development of Indian society, and also to know how it will contribute to the existing knowledge system, help to prepare and plan policies and programmes accordingly. The Paper is descriptive, and the information used for the study was collected from secondary sources like government reports, academic articles, books, newspapers, and web sources.

<u>Discussions and Conclusion</u>

The Relationship Between Marginalisation and Internal Migration in India

Marginalisation as an idea is universal across the disciplines, and it refers to how some groups of the societies have been left with less power, which has pushed them to issues in different areas of life (Krishna, Sankaran.2023). It includes the marginalisation of specific groups in society, and its impact is extensive, upsetting various aspects of their lives, including the basic rights to their political representations. To create a more inclusive society, we have to understand these patterns of migration and also break them. The marginalisation and social exclusion are creating a hindrance directly or indirectly to have a development which focuses on justice, equality and sustainability. The issues of marginalisation have been affecting the SC, ST, women, children, lesbian, gay and queer communities mostly (Vijayalakshmi, R., et.al.2023).

Migration is a phenomenon of great complexity. Moreover, it's not easy to classify the individuals who migrate, as they come with different circumstances, different environments, and different individual characteristics (Tataru, G.F.2019). When the issues of Marginalisation get intensified in the origin states, many of them decide to migrate to different parts of the country or world to have better lives. The causes of Marginalisation can be caste and class status of the people, their gender, rural-urban differences in residence and many more. When these factors no longer support them in contributing to their lives and are affected negatively, they start to move for better conditions.

The Migration flows have shaped diverse key sectors of Indian society, like employment, foreign affairs and education. The relationship between large-scale migration and the mobility of people looking for labour and their historical connections has been recorded. The nature of the migration flow is different in each aspect, but its impact on the origin and destination states is also different in nature. Internal and seasonal migrations act as a ‘safety valve’ among the poor communities like SC, ST, and OBC for better livelihood opportunities (Humanitarian Foresight Think Tank, 2016). On one hand, while people may migrate out of caste atrocities, they stand to lose the consistent markers of weakness and access to capital, even though the migration may not have meaningfully enhanced their socio-economic conditions. The number of Scheduled Caste and Scheduled Tribes is counted high in short-term migration streams and is less counted in long-term migration streams.

In the National Sample Survey (2007-8) data shows that male migrants belonging to SC/ST are migrating less oriented towards urban spaces. It’s also visible that the major reasons of migration especially the internal migration can be marriage and migration with families. whereas the ST is relatively focused on employment only for inter-district but not inter-state migration. The share of Sc and other categories like general and OBC people migrate for employment opportunities in inter-district and inter -state ways. But ST focuses on the inter-district migration. The space SC/ ST population having in the urban settings are always questionable. But still, there is no sign of active discrimination against these social categories. When we study the labour structure of migrants from these social categories, it’s seen that 35% of ST and 23% for SC, compared to 13% for others, are only engaged in agriculture and mining. Construction also contributes to a share of SC and ST, 20% and 24% respectively. Further, among the brick kiln workers,95% of whom are rural, half of the migrant workers (48.7%) are from the SC category and 16.1% from the ST category. It would appear that there

is an unequal distribution of SC and ST, respectively. At this time, it is very important to understand that there are factors and situations that are leading to the migration of those particular communities more frequently compared to that of the other categories (Ministry of Housing and Urban Poverty Alleviation, 2017).

Even though the number of females in the internal migration due to marriage, family and labour, which is nearly 75% of the total internal migrants, their experiences are neglected compared to those of men. The 55th round of the National Sample Survey (1999-2000) indicates that women migrants are the relational migrants as they accompany their husbands, parents or any other family member for migrating. There are a lot of reasons for the migration of families to urban settings, including looking for labour and educational opportunities. Father, mother and brothers will be working in different sectors of the industrial base to escape from poverty and unemployment. The migration for more opportunities for children is also a trend, which makes the migration of women with families. Restrictions girl child having for education and the pressure of marriage can be also reasons for these family migrations to the urban space where they feel more freedom from rural settings. (Agarwal, S., et.al. 2016).

When India is having 69% of its population still living in rural areas, at the same time its also important to understand that 25 cities from India have been listed in the fast-growing cities worldwide. The major reason can be the rural-to-urban migration happening due to the lack of economic opportunities available in rural areas. Uttar Pradesh and Bihar states have the highest percentage of rural population, which is 18.6% and 11.1% respectively, and these are the states that are sending more migrants (Abbas, Rameez.2016).

Understanding the dimensions of the Marginalisation and its impact on migration is complex and there are many factors which contributing for the migration of the population and the factors like caste and class related issues, the gender disparities in the society, the rural-urban differences and regional disparities, all have contribution for the migration of people and societies, temporarily or permanently from their place to a new place with or without their families. Majority of them migrated for better opportunities and facilities and also to avoid the discrimination they face in their earlier societies. The issues of identity, racial and ethical clashes also directly or indirectly causing the migration of people within the Indian society.

Impact of Marginalisation and Migration on the Changing Dynamics of Development in India

People who stand marginalised have comparatively slight control in their lives and the capitals existing to them and it restricts their contribution to society and its development. The impact of these marginalisations in their life is creating anegative impact not only in their lives but also in to their surrounding which makes them to have negative outlook towards life and this has created a tremendous impact on the development of human beings, as well as on society at large (Vijayalakshmi, R.,)

Migration not only affect the people, it affects the society, community and the whole economy of the country in different aspects (Azam&Gubert,2006). Migration and remittance are in a straight line connected and its impacts are visible in host and destination countries (Ratha et.al.2024). The development is far less than the loud upsurges noted in 2021-2022 after the COVID-19 pandemic(ibid.). India is one of the nations that receives the highest remittance from the migrants, and it has two major forms: one is the family remittance, and the other one flows out of the NRI account (Tumbe, Chinmay.,2011). According to the statistics of the World Bank report, remittances to the low and middle-income countries have increased by 3.8 % in 2023. India is one of the leading countries in the receiving of remittance, which contributes to the 3.4%of the GDP of India. Remittance always plays as an indicator of international migration and its impact on the development of the origin countries.

But it's also important to understand that these remittances are reaching states like Goa, Punjab and Maharashtra and the investment sectors of these states. (Tumbe, Chinmay,2011). Internal migration in India and its relation with Marginalisation and development is more complex. A study by Tumbe, Chinmay (2011) explains that the number of households receiving domestic remittance and the remittance received through domestic are generally less among the SC and ST categories, and it's coming from the agricultural labour. The study also highlights that the poorer sections of society are not able to enjoy the benefit sof migration as the labour mobility and the returns are less from the migration.

The relationship between social exclusion and human development is also an important area of study. These courses create unfair distribution of resources and unequal access to capabilities and rights necessary for human development (Popay et.al.,2008). The marginalisation of the people directly contributes to the discrimination from the basic rights and facilities which they need for survival, which basically includes education and health services. They also face physical barriers, language issues and policy discrimination in the destination places, which makes their lives difficult.

Conclusion

Marginalisation, Migration and development are three important concepts interconnected in the international and national contexts. In the context of India, the concept of Marginalisation is complex and deeply rooted in historical, cultural, and economic contexts. Understanding the layers of migration and the groups who are marginalised is important for building an inclusive society. When the concept of migration comes in to the frame with the Marginalisation it becomes more complex and it also results different dimension for the concept of development. The study concludes that these concepts are deeply intertwined and understanding the dynamics of the concepts is crucial for the social inclusion and better development of the Indian society.

References

- Krishna,Sankaran.(2023)Marginalisation.In:Jodhka,s.s.,Rehbein,B.(eds)Global Handbook of Inequality. Springer,Cham.https://doi.org/10.1007/978-3-030-97417-6_55-1.
- Rajan,Irudaya,S.,Keshri,Kunal.,&Deshingkar,Priya.,(2023) Understanding Temporary Labour Migration Through the Lens of Caste:India case study,Migration in South Asia,IMISCOE Regional Reader,ISSN 2364-4095.
- Vijayalakshmi,R.,Rudresha,N.,Nisha,L.P.(2023).Marginalisation and marginalised groups in India:A Comprehensive study up to 2021.International Journal of Research Culture Society.7.46-49.http://ijrcs.org/wpcontent/uploads/IJRCS202306010-min.pdf.
- Prasad,Raghu,Jeeru.,(2022)Social Exclusion and Inclusion in India:Issues and Challenges of marginalised Sections in 21st Century.International Journal of Novel Research and Development.ISSN:2456-4184.
- Yoganandham,G.(2022).Inequality,Lobour Markets, Economic Development and the impact of Migration on Poverty,Patterens and Employment Dynamics in India-A Macroeconomic Development Viewpoint.International Journal of Economics,Business and Management Research,6(12),116-128.https://doi.org/10.51505/IJEBMR.2022.61209.
- Sharma,Malavika., (2021) Nodes of Marginality:Identity,Displacement and Migration in the Post-Partition Borderlands of Kashmir, Journal of Immigrants and Refugees Studies,Vol 20,Issue 4,https://doi.org/10.1080/15562948.2021.1949656.
- Helms,Benjamin.,(2019) Global Migration: Causes and Consequences, Oxford Research Encyclopaedias,https://doi.10.1093/acrefore/9780190228637.013.631.
- Lopez Nini,A.T.(2019).Coatecas Altas: Between Marginalisation and Migration.Revista Vinculando.

- Tataru,G.F.(2019).Migration-an overview on terminology,causes and effects.Logos Universality Mentality Education Novelty:Law.http://doi.org/10.18662/lumenlaw/24.
- Humanitarian Foresight Think Tank.(2016).Seasonal migrations of marginalised(tribal) communities in Madhya Pradesh and Rajastan:Foresight analysis and scenarios by 2020.
- Ministry of Housing and Urban Poverty Alleviation.(2017)Report of the Working Group on Migration.
- Agarwal,s.,Jones,E.(2016) Adolescent Girls in Urban Slums India:Aspirations,Opportunities and Challenges.Indian Journal of Youth and Adolescent Health.8-21.
- Abbas,Rameez.(2016)Internal Migration and Citizenship in India.Journal of Ethic and Migration Studies.Vol-42
- Browne,Evie.,&Millington,A.(2015) Social development and Human development.Topic Guide.GSDRC Applied Knowledge Services.
- Muller,Armin.(2016),The Margins and the marginalised:Social Policy,Labour Migration ,and Ethnic Identity in Contemporary China.Journal of Current Chinese Affairs.3-27.
- Di Cesare,M.(2014) Women,Marginalisation and Vulnerability:Introduction.Genus,70(2-3),1-6.http://www.jstor.org/stablke/10.2307/genus.702-3.1.
- Schleicher,A.,(2014)Equity,Excellence and Inclusiveness in Education:Policy Lessons from Around the World: Background Report for the 2014 International Submit of the Teaching Profession.,Paris,France:OECD.
- Razer,M.,Friedman,V,J., & Warshofsky,B.,(2013) Schools as agents of social exclusion and inclusion.,International Journal of Inclusive Education.,17(11): 1152-1170.
- Frisen,A.,Hasselblad,T.,&Holmqvist,K.(2012) What actually makes bullying stop? Reports from former victims., Journal of Adolescence,35(4):981-990.
- Messiou,K.,(2012) Collaborating with children in exploring Marginalisation:An approach to inclusive education.,International Journal of Inclusive Education.,16(12):1311-1322.
- Tumbe,Chinmay.(2011)Remittances in India: Facts and Issues.Working PaperIndian Institute of Management,Bangalore.
- Bakewell,O.(2009).Migration,Diasporas and Development:Some Critical Perspectives.Journal of Economics and Statistics,229(6)787-802.http://www. jstor.org/stable/23813481.
- Popay,J.,Escorel,S.,Hernandez,M.,Jhonson,H.,Mathieson,J.,&Rispel,L.(2008)Understanding and Tackling social exclusion:Final report of the social exclusion knowledge network of the commission on social determinants of health.Geneva:WHO.
- Azam,J.P.,&F.Gubert.(2006) Migrants remittances and the household in Africa: A Review of the Evidence.Journal of African Economies,Vol.15,AERC Supplement 2,pp.426-462.
- Manalansan,M.F.(2006) Queer intersecions:Sexuality and gender in migration studies.The International Migration Review,40(1),224-249.http;//www.jstor.org/stable/27645585.
- Kundu,Amitabh &Gupta,Shalini.(1996) Migration, Urbanisation and Regional Inequality.Economic
  and Political Weekly.Vol.31.No.52.http://www.jstor.org/stable/4404940.

Email ID: anuls1010@gmail.com
Email ID: mahathamil@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com Bohal Shodh Manjusha ISSN: 2395-7115
Impact Factor: 8.642 June 2026 Page No. : 269-275
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

ਭੁੱਖ ਇਉ ਸਾਹ ਲੈਂਦੀ ਹੈ : ਸਭਿਆਚਾਰਕ ਰੂਪਾਂਤਰਣ ਦਾ ਬਿਰਤਾਂਤ

ਡਾ. ਰਮਨਪ੍ਰੀਤ ਕੌਰ
ਅਸਿਸਟੈਂਟ ਪ੍ਰੋਫੈਸਰ
ਦਸ਼ਮੇਸ਼ ਖਾਲਸਾ ਕਾਲਜ, ਜ਼ੀਰਕਪੁਰ।

Abstract(ਸਾਰ) : ਦੀਪਤੀ ਬਬੂਟਾ ਬਹੁ-ਸਿਰਜਕ ਤੇ ਸੁਜੱਗ ਲੇਖਿਕਾ ਹੈ। ਉਸ ਨੇ ਕਵਿਤਾ,ਨਾਟਕ, ਯਾਤਰਾ-ਬਿਰਤਾਂਤ, ਫ਼ਿਲਮੀ ਪਟਕਥਾ ਅਤੇ ਕਹਾਣੀ ਆਦਿ ਸਾਹਿਤ ਰੂਪਾਂ ਉੱਤੇ ਕਲਮ ਅਜ਼ਮਾਈ ਹੈ, ਪਰ ਉਸ ਨੂੰ ਸਾਹਿਤਕ ਹਲਕਿਆਂ ਵਿੱਚ ਮਾਨਤਾ ਇੱਕ ਕੁਸ਼ਲ ਕਹਾਣੀਕਾਰ ਵਜੋਂ ਮਿਲੀ ਹੈ। ਉਸਦੀਆਂ ਕਹਾਣੀਆਂ ਦਾ ਕਥਾ-ਵਸਤੂ ਅਸਲੋਂ ਅਛੂਤਾ ਹੈ।ਉਸਨੇ ਪੰਜਾਬੀ ਸਮਾਜ ਦੇ ਬਹੁਤ ਸਾਰੇ ਹਨੇਰੇ ਕੋਨਿਆਂ 'ਤੇ ਝਾਤ ਪਵਾਈ ਹੈ। ਆਪਣੇ ਸਮਕਾਲੀ ਪਰ ਸਥਾਪਿਤ ਕਹਾਣੀਕਾਰਾਂ ਦੀ ਪੈੜ 'ਚ ਪੈੜ ਧਰ ਕੇ ਤੁਰਨ ਤੋਂ ਉਸਨੇ ਸੁਚੇਤ ਤੌਰ 'ਤੇ ਗੁਰੇਜ਼ ਕੀਤਾ ਹੈ। ਸਮਾਜਿਕ ਮਨੁੱਖੀ ਮਸਲਿਆਂ ਨੂੰ ਕਹਾਣੀ ਵਿੱਚ ਢਾਲਣ ਸਮੇਂ ਉਹ ਉਸ ਧਿਰ ਦਾ ਵੀ ਲਿਹਾਜ਼ ਨਹੀਂ ਕਰਦੀ ਜਿਸ ਨੂੰ ਉਹ ਸਹੀ ਪਛਾਣ ਦੇ ਕੇ ਉਸਦੇ ਹੱਕਾਂ ਦੀ ਵਕਾਲਤ ਕਰ ਰਹੀ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਇੱਕ ਕਹਾਣੀਕਾਰ ਵਜੋਂ ਉਹ ਖਾਸੀ ਸੁਜੱਗ ਪਰ ਅਸੰਤੁਸ਼ਟ ਰਚਨਾ-ਧਰਮੀ ਹੈ। ਉਸ ਅੰਦਰਲੇ ਬੁੱਤਸ਼ਿਕਨ ਨੂੰ ਨਾ ਸਨਾਤਨੀ ਸੱਭਿਆਚਾਰਕ ਪਰੰਪਰਾ ਮਨਜ਼ੂਰ ਹੈ ਅਤੇ ਨਾ ਹੀ ਪੂਰਵਲੀ ਸਾਹਿਤਕ ਰੀਤ ਜਾਂ ਕਹਾਣੀ ਕਲਾ ਦਾ ਚਲੰਤ ਵਿਧਾਨ। ਉਸਦੀ ਕਹਾਣੀ ਕਥਾ-ਵਸਤੂ ਅਤੇ ਕਥਾ-ਸ਼ੈਲੀ ਪੱਖੋਂ ਨਵੀਂ ਵੀ ਹੈ ਅਤੇ ਨਵੇਂ ਪ੍ਰਤੀਮਾਨ ਸਿਰਜਣ ਵਾਲੀ ਵੀ ਹੈ।

Keyword(ਕੀਵਰਡ) : ਸੁਜੱਗ ਲੇਖਿਕਾ, ਸਭਿਆਚਾਰਕ ਪਰੰਪਰਾ ਤੋਂ ਇਨਕਾਰੀ, ਮੱਧ ਵਰਗ ਦਾ ਤਣਾਓ, ਪੂੰਜੀਵਾਦੀ ਮਾਡਲ, ਕਲਾਤਮਕ ਪੱਖ।

ਦੀਪਤੀ ਬਬੂਟਾ ਦੇ ਹੁਣ ਤੱਕ ਚਾਰ ਕਹਾਣੀ-ਸੰਗ੍ਰਹਿ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਿਤ ਹੋਏ ਹਨ; 'ਕੁਝ ਤੇਰੀਆਂ ਕੁਝ ਮੇਰੀਆਂ', 'ਤੀਜੇ ਪਿੰਡ ਦੇ ਲੋਕ', 'ਪਿੱਛਾ ਰਹਿ ਗਿਆ ਦੂਰ' ਅਤੇ 'ਭੁੱਖ ਇਉਂ ਸਾਹ ਲੈਂਦੀ ਹੈ'। ਉਸ ਦੀ ਪ੍ਰਾਪਤੀ ਇਹ ਹੈ ਕਿ ਉਹ ਮਨੁੱਖ ਦੇ ਵਿਵਹਾਰ, ਪਦਾਰਥਕ ਸਥਿਤੀ ਅਤੇ ਸਮਾਜਿਕ ਰਾਜਸੀ ਵਰਤਾਰਿਆਂ ਨੂੰ ਇਤਿਹਾਸ ਦੀ ਤੋਰ ਅਤੇ ਦਿਸ਼ਾ ਦੇ ਪ੍ਰਸੰਗ ਵਿੱਚ ਰੱਖ ਕੇ ਦੇਖਦੀ ਹੈ। ਸੁਚੇਤ ਤੌਰ 'ਤੇ ਰਾਜਨੀਤੀ ਨਾਲ ਉਸਦਾ ਕੋਈ ਸੰਬੰਧ ਨਹੀਂ ਨਾ ਹੀ ਉਸਦੀਆਂ ਕਹਾਣੀਆਂ ਰਾਜਸੀ

ਵਰਤਾਰੇ ਉਤੇ ਤਬਸਰਾ ਕਰਦੀਆਂ ਹਨ ਪਰ ਉਸ ਦੀਆਂ ਕਹਾਣੀਆਂ ਵਿੱਚ ਰਾਜਸੀ ਵਰਤਾਰੇ ਅੰਦਰਲੀਆਂ ਹਲਚਲਾਂ ਤੇ ਤਬਦੀਲੀਆਂ ਬਾਰੇ ਸੰਕੇਤ ਮਿਲਦੇ ਹਨ। ਉਹ ਇਤਿਹਾਸਕ-ਸਮਾਜਿਕ ਅਨੁਭਵ-ਸਾਰ ਅਨੁਕੂਲ ਬਦਲਦੇ ਬਾਹਰਮੁਖੀ ਯਥਾਰਥ ਅਤੇ ਉਸਦੇ ਸਿੱਟੇ ਵਜੋਂ ਮਨੁੱਖ ਦੇ ਮਨ ਅਤੇ ਚੇਤ-ਅਚੇਤ ਅਕਾਂਖਿਆਵਾਂ 'ਤੇ ਪੈਣ ਵਾਲੇ ਗਹਿਰੇ ਪ੍ਰਭਾਵਾਂ ਨੂੰ ਉਜਾਗਰ ਕਰਦੀ ਹੈ।

ਦੀਪਤੀ ਬਬੂਟਾ ਕੋਲ ਸ਼ਹਿਰੀ ਵਸੇਬੇ ਅਤੇ ਮੱਧ-ਵਰਗ ਦੇ ਜੀਵਨ ਦਾ ਹੱਡੀ ਹੰਢਾਇਆ ਅਨੁਭਵ ਹੈ। ਸ਼ਹਿਰੀ ਮੱਧ-ਵਰਗ ਦੇ ਅਭਾਵਗ੍ਰਸਤ ਅਤੇ ਤਣਾਉਪੂਰਨ ਜੀਵਨ ਦੇ ਅਨੇਕਾਂ ਪਸਾਰ ਉਸ ਦੀਆਂ ਕਹਾਣੀਆਂ ਦਾ ਕਥਾ-ਵਸਤੂ ਬਣਦੇ ਹਨ। 'ਭੁੱਖ ਇਉਂ ਸਾਹ ਲੈਂਦੀ ਹੈ' ਕਹਾਣੀ-ਸੰਗ੍ਰਹਿ ਦੀਆਂ ਬਹੁਤੀਆਂ ਕਹਾਣੀਆਂ ਸ਼ਹਿਰੀ ਮੱਧ-ਵਰਗ ਦੇ ਡਰੂ, ਦੱਬੂ, ਦੰਭੀ ਅਤੇ ਸਵਾਰਥੀ ਵਿਵਹਾਰ ਨੂੰ ਕਟਾਖਸ਼ੀ ਸ਼ੈਲੀ ਵਿਚ ਪੇਸ਼ ਕਰਦੀਆਂ ਹਨ। ਪਦਾਰਥਕ ਸਾਧਨਾਂ ਦੀ ਘਾਟ ਵਿੱਚ ਅਤ੍ਰਿਪਤੀਆਂ ਹੰਢਾਉਂਦੀ ਸ਼ਹਿਰੀ ਮੱਧ-ਵਰਗੀ ਜਮਾਤ ਸਭਿਆਚਾਰਕ ਵਰਜਣਾਵਾਂ ਅਤੇ ਟੈਬੂਜ਼ ਦੀ ਗੁਲਾਮੀ ਭੋਗਦੀ ਹੈ। ਦੀਪਤੀ ਬਬੂਟਾ ਸੱਭਿਆਚਾਰਕ ਵਰਜਣਾਵਾਂ ਅਤੇ ਮਰਿਆਦਾ ਦੀ ਲਛਮਣ ਰੇਖਾ ਵਿੱਚ ਸਿਰ ਸੁੱਟ ਕੇ ਵਿਚਰਦੀ ਮੱਧ-ਵਰਗੀ ਸ਼੍ਰੇਣੀ ਦੀ ਮਾਨਸਿਕਤਾਂ ਉੱਤੇ ਭਰਵਾਂ ਵਾਰ ਕਰਦੀ ਹੈ। ਪਰਮਾਣ ਵਜੋਂ ਉਸਦੀਆਂ ਕਹਾਣੀਆਂ 'ਔਖੀ ਘੜੀ' ਤੇ 'ਮੁਕਤੀ ਤੋਂ ਪਾਰ' ਪੜ੍ਹੀਆਂ ਜਾ ਸਕਦੀਆਂ ਹਨ।

ਯਥਾਰਥ ਬੋਧ ਤੇ ਇਤਿਹਾਸਿਕ ਬੋਧ ਦੀ ਕਹਾਣੀ : ਦੀਪਤੀ ਬਬੂਟਾ ਕੋਲ ਪੰਜਾਬ ਦੇ ਤੇਜ਼ੀ ਨਾਲ ਬਦਲ ਰਹੇ ਜੀਵਨ ਦੇ ਯਥਾਰਥ ਦਾ ਵਿਵੇਕ ਵੀ ਹੈ ਅਤੇ ਉਹ ਇਸ ਨੂੰ ਪੰਜਾਬ ਦੇ ਇਤਿਹਾਸ ਅਤੇ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਸਭਿਆਚਾਰਕ ਪ੍ਰਸੰਗ ਵਿੱਚ ਰੱਖ ਕੇ ਬਿਆਨ ਕਰਦੀ ਹੈ। ਉਸਦੇ ਯਥਾਰਥ ਬੋਧ ਅਤੇ ਇਤਿਹਾਸ ਬੋਧ ਨੂੰ ਸਮਝਣ ਲਈ ਉਸਦੀ ਕਹਾਣੀ 'ਸਿਰਫ਼ ਏਨੀ ਮੇਰੀ ਬਾਤ ਨਹੀਂ' ਪੜ੍ਹੀ ਜਾ ਸਕਦੀ ਹੈ। ਇਸ ਕਹਾਣੀ ਵਿਚ ਪੰਜਾਬ ਕੌਰ ਦੇ ਉੱਤਮ ਪੁਰਖੀ ਬਿਰਤਾਂਤ ਰਾਹੀਂ 1947 ਦੀ ਦੇਸ਼ ਵੰਡ ਤੋਂ ਲੈ ਕੇ ਅਜੋਕੇ ਕਿਸਾਨ ਅੰਦੋਲਨ ਤੱਕ ਦੇ ਇਤਿਹਾਸ ਉੱਤੇ ਪੰਛੀ ਝਾਤ ਪਵਾਈ ਗਈ ਹੈ। ਇਸ ਕਹਾਣੀ ਵਿਚ ਸੱਤ ਕੁ ਦਹਾਕਿਆਂ ਦੇ ਪੰਜਾਬ ਦੇ ਇਤਿਹਾਸ ਦੀਆਂ ਅਹਿਮ ਘਟਨਾਵਾਂ-ਦੇਸ਼ ਵੰਡ, ਹਿੰਦ-ਚੀਨ ਜੰਗ, ਹਿੰਦ-ਪਾਕਿ ਜੰਗਾਂ, ਪੰਜਾਬੀ ਸੂਬੇ ਦਾ ਅੰਦੋਲਨ, ਪੰਜਾਬ ਦੀ ਵੰਡ-ਦਰ-ਵੰਡ, ਹਰੀ ਕ੍ਰਾਂਤੀ ਦੀ ਅਸਫਲਤਾ ਤੋਂ ਉਪਜੇ ਪੰਜਾਬ ਸੰਕਟ, ਖਾੜਕੂ ਹਿੰਸਾ, ਕਿਸਾਨ ਖੁਦਕੁਸ਼ੀਆਂ ਅਤੇ ਉਦਾਰਵਾਦੀ ਆਰਥਿਕਤਾ ਦੀ ਆੜ ਵਿੱਚ ਕਾਰਪੋਰੇਟ ਦੇ ਵਿਕਾਸ ਮਾਡਲ ਅਤੇ ਉਸ ਖਿਲਾਫ਼ ਉੱਠੇ ਵਿਸ਼ਾਲ ਕਿਸਾਨ ਅੰਦੋਲਨ ਦਾ ਬਿਆਨੀਆ ਸਿਰਜਿਆ ਗਿਆ ਹੈ। ਕਹਾਣੀ ਦੀ ਨਾਇਕਾ ਪੰਜਾਬ ਕੌਰ ਦਾ ਪਰਿਵਾਰ ਦੇਸ਼ ਵੰਡ ਵਿਚ ਉਜੜ ਕੇ ਪੂਰਵੀ ਪੰਜਾਬ ਵਿਚ ਆ ਕੇ ਆਪਣੀਆਂ ਜੜ੍ਹਾ ਲਗਾਉਂਦਾ ਹੈ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਵਰਗੇ ਲੱਖਾਂ ਸ਼ਰਨਾਰਥੀਆਂ ਨੇ ਪੰਜਾਬ ਅਤੇ ਭਾਰਤ ਦੀ ਆਰਥਿਕਤਾ ਨੂੰ ਮਜ਼ਬੂਤ ਕੀਤਾ। ਅੰਨ ਦੀ ਸਮੱਸਿਆ ਨਾਲ ਜੂਝਦੇ ਭਾਰਤ ਦੇ ਲੋਕਾਂ ਲਈ ਅੰਨ ਅਤੇ ਖਾਧ ਪਦਾਰਥਾਂ ਦੇ ਭੰਡਾਰ ਲਗਾ ਦਿੱਤੇ। ਦੇਸ਼ ਦੀ ਰਾਖੀ ਲਈ ਸਰਹੱਦਾਂ 'ਤੇ ਆਪਣਾ ਜਵਾਨ ਪੁੱਤ-ਪੋਤਰੇ ਕੁਰਬਾਨ ਕਰਵਾਏ। ਨਹਿਰੂ ਦੀ ਅਗਵਾਈ ਵਾਲੀ ਸਰਕਾਰ ਨੇ ਪੂੰਜੀਵਾਦੀ ਆਰਥਿਕ ਵਿਕਾਸ ਦਾ ਜਿਹੜਾ ਮਾਡਲ ਅਪਣਾਇਆ ਉਸ ਨੇ ਅਮੀਰ ਗਰੀਬ ਦਾ ਪਾੜਾ ਵਧਾਇਆ ਅਤੇ ਦੇਸ਼ ਦੇ ਅੰਨਦਾਤੇ ਨੂੰ ਖੁਦਕੁਸ਼ੀਆਂ ਕਰਨ ਦੇ ਰਾਹ ਤੋਰ ਦਿੱਤਾ। ਆਜ਼ਾਦੀ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਪੰਜਾਬ ਤੇ ਪੰਜਾਬੀਆਂ ਨੂੰ ਵੰਡ-ਦਰ-ਵੰਡ ਦਾ ਦਰਦ ਵੀ ਸਹਿਣਾ ਪਿਆ ਅਤੇ ਖਾੜਕੂ ਤੇ ਸਰਕਾਰੀ ਧਿਰ ਦੀ ਹਿੰਸਾ ਅਤੇ 84 ਦੇ ਸਿੱਖ ਵਿਰੋਧੀ ਦੰਗਿਆਂ ਦਾ ਸੰਤਾਪ ਵੀ ਸਹਿਣਾ ਪਿਆ ਹੈ। ਪੰਜਾਬ ਦੀ ਕਿਸਾਨੀ ਦੇ ਸੰਕਟ ਦਾ ਸਿਖਰ ਉਦੋਂ ਸ਼ੁਰੂ ਹੋਇਆ ਜਦੋਂ ਵੱਡੇ ਕਾਰਪੋਰੇਟ ਘਰਾਣਿਆਂ ਨੇ ਤਿੰਨ ਕਾਲੇ ਕਾਨੂੰਨਾਂ ਦੇ ਮਖੌਟੇ ਉਹਲੇ ਠੇਕੇ

ਅਧਾਰਿਤ ਖੇਤੀ ਵਰਗੇ ਕਾਲੇ ਕਾਨੂੰਨਾਂ ਦੀ ਆੜ ਹੇਠ ਕਿਸਾਨੀ ਦੀ ਜ਼ਮੀਨ ਅਤੇ ਸ੍ਰੋਤਾਂ ਨੂੰ ਕਾਬੂ ਕਰਨ ਦਾ ਯਤਨ ਕੀਤਾ। ਕਹਾਣੀ ਦੀ ਨਾਇਕਾ ਪੰਜਾਬ ਕੌਰ ਕਹਾਣੀ ਦੇ ਅੰਤ 'ਤੇ ਦਿੱਲੀ ਨੂੰ ਘੇਰਨ ਜਾ ਰਹੀਆਂ ਕਿਸਾਨ ਜਥੇਬੰਦੀਆਂ ਦੀਆਂ ਟਰਾਲੀਆਂ ਦੇ ਕਾਫ਼ਲੇ ਵਿੱਚ ਹੱਥ ਵਿੱਚ ਝੰਡਾ ਲੈ ਕੇ ਜਾ ਬੈਠਦੀ ਹੈ। ਇਹ ਕਹਾਣੀ ਪੰਜਾਬ ਦੇ ਸੱਤ ਦਹਾਕਿਆਂ ਦੇ ਇਤਿਹਾਸ ਉੱਤੇ ਨਿਰਾ ਤਬਸਰਾ ਹੀ ਨਹੀਂ ਸਗੋਂ ਪੰਜਾਬ ਦੇ ਸੰਕਟ ਦੀ ਸੁਭਾਵੀ ਦਿਸ਼ਾ ਵੱਲ ਸੰਕੇਤ ਵੀ ਹੈ। ਇਸੇ ਕਰਕੇ ਦੀਪਤੀ ਬਬੂਟਾ ਸਮਕਾਲੀ ਯਥਾਰਥ ਨੂੰ ਉਸਦੇ ਵਿਵੇਕ ਸਾਹਿਤ ਪਕੜਦੀ ਹੀ ਨਹੀਂ ਸਗੋਂ ਇਤਿਹਾਸ ਦੀ ਸੁਭਾਵੀ ਦਿਸ਼ਾ ਵੱਲ ਸਪੱਸ਼ਟ ਸੰਕੇਤ ਵੀ ਕਰਦੀ ਹੈ।

ਪੂੰਜੀਵਾਦੀ ਮਾਡਲ ਦੇ ਦੁਰਪ੍ਰਭਾਵ : ਦੀਪਤੀ ਬਬੂਟਾ ਪੰਜਾਬ ਦੇ ਸਮਕਾਲੀ ਯਥਾਰਥ ਦੇ ਸਤਾਅ 'ਤੇ ਪਏ ਆਮ ਦਿਖਦੇ ਸੱਚਾਂ ਨੂੰ ਹੀ ਨਹੀਂ ਬਿਆਨਦੀ ਸਗੋਂ ਹਕੀਕਤਾਂ ਪਿੱਛੇ ਕੰਮ ਕਰਦੀਆਂ ਰਾਜਸੀ ਅਤੇ ਆਰਥਿਕ ਸ਼ਕਤੀਆਂ ਨੂੰ ਬੇਪਰਦ ਕਰਦੀ ਹੈ। ਦੀਪਤੀ ਇਹ ਸਮਝਦੀ ਹੈ ਕਿ ਵਿਕਾਸ ਦਾ ਪੂੰਜੀਵਾਦੀ ਮਾਡਲ ਸੁੱਖ-ਸਾਧਨ ਤਾਂ ਪੈਦਾ ਕਰਦਾ ਹੈ ਪਰ ਇਹ ਪਦਾਰਥਕ ਅਮੀਰੀ ਦੇ ਨਾਲ ਮਨੁੱਖੀ ਰਿਸ਼ਤਿਆਂ ਦਾ ਘਾਣ ਵੀ ਕਰਦਾ ਹੈ। ਪ੍ਰਮਾਣ ਵਜੋਂ ਦੀਪਤੀ ਦੀ ਕਹਾਣੀ 'ਪੰਜਵਾਂ ਮੋਢਾ' ਵਿਚਾਰੀ ਜਾ ਸਕਦੀ ਹੈ। ਗੁਰਦੇਵ ਕੌਰ ਤੇ ਸਵਰਨ ਸਿੰਘ ਦਾ ਪਰਿਵਾਰ ਦੇਸ਼-ਵੰਡ ਪਿੱਛੋਂ ਪੂਰਵੀ ਪੰਜਾਬ ਵਿਚ ਵਸ ਜਾਂਦੇ ਹਨ ਅਤੇ ਸਖਤ ਮਿਹਨਤ ਕਰਕੇ ਇਹ ਪਰਿਵਾਰ ਚੰਗੀ ਜ਼ਮੀਨ ਜਾਇਦਾਦ ਅਤੇ ਵੱਡੀ ਹਵੇਲੀ ਦਾ ਮਾਲਕ ਬਣ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਪੋਤੇ-ਪੋਤੀਆਂ ਨੂੰ ਪੜਾਉਣ ਖਾਤਰ ਦੂਰ-ਅੰਦੇਸ਼ ਸਵਰਨ ਸਿੰਘ ਦੋ ਕਿੱਲ ਜ਼ਮੀਨ ਵੇਚ ਕੇ ਸ਼ਹਿਰ ਵਿੱਚ ਵੱਡੀ ਹਵੇਲੀ ਉਸਾਰ ਲੈਂਦਾ ਹੈ। ਸਵਰਨ ਕੌਰ ਆਪਣੇ ਸਭ ਤੋਂ ਛੋਟੇ ਪੁੱਤਰ ਦੇ ਵਿਆਹ ਵਾਲੇ ਦਿਨ ਅੱਠਵੀਂ ਸੰਤਾਨ ਵਜੋਂ ਇੱਕ ਧੀ ਨੂੰ ਜਨਮ ਦਿੰਦੀ ਹੈ। ਪਸਾਰੇ ਕਾਰਨ ਸ਼ਹਿਰ ਉਹਨਾਂ ਦੀ ਹਵੇਲੀ ਤੱਕ ਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਉਹ ਹਵੇਲੀ ਦੇ ਅਗਲੇ ਹਿੱਸੇ ਵਿੱਚ ਦੁਕਾਨਾਂ ਬਣਾ ਦਿੰਦੇ ਹਨ।ਸਵਰਨ ਸਿੰਘ ਆਪਣੀ ਸਿਆਣਪ ਮੁਤਾਬਿਕ ਜਾਇਦਾਦ ਅਤੇ ਹਵੇਲੀ ਚਾਰਾਂ ਪੁੱਤਰਾਂ ਵਿੱਚ ਵੰਡ ਦਿੰਦਾ ਹੈ। ਪੰਜਵਾਂ ਹਿੱਸਾ ਆਪਣੇ ਅਤੇ ਗੁਰਦੇਵ ਕੌਰ ਲਈ ਰੱਖ ਲੈਂਦਾ ਹੈ। ਸਵਰਨ ਸਿੰਘ ਦੀ ਕੈਂਸਰ ਨਾਲ ਮੌਤ ਹੋ ਜਾਂਦੀ ਹੈ ਤੇ ਸਦਮੇ ਕਾਰਨ ਗੁਰਦੇਵ ਕੌਰ ਅਧਰੰਗ ਦਾ ਸ਼ਿਕਾਰ ਹੋ ਜਾਂਦੀ ਹੈ। ਜਾਇਦਾਦ ਦੀ ਖਿੱਚਾ-ਧੂਹੀ ਪਿੱਛੇ ਨੂੰਹਾਂ ਪੁੱਤਰਾਂ ਵਿੱਚ ਕਲੇਸ਼ ਵੱਧਦਾ ਹੈ। ਚਾਰੇ ਪੁੱਤਰ ਸਮਝੋਤੇ ਵਜੋਂ ਬਿਮਾਰ ਤੇ ਬਿਰਧ ਮਾਂ ਨੂੰ ਵਾਰੀ-ਵਾਰੀ ਇੱਕ-ਇੱਕ ਮਹੀਨਾ ਸਾਂਭਣ ਦਾ ਫੈਸਲਾ ਕਰ ਲੈਂਦੇ ਹਨ। ਭਰਾਵਾਂ ਦੇ ਇਸ ਵਿਵਹਾਰ ਤੋਂ ਦੁਖੀ ਹੋਈ ਵੀਰਪਾਲ ਮਾਂ ਦਾ ਮੰਜਾ ਆਪਣੇ ਘਰ ਲੈ ਜਾਣ ਦਾ ਫੈਸਲਾ ਕਰਦੀ ਹੈ। ਕਹਾਣੀ ਵਿਚਲਾਂ ਕਟਾਖਸ਼ ਇਹ ਹੈ ਕਿ ਦੇਸ਼ ਵੰਡ ਦੇ ਫਸਾਦਾਂ ਤੇ ਹਿਜਰਤ ਸਮੇਂ ਕਾਫ਼ਲੇ ਨਾਲੋਂ ਵਿਛੜੀ ਹੋਈ ਗੁਰਦੇਵ ਕੌਰ ਆਪਣੀ ਜਿਸ ਧੀ ਵੀਰਪਾਲ ਕੌਰ ਨੂੰ ਦਰੱਖਤ ਦੇ ਮੁੱਢ ਬਿਠਾ ਕੇ ਬੁਖਾਰ ਨਾਲ ਹੂੰਘਦੇ ਪੁੱਤਰ ਨੂੰ ਲੈ ਕੇ ਕਾਫ਼ਲੇ ਮਗਰ ਦੌੜ ਪਈ ਸੀ ਉਹੀ ਧੀ ਬੁਢਾਪੇ 'ਚ ਮਾਂ ਲਈ 'ਪੰਜਵਾਂ ਮੋਢਾ' (ਸਹਾਰਾ) ਬਣਦੀ ਹੈ। ਇਹ ਕਹਾਣੀ ਕਥਾ-ਵਸਤੂ ਕਥਾ-ਦ੍ਰਿਸ਼ਟੀ ਅਤੇ ਕਥਾ-ਵਿਧੀ ਪੱਖੋਂ ਇਸ ਸੰਗ੍ਰਹਿ ਦੀ ਸਰਬੋਤਮ ਕਹਾਣੀ ਮੰਨੀ ਜਾ ਸਕਦੀ ਹੈ । ਇਸ ਕਹਾਣੀ ਵਿੱਚ ਦੇਸ਼ ਵੰਡ ਸਮੇਂ ਹੋਏ ਫਿਰਕੂ ਤੇ ਨਸਲੀ ਦੰਗਿਆਂ, ਵੱਢ-ਟੁੱਕ, ਉਧਾਲੇ ਅਤੇ ਲੁੱਟ-ਮਾਰ ਦੀਆਂ ਅਣਮਨੁੱਖੀ ਘਟਨਾਵਾਂ ਦਾ ਬਿਰਤਾਂਤ ਵੀ ਹੈ ਅਤੇ ਵੰਡ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਸਰਮਾਏਦਾਰੀ ਪ੍ਰਬੰਧ ਦੇ ਰਾਹ ਪਏ ਪੰਜਾਬੀ ਸਮਾਜ ਵਿੱਚ ਪਰਿਵਾਰਿਕ ਰਿਸ਼ਤਿਆਂ ਵਿਚ ਆਈਆਂ ਤਰੇੜਾਂ ਅਤੇ ਮਨੁੱਖੀ/ਸਮਾਜਿਕ ਰਿਸ਼ਤਿਆਂ ਦੇ ਪਥਰਾ ਜਾਣ ਦਾ ਦਰਦ ਵੀ ਰੂਪਮਾਨ ਹੋਇਆ ਹੈ।

ਪਰਿਵਾਰਿਕ ਰਿਸ਼ਤਿਆਂ ਦੇ ਬਦਲਦੇ ਸਮੀਕਰਨ : ਅਜੋਕੇ ਸਮਿਆਂ ਵਿਚ ਉਪਭੋਗਤਾਵਾਦੀ ਸੱਭਿਆਚਾਰ ਨੇ ਪਰਿਵਾਰਿਕ ਰਿਸ਼ਤਿਆਂ ਦੀ ਵਿਆਕਰਨ ਨੂੰ ਬਹੁਤ ਬੁਰੀ ਤਰਾਂ ਪ੍ਰਭਾਵਿਤ ਕੀਤਾ ਹੈ। ਪਦਾਰਥਾਂ ਦੀ ਹੋੜ ਵਿੱਚ ਆਧੁਨਿਕ ਮਨੁੱਖ ਮਨੁੱਖੀ ਰਿਸ਼ਤਿਆਂ ਦੇ ਗੌਰਵ ਤੇ ਪਵਿੱਤਰਤਾ ਨੂੰ ਵੀ ਭੁੱਲਦਾ ਜਾ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਜਦੋਂ ਪੈਸਾ ਤੇ ਪਦਾਰਥ ਮਨੁੱਖੀ ਰਿਸ਼ਤਿਆਂ ਵਿਚਕਾਰ ਆ ਜਾਂਦੇ ਹਨ ਤਾਂ ਸਾਧਨ ਸੰਪਨ ਮਨੁੱਖ ਇੱਕ ਭੁੱਖੜ ਜਾਨਵਰ ਅਤੇ ਗਰੀਬ ਮਨੁੱਖ ਉਸ ਦਾ ਖਾਜਾ ਬਣ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਕਥਿਤ ਵਿਕਸਿਤ ਪੂੰਜੀਵਾਦੀ ਪ੍ਰਬੰਧ ਤੇ ਉਪਭੋਗਵਾਦੀ ਸੱਭਿਆਚਾਰ ਵਿੱਚ ਬੰਦਾ ਧੰਨ ਦੌਲਤ ਅਤੇ ਪਦਾਰਥਾਂ ਦਾ ਇੰਨਾ ਗੁਲਾਮ ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਕਿ ਉਹ ਪਰਿਵਾਰਿਕ ਰਿਸ਼ਤਿਆਂ ਦੇ ਨਿੱਘ ਅਤੇ ਮਾਨਵੀ ਮੋਹ ਤੋਂ ਸੱਖਣਾਂ ਪੱਥਰ ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ।"ਔਰਤ ਵੱਲੋਂ ਨੌਕਰੀ ਕਰਨ ਜਾਂ ਘਰ ਦੀ ਆਰਥਿਕਤਾ ਵਿੱਚ ਹਿੱਸਾ ਪਾਉਣ ਨਾਲ ਵੀ ਪਰਿਵਾਰਕ ਬਣਤਰ ਵਿੱਚ ਕੁਝ ਤਬਦੀਲੀਆਂ ਆਈਆਂ। ਆਰਥਿਕ ਸੰਪੰਨਤਾ ਨਾਲ ਜਿੱਥੇ ਔਰਤ ਕੋਲ ਆਤਮ-ਵਿਸ਼ਵਾਸ ਆਇਆ, ਉੱਥੇ ਉਸ ਨੇ ਪਰਿਵਾਰਕ ਸੀਮਾਵਾਂ ਤੋਂ ਬਾਹਰ ਖੁੱਲ ਕੇ ਸਾਹ ਲੈਣ ਲਈ ਅਤੇ ਇਹ ਸਵੈ ਨਿਰਭਰ ਵਿਅਕਤੀਆਂ ਵਜੋਂ ਵਿਚਰਨ ਲਈ ਕੁਝ ਖੁੱਲ੍ਹਾਂ ਲੈਣੀਆਂ ਤੇ ਤਜਰਬੇ ਕਰਨੇ ਸ਼ੁਰੂ ਕੀਤੇ, ਇਹਨਾਂ ਤਜ਼ਰਬਿਆਂ ਨਾਲ ਉਹ ਸ਼ੋਸ਼ਿਤ ਵੀ ਹੋਈ ਤੇ ਉਸ ਨੂੰ ਮਾਨਸਿਕ ਸੰਕਟ ਲਈ ਭੋਗਣੇ ਪਏ। ਪਰ ਪੁਨਰ ਆਤਮ ਵਿਸ਼ਵਾਸ ਦੀ ਸਿਰਜਣਾ ਪ੍ਰਕਿਰਿਆ ਨਾਲ ਉਹ ਆਪਣੇ ਪੈਰਾਂ ਤੇ ਖਲੋ ਗਈ ਅਤੇ ਉਸਨੇ ਆਪਣੀ ਪਹਿਚਾਣ ਲਈ ਸਵੈ ਸਿਰਜਿਤ ਮਾਪਦੰਡਾਂ ਦੇ ਅਨੁਕਰਣ ਵਿੱਚ ਸਵੈ-ਕੇਂਦ੍ਰਿਤ ਕਦਰਾਂ-ਕੀਮਤਾਂ ਸਥਾਪਿਤ ਕਰਨ ਲਈ ਸਹਿਜ ਪ੍ਰਕਿਰਿਆ ਸ਼ੁਰੂ ਕੀਤੀ।"[1]

'ਉਪਰੀ ਬਲਾ' ਕਹਾਣੀ ਵਿੱਚ ਅਮੀਰ ਸ਼ਹਿਰੀ ਮੱਧ-ਵਰਗ ਦੇ ਸਵਾਰਥੀ, ਦੰਭੀ ਅਤੇ ਨਿੱਜ-ਪਾਲ ਕਿਰਦਾਰ ਨੂੰ ਨਸ਼ਤਰੀ ਵਿਅੰਗ ਦਾ ਵਿਸ਼ਾ ਬਣਾਇਆ ਗਿਆ ਹੈ। "ਵਿਸ਼ਵੀਕਰਨ ਦੀ ਪ੍ਰਕਿਰਿਆ ਦੌਰਾਨ ਪੂੰਜੀ ਦੇ ਬੇਰੋਕ ਵਹਾਅ ਸੂਚਨਾ ਤਕਨਾਲੋਜੀ ਦੇ ਵਿਕਾਸ ਕੌਮੀਅਤਾ 'ਤੇ ਆਧਾਰਤ ਸੰਕਲਪ ਵਿਚਲੀ ਤਬਦੀਲੀ ਨਾਲ ਵਿਕਾਸਸ਼ੀਲ ਦੇਸ਼ਾਂ ਵਿੱਚ ਆਰਥਿਕ ਪਾੜੇ ਵਿੱਚ ਹੋਏ ਵਾਧੇ, ਥੋੜੇ ਸਮੇਂ ਵਿੱਚ ਬਹੁਤ ਕੁਝ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰਨ ਦੀ ਲਾਲਸਾ, ਨੈਤਿਕਤਾ ਪ੍ਰਤੀ ਬਦਲੇ ਪ੍ਰਤੀਮਾਨ ਲੋਕਤੰਤਰ ਵਿਵਸਥਾ ਵਿੱਚ ਘਟਦੀ ਆਸਥਾ ਅਤੇ ਸਾਰੇ ਰਿਸ਼ਤਿਆਂ ਵਿੱਚ ਖਪਤ ਸਭਿਆਚਾਰ ਦੀ ਪ੍ਰਵਿਰਤੀ ਨੇ ਆਮ ਲੋਕਾਂ ਲਈ ਸੰਕਟ ਖੜਾ ਕਰ ਦਿੱਤਾ ਹੈ। ਇਹ ਸੰਕਟ ਅਜੋਕੇ ਦੌਰ ਦਾ ਭਾਰੂ ਸੰਕਟ ਹੈ।"[2] ਇਸ ਕਹਾਣੀ ਵਿੱਚ ਰਾਜਬੀਰ ਅਤੇ ਉਸਦੀ ਧੀ ਮੈਡਮ ਜਸਵਿੰਦਰ ਦੇ ਆਪਣੇ ਨੌਕਰਾਂ ਅਤੇ ਦੀਪੇ ਤੇ ਛਿੰਦਰ ਦੇ ਗਰੀਬ ਪਰਿਵਾਰ ਪ੍ਰਤੀ ਕਠੋਰ ਅਤੇ ਅਣਮਨੁੱਖੀ ਵਿਵਹਾਰ ਨੂੰ ਚਿਤਰਿਆ ਗਿਆ ਹੈ। ਸਮਾਨੰਤਰ ਕਥਾ-ਬਿਰਤਾਂਤ ਵਾਲੀ ਇਸ ਕਹਾਣੀ ਵਿੱਚ ਮੈਡਮ ਜਸਵਿੰਦਰ, ਪੱਲੇਦਾਰ ਦੀਪੇ ਅਤੇ ਉਸਦੀ ਪਤਨੀ ਛਿੰਦਰ ਦੇ ਪਰਿਵਾਰਾਂ ਦੀਆਂ ਵਾਸਤਵਿਕ ਸਥਿਤੀਆਂ ਨੂੰ ਪੇਸ਼ ਕੀਤਾ ਗਿਆ ਹੈ। ਪੱਲੇਦਾਰ ਦੀਪਾ ਅਤੇ ਉਸਦੀ ਪਤਨੀ ਛਿੰਦਰ ਜਸਵਿੰਦਰ ਦੀ ਮਾਂ ਰਾਜਵਿੰਦਰ ਦੇ ਘਰ ਦਾ ਕੰਮ ਕਰਦੇ ਹਨ,ਜਿਸ ਦੀ ਬੁੱਢੀ ਤੇ ਬੀਮਾਰ ਸੱਸ ਉਸ ਕੋਲ ਰਹਿੰਦੀ ਹੈ। ਰਾਜਵੀਰ ਦੇ ਕਹਿਣ `ਤੇ ਛਿੰਦਰ ਆਪਣੀ ਧੀ ਕਿਰਨਾਂ ਨੂੰ ਮੈਡਮ ਜਸਵਿੰਦਰ ਨਾਲ ਭੇਜ ਦਿੰਦੀ ਹੈ ਜੋ ਆਪਣੇ ਅਮੀਰ ਪਤੀ ਨਾਲ ਦਿੱਲੀ ਰਹਿੰਦੀ ਹੈ। ਕਿਰਨਾਂ ਜੋ ਬੜੀ ਸੁਚੱਜੀ ਹੈ, ਉਸ ਦੇ ਘਰ ਮਿਹਨਤ ਨਾਲ ਕੰਮ ਕਰਦੀ ਹੈ। ਮੈਡਮ ਜਸਵਿੰਦਰ ਉਸ ਨੂੰ ਆਪਣੇ ਬੱਚਿਆਂ ਜਿੰਨਾਂ ਪਿਆਰ ਕਰਨ ਦਾ ਦਿਖਾਵਾ ਕਰਦੀ ਹੈ। ਛੇ ਕੁ ਮਹੀਨਿਆਂ ਬਾਅਦ ਆਪਣੀ ਮਾਂ ਨੂੰ ਮਿਲਣ ਆਈ ਉਸ ਨੂੰ ਆਪਣੇ ਪਰਿਵਾਰ ਨਾਲ ਮਿਲਾ ਲੈ ਜਾਂਦੀ ਹੈ। ਭੋਲੀ-ਭਾਲੀ ਕਿਰਨਾਂ ਆਪਣੇ ਪਰਿਵਾਰਕ ਜੀਆਂ ਕੋਲ ਮੈਡਮ ਦੀਆਂ ਸਿਫ਼ਤਾਂ ਕਰਨੋਂ ਨਹੀਂ ਹਟਦੀ। ਜਸਵਿੰਦਰ ਦੀ ਮਾਂ ਰਾਜਵੀਰ ਆਪਣੀ ਧੀ ਨੂੰ ਨੌਕਰਾਂ ਨੂੰ ਥਾਂ ਸਿਰ ਰੱਖਣ ਦੀ ਨਸੀਹਤ ਦਿੰਦੀ ਹੈ। ਪੱਲੇਦਾਰ ਦੀਪਾ ਟਰੱਕ ਤੇ ਮਾਲ

ਲੋਡ ਕਰਨ ਸਮੇਂ ਪੱਸਲੀਆਂ ਤੁੜਵਾ ਬਹਿੰਦਾ ਹੈ ਤੇ ਮੰਜਾ ਮੁੱਲ ਲੈਂਦਾ ਹੈ।ਛਿੰਦਰ ਪੱਕਾ ਕਮਰਾ ਪਾਉਣ ਤੇ ਵੱਡੀਆਂ ਦੋ ਧੀਆਂ ਦੇ ਵਿਆਹ ਲਈ ਰਾਜਵੀਰ ਤੋਂ ਵਿਆਜ 'ਤੇ ਉਧਾਰੇ ਪੈਸੇ ਲੈਂਦੀ ਹੈ। ਇਵਜ਼ਾਨੇ ਵਜੋਂ ਉਹ ਆਪਣੀ ਇੱਕ ਕੁੜੀ ਨੂੰ ਰਾਜਵੀਰ ਕੋਲ ਪੱਕੇ ਤੌਰ 'ਤੇ ਕੰਮ ਲਈ ਭੇਜ ਦਿੰਦੀ ਹੈ। ਹੌਲੀ-ਹੌਲੀ ਮਾਵਾਂ ਧੀਆਂ ਰਾਜਵੀਰ ਤੇ ਜਸਵਿੰਦਰ ਦਾ ਦੀਪੇ ਦੇ ਪਰਿਵਾਰ ਪਤੀ ਰਵਈਆ ਲਾਲਚ ਤੇ ਹਕਾਰਤ ਵਾਲਾ ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਮੈਡਮ ਜਸਵਿੰਦਰ ਗੱਲ-ਗੱਲ 'ਤੇ ਕਿਰਨਾਂ ਨੂੰ ਟੋਕਦੀ ਤੇ ਅਪਮਾਨਿਤ ਕਰਦੀ ਹੈ। ਪ੍ਰਤੀਕਰਮ ਵਜੋਂ ਕਿਰਨਾਂ ਢੀਠ ਹੋ ਜਾਂਦੀ ਹੈ ਤੇ ਕਦੇ-ਕਦਾਈ ਮੈਡਮ ਨੂੰ ਅੱਗੋਂ ਜਵਾਬ ਦਿੰਦੀ ਹੈ। ਜਸਵਿੰਦਰ ਉਸ ਨੂੰ ਨੌਕਰੀ ਤੋਂ ਕੱਢ ਦੇਣ ਦੀਆ ਧਮਕੀਆਂ ਦਿੰਦੀ ਹੈ। ਮਾਪਿਆਂ ਨੂੰ ਮਿਲਣ ਆਈ ਚੁੱਪ ਤੇ ਡੂੰਨ ਵੱਟਾ ਬਣੀ ਕਿਰਨਾਂ ਜਸਵਿੰਦਰ ਨਾਲ ਮੁੜ ਸ਼ਹਿਰ ਚਲੇ ਜਾਣ ਤੋਂ ਇਨਕਾਰੀ ਹੋ ਜਾਂਦੀ ਹੈ। ਬੇਵੱਸ ਹੋਏ ਮਾਪੇ ਨਿੱਕੀ ਧੀ ਸੀਤੂ ਦੀ ਬਾਹ ਜਸਵਿੰਦਰ ਨੂੰ ਫੜਾਉਣ ਲੱਗਦੇ ਹਨ ਤਾਂ ਕਿਰਨਾਂ ਤੂਫ਼ਾਨ ਵਾਂਗ ਚੁੱਲ੍ਹੇ ਮੂਹਰਿਓਂ ਉੱਠ ਕੇ ਛੋਟੀ ਭੈਣ ਸੀਤੂ ਦੀ ਬਾਂਹ ਫੜ ਕੇ ਪੱਲੀ ਤੇ ਰੰਬਾ ਚੁੱਕ ਕੇ ਘਰ ਦਾ ਬੂਹਾ ਟੱਪ ਜਾਂਦੀ ਹੈ। ਇਹ ਕਹਾਣੀ ਕਿਰਤ ਦੇ ਸਵੈਮਾਨ ਤੇ ਗੌਰਵ ਨੂੰ ਬਹਾਲ ਕਰਦੀ ਹੈ।

ਸਮਾਜਿਕ ਦਬਾਵ ਤੇ ਵਰਜਣਾਵਾਂ : 'ਵਸ਼ੀਕਰਨ' ਕਹਾਣੀ ਵਿੱਚ ਪੜ੍ਹੇ-ਲਿਖੇ ਅਮੀਰ ਸ਼ਹਿਰੀ ਪਰਿਵਾਰ ਦੀਆਂ ਅਤ੍ਰਿਪਤ ਭਾਵਨਾਵਾਂ, ਸਮਾਜਿਕ ਦਬਾਵਾਂ ਤੇ ਵਰਜਣਨਾਵਾਂ ਕਰਕੇ ਅੰਦਰੋਂ ਘੁੱਟ- ਘੁੱਟ ਕੇ ਜੀਣ ਦੇ ਸੰਕਟ ਨੂੰ ਬਿਆਨ ਕੀਤਾ ਹੈ। ਸੰਗੀਤਾ ਅਰੋੜਾ ਜੋ ਵਿਆਹ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਆਪਣੇ ਅਧਿਆਪਕ ਸਾਥੀ ਅਭਿਜੀਤ ਸਮਰ ਨੂੰ ਪਸੰਦ ਕਰਦੀ ਸੀ ਤੇ ਉਸ ਪ੍ਰਤੀ ਭਾਵੁਕ ਖਿੱਚ ਰੱਖਦੀ ਸੀ, ਉਸਦਾ ਵਿਆਹ ਤਹਿਸੀਲਦਾਰ ਨਾਲ ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਤੇ ਉਹ ਸੰਗੀਤਾ ਅਰੋੜਾ ਤੋਂ ਸੰਗੀਤਾ ਸੇਤੀਆ ਬਣ ਜਾਂਦੀ ਹੈ। ਦੋ ਬੱਚਿਆਂ ਦੀ ਮਾਂ ਸੰਗੀਤਾ ਪਦਾਰਥਕ ਅਮੀਰੀ ਦੇ ਬਾਵਜੂਦ ਅੰਦਰੋਂ ਇੱਕਲੀ ਤੇ ਭਾਵਨਾਤਮਕ ਪੱਖ ਤੋਂ ਕੋਰੀ ਹੈ। ਨਵੇਂ ਖਰੀਦੇ ਫੋਨ ਕਰਕੇ ਫੇਸਬੁੱਕ ਰਾਹੀਂ ਉਸ ਦਾ ਅਭਿਜੀਤ ਸਮਰ ਨਾਲ ਫਿਰ ਸੰਪਰਕ ਬਣਦਾ ਹੈ।ਉਹ ਤੇ ਅਭਿਜੀਤ ਆਪਣੀ ਪੁਰਾਣੀ ਹੈਡਮਾਸਟਰ ਨੂੰ ਮਿਲਣ ਜਾਂਦੇ ਹਨ। ਕਾਰ ਵਿੱਚ ਦੋਹਾਂ ਦੀਆਂ ਨਜ਼ਰਾਂ ਮਿਲਦੀਆਂ ਹਨ ਅਤੇ ਸੰਗੀਤਾ ਦੀ ਪੁਰਾਣੀ ਭਾਵਨਾਤਮਕ ਸਾਂਝ ਜਾਗ ਪੈਂਦੀ ਹੈ, ਪਰ ਸਮਾਜਿਕ ਸਟੇਟਸ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਪ੍ਰੇਮ ਭਾਵਨਾ ਨੂੰ ਦਬਾ ਦਿੰਦਾ ਹੈ। ਅਭੀਜੀਤ ਸਮਰ ਤੇ ਸੰਗੀਤਾ ਦਾ ਅਧੂਰਾ ਪ੍ਰੇਮ ਪ੍ਰਸੰਗ ਸ਼ਹਿਰੀ ਮੱਧ-ਵਰਗ ਦੀ ਭਾਵਨਾਤਮਕ ਕੰਗਾਲੀ ਅਤੇ ਅਤ੍ਰਿਪਤੀ ਦੇ ਦੁਖਾਂਤ ਉੱਤੇ ਕਟਾਖਸ਼ ਹੈ।

ਇਸ ਸੰਗ੍ਰਹਿ ਦੇ ਸਿਰਨਾਵੇਂ ਵਾਲੇ ਕਹਾਣੀ 'ਭੁੱਖ ਇਉਂ ਸਾਹ ਲੈਂਦੀ ਹੈ' ਜਗਤ ਪ੍ਰਸਿੱਧ ਫੋਟੋਗ੍ਰਾਫ਼ ਕੈਬਿਨ ਕਾਰਟਨ ਦੇ ਹਵਾਲੇ ਨਾਲ ਆਰੰਭ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਕੈਬਿਨ ਕਾਰਟਨ ਨੇ ਲਾਤੀਨੀ ਅਮਰੀਕਾ ਦੇਸ਼ ਵਿੱਚ ਭੁੱਖ-ਮਰੀ ਦੇ ਕਹਿਰ ਨੂੰ ਆਪਣੀ ਵਿਸ਼ਵ ਪੱਧਰ 'ਤੇ ਚਰਚਿਤ ਹੋਈ ਫੋਟੋ ਨਾਲ ਬਿਆਨਿਆ ਸੀ ਜਿਸ ਵਿੱਚ ਭੁੱਖ ਨਾਲ ਮਰਨ ਦੀ ਕਗਾਰ 'ਤੇ ਪਹੁੰਚੇ ਇੱਕ ਬੱਚੇ ਨੇੜੇ ਗਿਰਝ ਉਸ ਦੀ ਮੌਤ ਨੂੰ ਉਡੀਕਦੀ ਘਾਤ ਲਗਾ ਕੇ ਬੈਠੀ ਹੈ। ਕੈਬਿਨ ਕਾਰਟਨ ਬਾਅਦ ਵਿੱਚ ਪਾਪ-ਬੋਧ ਕਰਕੇ ਆਤਮ-ਹੱਤਿਆ ਕਰ ਗਿਆ ਸੀ। ਇਸ ਕਹਾਣੀ ਦਾ ਬਿਰਤਾਂਤ ਵੱਖਰੇ-ਵੱਖਰੇ ਸੁਪਨਿਆਂ ਰਾਹੀਂ ਉਸਾਰਿਆ ਗਿਆ ਹੈ। ਕਹਾਣੀਕਾਰ ਆਪਣੇ ਆਪ ਨੂੰ ਸੁਪਨੇ ਵਿਚ ਇਕ ਗਿਰਝ ਦੇ ਖੰਭਾਂ ਉੱਤੇ ਉੱਡਦਾ ਮਹਿਸੂਸ ਕਰਦਾ ਹੈ, ਜੋ ਭੁੱਖ ਮਿਟਾਉਣ ਲਈ ਧਰਤੀ 'ਤੇ ਉਤਰਦੀ ਹੈ। ਕਹਾਣੀ ਦਾ ਮੁੱਖ ਪਾਤਰ ਸੁਪਨੇ ਵਿੱਚ ਆਪਣੀਆਂ ਬਾਹਾਂ ਨੂੰ ਖੰਭ ਬਣਾ ਕੇ ਉੱਡਣ ਲੱਗਦਾ ਹੈ ਤਾਂ ਉਸਨੂੰ ਢਾਬੇ ਉੱਤੇ ਭਾਂਡੇ ਮਾਂਜਦਾ ਬੁੱਢਾ ਦਿਖਾਈ ਦਿੰਦਾ ਹੈ ਜੋ ਭੁੱਖ ਕਰਕੇ ਹੱਡੀਆਂ ਦੀ ਮੁੱਠ ਬਣ ਗਿਆ ਹੈ।ਉਹ ਬੁੱਢਾ ਭਾਂਡਿਆਂ ਨੂੰ ਤਾਂ ਮਾਂਜ-ਮਾਂਜ ਲਿਸ਼ਕਾ ਦਿੰਦਾ ਹੈ ਪਰ ਆਪ ਪਤੀਲੇ ਦੇ ਥੱਲੇ ਵਾਂਗ ਧੂੰਆਂਖਿਆ

ਗਿਆ ਹੈ।ਮੁੱਖ ਪਾਤਰ ਨੂੰ ਆਪਣਾ ਬਜ਼ੁਰਗ ਬਾਪ ਚੇਤੇ ਆਉਂਦਾ ਹੈ ਜੋ ਆਪਣੀ ਔਲਾਦ ਲਈ ਰੋਟੀ ਦਾ ਪ੍ਰਬੰਧ ਕਰਦਾ ਕਰਦਾ ਖੁਦ ਹੋਟਲ ਦੇ ਭਾਂਡੇ ਮਾਂਜਣ ਵਾਲੇ ਬੁੱਢੇ ਵਾਂਗ ਮਨਫੀ ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਅਗਲੇ ਸੁਪਨੇ ਵਿਚ ਲੇਖਕ ਨੂੰ ਕਈ ਰੂਪਾਂ ਵਿੱਚ ਬੱਚਾ ਨਜ਼ਰ ਆਉਂਦਾ ਹੈ ਕਦੇ ਇੱਕ ਸੁੰਦਰ ਬੱਚੇ ਵਜੋਂ, ਕਦੇ ਭੁੱਖੇ ਭਾਣੇ ਮਰੀਅਲ ਬੱਚੇ ਵਜੋਂ ਅਤੇ ਕਦੇ ਕੰਧ ਉੱਪਰ ਪੇਂਟ ਕਰਦੇ ਮਜ਼ਦੂਰ ਦੇ ਰੂਪ ਵਿੱਚ | ਮੁੱਖ ਪਾਤਰ ਨੂੰ ਇੱਕ ਸੁੰਦਰ ਕੁੜੀ ਦਾ ਸੁਪਨਾ ਆਉਂਦਾ ਹੈ ਜੋ ਕਾਰ ਵਿਚੋਂ ਉਤਰ ਕੇ ਕਿਧਰੇ ਅਲੋਪ ਹੋ ਜਾਂਦੀ ਹੈ। ਮੁੱਖ ਪਾਤਰ ਨੂੰ ਸੁਪਨੇ ਵਿੱਚ ਆਪਣੇ ਚਿੱਟ ਕੱਪੜੀਏ ਮਾਂ ਬਾਪ, ਪਤਨੀ ਅਤੇ ਬੱਚਿਆਂ ਦੇ ਝਾਉਲ ਪੈਂਦੇ ਹਨ ਜੋ ਉਸ ਦੇ ਅੱਗੇ ਅੱਗੇ ਤੁਰੇ ਜਾਂਦੇ ਹਨ ਪਰ ਉਸਦੀ ਆਵਾਜ਼ ਨਹੀਂ ਸੁਣਦੇ ਅਤੇ ਨਾ ਉਸ ਨਾਲ ਬੋਲਦੇ ਹਨ। ਉਹ ਪਿੱਛੇ ਮੁੜਨ ਲਗਦਾ ਹੈ ਤਾਂ ਚਾਰ-ਚੁਫੇਰੇ ਪਾਣੀ ਹੀ ਪਾਣੀ ਹੈ। ਸੁਪਨੇ ਵਿਚ ਉਹ ਦੇਖਦਾ ਹੈ ਕਿ ਉਸ ਦਾ ਪੁੱਤਰ ਉੱਚੇ ਥਾਂ 'ਤੇ ਖੜ੍ਹਾ ਹੈ ਉਹ ਉਸ ਵੱਲ ਓਹਲਦਾ ਹੈ ਪਰ ਪੁੱਤਰ ਪਹਾੜ ਤੋਂ ਪਾਣੀ ਵਿੱਚ ਛਾਲ ਮਾਰ ਦਿੰਦਾ ਹੈ ਤੇ ਤਰਨ ਲੱਗ ਪੈਂਦਾ ਹੈ। ਉਹ ਪਾਣੀ ਵੱਲ ਭੱਜੇ ਜਾਂਦੇ ਆਪਣੇ ਪੋਤਰੇ ਨੂੰ ਲਪਕ ਕੇ ਬਚਾਉਂਦਾ ਹੈ ਤੇ ਉੱਚੀ ਥਾਂ 'ਤੇ ਖੜੇ ਬੰਦੇ ਨੂੰ ਫੜਾ ਦਿੰਦਾ ਹੈ। ਇਹ ਬੰਦਾ ਉਸਦਾ ਪੁੱਤਰ ਹੀ ਨਿਕਲਦਾ ਹੈ ਪਰ ਦੋਵੇਂ ਉਸ ਵੱਲ ਪਿੱਠ ਕਰ ਲੈਂਦੇ ਹਨ ਮੁੱਖ ਪਾਤਰ ਚਾਹੁੰਦਾ ਹੈ ਕਿ ਉਹ ਉਸ ਨਾਲ ਗੱਲ ਕਰਨ ਪਰ ਪੁੱਤਰ ਦਰਿਆ 'ਚ ਬੁਰਛ ਡੋਬ-ਡੋਬ ਕੇ ਖਲਾਅ 'ਚ ਰੰਗ ਭਰ ਰਿਹਾ ਹੈ ਤੇ ਪੋਤਾ ਆਪਣੀਆਂ ਖੇਡਾਂ ਵਿੱਚ ਮਸਤ ਹੈ। ਉਸਦਾ ਸੁਪਨਾ ਟੁੱਟਦਾ ਹੈ ਤਾਂ ਉਹ ਦੇਖਦਾ ਹੈ ਉਸ ਦਾ ਪੋਤਰਾ ਉਸ ਨੂੰ ਝੰਜੋੜ ਕੇ ਜਗਾ ਰਿਹਾ ਹੈ ਤੇ ਸਕੂਲ ਛੱਡ ਕੇ ਆਉਣ ਲਈ ਕਹਿੰਦਾ ਹੈ।ਪੋਤਾ ਦਾਦੇ ਅੱਗੇ ਆਪਣੇ ਦੋਹਾਂ ਹੱਥਾਂ ਦੀਆਂ ਮੀਚੀਆਂ ਹੋਈਆਂ ਮੁੱਠੀਆਂ ਕਰਕੇ ਪੁੱਛਦਾ ਹੈ ਕਿ ਦੱਸੋ ਕਿਸ ਮੁੱਠੀ ਵਿੱਚ ਪੈਸਾ ਤੇ ਕਿਹੜੀ ਖਾਲੀ ਹੈ ? ਸ਼ਰਾਰਤੀ ਪੋਤਾ ਜਦੋਂ ਦੋਹੇ ਮੁੱਠੀਆਂ ਖੋਲ੍ਹਦਾ ਹੈ ਤਾਂ ਉਹ ਖਾਲੀ ਜਾਪਦੀਆਂ ਹਨ। ਸਿੱਕੇ ਉਸਨੇ ਉਂਗਲਾਂ ਵਿੱਚ ਫਸਾਏ ਹੋਏ ਹਨ। ਕਹਾਣੀ ਦਾ ਅੰਤ ਇਹ ਸੁਨੇਹਾ ਦਿੰਦਾ ਹੈ ਕਿ ਭੁੱਖ ਹੁਣ ਲਾਤੀਨੀ ਅਮਰੀਕਾ ਦੇ ਦੇਸ਼ਾਂ ਵਿੱਚ ਹੀ ਨਹੀਂ ਗਿਰਝ ਵਾਂਗ ਸਾਰੀ ਦੁਨੀਆਂ 'ਤੇ ਭਾਰੂ ਹੋ ਚੁੱਕੀ ਹੈ। ਪੂੰਜੀਵਾਦੀ ਤਰਜ਼ ਦੇ ਵਿਕਾਸ ਵਿੱਚ ਹੁਣ ਕਿਰਤ ਕਰਨ ਵਾਲੇ ਤੇ ਸਧਾਰਨ ਮਨੁੱਖ ਦੀਆਂ ਦੋਵੇਂ ਮੁੱਠੀਆਂ ਖਾਲੀ ਹਨ। ਇਹੀ ਦੀਪਤੀ ਬਬੂਟਾ ਦੀ ਗਲਪ ਦ੍ਰਿਸ਼ਟੀ ਤੇ ਉਸਦੇ ਗਲਪ ਵਿਵੇਕ ਦਾ ਹਾਸਿਲ ਹੈ।

ਕਲਾਤਮਕ ਪੱਖ/ ਬਿਰਤਾਂਤਕ ਜੁਗਤਾਂ : ਦੀਪਤੀ ਬਬੂਟਾ ਦਰਪੇਸ਼ ਮਨੁੱਖੀ ਮਸਲਿਆਂ ਅਤੇ ਯਥਾਰਥ ਦੀਆਂ ਵਿਭਿੰਨ ਪਰਤਾਂ ਦੀ ਪੇਸ਼ਕਾਰੀ ਬਾਰੇ ਜਿੰਨੀ ਸੁਚੇਤ ਹੈ ਉਨੀ ਹੀ ਉਹ ਆਪਣੀਆਂ ਕਹਾਣੀਆਂ ਦੇ ਕਲਾਤਮਕ ਪੱਖ ਬਾਰੇ ਚੇਤੰਨ ਹੈ। ਉਸ ਦੀਆਂ ਕਹਾਣੀਆਂ ਦੀ ਸੰਰਚਨਾ ਜਟਿਲ ਅਤੇ ਬਹੁ-ਪਰਤੀ ਹੈ। ਉਸ ਦੀਆਂ ਕਹਾਣੀਆਂ ਦਾ ਕਥਾਨਕ ਲਕੀਰੀ ਬਿਰਤਾਂਤ ਵਾਲਾ ਨਹੀਂ, ਉਹ ਬਾਖੂਬੀ ਜਾਣਦੀ ਹੈ ਕਿ ਅਜੋਕੇ ਮਨੁੱਖ ਦੀ ਗੁੰਝਲੋਂ ਗੁੰਝਲ ਮਾਨਸਿਕਤਾ ਅਤੇ ਟਕਰਾਵੇਂ ਵਿਰੋਧੀ ਵਾਲੇ ਸਮਾਜ ਦੀ ਹਕੀਕਤ ਨੂੰ ਇਕਹਿਰੇ ਲਕੀਰੀ ਬਿਰਤਾਂਤ ਦੀ ਜੁਗਤ ਰਾਹੀਂ ਨਹੀਂ ਬਿਆਨ ਕੀਤਾ ਜਾ ਸਕਦਾ। "ਵਾਸਤਵਿਕ ਜੀਵਨ ਵਿੱਚ ਘਟਨਾਵਾਂ ਕੁਦਰਤੀ ਕਾਲ-ਕ੍ਰਮ ਵਿੱਚ ਵਾਪਰਦੀਆਂ ਹਨ, ਪਰ ਕਥਾਕਾਰ ਆਪਣੀ ਰਚਨਾ ਦ੍ਰਿਸ਼ਟੀ ਅਨੁਸਾਰ ਉਹਨਾਂ ਦੇ ਵਾਪਰਨ ਕਾਲ ਨੂੰ ਮਸਨੂਈ ਕਾਲ ਵਿੱਚ ਰੂਪਾਂਤਰਿਤ ਕਰ ਲੈਂਦਾ ਹੈ। ਇਉਂ ਉਹ ਲੋੜ ਅਨੁਸਾਰ ਵਰ੍ਹਿਆਂ ਵਿੱਚ ਵਾਪਰਨ ਵਾਲੀਆਂ ਘਟਨਾਵਾਂ ਨੂੰ ਕੁਝ ਇੱਕ ਸ਼ਬਦਾਂ ਜਾਂ ਵਾਕਾਂ ਰਾਹੀਂ ਦੱਸ ਦੇਣ ਦੀ ਜੁਗਤ ਵਰਤਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਦੇ ਉਲਟ ਪਲ-ਛਿਣ ਵਿੱਚ ਵਾਪਰੀ ਘਟਨਾ ਨੂੰ ਵਿਸਥਾਰ ਦੇ ਸਕਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਜੁਗਤ ਰਾਹੀਂ ਕਹਾਣੀਕਾਰ ਜਿੱਥੇ ਬਿਰਤਾਂਤ ਦੀ ਗਤੀ ਤੇਜ ਜਾਂ ਹੌਲੀ ਰੱਖਣ ਦਾ ਮੰਤਵ ਪੂਰਾ ਕਰਦਾ ਹੈ ਉੱਥੇ ਵਿਸ਼ੇ-ਵਸਤੂ ਨੂੰ ਰੂਪਾਕਾਰ ਦੀਆਂ ਸੀਮਾਵਾਂ ਅਨੁਸਾਰ ਤਰਾਸ਼ਣ ਦਾ ਯਤਨ ਵੀ ਕਰਦਾ ਹੈ।"[3]

ਇਸ ਲਈ ਉਹ ਆਪਣੀਆਂ ਕਹਾਣੀਆਂ ਦੇ ਕਥਾਨਕ ਦੀ ਉਸਾਰੀ ਸਮੇਂ ਸਮਾਂਨੰਤਰ ਬਿਰਤਾਂਤ, ਟੁੱਟਵਾਂ ਬਿਰਤਾਂਤ, ਪਿੱਛਲਝਾਤ, ਮਨੋਬਚਨੀ, ਉੱਤਮ ਪੁਰਖੀ ਬਿਰਤਾਂਤ ਅਤੇ ਸੁਪਨ ਵਿਧੀ ਆਦਿ ਦੀਆਂ ਕਥਾ-ਜੁਗਤਾਂ ਦੀ ਵਰਤੋਂ ਕਰਦੀ ਹੈ। ਦੀਪਤੀ ਬਬੂਟਾ ਮਨੁੱਖ ਦੇ ਅੰਦਰਲੇ ਤੇ ਬਾਹਰਲੇ ਦਵੰਦਾਂ ਨੂੰ ਕਿਤੇ ਸੰਕੇਤਕ ਭਾਸ਼ਾ ਅਤੇ ਕਿਤੇ ਕਟਾਖਸ਼ੀ ਜਾਂ ਤਨਜ਼ੀਆ ਭਾਸ਼ਾ ਪ੍ਰਯੋਗ ਰਾਹੀਂ ਰੂਪਮਾਨ ਕਰਦੀ ਹੈ। ਉਸਦਾ ਕਟਾਖਸ਼ ਇੰਨਾ ਸੂਖਮ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਕਿ ਉਹ ਜਿਸ ਪਾਤਰ ਨੂੰ ਹਮਦਰਦੀ ਨਾਲ ਪੇਸ਼ ਕਰਦੀ ਜਾਪਦੀ ਹੈ ਉਸ ਦੀਆਂ ਮਨੋਗੰਢਾਂ, ਦੁਚਿੱਤੀਆਂ ਅਤੇ ਕਮਜ਼ੋਰੀਆਂ ਨੂੰ ਬੇਪਰਦ ਕਰ ਦਿੰਦੀ ਹੈ।ਉਸਦੀਆਂ ਕਹਾਣੀਆਂ ਦੇ ਅੰਤ ਕਈ ਵਾਰ ਵਿਸਫੋਟਕ ਅਤੇ ਅਕਸਰ ਸੁਝਾਊ ਹੁੰਦੇ ਹਨ। ਉਹ ਕਹਾਣੀਆਂ ਦੇ ਅੰਤ ਉੱਪਰ ਆਪਣੇ ਪਾਠਕਾਂ ਲਈ

ਬਹੁਤ ਕੁਝ ਅਣਕਿਹਾ ਛੱਡ ਦਿੰਦੀ ਹੈ।

ਹਵਾਲੇ ਅਤੇ ਟਿੱਪਣੀਆਂ

1. ਡਾ. ਹਰਚੰਦ ਸਿੰਘ ਬੇਦੀ, ਔਰਤਾਂ ਦੀਆਂ ਕਹਾਣੀਆਂ ਹਿੰਦ-ਪਾਕਿ ਪੰਜਾਬੀ ਕਹਾਣੀ (ਭਾਗ ਦੂਜਾ), ਪੰਨਾ 14
2. ਡਾ. ਰਜਨੀਸ਼ ਬਹਾਦਰ (ਸੰਪਾ.), ਦਸ ਦਿਸ਼ਾਵਾਂ, ਪੰਨਾ 8
3. ਡਾ . ਬਲਦੇਵ ਸਿੰਘ ਧਾਲੀਵਾਲ, ਆਧੁਨਿਕ ਪੰਜਾਬੀ ਕਹਾਣੀ ਦ੍ਰਿਸ਼ਟੀਮੂਲਕ ਪਰਿਪੇਖ, ਪੰਨਾ 13

www.bohalshodhmanjusha.com Bohal Shodh Manjusha ISSN: 2395-7115
Impact Factor: 8.642 June 2026 Page No. : 276-279
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

दया प्रकाश सिंहा के नाटकों में मानवीय मूल्य विघटन

Aswathy Chandran
Research Scholar
Department of Hindi, Sree Narayana College, Kollam
Prof. Dr. Manju A
Head of the Department
Department of Hindi, Sree Narayana College, Kollam

शोध सार : हिंदी साहित्य के महान साहित्यकार श्री दया प्रकाश सिंहा ने अपने नाटकों में मानवीय मूल्य विघटन का यथार्थ चित्रण किया है। साँझ सबेरा, मन के भँवर, मेरे भाई मेरे दोस्त, इतिहास चक्र, सादर आपका, सीढ़ियाँ जैसे नाटकों के ज़रिए मूल्यहीनता एवं मूल्य विघटन का समर्थन उन्होंने किया।

बीज शब्द : दया प्रकाश सिंहा के नाटकों में मूल्यहीनता एवं मूल्य विघटन।

बीसवीं शताब्दी का सर्वाधिक बहुचर्चित शब्द है **'मूल्य'** जिसका अर्थ होता है कीमत। मूल्य शब्द अंग्रेज़ी का value शब्द का पर्याय है। वृहद् हिंदी कोश के अनुसार "मूल्य हिंदी भाषा का शब्द है, जो विशेषता के रूप में उन्मूलन के योग्य, खरीदने योग्य, जो मूल में हो के अर्थ में प्रयोग किया जाता है किंतु जब वह पुल्लिंग के रूप में प्रयेग होता है तो वस्तु के बदले में दिया जाने वाला धन, कीमत, दाम, वेतन, पारिश्रमिक, उपयोगिका, रचना के भीतर वर्तमान रहने वाला ऐसा उध्देश्य जो उसे किसी सामाजिक आदर्श, व्यक्तिगत उच्चता आदि से जोड़े।" (1) विघटन शब्द का अर्थ समाप्त होना या टूटना है। मानक हिंदी कोश के अनुसार " विघटन का अर्थ है घटित करने वाले या संयोजक अंगों को अलग-अलग करना, जैसे संस्थान का विघटन, बिगाड़ना, नष्ट करना आदि।"(2)

दया प्रकाश सिंहा के नाटकें पौराणिक एवं ऐतिहासिक होते हुए भी वर्तमान सामाजिक समस्याओं को प्रस्तुत करने में सक्षम है। उनके कथा एक कंस की, सादर आपका, सीढ़ियाँ जैसे नाटकों में नाटककार जो मानवीय मूल्य विघटन का यथार्थता का चित्रण किया है उनकी प्रासंगिकता तब तक बनी रहेगी जब तक यह समस्या समाज में व्याप्त रहेगी। सिंहा द्वारा 1958 में लिखित समस्याप्रधान नाटक है **साँझ-सबेरा** । जिसमें निम्न – वर्गीय परिवार को केंद्र में रखकर आज की जीवंत समस्या को प्रस्तुत करता है। एक ओर इसमें दो पीढ़ियों के वैचारिक अंतर को व्यक्त किया गया है तो दूसरी ओर पाश्चात्य दर्शन के प्रति विमर्शन प्रस्तुत करता है। बाबु शीतला प्रसाद घर की मुखिया है जो एक आदर्शवान एवं ईमानदारी व्यक्ति है। वह अपने सिध्दान्तों को सर्वमान्य मानते है। पर उनका बेटा निखिल अपना बाप से ठीक विपरीत है। वह अपना बाप के आदर्शों एवं सिध्दांतों को अनुचित मानते है। वर्तमान समाज की स्वार्थ एवं भ्रष्ट जीवन का प्रतिनिधि है यहाँ निखिल। निखिल अपने पिता को वर्तमान समाज के अनुरूप बदलने का

उपदेश देता है। उनका मानना यह है कि आज धन के अभाव में व्यक्ति का कोई मूल्य नहीं है। अपना इन सिध्दांतों को कायम रखकर पिता की आदर्शों को दबा देने के लिए उन्होंने अपनी ही घर में चोरी करता है। जो धन अपनी बहन की ब्याह केलिए इक्कट्ठा किया था उसे चोरी करके वह अपने सिध्दान्तों को सिध्द करने का प्रयास करती है। इसके परिणामत: एक ओर शोभना स्वयं आत्महत्या का प्रयास करता है तो दूसरी ओर शीतला प्रसाद का ऐक्सिडेंट हो जाता है। इसमें निखिल को अपना भूल का एहसास होता है। निखिल के अनुसार "मुझे नहीं मालूम था कि बाबुजी के विश्वास इतने गहरे है, कि वह उनके लिए अपनी जान भी दे सकते है।"(3)

दया प्रकाश सिंहा द्वारा 1960 में लिखित श्रेष्ठ नाटक है **मन के भंवर**। यह एक मनोवैज्ञानिक नाटक है। नाटककार ने नाटक के पात्रों की मानसिक आरोह-अवरोह के साथ-साथ आर्थिक विषमता एवं आर्थिक असंतुलन तथा आर्थिक उतार-चढ़ाव के माध्यम से जो परिवार विघटन होता है उसका भी यथार्थ चित्रण किया है। प्रस्तुत नाटक की मुख्य पात्र है छाया, जो एक अमीर बाप के बेटी होने के कारण अपनी पति डॉ वशिष्ट से मोटर, बँगला जैसे भौतिक वस्तुओं का माँग करता है। किंतु उसकी आग्रह पूर्ती न होने के कारण छाया अपनी पति को नीचा दिखने का हर एक अवसर नहीं छोडती। डॉ वशिष्ट उसे समझाने का प्रयास करते हुए कहते है कि " छाया, दो तरह के आदमी होते है। कुछ आदमी केवल जीने के लिए जीते है, वह अपने सुख-साधनों के लिए अधिक से अधिक साधन जुटाते है, कुछ अपने आदर्शों के लिए जीते है। उनके लिए सारा जीवन एक साधना होती है।"(4) वर्तमान समाज में जो सभ्यता होता है वह मानव को स्वार्थी, निराश तथा आत्मकेंद्रित बना देता है। भौतिक सुख-भोग के प्राप्ति लिए तथा विलासी जीवन की चाह में मूल्य तथा जीवन उध्देश्य के बारे में वह अनभिज्ञ हो जाते है। प्रस्तुत नाटक में पूनम के माता पिता कामकाजी है जिसके कारण वह अपनी बच्ची पर पूरा ध्यान नहीं दे सकता है। जो प्रेम अपनी माता-पिता से नही मिलती है उसके कारण पूनम के मन में यह बात घर लेती है कि उसके माता-पिता उससे प्रेम नही करते, परिणामस्वरूप वह मानसिक विकार का शिकार हो जाती है। साथ ही साथ वह अपनी माता-पिता को अपना दुश्मन समझने लगती है।

सांप्रदायिकता एक ऐसी विचारधारा है जो धर्म एवं संप्रदाय को विभिन्न वर्गों में बांटती है। इसमें अपने धर्म को दूसरे धर्म से उचित बताती है साथ ही साथ अन्य धर्मों के प्रति भेदभाव करती है। इस प्रकार सांप्रदायिकता का यथार्थ चित्रण करते हुए श्री दया प्रकाश सिंहा द्वारा लिखित नाटक है **मेरे भाई:मेरे दोस्त**(1971)। नाटक में एक मुस्लिम परिवार की राष्ट्रभक्ति को विषय बनाया है। मिर्जा परिवार एक मात्र ऐसा मुस्लिम परिवार है जो लखनाऊ में हिंदुओं के बीच रहता है। मिर्जा एक परम देश भक्त है। अनवर मिर्जा का दोस्त था। 1942 के आन्दोलन में दोनो मित्रों ने भाग लिया और मिर्जा को बचाते हुए अनवर ने गोली स्वयं स्वीकार किया। सालों बाद जब अनवर का बेटा यासीन मिर्जा के घर आया, उनका एक मात्र लक्ष्य हिंदु-मुस्लिम दंगे था। वास्तव में यासीन विदेशी एजण्ट था और भारत में आतंकवादी गतिविधियों के संचालन हेतु आया हुआ है। अत: यासीन मुसलमानों को उनका अधिकार दिलववे तथा हिंदुओं से प्रतिशोध लेने केलिए अपने मित्र से मिलकर शहर में साँप्रदायिक दंगे करवाते है। किंतु दंगे में भी उनकी एकता एवं आपसी विश्वास देखकर यासीन असमंजस हो जाता है। साथ ही साथ अपनी चमेली दायी की हत्या उस पर गहरा प्रभाव डालती है जो उसका हृदय परिवर्तन कर देता है। यासीन के अनुसार "मेरे पास, बिलकुल मेरे पास अब्बा खड़े है। वह मेरे कंधे पर हाथ रखकर कह रहे है....जैसे कहना चाहते है, बेटा यह तुम्हारा इम्तहान है। खबराना मत।"(5)

समकालीनता के परिप्रेक्ष्य में मंचित एक सनातन नाटक है **इतिहास चक्र**। इसमें मानवीय मूल्यों से जुडे अनेक समस्याएं अंकित किया है जो आज भी प्रासंगिक है कल भी प्रासंगिक रहेगा। समाज की उच्च वर्ग द्वारा निम्न वर्ग पर अनेक प्रकार के शोषण किये जाते है। साधारण जनता पर भ्रष्ट नीति लगाकर उन्हें दिन व दिन शोषक वर्ग

शोषण करता है। इतिहास चक्र नाटक में राजा, कुबेर, बाबु, पत्राधिपर जैसे लोग इन शोषक वर्ग का प्रतिनिधियाँ है। जीवन के स्वार्थता, विलासता की प्रतिनिधि है राजा, उन्हें मात्र अपने पद की चिंता है। किसी भी प्रकार अपना अधिकार कायम रखने के लिए वे अपने महल छोड़कर आम जनता से भी मिलने लगा था जैसे

"राजा : वहाँ...वहाँ तो सूरज है!

सेक्रेटरी : बड़ा कठिन है उसे सहन करना?

राजा : बिना एयर कंडीशन के, बेशक।

सेक्रेटरी : बाहर धूल भी है।

राजा : (जैसे दम घुट रहा हो) मैं साँस कैसे लूँगा?

सेक्रेटरी : (सहानुभूति से) नहीं ले पायेंगे साँस।

....

राजा : (निश्चय से) हम फिर भी राजमहल के बाहर जायेंगे।

सेक्रेटरी : (चपरासी से) इतिहास लिखेगा कि पहली बार एक राजा राजमहल छोड़कर बाहर आया।"[6]

नाटक में बाबु की पत्नि नारी शोषण का शिकार है। पत्नि जहाँ बाबु से प्रेम करती है एवं आदर भाव रखती है पर पति द्वारा पत्नि से पशु जैसा व्यवहार करता है। बाबु द्वारा कमाई घूस और बेईमानी रुपयों पर विरोध करने पर उसे घर से निकल जाने को कहा जाता है जैसे- "हरामी की पिल्ली, खोपड़ी फोड़ दूँगा। बेईमानी का पैसा! तू तो जैसी मंदिर की देवी है। ......निकल जा मेरे घर से 'निकल', 'निकल'।" [7]

आधुनिकता के परिप्रेक्ष्य में उत्पन्न मूल्य विचलन, पारिवारिक विघटन, अजनबीपन, पति-पत्नि संबंध का यथार्थ चित्रण करने वाला नाटक है **सादर आपका।** माँ, प्रेम और वात्सल्य का देवी होती है। माँ का त्याग एवं कर्तव्यबोध हमेशा पूजनीय है। पर सादर आपका नाटक में लज्जा आधुनिक माँ है। लज्जा सुखलोलुप जीवन बिताना चाहती है। अपनी इच्छा पूर्ण जीवन प्राप्त करने के लिए वह हमेशा प्रयत्नरत है। साथ ही साथ लज्जा यह भी चाहती है कि अपनी पुत्री भी उसका रास्ता चुनें। जैसे-

"लज्जा : सेलेक्शन कमेटी के सब लोगों को तू जानती थी, फिर तेरा सेलेक्शन क्यों नहीं हुआ

रेखा : मैं क्या करूं

लज्जा : औरत क्या नहीं कर सकती।"[8]

संवाद से यह स्पष्ट है कि लज्जा अपनी बेटी को भी अपनी तरह बनाना चाहती है। नाटक में अजनबीपन का भी यथार्थ चित्रण हुआ है। लज्जावति और उसकी पति एक ही मकान में रहते हुए भी आपस में इतना दूर है कि वे एक दूसरे से बातें भी नहीं करती। लज्जा की पति हमेशा लज्जा को अपने से नीचे सिद्ध करना चाहती है। जिसके कारण लज्जा अपने ही घर में स्वयं को अकेलापन महसूस करने लगती है जैसे "औरत जो कहे- मुझे प्यार दो, सीने से लगाकर थपका दो, सहारा दो, वह बेशर्म। उसे अपनी इच्छा अपनी सीनी में घोंट देनी चाहिए। लेकिन मैं ऐसा नहीं कर पाती। मैंने हमेशा वहीं किया, जो एक औरत होने के नाते मुझे करना चाहिए था। क्योंकि मैं एक औरत हूँ, मुझे अपनी पति से ज़्यादा नहीं पढ़ना चाहिए। मुझे पति की कमाई में आधा पेट खाकर सन्तोष करना चाहिए।"[9]

निष्कर्ष : वर्तमान राजनीति भ्रष्टाचार, घूसखोरी, अवसरवादिता जैसी अव्यवस्थाओं का कारण मूल्यहीन होती जा रही है। आज का राजनेता अनैतिकता एवं भ्रष्टाचार से व्याप्त है। अपनी महत्वाकाक्षाओं की पूर्ती के लिए वह आम जनता को शोषण करता रहता है। प्रजातंत्र के नाम पर कुर्सी हथियाने केलिए नए- नए ङथकड़े, चुनाव के अवसर पर झूठे वादे, दलबल, अनाचार तथा शोषण आदि का यथार्थ चित्रण सिंहा जी के नाटकों में देखा जा सकता है। सिंहा

जी ने अपने नाटकों में मानवीय मूल्य विघटन के प्रति अपनी चिंता व्यक्त करते हुए समाज सेवा, संवेदन शीलता, परोपकार जैसी मानवीय मूल्यों का स्थापना करना चाहते है।

संदर्भ ग्रंथ सूचि :

1. वृहद हिंदी कोश – सं. कालिका प्रसाद, राजवल्लभ सहाय, मुकुन्दीलाल श्रीवास्तव – पृ : 912
2. मानक हिंदी कोश – आचार्य रामचंद्र वर्मा – पृ : 755
3. साँझ सबेरा – दया प्रकाश सिंहा – पृ : 76
4. मन के भंवर – दया प्रकाश सिंहा – पृ : 24
5. मेरे भाई मेरे दोस्त - दया प्रकाश सिंहा – पृ : 82
6. इतिहास चक्र - दया प्रकाश सिंहा – पृ : 44-45
7. इतिहास चक्र - दया प्रकाश सिंहा – पृ : 40-41
8. सादर आपका - दया प्रकाश सिंहा – पृ : 68
9. सादर आपका - दया प्रकाश सिंहा – पृ : 49

www.bohalshodhmanjusha.com Bohal Shodh Manjusha ISSN: 2395-7115
Impact Factor: 8.642 June 2026 Page No. : 280-284
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

मानसिक स्वास्थ्य एवं डायरी साहित्य

डॉ. प्रियंका सिंह
हिंदी अनुवादक,
केन्द्रीय विद्यालय संगठन, क्षेत्रीय कार्यालय, राँची

शोध-सार: प्रस्तुत शोध आलेख प्रासंगिक विषय मानसिक स्वास्थ्य के सुधार में डायरी की महत्त्वपूर्ण भूमिका पर केन्द्रित है। स्वास्थ्य ही सच्चा धन है। शारीरिक स्वास्थ्य के साथ मानसिक स्वास्थ्य का ख्याल रखना बहुत जरूरी है। वर्तमान समाज की जटिलताओं ने मानव मन में कई गाँठ दे दिए हैं जिनको सुलझाना अत्यधिक कठिन कार्य है। डायरी में रचनाकार का आत्मविश्लेषणात्मक लेखन इन उलझनों को सुलझाने में सहायक होता है। मानव मन की जटिलताओं को समझने में हिंदी की साहित्यिक डायरियाँ बहुत सहायक हैं। डायरीकारों ने अपनी डायरियों में अपने जीवन के कई कठिन पड़ावों का उल्लेख किया है।वे डायरी लेखन के माध्यम से स्वयं को बेहतर समझ पाए तथा अपने जीवन का मार्ग दर्शन भी किया। साहित्यिक डायरियाँ यह दर्शाती हैं कि विभिन्न परिस्थितियों का आत्मविश्लेषण परक लेखन केवल सुकून और शान्ति देता है तथा समाज के विभिन्न परिस्थितियों में स्वयं को बनाए रखने का हौसला भी प्रदान करता है।
बीज शब्द: डायरी, मानसिक स्वास्थ्य, साहित्य, समाज, आत्महत्या, लॉक डाउन, बेचैनी, आत्मविश्लेषण, तनाव, अड्डा।

मूल आलेख: मनुष्य एक बुद्धिमान जीव है। बुद्धि का संबंध मस्तिष्क से होता है। जिस प्रकार शरीर को स्वस्थ रखने की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार मस्तिष्क को भी स्वस्थ रखना जरूरी होता है। मानसिक स्वास्थ्य शब्द पिछले कुछ वर्षों में ज्वलन्त विषय के रूप में सामने आया है। आधुनिक युग की जटिलताओं ने मानव मन-मस्तिष्क को बहुत अधिक प्रभावित किया है। आज इंटरनेट का प्रभाव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में इतना अधिक हो चुका है कि प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष विषयों में अंतर समाप्त हो चुका है। अप्रत्यक्ष विषयों में मनुष्य पूरी तरह से लिप्त हो चुका है। इन्टरनेट से युक्त समाज में जहाँ सब कुछ अंगुलियों के इशारें पर चलने लगा है,वहीं मनुष्य आपने-आप का नियंत्रण नहीं कर पा रहाहै।

वर्ल्ड हेल्थ ओर्गनाइजेसन के अनुसार-“Mental Health is a state of mental well-being that enables people to cope with the stress of life, realize their abilities, learn well and work well, and contribute to their community. It is an integral component of health and well-being that underpins our individual and collective abilities to make decisions, build relationships and shape the world we live in.”[1]मानसिक स्वास्थ्य मानव मन-मस्तिष्क की वह अवस्था

है जिसमें वह जीवन के तनावों का सामना करने, अपनी सबलता एवं दुर्बलता को समझने तथा सामाजिक संघर्षों के बीच अपने आप को बनाए रखने में सक्षम बनाता है।

वर्तमान समय की विद्रुपताएं मनुष्य के मन-मस्तिष्क को प्रभावित कर रही हैं। अकेलापन, दुख, पीड़ा, संत्रास, प्रतिस्पर्धा जनित समाज, पूंजीवाद एवं बाजारवाद, निराशा, हताशा ने उसके मन पर बहुत अधिक दबाव बढ़ादिया है। जीवन के अतिरिक्त दबाव को दूर करने के कई उपाय हैं। उनमें से एक है अपने मन के विचारों को सूक्ष्मता से अभिव्यक्ति कर पाना। सूचना और प्रौद्योगिकी के इस युग में अभिव्यक्ति के माध्यमों की कोई कमी नहीं है। फेसबुक, वाट्स एप, इन्सटाग्राम, ओरकूट, ब्लोगिंग, स्टोरी टेलिंग आदिसभी अभिव्यक्ति के आधुनिक माध्यम हैं। अभिव्यक्ति के इन माध्यमों को प्रभावित करने वाले कारकों की लिस्ट भी उतनी ही लम्बी है, जिनमें एकांत भाव की कमी है। इन माध्यमों में मनुष्य अपनी पूरी सहजता से उपस्थित नहीं हो पाता है। उसकी अभिव्यक्ति स्वच्छन्द न होकर बाहरी कारकों से प्रभावित होती है। डायरी एक ऐसी विधा है जो मानव मन की अभिव्यक्ति को पूरा छूट प्रदान करती है। इसमें मनुष्य उन्मुक्त रूप से आत्माभिव्यक्ति कर पाता है।

वर्तमान समय में जीवन बहुत ही व्यस्त हो गया है। लोगों के पास समय नहीं है। वह केवल भागना चाहते हैं। इस भागम-भाग में वह न चाहते हुए भी अपने आप से दूर हो गए हैं। उसके पास इतना समय नहीं है कि वह आत्मनिरीक्षण कर सके, अपने लिए सही गलत का चुनाव कर सके।वे ऐसे कार्यों में लिप्त रहतेहैं जिनसे उन्हें खुशीकम,ज्यादातरतनाव हीमिलता है। सभी की स्थिति एक-सी है। किसी के पास इतना समय नहीं है कि एक दूसरे सेअपनी भावनाओं का साझा कर पाए।

सूचना-प्रौद्योगिकी ने जीवन के लिए कई नये आयाम खोल दिए हैं। इसके परिणाम को देखे तो पाते हैं कि पूरा विश्व एक गाँव में परिवर्तित हो गया है। इसके विपरीत हम अपने आस-पास के परिवेश से बहुत दूर हो गये हैं। अपने मित्रों से थोड़ी देर सामने रह कर बात नहीं कर पाते हैं। तुरन्त कह देते हैं कि ह्वाटस्अप कर देना। जीवन लाइक-शेयर के आंकड़ो में सिमट गया है। लोग अब अड्डा भी नहीं मारते। बंगाल में अड्डा मारने का चलन था, जहाँ मित्र गण बैठकर बातें करते थें। आज वो चलन भी प्रायः लुप्त हो गया है। तकनीकी का सहारा गलत नहीं है लेकिन जब उसमें अति आ जाए और अन्य चीज़ को निगलने लगे तब उस पर विचार करने की आवश्यकता महसूस होने लगती है।

आज हम 21वी. शताब्दी में साँस ले रहे हैं। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में तकनीकी घुसपैठ कर चुका है। संवेदनशीलता में दिनों-दिन ह्रास होता जा रहा है। किसी के पास दो पल को फुरसत नहीं है कि अपने किसी के जीवन की व्यथा सुन ली जाए। इस तरह वे बहुत अकेला और अर्थहीन समझने लगते हैं। कहने को तो तकनीकी ने लोगों को फिंगर टिप पर ला दिया है। किसी से अपनी बातों को साझा करना चाहते हैं तो घर बैठे-बैठे ह्वाटसअप कर लिजिए, फेस बुक पर लाइव चैट कर लिजिए, चन्द सेकेन्ड में अमेरिका में बैठे मित्र से विडियो कॉल के माध्यम से मुलाकात हो जाती है। लेकिन यह सब छलावा है। जो सुकून सामने बैठ कर बातें करने में है वह इन साधनों में नहीं है। धीरेन्द्र वर्मा डायरी को उस मित्र का स्थान देते हैं जिनसे आप खुलकर अपने मन की सारी बात कह सकते हैं। उसके साथ आप हँस सकते हैं, रो सकते हैं, शिकायतें कर सकते हैं, क्षोभ प्रकट कर सकते हैं, विरोद्ध प्रकट कर सकते हैं। यह अपके सारे सुख-दुख को बिना किसी पूर्वाग्रह के सब सुन लेती है। "दैनिक डायरी के समान इस कापी में नित्य नहीं लिखता था, बल्कि जब कभी विचारों के तूफान उठ कर बवंडर का रूप धारण करने लगते थे तभी उन्हें लिख कर मन को शांत कर लेता था। लिखने के बाद ऐसा मालूम होता था जैसे अपने किसी अत्यंत घनिष्ठ मित्र से मन की गुप्त बातें कह के आदमी हलकापन अनुभव करता हो।"[2]

डायरी के संदर्भ में गाँधी जी का विचार भी महत्त्वपूर्ण है। महात्मा गाँधी ने डायरी लेखन पर बहुत जोर दिए। वह डायरी को एक बहुमूल्य वस्तु समझते थें। जीवन के पथ पर डायरी को बहुत लाभकारी मानते थें। उन्होंने डायरी लेखन के लिए स्कूली बच्चों से भी आग्रह किया। उनके अनुसार डायरी लिखने की आदत ही मनुष्य को बहुत सारी बुराईयों से बचा लेती है।"डायरी का विचार करके देखता हूँ तो मेरे लिए तो वह एक अमूल्य वस्तु हो गई है। जो सत्य की आराधना करता है, उसके लिए वह पहरेदार का काम करती है, क्योंकि उसमें सत्य ही लिखना है। आलस्य किया हो तो लिखे ही छुटकारा। काम किया हो तो भी लिखे ही छुटकारा....। डायरी रखने की आदत ी हमें अनेक दोषों से बचा लेगी। (दिनांक- 20-20-1933)"[3]

आधुनिकता के संत्रास भरे जीवन में जहाँ चारों ओर निराशा, हताश, अकेलापन भरा है, डायरी एक मित्र की भूमिका अदा कर सकती है। यह उसे अपनेपन का आभास तो दिलाती ही है साथ ही जीवन के मार्ग में पथ प्रदर्शिका का काम भी करती है। आधुनिक समाज में समस्याओं की कोई कमी नहीं है। मनुष्य विभिन्न तरह के अवसादों से ग्रस्त है। हल और समाधान के रास्ते बहुत कम हैं। समाधान का एक सरल माध्यम डायरी है जो डायरीकार की सारी दुविधाओं को अपने में समा लेती है। डॉ. हरिमोहन डायरी के महत्त्व को निम्न शब्दों में उद्घोषित करते हैं- "वास्तव में, व्यक्ति और परिस्थितियों के बीच अपने को रखकर आत्म-विश्लेषण करता है। इसलिए डायरी प्रायः आत्म-परिष्करण और आत्म-मुक्ति का सबसे अच्छा साधन भी है। मानसिक तनाव से मुक्ति भी-लेखन के माधयम से कर सकता है। यही नहीं व्यक्ति अपने जीवन पथ का निर्धारण भी डायरी के माध्यम से कर सकता है। बहुत-सी बातें को वह 'आत्म-स्वीकृति'(कन्फेशन) के रूप में ले सकता है।"[4]

पिछले कुछ दशकों से जागरूक समाज में मानसिक स्वास्थ्य को लेकर विशेष चर्चा हो रही है। कोरोना के संक्रमण के दौरान सरकार को लॉक डाउन की घोषणा करनी पड़ी थी। सभी अपने-अपने घरों में बन्द हो गये थें। उस समय लोगों का सामना जीवन की वास्तविकता से हुआ। लोगों को जीवन की आधारभूत आवश्यकताओं के लिए तरसना पड़ा।

लॉक डाउन के कई सकारात्मक पहलुओँ के होते हुए भी लोगों को कई असुविधाओं का सामना करना पड़ा। जो जहाँ थें वहीं फँस गए। बहुत तो पैदल सफ़र करके अपने परिवार के पास पहुँचे। समाज का पूरा आयाम ही बदल गया। इस अवस्था में सभी ने अकेलापन महसूस किया। सारा समाज मानसिक तनाव से ग्रस्त था। वह सब हुआ जिसकी कभी कोई कल्पना भी नहीं कर सकता था। लॉक डाउन की सीमा बढ़ जाने पर कितनों का रोजगार खत्म हो गया, नौकरियां भी चली गई। दैनिक मजदूरी करने वाले के घरों में तो दो वक़्त का खाना भी मुश्किल हो गया। उस दौरान सभी कहीं न कहीं सभी मानसिक पीड़ा से गुजर रहे थें।

मानसिक स्वास्थ्य पर कोरोना और लॉक डाउन का बहुत बुरा प्रभाव पड़ा। जो कोई कोरोना से पीड़ित होता, उसे 14 दिनों के लिए कॉरनटाइन में रहना पड़ता था। उस अवधि में कोई उससे मिल नहीं सकता, बातें नहीं कर सकता। बिमारी की पीड़ा अलग से सहनी होती साथ ही मानसिक तनाव को झेलना पड़ता। कल तक जो प्रिय था वो उससे दूरी बनाने लगा था। इस तरह कोरोना से लोगों के मानसिक स्वास्थ्य पर गहरा प्रभाव पड़ा। इस प्रकार के संकट के काल में अपनी भावनाओं एवं विचारों को डायरी में अभिव्यक्त कर स्वयं का विश्लेषण कर पाना एक साधन के रूप में सहायक हुआ।

हिंदी के कई रचनाकारों ने अपने विचारों को डायरी में उकेरा है। वे अपनी मानसिक स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए डायरी का सहारा लेते हैं। कृष्ण बलदेव वैद अपने जीवन की कठिनाईयों से त्रस्त थें। अपने प्रवास काल में अपने आपको स्थिर बनाए रखने के लिए डायरी का सहारा लेते हैं। अपनी डायरी की भूमिका में स्वयं स्वीकार करते हैं कि वह खुदकुशी से बचने के लिए डायरी की सहायता लेते हैं। "एक बार फिर यहां दर्ज कर देना

चाहता हूँ कि इस डायरी में मेरा असली मकसद है -अपने बिखराव को काबू में रखना, अपने आपको खुदकुशी से बचाए रखना, अपने आपको काम के लिए उकसाते रहना, इससे अपनी तनहाई को सहते चले जाने की ताकत बटोरना।"[5] आज युवाओं में खुदकुशी की समस्या बहुत अधिक बढ़ गई है। ऐसा इसलिए हो रहा क्योंकि आधुनिक समाज में लोगों के बीज अलगाव आ गया है। वह अपने मन की बात किसी से कह नहीं पातें हैं न ही उसका आत्मविश्लेषण ही करते हैं। वह यह समझने लगता है कि अब कुछ नहीं हो सकता। खुदकुशी ही एक मात्र समाधान है। डायरी लेखन से वह आत्मविश्लेषण कर स्वयं की समस्याओँ को मिटाने का मार्ग ढूंढ़ सकता है और खुदकुशी से बचा जा सकता है। डायरी मानसिक स्वास्थ्य को स्वस्थ रखने में मदद करती है।

कुछ इसी तरह का अनुभव विष्णु प्रभाकर भी लक्षित करते है। "मैं किसी से किसी भी तरह का भेदभाव नहीं करता था हाँ, तब तक मैंने डायरी लिखना भी शुरू कर दिया था। तब की वह डायरी सुरक्षित रहती तो उसके हर पृष्ठ पर यह लिखा देखा जा सकता था – Better to die (ऐसे जीवन से मरना अच्छा) ये सारी परिस्थितियाँ जहाँ एक ओर मुझे कथा से मथ रही थी। दूसरी ओर डायरी लिखने की प्रवृति के कारण और आर्यसमाज में सक्रिय भाग लेने की वजह से मुझे अपनी व्यथा को कागज पर उतारने की प्रेरणा भी मिली। दर्द की यातना में से गुजरे बिना कोई लेखक नहीं बन सकता।"[6] इन पंक्तियों में विष्णु प्रभाकर अपने भोगे हुए यथार्थ को अंकित करते हैं। ये पंक्तियाँ जीवन में डायरी के महत्त्व को दर्शा रही हैं। डायरी लिखने की प्रवृति जीवन पथ पर आगे बढ़ते रहने की प्रेरणा देती है। अवसाद ग्रस्त व्यक्ति जब अपने विचारों को डायरी में लिखता है तो उसे अच्छा महसूस होता है। उसे जीवन के नए मायने समझ आने लगता है।

रामधारी सिंह दिनकर भी अपनी डायरी में अपने जीवन के अकेलेपन की पीड़ा से दुखी थें। वे सामाजिक कर्मो में अपने कर्त्तव्यों का निर्वाह बखुबी कर रहे थें। अपने विचारों से राष्ट्र का निर्माण करने वाला राष्ट्र कवि व्यक्तिगत स्तर पर जब दुखी होता है तब डायरी के पृष्ठ उसकी विहलता को आराम देते हैं। "मैं बहुत बेचैन हूँ। चाहता हूँ कि कोई आकर कान में कह दे, तुम बेचैन क्यों हो? कुछ भी नहीं हुआ है।"[7]

क्षमा कौल अपनी डायरी 'समय के बाद' में अपने मन के तकलीफों को स्थान देती हैं। वे एक विस्थापित तथा परित्यक्ता स्त्री हैं, जिसे विषम परिस्थितियों में अपने दो बच्चों का पालन-पोषण करना है। वे सदैव मुस्कुराकर सभी कठिनाईयों का सामना करती हैं। मुस्कुराने के अलावा उनके पास और कोई रास्ता भी नहीं है। लेकिन वक्त के थपेड़े सहते-सहते कभी-कभी दुख असहनीय हो ही जाता है। टेलीविजन तथा किताबों में अपने प्रतिरूप को देखकर उनके ज़ख्म हरे हो जाते हैं, पर उनके पास कोई नहीं है जिससे वे अपना दर्द बांट सकें। वे डायरी में अपना दर्द बयां करती हैं–"""लेखक कहते हैं कि अपने अकेलेपन में मैंने टी. वी. खोला तो क्यापाया ? पीड़ा। सहानुभूति । मैंने टी. वी. बंद किया ।

" मैंने भी किताब खोली तो क्या पढ़ा ? अपना ही वृतांत, वह भी अमेरिका के. टी.वी. पर ।

ऐसे हादसों का टी.वी. सब बंद करते हैं। यह पूरा समाज । कोई करे भी क्या। तो मैंने भी किताब बंद की और सोने की कोशिश की। पर में अमेरिका की 'मैं'के पास पहुंची ।

- क्या तुमने उसके पैर आंसुओं से धोये ? और उस पर कोई असर नहींहुआ ?

"–क्या तुमने सारी रात प्रार्थनाएं की ? बच्चों की बरबादी का वास्ता दिया ? अपनी तबाही का वास्ता दिया ? यह भी पूछा कि आखिर तुम घर किसके साथ बसाओगे ?"

"कहा कि बगल वाली के साथ घर बसाऊंगा। तुम पिंड छोड़ दो बच्चोंसमेत ।"

"तब क्या हुआ तुम्हारे भीतर ?"

तुम वह कैसे बता सकती हो। नहीं बता सकती। प्रलय की रात जो पीड़ा पृथ्वी के हृदय में होती है- वही। पृथ्वी कह भी नहीं पाती। "एक अर्से बाद मेरा सिरहाना भींग उठा था। एक बड़ा सा पत्थर जिस 'आली पत्थर'मन के आगे दिया था वह ज़रा सरक गया।"[8]यहाँ क्षमा कौल की मानसिक अवस्था अत्यन्त मार्मिक है। असीम दर्द की अवस्था पृथ्वी के प्रलय के समान बन चुकी है। जिसे न सहा जा पाता है न कहा जा पाता है। वह चुप-चाप आसूओं के साथ डायरी में दर्ज हो पाती है। क्षमा कौल अपने कष्टों को डायरी के पन्नों में विराम देकर अपने दुखों का समन करती हैं।
निष्कर्ष: डायरी साहित्य के गहन अध्ययन एवं विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि मन को स्वस्थ रखने के लिए एक स्वस्थ परिवेश की आवश्यकता है। एक ऐसा परिवेश जहाँ अपने आप को खुल कर अभिव्यक्त किया जा सके। एक ऐसा माहौल जहाँ मुक्त संवाद किया जा सके। संवाद की स्थिति में अवसाद मिट जाते हैं। डायरी में डायरीकार अपने मन की अभिव्यक्ति खुले भाव से कर पाता है। डायरी उनके आत्मसंतुष्टि में सहायक बनता है। मनुष्य स्वभाव से संवेदनशील होता है। वह विभिन्न परिस्थितियों से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता है। ऐसे में स्वयं को उस स्थिति के अनुसार समायोजित करने की आवश्यकता होती है। इस समायोजन में बहुत हद तक डायरी सहायक होते हैं।

संदर्भ:

1. https://www.who.int/news-room/fact-sheets/detail/mental-health-strengthening-our-response
2. वर्मा धीरेन्द्र, मेरी कालिज डायरी, साहित्य भवन प्राइवेट लिमिटेड, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण-1958, पृष्ठ सं. -05
3. भाटिया कैलाशचन्द्र, रचना भाटिया, साहित्य में गद्य की नई विविध विधाएँ, तक्षशिला प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1996, पृष्ठ सं. -26
4. डॉ हरिमोहन, साहित्यिक विधाएं: पुनर्विचार, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण 2019, पृष्ठ सं. -261
5. वैद कृष्ण बलदेव, ख़्वाब है दीवाने का, राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली, प्रथम संस्करण 2005, पृष्ठ सं. -9
6. विष्णु प्रभाकर, दस प्रतिनिधि कहानियाँ, 1994, पृष्ठ सं. -7
7. दिनकर रामधारी सिंह, दिनकर की डायरी, लोकभारती पैपरबैक्स, इलाहाबाद, पहला संस्करण-2019, पृष्ठ सं. -86
8. कौल क्षमा, समय के बाद, अनिल प्रकाशन, न्यू मार्किट, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2015, पृष्ठ सं. -93

स्थायी पता- एस.बी.गोराई रोड, रेगनिया पारा,
आसनसोल, पश्चिम बंगाल, पिन- 713303
मो. न.- 8250929504
ई-मेल- rsdpriyankasingh@gmail.com

देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयताम्।। ऋ० १/८६/२

ISSN : 2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED & REFEREED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Publisher : Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Table 2

Methodology for University and College Teachers for calculating Academic/Research Score

(Assessment must be based on evidence produced by the teacher such as: copy of publications, project sanction letter, utilization and completion certificates issued by the University and acknowledgements for patent filing and approval letters, students' Ph.D. award letter, etc,.)

S.N.	Academic/Research Activity	Faculty of Sciences /Engineering / Agriculture / Medical /Veterinary Sciences	Faculty of Languages / Humanities / Arts / Social Sciences / Library /Education / Physical Education / Commerce / Management & other related disciplines
1.	**Research Papers in Peer-Reviewed or UGC listed Journals**	08 per paper	10 per paper
2.	**Publications (other than Research papers)**		
	(a) Books authored which are published by ;		
	International publishers	12	12
	National Publishers	10	10
	Chapter in Edited Book	05	05
	Editor of Book by International Publisher	10	10
	Editor of Book by National Publisher	08	08
	(b) Translation works in Indian and Foreign Languages by qualified faculties		
	Chapter or Research paper	03	03
	Book	08	08
3.	**Creation of ICT mediated Teaching Learning pedagogy and content and development of new and innovative courses and curricula**		
	(a) Development of Innovative pedagogy	05	05
	(b) Design of new curricula and courses	02 per curricula/course	02 per curricula/course

202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021
www.bohalsm.blogspot.com grsbohal@gmail.com 8708822674 9466532152

ISSN:2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा
Bohal Shodh Manjusha

Impact Factor : 8.642

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Ref. No. June 2026/1

https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

Certificate of Publication

is awarded to

Dr. Prem Singh

S.P.C. GOVT COLLEGE BHIM, RAJSATHAN

Deepali Lal

S.D. GOVERNMENT COLLEGE BEAWAR , RAJSATHAN

for the paper titled

Diversity and Seasonal Variation of Zooplankton in Rajsamand Lake

Publised in Bohal Shodh Manjusha ISSN:2395-7115

June 2026, Vol. 23, Issue 6, Page No. 11-14

9 772395 711007

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science, DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

ISSN:2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

Impact Factor : 8.642

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Ref. No. June 2026/2 https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

Certificate of Publication

is awarded to

डॉ० संजीव कुमार द्विवेदी

संगीत (गायन),
पंडित शंभू नाथ शुक्ल विश्वविद्यालय शहडोल मध्य प्रदेश

for the paper titled

उप-शास्त्रीय गायन रूप में ठुमरी एवं ग़ज़ल गायकी का विस्तृत विश्लेषणात्मक अध्ययन

Publised in Bohal Shodh Manjusha ISSN:2395-7115
June 2026, Vol. 23, Issue 6, Page No. 15-17

9 772395 711007

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

ISSN:2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

Impact Factor : 8.642

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Ref. No. June 2026/3

https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

Certificate of Publication

is awarded to

डॉ॰ रंजना गुप्ता,
एसोसिएट प्रोफेसर,
हिंदी विभाग, हरियाणा संस्कृत विद्यापीठ, पलवल

for the paper titled

रामायण में ज्ञान दृष्टि

Publised in Bohal Shodh Manjusha ISSN:2395-7115
June 2026, Vol. 23, Issue 6, Page No. 18-21

9 772395 711007

Editor
Dr. Naresh Sihag Advocate
M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

Impact Factor : 8.642

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Ref. No. June 2026/4 https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

Certificate of Publication

is awarded to

ਡਾ. ਲਖਵਿੰਦਰ ਕੌਰ,
ਅਸਿਸਟੈਂਟ ਪ੍ਰੋਫੈਸਰ,
ਪੰਜਾਬੀ ਵਿਭਾਗ, ਡੀ.ਏ.ਵੀ ਕਾਲਜ, ਬਠਿੰਡਾ,

for the paper titled

ਅਜਮੇਰ ਸਿੰਘ ਔਲਖ ਦੇ ਨਾਟਕਾਂ ਵਿੱਚ ਪੇਸ਼ ਨਾਟ ਜੁਗਤਾਂ

Publised in Bohal Shodh Manjusha ISSN:2395-7115
June 2026, Vol. 23, Issue 6, Page No. 22-25

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate
M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

9 772395 711007

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

Impact Factor : 8.642

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Ref. No. June 2026/5

https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

Certificate of Publication

is awarded to

मनीषा देवी
शोधार्थी (हिन्दी-विभाग),
महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

for the paper titled

डॉ. मंजीत की कहानी 'एक और द्रोणाचार्य' में शैक्षणिक विवेचना

Publised in Bohal Shodh Manjusha ISSN:2395-7115
June 2026, Vol. 23, Issue 6, Page No. 26-29

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

9 772395 711007

ISSN:2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

Impact Factor : 8.642

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Ref. No. June 2026/6 https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

Certificate of Publication

is awarded to

डॉ. अनीता
सहायक प्रोफेसर हिन्दी
सर छोटूराम राजकीय महिला महाविद्यालय सांपला, रोहतक

for the paper titled

तरुण भटनागर के उपन्यास साहित्य में युवा चेतना

Publised in Bohal Shodh Manjusha ISSN:2395-7115
June 2026, Vol. 23, Issue 6, Page No. 30-33

Editor
Dr. Naresh Sihag Advocate
M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

9 772395 711007

ISSN:2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

Impact Factor : 8.642

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Ref. No. June 2026/7

https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

Certificate of Publication

is awarded to

पूनम

शोधार्थी हिंदी-विभाग,

महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय रोहतक

for the paper titled

'उसका अपना रास्ता' कहानी में युवा वर्ग द्वारा पाश्चात्य संस्कृति का अंधानुकरण

Publised in Bohal Shodh Manjusha ISSN:2395-7115

June 2026, Vol. 23, Issue 6, Page No. 34-37

9 772395 711007

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

ISSN:2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

Impact Factor : 8.642

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Ref. No. June 2026/8 https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

Certificate of Publication

is awarded to

Dr. Anupama

Assistant Professor,

Department of Hindi,

Mount Carmel College, Autonomous,

for the paper titled

स्त्री आत्मकथा: अस्मिता और प्रतिरोध की अभिव्यक्ति

Publised in Bohal Shodh Manjusha ISSN:2395-7115

June 2026, Vol. 23, Issue 6, Page No. 38-44

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

9 772395 711007

ISSN:2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

Impact Factor : 8.642

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Ref. No. June 2026/9 https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

Certificate of Publication

is awarded to

JAYA AGRAWAL

ASSISTANT PROFESSOR,

POLITICAL SCIENCE,

GOVERNMENT GIRLS COLLEGE, AJMER, RAJASTHAN

for the paper titled

The Theory of Nationalism: Swami Vivekananda

Publised in Bohal Shodh Manjusha ISSN:2395-7115

June 2026, Vol. 23, Issue 6, Page No. 45-47

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

9 772395 711007

ISSN:2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

Impact Factor : 8.642

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Ref. No. June 2026/10 https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

Certificate of Publication

is awarded to

डॉ० रेनू जोशी,
अिसस्टेंट प्रोफ़ेसर हिंदी,
राजकीय महाविद्यालय लमगड़ा, अल्मोड़ा

for the paper titled

भक्ति साहित्य में भारतीय ज्ञान परंपरा का लोक मंगलकारी स्वरूप

Publised in Bohal Shodh Manjusha ISSN:2395-7115
June 2026, Vol. 23, Issue 6, Page No. 48-52

9 772395 711007

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

Impact Factor : 8.642

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Ref. No. June 2026/11

https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

Certificate of Publication

is awarded to

रामकुमार साहू
शोधार्थी,
संत गहिरा गुरु विश्वविद्यालय सरगुजा, अंबिकापुर (छ.ग.)
संप्रति: सहायक प्राध्यापक (हिंदी),
शासकीय महाविद्यालय रामानुजनगर, जिला-सूरजपुर (छ. ग.)

for the paper titled

समसामयिक परिवर्तन का आख्यान काशीनाथ सिंह का उपन्यास 'काशी का अस्सी'

Publised in Bohal Shodh Manjusha ISSN:2395-7115
June 2026, Vol. 23, Issue 6, Page No. 53-56

9 772395 711007

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

ISSN:2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

Impact Factor : 8.642

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Ref. No. June 2026/12 https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

Certificate of Publication

is awarded to

सुजाता. नुन्ना
शोधार्थिनी,

प्रो. एन. सत्यनारायण
शोध निर्देशक,
अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
आन्ध्र विश्वविद्यालय, विशाखपट्टनम,

for the paper titled

मल्लीपुरम जगदीश जी की कहनियों में आदिवासी स्त्री जीवन

Publised in Bohal Shodh Manjusha ISSN:2395-7115
June 2026, Vol. 23, Issue 6, Page No. 57-60

9 772395 711007

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

ISSN:2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

Impact Factor : 8.642

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Ref. No. June 2026/13 https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

Certificate of Publication

is awarded to

डॉ. प्रीति श्रीवास्तव

एसोसिएट प्रोफेसर,

डिपार्टमेंट ऑफ़ संस्कृत, एस. एन. डी. टी. कॉलेज ऑफ़ आर्ट्स एंड

एस. सी. बी. कॉलेज ऑफ़ कामर्स एंड साइंस फॉर वीमेन, चर्चगेट, मुंबई- 400020

for the paper titled

“सादा जीवन, उच्च विचार” : श्रीमद्भगवद्गीता एवं राधास्वामी संतमत का तुलनात्मक अध्ययन

Publised in Bohal Shodh Manjusha ISSN:2395-7115

June 2026, Vol. 23, Issue 6, Page No. 61-66

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

9 772395 711007

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

Impact Factor : 8.642

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Ref. No. June 2026/14 https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

Certificate of Publication

is awarded to

डॉ. नीलम कुमारी
एसोसिएट प्रोफेसर,
हिन्दी विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी - 221005

for the paper titled

भारतीय लोक कलाओं का सामाजिक संदर्भ

Publised in Bohal Shodh Manjusha ISSN:2395-7115
June 2026, Vol. 23, Issue 6, Page No. 67-71

Editor
Dr. Naresh Sihag Advocate
M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

9 772395 711007

ISSN:2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

Impact Factor : 8.642

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Ref. No. June 2026/15

https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

Certificate of Publication

is awarded to

डॉ० राधा वर्मा

सहायक आचार्य हिंदी,

राजकीय महाविद्यालय कंडाघाट सोलन-173215 (हि०प्र०)

for the paper titled

गर्भ से अंत्येष्टि तक मूल्य-विघटन को चित्रित करती समकालीन हिंदी कविता

Publised in Bohal Shodh Manjusha ISSN:2395-7115

June 2026, Vol. 23, Issue 6, Page No. 72-76

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science, DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

9 772395 711007

ISSN:2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

Impact Factor : 8.642

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Ref. No. June 2026/16 https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

Certificate of Publication

is awarded to

प्रभाकर कुमार
BPSC Teacher (11-12),
उत्क्रमित उच्च माध्यमिक विद्यालय मीरगंज(पिरथु) मदनपुर - औरंगाबाद
मनीषा कुमारी
M.sc Student,
B.N.M.U, Saharsa (Bihar)

for the paper titled

बिहार की शिक्षक - शिक्षा की वर्त्तमान स्थिति

Publised in Bohal Shodh Manjusha ISSN:2395-7115
June 2026, Vol. 23, Issue 6, Page No. 77-79

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

9 772395 711007

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा
Bohal Shodh Manjusha

Impact Factor : 8.642

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Ref. No. June 2026/17 https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

Certificate of Publication

is awarded to

Seema Dahiya

Assistant Professor

Tika Ram College of Education, Sonipat

for the paper titled

Pedagogical Shifts and Teacher Education

Publised in Bohal Shodh Manjusha ISSN:2395-7115
June 2026, Vol. 23, Issue 6, Page No. 80-83

9 772395 711007

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

Impact Factor : 8.642

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Ref. No. June 2026/18 https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

Certificate of Publication

is awarded to

Neethu D.P

Research Scholar,

Department of Hindi, Maharaja’s college, Ernakulam

for the paper titled

‘शकुंतिका’ उपन्यास में नारी सशक्तिकरण

Publised in Bohal Shodh Manjusha ISSN:2395-7115
June 2026, Vol. 23, Issue 6, Page No. 84-87

9 772395 711007

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science, DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

ISSN:2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

Impact Factor : 8.642

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Ref. No. June 2026/19 https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

Certificate of Publication

is awarded to

आदर्श श्रीवास

शोधछात्र, योग अध्ययन केंद्र

हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला, हिमाचल प्रदेश

डॉ. सत्यानन्द

सहायक आचार्य, योग अध्ययन केंद्र

हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला, हिमाचल प्रदेश

for the paper titled

“वैश्विक शांति में बौद्ध धर्म की प्रासंगिकता”

Publised in Bohal Shodh Manjusha ISSN:2395-7115

June 2026, Vol. 23, Issue 6, Page No. 88-93

9 772395 711007

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

Impact Factor : 8.642

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Ref. No. June 2026/20 https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

Certificate of Publication

is awarded to

DINESH SINGH

M.Sc. Geography

INDRA GANDHI NATIONAL OPEN UNIVERSITY

for the paper titled

Impact of Climate Change on Agricultural Productivity in Rajsamand District, Rajasthan: A Geographical Analysis

Publised in Bohal Shodh Manjusha ISSN:2395-7115
June 2026, Vol. 23, Issue 6, Page No. 94-98

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

9 772395 711007

ISSN:2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

Impact Factor : 8.642

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Ref. No. June 2026/21 **https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985**

Certificate of Publication

is awarded to

डॉ. गायत्री देवी
अतिथि प्रवक्ता, राजनीति विज्ञान विभाग
महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय चित्रकूट, सतना (मध्य प्रदेश)

for the paper titled

भारतीय ज्ञान परम्परा में नारी

Publised in Bohal Shodh Manjusha ISSN:2395-7115
June 2026, Vol. 23, Issue 6, Page No. 99-104

9 772395 711007

Editor
Dr. Naresh Sihag Advocate
M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

ISSN:2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

Impact Factor : 8.642

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Ref. No. June 2026/22 https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

Certificate of Publication

is awarded to

Shraddha Singh Parihar

Research Scholar (Political Science),

Department of Humanities and Social Science

Mahatma Gandhi Chitrakoot Gramodaya Vishwavidyalaya, Chitrakoot , Satna (M.P.)

for the paper titled

AI and Public Policy Innovation in Rural India: Opportunities, Accountability and Inclusion

Publised in Bohal Shodh Manjusha ISSN:2395-7115
June 2026, Vol. 23, Issue 6, Page No. 105-108

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science, DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

9 772395 711007

ISSN:2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

Impact Factor : 8.642

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Ref. No. June 2026/23 https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

Certificate of Publication

is awarded to

Harinder Pal Singh

Research scholer,

Principal Govt senior secondary school Dabwali Rahurian wali

Dr. Sheeshpal Singh

Guide,

Deptt. Of English, Shri Khushal Das University, Pilibanga, Hanumangarh

for the paper titled

Role of IT in education

Publised in Bohal Shodh Manjusha ISSN:2395-7115
June 2026, Vol. 23, Issue 6, Page No. 109-112

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

9 772395 711007

ISSN:2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

Impact Factor : 8.642

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Ref. No. June 2026/24 https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

Certificate of Publication

is awarded to

डॉ० जय शंकर पाण्डेय

अवधूत भगवान राम पी.जी. कॉलेज, अनपरा, सोनभद्र (उ.प्र.)

for the paper titled

मादक द्रव्य व्यसन की समस्या का आधुनिक सन्दर्भ

Publised in Bohal Shodh Manjusha ISSN:2395-7115
June 2026, Vol. 23, Issue 6, Page No. 113-115

9 772395 711007

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

Impact Factor : 8.642

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Ref. No. June 2026/25 https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

Certificate of Publication

is awarded to

Dr. Sheeshpal Singh

Assistant Professor (Dept. of English),

Dept. of English, SKD University Hanumangarh (Rajsthan)

for the paper titled

MAIN SIX FORMS OF POVERTY UNDER DEVELOPED COUNTRY

Publised in Bohal Shodh Manjusha ISSN:2395-7115
June 2026, Vol. 23, Issue 6, Page No. 116-120

9 772395 711007

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

Impact Factor : 8.642

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Ref. No. June 2026/26 https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

Certificate of Publication

is awarded to

Hemant Kamra

Ph.D Scholar (Deptt. Of English),

Shri Khushal Das University, Hanumangarh, Rajasthan.

Dr. Sheeshpal Singh

Assistant Professor (Deptt. Of English),

SKD University Hanumangarh Raj.

for the paper titled

Feminism: Women's Participation in Social, Political, Spiritual, and Freedom Struggles.

Publised in Bohal Shodh Manjusha ISSN:2395-7115
June 2026, Vol. 23, Issue 6, Page No. 121-125

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science, DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

9 772395 711007

ISSN:2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

Impact Factor : 8.642

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Ref. No. June 2026/27 https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

Certificate of Publication

is awarded to

अलिका कुमारी
शोधार्थी,
विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग राँची विश्वविद्यालय, राँची
सम्प्रति - सहायकशिक्षिका (हिन्दी)
राजकीय कन्या उत्क्रमित उच्च विद्यालय सरायकेला

for the paper titled

उदय प्रकाश की काव्य-संवेदना में सामाजिक चेतना

Publised in Bohal Shodh Manjusha ISSN:2395-7115
June 2026, Vol. 23, Issue 6, Page No. 126-133

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate
M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

9 772395 711007

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

Impact Factor : 8.642

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Ref. No. June 2026/28 https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

Certificate of Publication

is awarded to

DR. Neerada Maria Kurian

Assistant Professor,

Dept. of Hindi, Newman College Thodupuzha

for the paper titled

'प्रवादपर्व' में अभिव्यक्त नारी चेतना

Publised in Bohal Shodh Manjusha ISSN:2395-7115
June 2026, Vol. 23, Issue 6, Page No. 134-138

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

9 772395 711007

ISSN:2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

Impact Factor : 8.642

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Ref. No. June 2026/29 https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

Certificate of Publication

is awarded to

शिवशंकर,
सहायक प्रोफेसर हिंदी,
राजकीय स्नातकोत्तर नेहरू महाविद्यालय, झज्जर

for the paper titled

अनुवाद के माध्यम से सनातन ज्ञान का वैश्विक प्रसार

Publised in Bohal Shodh Manjusha ISSN:2395-7115
June 2026, Vol. 23, Issue 6, Page No. 139-144

Editor
Dr. Naresh Sihag Advocate
M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

9 772395 711007

ISSN:2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

Impact Factor : 8.642

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Ref. No. June 2026/30 https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

Certificate of Publication

is awarded to

डॉ. सांटी जोसफ ,

सह आचार्या ,

हिंदी विभाग ,संत अलोशियस महाविद्यालय , एडत्वा ,अलप्पुषा ,केरल।

for the paper titled

आशा भोसले - संगीत और जिंदगी

Publised in Bohal Shodh Manjusha ISSN:2395-7115
June 2026, Vol. 23, Issue 6, Page No. 145-149

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

9 772395 711007

ISSN:2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

Impact Factor : 8.642

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Ref. No. June 2026/31 https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

Certificate of Publication

is awarded to

ऋषभ

पीएच-डी० शोधार्थी,

हिन्दी-विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़

for the paper titled

शांता कुमार के उपन्यास 'लाजो' में कांगड़ी संस्कृति एवं लोकजीवन

Publised in Bohal Shodh Manjusha ISSN:2395-7115

June 2026, Vol. 23, Issue 6, Page No. 150-153

9 772395 711007

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science, DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

ISSN:2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

Impact Factor : 8.642

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Ref. No. June 2026/32 https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

Certificate of Publication

is awarded to

सलोचना यादव

(UGC NET 2018 भूगोल)

POST -CHHAPOLI TEH-UDAIPURWATI,

DISTRICT -JHUNJHUNU PIN CODE-333302

for the paper titled

राजस्थान में जल संकट एवं सतत जल प्रबंधन की चुनौतियाँ: एक विश्लेषणात्मक एवं नीतिगत अध्ययन

Publised in Bohal Shodh Manjusha ISSN:2395-7115

June 2026, Vol. 23, Issue 6, Page No. 154-160

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

9 772395 711007

ISSN:2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

Impact Factor : 8.642

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Ref. No. June 2026/33 **https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985**

Certificate of Publication

is awarded to

ਡਾ ਅਮਨਦੀਪ ਕੌਰ

ਨਿਗਰਾਨ,

ਗੁਰਸਾਹਿਬ ਸਿੰਘ

ਖੋਜਾਰਥੀ,

ਪੰਜਾਬੀ ਵਿਭਾਗ, ਗੁਰੂ ਕਾਸ਼ੀ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ, ਤਲਵੰਡੀ ਸਾਬੋ(ਪੰਜਾਬ)

for the paper titled

ਗੁਰੂ ਅਰਜਨ ਦੇਵ ਜੀ ਦੀਆਂ ਵਾਰਾਂ ਵਿਚ ਪੇਸ਼ ਅਧਿਆਤਮਕ ਚਿੰਤਨ

Publised in Bohal Shodh Manjusha ISSN:2395-7115
June 2026, Vol. 23, Issue 6, Page No. 168-174

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

9 772395 711007

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

Impact Factor : 8.642

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Ref. No. June 2026/34 **https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985**

Certificate of Publication

is awarded to

ਡਾ ਅਮਨਦੀਪ ਕੌਰ,
ਅਸਿਸਟੈਂਟ ਪ੍ਰੋਫੈਸਰ, ਪੰਜਾਬੀ
ਗੁਰੂ ਕਾਸ਼ੀ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ, ਤਲਵੰਡੀ ਸਾਬੋ ਮੋਬਾਇਲ

for the paper titled

ਪਰਵਾਸ : ਵਰ ਜਾਂ ਸਰਾਪ -ਇਕ ਸਮਾਜਿਕ ਅਧਿਐਨ

Publised in Bohal Shodh Manjusha ISSN:2395-7115
June 2026, Vol. 23, Issue 6, Page No. 168-174

9 772395 711007

Editor
Dr. Naresh Sihag Advocate
M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

ISSN:2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

Impact Factor : 8.642

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Ref. No. June 2026/35 https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

Certificate of Publication

is awarded to

ਡਾ. ਲਖਵਿੰਦਰ ਕੌਰ

ਅਸਿਸਟੈਂਟ ਪ੍ਰੋਫੈਸਰ,

ਪੰਜਾਬੀ ਵਿਭਾਗ, ਡੀ.ਏ.ਵੀ ਕਾਲਜ, ਬਠਿੰਡਾ

for the paper titled

ਅਜੀਤ ਕੌਰ ਦੀਆਂ ਕਹਾਣੀਆਂ ਵਿੱਚ ਨਾਰੀ ਸਰੋਕਾਰ

(ਗੁਲਬਾਨੋ, ਦਾਇਰੇ ਅਤੇ ਫਾਲਤੂ ਔਰਤ ਦੇ ਸੰਦਰਭ 'ਚ)

Publised in Bohal Shodh Manjusha ISSN:2395-7115

June 2026, Vol. 23, Issue 6, Page No. 175-178

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

9 772395 711007

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

Impact Factor : 8.642

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Ref. No. June 2026/36 https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

Certificate of Publication

is awarded to

डॉ॰ कविता राठी

सहायक प्राध्यापक, इतिहास विभाग,

राजकीय महाविद्यालय, बड़ौता सोनीपत (हरियाणा)

for the paper titled

गाँधी जी के आंदोलन में रोहतक वासियों का योगदान : सविनय अवज्ञा आन्दोलन एक संक्षिप्त विश्लेषण

Publised in Bohal Shodh Manjusha ISSN:2395-7115
June 2026, Vol. 23, Issue 6, Page No. 179-183

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

9 772395 711007

ISSN:2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा
Bohal Shodh Manjusha

Impact Factor : 8.642

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Ref. No. June 2026/37 https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

Certificate of Publication

is awarded to

डॉ० विनीता कुमारी गुप्ता
सह आचार्य,
बाबा खेतानाथ महिला विद्यापीठ भीटेड़ा , बहरोड़

for the paper titled

संस्कृत साहित्य में स्त्री विमर्श

Publised in Bohal Shodh Manjusha ISSN:2395-7115
June 2026, Vol. 23, Issue 6, Page No. 184-187

9 772395 711007

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science, DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

ISSN:2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा
Bohal Shodh Manjusha

Impact Factor : 8.642

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Ref. No. June 2026/38 https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

Certificate of Publication

is awarded to

डॉ. राजेश कुमार राव
एसोसिएट प्रोफेसर,
हिंदी विभाग, दयाल सिंह कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

for the paper titled

संजीव के उपन्यास `रह गई दिशाएं इसी पार ` और `अहेर `में व्यक्त समाज , सत्ता और पूँजी का अन्तर्सम्बन्ध

Publised in Bohal Shodh Manjusha ISSN:2395-7115
June 2026, Vol. 23, Issue 6, Page No. 188-194

9 772395 711007

Editor
Dr. Naresh Sihag Advocate
M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science, DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

ISSN:2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

Impact Factor : 8.642

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Ref. No. June 2026/39

https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

Certificate of Publication

is awarded to

ਬਲਵਿੰਦਰ ਕੌਰ

ਸਹਾਇਕ ਪ੍ਰੋਫੈਸਰ ,

ਡੀ ਏ ਵੀ ਕਾਲਜ ਬਠਿੰਡਾ

for the paper titled

Shri Guru TegBahadurJi Di Bani: DarshnikAdhyayan

ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਤੇਗ ਬਹਾਦਰ ਜੀ ਦੀ ਬਾਣੀ: ਦਾਰਸ਼ਨਿਕ ਅਧਿਐਨ

Publised in Bohal Shodh Manjusha ISSN:2395-7115

June 2026, Vol. 23, Issue 6, Page No. 195-201

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

9 772395 711007

ISSN:2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

Impact Factor : 8.642

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Ref. No. June 2026/40

https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

Certificate of Publication

is awarded to

डॉ. मेय फ्लावर के ए

एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग

सेंट मैरीज़ कॉलेज, त्रिशूर, केरल - 680020

for the paper titled

सांप्रदायिकता के बीच मानवीय चेतना - प्रियंवद के उपन्यास 'वे वहाँ कैद हैं' में

Publised in Bohal Shodh Manjusha ISSN:2395-7115
June 2026, Vol. 23, Issue 6, Page No. 202-206

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

9 772395 711007

ISSN:2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

Impact Factor : 8.642

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Ref. No. June 2026/41 https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

Certificate of Publication

is awarded to

ਕਿਰਨਦੀਪ ਕੌਰ

(ਖੋਜਾਰਥੀ),

ਟਾਂਟੀਆ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ, ਸ੍ਰੀ ਗੰਗਾ ਨਗਰ

for the paper titled

ਬਲਜੀਤ ਕੌਰ ਬੱਲੀ ਦੇ ਨਾਵਲਾ 'ਚ ਪੰਜਾਬੀ ਸਮਾਜ ਅਤੇ ਸਭਿਆਚਾਰ ਦੀ ਪੇਸ਼ਕਾਰੀ

Publised in Bohal Shodh Manjusha ISSN:2395-7115
June 2026, Vol. 23, Issue 6, Page No. 207-210

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

9 772395 711007

ISSN:2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

Impact Factor : 8.642

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Ref. No. June 2026/42 https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

Certificate of Publication

is awarded to

Dr.S.Madhurambika

Assistant Professor,

Department of Sanskrit (S.S)

Ethiraj College For Women, Chennai

for the paper titled

**SOCIO - CULTURAL STUDY IN
ŚĀHENDRAVILĀSA OF ŚRĪDHARA VEṄKAṬEŚA**

**Publised in Bohal Shodh Manjusha ISSN:2395-7115
June 2026, Vol. 23, Issue 6, Page No. 211-215**

9 772395 711007

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

ISSN:2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

Impact Factor : 8.642

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Ref. No. June 2026/43 **https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985**

Certificate of Publication

is awarded to

डा. विजय कुमार धतरवाल

सह आचार्य हिंदी विभाग,

श्री जे. जे. टी. विश्वविद्यालय, झुंझुनू

for the paper titled

प्रेमचंद के साहित्य में किसान जीवन

Publised in Bohal Shodh Manjusha ISSN:2395-7115

June 2026, Vol. 23, Issue 6, Page No. 216-221

9 772395 711007

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science, DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

ISSN:2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

Impact Factor : 8.642

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Ref. No. June 2026/44

https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

Certificate of Publication

is awarded to

श्रेया उत्तम
शोधार्थी,
हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय ।

for the paper titled

सरकारी योजनाओं की किसान तक पहुँच और हिंदी कृषि पत्रकारिता

Publised in Bohal Shodh Manjusha ISSN:2395-7115
June 2026, Vol. 23, Issue 6, Page No. 222-227

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science, DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

9 772395 711007

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

Impact Factor : 8.642

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Ref. No. June 2026/45

https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

Certificate of Publication

is awarded to

एम. सुब्रमण्यम

शोध छात्र,

हिंदी विभाग, आंध्र विश्वविद्यालय, विशाखापत्तनम, आँध्रप्रदेश

एन. सत्यनारायण

शोध निर्देशक,

हिंदी विभाग प्रमुख, आंध्र विश्वविद्यालय विशाखापट्टनम, आंध्र प्रदेश

for the paper titled

वैज्ञानिक साहित्य की उपलब्धियाँ एवं उपादेयता

Publised in Bohal Shodh Manjusha ISSN:2395-7115

June 2026, Vol. 23, Issue 6, Page No. 228-231

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science, DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

9 772395 711007

ISSN:2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

Impact Factor : 8.642

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Ref. No. June 2026/46 **https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985**

Certificate of Publication

is awarded to

डॉ सुकन्या चल्ला

ए पी टी डब्लू आर एस गर्ल्स करेडु, उलावपडु मंडलम, प्रकाशम जिला, आंध्र प्रदेश

for the paper titled

वर्तमान शिक्षा में अपेक्षित परिवर्तन एवं तकनीकी युग में बच्चों के व्यवहारगत परिवर्तन : एक समालोचनात्मक अध्ययन

Publised in Bohal Shodh Manjusha ISSN:2395-7115
June 2026, Vol. 23, Issue 6, Page No. 232-234

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science, DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

9 772395 711007

ISSN:2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

Impact Factor : 8.642

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Ref. No. June 2026/47 https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

Certificate of Publication

is awarded to

डॉ॰ प्रतिमा कुमारी शुक्ला,
सहायक आचार्या,
इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग,
जगद्गुरु रामभद्राचार्य दिव्यांग राज्य विश्वविद्यालय, चित्रकूट उ॰प्र॰

आशीष कुमार शुक्ल
शोध छात्र,
इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग,
जगद्गुरु रामभद्राचार्य दिव्यांग राज्य विश्वविद्यालय, चित्रकूट उ॰प्र॰

for the paper titled

भारतीय साहित्य में इतिहास की परिभाषा एवं उसका स्वरूप

Publised in Bohal Shodh Manjusha ISSN:2395-7115
June 2026, Vol. 23, Issue 6, Page No. 235-239

9 772395 711007

Editor
Dr. Naresh Sihag Advocate
M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

Impact Factor : 8.642

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Ref. No. June 2026/48 https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

Certificate of Publication

is awarded to

রতন বর্মন

(গবেষক)

মুঙ্গের বিশ্ববিদ্যালয়, বাংলা বিভাগ মুঙ্গের, বিহার - 811201

for the paper titled

ত্রৈলোক্যনাথ মুখোপাধ্যায় : কঙ্কাবতী উপন্যাসে সমাজবাস্তবতা

Publised in Bohal Shodh Manjusha ISSN:2395-7115
June 2026, Vol. 23, Issue 6, Page No. 240-245

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

9 772395 711007

ISSN:2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

Impact Factor : 8.642

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Ref. No. June 2026/49 **https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985**

Certificate of Publication

is awarded to

डॉ० रीनू चतुर्वेदी

207 भाटागांव सिटी होंडा शोरूम के पास रायपुर छत्तीसगढ़

for the paper titled

रामचरितमानस की प्रासंगिकता

Publised in Bohal Shodh Manjusha ISSN:2395-7115

June 2026, Vol. 23, Issue 6, Page No. 246-248

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

9 772395 711007

ISSN:2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

Impact Factor : 8.642

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Ref. No. June 2026/50 **https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985**

Certificate of Publication

is awarded to

अर्पिता बिस्वाल
शोधार्थी, हिंदी-विभाग,
दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

for the paper titled

नई कहानी में आधुनिकताबोध : यथार्थ और अंत:संघर्ष

Publised in Bohal Shodh Manjusha ISSN:2395-7115
June 2026, Vol. 23, Issue 6, Page No. 249-254

9 772395 711007

Editor
Dr. Naresh Sihag Advocate
M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

ISSN:2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

Impact Factor : 8.642

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Ref. No. June 2026/51 https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

Certificate of Publication

is awarded to

विनीत कुमार शुक्ल

शोधार्थी,

वेदविभाग:-सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

for the paper titled

भारतदेशे संस्कृतिभाषापरम्पराणां समन्वय: समीक्षात्मकं अध्ययनम्

Publised in Bohal Shodh Manjusha ISSN:2395-7115

June 2026, Vol. 23, Issue 6, Page No. 255-260

9 772395 711007

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

ISSN:2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

Impact Factor : 8.642

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Ref. No. June 2026/52 https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

Certificate of Publication

is awarded to

Anulakshmi Sankar. V,

Research Scholar,

Department of Sociology, University of Madras, Chennai, India -600 005

Dr. M. Thamilarasan,

Professor and Head,

Department of Sociology, University of Madras, Chennai, India-600 005

for the paper titled

The Interrelations among Marginalisation and Internal Migration: Changing Dynamics of Development in India

Publised in Bohal Shodh Manjusha ISSN:2395-7115
June 2026, Vol. 23, Issue 6, Page No. 261-268

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science, DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

9 772395 711007

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

Impact Factor : 8.642

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Ref. No. June 2026/53 https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

Certificate of Publication

is awarded to

ਡਾ. ਰਮਨਪ੍ਰੀਤ ਕੌਰ

ਅਸਿਸਟੈਂਟ ਪ੍ਰੋਫੈਸਰ

ਦਸ਼ਮੇਸ਼ ਖਾਲਸਾ ਕਾਲਜ, ਜ਼ੀਰਕਪੁਰ।

for the paper titled

ਭੁੱਖ ਇਉ ਸਾਹ ਲੈਂਦੀ ਹੈ : ਸਭਿਆਚਾਰਕ ਰੂਪਾਂਤਰਣ ਦਾ ਬਿਰਤਾਂਤ

Publised in Bohal Shodh Manjusha ISSN:2395-7115

June 2026, Vol. 23, Issue 6, Page No. 269-275

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science, DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

9 772395 711007

ISSN:2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

Impact Factor : 8.642

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Ref. No. June 2026/54 https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985

Certificate of Publication

is awarded to

Aswathy Chandran

Research Scholar

Department of Hindi, Sree Narayana College, Kollam

for the paper titled

दया प्रकाश सिंहा के नाटकों में मानवीय मूल्य विघटन

Publised in Bohal Shodh Manjusha ISSN:2395-7115

June 2026, Vol. 23, Issue 6, Page No. 276-279

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science, DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

9 772395 711007

ISSN:2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

Impact Factor : 8.642

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Ref. No. June 2026/55 **https://doi.org/10.5281/zenodo.21447985**

Certificate of Publication

is awarded to

डॉ. प्रियंका सिंह

हिंदी अनुवादक,

केन्द्रीय विद्यालय संगठन, क्षेत्रीय कार्यालय, राँची

for the paper titled

मानसिक स्वास्थ्य एवं डायरी साहित्य

Publised in Bohal Shodh Manjusha ISSN:2395-7115

June 2026, Vol. 23, Issue 6, Page No. 280-284

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

9 772395 711007